सम्राट की घोषणा।

ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैंडके संयुक्त राज्य तथा ब्रिटिश द्वीपान्तरोप-निवेशोंके अधिपति, ईसाईधर्मके रक्षक, भारतके सम्राट श्रीमान् पञ्चम जार्ज की घोषणा-अपने वायसराय और गवर्नर जेनरल, भारतके देशी राज्योंके नरपतियों तथा भारतकी सब जातियों और सम्प्रदायोंके अपने प्रजाजनोंके नाम--

१--भारतवर्षकी कौंसिलें आज फिर दूसरे युगको प्राप्त हुई हैं। हमने अपनी राजसम्मति एक ऐसे कानूनको दे दी है जो इस राज्यकी पार्लमेंटद्वारा भारत के सुशासन तथा उसकी प्रजा के सन्तोषाधिक्यके निमित्त पास किये गये ऐतिहासिक बड़े बड़े कानूनों में स्थान पायेगा। सत्रह सौ तिहत्तर तथा सत्रह सौ चौरासी के कानून माननेवाले ईस्ट इंडिया कम्पनीकी अधीनता में शासन और न्याय की एक नियमित पद्धति प्रवर्तित करने के निमित्त बनाये गये थे। अट्ठारह सौ तैंतीस के कानूनने सरकारी सेवा और नियुक्तिका द्वार भारतवासियों के लिये खोल दिया। अट्ठारहसो अट्ठावन के कानुन ने कम्पनी का शासन राजा के हाथ हस्तान्तरित किया और उस सार्वजनिक जीवनकी नींव डाली, जिसका आरेखन आज भारतवर्ष में दिखाई देता है। अट्ठारहसो इकसठ के कानुन ने प्रातिनिधिक संस्थाओं का बीज बोया और उन्नीस सौ नवे के कानून से वह बीज अंकुरित हुआ। जो कानून अब पास हुआ है वह शासन कार्य का एक निश्चित भाग जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के सुपुर्द करता है, और भावी पूर्ण प्रातिनिधिक शासनका मार्ग निर्देश करता है। यदि हमारी विश्वस्त आशा के अनुसार इस कानूनद्वारा स्थापित नीति सफल हो तो मानव जाति के चरित्र वृक्ष में बहुत ही अच्छे फल लगें गे, और इस समय यही उचित है कि हम आप से आज यही कहें कि बीती हुई बातों को भूलकर भविष्य सम्बन्धी हमारी आशाओं में सहयोग दें।

सम्राट पञ्चम जॉर्ज।

२--जब से भारत वर्ष के कल्याण का उत्तरदायित्व हमारे सुपुर्द हुआ है, इसे हमारे राजपरिवार और वंशने एक पवित्र कार्य माना है। अट्ठारह सौ अट्ठावन में संस्मरणीय महारानी विक्टोरियाने अपने अन्य प्रजाजनों के समान ही भारतीय प्रजाजनों के प्रति भी वैसे ही कर्तव्यबन्धनों से बद्ध होने की प्रतिज्ञा की; और उन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता तथा समान और पक्षपात रहित कानून द्वारा रक्षण का विश्वास दिलाया। हमारे प्रिय पिता राजा सप्तम एडवर्ड ने १९०३ में भारतीय जनता के नाम भेजे गये संदेशे में कृपा और समतासे युक्त शासन के उन्हीं सिद्धान्तों की पूर्ण रक्षा करने का निश्चय किया। पुनः उन्नीससो आठकी घोषणा में उन्हों ने उन वचनों को फिरसे प्रकट किया, जो ५० वर्ष पूर्व दिये गये थे और उस उन्नति का सिंहावलोकन किया जो उन के आधार पर हुई थी। उन्नीससो दस में हमने राजसिंहासनासीन होनेपर हिन्दुस्थान के राजाओं और प्रजा को एक सदेशा भेजकर उनकी राजभक्ति और सत्कार भाव को माना और यह प्रतिज्ञा की कि भारत की समृद्धि और सुख का विषय ही हमारे सर्वोच्च चिन्तन और ध्यान का विषय होना चाहिये। इस के दूसरे ही वर्ष हमने महारानी के साथ भारतवर्ष में पदार्पण किया और भारत के प्रजाजनों के प्रति अपनी सहानुभूति तथा उन के कल्याण की अपनी मनस्कामना का प्रमाण दिया।

३—यह उ... गाव के भावों की बात हुई जिसमे हम ...र हमारे पू... रेन रहे, इस के ... ही हम राज्य की ...द और ... में र ... चारि हैं ये ... की मै... लेक ... में उनना हो ... राने का ... में जो ... हमा की है उन में से अनेक हमने भारत वर्ष को देने का प्रयत्न किया है। पर एक......अभी बाकी है, और जिस के बिना किसी देश की उन्नति पूर्ण नहीं हो सकती—अब अपना प्रबन्ध आप करने तथा अपने हित की आप रक्षा करने का अधिकार देना बाकी है। परचक्र से भारतवर्ष की रक्षा करना साम्राज्य सरकार का ही सर्व सामान्य कर्त्तव्य है और उस के लिये यह अभिमान का विषय है। भीतरी मामलों का प्रबन्ध एक बोझ है जिसे भारत अपने सिरपर उठाने की इच्छा कर सकता है और यह उचित ही है। यह बोझ इतना भारी है कि जबतक काल और अनुभव से पर्याप्त शक्ति प्राप्त न हो जाय तबतक यह पूरे तौरपर उठाया नहीं जा सकता; परन्तु अब अनुभव के बढ़ने तथा उत्तरदायित्व के वृद्धिगत होने और उस की पूर्ति की शक्ति प्राप्त करने के लिये अवसर दिया जायगा।

४—हमने विचार और सहानुभूति के साथ भारतीय प्रजाजनों की प्रतिनिधि संस्था सम्बन्धी इच्छा को बढ़ते हुए देखा है। अल्पारम्भ से प्रस्थान करके यह महत्वाकांक्षा दृढ़ता के साथ देश के बुद्धिमानों में बद्धमूल हुई है। यह महत्वाकांक्षा वैध मार्गों से सचाई और साहस के साथ प्रवाहित होकर आगे बढ़ी है। उस अपजससे इसकी रक्षा हुई है जो इसे समय समय पर स्थान स्थान में देशभक्ति के बहाने ऊधम उत्पात करनेवालों की बदौलत प्राप्त हुआ। इस महत्वाकांक्षा का जीवन उन सिद्धान्तों से बलान्वित हुआ है जिन सिद्धान्तों के लिये ब्रिटिश साम्राज्य ने महायुद्ध किया। और हिन्दुस्थान ने हमारे सर्व सामान्य झगड़ों, चिन्ताओं और विजयों में जो भाग लिया है उससे इसे सहारा मिला है। वास्तव में राजनीतिक उत्तरदायीत्व की इच्छा का उद्गम ,भारत के साथ ब्रिटिश के सम्बन्ध की जड़ से ही हुआ है। इस सम्बन्ध ने भारतवासियों के लिये जिस मानव तर्क और इतिहास के कपाट खोल दिये उसके गहरे और उदात्त अध्ययन से ही इस महत्वाकांक्षा की अपरिहार्य उत्पत्ति हुई है। इसके बिना हिन्दुस्थान में ब्रिटिश का काम अधूरा ही रह जाता। इस लिये कई वर्ष पहले प्रतिनिधि संस्थाओं का आरम्भ किया गया यह बड़ी बुद्धिमानी का कार्य हुआ। मंज़िल दर मंज़िल इसका क्षेत्र बराबर बढ़ाया गया और आज हमारे सामने उत्तरदायी शासन का परिष्कृत मार्ग स्पष्ट दिखायी देता है।

५—वैसी ही सहानुभूति और दूनी श्रद्धा के साथ हम इस मार्ग में उन्नति का निरीक्षण करेंगे। मार्ग सहज नहीं होगा और लक्ष्य तक पहुंच ने में भारत के हम सारे प्रजाजनों की समस्त जातियों में अध्यवसाय और पारस्परिक सहिष्णुता की आवश्यकता होगी। हमें विश्वास है कि ये उच्च गुण उनमें आ जायँगे। हम जनसाधारण की नयी परिषदों पर भरोसा करते हैं वे उन लोगों की इच्छाएं बुद्धिमानी से प्रगट करेंगी जिनकी वे प्रतिनिधि हैं और जनसाधारण के हित को न बिसारेंगी जो अभितक मतदाता नहीं बनाये जा सकते। हम जनता के नेताओं पर भरोसा करते हैं और भावी मंत्रियों पर भी तथा आशा करते कि वे दायित्व को अंगीकार करेंगे और राज्य के सार्वजनिक हित के लिये अपने स्वार्थ का त्याग सहेंगे। इस बात को वे याद रखें कि सभी देशभक्ति दल तथा जाति की सीमाओं से परे है। हम व्यवस्थापिका सभाओं पर भरोसा कर आशा करते हैं कि सब के हित के लिये वे हमारे कर्मचारियों के कार्य में योग देंगी तथा अनावश्यक मतभेद भुला कर न्याय और उदार शासन चलावेंगी। हम अपने अफसरों पर भी भरोसा करते हैं कि वे अपने नये साथियों का आदर कर उनके साथ मिल जुल कर प्रसन्नतापूर्वक कार्य करेंगे

सम्राट की घोषणा

टब्रिटेन और आयर्लैंडके संयुक्त राज्य तथा ब्रिटिश औपनिवेशि-
ओंके अधिपति, ईसाईधर्मके रक्षक, भारतके सम्राट श्रीमान् पञ्चम
की घोषणा-अपने वायसराय और गवर्नर जेनरल, भारतके देशी
के नरपतियों तथा भारतकी सब जातियों और सम्प्रदायोंके अपने
जनोंके नाम--

--भारतवर्षकी कौंसिलें आज फिर दूसरे युगको प्राप्त हुई हैं।
अपनी राजसम्मति एक ऐसे कानूनको दे दी है जो इस राज्यकी
मेंटद्वारा भारत के सुशासन तथा उसकी प्रजा के सन्तोषाधिक्यके
त्त पास किये गये ऐतिहासिक बड़े बड़े कानूनों में स्थान पायेगा।
ह सौ तिहत्तर तथा सत्रह सौ चौरासी के कानून आनरेबल ईस्ट
या कम्पनीकी अधीनता में शासन और न्याय की एक नियमित
ति प्रवर्तित करने के निमित्त बनाये गये थे। अट्ठारह सौ तैंतीस के
लने सरकारी सेवा और नियुक्तिका द्वार भारतवासियों के लिये
न दिया। अट्ठारहसो अट्ठावन के कानून ने
नी का शासन राजा के हाथ हस्तान्तरित
ा ओर उस सार्वजनिक जीवनकी नींव डाली,
का अस्तित्व आज भारतवर्ष में दिखाई देता है।
रहसो इकसठ के कानून ने प्रातिनिधिक संस्थाओं
बीज बोया और उन्नीस सौ नब्बे के कानून से
बीज अंकुरित हुआ। जो कानून अब पास
ा है वह शासन कार्य का एक निश्चित भाग
के निर्वाचित प्रतिनिधियों के सुपुर्द करता है,
र भावी पूर्ण प्रातिनिधिक शासनका मार्ग निर्देश
ता है। यदि हमारी विश्वस्त आशा के अनुसार
कानूनद्वारा स्थापित नीति सफल हो तो मानव
ति के चरित्र वृक्ष में बहुत ही अच्छे फल लगेंगे,
र इस समय यही उचित है कि हम आप से आज
ी कहें कि बीती हुई बातों को भूलकर भविष्य
बन्धी हमारी आशाओं में सहयोग दें।

सम्राट पञ्चम जॉर्ज।

२--जब से भारत वर्ष के कल्याण का उत्तरदायित्व हमारे सुपुर्द
ा है, इसे हमारे राजपरिवार और वंशने एक पवित्र कार्य माना है।
ारह सौ अट्ठावन में संस्मरणीय महारानी विक्टोरियाने अपने अन्य
ाजनों के समान ही भारतीय प्रजाजनों के प्रति भी वैसे ही कर्त-
बन्धनों से बद्ध होने की प्रतिज्ञा की; और उन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता-
ा समान और पक्षपात रहित कानून द्वारा रक्षण का विश्वास
लाया। हमारे प्रिय पिता राजा सप्तम एडवर्ड ने १९०३ में भारतीय
नता के नाम भेजे गये संदेशे में कृपा और समतासे युक्त शासन के उन्हीं
द्धान्तों की पूर्ण रक्षा करने का निश्चय किया। पुनः उन्नीससो
ठकी घोषणा में उन्हों ने उन वचनों को फिरसे प्रकट किया, जो ५०
र्ष पूर्व दिये गये थे और उस उन्नति का सिंहावलोकन किया जो
न के आधार पर हुई थी। उन्नीससो दस में हमने राजसिंहासनासीन
ोनेपर हिन्दुस्थान के राजाओं और प्रजा को एक संदेशा भेजकर
नकी राज्यभक्ति और सत्कार भाव को माना और यह प्रतिज्ञा की
कि भारत की समृद्धि और सुख का विषय ही हमारे सर्वोच्च चिन्तन
ौर ध्यान का विषय होना चाहिये। इस के दूसरे ही वर्ष हमने
रानी के साथ भारतवर्ष में पदार्पण किया और भारत के प्रजाजनों
ति अपनी सहानुभूति तथा उन के कल्याण की अपनी मनस्कामना
प्रमाण दिया।

३—यह उस प्रेम और लगाव के भावों की बात हुई जिससे हम
ौर हमारे पूर्व पुरुष उत्साहित रहे, इस के साथ ही इस राज्य की
ार्लमेंट और लोग तथा हिन्दुस्थान में हमारे जो राजकर्मचारी हैं वे
भी भारत की नैतिक और साम्पत्तिक उन्नति के साधन में उतना ही
उत्साह रखते आये हैं। ईश्वर ने हमें जो जो सुख देने की कृपा की है
उन में से अनेक हमने भारत वर्ष को देने का प्रयत्न किया है। हर
एक.....भारी बात है, और जिस के बिना किसी देश की उन्नति
पूर्ण नहीं हो सकती—वह अपना प्रबन्ध आप करने तथा अपने हित की
आप रक्षा करने का अधिकार देना बाकी है। परन्तु भारतवर्ष की
रक्षा करना साम्राज्य सरकार का ही सर्व सामान्य कर्तव्य है और उस
के लिये यह अभिमान का विषय है। भीतरी मामलों का प्रबन्ध एक
बोझ है जिसे भारत अपने सिरपर उठाने की इच्छा कर सकता है और
यह उचित ही है। यह बोझ इतना भारी है कि जबतक काल और
अनुभव से पर्याप्त शक्ति प्राप्त न हो जाय तबतक यह पूरे तौरपर उठाया
नहीं जा सकता; परन्तु अब अनुभव के बढ़ने तथा उत्तरदायित्व के
वृद्धिगत होने और उस की पूर्ति की शक्ति प्राप्त करने के लिये अवसर
दिया जायगा।

४—हमने विचार और सहानुभूति के साथ भारतीय प्रजाजनों की
प्रतिनिधि संस्था सम्बन्धी इच्छा को बढ़ते हुए देखा
है। अल्पारम्भ से प्रस्थान करके यह महत्वाकांक्षा
दृढ़ता के साथ देश के बुद्धिमानों में बद्धमूल हुई
है। यह महत्वाकांक्षा वैध मार्गों से सचाई और
साहस के साथ प्रवाहित होकर आगे बढ़ी है। उस
अग्रजसे इसकी रक्षा हुई है जो इसे समय समय
पर स्थान स्थान में देशभक्ति के बहाने ऊधम उत्पात
करनेवालों की बदौलत प्राप्त हुआ। इस महत्वाकांक्षा
का जीवन उन सिद्धान्तों से बलान्वित हुआ है जिन
सिद्धान्तों के लिये ब्रिटिश साम्राज्य ने महायुद्ध
किया। और हिन्दुस्थान ने हमारे सर्व सामान्य
झगड़ों, चिन्ताओं और विजयों में जो भाग लिया
है उससे इसे सहारा मिला है। वास्तव में राज
नैतिक उत्तरदायित्व की इच्छा का उद्गम भारत के
साथ ब्रिटिश के सम्बन्ध की जड़ से ही हुआ है।
इस सम्बन्ध ने भारतवासियों के लिये जिस मानव
तर्क और इतिहास के कपाट खोल दिये उसके गहरे और उदात्त
अध्ययन से ही इस महत्वाकांक्षा की अपरिहार्य उत्पत्ति हुई है। इसके
बिना हिन्दुस्थान में ब्रिटिश का काम अधूरा ही रह जाता। इस लिये
कई वर्ष पहले प्रतिनिधि संस्थाओं का आरम्भ किया गया यह बड़ी
बुद्धिमानी का कार्य हुआ। मञ्जिल दर मञ्जिल इसका क्षेत्र बराबर
बढ़ाया गया और आज हमारे सामने उत्तरदायी शासन का परिष्कृत
मार्ग स्पष्ट दिखायी देता है।

५—वैसी ही सहानुभूति और दूनी श्रद्धा के साथ हम इस मार्ग में
उन्नति का निरीक्षण करेंगे। मार्ग सहज नहीं होगा और लक्ष्य तक
पंहुचने में भारत के हम सारे प्रजाजनों की समस्त जातियों में अध्य-
वसाय और पारस्परिक सहिष्णुता की आवश्यकता होगी। हमें
विश्वास है कि ये उच्च गुण उनमें आ जायँगे। हम जनसाधारण की
नयी परिषदों पर भरोसा करते हैं वे उन लोगों की इच्छाएं बुद्धिमानी
से प्रगट करेंगी जिनकी वे प्रतिनिधि हैं और जनसाधारण के हित को
न बिसारेंगी जो अभीतक मतदाता नहीं बनाये जा सकते। हम जन-
ता के नेताओं पर भरोसा करते हैं और भावी मंत्रियों पर भी तथा
आशा करते कि वे दायित्व को अंगीकार करेंगे और राज्य के सार्व-
जनिक हित के लिये अपने स्वार्थ का त्याग सहेंगे। इस बात को वे
याद रखें कि सच्ची देशभक्ति दल तथा जाति की सीमाओं से परे है।
हम व्यवस्थापिका सभाओं पर भरोसा कर आशा करते हैं कि सब
के हित के लिये वे हमारे कर्मचारियों के कार्य में योग देंगी तथा
अनावश्यक मतभेद भुला कर न्याय और उदार शासन चलायेंगी।
हम अपने अफसरों पर भी भरोसा करते हैं कि वे अपने नये साथियों
का आदर कर उनके साथ मिल जुल कर प्रसन्नतापूर्वक कार्य करेंगे

ा जनता और उसके प्रतिनिधियों को सहयोग देंगे जिसमें वे वैध तिसे स्वतन्त्र संस्थाओं की वृद्धि कर सकें और इन नये कार्यों में ऐसा अवसर प्राप्त करेंगे जैसा कर चुके हैं जिस में वे हमारे प्रजा ों की सेवा का उच्चतम उद्देश्य पूरा कर सकें।

६—यह हमारी उत्कट अभिलाषा है कि इस समय हमारे प्रजाजनों ा शासन कर्त्ताओं में जो मनोमालिन्य हो वह यथासाध्य मिट जाय न्होंने राजनीतिक उन्नति की उत्कण्ठा से कानूनका भंग किया वे विष्यत में उसका आदर करें। जिनपर शान्ति तथा व्यवस्था पूर्ण सन करने का भार दिया गया था वे उन ज्यादतियों को भूल जाय सका दमन उन्हें करना पड़ा। अब नया युग आ रहा है। इस के रम्भ में हमारे प्रजाजन तथा अफसर अपने उद्देश्य की सिद्धि के ये मिल जुलकर काम करने का दृढ़ संकल्प कर लें। इस लिये हम पने वायसराय को आदेश करते हैं कि वे हमारी ओर से और मारे नाम में हमारी राज क्षमा यथोचित रूपसे अपनी बुद्धि के नुसार जिस में जन साधारण की रक्षा में बाधा न पड़े, राजनीतिक पराधियों को पूर्ण रूप से प्रदान करें। जो मनुष्य राज्य के विरुद्ध पराध करने से या और किसी विशेष कारण से कारागार हैं उन्हें इस शर्त पर छोड़ने के लिये वायसराय को हम आदेश रते हैं हमें विश्वास है कि जो कैदी छूटेंगे वे भविष्यत में अपने चरण को निर्मल कर इस क्षमा को सफल करेंगे तथा हमारे समस्त प्रजाजन ऐसा व्यवहार करेंगे जिस में फिर दण्ड के लिये ऐसे कानून के जारी करने की आवश्यकता न पड़े।

७—भारत में नयी शासनपद्धति होने के साथही हमने प्रसन्नतापूर्वक भूप सभा की स्थापना भी स्वीकार की है। आशा करते हैं कि इस के परामर्श नृपतियों तथा उन के राज्यों के लिये सदा लाभदायक होंगे तथा उन हितों की वृद्धि करेंगे जो देशी रजवाड़ों और ब्रिटिश भारत के लिये समान हैं और जो साम्राज्य के लिये हितकर हो सकते हैं। हम फिर भारतीय राजा महाराजों को आश्वासन देते हैं कि हम उन के अधिकार, स्वत्व तथा पदवियों को पूर्ण रूप से बनाये रक्खेंगे।

८—हमारी इच्छा आगामी शीतकालमें भारतमें अपने प्रिय पुत्र प्रिंस आफ वेल्स को भेजने की है, वे यह हमारी ओर से नयी भूपसभा तथा ब्रिटिश भारत में नयी शासनपद्धति का प्रवर्तन् करेंगे। आशा है हमारे पुत्र उन लोगों में सद्भाव और पारस्परिक विश्वास पावेंगे जिन पर देश की भावी सेवा का भार पड़ेगा। जिस में उनका परिश्रम सफल हो और उन के शासन में उन्नति तथा विकाश हो। और अपने समस्त प्रजा जनों के साथ सर्व शक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी बुद्धि तथा आदेश से भारत में अभ्युदय और सन्तोष की उत्तरोत्तर वृद्धि हो और भारत राजनीतिक स्वतंत्रता के पूर्ण योग्य हो।

दिसम्बर की तेइस तारीख, सन् उन्नीस सौ उन्नीस ईस्वी।

ग्वालियर रियासत में गत वर्ष का

दुष्काल में किया हुवा गोपालन।

स्वामी श्रद्धानन्द का भाषण।

रत माता की पुत्रियो और पुत्रो! स्वागत कारिणी सभा अमृतसर की ओर से मैं आप सब का हार्दिक स्वागत करता हूं। जिन्हों ने देहली नगर में पहुंच कर इस जातीय महा-सभा के रत्नों को निमंत्रित किया था, जिन्हों ने आप सब के स्वागत के लिए देहली से लौटते ही अमली काम शुरू कर दिया था, जो मातृ-भक्ति के प्रेम-मद से उन्मत्त होकर दिन रात जातीय सेवा की मस्ती में झूमते फिरते थे, जिन्हों ने गंगा और यमुना के की बुनियाद गत रामनवमी के दिन रख कर सिक्ख गुरुओं के त्र किये हुए इस नगर को अमृत-सरोवर बना दिया उनको भयभीत स्वार्थ तथा की शक्तियों ने गत १० को गुप्त कर दिया। अपने का विछोह एक ओर, जिस देवताकी पूजा के लिए का मानसिक व्रत धारण था, उसकी गिरिफ़तारी ओर—इन दोनों घटनाओं अमृतसर की व्याकुल जनता अन्धा कर दिया। प्रजा पैत्रिक प्रथा के अनुसार और पैर से नंगी, अपने मां हाकिम के पास, फरियाद दौड़ी। परन्तु हाकिम को सेक अन्दर का भय कैसा रहा। यह मानता है कि उसने से फौज इकट्ठी कर रक्खी और उनको हुकम दे दिया था यदि भूल कर, उसे मां बाप न वाली, प्रजा उसके मन्दिर ओर चलने का यत्न करे तो, भी हो सके, उन्हें आगे से रोका जाये। भोली प्रजा ने रूठे हुए बालक तरह सरपीट कर आगे बढ़ने का यत्न किया, और प्रजा के सम्राट जार्ज पंचम के प्रतिनिधियों ने उसकी प्रजा को गोलियों भून डाला। अपने निर-अपराधी सम्बन्धियों को घायल होते हुए उनमें से बहुतों को रंगभूमि में बे-जान पड़े देख कर, जनता में भाव का विकास हुआ। जिस लाड़ व मान के भाव से प्रेरित चले थे, उसका उलटा परिणाम देख कर भी जिन वीरों के हृदय नहीं डोले और जो फिर भी एक ओर मृत शरीरों और घायलों को उठाते हुए दूसरी ओर जनता को शान्ति से काम लेने की प्रेरणा करते रहे, उन पर अब तक सत्य परायण देवताओं के मानसिक भावों की पुष्प वर्षा हो रही है। परन्तु साधारण पुरुष क्रोधाग्नि में दग्ध होकर बुद्धिहीन हो गए। उस सामग्री अवस्था में जो पिशाचत्व के काम वश भारत के पुत्रों से हुए वह जाति के उज्ज्वल मुख पर एक है और उसी के लिए सारे पंजाब को प्रायश्चित करना है। गंगा और यमुना के संगम के साथ सरस्वती भी उनमें पूर्ण पवित्र प्रयाग बन जाता, और हिन्दू मुसलमान और

स्वामी श्रद्धानन्द।

ईसाई जन समाजों के मेल से भारत से दुई दूर होकर ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें पाताल में पहुंच, संसार में सचमुच एक चक्रवर्तीराज्य की बुनियाद डाल देती। परन्तु जहाँ स्वार्थ का चारों ओर राज्य है, वहां इस गिरे हुए समय में निस्वार्थ समता का प्रकाश कैसे होता। नियम के नाम पर विप्लव और शान्ति के नाम पर अत्याचार का राज्य फैल गया। मार्शललाॅ ने—नर, नारी, बाल, वृद्ध और युवा—सब को बेजान कर दिया। बैसाख की पवित्र संक्रान्ति के दिन जो रक्त से भूमि लाल हुई उसके श्रवणमात्र से सब के छक्के छूट गए। हां, उस दिन मार्शललाॅ का विजय हुआ और शान्ति फैल गई, परन्तु वह श्मशानभूमि और क़बरस्तान की शान्ति थी—वह मौत की शान्ति थी!

इस शान्ति का निष्कण्टक राज उस समय तक बराबर रहा जब २६ जून स० १९१९ की दोपहर के समय मैंने, भारत के दो नेताओं और पंजाब के अपनाए हुए संरक्षों के साथ, अमृत नामिनी-परन्तु विष से मूर्छित-नगरी में प्रवेश किया। मेरा मतलब पूज्य मालवीय जी तथा माननीय पं० मोतीलाल नेहरू जी से है।

जिस दिन से इन दोनों वीरों ने जलयां वाला बाग नामी पवित्र तीर्थ की प्रदक्षिणा कर के धैर्य और निर्भयता का अमर मन्त्र फूंकना शुरू किया, उसी दिन से अमृतसर में जीवन का संचार हो चला और इस जागृति का पहिला परिणाम यह हुआ कि मूर्छा से जागते ही जनता ने, अपने नेताओं की प्रतिज्ञा को याद करके, कहना आरम्भ किया कि कांग्रेस का आगामी अधिवेशन अमृतसर में ही होना चाहिए। किस प्रकार यह शब्द सारे शहर में गूंज उठा, किस प्रकार इस आवाज़ की गूंज को दबाने की कोशिश हुई, किस प्रकार "दिन दिन चढ़ सवाया गूढ़ा रङ्ग" की उक्ति के अनुसार जनता की दृढ़ता को कामयाबी हुई इस पर कुछ भी कहने की ज़रूरत नहीं। "जिन ढूंढा उन पाइया" अमृतसर की जनता की मुराद आज पूरी हुई और मुझे भारत की पूज्या देवियों और माता पर न्योछावर होने वाले पुत्रों का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस जातीय महासभा के इतिहास में शायद यह पहला ही अवसर है जब एक संन्यासी इस की शानदार वेदि पर खड़ा दिखाई देता है। जिस दिन से मैं स्वागत कारिणी सभा का सभापति चुना गया, उसी दिन से यह प्रश्न हो रहा है—"क्या संन्यासी को राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेना चाहिए?" मेरा उत्तर बहुत सीधा है। जिस दिन से मैंने पवित्र संन्यासाश्रम में प्रवेश किया उसी दिन से सारे संसार को एक परिवार समझने, सारे संसार के धन को एक आंख से देखने और लोक-लज्जा को छोड़ कर लोक-सेवा में दत्तचित्त होने का व्रत धारण कर लिया। मैं राजनैतिक आन्दोलन के लिए नहीं प्रत्युत किसी और कर्तव्य के पालन के लिए आज इस वेदिपर खड़ा हूं। पहिला

रण मेरे इस वेदि पर आने का यह है कि पंजाब के जिन रत्नों ने
रत माता के उज्ज्वल माथे को दाग़ से बचाने के लिए फांसी और
मकैद को तुच्छ समझा और निरपराध होते हुए रहम की दर्ख़ास्त
पाप समझ कर कैदख़ाने की काली और काले का रुत्बा दिलाया–
किशन लाल, दुनीचन्द रामभजदत्त, किचलू, सत्यपाल—उन्हों
अपनी भरी सभा से मुझे आज्ञा भेजी कि मैं स्वागत—कारिणी का
मापति बनूं। फिर मैंने जेल के स्वर्गी पिंजरों में श्रद्धा सम्पन्न चौधरी
गा और वीर महाशय रत्तो से सिद्ध पुरुषों के मुख से भी यही ध्वनि
नी। परन्तु जब इन में से कुछ धर्म वीरों की धर्म पत्नियों ने कहा—
बन्दीगृह में घिरे हुए हमारे पति महाशयों के आत्मा तभी शान्त
गे जब कांग्रेस का महोत्सव न टले", और भिक्षु संन्यासी से उल्टी
दा मांगी तो उसे मातृशक्ति के आगे शिर झुकाना पड़ा। यह
हला कारण मेरे इस वेदी पर आने का है। दूसरा कारण मेरा
ाश्रम और उसका कर्त्तव्य है। सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए
ी सम्प्रदाय (सनातन धर्म समाज, आर्य समाज और अन्य सभा
माजें) भारतवर्ष में स्थापित हैं, उनका प्रश्न है कि संन्यासी का
जनीति से क्या सम्बन्ध? मेरा उत्तर "वेद मुझे आज्ञा देता है
कि सौ बरसों की उमर तक जीने की आशा कर्म करते हुए ही करूं,
रन्तु शर्त यह है कि उन कर्मों में फंसूं नहीं"॥

कवि तुलसीदास ने सच कहा है—"करम प्रधान विश्वकर राखा"
त्येक का अपना धर्म पालन करना है। आज तक यह "भारत
ातीय महासभा" साधारण पुलिटिकल काम करती रही है, परन्तु
ाज इसे धर्म के शिखर पर उठना पड़ेगा और इस के साथ ही–बहिनों
ौर भाइयो! हम सब को भी अपनी दृष्टि ऊंची करनी पड़ेगी। पंजाब
ा सब सहस्र मुख से यही उपदेश दे रहा है कि मानवी मूल अधि-
ारों की प्राप्ति के लिए बड़े गम्भीर तप की आवश्यकता है।

अब मोतियों और राजीनामों और सौदा सुलफ का ज़माना नहीं
रा, अब निर्भयता से सत्य पर दृढ़ होने का समय आगया है।
ंन्यासी को सम्प्रदायों से–चाहे वे धार्मिक हों या न हों या राजनैतिक–
या काम? उसने तो सारे संसार की सेवा का बीड़ा उठाया है—
सका किसी सम्प्रदाय के साथ क्या सम्बन्ध? शायद इसी विचार
े प्रेरित होकर मेरे हमख़्याल फ़ारसी कवि ने कहा है—

"न हिन्दूअम् न मुसल्मान न गब्रियम न यहूद"

मैं न "हिन्दू" हूं न "मुसलमान" न "ईसाई" हूं और न
"यहूदी"। मैं न "माडरेट" हूं, न "एक्सट्रीमिस्ट", न "होम-
रूलर" हूं, और न किसी विशेष दल का समर्थक हूं लेकिन शायद
के दूसरे मिसरे के साथ मैं सहमत नहीं। मैं नहीं कहता कि—

"बहैरतम् कि सरंजाम मनिबखाहद बूद"

मैं विस्मित नहीं हूं कि मेरा अन्त क्या होगा। मेरा आनन्द श्रद्धा में
है और इस लिए मैं जानता हूं कि भारत माता की सन्तान के साथ
मेरा भविष्य भी उत्तम ही होगा।

एक राजनैतिक बुद्धिमान ने मुझे सम्मति दी है कि मैं रिलिजस
और सोशल कामों में लगा रहूं और पुलिटिकल कामों में
दख़ल न दूं। उसके लिए मेरा उत्तर यह है कि जिस
समय पंजाब की भूमि में आते हुए "परिन्दों के भी पर जलते" थे,
उस समय संन्यासी ने अपना कर्त्तव्य समझा कि वहां मुरझाई वाटिका
को प्रेम जल से सींचने के काम में आप के राजनैतिक नेताओं के कन्धे
से कन्धा जोड़ दे परन्तु आज जब देश के रत्नों ने अपना कर्त्तव्य संभाल
लिया है और २४ वर्षों से देश सेवा में रत कर्मवीरों ने एक स्वर से
पंजाब को अपना लिया है, तब मैं जाति के कर्णधारों को उनकी अमानत
सौंप कर अपने आप को कृत कृत्य समझता हूं!

बहिनो और भाइयो! मैं पंजाब की ओर से साधारणतया और
अमृतसर की प्रजा की ओर से विशेषतः आप सब का स्वागत करता
हूं। मैं जानता हूं और भले प्रकार अनुभव करता हूं कि आप की
सेवा हम यथार्थ रूप से नहीं कर सकते! इस नगर को धन्यहीन, सेंटिन
हीन, बलहीन और डाक्टरहीन करने में डायरशाही ने कुछ कसर नहीं
छोड़ी। परन्तु एक भाव है जिसे डायरशाही का भयानक अत्याचार
भी दबा नहीं सका। वह है मातृभूमि का प्रेम और सत्य की सम्मान
...

हथियारों—अर्थात् जनरल डायर और कर्नल फ्रैंक जा...
हार्दिक धन्यवाद करें तो अनुचित नहीं है। और शायद कुछ ...
ने इसी भाव को लक्ष्य में रख कर कर्नल फ्रैंक जानसन के स...
"मार्शललॉ की जय" गुंजाई हो। निष्कपट कर्नल फ्रैंक और मातृ-प्रे...
के रंग में प्रजा को रंग देनेवाले जनरल डायर ने जो मार्शललॉ की
घुट्टियां पंजाब को पिलाई हैं उन से पंजाब का जातीय जीवन ५० वर्षों
के लिए मर तो क्या जाता, उल्टा आधी शताब्दी का उल्लंघन कर के
आज पंजाब आपने आगे बढ़े हुए बंगाली, मराठी, गुजराती, मद्रासी
भाइयों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाने को तय्यार है। जिस पञ्जाब
प्रान्त में राष्ट्रीयता और उसके अधिकारों की चर्चा पढ़े लिखों में से
केवल मुट्ठी भर आदमियों में रह गया था वहाँ आज गुमनाम से गुम
नाम ग्राम में भी जातीय महासभा के उद्देश्य और उसकी शक्ति को
केवल पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ भी कुछ कुछ समझने लग गई हैं। गत
१५ दिनों के अन्दर मेरे पास ग्रामों से जो पत्र आए हैं और २४ जून
१९१९ ई० से अब तक जिन ग्रामीण बहिनों और भाइयों से मेरी भेंट
हुई है उनकी काया पलट देख कर मुझे विश्वास हो गया कि जाति
में अब पूरी जागृति होगई है।

इस समय जाति रूपी वीणा को सम्प्रदाय रूपी त्रिविध तार एक
दूसरे से मिली हुई हैं और उन में से एक ही स्वर निकल रहा है।
इन स्वरों की एकता की बधाई में क्या पुलिटिकल पार्टीबाज़ी के बेसुरे
अलाप को न्योछावर नहीं कर देना चाहिए। माडरेट लिबरल्ज़,
और एक्सट्रीमिस्ट रेडिकल्ज़, महाराष्ट्र होमरूलरज़ और आंडियार होम-
रूलरज़ तथा इनकी शाखाएं प्रति शाखाएं, एक ही लक्ष्य को सामने रख
कर काम करने की दावेदार हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य मातृभूमि
को स्वतंत्र कराना और संसार के अन्तरजातीय संघटन में उसे मान-
नीय बनाना बतलाया जाता है। तब एक दूसरे से इतनी घृणा क्यों?
अपनी कमज़ोरी मनुष्य स्वयं नहीं देख सकता और जब दो प्रत्यक्ष में
स्थापित होकर विवाद आरम्भ हो जाय तब तो विचारों का पक्षपात
स्वभाविक है परन्तु तीसरी निष्पक्ष दर्शक दोनों की कमज़ोरी को ठीक
बतला सकता है। सचाई के प्रकट करने में प्रार्थना की आवश्यकता
नहीं और इस लिए मैं अपनी सम्मति स्पष्ट कह देता हूं।

इस समय के मत-भेद का कारण भारत सचिव मिस्टर माण्टेगु की
पेश की हुई सुधार-स्कीम समझी जाती है। नरमदल के महानुभाव
कहते थे कि इस स्वीकार करने के लिए तय्यार हो जाओ तो हम तुम
सब के साथ शामिल होंगे। तब प्रश्न होता है कि क्या आप इसने
ही संशोधन से संतुष्ट हैं? उत्तर मिला था, जो मिले उसे स्वीकार
कर के और लेने के लिए हाथ फैलाना और बात है और मिले हुए
को सर्वथा अस्वीकार करना और बात है। नरमदल की दृष्टि में
यह उत्तर ठीक था, परंतु अब गरमदल भी तो यही कहने लग गया
है। अब तिलक महाराज भी तो यही कहते हैं कि जितना मिलता
है उसे ग्रहण करो और शेष के लिए आन्दोलन जारी रक्खो। फिर
मतभेद क्यों? उत्तर दोनों ओर से एक सा ही मिलता है—नरम
कहते हैं—"हम तो बिना किन्तु परन्तु के सब कुछ स्वीकार करने को
तय्यार थे, अब वे हमारे समीप पहुंच गये हैं इस लिये उन्हें हार स्वी-
कार करनी चाहिए।" एक दूसरे की दलीलें समाचार-पत्रों में निकल
चुकी हैं, उनको दोहराने की यहाँ आवश्यकता नहीं। बात सीधी
यह है कि दोनों में से कोई भी हार मानने को तय्यार नहीं है। दोनों
ही अपने पक्ष में डटे खड़े हैं। नरम कहते हैं कि भारत-सचिव
हमारी बुद्धिमत्ता पर मोहित हुए और हमारी मासूम मद्धम तजवीज़ों
से सहमत हो कर उन्हों ने भारतवर्ष को कुछ अच्छे अधिकार दिये हैं।
इस के उत्तर में गरम कह सकते हैं कि यदि हम पूर्ण स्वराज की याचना
न करते तो देश को इतना भी न मिलता जो अब मिला है वे पंजाब
की प्रसिद्ध कहावत कह सकते हैं कि "सांप को पकड़ो तो
अरम कदम दबता है।" परन्तु मिस्टर माण्टेगु एक तीसरी बात कह
रहे हैं। "टाइम्स आफ इण्डिया" में सुधारकमेटी पर वक्तृता करते
हुए उन्हों ने ४ दिसम्बर को मिस्टर Mr. Spoor के उत्तर में कहा
कि न तो कानून भारत की शासन-पद्धति को हिन्दोस्तानी आन्दो-
लन के कारण बदल रहे हैं और न ही यह विश्वास करते हैं कि–
...

उत्तर देना कठिन हो जाता। परन्तु क्या यह सच नहीं कि [illegible] र स्कीम को एक दम से पास कराने के लिए "कांग्रेस की एक [illegible] आजके अधिवेशन से पहिले दूर करना" ही मिस्टर बानर-[illegible] बतलाया था। मिस्टर मानटेगु भी सच्चे हैं क्योंकि उन्हों ने जो ब्रिटिश पार्लमेंटसे भारत को दिलवाया है वह उन्हीं के दृढ संकल्प [का] नतीजा है—भारत की नरम और गरम पार्टी तो उनकी शतरञ्जी के मोहरे मात्र थे।

यह हाल है तो लड़ाई काहे की। पुराने पठानों की तरह दोनों [ओर] पर ताव दे रहे हैं और मातृ भूमि के विरोधी उनकी खिल्ली उड़ा [रहे] हैं। यह घरू युद्ध कैसे दूर हो? सुधार स्कीम अब विवादास्पद [विषय] नहीं रहा। नरमों को उसे स्वीकार करना और गरमों का उसे [अस्वीकार] करना—दोनों निरर्थक होंगे हैं। बुरी है या भली, पूर्ण-[रूप से] स्कीम हम पर लागू हो चुकी है। नरमों से तो इस पर कोई [विवाद] नहीं हो सकता परन्तु मै गरमों से पूछता हूँ कि आपके अस्वीकार के अर्थ क्या हैं! क्या आप इस पास हुए कानून का सर्वथा [बहिष्कार] (Complete boycott) करने को तय्यार हो? क्या [आप] यत्न न करोगे कि लेजिस्लेटिव काउन्सलों में आपके चुने हुए, [आपके] पक्ष समर्थन करने वाले प्रतिनिधि बैठें? यदि सारी जाति [एक] सम्मत होकर, इन मिले हुए अधिकारों से उपेक्षा करने को तय्यार [हो] तब तो अस्वीकार करने के कुछ अर्थ भी हो सके। परन्तु इस [समय] तो यह असम्भव है? झगड़ा तो हो गया है क्यों कि लोक-[मान्य] तिलक महाराज ने व्यवस्था दे दी है कि "जो मिला है उसे लो और शेष के लिए व्यवस्थित आन्दोलन (Constitutional [agitation]) जारी रक्खो"।

भारत में राष्ट्रियता के भाव आदि संचारकों में से तिलक महाराज [का] ऊँचा दर्जा है, और कौन भारत का सपूत है जिसने बहादुर तिलक [से] बढ़ कर माता की शान की रक्षा के लिए सहन किया है? क्या [इस] [illegible] सेना" के सैनिक बूढ़े सेनापति की व्यवस्था के आगे सिर झुकायेंगे?

अब रास्ता साफ़ हो गया। नरम और गरम दोनों मिले अधिकारों [को] लेने में सहमत हैं। मत भेद इतना भी किसकी कृपा से मिला। उस बड़े पक्ष की सेवा में, जिसके हाथों में इस समय कांग्रेस की [बाग] डोर है, एक निवेदन करना है। आपकी शक्ति बड़ी है। युक्ति [और] नीति का चाहे आपके बुद्धिमान माडरेट लिबरल भाइयों ने ठेका [ले] रक्खा हो लेकिन संख्या और बल में आपका पाया इस समय ऊंचा [है]। सामने शत्रु नहीं है, एक ही माता के पुत्र आप के भाई हैं। उन [में] बूढ़े ऐसे पुराने योद्धा भी हैं जिन्हों ने माता की सेवा में बहुत कुछ [त्याग] किया है। क्या स्वर्गवासी गोखले-मातृ सेवा में मुग्ध उसी [दल] में प्राण देने वाले गोखले—को आप भुला सके हो! और उस [illegible] सन्यासी के त्यागी उत्तराधिकारी साधुस्वभाव [illegible] नियास [illegible] की तुम उपेक्षा कर सके हो। आज समय के फेरने चाहे कुछ [illegible] दे दिया हो परन्तु-क्या राजनैतिक आन्दोलन के प्रदर्शी [illegible] [illegible] श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी [illegible] का तुम तिरस्कार करोगे?

झगड़ा एक पक्ष में [illegible] है, यदि एक सन्यासी का कहना मान लो। तुम [illegible] और जो कुछ मिला है उसके संभालने [illegible] जाओ।

इस [illegible] में [illegible] है [illegible] में आपके सामने रखना [illegible] है। यह बात [illegible] है कि हमारी जाति को उसके अधिकारों [illegible] [illegible] [illegible] यह सच है कि इस [illegible] [illegible] [illegible] है कि इस समय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

बेचारे कुलीनों को अधिकार देने के लिए आपके और भजात है ये भारत के साढ़े छ करोड़ अन्याय से पीडित अपने भाइयों को अछूत समझ कर उनसे घृणा का भाव दूर नहीं कर रहे। और कितने हैं जो अपने उन दीन भाइयों को अपनाते हैं?

जाति के एक अन्त्यज को अपनाने के लिये आप "मोहनदास कर्म-चन्द गांधी" को देवता मान सकते हो, तो घोर विरोधों का मुका-बला करते हुए एक रसातल को गई हुई जाति को, किसी अंश तक, उसके अधिकार दिलाने में कृत-कार्यता प्राप्त करने के उपलक्ष में क्या आप मिस्टर मान्टेगू का वाणी से भी धन्यवाद न करेंगे? और जिस ब्रिटिश पार्लिमेन्ट ने अपने कर्त्तव्य को (चाहे वह किसी स्वार्थ के विचार से क्यों न हो) समझा है, क्या हम उसे साधुवाद न कहेंगे! बहिनों और भाइयो! भारत की प्राचीन सभ्यता के नाम पर मैं आप सब से अपील करता हूं कि इस अपूर्व अवसर को हाथ से न जाने देना और कृतघ्नता का दाग माथे पर न आने देना।

परन्तु इस कृतज्ञता प्रकाश करने का यह मतलब नहीं है कि, आप अपने शेष अधिकारों के लिये आन्दोलन करना छोड दो। मिस्टर मान्टेगू के कृतज्ञ होते हुए भी इस अंश में उन से मत-भेद आवश्यक है। परन्तु एक बात मैं अवश्य कहूंगा कि कहीं आन्दोलन में फंस कर मिले हुए अधिकारों का ही नाश न हो जाय। एक शायर का कलाम बिलकुल इसके हाल है:—

> धोने की रिफ़ार्मर है जा बाक़ी,
> कपड़े पै है जब तलक कि धब्बा बाक़ी।
> धो शौक़ से धब्बे को पै इतना न रगड़,
> धब्बा रहे कपड़े पै न कपड़ा बाक़ी॥

अब मैं उस घटना की ओर आता हूं जो आप को स्वदेश के दूर से दूर कोने से खींच कर लाई। जिस देश परीक्षा में से गुज़रा है, उसे यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं। जिस घटना ने पंचनद की पुरानी पाक सरज़मीन से चंगेज़ खां और नादिरशाह के अत्याचारों को विस्मरण करा दिया उस की बुनियाद भारत की असली और बना-वटी-दोनों प्रकार की राजधानी देहली नगर में रक्खी गई थी। ३० मार्च सन् १९१९ ई० के तीसरे पहर पहिली गोली देहली में चली और उस समय पता लगा कि जिस देश को बे-जान समझा जाता है उस में कितनी जान है। हन्टर कमेटी के आगे जो शहादत गुज़री है वह क्या ज़ाहिर करती है? उस से मालूम होता है कि, इस सदियों से सोई हुई जाति के अन्दर सच्ची वीरता का भाव भी सोया हुआ ही था, मर नहीं गया था। भारतवर्ष के पुनरुद्धार के लिये पहिला रक्त पाण्डवों की पुरानी राजधानी की भूमि पर गिरा और उस रक्त ने भारतमाता के प्रधान पुत्रों (अर्थात् हिन्दुओं और मुसलमानों) के सदियों से जुदा हुए दिलों को जोड़ दिया। ३१ मार्च को पहला जना-ज़ा पचास हज़ार मातमदारों के साथ क़बरस्तान की तरफ़ चला और वहां शहीद की लाश पर मुस्लिम इमाम, हिन्दू-मुस्लिम एकता के शैदा, इस समय के मेरे सब से प्यारे भाई, हकीम अजमलखां से मेरी भेंट हुई। मुसलमान शहीद का जनाज़ा और हिन्दू बराबर कन्धा दे रहे! यह भी एक विचित्र दृश्य था। शहीद की क़ब्र पर उस के खून के वैसन्द से, सदियों के बिछुड़े हुए दिल एक दूसरे से जुड़ गये।

फिर जब शाम को दो और जनाज़े क़बरस्तान की ओर चलते का [illegible] के मैं तीन अर्थियों के साथ श्मशान भूमि में पहुंचा और दाह कर्म के पीछे परमेश्वर के दरबार में शांति के लिये प्रार्थना की और हिन्दू मुस-लमानों को इस ईश्वरदत्त एकता को स्थिर रखने के लिये अपील की तो एक सिक्ख भाई ने कहा—"हम पर क्यों जुल्म करते हो! सिक्ख भी साथ के साथ हैं।" उन हज़ारों के मजमे में उस वक़्त सैकड़ों आंखों से प्रेम की जलधारा बह रही थी। और जब मैं श्मशान भूमि से चल दिया तो (मृतीय [illegible] महात्मा [illegible] के [illegible] और [illegible] माता के प्रेम-पुत्र [illegible] प्रिय भाई [illegible] [illegible] के धर्म-[illegible]) [illegible] "[illegible] कुमार [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] लिये और कहा—"मातृ भूमि के निरपराध पुत्रों पर अत्याचार देख नहीं सकता। मेरा हृदय आप के साथ है और [illegible] सदा [illegible] आप के साथ है।" परमेश्वर इस [illegible] भूमि में [illegible] [illegible] [illegible]

रूपी दुष्ट व्यसनों के दलन करनेवाले रुद्र उत्पन्न करे, यह मेरी हार्दिक याचना है।

४ अप्रैल स० १९१९ ई० का दिन आया जब जुमा-मसजिद देहली में खुदा की शान दिखाई दी। उस के पश्चात् १८ अप्रैल की रात तक (जब तक कि पुलिस का राज फिर से स्थापित न हुआ) दिल्ली नगर में रामराज रहा। यह ठीक है कि ३ मार्च के प्रात काल से १८ अप्रैल की रात तक एक ताला नहीं टूटा, एक मार-पीट नहीं हुई, एक जेब नहीं कतरी गई-और तो क्या, जुयाखाने बन्द रहे, शराबखानों में कोई विरला आदमी ही दिखाई देता था, और प्रसिद्ध गुण्डों ने भी देवियों को मां, बहिन और बेटी समझ कर उन को अभयदान दे छोड़ा था।

देहली से यह प्रेम-मयी वायु सारे पंजाब में फैल गई। एकता और मिलाप की लहर बिजली का तरह सारे देश में घूम गई। मस्जिद और मन्दिर में कुछ भेद न रहा। ऐसे समय में सचाई और सहन-शीलता का सन्देश देने के लिये महात्मा गांधी देहली की ओर चले। जिन हुकूमत के नशे में चूर मनुष्यों का जीवन ही स्वार्थ का स्वरूप हो, उन की समझ में न सत्य का गौरव आ सकता और नहीं वह सत्याग्रह की शान का समझ सकते हैं। स्वार्थ का इन्द्रासन डांवांडोल हो गया। इस दुबले, बीमार, मुनहनी जिस्म के अन्दर वाले आत्मा के तेज को दुनियादार स्वार्थ न सहन कर सका। जिन बहादुर ब्रिटिश जनरलों और गम्भीर नीतिमान-ब्रिटिश शासकों ने एक तिहाई दुनियां को जीत कर जर्मन साम्राज्य की शक्ति खाक में मिला दी थी, उसके योद्धा इस नई शक्ति के उद्भव से दहल गये, और उसी का नतीजा पंजाब का घोर उपद्रव है। अराजकता का राज हो गया, मनुष्य की जान का कुछ मूल्य न रहा, जेलखाने भर दिये गये, बोलना अपराध हो गया, नंग चूतड़ों पर कोड़े खा कर चिल्लाना पाप हो गया, इज्जतदारों ने खयाली इज्जत को बचाने के लिये पुलिसरूपी यमदूतों के घर भर दिये और साध्वी सतियों को अपनी रक्षा कठिन हो गई। जालियांवाले बाग की घटना को सामने लाओ और जनरल डायर के कथन को याद करो:— Yes, I think it quite possible that I could have dispersed them perhaps even without firing' "हाँ, मैं समझता हूँ कि बिना गोली चलाए भी शायद मैं उनको मुन्तशिर कर सकता था" इस पर प्रश्न हुआ कि फिर आपने ऐसा क्यों न किया। उत्तर मिला:—They would have all come back and laughed at me, and should have considered a fool of myself "वे लौट आते और मेरी हँसी उड़ाते और मैं समझता हूं कि, मैं बेवकूफ़ बनता।" शायद इसी मौके के लिये शायर ने कहा था—"किसी की जान गई, आप की अदा ठहरी।" एक ब्रिटिश जनरल की शान पर सैंकड़ों युवा, बुढ़े और बालकों के शीस चढ़ जांय तो क्या परवा है, उसकी शान में फर्क न आना चाहिये!! उन ११ से १५ वर्ष की विधवाओं का चित्र अपने सामने लाइये जिनके पति सूली पर चढ़े या भून डाले गये और जिन के उदासीन मुखों के दर्शन मात्र ने मुझे, नहरू जी और मालवीय जी को आठ आठ आंसू रुलाया। एक युवक के नंग चूतड़ों पर बेतों की मार का हाल सुना कर एक वृद्ध ऐसा रोया कि उसकी घिग्घी बन्ध गई। सिरपुकर चौधरी बुग्गा की वीर रमणी का एक गोरे ने हाथ से खींच कर मकान से लाया जाता केवल घटना है।

मैंने इन घटनाओं का स्मरण आप के हृदयों में शोक और घृणा का भाव उभारने के लिये नहीं दिलाया। घृणा किस से दिलाऊं? क्या ब्रिटिश जाति से जिसने रिपन, ब्राइट, फासेट, ब्रौडला, वेडरबर्न, इस कांग्रेस के पिता ह्यूम, काटन और उनके बीसियों सहकारियों को उत्पन्न किया जो इस गिरी हुई जाति को उठाने में सहायता देते हुए ही समाप्त हुए? क्या उस जाति से जिसने हार्डिंग और मॉर्ले, और मांटगु को जन्म दिया, जिन से आगे भी बहुत सी सहायता मिलने की आशा है? परन्तु स्वार्थ के मैदें को छोड़ कर मैं पूछता हूं, कि जिस ने देवी बसन्ती और हार्नीमन, अज जुहरुफ़ और इनके बीसियों साथियों को उत्पन्न किया और जिसने भद्र-सम्पन्न सरल हृदय एंड्रयूज़ को भारत माता की गोद में दे दिया—उस ब्रिटिश-जाति से घृणा दिलाने के लिये मैंने आप की स्मरण शक्ति को नहीं प्रेरित किया है। और न मैं आपको व्यक्तियों से घृणा दिलाना चाहता हूं। व्यक्ति रूप अन्दर जो क्रोध और असाधुता के भाव हैं, वे ही हमारे शत्रु हैं। परन्तु क्या उन शत्रुओं पर घृणा और क्रोध और 'कीने' की सहायता से हम विजय पा सकेंगे? इसका एक कवि ने ठीक उत्तर दिया है:—

अक्रोधेन जयेत्क्रोधं, असाधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन, जयेत्सत्येन चानृतं॥

क्रोध को हम शान्ति से जीतें, असाधुता को साधु भाव से, कंजूसी को दान से और झूठ को सचाई से जीतने की आशा रक्खें।" जातियों की परस्पर की घृणा ने तो संसार के नाश की बुनियाद रक्खी है—उस घृणा का मैं समर्थक नहीं। न मैं ने आप को शोकातुर करने के लिये इन घटनाओं का वर्णन किया है। मेरा मतलब केवल यह बतलाने का है कि, जिस वेदना में से गुज़रने का पंजाब को सौभाग्य प्राप्त हुआ है उस से हम सब को क्या शिक्षा मिलती है।

इस वेदना का प्रथम फल हिन्दू-मुसलमानों का ईश्वरदत्त मिलाप है, जिसे स्थिर रखना जाति का प्रथम कर्तव्य है। इस मिलाप को स्थिर रखने के लिये दिलों को तीसरों के द्वेष से भी पाक रखना चाहिये। हिन्दू-मुसलमानों को एकता के स्थान में हिन्दुस्तानी मात्र के अन्दर एकता उत्पन्न कर के सारे संसार को अपनाना इस समय का मुख्य कर्तव्य है।

दूसरा फल इस वेदना का यह है कि, जाति को तप का गौरव मालूम हो गया। मार्शलला के दिनों में पता लगा कि, पुलिटिकल अधिकारों का शोर मचाने वाले यदि चरित्रहीन हो तो वह देश को रसातल में ले जाते हैं। इसलिये सब से बढ़ कर काम चरित्र संगठन का है जो जाति को अपने हाथ में लेना चाहिये।

तीसरा फल यह हुआ, कि जाति को व्यवस्था-बद्ध आन्दोलन के भाव का पता लग गया। जहां भी नेता बुद्धिमान, सहनशील और सत्य-परायण थे और जनता ने उनकी आज्ञाओं का पालन किया, उन स्थानों में बड़ा भारी बचाव हुआ और शीघ्र शांति स्थापित हो गई। और सब से बड़ा लाभ यह हुआ कि सहन शक्ति का गौरव प्रत्यक्ष हो गया। सब से बढ़ कर सहन शक्ति का प्रकाश जलियां वाले बाग़ में हुआ। इस पुत्र-पुष्प-फल-हीन (किन्तु अमर) वाटिका में युवा पुरुषों ने ही नहीं, बल्कि बूढ़ों और बालकों तक ने सत्य पर आरूढ़ हो कर घातक गोलों की वर्षा को फूलों की वर्षा समझा। इस स्थान की 'जलन' को हिन्दू-मुसलमान और सिक्ख वीर शहीदों के लहू ने मिल कर शान्त कर दिया है। यह भूमि अब "अमर-वाटिका" के नाम से प्रसिद्ध होगी क्योंकि इस पवित्र भूमि में जो मरे वह स्वयं अमर हो गये और हम सब को और आने वाली नसलों को अमृत-नगर में पहुंचने का सीधा रास्ता दिखा गये।

बहिनो और भाइयों! पश्चिमी परिभाषा में "पुलिटिकलमैन" जिसे कहते हैं, वह मैं नहीं हूं। अपने पुलिटिकल अधिकार लेने का जो आधुनिक मार्ग है उस का मुझे अनुभव नहीं और इस लिये उस में मेरा दखल देना धृष्टतामात्र होगा। कितना, किस दर्जे का, किस क्रम से स्वराज्य मिलना चाहिये और किस प्रकार उस के लिये यत्न करना चाहिये, यह देश के राजनैतिक नेता ही जानते हैं, इस लिये इस का विचार मैं उन्हीं पर छोड़ता हूं। और इस काम के लिये मैं मुनासिब साधन उन विविध राजनैतिक सभाओं को समझता हूं जो इस समय, कई कारणों से, स्थापित हो चुकी हैं। और जिन के नेता उन को दिनों दिन उन्नत करने में लगे हुए हैं। परन्तु इस जातीय महासभा के सामने, मैं कुछ अपने विचार रखना चाहता हूं जो मेरे क्रियात्मिक अनुभव का निचोड़ है।

इस जातीय महासभा का प्रधान काम अब तक यह रहा है कि स्वदेश के पुलिटिकल-अधिकारों को विदेशी गवर्नमेन्ट से प्राप्त करने के लिए रेज़ोल्यूशन मात्र पास करे, परन्तु जहां एक ओर उन पास किये हुए प्रस्तावों (Resolutions) को अमली जामा पहिनाने के लिए बहुत कम यत्न हुआ है वहाँ कौम की असली बुनियाद डालने और उस कौम को मिलनेवाले अधिकारों को पचाने के योग्य बनाने का बहुत कम क्या-इस जातीय महासभा की तरफ से कुछ भी यत्न नहीं हुआ। स्वराज्य प्राप्त करके उसे पचाने के लिए पहिली ज़रूरत यह है कि कौम

तीन दल हैं और तीनों की बात एक दूसरे को काटती है। परन्तु अपने २ खयाल में तीनों सच्चे हैं। नरम यदि सचिव-मान्टेगु के प्रस्तावों का समर्थन न करते तो उनके पास सुधार स्कीम के विरोधियों के आक्षेपों का उत्तर देना कठिन हो जाता। परन्तु क्या यह सच नहीं कि इस सुधार स्कीम को एक दम से पास कराने के लिए "कांग्रेस की एक शिकायत आज के अधिवेशन से पहिले दूर करना" ही मिस्टर बानरलाने बतलाया था। मिस्टर मानटेगु भी सच्चे हैं क्योंकि उन्हीं ने जो कुछ ब्रिटेश पार्लमेंटसे भारत को दिलवाया है यह उन्हीं के दृढ़ संकल्प का नतीजा है—भारत की नरम और गरम पार्टी तो उनकी शतरञ्जी चालों के मोहरे मात्र थे।

जब यह हाल है तो लड़ाई काहे की। पुराने पठानों की तरह दोनों मूछों पर ताव दे रहे हैं और मातृ भूमि के विरोधी उनकी खिल्ली उड़ा रहे हैं। यह घरू युद्ध कैसे दूर हो? सुधार स्कीम अब विवादास्पद विषय नहीं रहा। नरमों को उसे स्वीकार करना और गरमों का उसे अस्वीकार करना—दोनों निरर्थक होंगे हैं। बुरी है या भली, पूर्ण-सुधार स्कीम हम पर लागू हो चुकी है। नरमों से तो इस पर कोई प्रश्न नहीं हो सकता परन्तु मैं गरमों से पूछता हूँ कि आपके अस्वीकार करने के अर्थ क्या हैं! क्या आप इस पास हुए कानून का सर्वथा बहिष्कार (Complete boycott) करने को तय्यार हो? क्या आप यत्न न करोगे कि लेजिस्लेटिव काउन्सलों में आपके चुने हुए, आपका पक्ष समर्थन करने वाले प्रतिनिधि बैठें? यदि सारी जाति एक सम्मत होकर, इन मिले हुए अधिकारों से उपेक्षा करने को तय्यार होती तब तो अस्वीकार करने के कुछ अर्थ भी हो सकते। परन्तु इस समय तो यह असम्भव है? झगड़ा तै हो गया है क्यों कि लोकमान्य तिलक महाराज ने व्यवस्था दे दी है कि "जो मिला है उसे ले लो और शेष के लिए व्यवस्थित आन्दोलन (Constitutional agitation) जारी रक्खो"।

भारत में राष्ट्रियता के भाव आदि संचारकों में से तिलक महाराज का ऊँचा दर्जा है, और कौन भारत का सपूत है जिसने बहादुर तिलक से बढ़ कर माता की शान की रक्षा के लिए सहन किया है? क्या "मातृ सेवक-सेना" के सैनिक बूढ़े सेनापति की व्यवस्था के आगे सिर न झुकायंगे?

अब रास्ता साफ़ हो गया। नरम और गरम दोनों मिले अधिकारों को लेने में सहमत हैं। मत भेद इतना भी किसकी कृपा से मिला। मैं उस बहु पक्ष की सेवा में, जिसके हाथों में इस समय कांग्रेस की बाग डोर है, एक निवेदन करता हूँ। आपकी शक्ति बड़ी है। बुद्धि और नीति का चाहे आपके कुछेक माडरेट लिबरल भाइयों ने ठेका ले रक्खा हो लेकिन संख्या और बल में आपका पाया इस समय ऊंचा है। सामने शत्रु नहीं हैं, एक ही माता के पुत्र आप के भाई हैं। उन में कुछ ऐसे पुराने योद्धा भी हैं जिन्हों ने माता की सेवा में बहुत कुछ सहन किया है। क्या स्वर्गवासी गोखले-मातृ सेवा में मुग्ध उसी चिंता में प्राण देने वाले गोखले—को आप भुला सके हो? और उस राजनैतिक संन्यासी के त्यागी उत्तराधिकारी साधुस्वभाव श्री निवास शास्त्री की तुम उपेक्षा कर सके हो। आज समय के फेरन चाहे कुछ पलटा दे दिया हो परन्तु क्या राजनैतिक आन्दोलन के प्रथमवीर सिपाही श्री सुरेन्द्रनाथ बन्दोपाध्याय का तुम तिरस्कार करोगे?

झगड़ा एक पल में निपटा है, यदि एक संन्यासी का कहना मान लो। तुम मूंछ नीची करलो और जो कुछ मिला है उसके संभालने में लग जाओ।

इस सम्बन्ध में आपका कर्त्तव्य है जिसे मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। यह सब सच है कि हमारी जाति को उसके अधिकारों से बृटिश शासकों ने मुद्दत तक वंचित रक्खा, यह सच है कि इस देश के साथ कई बार विश्वास-घात हुआ, यह सच है कि इस समय भी बृटिश जाति के अन्दर ऐसे लोग हैं जिन्होंने आपके पूलिटिकल अधिकारों को दबाने का ही नहीं बल्कि हमारे बचे खुचे मानवी अधिकारों तक को छीनने का यत्न किया है, परन्तु क्या कृपालों की खुदगर्जी और बे-इनसाफ़ी को देख कर सुपात्रों के धर्मभाव और न्याय को भूल जाना चाहिए? मिस्टर मान्टेगु ने इस समय वह काम किया है जो संसार के इतिहास में सदा के लिए यादगार रहेगा। कहा जा रहा है कि "मि० मान्टेगू ने क्या किया है? किसी हद तक उन्हों ने अपना कर्त्तव्य पालन किया है और जो कुछ भी किया है अपने साम्राज्य की भलाई के ख्याल से किया है। अब उनका धन्यवाद करने की क्या ज़रूरत है? मैं पूछता हूं कि संसार में कितने व्यक्ति हैं जो अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं? क्या यह सच नहीं है कि आप में से जितने पूलिटिकल अधिकार पाने के लिए अधिक शोर मचाते हैं वे भारत के साढ़े छ करोड़ अन्याय से पीड़ित अपने भाइयों को अछूत समझ कर उनसे घृणा का भाव दूर नहीं कर रहे। और कितने हैं जो अपने उन दीन भाईयों को अपनाते है?

जाति के एक अन्त्यज को अपनाने के लिये आप "मोहनदास कर्मचन्द गांधी" को देवता मान सकते हो, तो घोर विरोधों का मुकाबला करते हुए एक रसातल को गई हुई जाति को, किसी अंश तक उसके अधिकार दिलाने में कृत-कार्यता प्राप्त करने के उपलक्ष में क्या आप मिस्टर मान्टेगू का वाणी से भी धन्यवाद न करेंगे? और जिस ब्रिटिश पार्लिमेन्ट ने अपने कर्त्तव्य को (चाहे वह किसी स्वार्थ के विचार से क्यों न हो) समझा है, क्या हम उसे साधुवाद न करेंगे? बहिनों और भाइयो! भारत की प्राचीन सभ्यता के नाम पर मैं आप सब से अपील करता हूं कि इस अपूर्व अवसर को हाथ से न जाने देना और कृतघ्नता का दाग माथे पर न आने देना।

परन्तु इस कृतज्ञता प्रकाश करने का यह मतलब नहीं है कि, आप अपने शेष अधिकारों के लिये आन्दोलन करना छोड़ दो। मिस्टर मान्टेगू के कृतज्ञ होते हुए भी इस अंश में उन से मत-भेद आवश्यक है। परन्तु एक बात मैं अवश्य कहूंगा कि कहीं आन्दोलन में फंस कर मिले हुए अधिकारों का ही नाश न हो जाय। एक शायर का कलाम बिलकुल इसबे हाल है:—

> धोने की रिफ़ार्मर है जा बाक़ी,
> कपड़े पै है जब तलक कि धब्बा बाक़ी।
> धो शौक़ से धब्बे को पै इतना न रगड़,
> धब्बा रहे कपड़े पै न कपड़ा बाक़ी॥

अब मैं उस घटना की ओर आता हूं जो आप को स्वदेश के दूर से दूर कोने से खींच कर लाई। जिस देश परीक्षा में से गुज़रा है, उसे यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं। जिस घटना ने पंचनद की पुरानी पाक सरज़मीन से चंगेज़ खां और नादिरशाह के अत्याचारों को विस्मरण करा दिया उस की बुनियाद भारत की असली और बनावटी—दोनों प्रकार की राजधानी देहली नगर में रक्खी गई थी। ३० मार्च स० १९१९ ई० के तीसरे पहर पहिली गोली देहली में चली और उस समय पता लगा कि जिस देश को बे-जान समझा जाता है उस में कितनी जान है। हन्टर कमेटी के आगे जो शहादत गुज़री है वह क्या जाहिर करती है? उस से मालूम होता है कि, इस सदियों से सोई हुई जाति के अन्दर सच्ची वीरता का भाव भी सोया हुआ ही था, मर नहीं गया था। भारतवर्ष के पुनरुद्धार के लिये पहिला रक्त पाण्डवों की पुरानी राजधानी की भूमि पर गिरा और उस रक्त ने भारतमाता के प्रधान पुत्रों (अर्थात् हिन्दुओं और मुसलमानों) के सदियों से जुदा हुए दिलों को जोड़ दिया। ३१ मार्च को पहला जनाजा पचास हज़ार मातमदारों के साथ कब्रस्तान की तरफ़ चला और वहां शहीद की लाश पर मुसलिम इमाम, हिन्दू-मुस्लिम एकता के शैदा, इस समय के मेरे सब से प्यारे भाई, हकीम अजमलखां से मेरी भेंट हुई। मुसलमान शहीद का जनाजा और हिन्दू बराबर कन्धा दे रहे! यह भी एक विचित्र दृश्य था। शहीद की कब्र पर उस के खून के पैवन्द से, बरसों के बिछुड़े हुए दिल एक दूसरे से जुड़ गये।

फिर जब शाम को दो और जनाजे कब्रस्तान की ओर चलते कर के मैं तीन अर्थियों के साथ श्मसान भूमि में पहुंचा और दाह कर्म के पीछे परमेश्वर के दरबार में शांति के लिये प्रार्थना की और हिन्दू मुसलमानों को इस ईश्वरदत्त एकता को स्थिर रखने के लिये अपील की तो एक सिक्ख भाई ने कहा—"हम पर क्यों जुल्म करते हो! सिक्ख भी कौम के साथ हैं।" उस हज़ारों के मजमे में उस वक्त सैकड़ों आंखों से प्रेम की जलधारा बह रही थी। और जब मैं श्मशान भूमि से चल दिया तो (पूर्वीय तपस्वी महात्मा मुन्शीराम के सच्चे चेले और भारत माता के प्रेम-पुत्र, मेरे प्रिय भाई महाशय चार्ली ऐन्ड्रयूज के धर्म-भ्राता) प्रिंसिपल "सुशील कुमार रुद्र" मुझे आकर गले से मिले और कहा—"मातृ भूमि के निरपराध पुत्रों पर अत्याचार देख नहीं सकता। मेरा हृदय जाति के साथ है और प्रत्येक सच्चा ईसाई आप के साथ है।" परमेश्वर इस मरु भूमि में बहुत से ऐसे राजर्षि

रूपी दुष्ट व्यसनों के दलन करनेवाले रुद्र उत्पन्न करे, यह मेरी हार्दिक याचना है।

४ अप्रैल स० १९१९ ई० का दिन आया जब जुमा-मसजिद देहली में खुदा की शान दिखाई दी। उस के पश्चात् १८ अप्रैल की रात तक (जब तक कि पुलिस का राज फिर से स्थापित न हुआ) दिल्ली नगर में रामराज रहा। यह ठीक है कि ३ मार्च के प्रात काल से १८ अप्रैल की रात तक एक ताला नहीं टूटा, एक मार-पीट नहीं हुई, एक जेब नहीं कतरी गई-और तो क्या, जुएखाने बन्द रहे, शराबखानों में कोई विरला आदमी ही दिखाई देता था, और प्रसिद्ध गुण्डों ने भी देवियों को मां, बहिन और बेटी समझ कर उन को अभयदान दे छोड़ा था।

देहली से यह प्रेम-मयी वायु सारे पंजाब में फैल गई। एकता और मिलाप की लहर बिजली की तरह सारे देश में घूम गई। मस्जिद और मन्दिर में कुछ भेद न रहा। ऐसे समय में सचाई और सहन-शीलता का सन्देश देने के लिये महात्मा गांधी देहली की ओर चले। जिन हुकूमत के नशे में चूर मनुष्यों का जीवन ही स्वार्थ का स्वरूप हो, उन की समझ में न सत्य का गौरव आ सकता और नहीं वह सत्याग्रह की शान का समझ सकते हैं। स्वार्थ का इन्द्रासन डांवां डोल हो गया। इस दुबले, बीमार, मुलहनी जिस्म के अन्दर वाले आत्मा के तेज को दुनियादार स्वार्थ न सहन कर सका। जिन बहादुर ब्रिटिश जनरलों और गम्भीर नीतिमान-ब्रिटिश शासकों ने एक तिहाई दुनियां को जीत कर जर्मन साम्राज्य की शक्ति खाक में मिला दी थी, उसके योद्धा इस नई शक्ति के उद्भव से दहल गये, और उसी का नतीजा पंजाब का घोर उपद्रव है। अराजकता का राज हो गया, मनुष्य की जान का कुछ मूल्य न रहा, जेलखाने भर दिये गये, बोलना अपराध हो गया, नंगे चूतड़ों पर कोड़े खा कर चिल्लाना पाप हो गया, इज्जतदारों ने ख्याली इज्जत को बचाने के लिये पुलिसरूपी यमदूतों के घर भर दिये और साध्वी सतियों को अपनी रक्षा कठिन हो गई। जलियांवाले बाग की घटना को सामने लाओ और जनरल डायर के कथन को याद करो:—Yes, I think it quite possible that I could have dispersed them perhaps even without firing ' हां, मैं समझता हूं कि बिना गोली चलाए भी शायद मैं उनको मुन्तशिर कर सकता था" इस पर प्रश्न हुआ कि फिर आपने ऐसा क्यों न किया। उत्तर मिला:—They would have all come back and laughed at me, and should have considered a fool of myself "वे लौटे आते और मेरी हंसी उड़ाते और मैं समझता हूं कि, मैं बेवकूफ बनता।" शायद इसी मौके के लिये शायर ने कहा था—"किसी की जान गई, आप की अदा ठहरी।" एक ब्रिटिश जनरल की शान पर सैकड़ों युवा, बुड्ढे और बालकों के शीस चढ़ जांय तो क्या परवा है, उसकी शान में फर्क न आना चाहिये!! उन ११ से १४ वर्ष की विद्यार्थियों का चित्र अपने सामने लाइये जिनके पति सूली पर चढ़े या भून डाले गये और जिन के उदासीन मुखों के दर्शन मात्र से मुझे, नेहरू जी और मालवीय जी को आठ आठ आंसू रुलाया। एक युवक के नंगे चूतड़ों पर बेतों की मार का हाल सुन कर एक वृद्ध ऐसा रोया कि उसकी घिग्घी बन्ध गई। सिरपुरुष चौधरी बुग्गा की वीर रमणी का एक गोरे के हाथ से खींच कर मकान से लाया जाना केवल घटना है।

मैंने इन घटनाओं का स्मरण आप के हृदयों में शोक और घृणा का भाव उभारने के लिये नहीं दिलाया। घृणा किस से दिलाऊं? क्या ब्रिटिश जाति से जिसने रिपन, ब्राइट, फासेट, ब्रैडला, वेडरबर्न, इस कांग्रेस के पिता ह्यूम, काटन और उनके सैकड़ों सहकारियों को उत्पन्न किया जो इस गिरी हुई जाति को उठाने में सहायता देते हुए ही समाप्त हुए? क्या उस जाति से जिसने हार्डिंग और मोर्ले, और मांटगु को जन्म दिया, जिन से आगे भी बहुत सी सहायता मिलने की आशा है? परन्तु स्वार्थ के भौरे को छोड़ कर मैं पूछता हूं, कि जिस ने ईर्षा, बगमी और हार्निमन, जज बुड्राफ और इसके सैकड़ों साथियों को उत्पन्न किया और जिसने श्रद्धा-सम्पन्न सरल हृदय ऐन्ड्रूज को भारत माता की गोद में दे दिया—उस ब्रिटिश-जाति से घृणा दिलाने के लिये मैंने आप की स्मरण शक्ति को नहीं छेड़ा है। और न मैं आपको व्यक्तियों से घृणा दिलाना चाहता हूं। व्यक्ति सब हमारे भाई हैं, उन में जो दोष घुस जाते हैं वे ही हमारे शत्रु हैं।

"ओडायर" "डायर", "जानसन" और "ब्रोजेयन" ये सब हमारे ही तो भाई हैं। एक पिता ही की तो सब सन्तान हैं। उनके अन्दर जो क्रोध और असाधुता के भाव हैं, वे ही हमारे शत्रु हैं। परन्तु क्या उन शत्रुओं पर घृणा और क्रोध और 'कीने' की सहायता से हम विजय पा सकेंगे? इसका एक कवि ने ठीक उत्तर दिया है:—

> अक्रोधेन जयेत्क्रोधं, असाधुं साधुना जयेत्।
> जयेत्कदर्यं दानेन, जयेत्सत्येन चानृतं॥

क्रोध को हम शान्ति से जीतें, असाधुता को साधु भाव से, कंजूसी को दान से और झूठ को सचाई से जीतने की आशा रक्खें।" जातियों की परस्पर की घृणा ने तो संसार के नाश की बुनियाद रक्खी है—उस घृणा का मैं समर्थक नहीं। न मैं ने आप को शोकातुर करने के लिये इन घटनाओं का वर्णन किया है। मेरा मतलब केवल यह बतलाने का है कि, जिस वेदना में से गुज़रने का पंजाब को सौभाग्य प्राप्त हुआ है उस से हम सब को क्या शिक्षा मिलती है।

इस वेदना का प्रथम फल हिन्दू-मुसलमानों का ईश्वरदत्त मिलाप है, जिसे स्थिर रखना जाति का प्रथम कर्तव्य है। इस मिलाप को स्थिर रखने के लिये दिलों को तीसरों के द्वेष से भी पाक रखना चाहिये। हिन्दू-मुसलमानों की एकता के स्थान में हिन्दुस्तानी मात्र के अन्दर एकता उत्पन्न कर के सारे संसार को अपनाना इस समय का मुख्य कर्तव्य है।

दूसरा फल इस वेदना का यह है कि, जाति को तप का गौरव मालूम हो गया। मार्शलला के दिनों में पता लगा कि, पुलिटिकल अधिकारों का शोर मचाने वाले यदि चरित्रहीन हो तो यह देश को रसातल में ले जाते हैं। इसलिये सब से बढ़ कर काम चरित्र संगठन का है जो जाति को अपने हाथ में लेना चाहिये।

तीसरा फल यह हुआ, कि जाति को व्यवस्था-बद्ध आन्दोलन के भाव का पता लग गया। जहां भी नेता बुद्धिमान, सहनशील और सत्य-परायण थे और जनता ने उनकी आज्ञाओं का पालन किया, उन स्थानों में बड़ा भारी बचाव हुआ और शीघ्र शांति स्थापित हो गई। और सब से बड़ा लाभ यह हुआ कि सहन शक्ति का गौरव प्रत्यक्ष हो गया। सब से बढ़ कर सहन शक्ति का प्रकाश जलियां वाले बाग में हुआ। इस पत्र-पुष्प-फल-हीन (किन्तु अमर) वाटिका में युवा पुरुषों ने ही नहीं, बल्कि बूढ़ों और बालकों तक ने सत्य पर आरूढ़ हो कर घातक गोलों की वर्षा को फूलों की वर्षा समझा। इस स्थान की 'जलन' को हिन्दु-मुसलमान और सिक्ख वीर शहीदों के लहू ने मिल कर शान्त कर दिया है। यह भूमि अब "अमर-वाटिका" के नाम से प्रसिद्ध होगी क्योंकि इस पवित्र भूमि में जो मरे वह स्वयं अमर हो गये और हम सब को और आने वाली नसलों को अमृत-नगर में पहुंचने का सीधा रास्ता दिखा गये।

बहिनो और भाइयो! पश्चिमी परिभाषा में "पुलिटिकलमैन" जिसे कहते हैं, वह मैं नहीं हूं। अपने पुलिटिकल अधिकार लेने का जो आधुनिक मार्ग है उस का मुझे अनुभव नहीं और इस लिये उस में मेरा दखल देना धृष्टतामात्र होगा। कितना, किस दर्जे का, किस क्रम से स्वराज्य मिलना चाहिये और किस प्रकार उस के लिये यत्न करना चाहिये, यह देश के राजनैतिक नेता ही जानते हैं, इस लिये इस का विचार मैं उन्हीं पर छोड़ता हूं। और इस काम के लिये मैं मुनासिब साधन उन विविध राजनैतिक सभाओं को समझता हूं जो इस समय, कई कारणों से, स्थापित हो चुकी हैं। और जिन के नेता उन को दिनों दिन उन्नत करने में लगे हुए हैं। परन्तु इस जातीय महासभा के सामने मैं कुछ अपने विचार रखना चाहता हूं जो मेरे क्रियात्मिक अनुभव का निचोड़ है।

इस जातीय महासभा का प्रधान काम अब तक यह रहा है कि स्वदेश के पुलिटिकल-अधिकारों को विदेशी गवर्नमेंट से प्राप्त करने के लिए रेजोल्यूशन मात्र पास करे, परन्तु जहां एक ओर उन पास किये हुए प्रस्तावों (Resolutions) को कारर्वाई में लाने के लिए बहुत कम यत्न हुआ है वहीं कौम की असली बुनियाद डालने और उस कौम को चिलानेवाले अधिकारों को बचाने के [illegible] बनाने का बहुत कम काम-इस जातीय महासभा की तरफ से कुछ भी काम नहीं हुआ। स्वराज्य प्राप्त करके उसे चलाने के लिए जरूरी प्रश्न यह है कि कौम का यह एक बड़ा भारी सवाल है, जिस पर गौर कि उसका आश्रय हो कर उसके अपने शरीर, इन्द्रियां और आत्मिक—इनके वश में करनेवाला—मन [illegible]। यह सब हो जब एक और जातीय—शिक्षा पद्धति जारी कर कौम की

के हाथों में हो जाय और दूसरी ओर जाति के माता और पिता अपने शरीरों, इन्द्रियों और मनों को शुद्ध करके अपनी सन्तान के सामने, पैरवी करने के लिए, उत्तम मिसाल रक्खें। मैंने देश की आचार तथा समाज सम्बन्धी सेवा करते हुए गत २६ वर्षों में अनुभव किया है कि जहाँ प्रत्येक शिक्षित पुरुष कालिज से निकलते समय देश और धर्म सेवा का मानसिक व्रत धारण करके निकलता है वहां परीक्षा के समय एक हज़ार में से शायद ही एक साबित कदम रहता हो। ऐसे हिन्दू के देश-भक्त उँगलियों पर गिने जा सकते हैं, जो विदेशी शासकों से प्रलोभित किए जाने पर भी देश के हित के लिए उपाधि (Title) रूपी सुनहरी जंजीरों को तोड़ के फेंक दें। वाइसराय की अनुचित धमकी के उत्तर में "सर" की उपाधि को सिर से उतार कर फेंक देने वाले "डाक्टर सुब्रह्मण्य" देश में कितने हैं? अपनी जाति पर अत्याचार करने वाले पिशाच भाव का जिस गवर्नमेंट के चाकरों ने स्वजाति के गौरव को नष्ट करने में कुछ कसर न छोड़ी, उसकी दी हुई उपाधि के लिए भी धारण किये रखना पाप समझने वाले भारत के सूर्य, कवि रवीन्द्र से कितने देवता हैं? और सच्चे राज-धर्म का पालन करनेवाले, मनुष्य और पशु के भय से मुक्त, वैदिक निर्भयता के उपदेश पर अमल करनेवाले, स्वदेशको पद दलित करनेवाले शासकों की श्रेणी को एक दम छोड़ देनेवाले धीर शंकर नायर से सिंह पुरुष कितने हैं? देवियो और भारत माता के सुपुत्रों! यदि जाति को स्वतंत्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बन कर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचारी ब्रह्मचारी, हों शिक्षक, और कौमी हो शिक्षापद्धति (National scheme of education) तब ही कौम की ज़रूरतों को पूरा करने वाले नौ-जवान निकलेंगे, नहीं तो इसी तरह पर आपकी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम निकलती रहेगी।

परन्तु यह पहली ज़रूरत पूरी होना कठिन है जब तक कि कौम की बुनियाद न पड़ ले। मैं इण्डियन नेशनल कांग्रेस की वेदी पर खड़ा हूं और इस लिये शायद यह कहना सिडीशन समझा जाय कि ३० मार्च सन १९१९ से पहिले तक कौम की बुनियाद नहीं पड़ी थी, परन्तु मैंने और जिन निर्भय, देश सेवक देवताओं का मैं साथी हूं उन्होंने मशीनगनों (Machine-guns) और हवाई जहाज़ों (Aeroplanes) की मालिक गवर्नमेंट की धमकी पर भी सत्य को कभी नहीं दबाया तब आप दयालु बहिनों और भाइयो! आगे मुझे सत्य के प्रकाश करने में क्या सन्देह हो सकता है! मेरा मन्तव्य है कि ३० मार्च १९१९ ई० तक 'नेशन' का नाम ही नाम था, उसकी बुनियाद नहीं रखी गई थी। जो काम हिन्दू मुसलमानों के समझदार नेताओं की ३४ वर्षों की मेहनत पूरा न कर सकी उसकी बुनियाद, परमेश्वर की कृपा से, देहली नगर में ३० मार्च की शाम को रक्खी गई और १३ अप्रैल की शाम को जब जलियाँवाले बाग़ में हिन्दू मुसलमान और सिक्ख, बाल, युवा और वृद्धों का रक्त मिल कर बहा उस समय जातीयता के महल की कुरसी भी आकर खड़ी हो गई। अब कसर केवल एक है जिसे विचार कीजिये।

लण्डन नगर में भारत की रिफ़ार्म स्कीम कमेटी के सामने 'हैल्वेशन फौज' के जेनरल-बूथ-टकर (Booth-Tucker) साहब ने कहा था कि, भारत के साढ़े छै करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहियें और उसके लिये हेतु दिया था—

Because they are anchor-sheets of the British Government.

इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिये और सोचिये कि किस प्रकार आप के साढ़े छः करोड़ भाई—आप के जिगर के टुकड़े जिन्हें आप ने काट कर परे फेंक दिया है—किस प्रकार भारत माता के साढ़े छः करोड़ पुत्र एक विदेशी गवर्नमेंट रूपी जहाज़ के लंगर बन सकते हैं। मैं आप सब बहिनों और भाइयों से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय मन्दिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेमजल से शुद्ध कर के प्रतिज्ञा करो कि "आज से ये साढ़े छः करोड़ हमारे लिये अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे भाई और बहिन हैं। उन की पुत्रियां और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे, उनके गृहस्थ नर-नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे और हमारे स्वतंत्रता-प्राप्ति के युद्ध में कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही जातीय उद्देश को पूरा करेंगे।" हे देवियो और सज्जन पुरुषो! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो!

देहली नगर की जुमामसजिद में मैंने यह दृश्य देखा था। जिसका स्वप्न मुझे २६ वर्षों से आ रहा था और क्या आश्चर्य है, कि उसी परम पिता और जगत् की दयालु माता की कृपा से मुझे अपने दूसरे स्वप्न का दृश्य भी जागृत अवस्था में देखना नसीब हो। जब यह दिन आवेगा तो आप को अपने विदेशी खान पान, अपने विदेशी पहिरावे और अपने विदेशी भोग जीवन (life of luxury) को तिलांजली देनी ही और कोई भी हुन नहीं बन सकेगी जो इस जातीय मण्डप सभा के सभ्यों को अपने नीचे मज़दूर कर सके। जाति के बिखरे हुए अंग मिल कर फिर से जातीय भवन खड़ा हो जाय और भारत सन्तान की शिक्षा जाति के ही अधिकार में हो, यह जाति की स्वतन्त्रता का मूल मन्त्र है। आओ, बहिनो और भाइयो!! उस स्वर्गीय समय की एक झलक देखने के लिये, परमेश्वर के पवित्र अदृश्य चरणों में अपने हृदय रूपी शीश नवा दें। कौन परमेश्वर?

> "काँटा है हरिक जिगर में खटका,
>
> हलका है हरिक गोश में खटका तेरा।
>
> माना नहीं जिसने तुझ को जाना है जरूर
>
> भटके हुए दिल में भी खटका तेरा॥"?

हे! गोरे और काले के मालिक! हे राय और रंक के स्वामी! जातीय महासभा में अपनी सच्ची रोशनी का प्रकाश कर जिससे महासभा के जाति के नेता सत्य का यथार्थ स्वरूप देखें और उस रोशनी में अपने और बेगाने के साथ एकसा न्याय का बर्ताव कर सकें!!!

कभी नहीं हारना।

(लेखक—[illegible])

कहीं नहीं हारना, [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible] कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ २ ॥
[illegible]
[illegible] कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ ३ ॥
[illegible]
[illegible] कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ ४ ॥

दीन ईमान माल, धर्म प्रान माल,
मरें भी कुर्बान [illegible], कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ ५ ॥
[illegible] दे और लाल, [illegible] दे और लाल,
[illegible] दे [illegible], कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ ६ ॥
[illegible], [illegible] की [illegible],
[illegible], कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ ७ ॥
[illegible], [illegible],
[illegible], कभी नहीं हारना ॥ भाई० ॥ ८ ॥

* [illegible]

प्रजनन शास्त्र ।

(लेखक—श्रीयुत मदनमोहन शर्मा, इन्दौर ।)

जनन शास्त्र उस शास्त्र को कहते हैं जिस में उन नियमों व अवस्थाओं का वर्णन हो जो कि भविष्य की प्रजा की मानसिक और शारीरिक अवस्था को एवं जातीय गुणों को सामाजिक सत्ता के नीचे उन्नत करें, अथवा अवनत स्थिति को पहुंचावें। जीव शास्त्र (Biology) के सिद्धान्तों का मनुष्य समाज पर प्रयोग करने से प्रजनन शास्त्र का जन्म हुआ है।

डार्विन के विकाशवाद के अनुसार मनुष्य को वर्तमान आकार में ईश्वर ने नहीं बनाया, परन्तु हज़ारों वर्षों के परिवर्तन के पश्चात् मनुष्य अपनी वर्तमान स्थिति और रूप को प्राप्त हुआ है। प्राणियों और वनस्पतियों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है, परन्तु भोजन के और रहन सहन के साधन उतने नहीं बढ़े हैं। परिणाम यह हुआ है कि प्रत्येक व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों के साथ जीवन-विग्रह आरम्भ होता है। जो बलवान होते हैं वह ही इस संसार में जीवित रहते हैं और अपनी संतति भी छोड़ जाते हैं। प्रकृति का यह नियम है कि वह प्राणियों को योग्य जीवन और दीर्घ जीवन और सुखमय जीवन व्यतीत करने देने की इच्छा करती है। अपने इस आशय की पूर्ति के लिये उस को अयोग्य जीवों, वनस्पतियों का संहार करना पड़ता है। बलवानों और योग्य प्राणियों की ओर दयालु बनने के लिये उसे यह कठोर और शोचनीय कार्य करना पड़ता है। मनुष्य का शरीर बुद्धि, और उसकी नीति इस भयंकर लड़ाई के कारण ही इतनी विकसित हुई है।

बदल गया है। बालक के विकाश का कारण उस के अन्तर्गत स्थित है, यह जीव शास्त्र (Biology) का एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। केवल पोषण मिलने से, अथवा सर्दी गर्मी से बचाव रखने के कारण ही वह नहीं बढ़ता, परन्तु वह उसके अन्तर्गत पूर्व संचित जीवन और शक्ति के कारण बढ़ता है। जीवन स्वयं उत्पन्न होता है, और उत्पन्न करने की शक्ति रखता है। आस पास की परिस्थिति तो विकाश में केवल सहायक होती है, शिक्षा तो विकाश में मार्गदर्शक का कार्य करती है, परन्तु विकाश के मुख्य कारण अन्तर्गत ही रहते हैं। जल, वायु भोजन, शिक्षा, उत्तम समाज इत्यादि आस पास की परिस्थिति आन्तरिक गुणों को प्रदर्शित और विकासित करने में सहायक होती है। शिक्षा गुणों को उत्पन्न नहीं कर सकती, परन्तु उन गुणों को जो कि प्रत्येक व्यक्ति में जन्म से ही होते हैं, उनको बाहर प्रगट कर देती है। जो गुण माता पिता से व गोती में मिलते हैं, उनको शिक्षा विकसित करती है। उत्तम पैतृक गुण और उत्तम शिक्षा (Good nature and good nurture) यह दोनों आवश्यक हैं। दोनों में से यदि एक भी न हो तो विकाश नहीं हो सकता।

पहिले बहुत से मनुष्यों का यह विश्वास था कि शिक्षा सम्बन्धी और आर्थिक कारणों से ही मनुष्यों में भेद पाया जाता है। यदि सब को बराबर २ शिक्षा मिले, तो सब एक समान हो जायेंगे और सामाजिक भेद नहीं रहेगा। परन्तु भूल से ही बालकों के अन्तर्गत जो भिन्नता होती है उसको वह भूल जाते हैं। शिक्षा तो, इसके विपरीत, भिन्नता बढ़ाती है। पत्थर को अलग फेंक देती है और हीरे को

के लिये व्यर्थ हो जाता है। कपिल और कणाद, पतञ्जलि और शंकराचार्य आदि ऋषियों की आत्म विद्या को समझने और उसका दूर करने के लिये जातीय गुणों के विकाश की आवश्यकता है। जातीय विकाश से ही आत्म विकाश स्थिर रह सकता है परन्तु आत्म विकाश जातीय हीनता की न्यूनता को पूरा नहीं कर सकता। यदि किसी राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर आरूढ़ होना है, तो यह तब ही संभव हो सकता है जब उत्तम माता पिता का चुनाव हो।

—हरिश्चन्द्र

लार्ड सिंह आफ़ रायपुर।

[ले०-डा० विश्वनाथ मुकर्जी, एम् एम० एम०]

जन्म।

संसार-प्रसिद्ध कवि-सम्राट् रवीन्द्र बाबू के सुप्रसिद्ध बोलपुर (शांति-निकेतन) विद्यालय के निकटवर्ती, वीरभूमी ज़िलान्तरगत, रायपुर ग्राम का एक गाँव है। इसी गाँव के एक बहुत बड़े कुलीन कायस्थ-वंश में सन् १८६३ ई० की २४ वीं मार्च को स्वनामधन्य लार्ड सत्येन्द्र प्रसन्न सिंह का जन्म हुआ था। कहते हैं कि जिस समय ईस्ट इण्डिया रेलवे वाले देश के इस भाग में रेलवे-लाइन खोल रही थी, उसी समय लार्ड सिंह के पूर्व पुरुषों में से बाबू लालचाँद सिंह मेदिनीपुर ज़िलान्तरगत चन्द्रकोण ग्राम से उठ कर रायपुर में आ बसे और अपने साथ २ एक हजार जुलाहों को भी लेते आये। यह भी कहा जाता है कि उन जुलाहों द्वारा कपड़े बुना २ कर आप ने उस ज़माने के ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एजेन्ट, मिस्टर चीक (Mr Cheek), के हाथ उन्हें बेचा और इस प्रकार खूब धन कमाया। इसी समय सिंह वंश के ऐश्वर्य की नींव पड़ी। लेकिन यह भी सुना गया है कि इन के पूर्व पुरुषों ने मुसलमानी राज्य में भी बड़े २ उहदे प्राप्त किये थे। इस लिए यह कहना अत्युक्ति न होगी कि कुलीन वंश के साथ साथ लार्ड सिंह एक समृद्धशाली वंश में उत्पन्न हुए हैं। रायपुर में अब तक लार्ड सिंह के वंशज के पुराने मकानात मौजूद हैं और यह मकानात असल शाही महल के मालूम होते हैं। सिंह जी के पिता का नाम था श्रीयुत बाबू सितिकंठ सिंह। इन के सात लड़के और ... लड़कियाँ थीं, जिन में तीन का देहान्त हो गया। बाबू सितिकण्ठ अपने ज़माने के एक विख्यात मुसिफ थे और पीछे से उन्नति करते करते आप सदर अमीनी की पदवी तक पहुँच गये थे। उन्हों ने जन साधारण में विद्या-प्रचार के लिए बड़ी चेष्टा की थी और अपने ग्राम में एक उच्च श्रेणी की पाठशाला भी खोल रक्खी थी। इस पाठशाला को लार्ड सिंह अभी तक चलाये चल रहे हैं।

लॉर्ड सत्येन्द्र प्रसन्न सिंह।

शिक्षा और विलायत-यात्रा।

सिंह जी जब केवल दो वर्ष के थे तभी आप के पिता का देहान्त हो गया था। इसलिए सिंहजी की शिक्षा का भार उन की माता श्री. मनमोहिनी देवी पर आ पड़ा। श्री मनमोहन देवी एक बुद्धिमती तथा लज्जाशीला स्त्री थीं। ... ने ७-८ वर्ष तक शिशु सत्येन्द्र प्रसन्न की शिक्षा का भार बहुत ... और योग्यता के साथ निभाया। जब सिंह जी ग्राम्य पाठशाला ... पढ़ना समाप्त कर चुके तब आप वीरभूमि के ज़िला-स्कूल में ... लिए भेजे गये। आप के बड़े भाई बाबू राम प्रसन्न सिंह वीर... के सरकारी वकील थे और आप ने इस पेशे में बहुत कुछ ... भी पैदा कर लिया था। बाबू सत्येन्द्र प्रसन्न की बुद्धि बचपन से बड़ी तीव्र थी। आप ने सन १८७७ ई० में वीरभूमि ज़िला ... से इन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। साथ ही साथ आप को १०) वज़ीफ़ा भी मिला। अनन्तर आप ने कलकत्ता के प्रेसिडेन्सी कालेज में पढ़ना आरम्भ किया, और एफ़० ए० की परीक्षा में संस्कृत के बदले लेटिन लेकर उसे इतनी सफलता के साथ पास किया कि आप को समूचे प्रान्त में दशम स्थान मिला परन्तु आप जब स्कूल में पढ़ते थे तभी आप का मन इङ्गलिस्तान देखने के लिये बहुत लालायित था। इस लिए आप जब अभी बी० ... में ही पढ़ते थे तभी आप अपने भाई श्री नरेन्द्रप्रसन्न के साथ इङ्गलिस्तान रवाना हो गये। वहाँ ... कर पहले पहल आप ने सिवि[ल] सर्विस की तय्यारी की। लेकिन, ... की झंझट से उस में आप को स[फ]लता नहीं मिली। परन्तु, वह अव[सर] जब हाथ से निकल गया तब आ[प] तुरन्त बैरिस्टरी की ओर झुक ... और आप ने बड़ी योग्यता के स[ाथ] लिनकान्स इन से बैरिस्टरी की परी[क्षा] दी और बहुत ही अच्छी तरह ज[...] और दूसरी अनेक भाषाओं में ... अपनी अच्छी पैठ कर ली।

बैरिस्टरी।

इंगलिस्तान से लौट कर सन १८.. ई० के नवम्बर महीने की १८ वीं तारी[ख] को बाबू सत्येन्द्र प्रसन्न सिंह ने कल[-] कत्ता हाईकोर्ट में प्रवेश का अधिका[र] पाया। परन्तु, थोड़े दिनों तक आ[प] की बैरिस्टरी कुछ भी न चली; औ[र] इसलिए, आप ने संयुक्त-प्रान्त के किसी शहर में बैरिस्टरी करने का इरादा किया और कुछ दिनों त[क] कलकता के सिटी कालेज के कानून के अध्यापक भी रहे। लेकिन, स्वर्गीय बाबू यादव दत्त और श्रीयुत अपूर्व कुमार गांगली की चेष्टा और सहायता से फिर उन की बैरिस्टरी चल निकली और उन्हों ने कानून में इतनी योग्यता दिखलाई कि भूतपूर्व बाबू उमेशचन्द्र बनर्जी को इनके विषय में एक दफ़ा यह कहना पड़ा कि, "सिंह जी किसी दिन एक बहुत बड़े उहदे पर पहुंचेंगे।" कलकत्ता के हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज मिस्टर जस्टिस नारिस ने भी एक बार आप के विषय में कहा था कि, "मि० सिंह किसी दिन उमेश बाबू के ऐसे हो जायँगे।" प्रसंगवश यह कह देना भी आवश्यक है कि उमेश बाबू अपने जमाने के बहुत ही उच्च श्रेणी के बैरिस्टर थे। परन्तु, हम तो अब यह कहने के लिए बाध्य हैं कि सिंह जी उमेश बाबू से भी बढ़-चढ़ गये।

शाही नौकरी।

सन १८९४ ई० में जब कलकत्ता-हाईकोर्ट में मि० कार का मुकदमा पेश हुवा तब सिंह जी की असाधारण तर्क शक्ति और गम्भीरतम कानून के ज्ञान का परिचय समस्त जगत को मालूम हो गया। ... के उपरांत सन १९०४ ई० में आप कलकत्ता हाईकोर्ट के ऐ[ड]...

कौंसिल बनाये गये। इस के अनन्तर सन १९०६ ई० में आप बंगाल-सरकार द्वारा बंग देश के अस्थायी एडवोकेट जनरल बनाये गये; और, फिर सन १९०८ ई० में भी जब स्थायी एडवोकेट जनरल मि० ओकीनेली ने अवसर ग्रहण किया तब यह पद भी आप को ही मिला। इधर जब सन १९०९ ई० में मार्ले-मिन्टो सुधार-एक्ट कार्य्य में परिणत हुआ तब आप बड़े लाट साहब के कार्य्यकारिणी सभा के कानून के सदस्य हुए। अभी तक कोई भारतीय इस माननीय और उत्तरदायक पद को प्राप्त नहीं कर सका था। यह सौभाग्य सत्येन्द्र बाबू को ही प्राप्त हुआ। और, तत्कालीन भारत-सचिव लार्ड मार्ले ने आप के विषय में सच ही कहा था कि "आप एक सौभाग्यवान तजर्बेकार बैरिस्टर और अपने व्यवसाय और नाम में एक बड़े ही विख्यात मनुष्य हैं।" परन्तु, थोड़े ही दिनों बाद, सुना जाता है कि, अन्य २ सदस्यों से मतभेद होने के कारण सत्येन्द्र बाबू ने इस पद को त्याग दिया और फिर अपने व्यवसाय में लिप्त हो गये। जिस सफलता के साथ आप ने ला मेम्बरी के कार्य्य को थोड़े दिनों तक किया था वह किसी से छिपा नहीं है। क्योंकि, उस समय के बड़े लाट लार्ड मिन्टो ने कहा था कि "मैं इस मौके को बगैर यह कहे हुए नहीं जाने दे सकता कि आप ने बड़ी योग्यता के साथ भारत-सरकार को मदद दी और इसी लिये मैं इन को धन्यवाद देता हूँ और उन की अकपट सचाई, उदार मन और उस देश हितैषिता की जिसे आप ने अपना मत प्रकाशित करने में जाहिर किया है, प्रशंसा करता हूं।" ला मेम्बरी का कार्य्य सुचारु रूप से चलाने का एक फल यह भी निकला कि आप 'सर' की उपाधि से विभूषित किये गये। इस के बाद जब आप प्राइवेट प्रैक्टिस कर रहे थे तब आप बंगाल-सरकार की कार्य्यकारिणी सभा के सदस्य हो गये। जब प्रकाण्ड यूरोपीय समर का अन्त होने वाला था और फ्रांस देश में जगत्-शांति-सभा की बैठक हो रही थी तब आप ही को भारत-सरकार ने भारत का प्रतिनिधि बना कर फ्रांस भेजा था। फिर इस के अनन्तर आप भारत के उप-सचिव बनाये गये और अभी तक बड़ी योग्यता से इस कार्य्य का सम्पादन कर रहे हैं। इस उहदे पर भी आप अभी पहिले ही हिंदोस्तानी हैं। वर्त्तमान शासन-सुधार-एक्ट में भी आप का अच्छा हाथ था। क्योंकि, ज्वाइंट पार्लमेंट कमेटी के सभापति ने आप की तारीफ करते हुए कहा है कि—"लार्ड सिंह प्रथम ब्रिटिश प्रजा जन हैं जो कि ब्रिटिश हौस आफ लार्ड्स के मेम्बर हुए हैं। आप ने भारत-सुधार-बिल को फलीभूत करने में जो दक्षता प्रकट की है वह युक्तराज्य और भारत के जीवन में चिरस्मरणीय होगी।" इतना ही नहीं। आप की असाधारण शक्ति को देख कर लार्ड कर्जन, लार्ड सिडेनहम और लार्ड किउ आदि तक भी स्तम्भित हो गये थे।

राजनैतिक मत।

इस समय लार्ड सिंह की अवस्था ५७ वर्ष के लगभग है। आप नरम विचार के मनुष्य हैं। लेकिन साथ ही साथ आप बड़े स्पष्टवादी भी हैं। यद्यपि, आप का यह विश्वास है कि हिन्दोस्तान अभी तक सम्पूर्ण स्वराज्य के योग्य नहीं है तथापि पहिले पहिल आप ही ने अपने सन् १९१५ ई० के कांग्रेस सभापति के भाषण में नीतिनिर्णय पर ज़ोर दिया था। यह ठीक है कि आप एक नरम दल के नेता हैं, फिर भी आप के विचार बहुत उच्च हैं और यह आप ही का कथन कि "What we need is a steady increase of power to determine and control policy" अर्थात् हम जो चाहते हैं वह यह है कि हम को अधिकाधिक शक्ति मिले ताकि हम अपनी राजनैतिक दशा पर विचार करें। सैट निहाल सिंह से आप ही ने कहा था कि, जो लोग यह ख्याल करते हैं कि शिक्षित हिन्दोस्तानी सिर्फ अपने व्यक्तिगत लाभ को चाहते हैं वह हम पर व्यर्थ आक्षेप लगाते हैं। हम चन्द बड़े २ उहदों से संतुष्ट नहीं होंगे। हम अपने राजनैतिक शासन में यथार्थ शक्ति चाहते हैं। पुष्टि के लिए, जब हौस आफ लार्ड्स में लार्ड सिडेनहम ने शिक्षित भारतवासियों के चरित्र को कलंकित करना चाहा था तब लार्ड सिंह ने उनका उत्तर देते हुए ज़ोरदार भाषा में कहा था कि—"I solemnly protest against the idea that educated Indians are unfreindly to British rule. If by British rule is meant autocracy and domination under the name efficiency they oppose it" अर्थात्, मैं इस बात का घोर विरोध करता हूं कि शिक्षित भारतवासी अंगरेज़ी शासन के विरुद्ध हैं। हां यदि इस के माने भलाई के नाम से स्वेच्छाचार और शासन-प्रयोग करना हो तो वे निश्चय ही उस के विरुद्ध हैं।

... ...

बस, इतनी ही बातों से पाठक समझ गये होंगे कि हमारे "लार्ड सिंह आफ रायपुर" कैसे उच्च आदर्श के मनुष्य हैं! हम परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे उन को भारत के भलाई के लिए चिरंजीवि करें।

जननी!

१

हे जननी, हे जन्मदायिनी जननी, मेरी,
हो जाता मन विकल याद आते ही तेरी।
समझा तू ने सदा मुझे आंखो का तारा,
मुझे समझती रही सदा प्राणों से प्यारा।
तूने अनेक दुःख हैं सहे सुखपूर्वक मेरे लिए
तू ने मेरे कल्याण-हित क्या क्या यत्न नहीं किये॥

२

कोई पीड़ा हुई ज़रा सी भी जब मुझको,
देखा गया विशेष व्यथित व्याकुल तब तुझको।
रात रात भर तुझे दृगों में नींद न आई,
जिस प्रकार हो सका उसी विध व्यथा घटाई।
मेरे सुख में सुख था तुझे दुःख में दुःख रहा सदा।
मुझ से सर्वत्र अभिन्न था तेरा तन मन सर्वदा॥

३

अर्द्धरात्रि के समय सभी जब सो जाते थे,
जब अवनी-आकाश तिमिरमय हो जाते थे।
तू पंखे से व्यजन मुझे तब भी कर ती थी;
थपकी दे कर क्लान्ति सभी मेरी हरती थी।
प्रभुवर के पुण्य-प्रसाद सा मुझ पर तेरा स्नेह था।
पाकर मैं उसको हे जननि, सुकृती निस्संदेह था॥

४

फुनसी-फोड़े जब कि हो गये मेरे तन में
मुझे देख कर घृणा हुई औरों के मन में
तो भी माँ, तू मुझे हृदय से रही लगाये,
वैसा ही वात्सल्य-भाव तू रही बनाये।
तू खिल जाती थी चित्त में मुझको मुदित निहार के
तू मुझे खिलाती थी सदा मुझ पर सब कुछ वार के॥

५

काटा मैंने नये उठे दाँतो से तुझको,
किया और भी अधिक प्यार तब तूने मुझको।
डाल दिया जल शीतकाल में तेरे ऊपर,
तब भी तू ने प्रेम किया माँ, मेरे ऊपर।
जब इन बातों की याद ही मुझको आ जाती कभी।
सच कहता हूँ मैं हे जननि, आँखें भर आती तभी॥

६

घोड़ा बन कर मुझे पीठ पर बैठाती थी।
आज्ञा के अनुसार घूम कर सुख पाती थी।
कभी खिजा कर मुझे मुदित तू कर देती थी
कभी उचित उपदेश हृदय में भर देती थी।
या "अ आ" पढ़ाना चाहता जब मैं गुरु बन कर तुझे,
तब बन कर अति निर्बोध तू हर्षित करती ती मुझे॥

७

भोजन करता हुआ मचल जब मैं जाता था,
जब न एक भी ग्रास और मुझको भाता था।
तब हे जननी, विविध प्रलोभन तू दे दे कर,
करती थी अनुकूल मुझे गोदी में लेकर।
अति ही अमूल्य थीं लोक में वे तेरी बातें सभी।
उस समय हाय! इस बात का ज्ञान हुआ न मुझे कभी।

८

जब मैं मन में कभी किसी कारण दुःख पाकर,
कर उठता था रुदन एक कोने में जाकर।
बहलाती थी चित्त अहा! तब तू ही मेरा,
गुण-वर्णन मैं करूँ कहां तक हे माँ, तेरा।
मुझ पर जो तेरा भाव था वह भव-बीच अनन्य है।
हे देवी, तू स्वर्गीय ही लाख बार तू धन्य है॥

९

मुझ पर तेरी दयादृष्टि सन्तत रहती थी,
प्रति दिन सन्ध्या-समय कहानी तू कहती थी।
मेरा कहना नहीं कभी भी तू ने टाला,
प्रेमामृत ही सदा सर्वदा मुझ पर डाला।
आकर अब मुझ पर फेर दे हे माँ, तू [illegible] ही,
मैं यह जाने हृदयाग्नि पर पानी उस [illegible]

[illegible] राम.

३४ वीं कांग्रेस के सभापति :

माननीय पं० मोतीलाल नेहरू का भाषण।

प्रतिनिधि भाइयो! वर्तमान प्रचंड आँधी के समय भारत के राष्ट्रीय कांग्रेस रूपी जहाज की पतवार ग्रहण करने योग्य मुझे समझना अलौकिक सम्मान है। यह सम्मान ऐसे होशियार खेवैया के योग्य था जो अपने सामने की तरंगों और जलमग्न पहाड़ों को तुच्छ समझता। इसलिए आप लोग यदि कार्यकुशल मनुष्य को चुनते तो अच्छा होता। गत वर्ष जब हम दिल्ली में एकत्रित हुए थे उस समय महायुद्ध समाप्त हो चुका था। हम आशा कर रहे थे कि शान्ति चिरस्थायी होगी और समस्त राष्ट्रों को स्वाधीनता का सुख मिलेगा। इससे वह समय आ चुका था जब कि हमें दिये हुए वचन पूरे किये जाते इसलिए यूरोप और अमेरीका के राजनीतिज्ञों के कहे हुए सिद्धान्तों के अनुसार गत वर्ष की कांग्रेस ने अपने देश के लिए स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार मांगा। यद्यपि आंशिक शान्ति हो गई थी तथापि विजेताओं को भी फुर्सत नहीं मिली। राजनीतिज्ञों के वचन शब्दमात्र प्रमाणित हुए और युद्ध के सिद्धान्त और रा० विलसन की १४ शर्तें दबा दी गईं। रूस शान्ति के लिए तरस रहा है परन्तु उसे विश्राम नहीं दिया जाता और यूरोप में छोटे मोटे युद्ध जारी ही हैं। बोलशेविज़म यद्यपि कुचल दिया गया तो भी इसका जन्म पश्चिम के देशों में हुआ है जिससे फौजीपन का शासन और भी ऊंचा हो गया है। टर्की का भविष्य अभी अनिर्णीत है और आयर्लेंड और मिश्र को ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति दिखाई जा रही है। भारत में शान्ति का पहिला फल रौलट ऐक्ट और फौजी कानून हुआ। इसके लिए युद्ध नहीं लड़ा गया था और न इसीके लिए हजारों मनुष्यों ने अपने प्राण दिये। क्या ऐसी दशा में भारत में सन्धि से उत्साह उत्पन्न न होना और शान्ति-उत्सव में भारतवासियों का भाग न लेना आश्चर्य का विषय है?

माननीय पण्डित मोतीलाल नेहरू।

दमन के बाद अधिकार-प्रदान हुआ है। यह आयर्लेंड के समान भारत में पुरानी नीति है। हमारे शासक अभी तक समझ नहीं सके हैं कि दमन और मेल एक साथ नहीं चल सकते, दान की उत्तमता दान में नहीं, देने की विधि में है। इसलिए यही राष्ट्रीय सभा को कुछ शान्त करने के लिए सुधार-व्यवस्था पार्लमेंट में जल्दी से पास की गई। हमें इस नये ऐक्ट पर सावधानी से विचार करना चाहिये। इस पर मैं आगे चल कर विचार करूंगा और फिर आप इसका निर्णय करें कि हमारे आदर्श आकांक्षाएँ कहां तक पूर्ण होती हैं। अनन्तर आप ने नवाब सैयद मोहम्मद की मृत्यु और अमृतसर तथा पंजाब के अन्य भागों में मारे गये लोगों और उनके कुटुम्बियों से सहानुभूति प्रगट कर

पंजाब

१९१५ में कहा:— सब से पहिले कांग्रेस का ध्यान अपनी ओर खींचने का पंजाब को अधिकार है। सदने पहिले में अमृतसर कांग्रेस करने का दृढ़ निश्चय प्रगट करने के लिए पंजाबी भाइयों को हम अमृतसर निवासियों को बधाई देता हूं। उन्होंने जिस समय कांग्रेस को निमंत्रण दिया था उस समय स्वप्न में भी यह मालूम नहीं था कि ऐसा अन्धेर मचेगा। आपने स्वागतकारिणी समिति बनाकर कार्य आरम्भ कर दिया था जब कि एकाएक आप पर विपद आपड़ी। इस विपत्ति को सहकर आप अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। यद्यपि आप के नेता जेलों में पड़े थे तो भी आप अपने संकल्प से च्युत न हुए। इसलिए आपके धैर्य और देशभक्ति की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

विदेशी और उन्नति-विरोधी निरंकुश अधिकारीवर्ग के हाथ भारत को बहुत दुःख सहना पड़ा है और इस सम्बन्ध में पंजाब की दशा शोचनीय है। सर हेनरी काटन और मि० बर्नार्ड हौटन ने इस प्रान्त की अनुन्नतावस्था और अधिकारियों की सैनिकता का अच्छा वर्णन दिया है। मि० रामसे मैकडोनल्ड ने अपनी पुस्तक "भारत में जागृति" में लिखा है:—"भारत में अधिकांश लोगों की धारणा है कि पंजाब की सरकार सब से अयोग्य है। यह 'धाक' और 'राजद्रोह' रूपी दो चट्टानों पर स्थित है। पहिले का अर्थ है 'वह जो चाहे सो करे' और दूसरे का अर्थ यह है कि 'यदि कोई भारतवासी उसकी कार्यवाही पर आक्षेप करे तो उसका घर पुलीस घेर लेगी और वह निर्वासित किया जायगा।'...... इसका विचार राजनीतिज्ञतापूर्ण कोई कार्य करने का नहीं है और न इसके कोई राजनीतिक उपाय ही हैं। अधिकारी अपनी इच्छा के अनुसार अपने अधिकारों को कार्य में लाता है।"

सीमा पर होने के कारण इस के शासक वाइसराय और भारत मन्त्रियों पर अपनी इच्छाओं का प्रभाव डालने में समर्थ हुए हैं। सीमा प्रान्त की आशंकाओं का भय दिखा कर इसके अधिकारी अपनी बातों को मनाने में समर्थ हुए हैं। दिल्ली और शिमला के निकट होने के कारण इस के अधिकारियों को अपनी बातें वाइसराय के कानों तक पहुँचाने का अच्छा मौका मिलता है, जिससे इसके शासक का मान अन्य शासकों की अपेक्षा अधिक होने लगा है। इन अवस्थाओं में सार्वजनिक-जीवन का बढ़ना असम्भव सा है इसलिए यदि अभी तक राजनैतिक भावों की वृद्धि नहीं हुई तो कोई आश्चर्य नहीं।

१९०७ में पंजाब में कोई सार्वजनिक-जीवन नहीं था परन्तु बंगभंग से इस प्रान्त में भी उसका जन्म हुआ। पंजाब की व्यवस्थापक कौंसिल में 'कालोनिज़ेशन' बिल के पेश होने पर उस प्रान्त में भी संकट दिखाई देने लगा। इस बिल का उद्देश्य ल्यालपुर की ऊसर भूमि को नन्दनकारी बाग बनानेवालों के स्वत्वों का अपहरण करना था। इसमें घोर आन्दोलन आरम्भ हुआ और यद्यपि 'पंजाबी' के सम्पादक दोषी ठहराये गये और बिल पास कर लिया गया तो भी आन्दोलन बन्द नहीं हुआ। अधिक उत्तेजित मनुष्यों से पुलीस का संघर्ष हो गया जिसके फल से १९०७ में लाहौर और रावलपिण्डी में दंगे हुए।

उपद्रव करनेवालों का विचार होने पर कोई आपत्ति नहीं हो सकता, परन्तु लाला हंसराज साहनी और दूसरे नेताओं का पकड़ा जाना, जैसा कि विचार में प्रमाणित हुआ, न्यायानुकूल नहीं था। बिना विचार के लाला लजपतराय और सर्दार अजित सिंह का निर्वासन भी क्षम्य नहीं। उस समय सरकार की जैसी नीति थी, उसीका अनुसरण उसके बाद के छोटे लाटों ने किया परन्तु लार्ड मिन्टो ने इस अन्यायपूर्ण कानून पर अपनी सम्मति देना अस्वीकार कर दिया

र भी १९०७ से १९०९ तक प्रेसों का दमन और लोगों की धर पकड़ होती रही जिससे १९१० से १९१३ तक सार्वजनिक-जीवन का कोई चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

दमन और अत्याचार किसी राष्ट्र के जीवन को कभी नष्ट नहीं कर सके हैं बल्कि इनसे असन्तोष बढ़ कर कभी २ वह अत्याचार में परिणत हुआ है। कोई भी, अत्याचार और राजनैतिक अपराधों का समर्थन नहीं कर सकता परन्तु हमें यह न भूलना चाहिये कि यह दमन ही से उत्पन्न हुए हैं। शासक इससे पागल बैल के समान अशान्ति के कारणों पर दृष्टि न डाल कर उसके सामने आनेवालों पर आक्रमण करते हुए चले जाते हैं। १९०७ में पंजाब के छोटे लाट सर डेंजिल इबेटसन ने यद्यपि 'नई हवा' को पहिचान लिया था तो भी उन्होंने उस के प्रतिकूल जाने का ही निश्चय किया। उन्होंने और उनके बाद के छोटे लाट ने पंजाबी शासकों की दमन की परम्परा ही का अनुसरण किया। जब सर माइकेल शासक हुए उस समय पंजाब की दशा ऐसी ही थी। यदि कोई उदारचेता शासक होता तो साम्राज्य पर अत्यधिक उपकार करनेवालों की आकांक्षाओं को पूर्ण कर साम्राज्य की नींव को और भी सुदृढ़ करता परन्तु सर माइकेल ने जिस प्रकारसे इस कर्तव्य का पालन किया उसका हाल सभी पर विदित है। आपके शासन के आरम्भ में 'कोमागाटा मारू' की दुर्घटना हुई। जिन लोगों ने उद्योग के लिए घर छोड़ा था उन्हें विदेशों में सब द्वार बन्द दिखाई दिये और अनिच्छा से उन्हें लौटना पड़ा। सम्भवतः पंजाब सरकार के कहने से भारत सरकार ने "इंग्रेस इन्टु इण्डिया आर्डिनन्स" पास किया जिससे भारत में आनेवाले किसी भी मनुष्य की स्वाधीनता का नियंत्रण करने का अधिकार सरकार को मिल गया। यहां आने पर वे कैद कर लिये गये। देश और विदेश में उनसे जो व्यवहार हुआ उससे वे हताश हो गये, जिसके फल से बजबज का दंगा हुआ। इसके बाद ही से पंजाब की अशान्ति का पुनरारम्भ हुआ और सर माइकेल ने लार्ड हार्डिंग की सरकार से अधिक अधिकार मांगे। १९१४ और १५ में यह मांग बराबर जारी रही और दमन के एक कानून का मसौदा बनाकर भारत सरकार के पास मंजूरी के लिए भेजा गया। अन्त में लार्ड हार्डिंग को बाध्य होकर भारत-रक्षा कानून पास करना पड़ा। युद्ध से सम्बन्ध न होनेवाले कार्यों के लिए पंजाब ही में नहीं परन्तु भारत भर में इसका कैसा उपयोग हुआ उसका हाल सबको मालूम ही है। सर माइकेल इसका उपयोग करनेको कब चूकनेवाले थे? उन्होंने शीघ्र ही भारत सरकार को इसके सुपरिणाम की सूचना दी। १९१५ से १७ तक इस ऐक्ट के अनुसार प्रतिष्ठित विशेष अदालतों में मुकदमे होते रहे। देशी समाचार-पत्रों का बड़ी कड़ाई से दमन हुआ और सैकड़ों मनुष्य नज़रबन्द किये गये। लोकमान्य तिलक और बा० विपिनचन्द्र पाल को इसी समय पंजाब में प्रवेश न करने की आज्ञा दी गई क्यों कि ऐसा न होने से वे सम्भवतः यहां भी

होमरूल का बीज

बो देते। लोकमान्य के विरुद्ध की आज्ञा हाल में रद्द की गई है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इंगलैण्ड में किये हुए कार्य के लिए उनका हार्दिक स्वागत करने में हमारा साथ देंगे।

युद्ध का कार्य।

अब मैं युद्ध सम्बन्धी धोखाधड़शाही के, साम्राज्य और देशभक्ति के नाम पर किये हुए निन्द्य कार्यों का वर्णन करता हूं। ये कार्य सर माइकेल की सम्मति से या पुरस्कार पाने की आशा से उनके मातहतों द्वारा किये गये। इसके सम्बन्ध में फ़ारसी की यह कहावत बिलकुल ठीक है:—

> बनीम बैज़ा कि सुलतां सितम रवादारद।
> ज़नंद लश्करे श हज़ार मुर्ग़ बसीख़॥

इसका भावार्थ यह है कि "राजा यदि रत्तीभर अत्याचार सहन कर लेता है तो उसके कर्मचारी एक टन अत्याचार करेंगे।" सर माइकेल के शासनकाल में यह बात बिलकुल ठीक उतरी। युद्ध आरम्भ होने के बाद कुछ दिन तक तो साधारण रूप से रंगरूटों की भर्ती हुई किन्तु उस के बाद और प्रधान मंत्री की अपील पर बड़े उपायों से काम लिया गया। पंजाब की युद्ध परिषद् में आपने कहा था कि "हम से २ लाख सिपाही मांगे गये हैं, इसलिए स्वेच्छा या जबरदस्ती से ये भर्ती किये जायेंगे और युद्ध ऋण की रकम से अधिक उगाहना होगा।" दिल्ली की कान्फ़रेन्स में ६ लाख मनुष्य मांगे गये थे परन्तु पंजाब की आबादी फ़ी सैकड़ा १३ होने पर भी माइकेल ने सैकड़े ४० यानी २ लाख सिपाही देने का वचन दिया! भर्ती करनेवालों ने आपके शब्दों को पूर्ण करने में कुछ देर न लगाई और इससे जो अत्याचार हुए वे आज भी वर्त्तमान हैं। 'कोटा सिस्टम' निकाल कर गांवों के पुरुष अधिवासियों की संख्या कुती जाने लगी और उनसे एक निर्धारित समय में निश्चित संख्या में रंगरूट देने का कहा जाने लगा। निश्चित संख्या में मनुष्य न दिये जाने पर ग़ैर-कानूनी और दमन के उपाय काम में लाये जाते थे। गांव भर को दण्ड दिया जाता था और व्यक्तिगत मनुष्यों को बड़ी कठिनाई और अपमान सहना पड़ता था। मैं इनका पूरा ब्योरा यहां इसलिए नहीं देना चाहता, क्योंकि आपने जो कमेटी नियुक्त की है वह इनकी जांच कर रही है और वह अपनी रिपोर्ट समय पर देगी। इसी कार्य के लिए ताज़ीरात हिन्द की धारा १०७ और ११० का दुरुपयोग किया गया।" इस के सम्बन्ध में १९१७ और १८ की रिपोर्टों का तथा मेजिस्ट्रेटों की आज्ञाओं का हवाला देकर आपने कहाः—"युद्धऋण के उगाहने में भी ऐसे ही उपायों का अवलम्बन किया गया जो लोग युद्ध-ऋण या रंगरूट नहीं देते थे उनका इनकम-टैक्स भी बढ़ा दिया जाता था। ऐसे ही अत्याचारों से प्रान्त भर में असन्तोष फैल गया और उस दशा में उपद्रवों का होना आश्चर्य जनक नहीं। शाहपुर में एक तहसीलदार मार डाला गया और उसके साथियों को कड़ी चोट लगी। रंगरूट-भर्ती में बाधा डालने के अभियोग पर कुछ लोगों की गिरफ़्तारी में लोगों ने बाधा दी जिस पर गोलियां चलाकर बहुत से लोग हताहत किये गये। इस के सम्बन्ध में मुल्तान में सर माइकेल ने एक व्याख्यान में कहा थाः—रंगरूटभर्ती करनेवालों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्हें कुछ कायरों और उदासीनों से झगड़ना पड़ा और कुछ स्थानों में तो उपद्रव और खून-खराबी हुई और मुल्तान और मुज़फ्फरगढ़ के अधिकारियों को अपमान तक सहना पड़ा।" इन बातों से तथा रौलट ऐक्ट से लोगों में अशान्ति फैल गई परन्तु उन्हें सदा के लिए दबाने का मौका सर माइकेल को मिल गया।" अनन्तर आपने रौलट ऐक्ट और मि० मांटेग्यू द्वारा किये गये समर्थन का वर्णन कर के कहा कि ऐसे कितने ही रौलट ऐक्ट और दमनकारी कानून अराजकता को तबतक नहीं नष्ट कर सकते जबतक असन्तोष के कारण दूर न किये जायँ। अनन्तर आपने इस ऐक्ट को रद्द करने को कहकर

सत्याग्रह

का उल्लेख किया। महात्मा गांधी ने रौलट ऐक्ट के सम्बन्ध में ठीक ही कहा है कि ये लक्षण शासकों में उत्पन्न बीमारी को ठीक तरह से प्रकट करते हैं—जिस बीमारी का प्रकोप शीघ्र ही तीव्रता से दिखाई दिया। इसी बीमारी का सामना करने के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह आरम्भ किया, जिससे हमारी राजनीति में एक नयी शक्ति उत्पन्न हुई। इसी से भारत का जनसमुदाय जागृत हुआ। इसकी प्रारम्भावस्था से कुछ लोगों का मतभेद था क्योंकि वे समझते थे कि अभी कानून भङ्ग करने का समय नहीं है। परन्तु मुझे विश्वास है कि इसके सिद्धान्त से किसी का मतभेद नहीं हो सकता। इसका आधार सत्य, निर्भयता और अत्याचारहीनता है। मैं यह कहता हूं कि अपने विवेक के विरुद्ध दिखाई देनेवाले प्रत्येक कानून को न मानने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। जब तक हम में सत्यता और निर्भयता के गुण न आजायँ तब तक हमारी पराधीनता नहीं छूट सकती। अत्याचार करना हमारा धर्म नहीं, यूरोपीय देशों का है।

सत्याग्रह की शक्ति ६ अप्रैल की चिरस्मरणीय घटना ही से दिखाई देती है। भारत के प्राचीन इतिहास से अनभिज्ञ कुछ लोगों ने हड़ताल को दङ्गों और खूनखराबियों की प्रारम्भिक सूचना बनाई है परन्तु यह दुःख प्रगट करने की भारत की प्राचीन रीति है। मैं स्पष्ट रूप से यह कह देना चाहता हूं कि सत्याग्रह या हड़ताल से उपद्रव का कोई सम्बन्ध नहीं। अमृतसर के दो प्रधान नेताओं के निर्वासन और गांधी जी की गिरफ़्तारी के बाद ही उपद्रव हुए। इस से यह स्पष्ट है कि उपद्रव अधिकारियों की कार्यवाही से ही हुए।

फ़ौजी कानून।

जो घटनायें होगई हैं उनकी स्मृति आपको अवश्य होगी। फ़ौजी कानून जारी किया गया और बहुत समय तक संसार से पंजाब का सम्बन्ध टूटा रहा। सभी बातें हमसे छिपाई गई और हमें सरकारी बयान पर ही निर्भर करना पड़ा। बाहरी

आने की आज्ञा नहीं थी; यहां तक कि मि० एण्ड्रूज़ तक उस प्रान्त से निकाल दिये गये। फ़ौजी कानून जारी होने के कुछ ही दिन बाद भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी ने पूर्ण और निष्पक्ष जांच की मांग कर जांच के लिए अपनी एक सब-कमेटी नियुक्त की इसने कई महीने तक परिश्रम करके बहुत से प्रमाण इकट्ठा किये। उस समय यह आशा की गई थी कि ये प्रमाण नियुक्त होनेवाली जांच कमेटी के सामने पेश किये जायँगे।

हंटर कमेटी।

भारत सरकार द्वारा हंटर कमेटी का नियुक्त किया जाना अत्यन्त निराशाजनक था, इस पर भी हमने अपने उज्रों को त्यागकर सहयोग देने का निश्चय इसी दलील पर किया कि प्रजापक्ष की बातों को सामने रखने का पूरा मौका दिया जायगा। सब से पहिले हमने जेल में पड़े हुए नेताओं को उपयुक्त जांच के लिए छोड़ने की प्रार्थना की। कई दिनों तक लिखा-पढ़ी हुई। हमने अपनी मांग को बहुत परिमित किया, परन्तु सरकार के अस्वीकार करने पर हमें कमेटी का बायकाट करना पड़ा। हमें आशा है कि आप इसको स्वीकार करेंगे।

इस बीच में हंटर कमेटी का कार्य होता रहा और कभी २ किसी सरकारी गवाह की असाधारण गवाही से उसे भी चौंकना होना पड़ा। इसका फ़ैसला एकतर्फ़ा होगा क्योंकि उसमें एक पक्ष के बयान ही लिये गये हैं। दूसरे पक्ष का बयान आपकी सब-कमेटी पेश करेगी। फ़ौजी कानून के अत्याचारों का इसलिए यहां विशेष वर्णन हम नहीं देना चाहते कि अभी तक आपकी कमेटी ने रिपोर्ट नहीं दी है।

परन्तु उसकी रिपोर्ट कुछ भी क्यों न हो असली बात यह है कि पंजाब की शोकजनक घटना के सम्बन्ध में अब तक जो रहस्य प्रकट हुए हैं, इनसे कोई मनुष्य भी यह निर्णय कर सकता है कि पंजाब हाल ही में कैसे अत्याचारों में से गुज़रा है। हम किसी कार्य के लिए किसी मनुष्य पर दायित्व नहीं डालना चाहते परन्तु यहां सिर्फ़ कुछ प्रधान बातों का उल्लेख करना चाहते हैं।

अमृतसर

ने ६ अप्रैल को सच्चे सत्याग्रही के भाव से सत्याग्रह और ९ अप्रैल को रामनवमी का उत्सव मनाया, जिनमें मुसलमान भाइयों ने भी पूरा साथ दिया। उस दिन किसी प्रकार का अत्याचार-उपद्रव नहीं हुआ, परन्तु दो नेताओं के निर्वासन से कुछ ही घंटों में घोर परिवर्तन हो गया। भारतीय रीति के अनुसार निहत्थे और नंगे सिर लोग नेताओं को छोड़ने की प्रार्थना करने के लिए डिप्टी-कमिश्नर के बँगले की ओर जाने लगे परन्तु गोलियों से उनकी खातिर की गई जिससे कुछ मरे और कुछ घायल हुए। इससे कुछ लोगों ने क्रोधित होकर बदला लेने के लिए ऐसे अत्याचार किये जिन से हमारा मस्तक नीचा हो गया है। उनके उत्तेजित होने के लिए कुछ भी क्यों न हुआ हो परन्तु एक असहाय स्त्री पर हमला करने और लूट मार करने के कार्य का किसी हालत में भी समर्थन नहीं किया जा सकता। ऐसा होने पर भी २।३ घंटे में लोगों का क्रोध शान्त हुआ और पुलीस या सेना के हस्तक्षेप के बिनाही उन्होंने अत्याचार बन्द किये। मैं यहां यह कह देना चाहता हूं कि यदि उस समय लोगों से भिन्न प्रकार का सलूक किया जाता तो आज पंजाब का इतिहास भिन्न ही होता।"

अधिकारियों के भाव के सम्बन्ध में आपने कहा कि वे सत्याग्रह या हड़ताल का असली अर्थ नहीं समझ सके। उनको यह दूसरे बलवे का आरम्भ करनेवाला षड्यन्त्र दिखाई देता था। उन्होंने लोगों के असन्तोष का कारण जानने की चेष्टा नहीं की। उन्होंने दुकानों के बन्द होने और सभा-समितियों को अपना अपमान करनेवाला समझा। यहां तक कि उन्होंने हिन्दू मुसलमानों की एकता को भी इसी षड्यन्त्र का एक अंग सोचा। नंगे सिर और नंगे पैर चलने का अर्थ हम सब को मालूम है। यह दुःख का चिह्न है, परन्तु हमारे अफ़सर हमारे भावों को, जिनको वे अधीन समझते हैं, समझने की परवाह नहीं करते। इसका प्रमाण मि० इरविंग की हंटर-कमेटी के सामने की गवाही में मिलता है। अनन्तर आपने डॉ० सत्यपाल और डॉ० किचलू के निर्वासन का उल्लेख करके

जलियानवाला बाग़

सम्बन्ध में कहा—"परन्तु सब से दुखदायी घटना जलियानवाला बाग़ की है। अब इस बाग़ का नाम खूनी बाग़ पड़ा है। कोई भारतीय या सच्चा अंग्रेज़ इस घटना को सुनकर सन्तापों के बिना दुखित हुए बिना नहीं रह सकता। इसके सम्बन्ध में मि० एण्ड्रूज़ ने जांच करके कहा है कि यह अत्यन्त लज्जाजनक, अनुचित और अक्षम्य कार्य है। यह एक अंगरेज़ की राय है। आपही बतलाइये कि मैं आपके भावों को, जिनके सैकड़ों भाई जानबूझ कर मार गिराये गये, किन शब्दों में प्रकट करूं। असली बातें आपके सामने हैं; उनमें से बहुत-सी बातों को अधिकारियों ने स्वीकार भी किया है किन्तु हमको यह मालूम नहीं कि अधिकारियों द्वारा इनकी निन्दा की गई हो। हमें यह भी मालूम नहीं कि किसी उच्च अधिकारी ने इनका प्रतिवाद किया हो। इससे मैं और भी आश्चर्यान्वित हुआ हूं। जनरल डायर ने अपने कार्य के फल की बड़ी डींग हांकी है। अपने कार्य की न्यायानुकूलता सिद्ध करने की भी उन्होंने चेष्टा की है। उनका कहना है कि बिना सूचना के निरुपद्रवी भीड़ पर गोली चलाना 'दया-पूर्ण' कार्य था, क्योंकि यदि वह ऐसा न करते तो शायद वे उनका मज़ाक करते! उन्होंने स्वीकार किया है कि वे बिना गोली चलाये भी भीड़ को हटा सकते थे परन्तु सम्भवतः ऐसा करना उनकी शान के खिलाफ़ होता। इसलिए अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के निमित्त उन्होंने गोली चलाना और

अच्छी तरह गोली चलाना

ही अपना कर्तव्य समझा और उस समय तक गोली चलाई जब तक उनकी गोली-बारूद समाप्त न हो गई। बस, इतना होते ही उनका कर्तव्य समाप्त हो चुका क्योंकि उन्होंने कहा है कि हताहतों की देख-भाल करना उनका कार्य न था। उन्होंका क्या, यह किसी का भी कार्य न था क्योंकि कानून और व्यवस्था के रक्षकों ने एक बड़ी विजय प्राप्त की थी और एक बड़े भारी बलवे को शान्त कर दिया था। इसमें अधिक और किस बात की आवश्यकता थी?

यह वही कार्य है जिसकी प्रशंसा सर माइकेल ने की। यह वही कार्य है जिसको उचित सिद्ध करने की चेष्टा एक के बाद दूसरे सरकारी गवाह ने हंटर-कमेटी के सामने की है। यह दलील दी गई है कि इसकी आवश्यकता थी और इस हत्या का प्रभाव आसपास के ज़िलों पर अच्छा पड़ा। ऐसी दलीलें हमने पहिले भी सुनी हैं। जब जर्मनों ने लुवेन (बेल्जियम) नगर को नष्ट किया और डिनाण्ट और टर्नमांडे में अत्याचार किये तो उन्होंने भी ऐसी ही बातें कहीं थीं। इन्हीं अपराधों के लिए कैसर और उनके सहायकों का विचार होनेवाला है परन्तु जनरल डायर सुरक्षित हैं! इनके भूतपूर्व मालिक (सर ओडायर) ने उनके कार्य की प्रशंसा की है तथा सिविल और फ़ौजी अफसर उनके कार्य की प्रशंसा कर रहे हैं।" अनन्तर आपने रेंगने पर लोगों को बाध्य करने के कार्य का उल्लेख कर फ़ौजी शासन के समय लाहौर, गुजरानवाला, कसूर आदि में जो अत्याचार हुए उनका वर्णन किया और कहा "हिन्दू मुसलमानों की एकता को नष्ट करने के लिए भी अधिकारियों द्वारा चेष्टा की गई। दिल्ली, लाहौर आदि में हिन्दू-मुसलमानों की जो जयध्वनि की गई उसे पंजाब के अधिकारियों ने खुल्लमखुल्ला बग़ावत और सम्राट् के विरुद्ध घोषणा करने के समान सोचा। कानून से स्थापित सरकार के विरुद्ध हिन्दू मुसलमानों का एक होना यह एक नया अपराध उत्पन्न किया गया। फ़ौजी शासन का सबसे लज्जाजनक कार्य यह था कि इस एकता की दिल्लगी आमतौर से की जाती थी। मस्जिदों में हिन्दुओं का प्रवेश, मंदिरों में मुसलमानों का जाना तथा एक ही गिलास में शरबत या पानी पीना हिन्दू मुसलमानों की एकता की गहराई को भलीभांति प्रगट करता है परन्तु उन अफ़सरों को, जो इन दोनों बड़ी कौमों को अलग रखने में ही अपना हित समझते थे, यह सोहाता नहीं था। फ़ौजी शासन के अन्त में अफ़सरों की ओर से हिन्दू मुसलमान और सिक्खों की अलग २ राजनैतिक संस्थाएँ खोलने का उद्योग हुआ। मुझे यह मालूम नहीं कि इसमें कितनी सफलता प्राप्त हुई है परन्तु मुझे विश्वास है कि सब जाति के मेरे भाई इस हानिकर चाल को काम में यानी अपनी अलग २ संस्थाएं स्थापित करने से दूर रहेंगे।" इसके बाद आपने यह कह कर कि मैं अत्याचार की सब बातों पर, इस समय नहीं कह सकता, फ़ौजी कानून जारी करने की आवश्यकता पर विचार किया। आपने कहा कि "इसके सम्बन्ध में सरकार की ओर से हंटर कमेटी के सामने अपनी बातें रक्खी गई हैं इसलिए जब तक उसकी राय प्रगट न हो जाय तबतक अपनी राय प्रगट करना अनुचित है परन्तु यह कहे बिना मैं नहीं रह सकता कि यदि फ़ौजी कानून जारी करना ही था तो वह उपद्रव जारी रहने के समय करना चाहिये था किन्तु यह सिद्ध हो गया है कि ऐसा नहीं किया गया था। इस

प्रश्न यह है कि मुल्की शासन को सैनिक अधिकारियों के हाथ में अर्पण करने की जरूरत थी या नहीं ? इसके सम्बन्ध में मैं सरकारी अफ़सरों के बयानों ही को पेश करता हूं। लाहौर डिविजन के कमिश्नर मि. किचिन ने कहा है कि सत्ता की पुनः प्रतिष्ठा के लिए नहीं किन्तु पकड़े गये अगणित मनुष्यों के शीघ्र न्याय के लिए फ़ौजी कानून की आवश्यकता थी। मि. इरविन ने कहा है कि फ़ौजी कानून जारी रखने की आवश्यकता भीतरी अवस्था से नहीं परन्तु सीमाप्रान्त की अवस्था से थी। जनरल डायर ने कहा है कि १३ अप्रैल के बाद अमृतसर कानून और व्यवस्था का आदर्श नगर था। कमेटियों की जांच का निर्णय कुछ भी क्यों न हो परन्तु यह कहना अनुचित न होगा कि फ़ौजी कानून इतनी लम्बी अवधि तक जारी रखने की कुछ भी न्यायानुकूलता न थी। सीमा की विभीषिका की पुरानी कहानी के सिवा इसके सम्बन्ध में इतना ही कहा गया है कि शीघ्र मुकदमे होने के लिए ही इसकी जरूरत थी। सरकार के हाथ में शीघ्र फ़ैसले करने के लिए विशेष अदालतें स्थापित करने का अधिकार है परन्तु वैसा करने से यही होता कि फ़ौजी कानून में लोगों को जो कष्ट और अपमान सहने पड़े वे न सहने पड़ते और उन्हें अपने बचाव के लिए अपने मन लायक वकीलों को खड़े करने का मौका मिलता। मुझे यह मालूम नहीं। कि पंजाब सरकार के प्रधान सेक्रेटरी (मि. टाम्सन) और ज० हडसन ने हंटर कमेटी के सामने अपनी गुप्त गवाही में क्या कहा है परन्तु आमतौर से जिन सरकारी गवाहों के बयान लिये गये हैं उनसे मैं यह कह सकता हूं कि फ़ौजी कानून का बहुत बुरी तरह से उपयोग किया गया।"

आपने कहा कि पंजाब के विगत कार्यों के लिए सर माइकेल ओडायर—जो आन्दोलन की जड़ काटना चाहते थे—जिम्मेदार हैं। लार्ड चेम्सफ़ोर्ड के उत्तरदायित्व का जिक्र कर आपने कहा कि कई संस्थाओं द्वारा उनका ध्यान आकृष्ट कराये जाने पर भी उन्होंने ध्यान नहीं दिया। इसलिए भारतवासी ब्रिटिश प्रजातंत्र से न्याय चाहते हैं। वे देखना चाहते हैं कि वे इस अत्याचार को सहन करके इसके करनेवालों को क्षमा करते हैं या उचित पुरस्कार देते हैं क्योंकि इसी पर भावी सद्भाव निर्भर है। इन घटनाओं का तात्पर्य इतना ही है कि यदि हमारा जान माल उत्तरदायित्वहीन अधिकारियों और सैनिकों के हाथ में हो और नागरिकता के अधिकार से हम वंचित रक्खे जाँय तो सुधारों की बातें मज़ाक है क्योंकि नागरिक-स्वत्वों के सिवा शासन-सुधार एक शव को ऊँचे वस्त्र पहिनाने के बराबर निरर्थक है।"

अनन्तर आपने सुधार योजना के सम्बन्ध में कहा कि "बहुत वाद-विवाद के बाद यह कानून बना है। पार्लामेंट में कहा गया है कि यह महान और अपूर्व है। कांग्रेस को पार्लामेंट द्वारा पास किये गये किसी कानून को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार नहीं। गत विशेष और दिल्ली की कांग्रेस में इसके सम्बन्ध में कांग्रेस ने अपनी राय प्रगट की है। उसके बाद कोई ऐसा परिवर्तन नहीं हुआ है कि कांग्रेस अपनी राय को बदले। यह व्यवस्था कांग्रेस की कम से कम मांग से भी कम अधिकार देती है परन्तु इसके द्वारा इतना अवश्य हुआ है कि अब तक जो मार्ग बन्द थे वे खुले हो गये हैं। ऐसी दशा में हमें जो मिला है उसे स्वीकार कर बाकी के लिए दबाव डालना चाहिये। मि० मांटेगू ने हमारे लिए परिश्रम किया है और हम उसके लिये कृतज्ञ हैं। उन्होंने यह भय प्रगट किया है कि आन्दोलन जारी रखने से शीघ्र अधिक अधिकार न मिलेंगे बल्कि उनके मिलने में देर होगी। लार्ड मिडलटन ने तो यहां तक कह मारा है। कि आन्दोलन का जारी रहना हानिकर होगा। हम इसको स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि हमें अपने में विश्वास है और लार्ड साहब की बात पर इसलिए लक्ष्य नहीं करते कि उनके हाथ में भारत का भविष्य नहीं है। लार्ड मेस्टन ने उसी बहस में अपने अनुभव से ठीक ही कहा है कि 'भारत का आन्दोलन किसी गम्भीर बात का पता देता है। वहां राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न हुआ है और सब समाजों में शीघ्रता से वह फैल रहा है।' यह भाव तब तक शान्त नहीं हो सकता जब तक कि हमारी सब मांगें पूर्ण न हों। इस लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि नये सुधारों को देश की भलाई के लिए काम में लाइये और अपनी पूर्ण मांग के लिए दबाव डालिये और आन्दोलन करिये।"

अनन्तर आपने इस ऐक्ट की त्रुटियों को दिखाते हुए कहा कि यह नागरिक-स्वत्वों को तथा कानून और व्यवस्था के दुरुपयोग को रोकने का अधिकार नहीं देता। दमन के कानूनों और पंजाब की घटनाओं से तो इसकी बहुत ही जरूरत है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक फिर ऐसा अन्याय न होने की कोई गारंटी नहीं। अमरीका ने फिलीपाईन द्वीप को स्वराज्य के साथ यह स्वत्व भी दिये हैं।

बागडोर सरकार के हाथ में।

यदि उन अधिकारों को देखा जाय, जो इस ऐक्ट से भारतवा[सियों] को मिले हैं तो पता चलता है कि शासन की बागडोर भारत स[रकार] के हाथ में ही रहेगी। इतना अवश्य है कि व्यवस्थापक सभाओं [की] देख रेख और भारत मंत्री के निरीक्षण में सरकार की इस बा[ग] को हिलाने की स्वच्छन्दता ढीली पड़ जायगी परन्तु इधर नये [क]मीशनों तथा कमेटियों की नियुक्ति हो रही है। वे भी कुछ परि[वर्तन] करेंगे। अतः सम्प्रति यह कहना कठिन है कि इस कतरब्योंत [के] पश्चात बिल का क्या रूप रह जायगा। इस पर यह शर्त कैसी भयान[क है] कि जब भारत-मंत्री और शासकदल भी स्कीम को पसन्द करेंगे त[भी उस] पर कार्य किया जायगा। संयुक्त कमेटी ने निसन्देह स्कीम के पूर्व [रूप में] परिवर्तन और विस्तार करके हमारे अधिकारों में बहुत कुछ वृ[द्धि की] है, तथापि उन प्रस्तावों पर, जो राष्ट्रीय सभा अपने जन्म दिन से [पास] करती चली आई है, विशेषतः १९१७ में कलकत्ता की और सन [१९१८] की बम्बई तथा दिल्ली की कांग्रेसों के प्रस्तावों को दृष्टि में रखते [हुए] अधिकार बहुत थोड़े हैं। स्वभाग्य-निर्णय जो युद्ध में इतनी सह[ायता] देने पर हमारा स्वत्व था—केवल दिया ही नहीं गया वरन् हमको [अपमान] में उसके अयोग्य कह कर हमारे हृदयों पर आघात पहुं[चाया] गया।

इसके पश्चात् आपने गवर्नरों के अधिकारों, आय-व्यय के विट[प], विभाग आदि स्कीम के मुख्य विषयों की योग्यतापूर्ण और प्रमा[णपूर्ण] समालोचना करते हुए, सामान्य जनता और स्त्रियों को चुना[व का] अधिकार न देने पर खेद प्रगट किया। तदनन्तर खिलाफ़त के प्र[श्न की] चर्चा करते हुए आपने सुलतान तथा टर्की के सम्बन्ध में भा[रतीय] मुसलमानों की मांगों का बड़ी भाव पूर्ण रीति से समर्थन किया [और] बताया कि हिन्दू इस आन्दोलन में अपने देशीय भाइयों के [साथ] सम्मिलित हैं।

प्रवासी भारतवासी।

दुर्भाग्यवश प्रति वर्ष हमें किसी न किसी ऐसे विषय की [आलो]चना करनी पड़ती है, जो हमारे उन भाइयों से सम्बन्ध रखता है [जो] नौकरी अथवा व्यापार करने के निमित्त ब्रिटिश साम्राज्य के अ[न्य] भागों में चले गये हैं। इन देशों में जाना उस अधिकार का [उपयोग] करना है जो हमें भारत के ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत होने से प्राप्त [है] परन्तु वहां के गोरे अधिवासी हमारे इस तुच्छ से अधिकार को [भी नहीं] मानते। इस बदनामी में आजकल दक्षिण आफ्रिका नाम पा रहा [है।] चिरकाल से वहां का अधिकारीवर्ग भारतवासियों के विरुद्ध नये कानून बना कर उन्हें त्रास दे रहा है। ऐसी कष्टपूर्ण स्थि[ति में] हमारे तत्रस्थ भाइयों ने जिस सहनशीलता और बुद्धिमत्ता का प[रिचय] दिया है, उससे उन्हें अपना भाई कहने में हमें हर्ष तथा गौरव [होता] है सात आठ वर्ष से यह विवाद चल रहा है परन्तु अब तक निर्णय नहीं हुआ। संतोष का विषय है कि भारत-मंत्री तथा [बड़े लाट] साहब की सहानुभूति हमारे साथ है। आशा है कि भारतवासि[यों के] विरुद्ध वहां जितने कानून बने हैं वे उठवा दिये जायेंगे या कम से [कम] उनमें ऐसा परिवर्तन कर दिया जायगा जिससे हमारे भाइयों के [स्वत्वों] को हानि न पहुंचे। सारा देश सर बेंजमिन राबर्टसन के प्रयत्न [के] परिणाम की बाट जोह रहा है। संतोष की बात है कि इस वि[षय में] मि० सी० एफ० एण्ड्रूज प्रयत्न कर रहे हैं। इन अत्याचारों के [निवा]रण के लिए वे हाल ही में वहां गये हैं। मार्ग में वे पूर्वीय आ[फ्रिका] में भी उतरे थे। इस देश के विषय में जो तार उन्होंने गान्धीजी [को] भेजा है उससे वहां के भारतीयों की स्थिति भी बड़ी शोच[नीय] प्रतीत होती है। वहां के श्वेतचर्मी हेकड़ मानी करके भी हमारे भाइ[यों को] निकाल बाहर करने के लिए उतारू हैं। हमारे भाइयों ने बिना [किसी] स्वार्थ के वहां के वाशिन्दों से अपूर्व मित्रता की। समीप खड़े [होकर] बन्दूक चलाके उनको सभ्य बनाया। ऐसे लोगों की वहां की भा[षा] में अनाचार फैलाने के दोषी ठहराने में अधिक धृष्टता क्या हो सक[ती] है! भारत सरकार को चाहिये कि वह हमारे भाइयों [को] के अत्याचारों से रक्षा करे। मैं भारत की जनता [के] साथ सहानुभूति प्रगट करता हूं। सन्तोष की बा[त]

...ना आगामी वर्ष के लगते ही उठ जायगी आशा है कि
...मी शीघ्र ही यह कुप्रथा उठा दी जायगी।

स्वदेशी।

...२ प्रति सैकड़ा आबादी कृषकों की है। कृषि, शिल्प के ... नहीं कर सकती। म० गांधी ने जो स्कीम चर्खा कातने ... है, उससे जहां देश के लिए कपड़ा तैयार होगा वहां ...ायक एक व्यापार का प्रादुर्भाव भी होगा। इस कल-कार... ...ा में बहुत लोग इस स्कीम की सफलता में संदेह करते ... इस में हानि का भय नहीं। मैं इस ओर आपका ध्यान ...।

अन्य विषयों

...का बहुत सा समय लेचुका, फिर भी शिक्षादि कई आवश्यक ... रह गये। कमीशनों की नियुक्ति से कुछ सुधार अवश्य होता ... पूर्ण सुधार प्रतिनिधि-शासन की प्राप्ति के बिना संभव नहीं।

...जनवरी को पोजी से समाचार मिला है कि यह प्रथा उठा दी गई है।
सं० हि० सि० ज०।

इसके पश्चात् आपने मि० हार्नीमन के प्रतिकूल जारी की गई निर्वासन की आज्ञा उठाने की सरकार से प्रार्थना की।

उपसंहार।

प्रतिनिधिगण! मैं अपना वक्तव्य समाप्त कर चुका। हमारे सामने बड़ी समस्यायें हैं, जिन्हें सुलझाना हमारा कर्तव्य है। भारत में नया युग आरम्भ है। आपका उत्तरदायित्व बढ़ रहा है। भविष्य आप के हाथ में है।

हमारा लक्ष्य भारत में सर्वांगसंपन्न स्वातंत्र्य लाना है। पाश्चात्य शासनप्रणाली हमारे अनुकूल नहीं। स्वाधीनता प्राप्त होने पर हम पूर्व तथा पश्चिम की अच्छी बातों को लेकर अपनी व्यवस्था कर सकेंगे। हमारा लक्ष्य वह भारतवर्ष है जिसमें सब स्वाधीन हों, स्त्रियां स्वतंत्र हों, जातिभेद की कठोरता न हो, दरिद्रता का पता न रहे और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्तियों को बढ़ाने तथा उन्नति करने के लिए सब उपकरण सुलभ हों।

निकट भविष्य ही में हमारा लक्ष्य प्राप्त होगा। मार्ग कठिन है, रुकावटें बहुत हैं परन्तु चलिये आगे बढ़िये, सत्य को मार्ग-दर्शक बना कर साहस को साथ रखिये तो शीघ्र हमारी मनोकामनायें पूर्ण होंगी?

वन्देमातरम्

अमृतसरकी राष्ट्रीय सभा।

...क सप्ताह जारी रह कर अन्त को १ जनवरी की रात के ८ बजे अमृ...र की राष्ट्रीय सभा ...कार्य समाप्त हुआ। ...गों के उत्साह और ...माव, फड़कते हुए ...ाख्यान, और महत्व ...पूर्ण प्रस्ताव आदि सब तरहसे इस बारकी राष्ट्रीय सभा चिरस्मर...णीय है। सभामण्डप के भीतर सात आठ हजार प्रतिनिधि, और ...सात आठ हजार दर्शक सदा दिखाई देते थे और बाहर भी आठ दस हजार मनुष्य खड़े पाये जाते थे। आरम्भमें ...वर्षा से प्रबन्ध बिगड़ जानेपर भी कार्य में कुछ बाधा नहीं पड़ी उलटे लोगों का उत्साह दूना हो गया। अमृतसर की राष्ट्रीय सभा मानो समूचे हिन्दु...स्थान की ओर विशे... कर... पंजाबकी परीक्षा के लिये थी। ... अप्रैल महीने की ज... ...यानवाला बागकी ... ...रल डायरकृत हत्या ... ...लेकर कांग्रेस के ... ...म्भिक दिनकी ... वहे सब विघ्न को अपनी ... के पत्थर पर रहे। जिस ... अपनी रक्त धारा बहा कर जालियानवाला बागमें रक्त रंजित ... देशनेता कष्ट सहा परन्तु राष्ट्रकार्य को नहीं छोड़ा उसको जल... वृष्टिकी बाधा क्या कर सकती? अमृतसरमें दूसरे प्रान्तोंसे अधिक प्रतिनिधि आये थे। इस प्रकार पंजाबका सम्मान करना दूसरे प्रान्तों का कर्तव्य था और इस में किसी प्रान्त ने त्रुटि नहीं की यह सन्तोष की बात है। पंजाबने जो दुःख सहा है उसमें सहानुभूति दिखाने तो गये ही इसके सिवा यह राष्ट्रीय सभा नवीन कालका आरम्भ करने वाली थी इस से उसके प्रस्तावों के महत्वकी ओर ध्यान देकर भी झुंडके झुण्ड प्रतिनिधि गये थे! अगर संख्या और उत्साहके ...मानसे इस सभा का महत्व जांचें तो गत तीन चार वर्ष की विराट राष्ट्रीय सभाओं से अमृतसर की राष्ट्रीय सभा बड़ी बड़ी साबित होगी। मि० बोनरलाने राष्ट्रीय सभा को "विराट परिषद" कहा था। अमृतसर की राष्ट्रीय सभाने इस वचन को सार्थक कर दिखाया। इस सभा के सामने कल...कत्ते की नमंदल-सभ... पासंग के बराबर थी ... विद्यार्थी और दर्श... मिलाकर पांच छः सौ ... अधिक मनुष्य बाबू ...न्द्रनाथ बनर्जी के ... के नीचे जमा नहीं ...। कलकत्ते के गोरे अखबारोंने कहा है कि नमंदल संज्ञा ... शक्ति से चलनेवाला विमान नहीं है, परन्तु राष्ट्रीय पत्र ...

कारागृह से मुक्त हुए लोकनेता और पं. मदनमोहन, प. मोतीलाल नेहरू, म. गान्धी, स्वामी श्रद्धानन्द।

मि० दुनीचन्द, डॉ० सत्यपाल, महात्मा गान्धी, ला० हरकिशनलाल, मा० पं० मोतीलाल नेहरू, स्वामी श्रद्धानन्द, मा० पं० मदनमोहन ...

स्थान विमानसे जुदा हुआ एक मेलीना है। अमृत बाजार पत्रि-
कहती है कि उस परिषद में पहले दिन जो कुछ अधिक मनुष्य
ए हुए थे उसका कारण यह था कि जलपानकी व्यवस्था की गई
। दूसरे और तीसरे दिन डेढ़ दो सौ से अधिक मनुष्य नर्मदल की
षद में नहीं दिखाई दिये। अमृतसरकी राष्ट्रीय सभा और कलकत्ते
धर्म परिषद के देखने से यह साबित हो गया कि इंगलेण्ड, फ्रान्स,
मेरिका, जपान आदि परराष्ट्र यदि जानना चाहे कि

हिंदुस्थानका लोकमत

हां है तो उन्हें राष्ट्रीय सभा की ओर देखना पड़ेगा। कलकत्ते के
दलवालों को सब तरहका सुबीता था—सरकारी नाराजी नहीं थी-
नरल डायरकृत कतले आम नहीं था, आंधी पानी की अड़चन नहीं

मुसलीम लीग के अध्यक्ष मि० अजमलखान।

थी और जलपान समान लोकमंत्री नियुक्त किये जानेका लोभ सब की
आखों के सामने नाच रहा था। फिर भी कलकत्ते में नाममात्रके प्रति-
निधि जमा हुए और नर्मदल के ही बहुत से नेता गैर हाजिर रहे।
अमृतसरकी बात कलकत्तेमे बिलकुल उलटी थी। दोनों में जमीन
आसमानका सा अन्तर था। पहले अमृतसरमें कांग्रेस करने की अनु-
मति मिलनेका झगड़ा खड़ा हुआ। लाजशर्मसे अनुमति दी गई तो
४०-४० हजार रुपये मण्डपकी जगहके भाड़े के नामपर वसूल किये
गये। बेचारे पंजाब के नेता क्या करते? राष्ट्रकी आबरू रखनेके लिये
यह दण्ड भी सहागया। पानीकी तरह धन खर्चकर और शारीरिक
कष्टकी परवा न करके पंजाबने राष्ट्रीय सभा की सारी तयारी उत्तम
विधिसे की। पंजाबने रक्तको पानी की तरह बहाया, धनको पानी
की तरह बहाया; ऊपर के आकाश का असली पानी बरस जानेसे
पंजाबकी परीक्षा की पराकाष्ठा हो गई। पंजाब सब अड़चनोंसे पार
पा गया और अमृतसरकी राष्ट्रीय सभा अत्यन्त महत्वकी और सफ-
लतापूर्ण हुई। इसका बाहरी स्वरूप जैसा विराट विस्तीर्ण और
प्रभावशाली था वैसे ही भीतरी स्वरूप भी गम्भीर और ऐतिहासिक
महत्वके प्रश्नोंके गौरवसे गौरवान्वित दिखाई देता था। इस सभा के
सामने ऐसे दो प्रश्न थे जिन्हें

ऐतिहासिक प्रश्न

कह सकते हैं। एक पंजाब प्रकरण और दूसरा मांटेग चाल्स का
स्वराज्य सम्बन्धी कानून। इन दोनों प्रश्नोंके सम्बन्धमें रा
के विचारों का एकीकरण कर के लोकमत को उचित मार्ग दिख
की जिम्मेदारी राष्ट्रीय सभा पर थी। प्रसंग का महत्व पहचानने
बुद्धि और स्वाभिमान की दृष्टि से इस सभा में महत्व के वादविव
हुए और अन्तिम निर्णय भी राष्ट्र के मर्यादानुकूल ही हुआ। पंज
प्रकरण की छाया स्वभावत सभा पर पूर्ण रूप से पड़ी थी। कि
दिन की कारवाई में पंजाब प्रकरण क्षणभर के लिये नहीं भूल
रौलट का कानून पास हो जाने पर महात्मा गान्धी कृत सत्याग्रह
आन्दोलन और उसके पश्चात् अमृतसर की हत्या ये दो विषय
ऐतिहासिक महत्व के हो गये हैं। महायुद्ध की दशा में देने को क
हुआ हक हम चाहे जब छीन ले सकते हैं इस तरह रौलट ऐक्ट
प्रजा को ललकारा। सत्याग्रह इस ललकार का उत्तर है। गरीब दुः
और निःशस्त्र प्रजा के हाथ में सब सुखों को लात मार कर स्वयं
करने की शक्ति परमेश्वर ने दी है। जब समूचे राष्ट्र को सम्मिलि

मि० महम्मद अली और शौकत अली।

भाव से तप करना पड़ता है तब उसे सत्याग्रह कहते है। तप के ब
से मनुष्य इन्द्रासन को डिगा देता है इस बात पर हिन्दुस्थान का ह
[illegible] इसका अनुभव हुआ
[illegible] तप उर्फ सत्याग्रह
[illegible] यहां के हड़ताल
आन्दोलन पर यह अभियोग लगाया गया है कि युरोपखण्ड क
सार्वजनिक हड़ताल (जेनरल स्ट्राइक) और महात्मा गांधी के सत्या
ग्रह में बहुत कुछ समानता है। युरोप की हड़ताल आसुरी स्वरूप क
है। ऐसी हड़तालों से बोल्शेविकों का आसुरी बल उत्पन्न होगा ही
हिन्दुस्थान की हड़ताल बिलकुल सात्विक है। ऐसी सात्विक हड़ताल
पर जनरल डायरकृत हत्या का उपाय ओडायरी सम्प्रदाय ने पंजाब में
किया इससे यहां सात्विक तप का मूल और गहरे चला गया। और
पंजाब प्रकरण ने विदेशी राष्ट्रों का ध्यान हिन्दुस्थान की ओर खींचा
है। निःस्वार्थ भाव से देश सेवा की तपश्चर्या करनेवाले व्यक्ति राष्ट्र में
जितने अधिक होंगे उसी कदर सत्याग्रह की राष्ट्रीय तपश्चर्या करने
की योग्यता राष्ट्र में उत्पन्न होगी। स्वार्थत्याग करने वाले राष्ट्रभक्त
कितने हैं यह सत्याग्रह के आन्दोलन के विस्तार से सिद्ध होता है।
राष्ट्रीय शक्ति जगी है कि नहीं यह पहचानने का चिन्ह
आन्दोलन है। पंजाब प्रकरण के पहले नौकरशाही ने यह
कि महायुद्ध के कारण सम्राट की २० अगस्त की गई

और दो एक चुल्लू दूध दिलाने के लिये मांटेग साहबने जो परिश्रम किया है उसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया गया। बै० दास, लो० तिलक, बाबू विपिनचन्द्र पाल, म० गांधी और मा० मालवीयजी कृत समझौतेका यह प्रस्ताव पास किया गया यह उचित ही हुआ। अमृतसर " की राष्ट्रीय सभा जिस सफलता से हुई उसके लिये पंजाबको जितना धन्यवाद दिया जाय वह थोड़ा ही है। —केसरी

यह सुविस्तृत ब्रह्माण्ड असल में विचित्रताओं की खान है। तृण से लेकर पर्वत तक, आग की चिनगारी से लेकर विशाल सूर्य्य तक, कासार से लेकर अगाध समुद्र तक, पृथ्वी से लेकर अपार आकाश तक, जहाँ देखिये—ब्रह्माण्ड में अनोखापन भरा हुआ है। इन विचित्रताओं का अन्त पाने के लिये पृथ्वी के बड़े बड़े दिग्गज पण्डितों ने हथेली पर अपने प्राणों को रख जगत् के प्रत्येक पर्दे को फाड़ २ कर अनेक बार अदम्य उत्साह दिखाया, अपनी पराक्रमशालिनी धीशक्ति से हरएक स्तर को खूब उलटा-पलटा, सृष्टि के आदि से आज तक कितने ही महाप्रतापी विद्वानों ने अपने अनमोल जीवन को इसी में लगा दिया, परन्तु अन्त तो बैठा रहे, इनके लक्षांश का भी अभी पूरा पता नहीं चला; और क्या, कितनी ही विचित्रताएँ तो इनके शरीर पर दिन-रात नाचा करती हैं; परन्तु इनके करोड़ों यत्न करने पर भी, सूक्ष्मतमदर्शी दूरवीक्षण की कई हजारगुनी ताकत बढ़ाने पर भी, प्रकृतिमाता के बहुत से छोटे २ कीड़ों-मकोड़ों की भी अनोखी पता-विचित्रता-लोग नहीं जान सके। इसी से बहुत से विद्वानों ने ऊब कर यह कह दिया है कि, " प्रकृति और प्रकृति की विचित्रताएँ अक्षय हैं। " अस्तु, आज मुझे ऐसी ही एक विचित्रता की पड़ताल में, विदेशी मत के अनुसार, पाठकों के मनोविनोद के लिये पड़ना है।

जिस समय आकाश स्वच्छ रहता है, भगवान सुधांशु अपनी मनोहारिणी विमल किरणों से अगाध आकाश में क्रीड़ा करने लगते हैं, उस समय माता निशा की गोदमें लेटे लेटे ज्योंही आपकी दृष्टि ऊपर की ओर जायगी त्योंही, थोड़ी ही देर में, आप दो एक उल्कापात देखेंगे। देखने पर मालूम होगा कि स्वर्गीय देवता अपने पापी शत्रुओं को मारने के लिये नक्षत्र रूपी शुभ्र ज्योतिष्क गोले उनपर फेंक रहे हैं। बहुतों की धारणा है कि, नक्षत्र पात ही उल्कापात है; परन्तु यह बात नहीं है। नक्षत्र भी सूर्य्य की तरह बड़े २ ग्रह हैं। बहुत से नक्षत्र तो इस सूर्य्य से सौगुने बड़े हैं। हमारी यह पृथ्वी तो, उनके सामने बालुका के बराबर है। इस पर शायद बहुत लोग पूछ सकते हैं कि, " फिर नक्षत्र पृथ्वी से छोटे क्यों ? " इसका कारण यह है कि, वे इस पृथ्वी से करोड़ों कोसों की दूरी पर स्थित हैं। इसलिये इतने छोटे दिखते हैं। इसपर भी इनकी इतनी लम्बाई-चौड़ाई का ही फल है कि आपको इतने दूरस्थ होने पर भी दीख पड़ते हैं। जैसे आपकी पृथ्वी एक विशाल लोक गिनी जाती है वैसे ही इनमें भी बहुत बड़े बड़े ये भी लोक हैं।

बड़े बड़े ज्योतिषियों के सिद्धान्तानुसार उल्कापिण्ड केवल छोटे छोटे ज्योतिष्क हैं। ये पृथ्वी की तरह निर्दिष्ट मार्ग से झुण्ड के झुण्ड सूर्य्य की चारों ओर भ्रमण करते हैं; परन्तु इनके बहुत ही छोटे होने के कारण बड़े भारी दूरवीक्षण से भी इनकी ठीक ठीक गणना और पता नहीं चलता। हमारी पृथ्वी जब अपने नियत मार्ग पर घूमती घूमती उल्कापिण्डों के पथ के समीप आती है तब पृथ्वी के आकर्षण से पिण्डों के टुकड़े इसकी पीठ पर गिरने लगते हैं।

पृथ्वी के पृष्ठ-देश पर प्रायः ४५ मीलों तक सदा हवा रहती है। इसलिये इसकी पीठ की ओर आने के समय उल्कापिण्डों को गम्भीर वायु के पर्दे को फाड़ कर आना पड़ता है। वायु के अन्दर बहुत धीरा चाल रहने पर भी इस के भीतर यदि कोई भी चीज़ जोर से जाय तो, वह गरम हो जाती है। बन्दूक से जिस समय गोलियां छूट कर बाहर चलती हैं उस समय वे गरम हवा ही रहती हैं। बाद जब कि, वे वायु के भीतर ही भीतर जाने लगती हैं, तब वायु के संघर्षण से उत्तप्त हो जाती हैं और अन्त में जाते जाते प्रज्वालित हो पड़ती हैं। ठीक इसी तरह उल्कापिण्ड भी प्रज्वालित हो जाते हैं और इसी अवस्था में वे हम लोगों को दिखाई देते हैं। इन के बहुत छोटे छोटे होने के कारण ये रास्ते में ही बिलकुल जलकर भस्म हो जाते हैं। इनमें जो बड़े होते हैं वे जलते जलते पृथ्वी पर गिरते हैं। ऐसे अध-जले पिण्ड अनेक स्थानों में पाये जाते हैं। आज भी प्रायः हरसाल पांच-छः पिण्ड बटोरे जाते हैं। ऐसे उल्कापिण्ड कलकत्ते के Museum (कला-भवन) में कितने ही बटोर कर रक्खे हुए हैं। उल्कापिण्ड जब पृथ्वी पर गिरे हुए मिलते हैं तब प्रायः धातु के आकार में मिलते हैं तथा विशेषतः तोले दो तोले या सेर दो सेर के ही होते हैं; परन्तु पृथ्वी की आश्चर्यकारक घटनाओं में यह भी सुनने में आया है कि, कहीं कहीं हजारों मन का भी उल्कापात हुआ है। ऐसी घटना कदाचित् ही देखने में आती है।

उल्कापिण्ड दिन रात मिला कर कितने भस्म होते हैं? वर्ष भर में कितने होते हैं? जो रास्ते में जल कर राख से बन जाते हैं उन का भस्म पृथ्वी पर आता है या नहीं? आता है तो कितना मन? इन सब प्रश्नों का भी उत्तर अध्यवसायी यूरोप के वैज्ञानिक ज्योतिषियों ने अच्छी तरह देने में उठा नहीं रखा है, चाहे वह विश्वसनीय हो या नहीं। प्रसिद्ध विज्ञानाचार्य्य न्यूटन ने हिसाब लगा कर बताया है कि, प्रायः दिन रात में दो करोड़ पिण्ड वायुमण्डल में आकर भस्म हो जाते हैं, और प्रतिवर्ष ७००००००००२० पिण्ड भस्म होते हैं। मेरु और समुद्री प्रदेशों में सूक्ष्म धूलिकणों के आकार में गिरे हुए उल्का भस्म की माप बड़े बड़े वैज्ञानिकों ने कर के स्थिर किया है कि, प्रति वत्सर तीन हजार मन वज़न का भस्म पृथ्वी पर गिर कर इकट्ठा होता है।

गत उन्नीसवीं सदी के तृतीय भाग में वैज्ञानिक संसार ने जो इस विचित्रता की गहरी जाँच पड़ताल कर आविष्कार किया है, वह और विचित्र है।

नये ज्योतिःशास्त्र की खबर रखनेवालों के लिये बायला के धूमकेतु (Biela's Comet) का परिचय कराना कोई आवश्यक नहीं है। १८२६ वें वर्ष में आस्ट्रिया के ज्योतिषी बायलाने धूमकेतु का परिचय दिया था। गणना के अनुसार उस का सूर्य्य-प्रदक्षिणा का समय साढ़े छः साल का निश्चित किया था। इसी के अनुसार १८३२ और १८३९ में धूमकेतु देखा गया था; किन्तु १८४५ में वह पूर्वाकार में नहीं देखा गया। बहुत से ज्योतिषियों के मतानुसार बृहस्पति के आकर्षण से यह दो भागों में बट कर दो धूमकेतुओं के आकार में दिखाई पड़ा था। ऐसे इसके अद्भुत परिवर्तन को देख कर ज्योतिषी लोग इसकी साढ़े छः वर्ष बाद आनेवाली अवस्था को देखने के लिये बहुत ही उत्सुक हुए। १८४५ में जो दोनों धूमकेतु आकाश में उदित हुए थे, उन का दूरत्व (फासला) प्राय. लाख मीलों से भी अधिक का था; किन्तु १८५२ के वर्ष के प्रत्यावर्तन-काल में बड़े भारी भारी दूरवीक्षण से भी (ऐसी विचित्रता कि,) दोनों में एक भी नहीं देख पड़ा। अब देखिये कि १८७२ के बाद जब हमारी पृथ्वी प्रतिवर्ष नवम्बर में इस धूमकेतु के निर्दिष्ट पथको लांघ कर चलने लगती है तो लाख लाख उल्का पिण्ड वर्षा की बूंदों की तरह पृथ्वी की ओर गिरने लगते हैं। क्रमशः धूमकेतु के नष्ट होने पर एक नियत समय में उल्कापात की इतनी बढ़ती हुई संख्या को देख कर, उक्त उल्कापिण्डों के साथ धूमकेतु का सम्बन्ध है, ऐसा अनुमान बड़े बड़े ज्योतिषियों ने बहुत गवेषणा के बाद

निश्चित किया है कि, बायला का धूमकेतु ही चूर चूर हो कर छोटे २
उल्कापिण्डों के रूप में परिणत हो गया है। और ये ही पिण्ड उसी
धूमकेतु के मार्ग में फैल कर सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं। इस
लिये जब पृथ्वी उस मार्ग के समीप जाती है, तो अपने आकर्षण के
बल से कितनों ही को अपनी ओर खींच कर आकाश में फेंक देती
है। ऐसा इन लोगों का दृढ़ अनुमान है।

अप्रैल, अगस्त और नवम्बर के भी कुछ नियत दिनों में उल्कावर्षण
की संख्या अत्यन्त अधिक मात्रा में हो जाती है। बायलीय धूमकेतु के
साथ पूर्वोक्त उल्कापात का सम्बन्ध आविष्कृत हो जाने से इन दिनों
के उल्कापात के भी सम्बन्ध की खोज किन्हीं और धूमकेतुओं के
साथ २ वैज्ञानिकों ने करके निश्चित किया है कि, सूर्य की प्रदक्षिणा
करते करते पृथ्वी इन तीनों समयों में भी तीन और धूमकेतुओं के
भ्रमण-पथको लाँघ कर चली जाती है। इस लिये इन समयों में जो
उल्कापिण्ड गिरते हैं वे भी धूमकेतुओं के खण्ड-ज्योतिष्क हैं। यह
पूर्वोक्त कारण और भी परिष्कृत-रूप से माना जाता है; बल्कि नये नये
आकाश दर्शक यन्त्रों के और बन जाने के कारण, जो कि उल्लिखित
सिद्धान्तों में कुछ कुछ सन्देह थे, वे अब दूर हो गये हैं। लेकिन एक
बात है कि, इन नियत समयों के सिवाय जो कि दो एक अन्य समयों
में बड़े २ उल्कापिंडों का आकाश में आविर्भाव होता है, उन की उत्प-
त्तिका रहस्य आज भी ठीक तौर से ज्योतिर्विद् नहीं जान सके हैं।
निर्दिष्ट समयों के पिण्ड तो वायु के अन्दर से नीचे उतरने के समय
बिलकुल गरम हो जाते हैं, परन्तु वे, बृहदायतन होने के कारण, पूरी
तरह नहीं जल पाते। इन के कुछ हिस्से पृथ्वी पर आकर गिरते हैं।
इन्हीं हिस्सों की परीक्षा कर के वैज्ञानिकों ने निश्चय किया है कि, इन
में से कुछ में लोहे और निकल का तथा कुछ में केवल पत्थर का
अस्तित्व रहता है। जिन उपादानों से पृथ्वी बनती है उन्हीं उपादानों
से इन के भी बनने के कारण ज्योतिषियों ने अनुमान किया है कि,
किसी समय में ये पिण्ड भी पृथ्वी के अंग थे।

ये पिण्ड किस तरह पृथ्वी की देह से अलग हो गये, इस विषय की
भी पण्डितों ने खोज की है। वे कहते हैं। कि, "अति प्राचीन काल में
पृथ्वी के ऊपर असंख्य बड़े २ आग्नेय पर्वत थे। जिस समय वे महा-
वेग से आग उगलते थे, उस समय अनेक वायवीय पदार्थों के साथ
साथ अनेक धातु खण्ड आकाश की ओर उत्क्षिप्त होते थे।" किसी
भी वस्तु को आकाश की ओर खूब जोर से फेंकने पर यदि वह पृथ्वी
की आकर्षण सीमा को लाँघ कर दौड़े तो, उसके भू पृष्ठ पर आने की
सम्भावना नहीं रहती है। फिर उसे छोटे छोटे ज्योतिष्क की तरह ही
आकाश में घूमना पड़ता है। ज्योतिर्विद् लोग कहते हैं कि, प्राचीन
युग में आग्नेय पर्वतों से जो धातु पिण्ड उत्क्षिप्त हुए थे उनमें से अधि
कांश ही पृथ्वी की आकर्षणशक्ति से बाहर थे। इस लिये वे फिर
पृथ्वी पर न लौट कर एक एक नियत पथ पर घूमने लगते थे। इन्हीं
धातुपिण्डों को पूर्वोक्त बृहत् उल्कापिण्ड पण्डित लोग कहते हैं।

यह तो हुई एक दल की, उल्कापिण्ड की उत्पत्ति की, बात; अब
इस उत्पत्ति के सम्बन्ध में दूसरे दलकी राय सुनिये। वे कहते हैं कि
इस में सन्देह नहीं कि, एक समय चन्द्रमण्डल भी हजारों छोटे बड़े
आग्नेय पर्वतों से आच्छादित था, क्योंकि, छोटे-मोटे दूरवीक्षणों से भी
इस समय भी, चन्द्रमण्डल में बुझी हुई अनेक आग्नेय पर्वतों की गुहाएँ
साफ साफ देखी जाती हैं। इसलिये यह अनुमान भी युक्ति-संगत है
कि, चन्द्रमा के असंख्य पर्वत शिखरों से जब अग्नि का उद्गम होता था
तब अगणित प्रस्तर-खण्ड उत्क्षिप्त हो कर—ऊपर की ओर उठ कर—
चन्द्रमा की आकर्षण-सीमा का उलंघन कर जाते थे। वे ही इस समय
बृहत् उल्कापिण्ड के रूप में हो कर पृथ्वी के समीपी आकाश में आक-
र्षण के नियमानुसार घूमते फिरते हैं और पृथ्वी की आकर्षण-सीमा के
भीतर आने के साथ ही जलते हुए भू पृष्ठ पर गिरते हैं।

यद्यपि सभी ज्योतिषी इन दोनों बातों पर प्रायः विश्वास करते हैं,
तो भी, अभी इस विषय में बहुत खण्डन-मण्डन चल रहे हैं। अमे-
रिका की हारवर्ड युनिवर्सिटी के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् पिकरिंग साहब
ने इन युक्तियों का घोर प्रतिवाद किया है। इनकी तर्कणा-प्रणाली
अधिकांश में उपादेय मानी जाती है। इनका कहना है कि, "आक-
र्षण की सीमा का अतिक्रम कर जाने के लिये पृथ्वी और चन्द्रमा के
आग्नेय पर्वतों का उत्क्षेपणवेग—फेंकने का बल—प्रति सेकण्ड में कम
से कम क्रमशः सात-माइल और दो माइल का होना चाहिये। किन्तु
भीम वेगवान् पर्वतों के अस्तित्व का चिन्ह न तो, पृथ्वी पर ही पाया
जाता है न चन्द्रमण्डल ही पर। इस लिये इन बातों पर विश्वास नहीं
किया जा सकता।"

जगत्-प्रसिद्ध विद्वान् डारविन के वंशधर Sir G. H. Darwin
(जार्ज डारविन) ने जो गणित के बड़े बड़े प्रमाण-प्रयोगों से चन्द्रमा
की उत्पत्ति का तत्त्व आविष्कृत किया है, उस पर विश्वास करने पर
मानना होता है कि, एक समय चन्द्रमा पृथ्वी के गर्भ में था। पीछे
ज्वारभाटा के प्रभाव से पृथ्वी से अलग हो कर धीरे धीरे बहुत दूरी
पर चले जाने के कारण इस समय वह पृथ्वी से ढाई लाख माइल पर
है। पिकरिंग ने इसी सिद्धान्त को मान कर उल्कापिण्डों की उत्पत्ति
का एक नया कारण दिखाया है। इनका कहना है कि, "जिस दि
हठात् पृथ्वी के कुछ हिस्सों ने अलग हो कर चन्द्र की उत्पत्ति की ही
उस दिन पृथ्वी का ऊपरी चाँप (दबाव) भी हठात् कम हो ग
और उसके भू पृष्ठ के रुके हुए वायु को वा वायवीय पदार्थों
बन्धनयुक्त कर दिया। इसलिये पहले की तरह भूपृष्ठस्थिर (अचञ्च
नहीं रह सका। अतः एक नयी शक्ति ने उत्पन्न हो कर पृथ्वी
ऊपरी कठीन पर्दों (स्तरों) को उससे अलग करके उन्हें ऊपर उठ
शुरू किया। उन्हीं असंख्य स्तरों वा धातु-खण्डों में से जो पृथ्वी
आकर्षण-सीमा का उलंघन कर गये वे इस समय के उल्कापिण्डों
रूप में परिणत हो गये।"

एक चौथा मत भी है, जो हमारे सृष्टि-प्रकरण के सिद्धां
मिलता हुआ है। यह कि, हमारा सौर्य-जगत्रूपी ब्रह्माण्ड जैसे
ग्रहों से पूर्ण है, वैसे ही सूर्य और ग्रहोपग्रहों से पूर्ण अनन्त ब्र
हैं। जिस प्रकार मनुष्य पिण्डका अन्त होता है वैसे ही एक
के अन्तका जब समय आता है तब उस ब्रह्माण्ड की आकर्षण
र्षण शक्ति के नष्ट हो जाने से उस ब्रह्माण्ड के ग्रहोपग्रह एक
टकराकर टुकड़े २ हो जाते हैं। वे ही टुकड़े घूमते २ जब
आकर्षण शक्ति की सीमा में पहुँच जाते हैं तब वे खींचते हुए
पिण्ड कहाते हैं। अन्य ब्रह्माण्डों के खण्ड जब हमारे ब्रह्माण्ड
ते हैं और घटना-चक्र से पृथ्वी की आकर्षण-सीमा में आ
तब वे ही वायु के संघर्ष से प्रज्वलित उल्कापिण्ड बन जाते

इस में भी सन्देह नहीं कि, बड़े बड़े उल्कापिण्ड एक सम
पृथ्वी या लोक के ही अंग थे; क्योंकि इन के उपादान प
करने से साफ २ यही सिद्धान्त निर्णीत होता है। ज्योतिषि
तक भूस्तर में जितने प्रकार के सूक्ष्म पदार्थों का पता लगाय
से उल्कापिण्डों में २६ पदार्थों का अस्तित्व पाया जाता है;
इनमें कोई भी अपार्थिव पदार्थ नहीं पाया गया है। इस
किसी तरह का सन्देह नहीं हो सकता कि, पृथ्वी की सा
उल्कापिण्ड बने हैं और ये पृथ्वी के ही अंग हैं। हाँ, य
भी विचारणीय है कि उल्कापिण्ड आग्नेय पर्वतों के अ
समय पृथ्वी से निकले हैं वा चन्द्रमा के जन्म के समय
किसी प्रलय-दशा को प्राप्त—नष्ट—लोक के अंग हैं।

....-जगत् का जनवरी १९२० का विशेषां

.... का जनवरी १९२० में भी विशेषांक निकलेगा। इस अंक में कई विद्वानों के लेख, कविता
भांति चित्रमय जगत् का जनवरी १९२० में ... अपूर्व संग्रह रहेगा। नये वर्ष का विविध रंगों में छपा हुआ केलेण्डर भी ग्राह
होकर नानाप्रकार के चित्र का अपूर्व संग्रह रहेगा।
... में न जाने देना चाहिये।
ग्राहकों को ...

मैनेजर—चित्रमय-जगत्, पूना सि

अमृतसर की राष्ट्रीय सभा १९१९.

अमृतसर येथील १९१९ चीं राष्ट्रीय सभा.

पंडित मोतीलाल नेहरू (सभापति)

श्री. बा. ग. टिळक

[illegible]

अमृतसर शहर का दृश्य

अमृतसर शहर में से सुवर्ण मन्दिर की ओर जाने का मार्ग।

[illegible]

श्री डॉ० पंड्या समाज सेवक मण्डल, पाटन (गुजरात)।

पाटन शहर की म्युनिसिपालिटी को कई बार प्रार्थना पत्र भेजने पर भी जब म्युनिसिपालिटी की ओर से पाटन शहर की बाहर ढेड़ भंगीओं से बसा हुआ भाग में से कादव कीचड से भरा हुआ रस्ता साफ न करवाया गया तब पंड्या सेवक समाज का स्वयंसेवकों ने ता० १।२।१९२० का रोज दस बजे से दुपहर का तीन बजे तक सख्त परिश्रम उठा के वो वदवो से भरा हुआ रस्ता साफ कर दिया। स्वयंसेवकों का यह कार्य अवश्य प्रशसनीय है।

रियासत वडोदा का हिन्द विजय जिमखाना की शारीरिक कसरतों की हरिफाई १९१९।
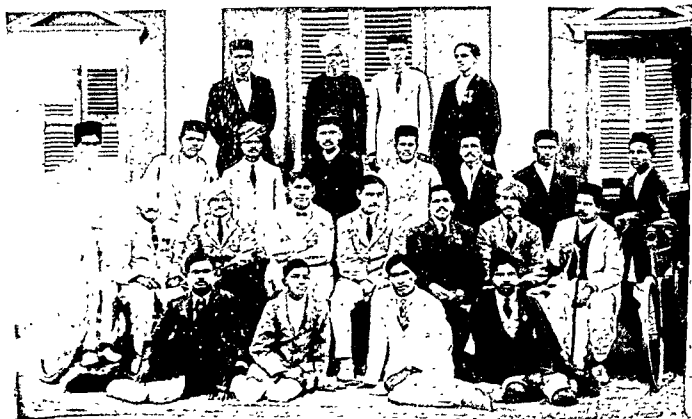
मेनेजिंग कामटी और स्वयंसेवक।

की त्वरा से करने में आया कि मध्य सैन्य की पीछे हट में और दूर पराभव की धांधल में से० डेनिकिन का सैन्य को लड़ने का रा सामान, अन्न सामग्री और दारू गोला आदि सब चीजें लड़ाई मैदान में ज्यों की त्यों छोड़ कर भग जाना पड़ा। से० डेनिकेन की ना को नीचे समुद्र में धकल दी गई ऐसा प्रतीत धर के जनवरी की च सात तारीख के अरसे में से० डेनिकिन का हाथ में था वो रशि- न सरकार का सूत्र छीन लिया और डॉन नदी व वोलगा नदी की बीच टापु में कोकेशियस पर्वत की ओर दक्षिण दिशा में हठती हुई ना के स्वाधीन में ये सूत्र दिये गये। एडमिरल कोलचाक जैसे सैबि- या में नामशेष हुआ, से० युडेनिज जैसे पेट्रोग्राड की बाजु में नाम- ष हुआ, उसी तरह से० डेनिकिन दक्षिण में काला समुद्र में जन- री के प्रथम सप्ताह में नामशेष हुआ। बोल्शेविकों का सैन्य को यह हा भारी विजय मिला। से० डेनिकिन की पास करीब पांच छे लाख का अच्छा सैन्य था, और इंग्लंड ने वर्षभर में रोज डेढ़ कोटि रुपया का खर्च कर के से० डेनिकिन का सैन्य को विमानों, तोपे, शस्त्रास्त्र, दारूगोला और अन्न सामग्री की उत्तम प्रकार की सहायता दी थी। ऐसा सुसज्जीत सैन्य का केवल दो तीन सप्ताह में बोल्शेविको ने पराभव कर दिया इस से बोल्शेविक सैन्य का सामर्थ्य कैसा बड़ा है, और उस का सेनापति में कितनी हिम्मत है यह अखिल युरप की नज़र में आ गया। जनवरी के आरम्भ में बोल्शेविको को मिला हुआ, यह विलक्षण जय हिंडनबर्ग और मैकेन्सन ने पहले रशिया पर जो विजय मिलाया था। उस की समान हो के राजकीय परिणाम की दृष्टि से तो फ्रांस में जर्मन सेना ने अन्त में हाथ पग ढीला किया था उतनी ही किम्मत यह विजय की है। बोल्शेविक लोगों का इस जय- जयकार से युरप खंड पर और एशिया खण्ड पर यह महायुद्ध के जैसी ही एक नई संक्रांत आई है; महायुद्ध में से ही यह संक्रांत का उद्भव हुआ, परन्तु उस का बोल्शेविक वाहन टीकेंगे या नहीं, उस की गत बारह महिनो में शंका थी। दो महिनों के पूर्व अक्टूबर की अखेर में तो सब तज्ञों ने मिलकर इस वाहन को अयोग्य और निकमा ठहराया, किन्तु सब कोई का दुर्दैव ने दिसम्बर का दूसरा पक्ष में दक्षिण रशिया में लड़ाई की भूमिपर मेकेन्सन की समान पराक्रम कर दिखाने की शक्ति इस वाहन ने दिखा के अखिल जगत को आश्चर्य में डूबा दिया। और मकर सन्क्रान्ति के पहले ही बोल्शेविक संक्रान्ति ने आसपास का तमाम देशों को एकदम घेर लिया। रशिया की सभर भूमि में बोल्शेविक अजीत ठहरे और रशिया में अपना सैन्य भेज के बोल्शेविकों को हार करने का प्रयत्न करना निरर्थक है ऐसा मित्रराज्यों का मुत्सद्दीओ ने निश्चित किया। बोल्शेविकों को मारना हो तो एकाद रोग जिस प्रकार आप ही आप नष्ट होता है उसी तरह यह आप ही आप मर जाँयेगे! उसी का ही देश मे उसी के मार्ग में बाधा डालने के लिये अन्य प्रदेश का लोगों ने नहीं जाना। जिस प्रकार ये लोग जन्म में आये वैसे ही मर जाँयेगे। इस प्रकार का धोरण अब भविष्य में स्वीकारना चाहिये ऐसा उपदेश चारों ओर से सब पुरुषों के मुह से श्रवण गोचर होने लगा है। बोल्शे- विको को यह संक्रान्त सामर्थ्यवान करनेवाली निश्चित होने से इस संक्रान्ति की दृष्टि किस किस पर पड़ेंगे उसका विचार करना यहां पर आवश्यक है। इस संक्राति की दृष्टि क्रमजाबन्त प्रमाण में एशिया और यूरोप यह दोनों खण्ड की उपर पड़ेगी। जपान की ऊपर उसका बड़ा भारी परिणाम हुआ है और हिन्दुस्थान, अफगानिस्थान, इरान और तुर्की साम्राज्य भी इस संक्रान्ति का दृष्टिपथ में आया है। मध्य यूरोप और जर्मनी के उपर इस संक्रान्ति का तात्कालिक परिणाम होनेवाला है और ऐंग्लो-फ्रेन्च भी उसका सपाटे में से न छूटेंगे। बोल्शेविको को मिला हुआ जय जपान को फायदाकारक जैसा हुआ है। इस संक्रान्त जपान को उत्तम फलदायी होने जैसी है। जपान का स्वप्न में भी न होगा कि इतना बड़ा नवाला जपान का मुंह में यह संक्रान्त जोर से डालती है। इस अंक में रशिया की मास्को राजधानी से नीकलती हुई आगगाड़ी, सैबीरिया का विस्तीर्ण प्रान्त में जा करके पूर्व में जपानी समुद्र को किस प्रकार मिलती है उसका नकशा दिया है। इस सैबी- रियन आगगाड़ी का मध्यभाग में बायकेल नामक सरोवर है। एड- मिरल कोलचाक का पराभव के पश्चात् सारा पश्चिम सैबीरिया की सर्व आगगाड़ी बोल्शेविकों का स्वाधीन में गई है। लेक बायकेल की नजदीक का इर्कुत्स्क शहर तक बोल्शेविक पहुंच गये और उसको पूर्व सैबीरिया में आने देना या नहीं, ऐसा जपान की सामने प्रश्न है। इर्कुत्स्क शहर का संरक्षण के लिये जपानी सेना आगे बढ़ी है ऐसा भी जनवरी का प्रथम सप्ताह में प्रसिद्ध हुआ है। लेक बायकेल से जपानी समुद्र तक आगगाड़ी का संरक्षण करने का कार्य आज बारा महिनों से जपान के पास ही था। इस कार्य के लिये जपान ने पूर्व सैबीरिया में तीस चालीस हजार सैन्य रख के एक दो प्रसंग में व्लाडिवोस्टाक बन्दर और अन्य स्थलों में बोल्शेविक मतावलम्बी लोगो ने मचाया हुआ बंड को जपान ने दाब भी दिया है। किन्तु यह सब सहायता पूर्व सैबीरिया में अपना व्यापार और उद्योग धन्धा का संरक्षण कर के एडमिरल कोलचाक की सरकार को मदद करने की दृष्टि से दी गई थी। एडमिरल कोलचाक नामशेष हो के उस की सरकार नष्ट हो जाने पर इर्कुत्स्क शहर में घुसी हुई कोलचाक की अवशिष्ट सेना अपने खुद को सैबीरियन सरकार कहलाने लगी। सैबीरिया की यह नवीन दुर्बल सरकार की सामने बोल्शेविकों का सपाटे में से खुद कैसे जीवन्त रह सके यह प्रश्न खड़ा हुआ। युरो- पियन राष्ट्रों की पास सहायता के लिये जावे तो एकादशी के घर शिवरात्री को जाना होगा। सैबीरिया को सहायता पहुंचाने की ताकद जपान और अमेरिका यह दो राष्ट्रों के शिवाय अन्य किसी के अंग में नहीं है। ऐसा इस नयी सरकार का अनुभव में आया। अमेरिका ने युरोप की दखल में से अपना मन निकाल लिया होने से और अमे- रिका में बोल्शेविक स्वरूप का संघों की बोलबाला होने से अमेरिका ने सैबीरिया की नयी सरकार को सहायता भेजने से इनकार किया। जपान की सेना पूर्व सैबीरिया में थी ही, और चिनी साम्राज्य और जपानी साम्राज्य का बचाव बोल्शेविकों की बिमारी से करने के लिये पूर्व सैबीरिया में बोल्शेविकों को न घुसन देना जपान को आवश्यक था। अक्टूबर-नवम्बर में एडमिरल कोलचाक का पूरा पराभव होने पर जपान की मदद मांगी गई। किन्तु बिना लाभ फोकट में बोल्शेविको से लड़ना जपान ने कबूल नहीं किया। पूर्व सैबीरिया का राजकीय स्वरूप का ताबा और पश्चिम सैबीरिया में व्यापार विषयक सुबीतायें इस प्रकार की शर्त पर जपान ने मदद करने को कहा। मरने की तैयारी में पड़ी हुई नवीन सरकार को जपान ने चाही हुई शर्त भारी कैसे मालुम हो सकती? सैबीरियन सरकार ने जपान की शर्त को कबूल कर ली तो भी इंग्लण्ड, फ्रान्स और अमेरिका की बिना सम्मति जपान ने इस काम मे पड़ना नहीं चाहा। दिसम्बर के प्रारम्भ में ऐंग्लो-फ्रेन्च की सम्मति मिल गई और अमेरिका के साथ लिखा पढ़ी शुरू हुई। दिसम्बर के अन्त में सैबीरिया में चाहे सो व्यवस्था करने की अमे- रिका की तरफ से जपान को परवानगी दी गई। और जनवरी के प्रारम्भ में जपानी सैन्य लेक बायकेल की पश्चिम में इर्कुत्स्क शहर का संरक्षणार्थ आगे बढ़ने की बातमी आ पहुंची। दिसम्बर का तीसरा चौथा सप्ताह में चमत्कारिक रीति से दक्षिण रशिया में से से० डेनि- किन की पिछागिरी यदी बोल्शेविको की तरफ से करने में नहीं आती तो सैबीरिया में चाहे जैसा बर्ताव करने की सुभीता अमेरिका और ऐंग्लो-फ्रेंचो की तरफ से जपान को नहीं मिलती। रशिया में बोल्शे- विकों की सत्ता प्रबल होने के कारण से बोल्शेविको से गभरा कर ऐंग्लो-फ्रेंचो ने अमेरिका की सम्मति से पूर्व सैबीरिया जपान के हवाले में दे दिया। इतना बड़ा मत अपने घर पर आपही आप आयेंगे ऐसा जपान को कभी स्वप्न भी नहीं आया होगा। जपान को मिली हुई इस सुभीता के कारण उत्तर अमेरिका में समाविष्ट है वो कानडा जैसा प्रान्त उपनिवेश के लिये अपना घर की ही पास जपान को मिला। इतनाही नहीं किन्तु सैबीरिया और मंगोलिया की अमोलिक खनिज सम्पत्ति जपानी राष्ट्र का हाथ में गई है, इस प्रकार का मत फ्रांस के सुविज्ञ लोगो का है, ऐसा प्रगट हुआ है। सैबीरिया और मंगोलिया का विस्तीर्ण भूभाग की जो जांच करने में आई है उस पर से वहां पर बस्ती बढ़ने से कृषि का उत्पन्न कानडा की समान होगा और उस जगह की पत्थर के कोयले की, लोखण्ड की, तांबे की, सोने की खानों जगत् में बढ़ेंन बढ़ीया दरज्जा की होगी ऐसा तज्ञ लोगों का अभि- प्राय है। पश्चिम सैबीरिया में बोल्शेविको की साथ जिस हेतु से जपान लड़ने के लिये तैयार हुआ है यह हेतु जो सफर [illegible] सिद्ध हो जाय तो भविष्य में सौ वर्ष तक आया पाचेगा [illegible] जपान का पैरों में खेलता रहेगा; उस में शक नहीं है। [illegible] की इस लड़ाई से, पूर्व सैबीरिया, मंगोलिया और [illegible] यह ३ प्रदेश जपान के ताबे में जायें तो [illegible] पूर्णतया घेर लिया जैसा होगा। [illegible]

चित्रमयजगत्

अवयवों में महायुद्ध का गत चार पांच वर्ष में जपान अच्छी तरह से घुस गया है; अब मस्तक पर यदी जपान का वर्चस्व हो जाय तो चिनी साम्राज्य जपान की अंकित स्थिति में बिना गये न रहेगा। तात्पर्य पश्चिम सैबीरिया में बोल्शेविको से लड़ कर उन का पराभव करने का जिस काम को ऍंग्लो-फ्रेंच और अमेरिका के कहने से जपान ने आज स्वीकार किया है, वे काम जपान का हाथ से सफल हो सके तो अर्ध एशिया खण्ड का सार्वभौमत्व पगार का रूप में, जपान को दिया जायगा; ऐसा कहने में कुछ हरकत नहीं है। रशियन साम्राज्य का और सैबीरिया के नकशा की ओर देखा जाय और लेक बायकेल को मध्य बिन्दु समज कर दक्षिणोत्तर एक रेषा मारी जाय तो एशियाखण्ड का पूर्व बाजु का अर्ध टुकड़ा डेनिकिन का पराभव ने जपान का हाथ में ही रक्खा है ऐसा दृगोचर होगा। बोल्शेविक संक्रांति का इस फल को खाने को और पचाने को जपान आज समर्थ भी है। गत दो तीन वर्षो में जपान ने अपना लश्करी सामर्थ्य बढाया है, और प्रसंग आने पर पश्चिम सैबीरिया में चार पांच लाख सैन्य दो तीन महिना की मुदत में तैयार करने को जपान आज योग्य है। कहने का तात्पर्य, लेक बायकेल से लेकर उरल पर्वत तक का पश्चिम सैबीरिया का भाग बोल्शेविको की पास से जीत कर उस जगह सैबीरिया की नयी और दुर्बल सरकार की सत्ता स्थापित करने की शक्ति जपान में है, यह निःसन्देह है। उरल पर्वत की पश्चिम की ओर खुद रशिया में घुस कर मास्को राजधानी पर चढाई ले जाने की भांजगड़ में पडने कि ताकात जपान में नहीं है। जपान की वैसी महत्वाकांक्षा भी नहीं है, और युरोपियन राष्ट्र का वैसा आमन्त्रण भी नहीं है। सेनापति डेनिकिन का जंगी पराभव से जपान को शुभ मुहूर्त हुवा है और इस मुहूर्त से जपानी सैन्य पश्चिम सैबीरिया में घुसा है। से० डेनिकिन का पराभव का परिणाम जपान की उपर इस प्रकार का होनेवाला है। तदनन्तर हिन्दुस्थान, अफगानिस्थान और इरान इस देशों पर किस प्रकार का परिणाम होगा उसका भी अब कुछ विचार करें। इरान की उत्तर सरहद पर से मर्व-बुखारा मार्ग से तासकंद को जा कर समारा-पर से मास्को की ओर जानेवाली आगगाड़ी बोल्शेविको का हाथ में गई है और तासकन्द-बुखारा ये दोनों मुसलमानी शहरों में वर्तमान में उन लोगों का जयजयकार हो रहा है। अफगान अमीर अभी तक उनके जाले में बराबर नहीं फसा है तथापि अफगान और बोल्शेविक की मित्रता हुई है। सदरहु आगगाड़ी का कास्पीयन समुद्र की ऊपर का बन्दर अंग्रेजी सेना के कबजे में है। और वह बन्दर ले लेने के लिये बोल्शेविक प्रयत्न चालु है। यह बन्दर यदी बोल्शेविकों के स्वाधीन में जायँ और मर्व-समरकन्द यह दो मथक पर बोल्शेविकों का बड़ा लश्करी थाना पड़े तो अफगानिस्थान और इरान और तदनन्तर हिन्दुस्थान यह तीनों देश पर बोल्शेविकों की लश्करी छाया पडे बिना न रहेगी। यह तीन देशों पर स्वारी करके लड़ाई जीतने की ताकद बोल्शेविकों में नहीं है और इस प्रकार की स्वारी उनके मत का कार्य कम में नहीं आती। तो भी युरोप में बोल्शेविकों का पक्ष और ऍंग्लो-फ्रेंच का पक्ष उसके बीच का वितुष्ट बढने पर अंग्रेजों को उलट टांग मारने की आवश्यकता बोल्शेविकों को मालूम पड़े तो अफगान इरान की बाजु में उनको काटे बिना बोल्शेविक लोग रहेगा नहीं। यह संकट टालने का हो तो ताशकन्द, बुखारा, समरकन्द इस रशियन तुर्कस्थान टापु का एक स्वतंत्र राज्य बना के सैबीरिया की नवीन सरकार की तरह ताशकन्द की इस नवीन सरकार को अपना छत्र की नीचे लेना अंग्रेजों को आवश्यक है। पश्चिम सैबीरिया को लगा हुआ बोल्शेविक का ग्रहण छुड़ाते २ जपानी सैन्य उरल पर्वत तक पहुंचे वहां तक, ताशकंद बुखारा को लगा हुआ बोल्शेविक ग्रहण अंग्रेजी सैन्य भी छुड़ा देंगे, ऐसा प्रतित होता है। सेनापति डेनिकिन का पराभव के कारण हिन्दुस्थान की ऊपर आपति आ पड़ेगी इस प्रकार का कोलाहल विलायत के वर्तमान पत्र मचा रहे हैं। और मि० चर्चिल ने मुत्सद्दी ने भी उस कोलाहल का पुरस्कार किया है। इस का इतना अर्थ मात्र निकलता है कि ताशकन्द टापु की नयी सरकार निर्माण कर के उनको अपने में रक्षा रखने की ममलत अंग्रेज मुत्सद्दीओं में हो रही है। ...यन समुद्र पर अंग्रेजों का ही वर्चस्व है; और कास्पियन और काला समुद्र को जोड़नेवाली आगगाड़ी डिसम्बर के अन्त में अंग्रेजी सेना ने अपने ताबे में ले ली है। से० डेनिकिन का पराभव होने से बोल्शेविक सैन्य यदी कोकेशियस पर्वत को उलंघ कर काला समुद्र व कास्पियन समुद्र की मध्य का टापु बोल्शेविक लोक व्याप्त कर बैठे तो अंग्रेजो की विरुद्ध हैं वो तुर्को के साथ बोल्शेविक लोग सलंग्न हो जायँगे और उसी कारन बड़ा अनर्थ होगा ऐसा मि० चर्चिल साहेब को भय लगता है। यह भय टालने के लिये अंग्रेजी सेना आज ही काला और कास्पियन समुद्र की मध्य का टापु में जा कर बैठी है। इस टापू में बोल्शेविको से लड़ने का प्रसंग आवे तो फ्रेंचो ने भी उन की मदद में आना ऐसी अंग्रेजो की स्वाहजिकपन से इच्छा है। इरान, मेसापोटेमिया और कास्पियन समुद्र की मिट्टी के तेल की खानो में अंग्रेजो ने फ्रेंचो को हिस्सा दिया है, और तुर्कों पर नजर रखने का, कान्स्टान्टीनोपल का कारभार देखने का और डार्डनेल्स व बास्फरस की सामुद्रधुनीओं का कबजा लेने का काम ऍंग्लो फ्रेंच ने मिल जुल कर करना ऐसा थोड़े ही दिन के पहेले निश्चित हुआ है। तुर्कस्थान का प्रश्न का निकाल करने के लिये जनवरी का दुसरा सप्ताह में अंग्रेजी मुख्य मुख्य मुत्सद्दी पारीस में गये हैं; और ऊपर का धोरण के अनुसार तुर्की की संधि का निकाल करके तुर्कों को बोल्शेविको की ओर से उपद्रव न होने पावे इसके लिये काकेशियस पर्वत के टापू में ऍंग्लो-फ्रेंचो की सेना जनवरी के अन्त में ठभी रहेगी ऐसा अन्दाज है। दक्षिण रशिया में से० डेनिकिन का सैन्य की यदी पायमाली हो गई है तो भी पोलण्ड और लाटलण्ड को मित्र राज्यो ने बोल्शेविको की विरुद्ध में किया है और पोलण्ड की मास्को पर ले जाने की स्वारी का आरम्भ भी जनवरी का प्रथम सप्ताह में हो गया है। इस स्वारी में पोलेंड को भरपूर मदद पहुंचाने के लिये जर्मनी को कुछ सवलत देने की ओर ऍंग्लो फ्रेंचों की वृत्ति है। बोल्शेविकों का प्रस्थ बढते जाने से जर्मनी के पर पहले के जैसा गुस्सा शिलक में नहीं रहा है। इतना ही नहीं किन्तु जर्मनी के ऊपर अंशतः विश्वास रख के बोल्शेविको का नाश के कार्य में जर्मनी को भागीदार करने में हरकत नहीं है ऐसे भी कितनेक लोगों का मन होने लगा है। तात्पर्य से० डेनिकिन का पराभव जपान की तरह जर्मनी को भी लाभदायी हुवा है ऐसा कहने में हरकत नहीं है। बोल्शेविक के उपर की स्वारी का प्रकार यदी डेनिकिन की स्वारी जैसा हो जाय तो बोल्शेविको का जयजयकार जर्मनी का उदर में आया जैसा होगा उसमे शंका नहीं है। वर्तमान समय में बोल्शेविको की यह संक्रान्त जपान और जर्मनी को लाभदायक और दूसरों को त्रासदायक हुई है उसमें कुछ वाद नहीं है।

हिन्दी गान !

हिन्दी मतिभावान्, हमारी, हिन्दी मतिभावान.

भाषा नूतन देश देश की सब की मातु समान।
अमृत रूपी इस भाषा का करते सब जन पान ॥ हमारी० ॥

तुलसी सूर और भूषण कवि लल्लुलाल रसखान।
शिवप्रसाद हरिश्चंद्र सरीखे सेवक हुए महान् ॥ हमारी० ॥

तत्वज्ञान; विज्ञान, धर्म श्रुति गीता और पुरान।
इन सब विषयों का हम पाते हिन्दी से ही ज्ञान ॥ हमारी० ॥

परम मनोहर सुखदा वाणी कविवर करते गान।
जिस को प्यारी अपनी भाषा वह सच्चा विद्वान ॥ हमारी० ॥

कीजे सेवा इस की बंधो अपनी माता जान।
जननी जन्मभूमि को कहते, हैं स्वर्गात् महान ॥ हमारी० ॥

हम हिन्दु हैं देश हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।
इसी हेतु भाषा भी हिन्दी यह सिद्धान्त महान ॥ हमारी० ॥

जगदीश्वर ! अब हो भारत में इस भाषा का मान।
कार्येश 'युवराज' सफल हो सबविधि हो कल्यान ॥ हमारी० ॥

"युवराज"

विद्यासागर की कुछ बातें।

(अध्यापक जहूरबख्श (सागर) लिखित।)

ऐसा कौन विद्या-प्रेमी होगा जो प्रातःस्मरणीय महात्मा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महोदय के पवित्र नाम से परिचित न हो! पाठक! विद्यासागर अपने पीछे हम लोगों के लिये यह आदर्श छोड़ गये हैं जिसकी समता बहुत कम हो सकती है। उनके चरित्र से हम क्या नहीं सीख सकते। उनका चरित्र शिक्षा-सागर है! वे हमें मातृ-पितृभक्ति, देशभक्ति, दृढ़-प्रतिज्ञ, परोपकार, दयालुता आदि अनेक गुणों की अपूर्व शिक्षा दे गये हैं। उनका चरित्र विशाल है, हमारी लेखनी में शक्ति नहीं कि उसका गुणगान कर सके। विद्यासागर ने उन कंगाल, पर सच्चरित्र माता-पिता के यहाँ जन्म लिया था, जिन्हें दोनों वक्त भरपेट भोजन भी नसीब न होता था। उन निर्धन माता पिता के पुत्र ने ऐसे २ कार्य किये कि, आज भारत में उनका नाम गुंजायमान हो रहा है। विद्यासागर पर सच्चरित्र माता पिता का ऐसा प्रभाव पड़ा कि, उन्होंने अपने जीवन में क्रांति कर डाली-भारत की भारती गुञ्जायमान कर दी। एक बार भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी ने विद्यासागर की माता श्रीमती भगवती देवी से कहा-"विद्यासागर की माता के हाथ में ये चाँदी के कड़े शोभा नहीं देते।" इसके उत्तर में देवी ने कहा—" बेटा, इन हाथों की शोभा इन कड़ों से नहीं है-इनकी शोभा तो दीन दुखिया को भोजन देने से है।" ऐसी दयालु दीनवत्सल और उदाराशय माता के विद्यासागर सा पुत्र होना स्वाभाविक ही है। यदि हम कहें कि माता के इसी वाक्य ने उन्हें इस योग्य बना दिया तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह तो सनातन रीति है कि माता-पिता के अनुरूप ही संतति होती है। विद्यासागर के पिता का नाम था-ठाकुरदास बन्द्योपाध्याय। इन्हीं महोदय के यहाँ मेदिनीपुर ज़िले के वीरसिंह ग्राम में पंडित ईश्वरचन्द्र ने सन १८२० ई० में जन्म लिया था।

स्व० पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

विद्यासागर लड़कपन से होनहार थे। पढ़ने-लिखने में ये अपना सानी नहीं रखते थे। कक्षा में दूसरे नम्बर पर रहना उन्होंने जाना ही नहीं। निर्धनता के कारण आप को कभी २ आधा पेट ही रह जाना पड़ता था। जब आप संस्कृत कॉलेज में पढ़ते थे, तब आप को ४) छात्रवृत्ति मिलती थी। विद्यासागर लड़कपन से ही दयालु पर दुःख-कातर थे। स्वयं आधा पेट भोजन करके भी गरीब विद्यार्थियों की सब तरह सहायता करते थे। उन्हें पुस्तकें तथा कपड़े-लत्ते ले देते। आप स्वयं [illegible] कपड़े ही पहने रहने पर साथियों को सुन्दर और कीमती कपड़े ले देते! इस प्रकार लड़कपन से ही, स्वयं कठि- [illegible] सह करके भी, विद्यासागर की दान तथा परोपकार मे [illegible] हुई थी! विद्यासागर निर्धन पिता के पुत्र थे, पर विद्या पढ़ने [illegible] कभी निर्धनता से नहीं मानी। आप की गरीब [illegible] परन्तु तब भी [illegible] नहीं रहा। गरीब और [illegible] रहा। उनके दान की स्मृति [illegible] सहायता में [illegible] उत्तर ही जाते थे।

विद्यासागर को शिक्षा प्रचार से कैसा आंतरिक प्रेम था, सो इसी एक बात से स्पष्ट है कि, जब आपने अपनी जन्मभूमि में शाला की नींव डाली तब आप स्वयं ही नींव खोदने लगे। बंगाल के गवर्नर हालिडे साहिब की मौखिक आज्ञा से आपने बंगाल में सौ से अधिक बालिका विद्यालय खोले। पर दुर्भाग्यवश डाइरेक्टर ने इन विद्यालयों का व्यय अस्वीकृत किया। विद्यासागर ने उन्हें बहुत काल तक अपने व्यय से चलाया! यहाँ तक कि बालिकाओं को पढ़ने-लिखने की सामग्री मुफ्त दी जाती थी। आपने सौ सौ अँगरेजी पाठशालाएँ खोलीं। इसी बालिका विद्यालय के कारण डाइरेक्टर से मनमुटाव होजाने के कारण विद्यासागर ने ५००) की जगह छोड़ दी! बंगाल के गवर्नर आप के बड़े मित्र थे। उन्हें आप एक पत्र में लिखते हैं-" मैं ने कॉलेज की नौकरी छोड़ दी सही; पर मेरे जीवन का संपूर्ण समय उसी पवित्र कार्य (स्वदेश के नरनारियों की ज्ञानोन्नति और उनमें साधारण शिक्षा-प्रचार) में लगेगा और उस व्रत का उद्यापन मेरी चिता के भस्म से होगा।" अहा! ये शब्द आगे नहीं बढ़ने देते, जिह्वा पकड़ लेते हैं। धन्य विद्यासागर! धन्य तुम्हारी परोपकारबुद्धि! वास्तव में विद्यासागर ने इस व्रत का पालन उचित से अधिक किया। ऐसे कर्मवीर, स्वार्थत्यागी, परोपकारी सच्चे देश सेवक की दो चार बातें सुनकर कौन शिक्षा ग्रहण करना न चाहेगा! सुनिये-

(१) अध्ययन—

विद्यासागर ने जैसा अध्ययन किया, सो देश जानता है। उनकी कीर्तिकौमुदी ही यह बात अच्छी तरह बतला रही है। जब आप ६ वर्ष की अवस्था में अपने पिता के साथ कलकत्ते जा रहे थे तब रास्ते ही में मील-पत्थरों पर से अँगरेजी अंक सीख लिये थे। पढ़ने का यह हाल था, कि एक मिनट भी व्यर्थ नहीं खोते थे! रात में सिर्फ़ दो घंटे सोते। यदि नींद आती तो आँखों में सरसों का तेल लगा लेते! भर पेट खाने को न मिलना, प्रातःसन्ध्या बाज़ार से सौदा लाना, स्वयं भोजन बनाना, इतने पर सोने को स्थान की भी कमी! ऐसी दुस्थिति में भी विद्याध्ययन में यह रुचि! संस्कृत कॉलेज में आप प्रत्येक विषय में प्रथम रहते थे। प्रत्येक विषय में आपकी अद्वितीय योग्यता देखकर ही आप के शिक्षकों ने सभा कर आप को विद्यासागर की उपाधि प्रदान की थी! आज तक इस उपाधि के पाने का सौभाग्य विद्यासागर के सिवाय किसी को भी प्राप्त नहीं हुआ! जब आप विधवाविवाह जायज़ ठहराने के लिये शास्त्रों का अध्ययन कर रहे थे, तब कभी २ सारी रात कॉलेज के पुस्तकालय ही में व्यतीत हो जाती थी! एक दिन बहुत रात गये तक एक श्लोक का अर्थ न लग सका तब आप कॉलेज बन्द कर घर लौट पड़े। पर रास्ते में अर्थ प्राप्त हो गया। आप तुरन्त ही कॉलेज लौट पड़े, और उसकी व्याख्या लिखने लगे। लिखते लिखते सवेरा हो गया। धन्य यह विद्या प्रेम! ऐसे विद्याप्रेमी बालक को खोकर मातृभूमि सचमुच निर्धन हो गई है! विद्यासागर! तुम्हारी फिर आवश्यकता है, आओ अवतार लो और इस देश के मूर्खों को तथा विद्याध्ययन से जी चुराने वाले विद्यार्थियों को एक बार फिर विद्याप्रेम का पाठ पढ़ा दो!

(२) मातृ-पितृ भक्ति—

१७ वर्ष की अवस्था में विद्यासागर ने जज पंडित की परीक्षा पास करली। आप की बड़ी इच्छा थी कि इस पद पर काम करें। थोड़े ही दिनों में निवेदन करने पर आप को त्रिपुरा के जज-पंडित का पद दिया गया। परन्तु पिता के मना करने पर आपने यह पद प्रबलेच्छा होते हुए भी अस्वीकृत कर दिया।

जिस समय आप कलकत्ते के फोर्ट विलियम कॉलेज में अध्यापक थे, माता ने इन्हें छोटे भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिये बुला भेजा। कॉलेज के अध्यक्ष ने कार्याधिक्य के कारण आप को छुट्टी नहीं दी। मातृभक्त विद्यासागर रातभर बेचैनी के कारण करवटें बदलते रहे। उन्हें नौकरी पर घृणा हो आई। जिस नौकरी के कारण मातृ-पितृभक्ति में व्याघात हो उस नौकरी को तथा उनको जो नौकरी के कारण मातृ पितृभक्ति में व्याघात करते हैं, सहस्र बार धिक्कार है। सवेरा होते ही आप कॉलेज के अध्यक्ष मार्शल साहिब के पास पहुँचे और उन से कहा—"साहिब, मुझे घर जाना अत्यावश्यक है, माता जी की ऐसी ही आज्ञा है। मैं अब यहां एक क्षण भी न ठहरूँगा। छुट्टी दीजिये या इस्तेफा मंज़ूर कीजिये। मार्शल साहिब ने विद्यासागर का मातृ स्नेह देख उन्हें छुट्टी दे दी। उस समय रेल नहीं थी। वर्षा-काल था रास्ते में चोर डाकुओं का भी भय था। कलकत्ते से घर तक दो दिन की राह थी। पर आप इन कठिनाइयों की ओर ज़रा भी ध्यान न दे घर की ओर चल दिये। मार्ग बहुत खराब हो गया था; पर विद्यासागर भी धुन के पक्के थे। चलते २ दूसरे दिन दो पहर को एक नदी के किनारे पहुँचे। नदी में बड़ा भारी पूर आया था। पानी के वेग के कारण नाव भी बन्द! अब क्या किया जाय! पर धन्य हो मातृभक्त! पाठक, जानते हो विद्यासागर ने क्या किया? वे नदी को देख डर नहीं गये! माता का ध्यान कर, प्राणों का मोह त्याग विद्यासागर नदी में कूद पड़ते हैं और संकटों को लात मार एक क्षण में नदी पार कर जाते हैं! धन्य मातृभक्ति। पाठक! देखा आपने! इसे मातृभक्ति कहते हैं। इसी प्रकार अनेक संकटों को पारकर उसी दिन रात्रि के बारह बजे विद्यासागर माता के श्रीचरणों में प्रणाम करते हैं। पर हा! आज हमारे बड़े २ बी० ए० एम० ए० माता पिता को 'डैम' कहते हैं! विद्यासागर! क्या तुम स्वर्ग से अपने इन देशबन्धुओं का यह दृश्य नहीं देख रहे हो? तुम जैसे मातृपितृ भक्त बालक को खोकर आज भारत माता सचमुच विहीन हो रही है! आज फिर तुम्हारी आवश्यकता है! आओ अवतार लो और अपने देशबन्धुओं को फिर से मातृ पितृभक्ति का पाठ पढ़ा दो।

(३) स्वार्थत्याग और उदारता—

विद्यासागर का स्वार्थत्याग प्रशंसनीय है। उनके समान स्वार्थ-त्यागी विरले ही होंगे। जिसने स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुख पहुँचाने की चेष्टा की, स्वयं बुरा भला खा फटे पुराने कपड़े पहिन दूसरों को अच्छा खिलाया और अच्छे कपड़े पहिनाये, स्वयं अर्थ कष्ट से पीड़ित होने पर भी कर्ज़ लेकर दूसरों की सहायता की तथा पढ़ाया लिखा। ऐसे स्वार्थत्यागी उदाराशय महात्मा विद्यासागर धन्य हैं! फोर्ट विलियम कॉलेज में पहिले विद्यासागर को ५०) मासिक मिलते थे। कुछ समय बाद वहाँ ८०) की एक जगह खाली हुई। प्रिन्सिपाल महोदय ने यह पद विद्यासागर को देना चाहा। पर आपने यह पद अपने एक मित्र को दिला दिया! आपने अपने मित्र पं० तारानाथ को कोई अच्छी नौकरी दिला देने का वादा किया था। कुछ समय पश्चात् आपही के कॉलेज में ६०) की एक जगह खाली हुई। मार्शल साहिब यह पद भी विद्यासागर को ही दिया चाहते थे। पर महात्माने अपने स्वार्थ का खयाल न कर यह जगह अपने मित्र को दिलाने का अनुरोध किया! इस समय तारानाथजी कलकत्ते से ३० कोस की दूरी पर एक गाँव में थे। विद्यासागर दिनरात चल कर दूसरे दिन तारानाथजी को कलकत्ते लिवा लाये! धन्य परोपकार!

फ्रांस में प्रसिद्ध बंग कवि माइकेल मधुसूदन दत्त पर कई कारणों से बड़ी आपत्ति आ पड़ी। उस समय उन्हें अपने मित्रों से ४००) रुपया लेना थे, पर बहुत अनुनय विनय करने पर भी भले आदमियों ने उन्हें उनके रुपये न भेजे! तब लाचार हो मधुसूदन ने विद्यासागर से प्रार्थना की। स्वयं अर्थ कष्ट से पीड़ित विद्यासागर ने कर्ज़ ले शीघ्र ही रुपया भेजा। यदि विद्यासागर इस समय सहायता न देते तो कदाचित् कवि-वर फ्रांस के कारागार में ही समाप्त हो जाते! आपने करीब १००००) खर्च कर मधुसूदन को बैरिस्टर बनाया। ...

लौटने पर न तो विद्यासागर की बात ही मानी और न एक पैसा वापिस किया, समस्त ऋण विद्यासागर को ही चुकाना पड़ा! वि-सागर अपने लिये नहीं, दूसरों के लिये सदैव ही ऋणी बने रहे। अन्तिम समय उन्हें किसी का एक पैसा भी न देना था। ऋण चु- में वे ऐसे खरे थे कि जिसको देना होता बुलाकर दे देते। उनके स्व- त्याग, उदारता और परोपकार की अनेक कहानियाँ हैं। आज भ- में विद्यासागर ऐसे परोपकारी विरले ही हैं। ऐसे सुपुत्र को खो- भारत जननी सचमुच हीन होगई है। विद्यासागर! भारतजननी तुम्हारी बड़ी आवश्यकता है। आओ अवतार लो। और अपने बन्धुओं को फिर स्वार्थत्याग, परोपकार और उदारता का पाठ पढ़ा

(४) दयालुता—

जो परोपकार के लिये अनेक कष्ट सह सकता है—सदैव ऋण में फँसा रह सकता है, उसमें अपूर्व दयालुता होनी ही चाहि- वास्तव में दया ही धर्म का मूल है—यह सिद्धान्त हमारे पूर्वज म- महर्षि बतला ही गये हैं। विद्यासागर में यह सिद्धान्त कूट २ कर था। आप लड़कपन ही से बड़े दयालु थे। इन्हें पिता से जो मिलता था, उसे आप अपने गरीब सहपाठियों के लिये ही खर्च डालते थे। जिसके पास खाने को न होता, आप न खा उसे खि- देते। जिसके पास कपड़े न होते उसे कपड़े ले देते, पुस्तकें न हो- भी ले देते। बीमार की अपने खर्च से दवा करते। दयालुता यहाँ बढ़ी थी कि, आप पालकी में जा रहे हैं। और रास्ते में कोई दीन मिल गया, तो उसे पालकी में बैठा दिया और आप पैदल चलने ल- एक बार एक मेहतर की स्त्री हैजे में बीमार हो गई। वह रोता हु- विद्यासागर के पास आया। आप छुवा छूत का कुछ खयाल न कर दव- का बस्त ले भंगी के साथ हो लिये और दिन भर भूखे प्यासे रह रोगी की सेवा शुश्रूषा करते रहे! एक दिन आप के साम्हने से हुआ एक ब्राह्मण निकला। पूछने पर मालूम हुआ कि; उसने अ- कन्या का विवाह करने के लिये कर्ज़ा लिया था, जो बढ़ते २ ब्याज समेत २४००) हो गया है। पास पैसा नहीं, साहूकार ने ना- करदी—कल उसी की पेशी है। विद्यासागर को ब्राह्मण का यह देख चैन न पड़ी। आपने उसकी बात का पता लगा कर उसकी से अदालत में चुपचाप २४००) जमा कर दिये। विद्यासागर! तु- दयालु दानवीर सुपुत्र को खोकर हमारी 'भारतजननी सचमुच वि- होगई! आज लाखों भारतीय पेट की दारुण ज्वाला से तड़फ रहे कोई उनकी सुधि लेने वाला नहीं—उनका दुख देख हमारे धनाढ्य- यों को ज़रा भी तरस नहीं आता। ऐसे समय तुम्हारी बड़ी आव- कता है। आओ! अवतार लो और इन वज्र हृदयों में दयालुता मन्त्र फूँक दो!

(५) प्रतिज्ञापालन—

कुटुम्बियों के व्यवहार से दुखी हो आपने एक बार अपनी जन्म- में न जाने की प्रतिज्ञा करली। फिर कभी आप मरते २ अपने गाँ- नहीं गये! आप कलकत्ते के अजायबघर में सदैव जूते पहिने जाया करते थे। वहाँ, एक बार आप अपने एक मित्र को लेकर चपरासी ने जूते पहिने जाने से रोका। पूछने पर मालूम हुआ कि, यहाँ का पुराना नियम है। जब यह बात अध्यक्ष को मालूम हुआ उसने बहुत कुछ अनुनय कर कहा कि आप जूते पहिने आ सकते हैं। परन्तु विद्यासागर ने साफ़ कह दिया—"मैं सर्वसाधारण बाहिर नहीं हूँ। जब सर्वसाधारण जूते पहिने नहीं आ सकते, मैं क्यों आऊँ! अब मैं तभी अजायब घर में आऊंगा जब सर्वसाधा- वहाँ जूते पहिने आ सकेंगे। दुःख की बात है कि भारत सरकार लिखा पढ़ी होने पर भी विद्यासागर महोदय की बात पर खयाल न किया गया! फिर आप कभी अजायब घर नहीं गये। सर्वसाधा- का इन्हें यहाँ तक खयाल था। आज कल के म्युनिसिपल मेम्बर हो थे कि मेम्बरी प्राप्त होते ही नगरवासी से कहते हैं—"यहाँ वे पा- ना बनाया तो बनाया क्यों?"

(६) आत्मसम्मान—

विद्यासागर बड़े आत्माभिमानी थे। उन्हें अपने सम्मान का खयाल रहता था। इसी आत्माभिमान के कारण आपने ५००) नौकरी पर लात मार दी! एक बार विद्यासागर को हिन्दू कॉलेज अध्यक्ष कार साहब के पास जाना पड़ा। विद्यासागर को काला आद- समझ उसने उनकी कुछ भी परवा न की। वह चुपचाप कार-

चुपचाप इस कार्य कर लौट आये। भाग्यवशात् एक दिन साहब बहादुर को भी विद्यासागर के पास आना पड़ा। वे भी साहब की नाईं चुपचाप पैर फैलाये कुरसी पर लेटे रहे। भला साहब कैसे अपना अपमान सह सकते हैं! कार साहब ने इस बात की रिपोर्ट संस्कृत कॉलेज के अध्यक्ष मयेट् साहिब से की। विद्यासागर से कैफ़ियत् तलब की गई। आपने कैफ़ियत् में लिखा—"हम भारतीय काले हैं। इसलिये साहिब हमें तथा हमारी सभ्यता को भी तुच्छ समझते ही हैं। हम असभ्य, साहबों का स्वागत करना क्या जानें। इसीलिये मुझे कार साहिब ने एक दिन नवागत का स्वागत करने की शिक्षा दी थी। मैं जिस समय उनके पास गया; वे मेरा स्वागत करने के लिये चुपचाप पैर फैलाये कुरसी पर लेटे सिगरेट पीते रहे मैंने समझा, शायद आगन्तुक का स्वागत करने की यही पाश्चात्य रीति है। कार साहब के आने पर मैं उनकी बतलाई हुई रीति से उनका स्वागत क्यों न करता?" कैसा मखमली जूता है! आज कल के लल्लोचप्पो वाले यह उदाहरण स्मरण रक्खें!

(७) न्याय से प्रेम—

विद्यासागर बड़े न्याय-प्रिय थे। अन्याय और असत्य से उन्हें बड़ी घृणा थी। जहाँ ये दुर्गुण होते वहाँ विद्यासागर खड़े भी न रहते। न्याय के साम्हने वे आफ़ीसर तथा नाते-रिश्तेदारों तक को कुछ न समझते थे। विलायत से आये हुए सिविलियनों की परीक्षा (देशी भाषाओं में) फोर्ट विलियम कॉलेज में होती थी। एक दिन मार्शल साहब ने परीक्षक विद्यासागर से कहा—"सिविलियन लोग बहुत द्रव्य खर्च कर परीक्षा पास कर यहाँ आते और कई, परीक्षा में फेल हो फिर वहीं लौट जाते हैं। उनकी दुर्गति का ठिकाना नहीं रहता। यदि आप ज़रा सरलता से कार्य ले उन्हें पास ही कर देने की कृपा किया करें तो अच्छी बात है!" महात्मा ने उत्तर दिया—"यह अन्याय मुझ से न होगा। यह आप की नौकरी है।" आपने अपने दामाद को कॉलेज का प्रिंसपाल बना दिया था। पर उसका कार्य आप को सन्तुष्ट न कर सका। आपने रिश्ते का कुछ भी खयाल न कर उसे एकदम छुट्टी दे दी। धन्य यह न्यायप्रियता!

(८) सादगी—

विद्यासागर बड़े ही सादेपन से रहते थे। धोती, चादर और चट्टी जूता यही उनका लिबास था। इसी पोशाक में आप अपने मित्र लेफ्टिनेंट गवर्नर बंगाल से भी मिलने जाते थे। एक दिन छोटे लाटने आप से चोगा चपकन वगैरह पहिन कर आने के लिये कहा। विद्यासागर साहब की रुचि के अनुकूल कपडे पहिन कर उनसे मिलने गये लौटते समय आपने उनसे कहा—"बस साहब! यह मेरी अन्तिम भेंट है।" साहब ने पूछा—क्यों? आपने हँस कर उत्तर दिया—"मैं क़ैदी की नाईं तमाशा बनाकर आप से मिलने नहीं आ सकता। यह पोशाक मुझे भारी लगती है।" साहब ने भी हँस कर कहा—"कोई हर्ज नहीं, आप अपनी रुचि के अनुकूल कपड़े पहिन कर आ सकते हैं।" आज कल गर्मी की ऋतु में भी कोट बूट सूट डाँटकर गला फँसा कर बन्दर बनने वाले जैन्टिलमेन, विद्यासागर की इस सादगी से शिक्षा ले सकते हैं। एक बार आप रेल से कहीं गये। स्टेशन पर उतरते समय आप को कॉलेज का एक अपरिचित विद्यार्थी मिल गया। उसके पास सिर्फ़ एक बक्स था। कुली ढूंढने पर भी न मिला। विद्यार्थी जो बक्स न ले जासके। विद्यासागर बोले—आप चलिये, मैं बक्स ले चलता हूँ। दूसरे दिन जब उस विद्यार्थी को एक सभा में मालूम हुआ कि ये तो विद्यासागर हैं, तब उसने उनके चरणों में सिर नवा कर क्षमा प्रार्थना की। पाठक! यह सादगी तो देखिये। यह उदाहरण पढ़ एक दिन हमारे एक फैशनेबुल मित्र भी स्टेशन से दस सेर का बक्स बगल में दबा घर ले आये थे।

(९) मातृभाषा प्रेम—

इन सब के सिवा उल्लेख योग्य बात विद्यासागर का मातृभाषा प्रेम है। आप संस्कृत के विद्यासागर थे, फिर भी अपनी मातृभाषा को प्रेम करते थे। वे हमारे यहाँ के (हिन्दी भाषाभाषी) टुटपुंजिया संस्कृत पंडित न थे। विद्यासागर के पहिले बँगला में नाम लेने योग्य एक भी पुस्तक न थी। आपने स्वयं बँगला में ग्रंथ लिखे, दूसरों से लिखवाये और उनके प्रचार का यथा शक्य प्रयत्न किया। जैसे प्रातःस्मरणीय भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी हिन्दी गद्य के जन्मदाता हैं, वैसे ही विद्यासागर भी बँगला गद्य के पिता हैं। जो त्याग हिन्दी के लिये भारतेन्दु जीने किया था, वही त्याग विद्यासागर ने बँगला के लिये किया था। विद्यासागर की बदौलत ही आज बँगला को यह उच्चासन मिला है। बँगाली विद्यासागर के बतलाये हुए पथ पर चले। महामहोपाध्याय, शास्त्री, बी. ए., एम. ए. होकर भी उन्होंने अपनी भाषा को प्रेम किया, विद्यासागर के आदर्श को साम्हने रख उन्होंने अपनी भाषा की उन्नति के लिये घोर तपस्या की तब कहीं बँगला भाषा को यह श्रेष्ठ आसन प्राप्त हुआ। पर हाय! बँगला से पुरानी हिन्दी आज भी अपने दुर्भाग्य को रो रही है! हाय! जिन भारतेन्दु ने हिन्दी को यह रूप दिया था, उन्हें आज कितने हिन्दीभाषाभाषी अपना पथ प्रदर्शक मानते हैं! कितने लोग उनकी यादगार मनाते हैं? उनकी कितनी स्मृतियाँ कायम हैं? कितने लोग उनको अपना आदर्श मान हिन्दी की सेवा कर रहे हैं? हिन्दी भाषाभाषी शास्त्री, बी० ए० एम० ए० कुछ को छोड़ अपनी बेवकूफी में ही पागल हो रहे है, फिर हिन्दी उन्नति कैसे हो? हम लोगों को चाहिये कि; विद्यासागर तथा भारतेन्दु का आदर्श साम्हने रख अपनी भाषा की सेवा करें।

सन १८९१ ई० की २९ जुलाई का दिन भारत के लिये बड़े ही दुर्भाग्य का, बड़े ही शोक का दिन था। इसी दिन महात्मा विद्यासागर ने देवलोक को प्रस्थान किया था।

सुरत का लेडीं वॉलंटीयर कोर।

सभाओं में स्त्रीवर्ग की व्यवस्था रखने के लिये लेडी वॉलंटीयरों का बहोत ही उपयोग हो सकता है। यह सुरत में भरी हुई गुजरात की तीसरी राजकीय परिषद के समय अच्छी तरह से दृगोचर हुआ।

रावण।

(लेखक—वैशल्ल, पाण्डेय गंगाविष्णु शास्त्री, काव्य-पुराणतीर्थ।)

आ

ता कुबेर को जीत पौलस्त्य नन्दन दशानन, पुष्पक, यान पर सवार हो शरवन वन से (जहां षडानन का जन्म हुआ था) कैलाश की ओर जारहा था कि एकाएक (अचानक) उसका पुष्पक विमान रुक गया। इच्छाचारी पुष्पक यान सहसा क्यों रुक गया, इसका क्या कारण है, इस विषय पर वह मन्त्रियों के साथ परामर्श करही रहा था-कि मारीच नाम मन्त्री ने कहा, राजन्! कुछ न कुछ कारण इसका अवश्य है, क्योंकि बिना किसी विशेष कारण के अव्याहत गमन विमान किसी प्रकार नहीं रुक सकता। कदाचित् इस पर्वत पर कोई महापुरुष रहता हो, जिस ने विमान की गति रोकदी हो अथवा कुबेर के डर से यह न चलता हो।

सब मन्त्रियों के साथ विचार करता हुआ, वह इसी चिन्ता में निमग्न था कि; इसी बीच में विकराल स्वरूप बभ्रु वर्ण, नाटाकद, मुंडित शीर, महाबली महादेव के मुख्य अनुचर वानर मुख, नन्दीश्वर, उसके सन्मुख आकर निःशंक हो बोले। लंकाधिराज, कृपया आप यहां से लौट जाये, क्योंकि यह पर्वत देवाराध्य शिवशंकरजी का क्रीड़ा स्थल है, यहां जगज्जननी पार्वती के साथ वे विहार किया करते हैं। इसलिये यह पर्वत गरुड़, सर्प, यक्ष, किन्नर, देव, दानव, गन्धर्व, राक्षस और मनुष्यादिकों को अगम्य है। नंदीश्वर का यह कथन सुन और उनका विकट रूप देख दशानन खिलखिला कर हंस उठा और बोला-अरे वानर, तू कौन है? और वह तेरे स्वामी महादेव कौन हैं? क्या तूने त्रैलोक्य विजयी दशानन के पराक्रम को नहीं सुना? जिसके भय से देव, दैत्यप्रभृति थरथर कांपते हैं, उसी दशानन से तू लौट जाने को कह रहा है? क्या रावण भी कभी किसी काम को बिना पूर्ण किये लौटा है। ठीक, ठहर जा, आता हूं। यह कह कर पुष्पक से उतर नन्दी की ओर बढ़ा और झपट कर उसके समीप आ पहुँचा।

अपने वानर मुख पर हंसनेवाले तथा शिव की निंदा करनेवाले लंकापति को सन्मुख खड़ा देख, स्वामिभक्त नन्दी क्रोधित हो बोले, अरे नीच! तुमने हमारे स्वामी जगत्पूज्य शिव की निंदा की है, और हमारा वानर का सा मुख देख उच्च स्वर से हंस कर मेरा तिरस्कार किया है। इससे हमारे वीर्य से संयुक्त, हमारे ही सदृश रूप वाले तुम्हारा तथा तुम्हारे कुल का नाश करेंगे। हमारे अंश से उत्पन्न महाबली उन वानरों के नख दन्त ही तुम्हारे लिये आयुध होंगे। निशाचरराज! शिव के प्रताप से मुझ में यह शक्ति है कि, मैं तुम को इस प्रकार हंसने, शिव के निरादर करने, तथा दर्पपूर्ण वचन कहने का फल अभी चखा देता। किन्तु तुम्हारी मृत्यु का निमित्त विधाता ने कुछ अन्य ही रचा है। यही समझ सब कुछ सहन करता हूं।

दशानन के लिये नन्दीश्वर का कथन मानो वायु का बहना था। उसने इसका कुछ ख्याल न किया और नन्दी से बोला। नन्दीश्वर आज तो हम तुम को छोड़ देते हैं, परन्तु अब कभी ऐसी गर्व पूर्ण बात किसी से न कहना। पुनश्च (कैलाश को पकड़ कर) इस पर्वत ने हमारे विमान का मार्ग रोक दिया है इससे हम इसे अवश्य जड़ से उखाड़ कर फेंक देंगे। तेरे स्वामी शिव में क्या शक्ति है? और किसके बल पर वे राजाओं के समान यहां क्रीड़ा करते हैं? क्या उन्हें लंकापति दशानन का स्मरण नहीं है? बस तू जा और उन से कह दे कि यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो इस पर्वत को छोड़ सहकुटुम्ब अन्यत्र चले जांय। अन्यथा कैलाश के साथ २ वह, भी रसातल को चले जायगे।" ऐसा कह अपने बीसों भुजाओं से कैलाश को जड़ से हिलाकर कंदुक के समान उठा लिया। कैलाश, के हिलने से नन्दी प्रभृति गण भय से कांपने लगे, भीरु स्वभाव पार्वती भयभीत हो महादेवजी के कण्ठ से लिपट गयी। पुत्र गजानन और षडानन भी घबड़ा गये। सब को संभ्रमित एवं दुःखित देख दशानन का दर्प चूर्ण करने के लिये पि पाणि त्रिपुरारि ने लीला पूर्वक अपने बांये पांव के अंगूठे से कैलाश दबा दिया। दबाते ही कैलाश, पूर्ववत् अपने स्थान पर आग परन्तु दशानन की भुजाएँ नीचे ही दबी रही। लाखों यत्न करं भी वे न निकल सकी। युक्ति पूर्वक दशानन को दण्ड देने ही कं मानो कैलाश, स्वयं सरलता से उसके हाथों से उठ गया था। ि कि इसके भुजाओं को दबा कर इसका दर्प चूर्ण करूं। जो हो म के कोप तथा पर्वत के बोझ से उसकी भुजाएं चूर २ होने लगी, ने क्रोध से बल पूर्वक भुजाओं के छुड़ान का बहुत कुछ प्रयत्न वि परन्तु उसकी एक न चली। यह कहां हो सकता था। जिन शिव एक मात्र तृतीय नेत्र खोलने से प्रलय काल में सारा संसार भस जाता है। उन्हीं शिव का कोप व्यर्थ होजाय यह बात स्वप्न असम्भव थी। निदान असह्य वेदना से दुःखित हो चित्कार कर कंधर ने ऐसा रोदन किया कि जिसको सुन सब लोग घरा रावण के रोदन से अत्यन्त विस्मित हो मंत्रियों ने भी बहुत कुछ किया परन्तु वे सब व्यर्थ हुए। अन्त में सब हाथ जोड़ कहने लगे महाराज! यह महादेवजी के ही कोप का कारण है। अतः उनको प्रसन्न किये किसी तरह इस दुःख से छुटकारा न होगा। समय सिवाय महादेवजी के कोई हमारी रक्षा नहीं कर सकता। देवजी देवों के भी गुरुदेव हैं, अत इनसे अभिमान करना किसी उचित नहीं। वे आशुतोष हैं, आप उन्हीं की शरण जाइये, और कीजिये। वे दया सागर हैं, शीघ्रही आप का दुःख दूर करेंगे।

दशानन को मंत्रियों की सम्मति से सहमत होना पड़ा और छुटकारे का अन्य कोई उपाय न देख विवश हो सामप्रभृति वेद तथा स्तोत्रों से शिव की स्तुति करने लगा। दशानन को रोते २ स्तुति करते २ एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो गये। दशानन के रोद द्रवीभूत तथा स्तुति से प्रसन्न हो उसकी भुजाएं जो कैलाश के दबी थीं उन्होंने निर्मुक्त करदीं। दशानन प्रसन्न एवं लज्जित होता शिव के चरणों पर गिर पड़ा। महादेवजी ने प्रसन्न हो दशानन पीठ पर हाथ फेर उसका सब कष्ट दूर कर दिया और बोले, दशा हम तुम्हारे पराक्रम से बहुत सन्तुष्ट हैं। क्योंकि जिस कैलाश कोई हिला भी नहीं सकता उसे तुम ने सहसा उखाड़ लिया। तुम्हारी जो इच्छा हो वर मांगो. कैलाश के नीचे भुजा दब जा कारण तुमने अपनी क्रन्दन ध्वनि से सब को भयभीत कर दि स्वयं इतने समय तक रोते रहे और अपने पराक्रम से देव, दैत्य, रा मनुष्यादिकों को कितने ही बार रुलाया, इसलिये संसार में तुः नाम रावण प्रख्यात होगा।

हमने तुम्हारी धृष्टता क्षमा की अब जहां तुम्हारी इच्छा हो जा

[illegible]

के साथ २ अपना कोई अस्त्र भी मुझे दीजिये।

वह तो-भोला नाथही थे बस इनको क्या देरी थी। तथास्तु। कर-अपना "चन्द्रहास" खड्ग मन्त्र प्रयोग सहित रावण को सं कर दिया।

रावण शिव को प्रणाम कर पुष्पक पर चढ़ अपने राजधान को गया। "रावण" नाम तथा, वानरों द्वारा रावण का नाश, विषय पुराणों में पाया जाता है, और पुराणों से ही प्राचीन इतिहा का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

* स्वयं रौति बहुधः लोकान् रावयतीति—रावणः

परिवर्तन।

(लेखक—" विमल " ।)

चन्दनपुरा नामक ग्राम से लगी हुई चाँदन नदी बहती है। चाँदन यद्यपि छोटी नदी है लेकिन ग्रीष्म के प्रचण्ड ताप में भी नहीं सूखती। चन्दनपुर ग्राम के निकट उक्त नदी पर दो सुन्दर घाट बंधे हुए हैं। एक पुरुषों के लिये है और दूसरा स्त्रियों के लिये। दोनों घाटों में चार सौ गज का अन्तर है।

इन दिनों स्त्रि-घाट पर कार्तिक स्नान करने वाली स्त्रियों की भीड़ लगी रहती है। सूर्योदय के पहले ही युवतियां स्नान कर घर लौट जाती हैं। प्रति दिन के नियमानुसार भ्रातृद्वितीया के दिन 'भवानी' अपनी प्यारी सखी 'योगमाया' के साथ स्नान करके घर को लौट आ रही थी। इधर उधर की अनेक बातों के बाद भवानी ने कहा— "बहिन योगमाया, काली पूजा में कचहरी स्कूल तो बन्द होते हैं न?"

योगमाया—हां बन्द तो होते हैं?

भवानी—तो इस बार के अवकाश में तुम्हारे 'केशवबाबू' नहीं आये?

योगमाया—कहकर तो गये थे लेकिन अभी तक तो नहीं आये। देखें कल भी आते हैं या नहीं।

भवानी—जब कह गये थे तो अवश्य आवेंगे। हो सकता है कि आज घर गये हों क्योंकि आज तो भ्रातृद्वितीया है। क्यों, उन की बहिन है या नहीं?

योगमाया—हां बहिन, तुमने तो अच्छी याद दिलायी। वे अवश्य घर गये होंगे। बहिन क्यों नहीं होगी। एक नहीं दो हैं देखें इस बार बहिन को क्या दे कर आते हैं। यदि मामुली से अधिक खर्च करके आये तो देखना कैसा मजा चखाती हूं।

भवानी—क्यों 'योगमाया'? वे बहिन को कुछ दें। इससे तुमको मतलब? वर्ष का पर्व है, बहिन, भाई का मंगल मनाती है, पूजा करती है यह तो आनन्द मंगल का दिन है। इसमें रोक टोक कैसी? भाई, जो उचित समझता है बहिन को देता है। आखिर तुम भी तो किसी की बहिन हो, तुम क्यों क रहो हो कि आज भैया से अमुक वस्तु मांगुंगी"?

योगमाया—तुमको अभी क्या मालूम है भवानी! अभी तो संसार में प्रवेश ही किया है-मालूम होगा। अभी तो नवलकिशोरबाबू बी०ए० में पढ़ते ही हैं, विवाह हुए चार मास ही बीता है दो एक वर्ष के बाद देखना।

भवानी—क्या देखुंगी?

योगमाया—यही कि दुनिया कैसी है?

भवानी—तुमने क्या देखा? तुम कौन बाबा आदम के समय की हो? यही कि दो तीन बार स्वसुरगृह का वायु सेवन कर आयी हो, इसी में क्या दुनिया देखी? हां केशवबाबू को भोला भाला पाकर भले ही ठग लो।

योगमाया—नवलबाबू को तुम भी ठगोगी।

भवानी—मैं किसी को क्यों ठगने जाऊं, और उचित कार्य में हाथ भी क्यों पकड़ने जाऊं? जैसा अपना भाई भतीजा वैसे दूसरे का। भला यह तो बताओ कि तुम्हारा पाणीग्रहण किये तो केशवबाबू को तीन वर्ष हुए हैं, उसके पहले उनका देह का पालण पोषण किसने किया था? जिस मातापिता की कृपा से आज वे इस पद को पहुँचे है क्या उस मातापिता का अब उन पर कुछ अधिकार नहीं है? क्या वे ने अर्जित रुपयों से बराबर तुमको आभूषण ही बनवा दिया करें, से भाई बहिन मातापिता को कुछ नहीं दें?

[illegible]गमाया—अगर माता पिता भाई बहिनों से ही काम चलता था मेरा पाणीग्रहण करने की जरूरत?

भवानी—इसलिए कि सेवा करो। धर्मपत्नी का जो कार्य है, कर सकती हो, न कि अध्यापिका हो कर उनको पढ़ाओ। पिता माता की सेवा करने से वञ्चित रखो।

योगमाया—खिल खिला कर हंस पड़ी—वाह भवानी जी! अच्छे तो अच्छा धर्मोपदेश दिया। मैं तो आपके उपदेश को ग्रहण न कर सकी। फिर अब आप ही इसके अनुसार चलें, मालूम हो जायगा। अच्छा यह तो कहो बहिन, यह शिक्षा नवलबाबू ने दी है क्या?

भवानी—इतना तो मैं स्वयं समझती हूँ, इसमें किसी के शिक्षा देने की आवश्यकता ही क्या?

योगमाया—और यही सही, पर याद रखना इस संसार में रुपया सब है। जिसके पास रुपया नहीं वह मनुष्य ही नहीं।

भवानी—सो ठीक है, पर अनीति से रुपया संचय करना भी नहीं चाहिये?

योगमाया—इसमें अनीति कैसी?

भवानी—पीछे मालूम होगा।

बातें तब भी नहीं होने पायी थीं। कि भवानी अपने घर के निकट पहुंच गयी वहां तक बातें रह गयीं। योगमाया चन्दनपुर के बाबू कार्तिक प्रसाद की पुत्री थी और भवानी का ननिहाल चन्दनपुर में था, लेकिन वह ननिहाल ही में नानी के घर पाली गयी थी क्योंकि भवानी की माता बहुत पहले ही स्वर्गीया होगई थी उस समय भवानी सिर्फ सात महीने की थी। भवानी के नाना चन्दनपुर के धनीमानी व्यक्तियों में थे, और योगमाया के पिता कार्तिकप्रसाद की आर्थिक अवस्था पहले बहुत अच्छी थी, पर इन दिन हैं वे कड़ी अवस्था भोग रहे थे।

× + ×

दिन के बारह बजे की कड़ी धूप में सिर पर गट्ठर लिये पांचूप्रसाद अपने प्रियपुत्र केशव के डेरे पर जा पहुंचा। केशव उस समय आफिस जा चुके थे। पांचूप्रसाद ने सब चीजें कोठरी में रख दीं। और हाथ पैर धोकर बैठ रहा। चार बजे के बाद केशव बाबू अपने दो एक मित्रों के साथ दफ्तर से आये। डेरे पर पिता को देख कर बोझ सा प्रतीत हुआ। प्रणाम करके बोले—"कल तो हम घर से आये ही हैं, फिर आज आप किस लिये दौड़ आये?"

पांचू—"थोड़ा पष्टी का प्रसाद लेते आये हैं, और कुछ रुपये की आवश्यकता है, नहीं होने से खेत परती रह जायगा।"

केशव—रुपया तो अभी नहीं हो सकता है, और हमेशा रुपया, इतना रुपया कहां से आवेगा? डेरे का खर्च भी तो है। घर में आप लोग बैठे २ पेट भरते रहते हैं, कुछ उद्योग भी तो नहीं करते। भला एककी की कमायी पर दशो बैठकर कैसे पेट पालेंगे? जाइये। खेत परती ही रहने दीजिये। यहां आने की कृपा न किया करें। पुत्र की खरी खोटी बातें सुनकर भी पांचू कुछ नहीं बोला लेकिन पुत्र के मुख से कई बार तिरस्कार से घर जाइये" सुन कर पांचू को बड़ा दुःख हुआ, वह उस को सहन न कर सका। अपनी लाठी उठा कर घरको रवाना हो गया। केशव टकटकी लगायें देखता रहा। पर कुछ बोला नहीं।

घर पहुंचकर केशव के पिता ने अपनी धर्मपत्नी 'चम्पा' से कहा कि "देखी केशव की बुद्धिमता!" मैंने तो पहले ही कहा था कि केशव की आशा मत करो, उस से कुछ होने का नहीं। माथे पर गट्ठर उठा कर घर २ से भीख मांग कर जिसको एफ. ए. तक पढ़ाया, और उसी का ऐसा साहस हुआ कि, डेरे से मुझे कुत्ते की भांति दुधार कर भूखा निकाल दिया। जो लड़का माता पिता का नहीं हुआ। वह किस का होगा? मैंने उससे सन्तोष किया। जान लिया कि, केशव अब

केशव की माता ने लम्बी सांस लेकर कहा—"हाय! जिस केशव के लिये हम लोगों की यह दशा, वही आज पुत्र होकर भी नहीं पूछता। मैंने तो आप से पहले ही कहा था कि, "लड़का को अंगरेजी मत पढ़ाइये" देखा अंगरेजी पढ़ाने का मजा, अब उसके लिये स्त्री के अतिरिक्त संसार में कोई नहीं है, वही माता पिता भाई सखापरिजन, धन्य है, ऐसी शिक्षा को।

\+ × ×
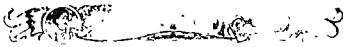
पांचू का बड़ा लड़का शालिग्राम खेती का कार्य-करता था, पर जमीन ही नहीं थी। सिर्फ दो एकड़ जमीन बची थी। घर का खर्च कुछ अधिक था। पांचू को दो विधवा लड़की भी थी, जो इसी के घर रहती थी, बड़े लड़के को तीन लड़के और दो कन्या थीं। पुत्र वधु (शालिग्राम की स्त्री) बड़ी सुशीला और घर के कार्यों में दक्ष थी। सब मिलाकर पांचू के घर में दश बारह व्यक्ति का प्रत्येक शाम को भोजन बनता था, लेकिन भोजन आता कहां से, महीने में दो चार रुपया केशव दे दिया करता था। इस बार पांचू ने उस पांच चार के लिये भी सन्तोष कर लिया। यह समझ कर कि, भगवान हैं जैसे सब जुटाते हैं वैसे यह भी जुटादी देंगे।

पांचू ने केशव के पढ़ाने में १५०० पन्द्रह सौ रुपया कर्ज के रूप में उधार लीया था, और उसमें ३० तीस बीघा जमीन बीस वर्ष के लिये देरवर्खा थी कि; इतने दिनों में महाजन का रुपया वसूल होकर जमीन बच जायगी।

× × × + +

केशव बाबू एफ. ए. पास करके बांका सब डिविजनल और फिर के पेशकार होगये थे। चालीस रुपये मासिक सरकार की ओर से मिलते थे, और प्रजाओं का हाथ ऐंठ कर तो महीने में कई चालीस हो जाते। यद्यपि केशव बाबू का घर बांका के निकट ही विक्रमपुर में था, लेकिन वे अवकाश के समय के (अदालत बन्द रहने पर) अपने श्वसुर के घर चन्दनपुर में ही व्यतीत करते थे। चन्दनपुर जाने के साथही अपने आयव्यय का लेखा अपनी धर्मपत्नी योगमायादेवी को देकर शेष रुपये उनके हाथ सौंप देते थे। योगमाया के पिता कार्त्तिकप्रसाद की आर्थिक दशा बुरी थी। आप की कोई मूरत नहीं थी, दोनों शाम में आठ दश आदमी के भोजन का ठिकाना कहां से होता। उसके लिये योगमाया बीस रुपये महीने के हिसाब से पिता को दिया करती थी, बस इसीसे उसका और उसके पिता माता बहिन भाई का भोजन खर्च चलता। केशव बाबू सिर्फ दस रुपये महीने का खर्च के लिये पाते थे। पहले पांच चार रुपया पिता को दिया करते थे, पर अब तो यह भी बन्द हो गया, योगमाया इससे बहुत प्रसन्न थी। केशव बाबू अपनी स्त्री से बहुत डरते थे। एक पैसा भी उसकी आज्ञा के बिना खर्च नहीं करते।

एक दिन रविवार को केशव बाबू अपने श्वसुरजी के यहां चन्दनपुर किसी आवश्यक कार्य वश आये थे। रात में भोजन करने के उपरान्त अपने विश्राम करने के कमरे में गये, योगमाया ने स्वामी के लिये दो बीड़ा पान लाकर पहले ही से रक्खा था। केशव बाबू के हाथ में पान देकर वह आयव्यय का लेखा लेने लगी।

योगमाया—इस बार यह साड़ी किस लिये? (साड़ी का खर्च देख कर।)

केशव—"ललिता (केशव की विधवा बहिन) के लिये क्योंकि भ्रातृद्वितीया में देना आवश्यक था"।

योगमाया—नहीं जी, यह फजूल खर्च है। साड़ी की क्या जरूरत थी? दो चार आने पैसे से कार्य चल जाता। देखते नहीं कपड़ा। कितना महंगा है? खैर अब से सावधान रहो।

केशव—अब से नहीं होगा। इस बार तो बाबूजी को भी खरा जवाब दे दिया कि—"देखिये अब हम से नहीं होगा क्योंकि अपनाही खर्च अकाल में बढ़ गया है।

योगमाया—अच्छा किया। अब उन लोगों से पिंड छुटा। अब घर जाने की भी आवश्यकता नहीं।

केशव—घर से क्या काम है। जाने पर वे लोग तंग करने से बाज़ नहीं आयेंगे।

योगमाया—हां जरूर तंग करते होंगे। देखना किसी प्रकार की आवश्यकता बताने पर भी न जाना।

केशव—ऐसाही होगा।

+ × +

भवानी को पाठक भूले नहीं होंगे। अब भवानी अपने पति बाबू नवलकिशोर के साथ मुंगेर में रहती है। नवलकिशोर बाबू बी. ए. बी. एल. होकर मुंगेर में वकालत करते हैं, वकालत से अच्छी आमदनी है। महीने में हजार डेढ़ हजार की आय है। नवल बाबू के पिता माता बहिन और छोटे भाई चन्द्रशेखर भी साथही रहते हैं। भवानी अपनी देवरानी के साथ सास श्वसुर की उचित सेवा में रत रहती है। गरज़ यह कि, बड़ आनन्द के साथ उन लोगों का समय व्यतीत होता है।

अब केशव के पिता पांचू का दिन भी आनन्द से कटने लगा। हां कुछ दिनों तक तो बेशक कष्ट हुआ था, लेकिन अब दुःख का अन्त हो कर सुख का उदय हुआ था। पांचू का बड़ा लड़का 'शालिग्राम बड़ा परिश्रमी निकला? जमीन महाजन ने समय पूरा होने के कुछ दिनपहले ही छोड़ दी। उपज जोरों की होने लगी। बस क्या था, थोड़े ही दिनों में रुपये पैसे अन्न से घर भर गया। सब सुख पूर्वक रहने लगे। ज्यों ही यह खबर केशव को लगी कि, वे झट अपना आधा हिस्सा लेने के लिये तैयार हो गये। यद्यपि पांचू की इच्छा नहीं थी कि केशव को कुछ दें। लेकिन शालिग्राम ने आधी जमीन बांट दी, केशव ने उस को उन्हीं के हाथ बेच लिया और रुपया लेकर अपनी योगमाया के पास जमा कर दिया।

+ + ×

कुछ दिनों के बाद केशव बाबू की बदली मुंगेर को एस.डी.ओ. आफिस में हो गयी। अब वे भी अपनी पत्नी योगमाया के साथही मुंगेर में रहने लगे। मुंगेर में कुछ दिन रहने के बाद एक रात को केशव बाबू के घर चोरी हुई। और सब कुछ तो रह गया सिर्फ 'योगमाया' का कैश बाक्स लेकर चोर रामचम्पत हो गया। ज्योंही योगमाया को यह समाचार ज्ञात हुआ। वह ज्ञान शून्य हो पृथ्वी पर गिर पड़ी। जब होश में आयी तो मुंह से शब्द निकाला कि हाय। मेरा सर्वस्व चलगया जीवन भर की कमाई लुट गयी! हा! कितने यत्न से मैंने धन संग्रह किया था। आज एक भी काम नहीं आया। बस यह कहती और दिन रात रोती रहती थी। केशव बाबू भी बहुत चिन्तित थे। चिंतित हों क्यों नहीं। इस प्रकार से कष्ट का अर्जित सब धन चला गया। कुछ काम नहीं आया।

धीरे धीरे यह समाचार अदालत के सब हाकिम और वकीलों को ज्ञात हुआ। कि केशवबाबू के घर आभूषण और नगद मिला कर) दश हजार की चीज चोरी चली गयी। थाने में इसकी सूचना दी गयी पर कुछ पता नहीं लगा।

एक दिन नवलकिशोर बाबू ने अपनी धर्मपत्नी से कहा—"देखो आभूषणादि सम्हाल कर रखो। हाल ही में एस० डी० ओ० के पेशकार केशवबाबू के घर चोरी होगयी है। बेचारे का अर्जित सब सम्पत्ति चली गयी। सुनते हैं" नगद और गहने मिलाकर दश हजार की हानि हुई। उनकी धर्मपत्नी उसी दिन से बीमार हैं।

भवानी—कौन केशवबाबू के घर?

नवलकिशोर—एस० डी० ओ० के पेशकार हैं। नये आदमी हैं बाँका से बदल कर आये हैं।

भवानी—योगमाया के स्वामी?

नवलकिशोर—हमें क्या मालूम किसके स्वामी हैं। तुम कैसे जानती हो?

भवानी—योगमाया मेरी बालसखी है। मेरे ननिहाल चन्दनपुर के कार्त्तिकप्रसाद की लड़की है। भला उसे कैसे भूल सकती हूं। उसी की सब चीजें गयी? उसने तो बहुतों को कष्ट देकर रुपया जमा किया था।

नवलकिशोर—इससे कष्ट की अर्जित चीजें नहीं नष्ट होती।

भवानी—कष्ट नहीं, बल्कि अन्याय से जमा हुआ था। इमसे गया।

× × ×

दूसरे दिन एक पत्र दे कर भवानी ने अपने चाकर को योगमाया के घर भेजा। बालसखी भवानी का पत्र पाकर योगमाया बहुत प्रसन्न हुई। पर इस दुख से इतनी दुखी थी कि पत्र पानेकी सूचना मात्र लिख कर भवानी को उत्तर भेज दिया। भवानी, योगमाया का पत्र पढ़ कर समझ गयी कि लज्जा से उसने चोरी होने की बात नहीं लिखी।

× × ×

एस० डी० ओ० के पास केशव की बहुत शिकायतें पहुंची कि—"ये रिश्वत लेलेकर बहुत सा रुपया इकट्ठा कर रहे हैं। एस० डी० ओ०ने गुप्त रूप से इस की जांच आरम्भ कर दी। जांच में बात सत्य प्रमाणित हुई, बेचारे नौकरी से हटा दिये गये, साथही साथ पांच सौ रुपये अर्थ दण्ड अथवा चार महीना जेल की वायु सेवन करने की आज्ञा हुई। लेकिन रुपया कहां से लाते। जो कुछ चीजें थी "सब चोरी हो चली गयी थी। केशव बाबू पर दुख का पहाड़ सा गिर गया, बेचारे यद्यपि बहुत अन्त में पन्द्रह दिन के अवकाश की प्रार्थना तो स्वीकार हुई आता है कहां से! अन्त में एक युक्ति निकाली कि"

दानवीर रा. ब. सेठ सर हुकमचन्दजी।

(लेखक—श्रीयुत सुखसम्पत्तिराय भण्डारी।)

इस संसार क्षेत्र में जिन महानुभावों ने जिस आशातीत सफलता प्राप्त की है, उन महानुभावों का जीवन उस २ शाखा के लोगों के लिये सफलता के मार्ग में दिव्य प्रकाश का काम देता है। ऐसे महानुभावों के जीवन चरित्रों के पढ़ने से साधारण मनुष्य के हृदय में उत्साह और नवजीवन का संचार होता है, उसके हृदय की मुरझाई हुई आशालता खिलने लगती है, उसके हृदय की कमजोरियां और निराशाएं दूर होने लगती हैं, उसके दिल में जीवन शक्ति का सञ्चार होने लगता है। संसार की कठिनाइयों को पारकर अपने मनोदेश पर पहुंचने के लिये जिस बल की आवश्यकता होती है वह उसे प्राप्त होने लगता है वह यह बात जानने लगता है कि, धीर पुरुष संसार की कठिनाइयों को पारकर किस तरह अपने मंजले मकसूद पर पहुंच जाते हैं, इस तरह सफलता-प्राप्त महापुरुषों के चरित्रों से सर्वसाधारण को अनेक लाभ प्राप्त हो सकते हैं, एक अंग्रेजी कवि का कथन है कि, महान पुरुषों के जीवन चरित्रों को पढ़ कर हम अपने चरित्र को दिव्य बना सकते हैं। कहने का सारांश यह है कि, वह आदमियों के चरित्र मार्गदर्शक होते हैं। देश की उठती हुई सन्तान उनके चरित्रों से बहुत कुछ लाभ उठा सकती है, एक विद्वान का कथन है कि, जो मनुष्य जिस शाखा में सफलता प्राप्त करना चाहे, वह उस शाखा में आशातीत सफलता प्राप्त किये हुए मनुष्य का आदर्श अपने सामने रख अपना काम करे और इससे साथ २ कुछ मर्दानगी भी उत्पन्न करे। यह बात किसी मनुष्य की सफलता में भारी सहायक होगी, आज हम जिस सज्जन का चरित्र 'जगत्' के पाठकों के सामने रखना चाहते हैं, उन्होंने व्यापार में आशातीत सफलता प्राप्त कर अपने हाथों से अपने साहस और बुद्धि के बल पर करोड़ों रुपये कमा [illegible] दिखला दिया है कि, साहस [illegible] विजय में हार्दिक विश्वास आदि [illegible] गुणों के सामने लक्ष्मी किस तरह हाथ जोड़े हुए खड़ी रहती है, उनके चरित्र से पाठकों को मालूम होगा कि धन कमाने में [illegible] और हार्दिक बल कितने [illegible] की सहायता देते हैं। उनके चरित्र से मालूम होता है कि [illegible] पूरा २ हार्दिक विश्वास रखने से "[illegible]" के [illegible] देखा जाता है [illegible] किस तरह विजय लाभ कर सकता है। उनके चरित्र से [illegible] होता है कि, [illegible] और [illegible] मनुष्य किस [illegible] में [illegible] लाभ कर सकते हैं, [illegible] प्राप्त कर सकते हैं, अब हम [illegible] विशेष [illegible] न [illegible] उनके चरित्र [illegible] करते हैं।

इन्दौर के [illegible] सेठ सर [illegible] बहादुर सर हुकमचन्दजी का जन्म विक्रम संवत् १९३१ के आषाढ़ शुक्ल १ के दिन हुआ, जिस कुल में आप का जन्म हुआ, यद्यपि व्यापार में वह वर्षों से मशहूर रहा है, और इन्दौर के राज्य में उसकी अच्छी कद्र रही है, पर सर हुकमचन्दजी ने इस समय जो सम्पत्ति और यश प्राप्त किया है, वह एकदम ही अद्वितीय है। सर हुकमचन्दजी को सम्वत १९४८ में जो पैतृक सम्पत्ति मिली थी वह लगभग ८ लाख के करीब २ थी, पर अपने साहस पुरुषार्थ और अन्तःकरण के दृढ़निश्चय से आज आप कोई दस करोड़ की सम्पत्ति के स्वामी हो गये हैं।

रा. ब. सेठ सर हुकमचन्दजी की शिक्षा सात वर्ष की उम्र से शुरू हुई। हिन्दी का साधारण ज्ञान और अंग्रेजी का थोड़ासा ज्ञान प्राप्त कर लेने पर आप व्यापार में प्रवृत्त हुए। व्यापार की ओर बचपन ही से आप की बड़ी रुचि थी, बचपन से ही व्यापार में आप की रुचि अच्छी बैठती थी। पन्द्रह ही वर्ष की उम्र में आपने अपने पिता के कारोबार को अच्छी तरह सम्भाल लिया। आप की व्यापारी बुद्धि देख कर लोगों को आश्चर्य होता था, और कई लोग कहने लगते थे कि, यह बालक भविष्य में एक नामवर हुआ, व्यापारी निकलेगा। आप का व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा पहिले आप की कोठियां सिर्फ इन्दौर, उज्जैन और बम्बई में ही थी, पर आप के हाथों से व्यापार बढ़ जाने पर इन्दौर की दूकानों और कलकत्ता में भी आप की भारी कोठियां खोलना पड़ी, आप की कोठियों में आज कल अफीम, हाजरारी [illegible], रुई, [illegible], गल्ला, कपड़ा, जूट, [illegible] माल आदि का व्यापार और बायदे के सौदे होते हैं। इन चीजों के व्यापार से आपने लाखों रुपये कमाये, आप को मुनाफा भी हमेशा ही होता गया पर सन् १९०१-१० में जब भारत सरकार ने चीन में अफीम भेजने के लिये [illegible] किया और [illegible] की [illegible] का [illegible] किया, इस वक्त हुकमचन्दजी ने भारत के [illegible] पर [illegible] लिये एक [illegible] लाख [illegible] लगा दिये। इससे [illegible] को बड़ा ही [illegible] हुआ। इससे [illegible] करोड़ रुपयों का [illegible] मुनाफा हुआ। [illegible]

इन्दौर के रा. ब. सेठ सर हुकमचन्दजी।

है कि, जहां सेठजी ने रुई खरीदना शुरू किया कि, बाजार एकदम उतरने लगते हैं। सेठजी की खरीदफरोख्त का बम्बई के रुई के बाजार पर बड़ा ही असर होता है। हम यह दावे के साथ कह सकते हैं कि भारतवर्ष में सेठजी के जोड़ का कोई दूसरा रुई का व्यापारी नहीं है। आप लाखों नहीं, पर बाजे मौकों पर करोड़ दो करोड़ रुपयों तक की हारजीत का सौदा करते हैं, लाख दो लाख का नफा नुकसान तो सेठजी के सामने किसी बिसात में नहीं। व्यापार में आप की हिम्मत को देख कर मालवा में यह कहावत मशहूर हो गई है कि, सेठ सर हुकमचन्दजी लाख रुपये का नफा नुकसान हमेशा सिराहने लेकर सोते हैं। आप की हिम्मत बड़ी जबरदस्त है। सफलता प्राप्ति पर दृढ़ विश्वास से आप करोड़ों की बाजी खेल जाते हैं, और करोड़ों कमा लेते हैं, इन दो तीन वर्षों में आप को रुई के व्यापार में कोई तीन चार करोड़ रुपया लाभ रहा। दस २ बीस २ लाख के लाभ तो आप के सामने किसी बिसात में नहीं गिने जाते। कहने का सारांश यह है कि, सेठ हुकमचन्दजी अपने ही साहस, पुरुषार्थ, आत्मविश्वास और व्यापारी बुद्धि की बदौलत आज लगभग दस करोड़ के स्वामी हो गये हैं।

सेठ हुकमचन्दजी और सफलता का रहस्य.

इन पंक्तियों के लेखक के मनमें बहुत दिनों से यह अभिलाषा लग रही थी कि सेठ सर हुकमचन्दजी से सफलता के रहस्य पर कुछ बातचीत की जावे। वह एक दफा उनके पास गया और इस सम्बन्धमें उनसे बातचीत करने लगा। जब उसने यह पूछाकि आप यह बतलाइये कि आपको सफलता पर सफलता क्यों होती जाती है? इस पर सेठजी कुछ देर तक चुप ही रहे और फिर बोले कि यह प्रश्न ऐसा है कि जिसका ठीक २ उत्तर देना कठिन है। तोभी मैं इसपर कुछ कहता हूं। मेरी समझ में सफलता पर हार्दिक विश्वास ही सफलता की मूल्य कुंजी है। बहुत से मनुष्य ऐसे होते हैं कि वे मुँह से तो कहा करते हैं कि हमें अपने काम में जरूर सफलता होगी, पर अगर उनके अन्तःकरण को टटोला जावे तो उसमें आपको "सन्देह के तत्व" मिलेंगे अर्थात ऊपरसे सफलता सफलता चिल्लाते रहने पर भी उसके अन्तःकरण में यह सन्देह रहता है कि कहीं असफलता न हो जावे। बस यही सन्देह मनुष्य के अन्तःकरण में रहे हुए उन दैवी तत्वों को नाश कर देता है जो सफलता को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। इस वास्ते जो मनुष्य इस संसार में सफलता प्राप्त किया चाहता है, उसके लिये सबसे पहिले इस बात की आवश्यकता है कि वह अपने अन्तःकरण में [illegible] के विचारों के [illegible] सन्देह, भय के विचारों को स्थान न दे। उसका हृदय पूर्णतया [illegible] भरा होना चाहिये सन्देह का सूक्ष्म परमाणु भी उन [illegible] नहीं। क्यों कि जिस प्रकार आगकी जरासी चिनगारी बनी बनाई सुन्दर और विशाल इमारत को देखते देखते भस्म कर देती है, वैसेही सन्देह और भय का सूक्ष्म परमाणु भी बनी बनाई बातको बिगाड़ देता है। इस वास्ते हृदय में सन्देह के परमाणु का [illegible] भी न रख [illegible] पर पूर्ण विश्वास कर जो काम किया जाता है, उसमें सफलता [illegible] होता है। आपने ज्योतिष पर भी अपना विश्वास प्रगट किया [illegible] कहा कि बाजे वक्त ज्योतिष के शुभाशुभ फलों पर विचार कर काम करता हूं, और उससे मुझे लाभ होता है। सेठजीने इसबात पर बड़ा जोर दिया कि व्यापार करने में मुझे सफलता की [illegible] रहती है। असफलता के भाव तो मेरे हृदय में फटकने भी नहीं पाते, [illegible] विचार [illegible] की यह उन्नति पर ध्यान देकर भी मैं [illegible] करता हूं। [illegible] मेरे संकल्प शीघ्र सफल होते हैं। सेठजीके ये विचार सुनकर हमें अमेरिका के संसार प्रख्यात [illegible] के विचार याद आगये जो उन्होंने व्यापार के विषय [illegible] में प्रगट किये हैं। [illegible] ने भी ठीक इसी प्रकार के विचार प्रगट [illegible] हैं।

सेठजी की व्यापारिक पद्धति

[illegible] यद्यपि वे संसार के बाजारों की चढ़ाऊपरी पर ध्यान पूर्वक विचार कर व्यापार करते हैं। पर कभी ऐसा होता है। कि स्थिति में कोई आकस्मिक परिवर्तन हो जाने से बाजार की रुख बदल जाती है। अर्थात कभी बाजार तेजी पर जाते जाते एकदम मन्दी पर चला जाता है। और कभी मन्दी से तेजी पर चला जाता है। कभी बाजार बड़ा अस्थिर रहता है। ऐसे समय में बड़े बड़े विचार शील और विद्वान व्यापारियों के भी होश गुम हो जाते हैं। उन्हें सूझ नहीं पड़ता कि क्या किया जाय ऐसी कठिन स्थिति में बड़े बड़े व्यापारियों के दिवाले निकल जाते हैं। ऐसे समय में सेठजी की नीति बड़ी विलक्षण रहती है। ऐसे समय में वे बाजार के साथ साथ जाते हैं। अगर बाजार तेजी पर जा रहा है। तो सेठजी खरीद कर लेते हैं। खरीदते खरीदते ही अगर बाजार किसी कारण वश मन्दा चला जाता है। तो सेठजी अपनी नीति को बदल कर खरीदे हुए माल से दूना बेच देते हैं। इस तरह देखा गया है। कि सेठजी कभी कभी चार पांच दिन ही में चार पांच उथला पुथला कर डालते हैं। इस नीति से सेठजी को बड़ा लाभ रहा है। कई लोगों का कथन है कि इस परिवर्तन शील नीति ही से सेठजीने इतनी सफलता प्राप्त की है। कोई दोवर्ष का अर्सा हुआ कि सेठजी ने बम्बई के एक सुप्रसिद्ध साहूकार के हिस्से में रुई की कोई पचीस हजार गांठें किसी निश्चित मिती वायदे पर बेचदी सेठजी की रुख इस समय (dull) थी पर फिर विशेष स्थिति के परिवर्तन से रुई का बाजार एकदम उठने लगा और सेठजी को इस सौदे में लग भग ७५ लाख का नुकसान प्रत्यक्ष दीख लगा। सेठजीने अपने सहकारी व्यापारी से सौदा बराबर करने को कहा। पर उन्होंने नुकसान निकालना ठीक नहीं समझा तब सेठजी बेची हुई गांठें तो वापिस खरीद ही लीं। पर इसके अतिरिक्त उतनी दूनी गांठें और खरीद लीं। रुई का बाजार बढ़ता गया और सेठजी को जहां लगभग ७५ लाख रुपयों का नुकसान था, वहां यह नुकसान निकल कर उलटा एक करोड़ रुपयों का और फायदा हो गया, इस प्रकार की घटनाएँ सेठजी के जीवन में कई दफा हुई। यहां एक बात ध्यान में रखने योग्य है। और वह यह है कि व्यापारी को हठ करके बैठ जाना नहीं चाहिये। बाजार की रुख जिस तरफ जावे उसी तरफ व्यापारी को गति करना चाहिये और बाजार की रुख को देख कर बुद्धिमानी और सोच विचार के साथ अपनी रुख को सञ्चालित करना चाहिये।

सेठजी और धन का सदुपयोग

संसार के सभ्य राष्ट्रों में भारतवर्ष बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां के धनिक ऐसे कामों में धन लगाना नहीं जानते जिससे देश की तरक्की हो और उसका (Status) गौरव बढ़े अमेरिका और यूरप के धनिक अपने धनका सदुपयोग राष्ट्र की उन्नति करने के लिये और उसमें जीवन शक्ति लाने के लिये करते हैं। अगर आप अमेरिका के संसार प्रख्यात धनिक एण्ड्रु कार्नेगी और रॉक फेलर के जीवन चरित्र पढ़ेंगे तो आपको मालूम होगा कि इनका धन देश की तरक्की में कितना काम दे रहा है? इन महानुभावों की ओर से उन देशों में जगह जगह विद्यालय, औद्योगिक और व्यापारी कालेज, वैज्ञानिक प्रयोग शालाएं तरह तरह की वैज्ञानिक संस्थाएं आदि कई देश हितकारी काम चल रहे हैं। सैकड़ों वैज्ञानिक इनकी सहायता पाकर नये नये आविष्कार निकालते हैं। देश के लाखों होनहार नवयुवक इनकी संस्थाओं में तैयार हो रहे हैं। अमेरिका में कोई ऐसा नगर नहीं जहां इनके द्वारा स्थापित की गई कोई संस्था नहीं है। ये महानुभाव अपने को धन का स्वामी न समझकर उसका ट्रस्टी समझते हैं। इनका खयाल है कि हमारे पास का धन हमारा नहीं पर देश का है। हम उसके रक्षक हैं। उसको [illegible] रखना और देशहितकारी कामों में लगाना हमारा काम है। हमारे धनपर [illegible] देश का अधिकार है। क्योंकि देश ही से हमने इसे प्राप्त किया है। देशमें लाखों रुपये कमाकर उनका स्वामी बन बैठना और देश हितकारी कामों में उन्हें खर्च न कर धनको अपने ही ऐशो आराम में उड़ाना इन [illegible] के [illegible] कृतघ्नता समझते हैं। और ऐसे लोगों के [illegible] [illegible] हैं। अस्तु इस देश के धनिक अपने धन का [illegible] हितकारी कामों में करने में अपना परम गौरव मानते हैं। पर [illegible] की ऐसी दशा नहीं यहां के [illegible] धनिक बड़े ही [illegible] होते हैं। [illegible] सुन [illegible] उन्नति [illegible] करते हैं। अपने पेट के लाभ के लिये देश का [illegible]

में भी ये आगापीछा नहीं सोचते। ये साक्षात् शीलौक की मूर्तियां होती हैं। देश की ऐसी गिरी हालत में सेठ हुकमचन्दजी एक उन्नत आत्मा कही जा सकती है। यद्यपि हम आपको एन्ड्रकॅर्नेजी और रॉकफेलर की श्रेणी में न बिठलावें तोभी हम इतना निस्संकोच होकर कह सकते हैं कि भारत के धनिकों में सचमुच आप एक दानवीर महानुभाव हैं। समाज के कल्याण के लिये-उसकी उन्नति के लिये-आप लाखों रुपये खर्च कर चुके हैं।

सेठजी की संस्थाएं।

आज कितनी ही उपयोगी संस्थाएं आप चला रहे हैं। इन्दौर में स्टेशन के पास आपने एक सुन्दर बड़ा विद्यालय खोल रखा है, जिस में अंग्रेजी, संस्कृत और उद्योग-धन्धों की शिक्षा दी जाती है। जैन धर्म की शिक्षा भी इसमें दी जाती है। बालकों को टाइप राइटिंग, शॉर्ट हैंड, मोजे, गुलूबन्द, बनियान आदि बुनना, बटन बनाना आदि कई प्रकार के औद्योगिक कार्य यहां सिखलाये जाते हैं। जो लोग अपने भावी जीवन में साहूकारी या मुनीमी करना चाहते हों, उन्हें यहां खाता और मुनीमी की भी शिक्षा दी जाती है। सेठजी ने इस संस्था के लिये कोई ४॥ लाख रुपये निकाले हैं, जिनके ब्याज से यह चलती है। यह एक अच्छी संस्था होते हुए भी इसमें अभी सुधार की बहुत कुछ गुंजायश है। हमें आशा है, सेठजी तथा उनके सुयोग मंत्री लाला हजारी लालजी कुछ अनुभवी विद्वानों की सलाह से इसमें आवश्यक सुधार करने की कृपा करेंगे, और ऐसा प्रबन्ध करेंगे जिससे मालवे में यह एक अद्वितीय संस्था हो जाय, और यह संस्था जैसी बाहर से सुन्दर और आलीशान है, वैसी ही भीतर (गुण) से भी हो जाय।

इस संस्था के साथ २ एक आलीशान और सुन्दर पक्का बना हुआ बोर्डिंग भी है। इस बोर्डिंग में कोई सौ विद्यार्थी रहते हैं। सब को खाने पीने ओढ़ने पहनने तथा किताबों का खर्चा सेठजी की ओर से दिया जाता है। इसमें से कुछ विद्यार्थी सेठजी के महाविद्यालय के विद्यार्थी हैं, और कुछ ग्रेज्युएट स्कूल तथा मिशन कॉलेज, सिटी हाय. स्कूल तथा जैन हायस्कूल के विद्यार्थी हैं। इस बोर्डिंग के कुछ विद्यार्थी बी. ए. की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं। कई विद्यार्थी कलकत्ता विश्वविद्यालय की तीर्थ की परीक्षा पास कर चुके हैं। कितनों ही ने जैन धर्म सम्बन्धी उपाधियां प्राप्त की हैं। इस बोर्डिंग का प्रबन्ध बहुत ही बढ़िया है। प्रबन्ध कर्ता मन्त्री हजारी लालजी इसे बड़ी सुयोग्यता से चलाते हैं। विद्यार्थियों के चरित्र और स्वास्थ्य पर बड़ा ध्यान रखा जाता है। इन पंक्तियों के लेखक को मालूम है कि, एक बार एक लड़का हैजे से बीमार हो गया। इस पर सेठजी ने शहर के बड़े २ डॉक्टरों को बुलवाया और उसके इलाज में कोई ६००) रुपये खर्च कर दिये। ऐसे भी बोर्डिंग में एक सुयोग्य डॉक्टर की देखरेख रहती है। बोर्डिंग के कमरे स्वच्छ और हवादार हैं, और विद्यार्थियों को सब आवश्यक सामान दिया जाता है। यह बोर्डिंग सेठजी के महाविद्यालय के पास बना हुआ है।

महाविद्यालय के पास ही सेठजी की एक सुविशाल धर्मशाला है, जिसका नाम [illegible] है। इसमें सब जाति के मुसाफिर आठ दिन तक बिना किराये के ठहर सकते हैं। आवश्यकता होने पर सेठजी ज्यादा दिन तक भी ठहरने की इजाजत दे सकते हैं। यह भी बिलकुल पक्की बनी हुई है, और सेठजी ने इस पर कोई ८०,००० रुपये खर्च किये हैं। [illegible] को यहां हर प्रकार की [illegible] है। जिनके पास ओढ़ने बिछाने का सामान नहीं होता उन्हें यहां से यह सामान भी मिल जाता है। साल भर में कोई बीस हजार मनुष्य इसमें विश्राम करते हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन और मारवाड़ी [illegible] इसी धर्मशाला में ठहरे थे। यहां का सब प्रबन्ध [illegible] है, और इस प्रकार की धर्मशालाएं [illegible] बहुत कम [illegible]। [illegible]

[illegible]

रहती हैं, इसमें इस वक्त कई स्त्रियां शिक्षा पा रही हैं और कई स्त्रियां यहीं रहती हैं।

इस संस्था के अतिरिक्त सेठजी ने एक उदासीनाश्रम खोला है। जो संसार से विरक्त हो कर अपने अन्तिम दिन ईश्वर भजन में लगाना चाहते हैं, उनके लिये सेठजी का उदासीनाश्रम है। इसमें केवल दिगम्बर जैन स्थान पा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त सेठजी ने यहां एक सुविशाल आयुर्वेदीय औषधालय स्थापित करने के लिये कोई ढाई लाख का दान हाल ही में किया है। औषधालय का मकान बनना शुरू हो गया है। सेठजी कलकत्ते से कोई सुयोग्य कविराज (वैद्य) बुलाने वाले हैं।

इसके अतिरिक्त और भी सेठजी ने लाखों रुपयों का दान किया है, कई संस्थाओं में आपने बड़ी उदारता से दान किया है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के समय हिन्दी साहित्य की वृद्धि के लिये आपने १००००) का अभिवचन दिया था। बम्बई के मारवाड़ी विद्यालय में हाल ही में आपने २५०००) का दान किया है। जैन विद्यालय मोरेना को भी आपने १००००) का दान किया था। इन्दौर में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खोलने के लिये श्रीमन्त सरकार के पास आपने २००००) रख छोड़े हैं। मतलब यह सब मिला कर सेठजी अब तक कोई बीस लाख का दान कर चुके हैं। इसमें तीन चार लाख रुपये आपने जैन मन्दिरों के बनवाने में तथा उनके जीर्णोद्धार के काम में लगाये।

इसके अतिरिक्त सेठजी ने एक काम ऐसा किया था, जिसे इन्दौर निवासी सदा स्मरण करते रहेंगे। आपने युद्ध कर्ज में एक करोड़ रुपये तो दिये ही थे, पर इन्दौर निवासियों की ओर से इसके अतिरिक्त और १०००००) दिये थे और उस रकम का वचन देते हुए कहा था कि, यह रकम इन्दौर के सर्वसाधारण की तरफ से मैं देता हूं। जो लोग युद्ध में गरीबी के कारण कुछ नहीं दे सकते हैं, उनकी तरफ की यह रकम है। इससे उस समय इन्दौर की प्रजा आप से बड़ी खुशी हुई थी।

उचित दान।

यहां यह बात लिखना आवश्यक है कि सेठजी जहांतक बन पड़ता है ऐसे कामों में दान देते हैं जिससे जाति या देश का उपकार हो, जिससे अपने भाइयों को सुख पहुंचे। मुफ्त भोजन, क्रियाहीन ब्राह्मणों का सदा [illegible] गुण्डे साधुओं के हाथ में [illegible] सेठजी एक पैसा भी खर्च नहीं करते। वे अक्सर कहा करते हैं कि जो लोग हट्टे कट्टे हैं, क्रियाहीन हैं, उन्हें दान देकर उन्हें सुस्त बनाने का पाप करना है। वे प्रायः उसी काम में दान करते हैं, जिससे देश और जाति का उपकार हो। कोई ढोंगी साधु या धूर्त इस सम्बन्धमें सेठजी को धोखा नहीं दे सकता।

सेठजी का साहित्यप्रेम।

यद्यपि सेठजी विद्वान नहीं हैं पर वे साहित्यप्रेमी अवश्य हैं। वे केवल हिन्दी और गुजराती जानते हैं। शायद ही हिन्दी का कोई महत्वपूर्ण ग्रन्थ होगा, जिसे सेठजी ने न पढ़ा हो। [illegible] सेठजी हिन्दी के प्रायः सब समाचार पत्र पढ़ते हैं और सामाजिक घटनाओं पर विचार कर [illegible] भी करते हैं।

सेठजी की [illegible]।

[illegible]

सेठजी [illegible]।

[illegible]

सेठजी का शीलव्रत ।

अगर इन्दौर में सेठजी की किसी विषय में सबसे ज्यादा प्रशंसा है तो वह उनके शीलव्रत की है। आप इन्दौर के किसी आदमी से पूछियेगा, वह आपके सामने उनके शीलव्रत की प्रशंसा करेगा। कहा जाता है कि इस सम्बन्ध में सेठजी बड़े दृढ़ हैं और कभी पराई स्त्री को उन्होंने कुदृष्टि से नहीं देखा। एक धन कुबेर में इस महागुण का होना कितना प्रशंसनीय और अनुकरणीय है, इसका विचार पाठक खुद कर सकते हैं।

सेठजी का मनुष्यज्ञान ।

अक्सर धनवानों को मनुष्यज्ञान बहुत कम हुआ करता है। वे खुशामदियों से घिरे रहते हैं और उन्हीं लोगों के हाथ में रहते हैं, जो धूर्त होते हैं पर सेठजी कभी किसी की चापलूसी में नहीं आते। वे मनुष्य को तुरन्त पहिचान जाते हैं। जहां कोई धूर्त उनकी चापलूसी करने लगा कि वे उसे तुरन्त फटकार देते हैं। सच्चे, निष्कपटी और वास्तविक काम करनेवालों की सेठजी कद्र करते हैं। कौन मनुष्य कैसा है और वह किस नियतसे आया है इस बातको सेठजी झट ताड़ जाते हैं। वे किसी धूर्त या खुशामदी के चपाड़े में नहीं आते।

एक तन्त्री शासक ।

सेठजी बड़े ही एक तन्त्री शासक हैं। अन्य सेठों की तरह उनका काम मुनीम गुमास्तों के भरोसे नहीं चलता। आप की दुकानों पर मुनीम गुमास्तों को सिवाय हिसाब किताब रखने के और कोई अधिकार नहीं है। सब व्यापार की कुंजी सेठजी अपने हाथ में रखते हैं। अगर एक पैसे की भी मंजूरी देना हो तो सेठजी देते हैं। यह बात केवल इन्दौर की दुकान ही की नहीं। बम्बई कलकत्ते की दुकानों की भी यही हालत है। इन दुकानों से सेठजी के पास हमेशा तार आते जाते रहते हैं, और सेठजी के इशारे बिना कोई काम मुनीम गुमास्ते नहीं कर सकते। सारे कारोबार की कुंजी सेठजी अपने हाथ में रखते हैं। काम देखने में वे बड़े चतुर हैं।

सेठजी का सादा मिजाज ।

आप का मिजाज भी बड़ा ही सादा है। करोड़पति हो कर भी आप विलासिता के गुलाम नहीं हैं। अलबेले सरदार की तरह आप नहीं रहते। घमण्ड तो आप में नामों निशान को भी नहीं है। काम पड़ने पर गरीब के घर जाने में भी आप नहीं संकुचाते। अपनी जाति में आप जैसे अमीर के यहां भोजन करने के निमित्त जाते हैं, वैसे ही गरीब के यहां भी चले जाते हैं। कोई परिचित गरीब भी बीमार पड़ता है तो सेठजी उसके यहां तुरन्त जाते हैं. इसके सिवाय मामुली से मामुली आदमी के साथ वे बड़े प्रेम और नम्रता से बोलते हैं। यद्यपि आप करोड़ पति हैं, सर हैं, पर आपसे बात करते वक्त एक मामूली आदमी को भी ऐसा मालूम होता है, मानों मैं किसी बराबरी के आदमी के साथ बातचीत कर रहा हूं।

सेठजी की उद्योग-प्रियता ।

कई लोगों का खयाल है कि सेठजी केवल सट्टा करते हैं, और इसी में केवल अनुकूल पास पड़जाने से उन्होंने करोड़ों रुपये कमालिये हैं। कितने ही अंशों में इन लोगों का कहना सत्य है, पर सर्वांश में ठीक नहीं। सेठजी उद्योग धन्धों के भी बड़े प्रेमी हैं, और इसमें आपको अच्छा अनुभव भी है। हिन्दुस्थान में शायद ही ऐसी कोई मील या कारखाना होगा जिसमें सेठजी के कुछ न कुछ शेअर न हों। इसके अतिरिक्त सेठजी कई मिलों के, बैंकों के और कम्पनियों के डायरेक्टर हैं। इन्दौर में हुकमचन्द मील नाम की एक मशहूर मील है, जो बड़ी सफलता के साथ चल रही है। इस मील का भाव इन दो तीन वर्षों में तीनगुना हो गया है। हाल में ६००००००) रुपये की पूंजी से कलकत्ते में हुकमचन्द जूट मिल खुलनेवाली है। इसके डायरेक्टरों में कई युरोपियन व्यापारी भी हैं। इन्दौर में २००००००) की पूंजी से आपकी एक तेल फेक्टरी खुलने वाली है। और भी कितने ही कारखाने खोल कर देश की औद्योगिक उन्नति में सहायता पहुंचाने की आपकी अभिलाषा है।

सेठजी की राजभक्ति ।

सेठजी बड़े राजभक्त हैं। जैसे वे महाराजा होलकर के अनन्य भक्त हैं, वैसे ही ब्रिटिश सरकार के भी अनन्य भक्त हैं। युद्ध कर्ज में ब्रिटिश सरकार को १००००००) एक करोड़ रुपया सुपुर्द कर देना ही आपकी राजभक्ति का ज्वलन्त प्रमाण है. इसके अतिरिक्त सेठजी ब्रिटिश सरकार की उचित समालोचना करने में भी बड़ा भय खाते हैं।

सेठजी के दोषों का विश्लेषण ।

कोई मनुष्य सर्वांश में निर्दोष नहीं हो सकता। गुणों के साथ दोषों का होना भी अनिवार्य है। सेठजी में भी कई दोष हैं। कुछ ऐसे हैं जो बहुत खटकने योग्य हैं। सबसे बड़ा दोष यह है कि सेठजी में नैतिक बल की बड़ी कमी है। सेठजी अपने हृदगत विचारों को समाज के डर से सर्व साधारण के सामने नहीं प्रकट कर सकते. समाज के डर से कभी कभी वे अपने असली विचारों को छिपाकर दूसरे ही विचार प्रगट कर देते हैं। समाज से वे बहुत ही डरते हैं। समाज के सामने खड़े रह कर समाज को अपने पीछे चलाने की शक्ति उनमें नहीं है। वे अपने हृदय के विचारों की बलि देकर समाज के पीछे पीछे चलना ही उचित समझते हैं। जैन समाज का वे नेता समझे जाते हैं, पर नेता में नैतिक बल होना चाहिये, उतना उनमें नहीं है। हमारी दृष्टि में सेठजी में यह एक बड़ा दोष है इसके अतिरिक्त कुछ और भी दोष हैं। जिनका विवेचन इस छोटे से लेख में नहीं हो सकता।

पैसे पैसे पर ध्यान ।

अमेरिका के संसार प्रख्यात अर्थपति मि० एण्ड्रकार्नेजी के विषय में कहा जाता है कि, जहां एक तर्फ मौके पर वे करोड़ो रुपये खर्च कर देते थे, वहां वे मौके एक पेनी भी खर्च करने में वे आना कानी करते थे। वे एक एक पैसे के खर्च पर ध्यान देते थे। ठीक यही बात सेठ सर हुकमचन्दजी में पायी जाती है। जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं यों सेठजी अभितक लगभग बीस लाख का दान कर चुके, पर कभी कभी आप एक एक पैसे के लिये ध्यान दे जाते हैं। इस सम्बध की कुछ मनोरंजक घटनाएं इन पंक्तियों के लेखक को मालूम हैं, जिसे इस समय प्रगट करना वह ठीक नहीं समझता।

जीवन का सार ।

कुछ भी हो सेठजी में कई गुण ऐसे हैं, जो अनुकरणीय हैं। व्यापारिक क्षेत्र में सेठजी एक महापुरुष हैं। साहस, पुरुषार्थ, शील, संयम आदि सद्गुण सेठजी के जीवन के प्रधान अंग हैं। जो नवयुवक व्यापारिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त किया चाहते हैं। उनके लिये सेठजी का जीवन आदर्श हो सकता है।

श्रीयुत कडाप्पा चौगुले, वेलगांव।

पूना का [illegible] की ओर से जो मर्दानी [illegible] हुआ। उसमें आप २७ मील [illegible] में पहले आये बंबई का गवर्नर साहब ने [illegible] से विभूषित किया है। और जैन समाज ने आपको "[illegible]" उपाधि प्रदान की है।

विवाह का परिणाम।

(लेखक—सरयूप्रसाद त्रिपाठी "मधुकर")

१

"अर्थो हि कन्या परकीय एव।"

महीना जेठ का और समय दो पहर का है। भगवान दिनकर प्रचण्ड रूप धारण किये हुए हैं। उनकी विदाहक किरणें सारे जगत को तपा रही हैं। भला इस समय बाहर निकलने का साहस कौन कर सकता है? भाग्यशील जन भूगर्भ गेहों में वास कर सुख से दो पहरी बिता देते हैं। किन्तु बिचारे दीनों की दशा का वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है। ग्रीष्म की उग्रता को देख अनायास यह पद स्मरण हो आता है—"देख दुपहरी जेठ की छाहौं चाहत छांह।"

ठीक इसी दोपहरी में पंडित हरनन्दन पांडेय अपने विशाल भवन के एक अच्छे सजे-सजाये कमरे में लेटे हुए हैं। दरवाज़ों में खस की टट्टियां बंधी हुई हैं, जिन पर अविराम जलसिञ्चन हो रहा है। एक भृत्य द्वारा पंखा परिचालित किया जारहा है। पांडेयजी ज़मींदार हैं और बनारस के लालघाट पर रहते हैं। भगवती लक्ष्मी की आप पर पूर्ण कृपा है। प्रायः तीन बजे उसी कमरे में आप की धर्मपत्नी ने पदार्पण किया, और उनकी आहट से पांडेयजी की निद्रा भंग हुई। पांडेयजी हाथ मुँह धो, जलपान कर पलँग पर जा डटे। पंडाइनजी भी एक आसन पर उन्हीं के निकट आसीन हुईं। तत्पश्चात पति पत्नी में यों बातें होने लगीं—

पंडाइनजी—"कहिये आपने रूप के विवाह का क्या प्रबन्ध किया है? वह अब पूर्ण रूप से ब्याहने योग्य होगई है, ऐसा प्रतीत होता है कि आप इस विषय में सर्वथा निश्चेष्ट हैं।"

पांडेयजी—"नहीं नहीं, उसी चिन्ता में तो मैं भी उलझा हूं। अभी तक कुछ प्रबन्ध न हो सका। अब अपने मित्रों को योग्य वर ढूंढने के लिये लिखूंगा और स्वयं भी बाहर जाऊंगा।"

पांडेयजी पत्नी का यथोचित परितोष कर बरामदे में चले आये और एक आराम कुर्सी पर लेटकर किसी घोर चिन्ता में निमग्न होगये।

(२)

"[illegible]"

रूपदेवी पांडेयजी की एक मात्र सन्तति है। नामानुसार यथार्थ में वह रूप की देवी ही है। एक मात्र आधार होने के कारण वह पांडेयजी को प्राण से भी अधिक प्रिय है। इसका अनुभव तो केवल पुत्र रहित जन ही कर सकते हैं। रूपदेवी ने अब चतुर्दश वर्ष में पदार्पण किया है। वह ऐसी अवस्था है कि, कुरूपा भी इसे पाकर एक बार चमक उठती है। फिर; रूपदेवी की सुन्दरता का क्या कहना है। पाठक स्वयं अनुमान कर लें। किन्तु जैसे गुलाब के फूल में कांटे होते हैं और सागर का जल खारा होता है, ठीक उसी तरह रूपदेवी में भी एक दोष अचानक हो पड़ा है।

अर्थात् रूपदेवी लंगड़ी है। जब वह पांचवर्ष की थी तब एक दिन छत पर खेल रही थी; अकस्मात् नीचे गिर पड़ी। सिर और पैर में सख्त चोट आई। जगदीश्वर की कृपा से सिर का घाव तो शीघ्र अच्छा होगया किन्तु एक पैर सदा के लिये कुछ टेढ़ा और कम ज़ोर होगया। पांडेयजी ने उसके सुधारने के लिये अनेक प्रयत्न किये किन्तु कुछ लाभ न हुआ। उपरोक्त कारण से रूपदेवी लंगड़ी है।

(३)

"[illegible]"

पांडेयजी कुर्सी पर बैठे हुए रूपदेवी के विवाह के विषय में सोच रहे थे। उनका विचार था कि, दामाद भी उनके घर पर ही रहे। उनके मन में नाना भांति के विचार उठने लगे। वे सोचने लगे कि, कोई धनी पुरुष अपने पुत्र को मेरे यहां क्यों रहने देगा। तो क्या किसी निर्धन लड़के को अपना दामाद बनाऊं? नहीं २ यह नहीं हो सकता, ऐसा करने से लोग निन्दा करेंगे। तो क्या किसी धनवान् के यहां रूप का विवाह ठीक करूं किन्तु मैं कैसे कहूंगा कि मेरी लड़की लंगड़ी है। और यदि विवाह हो गया तो रूप को अवश्य वे अपने यहां ले जावेंगे। उसे लंगड़ी देख मुझे क्या कहेंगे, और लड़की की क्या दशा होगी। अथवा यदि रूपदेवी लंगड़ी है, तो उसके लिये भी कोई लंगड़ा या काना वर ठीक करूं? नहीं २ ऐसा कदापि नहीं हो सकता भला मैं अपनी प्रिय लड़की को ऐसे वर के आधीन कर सकता हूं? इत्यादि।

इसी तरह के विचारों में पांडेयजी सन्ध्या तक उलझे रहे। रात्रि को थोड़ा सा भोजन कर सो रहे। प्रातःकाल उठकर शौच आदि से निवृत्त हो कुछ जलपान कर राजघाट स्टेशन पर जा पहुँचे। पांडेयजी ने सुना था कि; मध्य प्रदेश के रायपुर शहर में एक धनी-मानी सज्जन हरिशंकर वाजपेयी रहते हैं। उनका लड़का यमुनाशंकर एफ. ए. में पढ़ता है। इसलिये पांडेयजी ने रायपुर जाना निश्चित किया। पांडेयजी किसी तरह रायपुर की स्टेशन पर उतरे और टांगे पर सवार हो वाजपेयीजी के यहां पहुंचे। यथोचित अभिवादन और कुशल प्रश्न होने के पश्चात् पांडेयजी ने अपनी अभिलाषा प्रकट की। वाजपेयीजी बोले—"देखिये पांडेजी, अभी हमारा लड़का एफ. ए. में पढ़ता है। हमने दृढ़ प्रण किया है कि, जब तक वह बी. ए. न पास कर ले उसका विवाह न करेंगे। हमें धन की लालच तो है नहीं। ईश्वर ने आपकी दया से सब कुछ दिया है। केवल योग्य व्यक्ति मिलना चाहिये। जिससे सम्बन्ध ठीक हो जावे।" पांडेयजी बोले—"हां वाजपेयीजी, आप का कहना यथार्थ है, किन्तु विवाह कर लेने से कोई हानि नहीं हो सकती। हम भी आप का शुभ नाम सुनकर देखिये, इतने दूर से चले आ रहे हैं। हमारे ऊपर कृपा करनी चाहिये।" निदान पांडेयजी के प्रार्थना करने पर वाजपेयीजी भी सहमत होगये और पांडेयजी तिलक का दिन ठीक करके बनारस लौट आये।

(४)

"दुनिया कहाने भव्नर से। [illegible] बाहर से॥"

हम कह आये हैं कि, यमुनाशंकर वाजपेयी एफ. ए. क्लास में पढ़ते हैं। इस वर्ष परीक्षा देकर ग्रीष्मकालीन अवकाश में घर पर आये हुए हैं। आप का रंग, ढंग तथा पोशाक ठीक नई रोशनी के बाबुओं के समान है। उनके पिता थोड़े पढ़े लिखे पुराने फ़ैशन के आदमी हैं। जब अपने विवाह की बातचीत यमुनाशंकर को कर्णगोचर हुई तब तो ये बड़े विचलित हुए अपनी मित्र मण्डली में आधुनिक विवाह-प्रथा पर लेक्चर देना आरम्भ किये। लगे कहने कि, यह कैसी रीति हमारी जाति में है कि, पति अपनी भावी पत्नी का, जिसके साथ सारा जीवन व्यतीत करना पड़ता है मुँह भी देखने नहीं पाता। दोनों में पूर्व प्रेम के बिना प्रायः मन बन रहा करती है। इस तरह से विवाह करने में प्रायः धोखा होजाया करता है। कभी कानी, लंगड़ी, कुरूपा अथवा दुर्भाग्यवश पत्नी गले मढ़ दी जाती है। मैं तो बिना अपनी आंख से देखे विवाह कभी न करूंगा। क्रमशः इन्हीं के सब बातें वाजपेयीजी [illegible] के कानों तक पहुंचीं। वे बोले—'अब तो कलयुग आई गया हो भाय। [illegible] के ढंग। [illegible] रहा है तबन सब होई। [illegible] विलियम हुए जात हैं। अपना दहि मां का वश है।"

एक दिन यमुनाशंकर ने अपने [illegible] साफ़ कह दिया कि [illegible] विवाह न करूंगा। पिता तो [illegible] करी हो जाने हैं। [illegible] पाकर लड़के को [illegible] होता है उसका अनुभव तो नहीं कर सकते। विचारे लड़के का [illegible] हो जाता है। यमुनाशंकर के आग्रह से [illegible] द्वारा लड़की देखा जाना निश्चित किया। [illegible] और आने जाने का खर्च लेकर लड़की देखने के लिये [illegible] कर दिये। तीसरे दिन बनारस

पहुंचे और ढूंढते ढांढ़ते लाल घाट पर पांडेय जी के मकान पर उतर पड़े। पांडेय जी ने पुरोहित महाराज की विशेष खातिरदारी की चलते समय यमुनाशंकर ने पुरोहित जी से प्रार्थना की थी कि लड़की को भली भांति देख लेंगे और हो सके तो उनके नौकरों को द्रव्य आदि का लोभ बता भीतरी हाल जान लेंगे। पुरोहित जी ने पांडेय जी से अपना उद्देश्य कह सुनाया। पांडेय जी ने इस पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की रूपदेवी को बैठा कर पुरोहित जी को दिखा दिया। पुरोहित जी ने उसकी लावण्यता की भूरि भूरि प्रशंसा की। पांडेय जी के यहां एक लड़का ११ वर्ष का नौकर था। उसे पुरोहित जी एक दिन संध्याकाल में अपने साथ बाहर ले गये और उसे १) मिठाई खाने को दिया। तत्पश्चात् वे रूपदेवी के विषय में पूछ-ताछ करने लगे। लड़का रुपया पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ था। उसने सहज ही बतला दिया कि सब कुछ तो ठीक है किन्तु रूपदेवी लंगड़ी है। इस रीति से पुरोहित जी ने असली भेद जान लिया और अब क्या करना चाहिये इसी विचार में पड़ गये। पुरोहित जी ने यहां तीन दिन रहकर जाने की इच्छा प्रकट की। चलते समय एकांत में पांडेय जी से कहा कि सब कुछ तो ठीक है किन्तु आपकी लड़की लंगड़ी है। कहिये सम्बन्ध कैसे ठीक हो सकता है? पांडेय जी को काटो तो खून नहीं। वे सुन कर सन्न रह गये। मन ही मन सोचने लगे कि बना बनाया काम बिगड़ना चाहता है। अंत में गिड़ गिड़ाकर बोले—"पुरोहित महाराज! सब कुछ आप ही के हाथ में है, चाहे बनाइये अथवा बिगाड़िये"। एक अच्छी सी रकम देकर पुरोहित जी की मुट्ठी गरम कर दी गई और विवाहोपरांत बहुत कुछ देने के लिए कहा गया। पुरोहित जी उतना रुपया पाकर पानी पानी हो गये। भावी आशा ने उन्हें घर जकड़ा। पांडेय जी से बोले कि आप बिलकुल बेफिक्र रहिये। आपका कार्य अवश्य सिद्ध हो जायेगा। इतना कह कर पुरोहित जी ने अपनी राह ली।

(५)

'लाख तदबीरें करो दिल से तो क्या होता है?
वही होता है जो मंजूर खुदा होता है"॥

पुरोहित जी ने रायपुर पहुँच कर कन्या के रूपराशि की अधिक प्रशंसा की और कहे कि यदि यह सम्बन्ध न होता तो हम लोग एक अत्युत्तम और सुशील कन्या सदा के लिए खो बैठेंगे। इस पर वाजपेयी जी और उनके पुत्र को कुछ ढाढ़स बंधा। यमुनाशंकर का तिलक भी कुछ काल के उपरांत चढ़ गया। एक दिन यमुनाशंकर ने पिता से कहा कि; शायद पुरोहितजी को धोखा हुआ हो इसलिये अच्छा होता यदि आप भी कन्या देख आते। वाजपेयीजी पुत्र की प्रार्थना पर बनारस गये, और पूर्वानुसार उन्हें भी रूपदेवी बैठा कर दिखा दी गई। उन्होंने अपनी भावी पुत्र-वधू को देखकर अतीव हर्ष प्रकट किया। वाजपेयीजी कन्या देखकर लौट आये और विवाह का प्रबन्ध करने लगे। नियमित दिन को बारात रवाना हुई, और बनारस पहुंची। हमारे यमुनाशंकर आज दूल्हा बने हैं, और अपनी भावीपत्नी के विषय में विचार कर रहे हैं। आज रूपदेवी का विवाह है। वह भी अपने मन ही मन सोचती थी कि; जब मैं अपने प्रियतम के घर जाऊंगी तो मुझे लंगड़ी पाकर मेरे प्राणनाथ क्या कहेंगे? आज तो वे बड़े आनंद से मेरे साथ विवाह करने आये हैं। क्या यही आनन्द उस समय भी रहेगा जब वे मुझे लंगड़ी पावेंगे? रात्रि में यमुनाशंकर के पाणिग्रहण की क्रियायें विधिवत् होने लगीं। रूपदेवी शिर से पैर तक कपड़ों से ढंकी थी। नाइन और अन्य दासियां उसे पकड़ी थीं। इन्हीं की सहायता से मंडप में रूपदेवी की इज्जत रह गई, और किसी को अनुमान तक न हुआ कि; रूपदेवी लंगड़ी है। किसी सूरत से विवाह हो गया। विवाहोपरान्त पुरोहितजी मूंछ पर ताव देते हुए पांडेयजी के निकट जा पहुंचे और पहले की बातों का स्मरण कराये। पांडेयजी ने अपनी प्रतिज्ञानुसार पुरोहितजी को खूब पुरस्कार दिया। क्रमशः बारात विदा होने का दिन आया। वाजपेयीजी पांडेयजी से कन्या विदा करने के लिये आग्रह करने लगे। पांडेयजी भी विवश हो अन्त में सहमत हो गये। एक दासी के साथ प्रिय पुत्री को विदाकर दिये। रेल यात्रा में चलने फिरने का काम पड़ता वहां दासी रूपदेवी को गोद में उठा थी। तात्पर्य यह कि; घर पहुंचते तक किसी ने यह न जाना कि [illegible] लंगड़ी है।

(६)

"उघरे अन्त न होई निबाहू।"

बालू की भीत कब तक टिक सकती है? अन्त में रूपदेवी की पोल खुल गई। वाजपेयीजी तथा उनके धर्मपत्नी का सब आनन्द मिट गया। [illegible] यमुनाशंकर ने तो मौन व्रत धारण कर लिया। वाजपेयीजी [illegible] बिगड़े कि; एक दिन अपने समधी को तार दे दिये कि, तुम्हारी [illegible] भयंकर व्याधि से पीड़ित होने के कारण मरणासन्न है। [illegible] पाकर बड़े चिंतित हुए और अपने भतीजे के साथ तुरन्त [illegible] आये। पांडेयजी की हिम्मत वाजपेयीजी को मुंह दिखाने की न [illegible] आप स्टेशन पर रह गये। और भतीजे को शहर में भेज दिये। [illegible] पेयीजी ने भतीजे राम का लाखों गालियों से सत्कार किया, और [illegible] देवी को तुरन्त उनके हवाले किया। वह रूपदेवी को लेकर [illegible] पर आया, और वहां से सब बनारस को रवाना हुए। [illegible]
लड़के का दूसरा विवाह करने की चिन्ता में पड़ गये। यमुनाशंकर मन ही मन विचारते थे कि; जिस बात से डरते थे, वही [illegible] आई। फिर भी; कहने लगे कि; भला रूपदेवी का इसमें क्या है? आज उनकी परीक्षा का रिजल्ट भी आउट हो गया। दुर्भाग्यवश यमुनाशंकर फेल हो गये। इस शोक ने उन पर जले पर नमक की तरह असर किया। वे अत्यन्त खेदित रहने लगे। छुट्टी व्यतीत हो जाने पर वे कॉलेज में चले गये। अब वे अपने मित्रों के आमोद प्रमोद में मन नहीं लेते। उनमें यह सहसा परिवर्तन देख उनके मित्रगण अवाक् रह गये। कहने का प्रयोजन नहीं कि; वाजपेयीजी से पुरोहितजी का नाता उसी दिन टूट गया। जिस दिन वे अपनी पुत्रवधू घर लाये। पुरोहितजी कभी २ कह देते थे कि, वाजपेयीजी, आप मुझ पर व्यर्थ कोप करते हैं। आप भी तो लड़की देख आये थे। जैसे आपने देखा था उसी तरह मैं भी देख आया था।

जातीयते।

(छप्पय)

अहो, सर्व-सन्ताप ताप-तम हित करमालिन्!
अहो, मनुज-कुमुद-चन्द्र सुखमा-संचारिन!
अहो, परम प्रिय पवन प्रेम-परिमल परिचालिन!
विश्वविनोदिनि, देवि, शांति साम्राज्य-प्रचारिन!
अहो देवि जातीयते, सर्व-ताप तम नाशिनी।
महिमा तेरी है अकथ, प्रेम पंथ-परकाशिनी॥१॥

जिस पर होती देवि, पुण्य-अनुकम्पा तेरी—
होती उसके लिये फूल काँटों की ढेरी।
उसके सारे क्लेश शीघ्र होते अशेष हैं,
होती भीति सभीत, दुःख रहते न शेष हैं।
तेरे पुण्य-प्रताप से विघ्न-वृन्द रहते नहीं।
प्रबल-प्रभंजन से भला, तृण-गण रह सकते कहीं!॥२॥

उसकी सुन्दर कीर्ति भुवन में भर जाती है,
सरसिज-सुरभि समीर में ज्यों घर कर जाती है।
होते अलि-वत् उच्चभाव उसके आराधक,
बन जाता है विघ्न-पंक उलटा सत्साधक।
तेरी अनुकम्पा अहो, मित्रभाव विस्तारती।
सुधापान के योग ज्यों, मृत्यु बिचारी हारती॥३॥

वारिज-वन में हृदय-हारिणी जिमि परिमल है—
नलिनि-नाथ में तमो-तारिणी प्रभा-प्रबल है—
कोकिल-कुल में मनो-विमोदक गिरा बसी है—
विधु में जिमि सुख-शांति-सारिणी विभा ठसी है—
निशा-समयतम-मध्य जिमि चन्द्र-चन्द्रिका भ्राजती—
तिमि तू है जातीयते! मानव-उर में राजती॥४॥

अति पुनीत प्रिय प्रेम-भाव के विमल स्वाद से,
तथा सुदृढ़ एकत्व-भाव के सुभग खाद से,
निज हृदयस्थ विवेक-वृक्ष को जो जन ज्ञानी
करता पालित, और सुपोषित हित अनुमानी।
वही धीर-वर अन्त में, निज श्रम के परिणाम में
पाता, हे जातीयते! तुझ सा फल हृद्धाम में॥५॥

अहो-राष्ट्र का खेद हमें, पर हाय! यही है—
'तुझ से वञ्चित बनी हमारी मातृ मही है।
इस से उर में भरा घोर-तम-ताप दुभर है;
शोक-ज्वाल से हुआ हमारा तनु जर्जर है।
हृदय हमारा जल गया इन दुखों की मार से,
आओ, आओ, देवि अब, मुक्त करो दुख-भार से॥६॥

—चुन्नी लाल विद्यार्थी "आदिल"

किसानों की दरिद्रता और उसका प्रतिकार।

(लेखक—श्री० शिवदत्त त्रिपाठी, बी. ए.)

प्रायः समस्त संसार के किसान दरिद्रता के समुद्र में डूबे हुए हैं। श्रम जीवियों की अपेक्षा स्वतंत्र और स्वाधीन होते हुए भी घोर दरिद्रता में फँसे हुए हैं और ऋण के भार से तो ऐसे दबे हैं कि उससे मुक्त होना असम्भव जान पड़ता है। अति निर्दयी और पाषाणहृदय महाजनों से बचना उनके लिये केवल कठिन ही नहीं किन्तु प्राय असम्भव सा हो गया है। धनवान और उन्नतिशील यूरोपीय देशों में भी किसानजन अन्य व्यवसायी लोगों की अपेक्षा आज बीसवी सदी में भी अति हीन दीन अवस्था में हैं। इंगलिस्तान, फ्रांस, जर्मनी, इटली इत्यादि सभी पाश्चात्य देशों में किसानों की दशा शोचनीय है। जब आधुनिक सभ्यता तथा शिष्टता के केन्द्रस्वरूप देशों में रेफायसन और ग्लेडस्टिस जैसे उदारहृदय महात्माओं के निरन्तर परिश्रम के बाद भी किसानों की आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था ऐसी है तब अविद्या के घोर अंधकार में पड़े हुए तथा राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दुरवस्था को भोगने वाले भारतवर्ष के किसानों की कैसी दशा हो सकती है उसका यथार्थ वर्णन सहज में नहीं हो सकता। लेखनी उनकी शोचनीय दशा का चित्र खींचने में सर्वथा असमर्थ है।

काल के कुटिल चक्र से अन्य काम धन्धों के प्रायः नष्ट हो जाने के कारण भारतवर्ष में आजकल खेती ही एक व्यवसाय रह गया है। प्रायः नब्बे फी सदी भारतवासी गाँवों में रहते हैं और खेती करते हैं। किन्तु अर्थाभाव से उनके कृषिकार्य भी ठीक ठीक रीति से नहीं होता। निर्धनता के कारण कृषकजनों को जान बूझकर भी पुरानी चाल का खराब खाद और मृतप्राय रोगी बैलों को काम में लाना पड़ता है। इससे जातीय धन दिन पर दिन बढ़ने के बदले घटता चला जा रहा है। इस कारण अन्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष में, जहाँ जन साधारण के लिये एकमात्र व्यवसाय खेती रह गया है, किसानों की दरिद्रता, का प्रश्न उग्र रूप धारण कर रहा है। यह एक महत्वशाली राष्ट्रीय प्रश्न है जिसका शीघ्र ही हल करना आवश्यक है। क्योंकि जिस राष्ट्र का एक बहुत ही बड़ा अंश अच्छी फसल के दिनों में भी मुश्किल से रूखा सूखा खा कर आधा पेट भरने पाता है, वस्त्राभाव के कारण कठिनता से अपनी लाज बचाने पाता है, उस राष्ट्र की आर्थिक दशा का यदि शीघ्र ही सुधार नहीं किया जायगा तो उसके जीवित रहने की आशा करना व्यर्थ है। आज कल नब्बे फी सदी भारतवासियों की आर्थिक दशा अति शोचनीय है। अन्न वस्त्रादि के अभाव से वे बड़े कष्ट में हैं। जीवन के आवश्यकीय पदार्थ अन्न वस्त्रादि का ही जब ठिकाना नहीं, तब जीवन को सुखमय और सार्थक बनाने वाले पदार्थ जैसे विद्या, विज्ञान, कलाकौशल आदि की बात ही दूर रही। ये तो उनके लिए आकाश पुष्प हो रहे हैं। राष्ट्र की आर्थिक दशा ऐसी हीन होने के कारण जाति के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन में अनेक अनेक प्रकार की विपत्तियां उपस्थित हो गई हैं, जिनका उपाय यथा समय न होने से हमारा नाश होने में विशेष समय न लगेगा।

ऐसी अवस्था में इस देश के प्रत्येक व्यक्ति का यह प्रथम कर्तव्य है कि, वह अर्थ का संचय करे। अर्थागमन से ही निर्धनता का नाश हो सकता है, और ऋणभार से छुटकारा मिल सकता है। किसानों की दरिद्रता को दूर करने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि, ऐसी संस्थाएँ स्थापित की जायँ जिन से उनको खेती करके अर्थ का संचय करने में सहायता मिले। खेती करने के हेतु किसानों को धन की आवश्यकता होती है। धन न रहने से उन्हें महाजनों से सूद दर सूद पर ऋण लेना पड़ता है। इस प्रकार उधार लिये धन से खेती करके जो कुछ लाभ होता है वह सब ऋण का सूद चुकाने ही में स्वाहा हो जाता है, और कृषक जन दरिद्र के दरिद्र ही रह जाते हैं। प्रायः मूल धन चुकाने में असमर्थ होने के कारण उन्हें गिर्वी रक्खी हुई भूमि से भी हाथ धोना पड़ता है, और फिर या तो गली २ भीख माँगनी पड़ती है, या अफरीका तथा फिजी में कुली बन कर असीम दुःख सहना पड़ता है। इन सब कारणों से यही उपयुक्त जान पड़ता है कि, किसानों को अल्प सूद पर आवश्यक ऋण देने का भार सरकार अपने सिर पर ले। इस प्रकार वे क्रूर महाजनों के चंगुल से बच जावेंगे और साथ ही साथ अल्प सूद पर लिये हुए धन से बीज, खाद, हल तथा चौपाये इत्यादि मोल लेकर क्रमशः अर्थ का संचय करेंगे और थोड़े ही समय में ऋणमुक्त हो कर अर्थवान हो जायेंगे। इसी अभिप्राय से भारतसरकारने भी संवत १९५० ई० में भूमि सुधार कानून और संवत् '९४' में किसानों को ऋण देने का कानून बनाया था। इन नियमों के अनुसार सरकार लाभकारी कार्यों के हेतु किसानों को अल्प सूद पर रुपया देती है।

किन्तु इन कानूनों से अधिक सफलता नहीं हुई। सरकार से ऋण देने का काम ठीक २ नहीं हो सका। प्रायः मनुष्य को दो प्रकार के कार्यों के हेतु ऋण लेने की आवश्यकता होती है। एक तो उत्पादक कार्य जिन में व्यवसायिक रीति से रुपया लगाने से लाभ होता है, अर्थ की प्राप्ति होती है, और दूसरे अनुत्पादक कार्य जो आवश्यक होते हुए भी धन प्राप्ति के साधन नहीं होते। दोनों प्रकार के कार्यों के लिये किसानों को ऋण लेना पड़ता है। विवाह, श्राद्ध, तीर्थयात्रा, मुकदमेबाजी आदि के लिये धन की आवश्यकता होती है। परन्तु इन से आर्थिक लाभ न होते हुए ऋण लेकर भी यह सब काम करने पड़ते हैं। इसलिये यह समझ लेना कि, किसान लोग केवल लाभकारी कार्यों के लिये ही ऋण लेंगे, ठीक नहीं है। किसानों के लिये ऋण लेने का मार्ग बिना किसी रुकावट के खोल देना अज्ञान बालक के हाथ में तलवार पकड़ा देने के समान है। प्राय किसान अनुत्पादक कार्य के लिये ही अधिक ऋण लेते हैं, इस कारण यह उपयुक्त दीखता है कि; उनको अपनी भूमि गिर्वी रख कर ऋण लेने का अधिकार ही छीन लेना चाहिये। इस तरह वे सूदखोरों से बच जावेंगे। और धरती निकल जाने का भय भी न रहेगा। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। इसी विचार से पंजाब और बुन्देलखण्ड में संवत् १९५७ में यह कानून बना दिया गया कि, किसान जन भूमि गिर्वी रख कर महाजनों से ऋण न ले सकेंगे। किन्तु इस तरह ऋण लेने का मार्ग बिलकुल ही बन्द कर देना भी ठीक नहीं है। गाँठ में पूँजी न होने के कारण ही किसान जन ऋण लेते हैं। बुआई के समय में बीज, खाद, हल इत्यादि खरीदने के लिये उन्हें धन की आवश्यकता होती है। समय २ और भी अन्य लाभकारी कार्यों के लिये उन्हें धन चाहिये। इससे यदि किसानों को ऋण नहीं मिलेगा तो वे खेती कहाँ से करेंगे। धन लगाये बिना लाभ कैसे हो सकता है। जब श्रीगणेश करने के लिए ही अर्थ नहीं तब आगे क्या होगा। इस लिए लाभकारी कार्यों के लिए किसानों को धन मिलने का प्रबन्ध परमावश्यक है।

बड़ी विकट समस्या है। किसानों का ऋण लेने का अधिकार छीन लिया जाय तो हानि और यदि न छीना जाय तो भी हानि। यदि उनको कम सूदपर आवश्यक ऋण न मिले तो उनका काम न चले और यदि ऐसी सुविधा कर दी जाय तो आवश्यकता से अधिक ऋण लेने का अवसर मिल जाता है और इससे अपव्यय बढ़ने की शंका रहती है। अतएव एक ऐसे उपाय की आवश्यकता है जिससे कि किसानों को ऋण भी मिल जावे और उनकी उधार लेने की आदत भी छूट जावे। अर्थात् साँप मर जावे पर लाठी न टूटे। ऐसा अद्भुत कार्य करनेवाली संस्था संभूय व्यवसाय या सहयोग है। सहयोग के अनुसार सहकारी ऋण सभा के द्वारा किसानों का उद्धार हो सकता है

और उनकी आर्थिक अवस्था सुधर सकती है। इस बात को मानकर भारत सरकार ने भी संवत् १९६१ में ऋणसभा स्थापनार्थ एक कानून बनाया और इस प्रकार लार्ड कर्जन के समय में संभूय व्यवसाय का, जिसने कि यूरप में सर्वसाधारण के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में बड़ा परिवर्तन कर दिया है और जिससे अभी भविष्य में बड़ी बड़ी आशाएँ की जाती हैं, भारतवर्ष में भी प्रचार हुआ। सोलह वर्ष के अल्प काल में इसने भारतवर्ष में भी अद्भुत कार्य कर दिखाया है। इस सहयोग प्रथा ने जर्जरित भारत के ग्रामीण जीवन में एक नई स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है। प्रायः समस्त सूबों में जैसे बंगाल, बिहार, संयुक्त-प्रान्त, पञ्जाब, बम्बई और मद्रास में इस ने किसानों की आर्थिक दशा सुधार दी है और ऐसी आशा की जाती है कि सहकारिता ने डेन्मार्क और जर्मनी में जैसी आशातीत सफलता प्राप्त की है वैसी ही सफलता और कुछ अंश में उससे भी बढ़कर उसे भारत में भी प्राप्त होगी।

सहयोग का मूल उद्देश आर्थिक असमानता का नाश कर अर्थ की कमी से जो समाज में निर्बलता आ गई है उसको दूर करना है। संसार में आर्थिक असमानता के कारण जो अनेक व्याधियां उत्पन्न हो गई हैं उनका नाश करने के लिए फ्रांस में फूरिअर ने और इंगलिस्तान में राबर्ट ओवनने उनीसवीं सदी में संभूय व्यवसाय का प्रचार किया। संभूय व्यवसाय दो प्रकार का है। एक ऐच्छिक और दूसरा अनैच्छिक। अनैच्छिक संभूय व्यवसाय का दूसरा नाम समष्टिवाद है जिससे कि हमारा यहांपर कोई संबन्ध नहीं है। ऐच्छिक संभूय व्यवसाय के दो मुख्य भेद हैं, एक ऋण लेनेवाली समितियां और दूसरी ऐसी समितियां जिनका कि उद्देश्य ऋण लेना नहीं है। यहां पर हमें ऋण लेनेवाली समितियों से ही अधिक काम है। ऐसी समितियों का प्रचार पहले पहल जर्मनी में रेफायसन और शूल्जडेलिश ने किया था। कोई पचास वर्ष का समय व्यतीत हुआ जब कि रेफायसन ने किसानों की घोर दरिद्रता को दूर करने के लिए अति निर्धन, उजाड़ और दुर्भिक्ष से सदा आक्रान्त 'वेस्टरवाल्ड' नाम के जर्मनी के गाँव में ऋण लेनेवाली समिति स्थापित की थी। इस गाँव में कृषक अति निर्धन तथा ऋणग्रस्त थे किन्तु रेफायसन द्वारा स्थापित समिति ने थोड़े ही समय में उनका ऋण अदा करके उन्हें धनवान् बना दिया फिर क्या था एकदम ऐसी समितियाँ खोली जाने लगीं और फ्रांस, इटली, स्विट्ज़रलैंड, डेन्मार्क इत्यादि सभी यूरोपीय देशों में जहाँ जहाँ इनका प्रचार हुआ वहाँ वहाँ के किसानों की आर्थिक अवस्था बदलने लगी। जिस प्रकार सूर्य के उदय से अन्धकार का नाश हो जाता है उसी प्रकार रेफायसन द्वारा स्थापित समितियों के प्रचार से कृषक जनों की दरिद्रता का नाश हो गया।

जैसा कि ऊपर कहा गया है भारतीय सरकार ने भी किसानों की दरिद्रता को दूर करने का अन्य कोई उपाय न देखकर संवत् १९६१ में संभूय व्यवसाय का हमारे देश में प्रचार कराया। प्राय प्रत्येक प्रान्त में रजिस्ट्रार नाम का एक सरकारी कर्मचारी नियत किया गया जिसका कर्तव्य संभूय व्यवसाय का प्रचार करना है। गाँवों में किसानों को ऋण दिलाने के लिए समितियाँ स्थापित की गईं। कम से कम दस व्यक्ति मिलकर एक समिति खोल सकते हैं। इस प्रकार खोली गई समिति प्रत्येक सभासद की सम्पूर्ण जायदाद की जमानत पर सरकार से अथवा किसी बैंक, महाजन या किसी अन्य समिति से ही अल्प सूद पर ऋण लेकर अपने सभासदों को लाभकारी कार्यों के लिए ऋण देती है। समिति इस बात की निगरानी रखती है कि सदस्य उधार लिए हुए धन का दुरुपयोग न करने पावे। सदस्यों को ऋण देने के सिवा समिति उनके आपस के झगड़ों का भी निर्णय करती है और इस प्रकार उन्हें मुकद्दमेबाज़ी से बचाती है। कई समितियों ने नाना [illegible] कुरीतियों का भी त्याग किया है जैसे उधार और [illegible] की बड़ी बड़ी [illegible] और [illegible] की समितियों ने मदिरा पान का त्याग किया है। समिति का काम बिना वेतन लिए सदस्य ही करते हैं इससे उनमें कर्तव्यपरायणता, [illegible] तथा [illegible] इत्यादि गुणों का प्रचार होता है। [illegible] भी देखने में आता है कि समिति का [illegible] और [illegible] के लिए [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] हो कि, संभूय व्यवसाय के [illegible] के लिये कृषक जन [illegible] हैं, और समिति [illegible] है।

[illegible] संभूय व्यवसाय का खूब प्रचार हो गया। [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] समितियाँ [illegible] गईं जिनका उद्देश्य केवल सदस्यों को ऋण दिलाना ही नहीं है, बल्कि धनोपार्जन भी है। और भी समितियाँ दूसरे उद्देश्यों से भी खोली गई हैं। जैसे सम्भूय अर्थ पैदा करनेवाली समितियाँ हैं। पुराने कानून में इस प्रकार की समितियों के लिये कोई व्यवस्था नहीं की गई थी, इसलिये सम्वत १९६९ में सरकारने एक दूसरा कानून बनाया। सम्भूय अर्थ पैदा करनेवाली और सम्भूय अर्थोपभोग करनेवाली समितियों के प्रचार में भी सरकारने योग दिया। इनके प्रचार से भी किसानों को बड़ी सहायता मिली। खेती करने के उपकरण जैसे हल, बीज, खाद इत्यादि के इकट्ठा खरीद ने के हेतु उन्होंने समितियाँ खोल दीं, इससे उन्हें पहले से सस्ती तथा अच्छी वस्तुएँ मिलती हैं। इकट्ठा अन्न, घी, दूध, इत्यादि बेचने के लिये भी किसानों ने समितियाँ स्थापित करलीं जिससे कि, चतुर बनिए उन्हें न ठग सकें। इस प्रकार सरकार की सहायता से सम्भूय व्यवसाय का खूब प्रचार हो रहा है। इसके प्रचार भारतीय कृषकों की आर्थिक अवस्था थोड़ी बहुत सुधर गई है।

इतने बड़े देश में अभी समितियों का प्रचार जितना चाहिये, उतना नहीं हुआ है। भारत के किसानों की दरिद्रता इतनी अधिक है कि एक मात्र सम्भूय व्यवसाय के प्रचार से उसका नाश होना कठिन है। इस चाल से तो वे कम से कम सौ वर्ष में ऋणमुक्त हो सकेंगे। भला इतने कालपर्यन्त उन्हें ऋणग्रस्त रहने देना कब उचित है। यह बला तो जितनी जल्दी टले उतना ही अच्छा। इसलिये सरकार का संभूय व्यवसाय पर ही निर्भर हो कर किसानों की दरिद्रता तथा ऋण भार के विषय में उदासीन रहना उचित नहीं है। यूरोपीय देशों में किसानों की दरिद्रता तथा कर्जदारी का नाश करने में सहकारी बंक और ऋण के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं ने भी योग दिया है। साधारण रीति की बंक, भूमि बन्धक रखनेवाली बंक आदि संस्थाएँ और मकान इत्यादि बनानेवाली समितियों ने भी जन साधारण का बड़ा उपकार किया है। इन संस्थाओं के सिवा विद्या के प्रचारने भी जाति की आर्थिक दशा को सुधारने में सहायता दी है। जब यूरोप में इन संस्थाओं को बनाने की आवश्यकता हुई तब भारत का क्या पूछना है। यहाँ तो ऐसी समितियों के प्रचार की और भी विशेष आवश्यकता है। जिस प्रकार सरकारने संभूय व्यवसाय का प्रचार कराने में बड़ा उद्योग किया उसी प्रकार उसको ये संस्थाएँ स्थापित करके इनका भी निर्धन किसानों में प्रचार कराना चाहिये। इसके सिवा सरकार को विद्या का भी प्रचार करना चाहिये। अविद्या के कारण ही किसानों की आर्थिक दशा ऐसी शोचनीय हो रही है। इस हेतु विद्या का प्रचार कर दरिद्रता के मूल कारण ही नाश करना सर्वथा उचित है। विद्या के अभाव से संभूय व्यवसाय का ठीक रीति पर प्रचार नहीं हो रहा है इसलिये सरकार को शीघ्र ही कम से कम प्रारंभिक शिक्षा का प्रचार कराना चाहिये।

किसानों की दरिद्रता को दूर करने के लिये, सरकार को माल-गुज़ारी भी कम करनी चाहिये। हमारे नेताओं का कथन है कि किसानों से बहुत ज्यादा मालगुज़ारी ली जाती है। इससे उनके पास कुछ भी नहीं बचता। फिर यदि वे निर्धन तथा ऋणग्रस्त नहीं होंगे तो कौन होगा। किन्तु सरकार स्वयं इस बात को नहीं मानती। उस का कथन है कि; वह उचित ही मालगुज़ारी लेती है। अब इन दोनों में किसका कथन सत्य है इसमें भिन्न मत होना साधारण बात है। किन्तु जो हो किसानों के लाभ के लिये भारतीय सरकार को माल-गुज़ारी घटा देनी चाहिये।

शिक्षित भारतीय नवयुवकों का भी यह कर्तव्य है कि; वे संभूय व्यवसाय तथा अन्य ऊपर कही गई संस्थाओं का प्रचार कर [illegible] कृषकों की आर्थिक दशा को सुधारें। रेफायसन और शूल्जडेलिश का आदर्श अपने सन्मुख रख कर उन्हें भी ऐसी संस्थाएँ स्थापित करनी चाहिये। जिससे कि, भारतीय धन बढ़े और देश का कल्याण हो। यदि वे इस ओर भुकेंगे तो वे भारतमाता की अधिक सेवा कर सकेंगे। यह अधिक सम्भव है कि; उनके उद्योग से दरिद्रता तथा [illegible] का शीघ्र नाश होगा देश धनधान्य-पूर्ण होगा। धन की बढ़ती से [illegible] विज्ञान, कलाकौशल का प्रचार होगा। इनके प्रचार से [illegible] तथा राजनैतिक जीवन में जो अनेक त्रुटियाँ उत्पन्न हो गई हैं, [illegible] नाश होगा, और इनके नाश होने से भारतवर्ष पुनः सभ्यता [illegible] शिरता का केन्द्र हो कर मनुष्य जाति का उपकार करेगा।

कॉंग्रेस डेप्युटेशन को पार्लमेंट में उपहार।

उपहार के समय पार्लमेंट हौउस की गॅलरी में लिया हुआ फोटो।

पीछली पंक्ति—(खड़े बायनीं बाजू) १ जे. ओ. ग्रॅडी, ए पी, २ फेनर ब्रवे (मजूरपक्ष), ३ डब्ल्यू ग्रहॅम, एम पी, ४ ई. डालगॅडो, ५ डब्ल्यू ल्न्, एम् पी, ६ एच डब्ल्यू नेव्हिनसन

तीसरी पंक्ति—(खड़े बायनीं बाजू) १ डर डब्ल्यू बारटन, एम. पी, २ ए, हेडे एम. पी, ३ रा. ऑ जे हॉग, एम पी, ४ डां बेलकर, ५ डां बी. डी साठ्ये, ६ टी. डब्ल्यू. ग्रडो, एम. पी, ७ जे. सी.स्वान, एम. पी, ८ कौन्सिलर जी. पी ब्लिमडे, जे पी. (से. ब्रिटिश कमेटी, इंडियन नॅशनल कांग्रेस), ९ रा. ऑ. ए हेंडरसन, एम पी, १० ऑलफ्रेड डेव्हिस, एम पी, ११ आर, रिचडमन एम पी, १२ पीटर कीटिंग, १३ डब्ल्यू आर. स्मिथ, एम. पी, (१४) लेफ्टनंट कमा. जे. एम केनवर्दी, एम. पी, (१५) ए मॅक कॉल्म् स्कॉट, एम पी, (१६) बी जी. हॉर्निमन, (१७) रा ओ. डब्ल्यू ब्रम, एम. पी.

दूसरी पंक्ति—(कुर्सी मे) १ डान आसविंग, एम. पी., २ डॉ. रुदरफोर्ड, ३ बेनस्पूर, एम पी, ४ बिपिन चंद्रपाल, ५ ना जी. एस खापर्डे, ६ ना व्हा जे पटेल, (जनरल सेक्रेटरी इ. नॅ. कांग्रेस), ७ मिसेस सरोजिनी नायडू. ८ डॅ. जी बी क्लार्क, (चेअरमन ब्रि. कॉ. कमेटी), ९ बी. जी. टिळक, १० डॉ. पी. जे. मेहता, ११ मिस एच. नॉर्मटन् (संपादिका, इंडिया).

पहली पंक्ति—(बैठे हुए) १ जे. एम. पारीख, २ ए. रंगस्वामी आयंगार, ३ नामजोशी. ४ एन्. सी. केलकर, ५ रा. ऑ. जे आर क्लाइन्स, एम पी., ६ डब्ल्यू. टी. विल्सन, एम. पी.

कॉंग्रेस डेप्युटेशन के लोग पार्लमेंट सभा की ओर जा रहे है।

दाहिनी बाजु से—मि० बिपिनचंद्रपाल, ना० खापर्डे, रा० केलकर डॉ० मेहता, ना० पटेल।

दाहिने बाजु से—डॉ० मेहता, ना० पटेल, ना० खापर्डे, लो० तिलक, मि० बिपिनचंद्रपाल, रा० केलकर।

लो० तिलक का बंबई में सम्मान।

लो० तिलक।
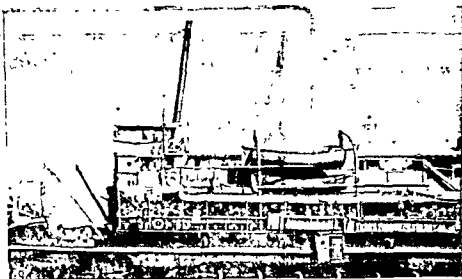
इजिप्त स्टीमर बंबई के किनारे पर लगा उस समय का दृश्य।

[फोटोग्राफर—एन. व्ही. वीरकर, बंबई।
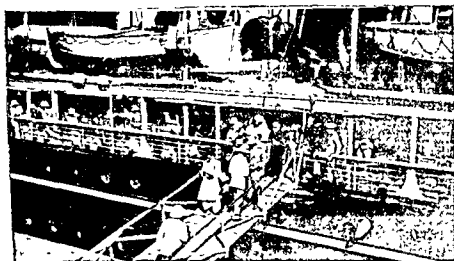
लो० तिलक और बिपिनचंद्रपाल अपना पासपोर्ट बतलाते हुए किनारे पर उतर रहे हैं।

[फोटोग्राफर—एन. व्ही. वीरकर, बंबई।

श्रीयुत नरसिंह चिंतामण केलकर।

परशिया के बादशाह।

इंग्लैंड में प्रवास कर रहे हैं।
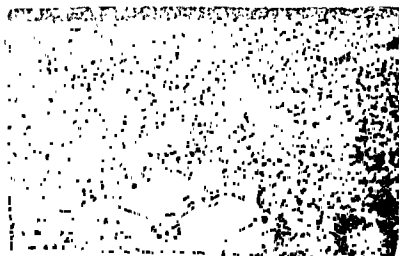
स्वराज्य की ध्वजापताका से सजी हुई मोटर और प्रचंड लोकसमुदाय।

[फोटोग्राफर—एन. व्ही. वीरकर, बंबई।

विश्वदर्शन [illegible]

वनिता-विश्राम, सुरत-बंबई।

यह संस्था श्रीमती बाजीगौरी मुनशी और श्रीमती शिवगौरी गज्जर ने अपना सर्वस्व समर्पण करके स्थापित की है। संस्था का उद्देश—विधवा स्त्रियों को धार्मिक रीति से रहने को मिले, धार्मिक ज्ञान प्राप्त हो, जिससे उनका जीवन कर्तव्य परायण हो, उनकी मानसिक और आध्यात्मिक स्थिति का सुधार होकर वे अपना जीवन गौरव युक्त बनावें और समाज की उपयोगी हो सके इस प्रकार अपना जन्म का सार्थक होने पावें देना है। इस आश्रम में गुजराती, अंग्रेजी और संस्कृत, औद्योगिक, धार्मिक, नैतिक, चित्रकला, संगीत इत्यादि शिक्षण मिलता है। स्त्रियों की उन्नति के लिये वनिता-शिक्षण नाम का मासिक पत्र भी निकालना शुरू किया है। एक पुस्तकालय भी खोला गया है। यहाँ [illegible] समय स्त्रियों की [illegible] दिखाई देती है। [illegible] की एक [illegible] भी निकाली है।

इस तरह से विधवा और [illegible] स्त्रियों की व्यवस्था [illegible] लड़कियों के लिये ही [illegible] एज्युकेशन की भी व्यवस्था कर रखी है। इस स्कूल में [illegible] विवेक, विनय, नम्रता, [illegible] निर्भयता, उदारता, [illegible] इत्यादि सद्गुणों की शिक्षा देने में अधिक ध्यान रक्खा [illegible] है। यह अभ्युदय की संस्था को निर्माण करके उन [illegible] भगिनीओं ने गुजरात [illegible] जनता का बड़ा उपकार [illegible] है। यह वनिता-विश्राम [illegible] आश्रय देने को सर्वदा [illegible]

श्रीमती शिवगौरी गज्जर।
श्रीमती बाजीगौरी मुनशी।

सुरत वनिता-विश्राम का विद्यार्थिनी-गण।

कृष्णचरित।

(लेखक—प्रो० शिवाधार पाण्डेय, एम. ए., एल. एल. बी. ।)

घनघोर घटा घिरी हुई भादों की काली रात है। चारों ओर भयावना जंगल है। सिंह दहाड़ रहे हैं, हाथी चिग्धाड़ रहे हैं। ऊपर मेघों के झुण्ड के झुण्ड बारम्बार गरज रहे हैं। अन्धाधुन्द अन्धकार को बीच २ में बिजली की चकाचौंध और भी अँधियाला बना देती है। जल मूसलाधार गिर रहा है। यमुना जी की नीली २ लहरें चट्टानों से टकरा कर कलोलें मारती हुई बराबर बढ़ती चली आती हैं। ऐसे भीषण समय में एक पुरुष एक ज़रा से बच्चे को ऊपर उठाये हुए नदी को पैदल पार कर रहा है। बच्चा अभी एक दिन का भी नहीं है। परन्तु उसके जीवन पर सारे संसार का मंगल स्थित है, और उसके जन्म की बाट सारे संसार के हितू देवता और महात्मागण बड़े विलम्ब से जोह रहे हैं।

कई हजार वर्षों की बात है। पृथ्वी पर कराल कलिकाल आ रहा है। मनुष्य क्षीण और दुर्बल हो गये हैं। उनकी आत्मा में बल नहीं है, उनके मस्तिष्क में शक्ति नहीं है। पहले के बड़े २ नेता और महापुरुष—महाराज मनु, मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र, पृथ्वीनाथ पृथु, देवर्षि नारद, ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य, राजर्षि जनक, और भक्तशिरोमणि प्रह्लाद-आदि एक भी अब ढूँढने से नहीं मिलते। धर्म की जड़ें ढीली पड़ गई हैं। परमात्मा में विश्वास उठा जा रहा है। परोपकार की प्रेरणायें इनेगिने ही चित्तों में उठती हैं। लोग अपने २ ही भले में मग्न हैं। स्वार्थ और सुख ही को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। विलास और आनन्द ही सुख की सीमा मानी जा रही है। मनुष्य मात्र की प्रकृति शिथिल पड़ गई है।

जब किसी देश की अधिक आर्थिक उन्नति होती है, तब उसकी ऐसी ही दशा होती है। भारत में इस समय प्रत्यक्ष रूप से किसी बात का अभाव नहीं है। देश धन से, बल से, विद्या से परिपूर्ण है। परन्तु यदि सच्ची दृष्टि से देखिए, तो उसकी इससे अधम अवस्था और नहीं हो सकती। भीतर ही भीतर अश्रद्धा, अविश्वास, अहंकार और औद्धत्य के चूहे सारे शरीर को खा गये हैं। केवल देखने भर ही को वह खोखला शरीर बाहर से सुन्दर स्वरूप में खड़ा हुआ है। न उसमें आत्म बल है, न आत्म-विश्वास है। आत्मा के स्थान में कोरा मन ही मन है।

देश में बड़े २ राजा हैं, बड़े २ राज्य हैं। कुरु, पाञ्चाल, मगध, मत्स्य, मद्र, चेदि, विदर्भ, भोज, केकय, अंग, बंग, कालिंग, पुण्ड्र, उत्कल, पाण्ड्य, चोल, अन्ध्र, द्रविड़, सिन्धु वाह्लीक, त्रिगर्त्त, काश्मीर, शाल्व, शाकल, गान्धार—आदि एक से एक शक्तिशाली राज्य स्थित हैं। काशी, अयोध्या, मथुरा, माहिष्मती, प्रस्थल, प्रयाग, प्राग्ज्योतिष, कुंडिनपुर, शोणितपुर, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, गिरिव्रज, चम्पा, काम्पिल्या-आदि एक से एक समृद्धिशाली नगर उपस्थित हैं। भीष्म, द्रोण, द्रुपद, विराट, कंस, जरासन्ध, हंस, डिम्भक, शल्य, शाल्व, भीष्मक, पौंड्र-आदि अनेकानेक वीर और यशस्वी योद्धा वर्तमान हैं। किरात, काम्बोज, शक, हूण, चीन, बर्बर आदि अनेक म्लेच्छ देश उनके बाहुबल को स्वीकार कर चुके हैं, तथा अधीनता मानते और सहायता अर्पण करते आते हैं। सेनाओं की अक्षौहिणी की अक्षौहिणी चलती हैं। अद्भुत अस्त्रों का प्रहार होता है। सब प्रकार के सांसारिक पदार्थ भरे हुए हैं। देश सभ्यता के शिखर पर स्थित है।

परन्तु वास्तव में क्या है? एकता का नाम नहीं। एक राजा दूसरे से लड़ा मरता है। इधर कुरु और पाञ्चाल में वैर है, तो उधर मत्स्यों और त्रिगर्तों में। केकय आदि कई देशों में परस्पर का विरोध है। प्रजा की दशा दिन पर दिन शोचनीय होती चली जाती है। कंस, जरासन्ध सरीखे राजा लोग खुल्लमखुल्ला अत्याचार करते हैं, दूसरे..छुपा छिपा कर। धींगा धींगी और मन-मानी चल रही है। कोई शासक-शक्ति या समूह नहीं है जो प्रजा की रक्षा और देश का भला करे।

प्रजा में स्वयं कुछ शारीरिक अथवा आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। उसकी आध्यात्मिक अवस्था तो अथाह सागर में गोते खा रही है। प्राचीन कर्मकाण्ड निरा आडम्बर से पूर्ण हो गया है। पुराने दर्शन और शास्त्र का साधारण जन समाज पर अब कुछ प्रभाव नहीं पड़ रहा है। मनुष्यमात्र अपने लक्ष्य, अपने आदर्श को भूला जा रहा है। जो स्मरण भी करते हैं, उन्होंने भी नैराश्य साधारण कर लिया है। देश की सत्ता का नाश होने से भविष्य भयावने रूप का हो गया है।

ऐसी दशा में, ठीक अर्ध रात्रि के समय, उस जाज्वल्यमान ज्योति का जन्म हुआ, जो सर्वकाल से स्थिर है और सर्वकाल तक स्थिर रहेगी। उसी ज्योति की जगमगाहट के एक कण मात्र प्रकाश का आज यहाँ पर थोड़ा बहुत दर्शन करना है।

हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम उन क्षुद्र लोगों की बातों पर यहाँ ध्यान दें, जो इस दिव्य जीवन को जानने और समझने के स्थान में उसकी व्यर्थ की बुराइयों का पाप अपनी मूर्खता दिखाते हुए अपने मत्थे मढ़ते हैं। कृष्ण का जीवन जितना उच्च है, उतना ही कुछ लोग उसे नीच करने का प्रयत्न करते हैं। एक की राय में कृष्ण गुजरात का एक चतुर राजा था, जिसको अन्त में एक बहेलिये ने बधा, परन्तु महाराजा गायकवाड़ में और श्रीकृष्ण में अनन्त अन्तर है। दूसरों की राय में कृष्ण एक धार्मिक नेता थे, जिन्होंने हत्या को उचित बतलाया और भारत में आलस्य का आधिक्य किया। कहना नहीं होगा कि भगवान् कृष्ण की दिव्य शिक्षा से यह लोग मुँह मोड़ कर आँख-कान मुँदे हुए हैं। तीसरे लोगों की घृणित राय में कृष्ण एक मनमौजी गोप युवक थे जिन पर उन्होंने संसार भर के दोषारोपण किये हैं।

इन मूर्खता के मूर्तिमय उदाहरणों का स्मरण करना भी महापाप है। जितना ही छोटा हृदय और छोटा मस्तिष्क होगा, उतने ही छोटे भाव होंगे। 'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।' कुएँ के मेढक को कुएँ से ज़्यादा का ध्यान ही नहीं हो सकता।

स्वयं भगवान् कृष्ण ही को अपने जीवनकाल में बड़ी भारी निन्दा सुननी पड़ी थी। निन्दा की कसौटी पर वह भली भांति कस लिये गये थे। तब उनको संसार ने स्वीकार किया था। युधिष्ठिर के राजसूय में शिशुपाल ने जो जो कहा जा सकता था, कहने में रत्ती नहीं छोड़ा था। वह उनका समकालीन था, सम्बन्धी था, शत्रु था। उनकी रत्ती रत्ती बातों को जानता था। अर्घ्य के अवसर पर जहां उसने कहा कि कृष्ण कोई राजा नहीं हैं, उनकी जाति के विषय में सन्देह है, उनको गो स्त्री और राजा तक की हत्या लगी हुई है, वहां उसने कृष्ण के चरित पर, जीवन की शुद्धता पर, सदाचरण पर कोई धब्बा नहीं लगाया। यदि उसको कोई भी अवसर मिलता तो जहां वह भीष्म को कृष्ण के अर्घ्य का प्रस्ताव करने ही के लिये नपुंसक पुकार चुका था,' क्या कृष्ण को इस विषय में 'तिल का ताड़' किये बिना कभी छोड़ देता? महाभारत के अन्त में अश्वत्थामा के अस्त्र से मृतप्राय परीक्षित की जब गर्भ में भगवान ने रक्षा की थी, तब किस प्रभाव से?

उन्होंने कहाः—"यदि मैंने हँसी में भी कभी झूठ नहीं कहा है, यदि मैंने कंस और केशी को धर्मपूर्वक मारा है, यदि मैंने अपने मित्र अर्जुन का कभी स्वप्न में भी विरोध नहीं किया है, यदि धर्म और ब्राह्मणगण मुझको सर्वदा प्यारे रहे हैं, तो यह बालक जीवन को प्राप्त हो।

यथा सत्यं च धर्मश्च मयि नित्यं प्रतिष्ठितौ ।
तथा मृतः शिशुरयं जीवतामभिमन्युजः ॥

'यदि मुझ में सत्य की बराबर प्रतिष्ठा है, धर्म की [बराबर] प्रतिष्ठा है, तो यह मृत बालक अभिमन्यु का पुत्र जीवन [को] प्राप्त हो।'

तप और तप की शक्ति से क्या नहीं हो सकता? तामसिक दिवस में चाहे जितना अन्धकार प्रतीत हो, परन्तु उस अनुपम आत्म-ज्योति ही से प्रकृति में प्रकाश होता है। श्रीकृष्ण के इस कर्म के समान हमारे महर्षियों के अनेक उदाहरण वर्तमान हैं। इससे उसमें कुछ आश्चर्य नहीं। परन्तु, वैसे देखिये तो भगवान् कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन ही आश्चर्यमय है। भागवत धर्म के प्रवाह से भारतवर्ष में जो भक्ति की अपूर्व धारा बही है, उसमें जिस भक्त को देखिये वही उनके उस चरित्र को स्मरण कर आश्चर्य से गद्गद और आनन्द से विह्वल हो जाता है। इतना ही नहीं, उसमें भी एक अलौकिक भाव का आवेश हो जाता है। हम लोगों को कृष्ण का वह पुण्यमय चरित्र दो ग्रन्थों से प्राप्त होता है:—भागवत और महाभारत। भागवत भक्ति का आगार है, महाभारत ज्ञान का भाण्डार। भागवत परमहंस का कहा हुआ पुराण है, महाभारत वेदव्यास का बनाया हुआ, इतिहास है। कृष्ण का चरित्र महाभारत से पूरी २ तौर से प्राप्त होता है। उसके पढ़ने से सारी सामयिक अवस्था का चित्र सामने आ जाता है; और कृष्ण का प्रभाव, आदर्श-जीवन और अनमोल उपदेश नई नई भाँति से स्थान २ पर प्रकट होता चला जाता है। भागवत में उस दिव्य चरित्र को शुकदेवजी ने भक्ति के सागर में मग्न हो कर देखा और वर्णन किया है। वह बहुत ही सीधा सादा, भोला, विश्वासमय वर्णन है आदि से अन्त तक पवित्रता के भाव से, रस से भरा हुआ है। परन्तु अनेक कलिकाल के कवियों ने उस पर मनमाने छन्द और कवित्त गढ़ २ कर उसको नीच कर डालने की कोशिश की है। अनेक स्वार्थी पुरुषों ने भक्तगण को बहलाने और धोखा देने के लिये उस पवित्र भक्ति-क्षेत्र को घोर प्रकार से दूषित किया है। यदि किसी को सुवर्ण दिया जाय, और वह उससे परोपकार के स्थान में दुष्टता ही की वृद्धि करावे, तो यह उसका दोष है या सुवर्ण का? यदि शैतान को भी इंजील पढ़ाई जाय, और वह उससे भी अपना ही मतलब निकाले, तो यह शैतान का दोष है या इंजील का? कहा है, 'पय-पानं भुजंगानां केवलं विष-वर्धनम्।" भुजंग को दूध पिलाने से उसके विष ही की बढ़ती होती है। ऐसे ही भयावने भुजंग-भक्तों ने भारतवर्ष में अपना विष फैलाया है। यदि ऐसा न होता, तो धर्म के नाम से इतने अधर्मी पाप क्यों फैलाते फिरते?

कृष्ण का चरित्र! संसार में उससे बढ़ कर दूसरा चरित्र नहीं है। बुद्ध, ईसा आदि सारे हमारी दृष्टि में उसके पीछे ही आते हैं। परन्तु कलंक किसको नहीं छूता? कलंक कृष्ण को भी लगा था। सत्राजित की सूर्य-मणि के बारे में उनके सारे कुटुम्बियों ने उन पर सन्देह किया था, यहाँ तक कि उनके दूसरे शरीर, दूसरे हृदय, बड़े भाई बलराम भी उनसे रूठ कर द्वारका छोड़ बैठे थे। परन्तु असत्य असत्य ही है, सत्य सत्य ही। तब कलंक का नाम सुनते ही किसी को यकायक घबड़ा उठना न चाहिये, परन्तु उसकी पूरी जाँच करनी चाहिये, जैसी कृष्ण ने प्रसेन की मृत्यु की की थी।

सांसारिक भाव लीजिये। कृष्ण क्या नहीं थे? पहले दर्जे के राजनीतिज्ञ—'न कूटनीतिरभवत् श्रीकृष्णसदृशः पुरा।' शुक्राचार्यजी कह गये हैं कि श्रीकृष्ण के समान नीति में चतुर कोई नहीं हुआ (इसका तो उनको जन्मजन्मान्तर का अनुभव होगा) महावीरों के महावीर

'अस्त्रा हि शमिनो राज्ञामेकस्त्वार्जितं भुवि ॥
न दृश्यान महीपालं नाम्नत्तिपुत्र [illegible] ॥'

भीष्म पितामह ने राजसूय में एकत्र हुए राजाओं से कहा था कि मैं तुम में से एक को भी नहीं देखता हूँ, जिसको श्रीकृष्ण के तेज ने विजय न किया हो। अस्त्रों में श्रेष्ठ उनके चक्र सुदर्शन को जब द्वारिका में जाकर अश्वत्थामा ने उनसे माँगा था, और उनके आज्ञा देने पर भी पर पृथ्वी से उसको नहीं उठा सका था, तो उसने उनको यही उत्तर —'हे कृष्ण! तुम सत्य कहते हो। इस तुम्हारे अस्त्र को तुम्हारे [illegible] र प्रिय अर्जुन, भाई बलराम पुत्र प्रद्युम्न आदि किसी ने भी [illegible] माँगा था, यह मैं जानता हूँ। परन्तु मेरी इच्छा थी कि मैं लेकर तुम्हारे ही साथ युद्ध करूँ जिसमें मैं फिर अजेय हो [जाऊँ]। तुम्हारे सिवा मुझ को और किसी से भय नहीं है।' महाभारत में कौरवों के पक्ष मात्र आधार महावीर कर्ण ने अपने अर्जुन के मारने के प्रण को अलग रख कर कृष्ण ही के वध के लिये इन्द्र की दी हुई शक्ति का प्रयोग करना विचारा था, और देवव्रत भीष्म ने उनकी शस्त्रग्रहण की प्रतिज्ञा का भंग कर देना ही अपने पौरुष का लक्ष्य स्थिर किया था।

जहाँ वह नीति में, और वीरता में, बुद्धि में और बल में, संसार में अग्रणी थे, वहाँ उनकी विद्या और उनका सदाचार भी निराला ही था। राजसूय के अवसर पर जब भारत भर के राजा लोग इन्द्रप्रस्थ में एकत्र हुए थे, भगवान् कृष्ण पैर धोने के लिये नियुक्त किये जाने में नहीं शरमाये—नहीं, नहीं, अपने आप को ही उन्होंने नियुक्त किया। अर्घ्य के अवसर पर कुरुवृद्ध भीष्म पितामह ने उनका वर्णन यों किया:—

'ब्राह्मणों में ज्ञान से बड़ाई होती है, क्षत्रियों में बल से। गोविन्द की पूजा के दोनों कारण उपस्थित हैं।'

वेदवेदाङ्गविज्ञानं बलंचाप्यधिकं तथा ॥
नृणां लोके हि कोऽन्योऽस्ति विशिष्टः केशवादृते ॥

वेदवेदांग और विज्ञान में अधिक होने से और बल में भी अधिक होने से मनुष्यों के लोक में केशव को छोड़ कर दूसरा ऐसा कौन है जो विशिष्ट कहा जाय?

'दान, दाक्षिण्य, श्रुत, धैर्य, लज्जा, कीर्ति, बुद्धि सन्तति, श्री धृति, तुष्टि, पुष्टि सब अच्युत ही में स्थित हैं।'

कृष्णं कमलपत्राक्षं नार्चयिष्यन्ति ये नराः ।
जीवन्मृतास्तु ते ज्ञेया न सम्भाष्याः कदाचन ॥

कमल-दल के से नेत्रोंवाले कृष्ण की जो पुरुष पूजा न करेंगे, जीवन्मृत जानने चाहिए। और उनसे बात न करनी चाहिए।

केवल यही नहीं, वे संगीत-विद्या में निपुण थे—मुरली-मनोहर उनका नाम है। वे रास में कुशल थे—उनका नटवरवेश मशहूर है। वे कवि में अद्वितीय थे। उनके दिव्यगीत-भगवद्गीता की तरंगें अनन्त समय तक उठेंगी। पौरुष का कोई अंग नहीं दिखलाई पड़ता, जिसको उन्हों पूर्ण न किया हो। जंगली जानवरों को मार कर, नागों को नाथ कर, पहाड़ों को हटा कर, उन्होंने अपना बचपन वृन्दावन की आनन्दमय भूमि में खेल कूद कर बिताया। सब स्त्री-पुरुष उन पर मुग्ध हो गये। यदि इस काल में उनके भोलेभाले प्रेममय चरित्र पर जरा भी लांछन लग सकता, तो क्या गोकुल, बरसाना, नन्दगाँव आदि के गोप ग[ण] चुपके बैठे बैठे सब सहा करते? कदापि नहीं। यही लोग कृष्ण [के] एक अनुयायी थे। कृष्ण के गोपाल-गण नेपोलियन के Old Guar[d] की भाँति अजेय थे। दुर्योधन उनको पाकर फूल उठा था, और उन्होंने दान दिये जाने पर संशप्तकों का साथ देकर अनेक अमूल्य दिवसों तक कृष्ण के मित्र, कृष्ण के रथी, उस समय के अनन्य वीर अर्जुन के दांत खट्टे कर दिये थे।

बाल्यकाल से निकल कर कृष्ण ने अपने कौशल और पराक्रम से अत्याचारी कंस का नाश किया, भोज वंश के पुराने राजा उग्रसेन को सिंहासन पर फिर से बिठलाया, मगधराज जरासन्ध को बारम्बार हराया, और अन्त में समुद्रतट पर जाकर एक नई पुरी 'द्वारका', जो भारतवर्ष का द्वार थी, बनाई। द्वारिका से श्रीकृष्ण का प्रभाव भारतवर्ष भर में फैल गया।

भारतवर्ष को कृष्ण ने जैसा पाया, पहले वर्णन कर चुके हैं। चारों ओर उद्दण्ड राजा लोगों का जोर था। उनकी उद्धत सेनायें क्षत्रियत्व की सच्ची शिक्षा को, सत्य धर्म को, कभी की तिलांजलि दे चुकी थीं। देश रसातल को जा रहा था। श्रीकृष्ण ने पहले अनार्यों पर आक्रमण किया। उत्तर में नरक और दक्षिण में बाण—यही दोनों उन लोगों में उस समय विशेष बलशाली थे। कृष्ण ने उत्तर जाकर नरक का उसके देश प्राग्ज्योतिष (भूटान) में वध किया। फिर दक्षिण में उन्होंने बाण को हरा कर उसकी कन्या ऊषा का विवाह अपने पोते अनिरुद्ध के साथ होने दिया। उनके पुत्र प्रद्युम्न का भी विवाह मायावती से हुआ था, जो अनार्य असुर शम्बर ही के अधिकृत देश में प्रकट हुई थी। शम्बर का नाश प्रद्युम्न ने स्वयं किया था और यह शम्बर एक के लिए अकेला ही था। शाम्बरी माया अब तक प्रसिद्ध है।

परन्तु यद्यपि अनार्य लोगों का बल इस समय बहुत क्षीण अवश्य हो गया था। उनसे डर तो देश को अनार्य प्रकृति वाले आर्य राजाओं ही से था। नरक ने हजारों कन्यायें अपने किले में कैद कर रक्खी थीं। (इन के सोलह हजार कन्याओं के साथ विवाह करने की कथा महाभारत में नहीं मिलती) परन्तु जरासन्ध ने, जो मगध का चक्रवर्ती राजा

था, छियासी राजाओं को (भागवत में यह 'अयुते द्वे शतान्यष्टौ' कहे गये हैं) जीत कर पहाड़ की गुफा में कैद कर रक्खा था, कि अगर वह सौ राजाओं को जमा कर ले, तो उन सब का बलिदान शिवजी को कर देगा। साथ ही साथ जरासन्ध ब्राह्मणों का भी बड़ा भक्त था, और स्नातकों की सर्वदा सहायता करता था, तथा ब्राह्मणों से आधी रात तक भी मिलता था, और उसने किसी बात की नाहीं नहीं करता था, यह उसके चरित्र से प्रगट है। जरासन्ध के डर से दूसरे सब राजा लोग कांपते थे, परन्तु अकेले उसमें भारत भर को एक कर लेने की बुद्धि नहीं थी। यह थी शिशुपाल में। जिस प्रकार शरीर के भीतर का सारा अशुद्ध रुधिर जमा हो कर एक फोड़ा निकल आये, उसी प्रकार सारे दुष्ट लोगों का शिरोमणि मूर्तिमान शिशुपाल था। हिरण्यकशिपु कोरा दैत्य था। रावण वेद का टीकाकार, ब्राह्मण का बेटा था, जो संसर्गदोष से राक्षस हो कर मनुष्य समाज से पतित हो गया था। परन्तु शिशुपाल चलता फिरता पक्का मनुष्य था; न राक्षस, न दैत्य। मनुष्य ही नहीं, कृष्ण का सम्बन्धी, वसुदेव की बहन का लड़का, चेदियों का शासक, माहिष्मती का महाराज था। उसने जो षड्यन्त्र रचा, उसमें भारतवर्ष अत्याचार के अथाह सागर में अनन्त काल के लिए डूब जाता। उसके प्रयत्न से पौण्ड्रक, भगदत्त, दन्तवक्र, रुक्म आदि अनेक राजालोग जरासन्ध के पक्ष के हो गये, और उसको भारत का अधीश्वर मानने में संकोच न करने लगे। यहां तक कि स्वयं रुक्मिणी के पिता, श्रीकृष्ण के श्वसुर, विदर्भ ऐसे बड़े राज्य के अधिष्ठाता, महाराज भीष्मक भी जरासंध ही के दल के हो गये। ऐसी अवस्था में श्रीकृष्ण को यदि भारतवर्ष का उद्धार करना था, तो बहुत शीघ्र। उन्होंने धर्मराज युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने का उपदेश कर भीम के द्वारा जरासन्ध का कौशल से नाश करवाया। और शिशुपाल के सौ अपराध क्षमा करने पर भी अपनी प्रकृति की प्रेरणा से वह स्वयं उनकी तेजोऽग्नि में पतंग की भांति कूद पड़ा। इसके पीछे जब श्रीकृष्ण ने देखा कि कौरव लोग भी किसी प्रकार सुधरनेवाले नहीं हैं, अव्वल दर्जे के अधर्मी और दुराचारी हैं, जिनके प्रचण्ड पाप पूर्ण प्रताप के आगे भीष्म और द्रोण ऐसे बड़े बड़े विश्वविजयी सरदारों को, विदुर और संजय ऐसे बड़े बड़े राजनीतिविशारद राजवल्लभ महामंत्रियों को, चुपचाप सिर झुकाये भरी सभा में शकुनि के कपट-द्यूत और द्रौपदी के चीर-हरण सदृश दारुण दृश्यों को विवश होकर देखना पड़ा था, तो उन्होंने महाभारत को भी रोकना पसंद नहीं किया। और उस अपार संग्राम रूपी सागर में भारत भर का क्षत्रियत्व गोता खा गया। श्रीकृष्ण ने देश के कल्याण के लिए सारा पक्षपात छोड़ कर जिस प्रकार पाण्डवों से कौरवों का वध कराया था, उसी प्रकार अपने उद्दण्ड कुटुम्ब का स्वयं नाश किया। धर्मराज युधिष्ठिर के राजमार्ग में देशहित की कोई बाधा न खड़ी होने दी। यदि पृथ्वी पर कलिकाल को आना था, तो श्रीकृष्ण ने पुरानी सारी बुराइयों को दूर कर दूषित रुधिर को रुधिर ही की धारा द्वारा बहा कर, मनुष्यों को फिर एक नया अवसर दिया कि वे सुधरें, और कलिकाल घोर में न पड़ें। इस अवसर से पूरा लाभ न उठाने का दोष, शिथिलता और मानसिक दौर्बल्य से अधोगति ही को प्राप्त होने का दोष, श्रीकृष्ण पर नहीं है, मनुष्यमात्र ही पर है।

कहा जाता है कि महाभारत करवा कर श्रीकृष्ण ने भारतवर्ष के वीरत्व का नाश कर दिया, और उसकी स्वाधीनता का लोप करा दिया। यह बिलकुल ठीक नहीं है। जब परशुराम ने इक्कीस बार ढूँढ़ ढूँढ़ कर क्षत्रियों को मारा था, तब भी क्षत्रियों का नाश नहीं हुआ था। [illegible]

सच तो यह है कि जिस प्रकार परशुराम से नाश होने के बाद मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र का चरित्र देख कर भारतवर्ष ने फिर से बल धारण कर लिया था, उसी प्रकार महाभारत के बाद भगवान श्रीकृष्ण के आदर्श से उसने फिर वृद्धि नहीं की। यह काल के प्रभाव और मनुष्यों की दुर्बलता का परिणाम है। व्यर्थ श्रीकृष्ण पर इसका दोष लगाना वृथा है। उन्होंने एक सिरे से एक बार फिर देश को नया कर दिया। धर्मराज स्थापित कर, धर्म का उपदेश कर, स्वयं धर्म का मार्ग बतला दिया। यदि संसार ने श्रीकृष्ण के उस सरलातिसरल धर्म मार्ग तथा कर्ममार्ग से लाभ नहीं उठाया, तो संसार का दोष है, श्रीकृष्ण का नहीं।

श्रीकृष्ण ने धर्म का क्या मार्ग बतलाया—इस प्रश्न का उत्तर देना श्रीकृष्ण के जीवन के सच्चे तात्पर्य को जान लेना है। उपनिषदों में जिनको 'कृष्ण देवकीपुत्र' कहा है, यह वही थे जिन्होंने एक बेर कलिकाल में गोता खाते हुए, आलस्य और विलासिता में डूबते हुए, मनुष्यों की आत्मा को फिर नया कर देना चाहा। उनका उपदेश ऐसा था कि वह मुर्दे से भी मुर्दे मनुष्य को एक बार जीता जागता बना कर ही छोड़े। यह उपदेश भगवद्गीता है—भगवान का गीत।

गीता संसार-साहित्य में एक अपूर्व पुस्तक है। उसके कई भाव महाभारत में श्रीकृष्ण के मुख से जगह जगह पर निकले हैं, परन्तु जिस स्थान पर गीता स्वयं कही गई है, वह अद्वितीय है। गीता उससे अमर है।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में एकत्र लड़ने के लिये तैयार शस्त्र उठाये हुए कौरवों और पाण्डवों की अट्ठारह अक्षौहिणियों के बीच में एक अकेला रथ खड़ा हुआ है। सारा युद्ध ठहर गया है। यह रथ अर्जुन का है, और यह भगवान् कृष्ण अपना दिव्यगीत—नर को नारायण का सन्देश—कह रहे हैं, और आगे भी होते रहेंगे।

अर्जुन की अवस्था प्रत्येक मनुष्य की अवस्था है। मनुष्य के जीवन-क्षेत्र में अनेक स्थानों पर कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती हैं, मार्ग साफ नहीं मालूम देता। एक धर्म कहता है यह मत करो। दूसरा कहता है यह अवश्य करो। तब मनुष्य घबरा कर निराश हो जाता है कि, वह किस प्रकार से करे कि उसका कर्तव्य क्या है? गीता इसी का प्रत्यक्ष उत्तर है।

गीता का ज्ञान अनन्त है। उस पर भारतवर्ष के बड़े २ विद्वानों ने टीकायें लिखी हैं। उसके बिना श्रीकृष्ण के जीवन के उद्देश्य ही को निष्फल समझना चाहिये, इसलिए यहां पर उसका कम से कम सारांश दे देना आवश्यक है।

भगवान् ने कहा है कि, मनुष्य को व्यर्थ का शोक न करना चाहिये। वह कभी नहीं मरता, उसका नाश होना—[illegible] काहे का? दुःख और क्लेश उसको छू भी नहीं सकते। मनुष्य की आत्मा का नाश नहीं होता। उसका जीवन अनन्त है। प्रलय में यह संसार भी मर जाता है, परन्तु आत्मा में बराबर जीता रहता है। मनुष्य को चाहिए कि वह इसी अमर अवस्था में हमेशा रहे, इस संसार के जीवन को ही अपना असली जीवन न मान बैठे। प्रश्न यह है कि उस सच्चे असली जीवन को मनुष्य किस प्रकार प्राप्त हो सकता है, (क्योंकि, वही मोक्ष, कल्याण निर्वाण है) देखना चाहिये कि यह सच्चा जीवन इस संसार का झूठा जीवन कैसे हो जाता है?

श्रीकृष्ण कहते हैं—[illegible] कर्मों से। मनुष्य कर्म करता है, उसका फल होता है। उन फलों को वह भोगता है। दुःख सुख जो कुछ हो, उसे भोगना होता है। [illegible]

[illegible]

सकता। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य को ईश्वर का सिपाही होना चाहिये। जो कुछ ईश्वर करावे, आँख बन्द कर निष्काम करना चाहिये। ईश्वर को प्रिय भले काम होते हैं। उनको मनुष्य करे, परन्तु कामना छोड़ करके। परिणाम यह होगा कि उसको उन कर्मों का कुछ फल न होगा। वह कामना से धीरे २ रहित हो जायगा। स्वर्ग नरक के चक्रव्यूह से छूट जायगा। माया उसको छोड़ देगी। यह झूठा जीवन भी छूट जायगा। उसका मोक्ष हो जायगा और वह सच्चे जीवन को प्राप्त होगा, क्योंकि उसका नाश तो हो ही नहीं सकता।

मोक्ष को मनुष्य बहुत कठिन समझते थे कि, कहीं करोड़ों जन्म-जन्मान्तरों में जा कर प्राप्त होगा, परन्तु इससे सीधा रास्ता और क्या हो सकता है? बुद्धि के अनुसार भी यह बिलकुल ठीक है। निष्काम कर्म ही मोक्ष का सीधा सरल रास्ता है। यही भगवान् की शिक्षा है। कलिकाल में सीधा रास्ता बतलाये जाने की ज़रूरत थी। इसी लिये भगवान् का अवतार हुआ था।

माया नाश करने के और भी रास्ते हैं। भक्ति, ज्ञान और कर्म। श्रीकृष्ण ने तीनों मार्ग दिखलाये हैं। तीनों की प्रशंसा की है, और तीनों का आपस में सम्बन्ध बतलाया है। किस सीढ़ी से मनुष्य कितनी दूर पहुंचता है और किस मार्ग से उसको कम कठिनाई होती है। यह भगवान् के उपदेश से प्रकट होता है, परन्तु सब से सरल और मार्ग या सीढ़ी निष्काम कर्म ही की है, यह श्रीकृष्ण का सब से बड़ा सन्देश है।

निष्काम कर्म के विषय में श्रीकृष्ण का यह भी उपदेश है। यदि मनुष्य में विद्या है, तो वह संसार से—सब भूतों से—प्रेम करेगा। यदि उसको सब जीवों से प्रेम होगा। तो उसको प्रकृति से प्रेम होगा। यदि प्रकृति से प्रेम होगा, तो प्रकृति की आत्मा से भी होगा, यदि प्रकृति की आत्मा से प्रेम होगा। तो वह परमात्मा पर भरोसा रक्खेगा। यदि परमात्मा पर भरोसा रक्खेगा, तो उसके कर्म भी निष्काम होंगे। निष्काम-कर्मों से माया का नाश होगा, भवसागर से मोक्ष होगा, सच्चा-जीवन प्राप्त होगा।

गीता में वे २ भाव हैं, जो सारे संसार को एक करते हैं। मनुष्य-मात्र भगवान् के सामने बराबर है—यही शिक्षा इन श्लोकों की शङ्ख-ध्वनि द्वारा दी गई है। भगवान् ने कहा है:—

"कोई बड़ा दुराचारी भी मेरी अनन्य रूप से सेवा करे, तो उसको साधु मानना चाहिये।"

"जो २ जिस २ का भक्त होकर श्रद्धा-पूर्वक उसकी पूजा करता है, मैं उसी में उसकी भक्ति को दृढ़ करता हूँ।"

"देवताओं की भक्ति करनेवाले देवलोक को जाते हैं, पितरों की भक्ति करनेवाले पितृलोक को, भूतों की भूतों के लोक को और मेरी पूजा करनेवाले मेरे लोक को।"

"पत्र पुष्प, फल जल, जो कुछ मुझ को भक्ति-पूर्वक वही मैं प्रसन्नता-पूर्वक ग्रहण करता हूँ"—और, सुदामा के विदुर का साग।"

"जो मेरी जिस प्रकार सेवा करते हैं, मैं भी उनको भजता हूँ। सारे मनुष्य मेरे ही मार्ग में लगे हुए हैं।"

"जो अपने ही समान सब को एक सा देखता है, सुख को बराबर समझता है, वही योगी है।"

"मुझ से परे और कुछ नहीं है। जो करते हो, खाते हो, यज्ञ करते हो, तप करते हो, सब मुझ को अर्पण करो।"

संसार के इतिहास में वेद को छोड़ गीता ही परम पुरानी जिस में साफ़ २ सब से प्रथम, परमेश्वर द्वारा अपना पथ जाना वर्णित है। गीता से बढ़ कर हितकर उपदेश संसार मिलता है?

यदि सारे संसार ने भगवद्गीता से पहले पूरा लाभ नहीं अब उठाने को तैयार हो रहा है। धीरे २ पूर्व, पश्चिम, योरप, रिका, चारों ओर इस अमूल्य रत्न का प्रकाश फैल रहा है मनुष्य-मात्र अपने सच्चे जीवन को जान रहा है।

हम हिन्दू लोग मानते हैं, और स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है।

> यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
> अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

"जब २ धर्म का क्षय और अधर्म का अभ्युदय होता है, तब हे भारत! मैं अपने को सृजता हूं।" यह भगवान् का वचन है। मर्यादा-पुरुषोत्तम के दो अक्षर के 'राम' नाम ही को हम का नाम मानते हैं, वहां कृष्ण को हम कोई विशेष नाम पुकारते। केवल 'भगवान्' ही कहते हैं। उनके लिये वही है। भगवान् ही से सब कुछ है।

> यतः सत्यं यतो धर्मो यतो ह्रीरार्जवं यतः।
> ततो भवति गोविन्दो यतः कृष्णस्ततो जयः॥

"जहां सत्य है, धर्म है, लज्जा है, सीधापन है, वहां ही पाये जाते हैं। जहां भगवान् हैं, वहां ही जय होती है।"

भगवान् श्रीकृष्ण ने जय का—संसार-जय का—सीधा, सरल, बतलाया है। फिर क्यों न कहें?

> यतः कृष्णस्ततो जयः॥

जिसके हृदय में कमलदल-लोचन दुरित-दुख-मोचन वृन्दावन भक्त-भयहारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र रहेंगे, इसमें सन्देह का नाम-मात्र नहीं। हमारा प्रत्येक हिन्दू से, प्राणों से, यही कहना है:—

"गीता को मत भूलो। श्रीकृष्ण को मत भूलो। निष्काम मार्ग में कल्याण है। भगवान् ही से निर्वाण है।"

—सरस्वती से उद्धृत

काटोल की तालुका परिषद।

यह नौवां अधिवेशन ता० १८-१०-२६ को रोज काटोल शहर में रा० माधवरावजी अणे के सभापतित्व में हुआ।

महायुद्ध के छठे वर्ष का नवम्बर मास।

(लेखक—श्री० कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर, बी. ए.।)

तुर्किस्थान के साथ बिना सन्धि किये बहोत सी कठिनाइयों का अन्त न हो सकेगा, यह बात अंग्रेज मुत्सद्दीओं का अनुभव में आई है। नाताल की छुट्टी के पश्चात सन्धि की चर्चा होगी और जनवरी-फरवरी में सुलेह कि शर्तों पर हस्ताक्षर हो जाने का संभव है। तुर्की सुलेह का यह प्रश्न व्यवस्थित रीति से छुड़ाने में आनेवाली बाधाएँ नवम्बर मास में कम न हो कर और बढ़ गई है। एक घटना मात्र अंग्रेज मुत्सद्दीयों के लिये अनुकूल निर्माण हुई। सो यह कि फ्रेंच पार्लिमेन्ट के चुनाव में सोशियालिस्ट पक्ष का पराभव हुआ और पुंजीदार लोगों का पक्ष को भरपूर मताधिक्य मिला। गत साठ पैंसठ वर्ष में किसी भी चुनाव में पुंजीवालों का पक्ष की इतनी फतह नहीं हुई थी। महायुद्ध समाप्त होने पर इंग्लैंड में पार्लिमेन्ट का नवीन चुनाव में जिस प्रकार मि० लॉईड जॉर्ज को बहुत भारी मताधिक्य मिला उसी भांति फ्रांस में भी एम० क्लेमेंको का पक्ष को मताधिक्य मिला है। उसका अर्थ ऐसा है कि जिन ऐंग्लो-फ्रेंच मुत्सद्दीओं ने महायुद्ध में विजय मिलाया और जर्मनी की सुलह की शरतें निश्चित की, वे ही मुत्सद्दीओं को और भी पांच सात वर्ष तक युरोपखण्ड के बारे में ऐंग्लो फ्रेंच धोरण निश्चित ठहराने कि सम्मति इन चुनावों में दी गई है। फ्रान्स का नया चुनाव ने क्लेमेंको का मण्डल की गद्दी स्थिर की है सही किन्तु इससे उस मण्डल की शक्ति बढ़ाई है ऐसा नहीं। इंग्लैंड के मुत्सद्दी वहां की हड़ताल के झपाटे में आजाने से रशियन बोल्शेविकों की बराबर दो हाथ करने की यह मण्डल की शक्ति जैसे मर्यादित हुई है, उसी तरह फ्रांस सरकार भी हड़तालों की वजह से बोल्शेविकों के ऊपर सैन्य भेजने को असमर्थ हुई है। इंग्लैंड और फ्रांस यह दोनों राष्ट्र सोशियालिस्टों की इस चाल से बोल्शेविकों की ऊपर तलवार खींचने को हीनबल होगये हैं। तो भी दोनों राष्ट्र अपना द्रव्यबल का और बुद्धिबल का फायदा बोल्शेविकों को देने के लिए आज समर्थ हैं। रशिया के बोल्शेविकों का शत्रु को एंग्लो फ्रेंच की ऐसी मदद पर आधार रख कर [illegible] के बाद बोल्शेविकों से पुनः लड़ने की तैयारी करने में किसी प्रकार की हरकत नहीं है फ्रेंच पार्लिमेन्ट के चुनाव ने जर्मन मुत्सद्दीयों का दिल खट्टा किया है। जर्मनी को ऐसी आशा थी कि, फ्रेंच पार्लिमेन्ट का चुनाव में सोशियालिस्ट पक्ष विजयी हो कर अधिकारारूढ़ होने पर वो पक्ष जर्मनी को [illegible] से बाहेर पड़ने का मार्ग खुला कर देगा, परन्तु जर्मनी की वह आशा निष्फल हुई है। [illegible] जर्मनी को [illegible] पास खड़ी की हुई दिवाल तोड़ने की [illegible] उसी में [illegible] करने की कदाचित जर्मनी की ओर से हलचाल की जाय तो फ्रांस की तरफ से जर्मनी पर हमला न होगी ऐसा प्रश्न चुनाव ने जर्मनी को [illegible] है। फ्रेंच चुनाव में यद्यपि सोशियालिस्टों का पराभव हुआ तो भी उसी समय में बेलजियम और इटाली के पार्लिमेन्टरी चुनाव में सोशियालिस्टिक पक्ष का विजय हुआ है। युरोपखण्ड का वातावरण की दृष्टि से देखा जाय तो बेलजियम में सोसियालिस्ट आगे बढ़ा तो भी क्या किया पीछे हटा तो भी क्या? दोनों की मातब्बरी समान ही हैं। इटाली की स्थिति वैसी नहीं है। इटाली का पार्लिमेंटरी चुनाव में सोशियालिस्ट पक्ष विजयी होने से बालकन प्रदेश में और भूमध्य समुद्र में एकदम नयी परिस्थिति उत्पन्न हुई है। और यह नयी परिस्थिति का परिणाम तुर्कों का तह पर और बोल्शेविकों की लड़ाई पर अवश्य होगा। इटालीयन पार्लिमेंट में सब से अधिक महत्व का पक्ष वह सोशियालिस्ट लोगों का है ऐसी स्थिति इटालियन पार्लेमेन्ट का चुनाव ने निर्माण की है इससे सोशियालिस्टिक धोरण के अनुसार इटाली के राज्य कारोबार भविष्य में चलेगा किंवा ऐसे न होने पावे तो अन्तस्थ राज्यक्रान्ति के कलह में इटाली डुबा हुवा नजर आयेंगे। इटालीयन पार्लिमेन्ट के चुनाव के समय भिन्न भिन्न पक्षों में अच्छी तरह से मारामारी हुई, और एक दूसरे पर बम्बगोले फेंक कर एक दूसरे को जखमी बनाने तक प्रसंग आ पंहुचा, पार्लिमेन्ट सभा में राजनिष्ठा का सोगंद नामा के अवसर पर यह प्रतिज्ञा झूठ है इस प्रकार सब सोशियालिस्टो ने व्यक्तिशः जाहेर किया। इटली के बादशाह पार्लिमेंट में आया उस वखत सब सोशियालिस्ट सभागृह छोड़ कर बहार निकल गये। बादशाह की अवज्ञा करने का हेतु से सोशियालिस्ट लोग सभागृह से चल जाने से राजपक्षीय मैंनिकों ने दरवाजे पर उन लोगों को अच्छी तरह से पीटा। और इस मार पीट का बदला लेने के लिये यह सोशियालिस्ट लोगों ने सारे देशभर में हड़ताल पुकारी। हमको राजा नहीं चाहिये इस प्रकार का सोशियालिस्ट लोगों का कथन होने से इटली के बादशाह कितने दिन तक अपनी गद्दी का उपभोग कर सकेंगे उसके बारे में सब कोई शंकित हो गये है। चुनाव के पहले के मंत्रिमण्डल निकल गये तो भी सोशियालिस्ट पक्ष को इतना प्रतिकूल नहीं था। नया मंत्रिमण्डल भी बहोत दिन टिकेगा नहीं। चुनाव के समय में और हड़ताल के समय में इटाली के अन्दर बोल्शेविकों का जयजयकार करने में आया, और यह [illegible] नया संकट के वजे से इटाली लश्करी दृष्टि से पंगु हुआ। नया मंत्रिमण्डल ने परदेशों का किसी भी भाग इटाली के राज्य में समाविष्ट कर देने का इटाली का विचार नहीं है, ऐसा प्रगट किया है। और इटाली अब [illegible] कारस्थानों में भाग नहीं लेंगे ऐसा [illegible] में कुछ शक नहीं है। इटाली का राजा और उसका नया मंत्रिमण्डल [illegible] तो वह सोशियालिस्ट लोगों की पंजा [illegible] रहेगा। यह [illegible] का कुछ परिणाम न हो कर [illegible] राजा साहब को अपनी गद्दी का [illegible] देना पड़े तो इटाली में सोशियालिस्टिक [illegible] स्थापित होगी [illegible] है। इटाली में होनेवाली यह राज्यक्रान्ति का परिणाम [illegible] में युरोपखण्ड पर किस प्रकार का होगा [illegible] है। इटाली देश सोशियालिस्ट होने पर बालकन प्रदेश भी [illegible] युरोपखण्ड में [illegible] है। इटाली के [illegible] [illegible], [illegible]

सकता। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य को ईश्वर का सिपाही होना चाहिये। जो कुछ ईश्वर करावे, आँख बन्द कर निष्काम करना चाहिये। ईश्वर को प्रिय भले काम होते हैं। उनको मनुष्य करे, परन्तु कामना छोड़ करके। परिणाम यह होगा कि उसको उन कर्मों का कुछ फल न होगा। वह कामना से धीरे २ रहित हो जायगा। स्वर्ग नरक के चक्रव्यूह से छूट जायगा। माया उसको छोड़ देगी। यह झूँठा जीवन भी छूट जायगा। उसका मोक्ष हो जायगा और वह सच्चे जीवन को प्राप्त होगा, क्योंकि उसका नाश तो हो ही नहीं सकता।

मोक्ष को मनुष्य बहुत कठिन समझते थे कि, कहीं करोड़ों जन्म-जन्मान्तरों में जा कर प्राप्त होगा, परन्तु इससे सीधा रास्ता और क्या हो सकता है? बुद्धि के अनुसार भी यह बिलकुल ठीक है। निष्काम कर्म ही मोक्ष का सीधा सरल रास्ता है। यही भगवान् की शिक्षा है। कलिकाल में सीधा रास्ता बतलाये जाने की ज़रूरत थी। इसी लिये भगवान् का अवतार हुआ था।

माया नाश करने के और भी रास्ते हैं। भक्ति, ज्ञान और कर्म। श्रीकृष्ण ने तीनों मार्ग दिखलाये हैं। तीनों की प्रशंसा की है, और तीनों का आपस में सम्बन्ध बतलाया है। किस सीढ़ी से मनुष्य कितनी दूर पहुंचता है और किस मार्ग से उसको कम कठिनाई होती है। यह भगवान् के उपदेश से प्रकट होता है, परन्तु सब से सरल और मार्ग वा सीढ़ी निष्काम कर्म ही की है, यह श्रीकृष्ण का सब से बड़ा सन्देश है।

निष्काम कर्म के विषय में श्रीकृष्ण का यह भी उपदेश है। यदि मनुष्य में विद्या है, तो वह संसार से—सब भूतों से—प्रेम करेगा। यदि उसको सब जीवों से प्रेम होगा। तो उसको प्रकृति से प्रेम होगा। यदि प्रकृति से प्रेम होगा, तो प्रकृति की आत्मा से भी होगा, यदि प्रकृति की आत्मा से प्रेम होगा। तो वह परमात्मा पर भरोसा रक्खेगा। यदि परमात्मा पर भरोसा रक्खेगा, तो उसके कर्म भी निष्काम होंगे। निष्काम-कर्मों से माया का नाश होगा, भवसागर से मोक्ष होगा, सच्चा-जीवन प्राप्त होगा।

गीता में वे २ भाव हैं, जो सारे संसार को एक करते हैं। मनुष्य-मात्र भगवान् के सामने बराबर है—यही शिक्षा इन श्लोकों की शङ्ख-ध्वनि द्वारा दी गई है। भगवान् ने कहा है:—

"कोई बड़ा दुराचारी भी मेरी अनन्य रूप से सेवा करे, तो उसको साधु मानना चाहिये।"

"जो २ जिस २ का भक्त होकर श्रद्धा-पूर्वक उसकी पूजा करता है, मैं उसी में उसकी भक्ति को दृढ़ करता हूँ।"

"देवताओं की भक्ति करनेवाले देवलोक को जाते हैं, पितरों की भक्ति करनेवाले पितृलोक को, भूतों की भूतों के लोक को और मेरी पूजा करनेवाले मेरे लोक को।"

"पत्र पुष्प, फल जल, जो कुछ मुझ को भक्ति... यही मैं प्रसन्नता-पूर्वक ग्रहण करता हूँ"—जैसे, ... विदुर का साग।"

"जो मेरी जिस प्रकार सेवा करते हैं, मैं भी उ... भजता हूँ। सारे मनुष्य मेरे ही मार्ग में लगे हुए हैं।"

"जो अपने ही समान सब को एक सा देखता ... को बराबर समझता है, वही योगी है।"

"मुझ से परे और कुछ नहीं है। जो करते हो, खाते ... यज्ञ करते हो, तप करते हो सब मुझ को अर्पण करो।"

संसार के इतिहास में वेद को छोड़ गीता ही परम पुरा... जिस में साफ़ २ सब से प्रथम, परमेश्वर द्वारा अपना पथ ... जाना वर्णित है। गीता से बढ़ कर हितकर उपदेश संसा... मिलता है?

यदि सारे संसार ने भगवद्गीता से पहले पूरा लाभ नहीं उ... अब उठाने को तैयार हो रहा है। धीरे २ पूर्व, पश्चिम, योर... रिका, चारों ओर इस अमूल्य रत्न का प्रकाश फैल रहा है। मनुष्य-मात्र अपने सच्चे जीवन को जान रहा है।

हम हिन्दू लोग मानते हैं, और स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

"जब २ धर्म का क्षय और अधर्म का अभ्युदय होता है, तब हे भारत! मैं अपने को सृजता हूं।" यह भगवान् का वचन है। मर्यादा-पुरुषोत्तम के दो अक्षर के 'राम' नाम ही को हम का नाम मानते हैं, वहां कृष्ण को हम कोई विशेष नाम पुकारते। केवल 'भगवान्' ही कहते हैं। उनके लिये वही है। भगवान ही से सब कुछ है।

यतः सत्यं यतो धर्मो यतो ह्रीरार्जवं यतः।
ततो भवति गोविन्दो यतः कृष्णस्ततो जयः॥

"जहां सत्य है, धर्म है, लज्जा है, सीधापन है, वहां ही पाये जाते हैं। जहां भगवान् हैं, वहां ही जय होती है।"

भगवान् श्रीकृष्ण ने जय का—संसार-जय का—सीधा, सरल, बतलाया है। फिर क्यों न कहें?

यतः कृष्णस्ततो जयः॥

जिसके हृदय में कमलदल-लोचन दुरित-दुख-मोचन वृन्दावन विहारी भक्त-भयहारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र रहेंगे, उसकी अनन्त विजय होगी इसमें सन्देह का नाम-मात्र नहीं। हमारा प्रत्येक हिन्दू से, प्रत्ये... प्राणी से, यही कहना है—

"गीता को मत भूलो। श्रीकृष्ण को मत भूलो। निष्काम मार्ग ही से कल्याण है। भगवान् ही से निर्वाण है।"

—सरस्वती से उद्धृत।

काटोल की तालुका परिषद।

यह मीटिंग अधिवेशन ता० १८-१०-[illegible] का रोज़ काटोल शहर में रा० माधवरावजी अणे के सभापतित्व में हुआ।

और बल्गेरिया यह प्रदेश को सोशियालिस्टीक होने में कितना समय लगेगा? परदेशोका कुछ भी हमको नहीं चाहिये ऐसा इटाली इस समय कहने लगा है। इटाली ने कदाचित सोशियालिस्टिक मतो का अनुकरण कर के तुर्की का प्रान्तो पर से मानों अपना हक्क छोड़ दिया तो कैसी स्थिति होगी? एशियामाइनर में तुर्की का किनारे का कुछ भाग में इटाली का सैन्य है और कुछ भागों में ग्रीस का सैन्य है। सोशियालिस्टीक मत का बना हुआ इटाली ने अपना सैन्य यह विभाग में से निकाल लिया मानो तो उनके हाथ से स्मरना का टापु किस प्रकार रख सका जायगा? इटाली खुद तुर्की का कुछ भी भाग न लेगा और दूसरा कोई ऐसे करने का प्रयत्न करेगा तो उसके विरुद्ध सुलेह की परिषद में मत दिये बिना रहेगा नहीं। सोशियालिस्टिक इटाली कहेगा कि परदेशोंका ऐसे तुकड़ा करना वह बड़ा पाप है। सिरिया में किंवा पॅलेस्टाइन प्रान्त में फ्रेंच किंवा अंग्रेजोंका सैन्य की हजरी में भी इटाली हरकत लेगा। क्षणभर के लिये ऐसी कल्पना करो कि कल सचमुच इटाली का राजा नष्ट हुआ और वहां सोशियालिस्टिक लोकशाही सत्ता स्थापित हो गई तो इटाली का अधिन का इजिप्ट की नजदीक में आया हुवा ट्यूनिस प्रान्त में सोसियालिस्टिक मतों का प्रसार हुवे बिना किस तरह से रहे? इजिप्ट में इस समय टंटा फिसादे की धूम मच रही है। ऐसा अवसर में नजदीक का ट्युनिस प्रान्त सोसियालिस्टीक बन जाय तो इजिप्ट में प्रचलित इंग्लंड की पुंजीवाले की संरक्षक सत्ता की कैसी अवस्था होगी? बाल्कन प्रदेश में आज ही सोशियालिझम बढ़ रहा है। इस परिस्थिति में नजदीक का इटाली की राज्यक्रान्ति का उदाहरण यदि बाल्कन प्रदेश की नजर में आवे तो, वहां का सोशियालिझम को कौन रूक सकेगा? इटाली क्या, सार्बिया क्या किंवा ग्रीस क्या, यह सब प्रदेश युरोप में कंगाल गिने जाते है। युरोपखण्ड का यह कंगालखाना है, और यहां के लोक मजूरी के लिये एशियामाइनर, और इजिप्ट का किनारे पर हरदम जाते आते है। पूर्व भूमध्य समुद्र पर के सब हमाल की इस कंगालखाने से भरती की जाती है। बंबई में जैसी कोकण पट्टी उसी तरह तुर्की का और इजिप्शियन का सब बडे बन्दरों के लिये यह कंगालखाना है। इटाली और ग्रीस यह दोनों देश में खुद का पोषण होने जितना अन्न नहीं है इस से सारा भूमध्य समुद्र में इन लोगों का फैलाव हो गया है। इस बड़ा कंगालखानेमें से यदि इटालि में सोशि-लिस्टीक तरह की राज्यक्रांति हो जाय तो यह राज्यक्रांति सारा पूर्व भूमध्य को बिना हलाये न रहेगी। अन्न सामग्री की दृष्टि से ग्रीस कंगाल, इटाली कंगाल और सार्बिया भी कंगाल। पूर्व भूमध्य समुद्र में तुर्की का एशियामाइनर प्रान्त सुसंपन्न और इजिप्ट का प्रान्त धनधान्य से भरा हुआ, किन्तु इस एशियामाइनर का और इजिप्ट का बन्दरो में आज इटालियन और ग्रीशियन कंगालखाने का बड़ा प्राबल्य है। युरोप भर में व्यापी हुई महागाई के कारन से इटालियन कंगालों की बड़ी कष्टमय स्थिति हो जाने से इटाली में बोल्शेविक मतों का प्रसार आज स्वाभाविकपन से हो गया है। बाल्कन प्रदेश, इटाली, स्पेन, पोर्तुगाल की लोकवस्ती सामान्यतः आचारहीन, गलीच्छ और दरिद्री है। इस प्रकार की मध्य युरोप और उत्तर युरोप की सामान्य मान्यता है। इंग्लंड, फ्रांस, जर्मनी और आस्ट्रिया, इतना युरोप का टापु सुसंस्कृत, शास्त्रज्ञ, स्वच्छ और आचार संपन्न है ऐसा महायुद्ध के पूर्व समझा जाता था। रशिया की गणना सुसंपन्न में थी तो भी रशिया को [illegible] में समझते थे। सारा दक्षिण युरोप को दरिद्री समझने में आता था और [illegible] है ऐसा समझ कर ऐंग्लो-फ्रेंच और आस्ट्रो-जर्मन लोग यह भूमध्य समुद्र का किनारे पर और [illegible] पूर्व भूमध्य समुद्र के किनारे में बसता हुआ लोगों [illegible] पूजा करते थे। महायुद्ध के पूर्व ऐंग्लो-फ्रेंच व आस्ट्रो-जर्मन लोगों की ही यह [illegible] में प्रविष्ट थी। [illegible] [illegible]

भूमध्य समुद्र का किनारे पर की सारी प्रजा ऊपर अपना श्रेष्ठत्व लगा। इस श्रेष्ठत्व में अग्रपूजा का मान के लिये तंटाफिसाद होकर ऐंग्लो फ्रेंच और आस्ट्रो-जर्मन इस दो पक्षों के हार्दिक पर्यवसान महायुद्ध में हुआ। ऐंग्लो-फ्रेंच और आस्ट्रो-जर्मन के विचार की सुसंस्कृति का भंडा महायुद्ध ने फोड़ दिया।

क्रान्ति के बाद लेनिन की बोल्शेविक सत्ताने मध्ययुरोप और युरोप की सभ्यता याने सुधारणा का खुल्लमखुल्ला धिक्कार और अपने को श्रेष्ठ कहलानेवाले धनिकों का, कत्तल से और गिरी से निःपात करने का आरम्भ किया। पुंजीवालाओं की रक्षा हमें नहीं चाहिये क्योंकि उससे श्रमजीवी लोक कायमका बन कर हमेश के लिये दबे जाते है, ऐसा लेनिन का तत्व मध्य युरोप और पश्चिम युरोप यह दोनों ने—आस्ट्रो-जर्मन व फ्रेंच मिल कर बोल्शेविकों का बिना उच्छेद किये युरोपियनों की महायुद्ध के पहले की तरह जगभर में टिकनी शक्य नहीं है। और दरिद्री रशिया में बोल्शेविकों की सत्ता स्थापित होगई। सत्ता का प्रचार दारिद्य का कारन से समानशील ऐसा भूमध्य स[illegible] में सब से पहले हो जाय यह स्वाभाविक है। महायुद्ध स्थगित जाने पर पड़ोशीपन के कारन से जर्मनी और आस्ट्रिया में बोल्शेविकों का कुछ प्रसार हुआ। किंतु वहां उसका बीज बहुत दृढ़ न हुआ बोल्शेविकों के लिये अनुकूल स्थान तो भूमध्य समुद्र का किनारे प[illegible] आया हुआ छिन्नभिन्न कंगाल खाना ही है। परन्तु महायुद्ध का सम[illegible] में यह कंगालखाना मित्रराज्यों का पक्ष में रहने से उस जगह बोल्शेविकों को अपना सिर उठाने में वर्ष से अधिक तर समय लगा। इटाली में अब बोल्शेविकों का बीज दृढ़ी भूत होने जाने से स्वाभ[illegible] प्रवाह के अनुसार इटाली में बोल्शेविक मतों का प्रसार होने ल[illegible] ऐसे कहना प्राप्त है। आगामी वसन्त ऋतु में मास्को का बोल्शे[illegible] लोगों का झरा जो ऐंग्लो-फ्रेंचों से न सुका दिया जाय तो सारा भू[illegible] समुद्र और दक्षिण युरोप को व्याप्त करके युरोपियन सुधारण[illegible] बोल्शेविकों का ग्रहण लगे बिना रहेगा नहीं। भूमध्य समुद्र का [illegible] बिंदु इटाली है। और बोल्शेविकों ने अब इस मध्यबिंदु को ही प[illegible] से समानशीलत्व का अनुकरण करके युरोप का यह प्रख्यात कं[illegible] खाना श्रीमन्तों के विरुद्ध उठे बिना रहेगा नहीं। दक्षिण युरोप कंगाल खाने में जैसा बोल्शेविकों का प्रसार हुआ है, उसी तरह हि[illegible] स्थान और कास्पियन समुद्र की बीच का मुसलमानी प्रदेश में और [illegible] साम्राज्य में बोल्शेविकों का पैर अब कुछ स्थिर हुआ है। मास्को से [illegible] लता हुआ बोल्शेविकों का प्रवाह ताशकंद समरकंदादि शहरो में व्या[illegible] कर अफगानिस्तान में आज जोर से घुसा है। और काबूल में [illegible] गानिस्थान के अमीर साहब खुद लेनिन का पदकमलों में से उत्प[illegible] इस नयी गंगा की पूजा अर्चा करने में अपनी धन्यता समझते है, [illegible] से मास्को की यह गंगा अटक की पास सिन्धुनद में समाविष्ट हो[illegible] की तैयारी में है। नवम्बर मास में मास्को में अफगान वकील ने [illegible] गानिस्थान और रशिया की बीच का मित्रता का और व्यापार [illegible] सुलहनामा पर जिस समय हस्ताक्षर किया उस समय मास्को [illegible] रशियनों ने और मुसलमानों ने मिलकर बड़ा भारी आनन्दोत्सव [illegible] उसी तरह नवम्बर का दूसरा सप्ताह में बोल्शेविक राज्यसत्ता [illegible] जयन्ती के दिन ताशकन्द शहर में मुसलमान लोगों ने [illegible] निकाल कर बोल्शेविकों का जयजयकार किया। रशिया की तरफ [illegible] इरान में रहनेवाला रशियन वकील बोल्शेविकों का मित्र हुआ है [illegible] ताशकन्द, काबूल व तेहरान यह मुसलमानी प्रदेश में मुसलमानों [illegible] और बोल्शेविकों का सख्य कराने का कार्य पर उसको नियत [illegible] गया है। यह वकील को हिन्दुस्थानी भाषा अच्छी आती है [illegible] हिन्दुस्थान और इरान के मुसलमानों में बोल्शेविक मतों का प्र[illegible] करने के काम में उपयोगी [illegible] करनेवाली [illegible] बनाने की [illegible] ताशकन्द में शुरू की गई है। इरान द्वारा [illegible] समुद्र और अफगानिस्तान के द्वारा पंजाब तक पहोंचने का [illegible] को का इस प्रयत्न को [illegible] देने के लिये [illegible] को [illegible] करने की सहाई का हिन्दुस्थान सरकार ने [illegible] किया है। और इसकी [illegible] शिराज बन्दर में से [illegible] बहती हुई [illegible] शिराज और तेहरान के बीच [illegible] [illegible] किया है। अफगानिस्तान के अमीर और हिन्दुस्थान सरकार [illegible] बोल्शेविकों का [illegible] बन गये है। [illegible]

मांगी, परन्तु फिनलैंड ने ऐसी मदद देने को इनकार किया। इससे फिनलैंड भी दोस्त सरकारों का परिध में से बहार गया है ऐसे कहने में भी हरकत नहीं है। फिनलैंड इस प्रकार मित्रराज्यों का परिध से निकल गया है। इस्थोनिया भी बहार गया और ल्युथेनिया इसी तरह बहार न हो जाय तो बोल्शेविकों का सैन्य इस्तोनिया प्रांत हस्तगत कर लेंगे ऐसा रंग है। रशिया में यदी बोलशेविक प्रबल हो जाय और उनका उच्छेद करने का प्रयत्न दोस्त सरकारों की ओर से छोड दिया जाय तो बोल्शेविकों का सैन्य से और बोल्शेविकों की हलचल से अपना संरक्षण कर लेने के लिये पोलैंड को जर्मनी से मित्रता करना आवश्यक है। जर्मनी इस तरह पोलैंड का मित्र हो जाने पर जर्मनी का वजन से पोलैंड में बोल्शेविक मतों की हलचल कुछ ठंडी हो सकती है। अंग्लों-फ्रेंचों की पोलैंड में की प्रतिष्ठा इस हलचल को दबा देने जैसे भारी नहीं हैं। पेट्रोग्राड और मास्को यह जगह बोल्शेविकों को प्रबल स्थिति में जींदा रखने में जर्मनों का बहोत कल्याण होने जैसे है। और गत बारह मास इस कल्याण को दृष्टि से ही जर्मनी बोल्शेविकों के साथ बर्ताव रखता है। जर्मनी की सरकार सोशियालिस्टिक मत की होने से बोल्शेविकों का मूर्खपन नष्ट हो कर उसकी जगह पर जर्मनी की शैली पर सोशियालिस्टिक सरकार स्थापित की जाय ऐसी जर्मनी की स्वाभाविक इच्छा है। लुटारों की म्हणी राज्यपद्धति रशिया में बहुत दिनों तक टिकनी शक्य नहीं है। यह आप ही आप जर्मन पद्धति पर जाने प्राप्त है। एंग्लों-फ्रेंच की पुंजीवालो की लोकशाही की पद्धति पर जा के रशिया ने हर हमेश जर्मनी की बराबर प्रतिस्पर्धि की तरह बरतना पड़े ऐसी स्थिति न आने पावे इससे रशियन बोलशेविको को सेनापति युडेनिख, सेनापति डेनिकिन और एडमिरल कोलचाक का तडाके से छुडाने का प्रयत्न जर्मनीने गत छे महिनो में पर्याय किया। डिसम्बर प्रारंभ में यह तीनो सेनापति के त्रास में से बोल्शेविक मुक्त हुआ है और रशियन बोलशेविको की आज की सत्ता किंवा आगे सोशियालिस्टिक स्वरूप में इस सत्ता का होने वाला रूपान्तर जर्मनीकी और मित्रता का संबंध से देखेगा इस में शक नहीं है। पुंजीवालो की लोकशाहीने अगले वर्ष में भगीरथ प्रयत्न कर के जो मास्को में बोल्शेविको की सत्ता तोड न दी तो रशिया का और एंग्लो फ्रेंचो का सख्य होने की आशा रखनी आगे का दश बीस वर्षतक व्यर्थ होगी। रशिया और एंग्लो-फ्रेंचो की दोस्ती कदाचित न हुई तो जर्मनी को सहज लाभ होगा। फिनलंड, इस्थोनिया, ल्युथोनिया और पोलंड इस छोटे छोटे देशो को व्यापार की बाबत में और उद्योग धंधा की बाबत में पडोशी का संबंध से जर्मनी की ही पर अवलंबित रहेना पडेगा। प्रचंड रशिया एंग्लो-फ्रेंचो की मैत्री से फूट जाने के कारण जर्मनी की बिना सहाय रशियन व्यापार और उद्योग धंधा बराबर चलते रहकर उन लोगों का संसार सुखमय होना संभवता नहीं है। नवम्बर के अंत मे और डिसम्बर के प्रारंभ में बोल्शेविको को मिला हुवा विजय से पहले के रशियन साम्राज्य एंग्लो फ्रेंचो की लगाम में से छुटकर जर्मनी की लगाम में फसने का मार्ग पर गया है। रशियन बाजु का जर्मनी का यह कारस्थान नवम्बर के अंत में इस प्रकार सध जाने से और युरोपखंड की घालमेल से अमेरिकाने अपना अंग निकाल लेनेसे जर्मनीने मित्रराज्यो की साथ जो तह किया है उसी के अनुसार वर्ताव करने का कार्यमें नवंम्बर के अंत से टंगल मंगल करना शरू किया है। सन्धि की यह कलम हमारे लिये बहुत जाचक है, यह कलम आपको शोभती नहीं है, तीसरी में ऐसा ऐसा फरक करना चाहिये, इस प्रकार का कितने ही खलीते जर्मनी की ओर से मित्र सरकार को आये। जर्मनो की यह उद्धताई बढ़ रही है ऐसे देखके मित्र राज्योने ह्राइन नदी का किनारेपर अपना सैन्यकी जबरजस्त तैयारी कर रक्खी और डिसम्बर की,७तारीख के रोजदोस्त सरकारोने जर्मनी को ऐसा फरमाया है की एक सप्ताह के बीच सन्धि की तमाम शर्ते व्यवहार में रखने के लिये जर्मनी राजी है इस प्रकार मित्रसरकारो की खात्री न होने पर अँग्लों-फ्रेंच सैन्य की बर्लिन पर चढ़ाई होगी। इस धमकी बताने का कारण से जर्मनी पुन. युद्ध के लिये तैयार हो जायगे इस प्रकार एक पक्ष का कहेना है। जर्मनी की पास में दशलक्ष सैन्य तैयार है। और गत दो मास में जर्मनी ने लड़ने के लिये गुप्त रीति से तैयारी कर रक्खी है। ऐसा यह पक्ष का कहेना है। विरुद्ध पक्ष में इंग्लैंड का मंत्रिमण्डल की ओर से मि० चर्चिल ने पार्लामेन्ट को ऐसा कहा है कि जर्मनी के आज करीब चार लक्ष से ज्यादा यह सैन्य नहीं है और पुलीस वगैरे की संख्या देढ़ लक्ष से ज्यादा नहीं है। जर्मनी का मनुष्यबल जो इस तरह पांच लक्ष से ज्यादा न होगे तो संधि की तमाम शर्ते व्यवहार में रखने की कबूलात कुछ बहस करके जर्मनी देगा इसमें कुछ शंका नहीं है।

साहित्य-समालोचन।

(१) संसार—(मासिक) सम्पादक पं० उदयनारायणजी बाजपेयी और बा० नारायण प्रसादजी अरोड़ा बी ए. वार्षिक मूल्य ३) रुपये। पृष्ठ संख्या सरस्वती साइज के ३६। आवरण पृष्ठ चिकना भावपूर्ण दुरंगा चित्रयुक्त। पता-मैनेजर संसार हटिया कानपूर।

जिस संसार के निकलने की कई दिनों से धूम थी, वह दीपावली के शुभ मुहूर्त पर कानपूर से प्रकाशित हो गया। प्रथमांक साधारणतः अच्छा निकला है। पत्र की नीति सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय प्रश्नों की चर्चा करना है। तदनुसार इस प्रथमांक में कई लेख बड़े मार्के के हुए हैं। गल्प, कवितादि सभी बढ़िया हैं। बाबू सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी का एक पुराना चित्र भी इसमें दिया गया है। संसार से हिन्दी जगत् को बहुत कुछ आशा है।

(२) स्वार्थ—(मासिक पत्र) सम्पादक पं० जीवन शंकर याज्ञिक एम ए एल एल. बी.। प्रकाशक-ज्ञानमण्डल कार्यालय गुरुधाम काशी। आकार मध्यम पृष्ठ संख्या ८८, कागज, छपाई, सफाई सब बढ़िया, वार्षिक मूल्य ४) रुपया। ६ मास के २॥) रुपये।

जब से काशी में बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त ने ज्ञानमण्डल की स्थापना की है, तभी से हिन्दी संसार को बहुत कुछ आशा बंध गई है। स्वार्थ पत्र इसी मण्डल की ओर से प्रकाशित हुआ है। वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य में इस प्रकार उच्च कोटि के पत्र का नितान्त [illegible] था, जो [illegible] से अर्थशास्त्र और सामाजिक प्रश्नों के साथ [illegible] राजनीति और देश के इतिहास की चर्चा करता हो। हमें यह [illegible] हर्ष होता है कि 'स्वार्थ' इस त्रुटि की पूर्ति अवश्य करेगा। इस अंक में [illegible] विषय हैं, जो हिन्दी के [illegible] लेखकों द्वारा लिखे गये हैं। पत्र के [illegible] गम्भीर विषयों के लेख इस अंक में हैं। पत्र की [illegible] है, इसी से इस [illegible] हिन्दी का [illegible] हो सकेगा। यद्यपि साम्प्रतिक हिन्दी साहित्य के वातावरण को देख (विशेष) आशा तो नहीं हो सकती, तथापि यदि 'स्वार्थ' के उपदेशों से जनता के मन की स्वार्थ वृत्ति जाग उठी तो अवश्य ही देश के दिन फिर जायँगे। इस शुभ प्रयत्न की सफलता के लिये हम ईश्वर से प्रार्थी हैं।

[illegible]

विषयों की भरमार अपने पत्र में क्यों कर दिया करते हैं। [illegible]

[illegible]

(४) संकल्प—यह साप्ताहिक पत्र विजयादशमी से नागपूर से निकलने लगा है। पत्र का उद्देश्य मध्य प्रदेश की राजकीय हलचलों पर प्रकाश डाल कर उनकी योग्य मीमांसा करना है। आरंभिक रंग ढंग साधारणतः ठीक ही है। डॉ० मुंजे साहब मध्यप्रदेश के [illegible] नेता हैं और आपकी ही आज्ञा से यह पत्र निकला है। वार्षिक मूल्य ३) रुपये। आकार बड़ा ४ पृष्ठ का है।

(५) केलेंडर—श्री दुर्गा [illegible], सदाशिव पेठ, पूना सिटी, [illegible] से हमें सन् १९२० का एक केलेंडर मिला है। केलेंडर [illegible] में श्री [illegible] की तीन रंग में छपी हुई तस्वीर मनमोहक है। [illegible] टिकट भेजने पर [illegible] की ओर से यह केलेंडर भेजा जाता है।

प्रेमकली।

स्वर्गीय पं. सत्यनारायण "कविरत्न"

गोपनीय रस रहै पुरातन प्रथा भली है।
याही सों अधखिली रही यह प्रेम कली है॥
(सत्यनारायण ११।८।६५ वि.)

अहा ! इन दो पंक्तियों में ही कैसा मधुर मिठास, प्रतिभा शक्ति का दिव्य विकास और प्रेम रस का पूर्ण आभास है। क्यों नहो; सरल, सुबोध ब्रजबानी में रचे काव्यों की यही तो विशेषता है। उसमें भी फिर कविरत्नजी जैसे उसके अनन्यभक्तों की रचना के विषय में तो हम अधिक कहही क्या सकते हैं। अस्तु, यह कली कैसी है, इसमें सुगन्ध और पराग है या नहीं, इसका मर्म तो काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ इसे पढ़ कर जानलेंगे। इन पंक्तियों का लेखक तो कविरत्नजीकी कविताओं का पाठ कर एक अनुपम आनंद का अनुभव करता है। परन्तु जिनकी कृपा से कविरत्नजी की भ्रमर दूत और यह प्रेम कली आप लोगों के सन्मुख उपस्थित की जा सकी है, उन "एक भारतीय हृदय" जी का भी अन्त करण पूर्वक आभार माने बिना वह नहीं रह सकता। आप ही के उस अविराम प्रयत्न का फल है कि, कविरत्नजी के काव्यामृत पिपासुओं की तृषा हृदयतरंग द्वारा निवृत्त हो गई। हमारा हार्दिक अनुरोध है कि कविरत्नजी की कविताओं का इस तरंग द्वारा घर २ प्रचार और मंगल पाठ हो। प्रेम कली के आरम्भ वाले १२ पद्य मनोरंजन (आरा) में निकले थे। पूरी कविता आजही निकली है। आशा है पाठक इसे प्रेम से पढ़ेंगे।

"सम्पादक"

मंजु मनोरम मधुर सरस सुठि रस-कुसुमाकर।
'प्रेम' सबद अति अद्भुत अमल अलौकिक आखर॥
करत रुचिर रचना विरचि जिनकी सुखकारी।
भये होंयगे अवसि परम कृतकृत्य सुखारी॥१॥
अगम अगाध अपार सबदमय पारावारा।
मनु मथि जग हित सुधा कलस विधि सदय निकारा॥
बसीकरन मुदभरन ओघ अघहरन सदा के।
अकथित अमित प्रभाव पूर्ण मनुमन्तर बाँके॥२॥
कै साहित्य रतन गरभा के उर उजियारे।
निरत जतन करि सुघरन दोऊ रतन निकारे॥
खरी खिली कै उर उपवन में अति अलबेली।
सुरभित सुखप्रद सरस चुभीली चारु चमेली॥३॥
किधौं प्रकाश प्रकास-धम्म को ललाम अविचल।
जगत उदधि मधि भ्रमत पोत-मन-बिसरामस्थल॥
कै ग्रीसम त्रयताप प्रबल परिताप नसावन।
ललित कलित कसमीर सैल सुखमा सरसावन॥४॥
किधौं भेद-पाषान-भेदि नित द्रवत सुधा कौ।
बहति हिलोरति बोरति सुरसरि हिय बसुधा कौ॥
जगत हृदय तरु विमल बढ़ावन किधौं निकाई।
ललकि लहलही ललित लता लोनी लिपटाई॥५॥
मिलति सतपुरा विछुरति विन्ध्याचल मधि सोहति।
नेह-निरमदा नदि निरमल चलिकै मन मोहति॥
भक्ति पंथ हरिभक्त मीन जीवन हित जीवन।
स्वांति बिन्दु कै बिरह बिथित जन पपियन पीवन॥६॥
किधौं बिस्व बनमाली लाहि उर लहरि रसाला।
प्रेम तार निरमयो गुहन मन सुमनतु माला॥
सतत अपरमित गुन-गन पूरित प्रेम प्रथायें।
सकत न जाको पाइ नेम परिमित गुन गायें॥७॥
रस रतनाकर प्रेम रतन मन जबहिं समाये।
बनत लाज कुल कान कांच करसों छिटकाये॥
मंजुल उर नभ होत प्रेममय मित्र प्रकासा।
बिलसत लखि भरि परत नियम खद्योत विनासा॥८॥
जा सन उत्तेजित ह्वै नर स्वधर्म अनुरागत।
नित स्वदेसहित प्रमुदित निज तन तृन सम त्यागत॥
उदाहरन बहु मिलत अनुकरन जोग करन के।
निरखहु नयन उघारि चरित घर घरन हरन के॥९॥
जा बस निरगुन निराकार अज अलख निरंजन।
बनत सगुन साकार करत निज जन मनरंजन॥
त्रिविध ताप बहु विथा भरयो जग लवन समुद सम।
तास उपर गत प्रेम मधुर जल अति अनूपम॥१०॥
हृदय पटल सों उमगि उमगि नित आपुहिं आपा।
परम प्रफुल्लित करत हरत भव-भय-सन्तापा॥
हरि-रति-रस सरबस जिनकी नस-नस में व्यापक।
सो, दुरमति गति लोपी गोपी प्रेमाध्यापक॥११॥
कोऊ बौरा कहत मगन मन प्रेमी जन कों।
अहो भाग्य जो लहत, प्रेममय बौरापन कों॥
आस पाइ परसाद लहत जीवन फल नीके।
चाखत अनुपम अमित स्वाद आनन्द अमी के॥१२॥
बरबस खैंचत जगत मनहिं जो नित सटकीलो।
जगत चित्त चुम्बक सनेह चुम्बक चटकीलो॥
अति करकस अति कठिन लोह मन कैसोउ दरसै।
सहजहिं सुबरन होत प्रेम पारस के परसै॥१३॥
होत न सोभा कतहुँ नेह सों सूने उर की।
स्वीकृत होइ न सनद कबहुँ जो बिना मुहर की॥
विविध भावना परिधि केन्द्र बस एक प्रेम है।
मिलत जहां सब आय निरत सुठि एक नेम है॥१४॥
त्रय तापित उर लह लहात नन्दन सम सुन्दर।
प्रकृति बसुमती जबै अधिवसत प्रेम पुरन्दर॥
निरत विचारन जोग रुचिर उपदेश यही उर।
परमेसुर मय प्रेम प्रेम मय नित परमेसुर॥१५॥
प्रकृति तामरस लसत विविध रस चलनि मनोहर।
पोरे अनुपम छवि धारत भरत जय प्रेम सरोवर॥
अस्तु सकल संसार पदारथ जे बहु दरसत।
वस्तु यही है जा सों मन मनकों आकरसत॥१६॥
त्रिभुवन पावन परम मंजु भावन सनेह रस।
विपुल भांति के धरत आमरन स्वभावना बस॥
करन कुल नय धारि आदि जिमि कपक जानो।
सब मैं सुबरन एक बरन मनहरन समानो॥१७॥
मनिमय दीपक दिव्य प्रभाकर परम सुहाई।
बरन बरन के कांच लेत पै निहि अपनाई॥
मन्द मन्द ज्यों बहत पवन पावन मलयज कन।
गहत सुबास कुवास परसि दल मंजु अमंजुल॥१८॥

काम नहीं-सो भी स्पष्ट है। तब यह रहस्य क्या है? इन्द्रिय विज्ञान शास्त्री हमें समझाते हैं कि; सारे शरीर में फैले हुए ज्ञानतन्तु के जाल में के एक प्रकार के तन्तु से ऐसा समाचार मस्तिष्क की ओर 'पहुँचता है' और दूसरे प्रकार के तंतु द्वारा हुक्म 'पहुँचता' है।

तार के द्वारा विद्युच्छक्ति से सन्देश पहुँचाना अथवा ज्ञान तन्तु के द्वारा इस प्रकार से समाचार किया हुक्म पहुँचाना, यह सब कुछ वस्तुओं की विवक्षित अवस्था के 'संक्रमण का रूप' ही है। रस्सी या डोर के उदाहरण से यह बात हमें स्पष्टतयः ज्ञात होसकेगी। एक गूंटी से रस्सी का एक सिरा बांध कर दूसरा अपने हाथ में रख जब हम उसे हिलाते हैं तो क्या होता है? हमारे हाथ की ओर से गूंटी तक सारी रस्सी ही नहीं चली जाती। परन्तु उस रस्सी की एक विवक्षितावस्था का एक सिरे से दूसरे सिरे तक 'संक्रमण' होता है। इसी को हम 'लहर' कहते हैं। तार यन्त्र के तार में अथवा ज्ञानतन्तुओं में इसी प्रकार की एक अवस्था का जो संक्रमण होता है उसका परिणाम मात्र ही समाचार का पहुँचना है। रस्सी के उदाहरण पर से 'अवस्था संक्रमण' की कल्पना करने में सहायता पहुँचती है; परन्तु उस पर से यह न समझ लेना चाहिये कि, *रस्सी की तरह तार या ज्ञानतन्तु हिलते* हैं। नहीं तो यह एक 'तीसराही तमाशा' होजावेगा!!

\+ + + +

जल लहरी

परन्तु लोग व्यवहारिक भाषा में भी 'लहर' शब्द का उपयोग करते हैं। इसका अर्थ क्या है उसे पहले से ही ठीक ठीक समझ लेना चाहिये। कि; जिससे भिन्न भिन्न स्थान पर उपयोग में लाया हुआ 'लहर' शब्द प्रत्येक बार के अर्थ में कितनी भिन्नता रखता है, इसका पता लग सकेगा। लहर शब्द का उपयोग पानी के ही सम्बन्ध में विशेष होता है। स्थिर अथवा प्रशान्त जल समूह में एक छोटासा कंकर डालने पर एक अजीब तमाशा देखने में आता है, यही नहीं वरन् उस पर से कई महत्व की बातें भी समझी जा सकती हैं। जिन लोगों को इन बातों की ओर ध्यान देने को अवकाश नहीं है-उन्हें अभागाही कहना चाहिये कि, जो वे इस काम को बच्चों का खेल बतलाते हैं। परन्तु इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा कि वह एक अपूर्व नैसर्गिक चमत्कार है। पानी में जिस स्थान पर कंकर डाला गया होगा उस बिन्दु के चारों ओर तत्काल ही 'ठीक २ पूर्ण कुण्डलियां' अथवा 'वर्तुलाकार' पानी की एक लहर उत्पन्न होकर वह धीरे २ किन्तु नियमित वेग से विस्तृत होती जाती है; और इसी बीच उस बिन्दु से अन्य दूसरी तथा तीसरी और फिर चौथी इस प्रकार लहरों की एक परम्परा उत्पन्न हो जाती है, और वे लहरें एक के बाद दूसरी के 'क्रम से, धीरे २' किन्तु 'नियमित वेग' से किनारे तक चली जाती हैं।

एकाकी लहर।

एक कंकर के बदले एक ही समय एक के बाद दूसरा कंकर थोड़ासा अन्तर रख कर डाला जायगा, तो भी वैसी ही परम्परा उत्पन्न होगी।

परन्तु मजा तो यह है कि; लहरें अपने उद्गम बिन्दु से बाहर वेगपूर्वक जो भी चली जाती दीख पड़ती है, तथापि यह एक 'दृष्टि भ्रम' ही है। क्योंकि हमें जो भी ऐसा जान पड़ता है कि कंकर डालने से जो जगह घिरती अथवा पानी में जो गड्ढा होता है, उतना पानी निकल कर बहता २ बाहर गिर पड़ता है। तथापि कंकर डालने के पूर्व यदि पानी पर कागज़ के छोटे २ टुकड़े अथवा लकड़ी के काटने पर निकले हुए भूसे के बारीक रेकण डालने पर वे पानी पर ऊपर नीचे मात्र ही होते रहते हैं, किन्तु अपने स्थान पर से क्योंकर वे आगे पीछे नहीं हटते?

इस पर से हमें ज्ञात हो जाता है कि यहां पानी कुछ आगे नहीं सरकता। उसकी 'एक अवस्था' मात्र ही सर्वत्र फैल रही है। जल की एक 'विवक्षितावस्था' के इस 'संक्रमण को ही' हम लहरें कहते हैं।

लहरों में जल का प्रत्येक बिन्दु लहरी के मार्ग में लंब रूप रहने-वाले सतह पर गोलाकार दिशाओं में चक्कर खाता हुआ पुनः अपने स्थान पर पहुँच कर उत्तरोत्तर स्थिर स्थावर हो जाता है। इस प्रकार सर्व जल कणों की हलचल एक ही ताल में होती जाने से 'जललहरी' नामक एक 'अद्भुत दृग्भ्रम' हमारे प्रत्यय में आता है।

—××—

नाद लहरी

'जल पदार्थ दुःसंकोच्य प्रवाही होने से 'अवस्था संक्रमण' का खेल प्रकार केवल पानी के पृष्ठभाग पर ही होता है, इसी कारण 'द्वि-परिमेय-' अर्थात् लम्बाई और चौड़ाई इन्हीं दो परिमेयों वाला है। नाद-लहरी भी इसी प्रकार का 'त्रि-परिमेय स्वरूप' है। ... वातावरण में उत्पन्न होती है। बन्दूक के फैर अथवा गाड़ी की ... किया इसी भांति का दूसरा कोई शब्द हमारे कान से आकर ... है और उसे हम सुनते हैं। ऐसे समय हमारे कान से कोई वस्तु ... कर टकराती है; यह हम कैसे समझें? बन्दूक के फैर अथवा ... की सीटी का शब्द झंझावात की तरह हमारे कान तक आता है, ... बात कदाचित् सभी की समझ में आसकी होगी। क्योंकि ... झंझावात की ही तरह यह शब्द हमारे कान तक आता; तो वह ... के झोंके की तरह हमारे कान से टकराता, किन्तु शब्द ऐसा कुछ ... नहीं पड़ता।

इस पर से गेंद की तरह अथवा पार्सल की भांति 'आवाज़' ... कुछ वस्तु है, वस्तुतः उसका स्वयमेवही स्थलान्तर अथवा संक्र... नहीं होना यह बात स्पष्ट ही है। तो फिर 'नाद अथवा आवाज़' ... क्या रहस्य? नाद अथवा आवाज भी तो वस्तु की विवक्षितावस्था ... संक्रमण का ही एक प्रकार है। यहां पर नादोत्पादक पदार्थ 'प्रेक्ष...' नाद सुननेवाला 'ग्राहक' और वातावरण तारयन्त्र के तारों अथ...
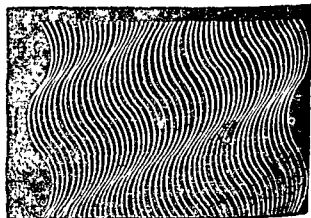
लहरियों की परम्परा। एक काले कागज़ की पट्टी में एक बारीक सी सीधी दराज या चीर काट कर तयार की जाय और उसके नीचे रख कर यह चित्र फुर्ती से खींच लिया जाय तो लहरों की गति दीख पड़ेगी।

ज्ञानतन्तु की भांति उस विवक्षित 'अवस्था' का वाहक—मध्यस्थ—पदार्थ हुआ।

किसी मजलिस वाले कमरे में सितार, सरंगी अथवा सारमण्डल की तरह नादोत्पादक पदार्थों से मानों एक दूसरे में के गर्भित नाद के सम-केन्द्र 'कवच-' छूटते हैं। कारण कि इस प्रकार के नादयन्त्र से निकलने-वाली ध्वनि ऊपर नीचे, आसपास और सब दिशाओं में समान अन्तर पर एक सी सुनाई पड़ती है। उन नाद कवचों में से एक कवच में वायु का सान्द्र अर्थात् गाढ़ा थर होता है और उससे आगे वाले थर में का वायु विरल होता है। अर्थात् नादोत्पादक पदार्थों से हमारे कर्णरन्ध्रों तक वायु की सान्द्रता और विरलता इन दो अवस्थाओं का जो संक्र-मण होता है; उसी के द्वारा हमें 'नाद लहरी' का भान होता है। नाद लहरी में वायु के कणों का उद्गम बिन्दु से सर्वत्र अंशुमान से सरल रेखा में क्रम २ से सान्द्रीभवन और विरली भवन होता जाता है।

—××—

अब ऊष्णता, प्रकाश और विद्युत् इनकी लहरियों का वर्णन करने से पूर्व; इन लहरियों की गती का भान प्रत्यक्ष करा देने की युक्ति बत-लाई जाती है।

उपरोक्त दो चित्र काले कागज पर बनाइये। इसके बाद एक मोटे कागज की पट्टी में एक सरल दराज (चीर) काट कर निका-लिये। अब ऊपर दी हुई आकृतियों पर से यह पट्टी फुर्ती से नीचे को फिरादें, अथवा पट्टी के नीचे से यह आकृति शीघ्रता से खींच ली जाय तो नादलहरी का अच्छी तरह भान हो सकता है। एक बार सब रेखाएँ बिलकुल एक दूसरी के पास आ जाती हैं—यही वायु का सान्द्रीभवन है। और इसके बाद वे रेखाएँ दूर २ हो जाती हैं—यही वायु का विरलीभवन है। नादलहरी में वायु के कण एक ही रेखा में आगे पीछे हलचल करते रहते हैं। जल लहरी के जल बिन्दु की तरह वर्तुलाकार मार्ग से ऊपर नीचे नहीं आते।

(अपूर्ण)

श्रम जो निज कर्तव्य धार मुद मंगल देनी।
जब सनेह सरसुती मिलत तब बहत त्रिवेनी॥
यही कसौटी विश्व माँहि जन मनहिं कसन की।
यह ही साँची वस्तु आत्मबल दैन असन की ॥५०॥
जगत मनहिं बांधन हित यह ही नरम शृङ्खला।
यही मदन-मोहन मोहन की सोहन सु-कला॥
यह आकरसनि सकति भगति जो कोऊ धारै।
निज नैनन सों स्वयं ब्रह्मपद पदम निहारै ॥५१॥
रस सरसावत छवि दरसावत हिय हरसावत।
बर विनोद बरसावत प्रियतम पद परसावत॥
सुलभ सफलता द्वार देस सेवक गुनियनि कौं।
सुधाधार साहित्य मधुवृत्त सत कवियनि कौं ॥५२॥
विरह ताप संतापित जन कौं सुखद रसायन।
हारे मन कौं सहस बाहु साहस वर दायन॥
अटल मुक्ति सोपान मोक्ष के अभिलासी कौं।
अभिमत सुफल प्रदान जनम के हत आसी कौं ॥५३॥
मुनियनि कौं पद पद सुखप्रद वर बिसद बिरागा।
हरि जन षटपद को श्रीपति पद पदम परागा॥
अगम अनिरबचनीय परै जा सौं कछु बसना।
बरनत रस रमनीय रहत रसना मैं रस ना ॥५४॥
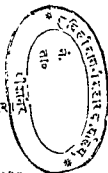
अचला अवसि रतन गर्भा बसुमती सुहावति।
किन्तु प्रेम रस रती धारि यह 'रसा' कहावति॥
प्रीति रहस रस रीति जगत जो उर न भरैगी।
तरसावत मन रसा रसातल गवन करैगी ॥५५॥
सहज नहीं कछु काज नेह जलनिधि अवगाहन।
थाह लै न जो गये मिली जग तिन की थाह न॥
जड़ जङ्गम जग जीव जाहि निजनिज उर जानत।
एक यही आचरज सकत नहिं ताहि बखानत ॥५६॥
जानत सब कुछ प्रेम-स्वाद मुख बरनि न आयत।
यदपि परम वाचाल मूक बनि भाव जानवत॥
विद्या बस तत्वनि के भेद प्रभेद बताये।
गूंगे को गुर खाय जगत बैठ्यो सिरनाये ॥५७॥
देखहु दै मन करि उमंग उपदेस असेसनि।
मनन करहु विद्वान-विपुल-उज्ज्वल उपदेसनि॥
उलटा पलटी करहु निखिल जग की सब भाषा।
मिलहि न परि कहूँ एक प्रेम पूरी परिभाषा ॥५८॥
स्वयं सिखाय न सकै सारदा या की पाटी।
परम बिलच्छन स्वच्छ प्रेम पूरित परिपाटी॥
गोपनीय रस रहै पुरातन प्रथा भली है।
या ही सों अधखिली रही यह 'प्रेम कली' है ॥५९॥

सम्माननीयों का अभिनन्दन।

कुमारी हंसा मेहता।

आप बड़ौदा के वर्तमान दीवान मि० मनुभाई साहब की पुत्री हैं। आप बंबई विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट हैं, आप अंग्रेजी एक्सेलसियर नामक मासिक पत्र चला रही हैं। स्टूडेंट फेडरेशन की बड़ौदा शाखा की आप सभानेत्री हैं। इस मास के बड़ौदा वाले बम्बई यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट्स सोशल गैदरिंग का कार्य सुचारु रूप से सम्पादन कराने में आपने बड़ा परिश्रम किया है। ता० २२ सितम्बर को आप विशेष शिक्षा प्राप्ति के निमित्त सिटी ऑफ [illegible] जहाज से विलायत को प्रस्थानित हुई हैं। हम ईश्वर से आप की सफलता के लिये मंगल कामना करते हैं।

रा० सा० श्री० पी० बापूराव।

दक्षिण देश के कोल्हापुर राज्य में आपका जन्म हुआ। आप के पिता एक प्रसिद्ध वकील थे। आप की प्रारम्भिक शिक्षा कोल्हापुर में ही हुई। सन १८८१ में मेट्रिक होजाने पर आप बंबई के विल्सन कालेज में भर्ती हुए। सन १८८४ में आप बी० ए० होगये। इसके बाद आपने [illegible] में नौकरी करने के साथही १८८६ में एल-एल० बी० परीक्षा पास की और हाईकोर्ट में वकालत करने लगे। तदनंतर आप रतलाम के मुख्य न्यायाधीश बनाये गये, वहीं सन १९१२ में आप दीवान नियुक्त हुए। इसके बाद [illegible] राज्य में भी आपने कई वर्ष उच्च पद पर काम किया, और अब आप इंदौर राज्य के दीवान बनाये गये हैं। ईश्वर आपकी दिनों दिन उन्नति करे। यही हमारी मंगल कामना है।

मि० कान्तिचन्द्र मेहता।

आप बड़ौदा राज्य के वर्तमान दीवान मि० मनुभाई साहब के सुपुत्र और कुमारी हंसा मेहता के कनिष्ठ बन्धु हैं, यहां का शिक्षाक्रम समाप्त कर चुके, और अपनी भगिनी के साथही आप भी ता० २२ सितम्बर को सिटी ऑफ [illegible] जहाज से विलायत को प्रस्थानित हुए हैं। वहां आप आई० सी० एस० की शिक्षा प्राप्त करेंगे, और हमें आशा है कि, आप विलायत पहुँच कर यथोचित शिक्षा सम्पादन करते हुए अपने सम्बन्धी मित्रों की कीर्ति में वृद्धि करेंगे। ईश्वर आप की आशा सफल करे।

पुरस्कार क्या चाहती हो?"

दामिनी—मैंने अपना कर्तव्य पालन किया है, इसमें पुरस्कार क्या? बस तुम से यही निवेदन है कि, इस घर को भूल नहीं जाना?

माधव—इस घर को अब क्या भूलूँगा और न तुम्हारी सेवा ही भूल सकता हूँ, कहो क्या चाहिये?

दामिनी—"आवश्यकता पड़ने पर पुरस्कार माँग लूँगी।"

× × × ×

माधव प्रसाद और लोचन प्रसाद, प्रेसिडेन्सी कालेज कलकत्ता के एम० ए० क्लास के छात्र हैं। अब कालेज के बोर्डिंग में ही रहते हैं। माधव का खर्च भी केशव बाबू देते हैं। दोनों ने साथही रह कर सात वर्षों से शिक्षा पायी है। माधव प्रसाद, लोचन प्रसाद से कुशाग्र बुद्धि वाला था,लेकिन लोचन के परिश्रम के सामने माधव ठहर नहीं सकता था।

एम० ए० की परीक्षा देकर माधव प्रसाद अपने गाँव रामपुर में थे और लोचन अपने गाँव धीरपुर में। माधव प्रसाद की वृद्धा जननी अपने पुत्र के आने से बड़ी प्रसन्न रहा करती थी। कई प्रकार से माधव के लिये अच्छा भोजन बना २ कर दिन में चार २ पांच २ बार भोजन कराती। माधव माता की आज्ञा टाल नहीं सकता, कुछन कुछ हर बार भोजन करही लेता था। रात को वह माधव का पैर दबाने की चेष्टा करती लेकिन माधव ऐसा नहीं करने देता, और कहता "माता ऐसा कार्य न करो जिससे हम को कष्ट हो।"

माधव, दिन को भोजन करके कमरे में लेटे २ 'सर्चलायट' का सम्पादकीय स्तम्भ देख रहे थे, कि डाकिये ने माधव बाबू! कह कर पुकारा, माधव ने नौकर को भेजकर डाक की चिट्ठी मँगवायी, सिर्फ दो हरे और लाल रंग के लिफाफे थे, पर ये दोनोंही धीरपुर के, हस्ताक्षर देखने से पता लगा कि एक 'दामिनी' का और दूसरा लोचन का है। माधव ने पहले 'दामिनी' का पत्र खोला और बड़े प्रेम से कईबार पढ़ा, हरबार कुछ न कुछ प्रेम की मात्रा बढ़ती ही दिखायी पड़ती थी। दामिनी की लेखन शैली देख कर माधव गद्गद् होगया। लोचन का पत्र पढ़कर माधव ने माता को बुलाया। वृद्धा दौड़ी हुई माधव के पास आयी।

माधव—माता, कल सवेरे की गाड़ी से लोचन प्रसाद यहाँ आवेंगे।

वृद्धा—"कौन लोचन प्रसाद," बेटा!

माधव—वही, मेरे मित्र।

वृद्धा—"आनन्दित होकर अच्छी बात है बेटा," मैं भी उनको देखना चाहती हूँ। पर मुझ गरीब के घर में तो उनको बड़ी तकलीफ होगी बेटा। वे तो जमीन्दार के लड़के हैं।

माधव—"सो तो होगी, लेकिन वे इसको दुख नहीं समझेंगे। क्योंकि मुझ पर उनकी बड़ी दया रहती है। पर तोभी भोजनादि की चीजें कुछ विशेषता से बनानी चाहिये।"

वृद्धा ने इधर उधर से कई चीजों को जुटा लिया। यों तो पहले ही से वह बहुतसी चीजें अपने भोजन के पैसों से बचा २ कर माधव के लिये रख चुकी थी।

—+ + +—

सवेरे की गाड़ी से लोचनप्रसाद माधव के घर आये। लोचन ने वृद्धा को चरण छूकर प्रणाम किया, माधव के सत्कार से लोचन उतना प्रसन्न नहीं हुआ, क्योंकि वह समझता था कि यह सब दूसरे के लिये करना चाहिये, जिससे कुछ अन्तर नहीं उसके साथ बाहरी आडम्बर की क्या आवश्यकता। उसने माधव को साफ शब्दों में कहा-"भाई इतना तूल कलाम करने की क्या आवश्यकता! मुझ में और तुम में अन्तर ही क्या है! हम लोग तो वर्षों से एकही पत्तल के खाने वाले हैं। फिर यह सब तो हुआ अब धीरपुर चलो, 'बाबूजी ने तुम को बुलाया है।'

माधव—"कल बारह बजे की गाड़ी से चलना।"

किसी आवश्यक कार्य के लिये गाँव के किसी व्यक्ति ने माधव को अपने घर बुलाया था। माधव, लोचन को अपनी माता के निकट छोड़ कर उस व्यक्ति के घर गया। वृद्धा ने लोचन से समय पाकर कहा-"बेटा तुम अपने बाबू से कहो कि अब माधव का विवाह करादें। मैं तो थोड़े दिन की मेहमान हूँ। बहू को अपनी आँखों देख कर मरती तो दुख नहीं होता"।

लोचन—माताजी, अब माधव का विवाह ठीक होजायगा। बाबूजी ने एक अच्छे कुल की सुशील लड़की ठीक कर रक्खी है। मैं सिर्फ आप से अनुमति लेने आया हूँ। आज्ञा हो तो 'माधव' को साथही लेता जाऊँ और विवाह करा पुनः पुत्र-वधू के साथ सेवा में उपस्थित होऊँगा।

वृद्धा का हृदय हर्ष से फूल गया, बोली, "माधव तो तुम्हारा भाई है, मुझ से पूछने की क्या आवश्यकता? जब जी चाहे उसे ले जाओ, लेकिन देखना लड़की अच्छी हो।

—× + ×—

लोचन के साथ माधवप्रसाद धीरपुर आये। यहाँ पहले ही से तैयारियाँ होरही थी। दूसरे दिन दामिनी के साथ माधव का शुभ विवाह होगया। दयामयी की अभिलाषा पूर्ण हुई, केशव बाबू को कन्यादान से अपार आनन्द हुआ। लोचन भी कृतकार्य हुआ। दामिनी ने अपना "पुरस्कार" पाया।

—× × ×—

ठीक समय परीक्षा फल निकल गया। बाबू माधवप्रसाद और लोचनप्रसाद ने प्रथम श्रेणी के एम०ए०की डिग्री (प्रथम श्रेणी) पायी। दोनों का नाम कोष्ट के अन्दर था। लोचन का विवाह उसी वर्ष पटने के वकील बाबू जगन्नाथप्रसाद की कन्या "भानुमति" से हुआ। भानुमति ने पिता के घर में अच्छी शिक्षा पायी थी। वह गृहकार्यों में बड़ी दक्षा थी, कला कौशलों में कुशल थी, धर्मग्रन्थों की पण्डिता थी। लोचनप्रसाद सर्व गुण सम्पन्ना पत्नी पाकर बहुत हर्षित रहते थे।

माधव की वृद्धा जननी दामिनी के व्यवहार से बहुत प्रसन्न रहती थी। माधवप्रसाद कलकत्ते के प्रेसिडेन्सी कालेज में गणित के अध्यापक थे, और लोचन स्कोर कालेज में तर्कशास्त्र का अध्यापक था। दोनों का डेरा साथही था, दामिनी और भानुमति भी वहीं रहती थी। समय पाकर दामिनी ने अपनी भाभी से अपने 'पुरस्कार' की बातें कह दी।

—+ × +—

दिन के दस बजे लोचनप्रसाद तथा माधवप्रसाद भोजन कर रहे थे, भानुमति निकट में बैठ कर पंखा झल रही थी।

माधवप्रसाद ने भानुमति से कहा—"हम लोगों के लिये तुम को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है।"

लोचन—"पंखा झलने में भी कहीं कष्ट होता है?"

माधव—"अवश्य कष्ट होता होगा"—

भानुमति—तो इसका मुझे कुछ पुरस्कार भी मिलेगा, माधव बाबू?

माधव—"किससे पुरस्कार चाहती हो?"

भानुमति—"जिसके लिये कष्ट उठाती हूँ"

माधव—वह अवश्य पुरस्कार देगा।

भानुमति—एक को और भी वादा किया था।

माधव—किसको?

भानुमति—"स्मरण करो, किसको।"

माधव—'मुझे तो स्मरण नहीं है।'

भानुमति—"स्मरण होजायगा।"

भोजनोपरान्त लोचनप्रसाद कुछ पहले कालेज चले गये, क्योंकि उन्हें साढ़ेग्यारह बजे कार्य करना पड़ता था, लेकिन माधव बाबू अपने कमरे में लेटे हुए थे, उनको एक बजे कालेज में व्याख्यान देना होता था। पान का बीड़ा लिये दामिनी आयी और उसके साथही भानुमति भी आयी।

भानुमति—क्या अब भी स्मरण हुआ कि "किस को 'पुरस्कार' देने का वचन दिया था!"

माधवप्रसाद को अपनी पूर्व की बात स्मरण हुई। 'दामिनी' को देख कर हँस पड़े और भानुमति से बोले-"हाँ अब स्मरण हुआ। बोलो तुम लोग क्या चाहती हो?

दामिनी—मुझे ईश्वर ने 'पुरस्कार' दे दिया अब उसकी आवश्यकता नहीं, अब 'भानु' को चाहिये।

भानु—पहले तुम तो पुरस्कार पालो पीछे मेरे लिये चिन्ता करना।

माधव—'भानु' क्या चाहती है?

भानु—"यही कि दामिनी को 'पुरस्कार' मिल जाय। तुम लोगों के बाहर जाने से हम लोग 'दामिनी' के पाये हुए पुरस्कार से जी बहलाया करेंगे"

दामिनी, भानुमति से हाथ छुड़ा कर बाहर निकल पड़ी। माधव हँसने लगे, भानुमति भी हँस पड़ी।

पुरस्कार !

(ले०—श्री० " विमल " ।)

इस वर्ष के दुर्गापूजावकाश को माधवप्रसादने अपने प्रिय मित्र लोचनप्रसाद के साथही वीरपुर में बिताया। मित्र के साथ आमोद प्रमोद में चालीस दिवस का लम्बा अवकाश भी जाते देर नहीं लगी। देखते ही देखते कालेज खुलने का समय आगया। शाम का वायु सेवन कर मित्र-द्वय लौट आये थे। बाहर के बैठक खाने में एक आराम चेयर पर माधवप्रसाद बैठे सिगार मुँह में लिये एकाग्र चित्त से धुआँ फक २ उड़ा रहे थे, लोचनप्रसाद भीतर कमरे में न मालूम क्या उलट पुलट कर रहे थे। लोचनप्रसाद के पूज्य पिता श्रीबाबू केशव प्रसादजी को बैठकखाने की ओर आता देख माधव प्रसाद चट-पट चेयर से उठ खड़े हुए और मुँह में के सिगार को उनकी आँख बचा कर फेंक दिया।

केशवप्रसाद—माधव, अब कालेज खुलने को कितने दिन शेष है?

माधव—कुल पाँच ही दिन।

केशव—कब चलने का विचार है?

माधव—आजही रात की गाड़ी से।

केशव—इतना पहले ही क्यों?

माधव—दो दिन की देर तो मुझे घर जाने में लग जायगी। और एक दिन मार्ग में। दो दिन पहले ही जाना अच्छा है, क्योंकि दूसरा मकान किराये का ढूँढना होगा।

केशवप्र०—क्यों, जिस मकान में तुम लोग रहते थे, अब उसमें नहीं रहोगे?

माधव—उसमें नहीं रहने का विचार है, क्योंकि कालेज बहुत दूर पड़ता है, प्रति दिन कुछ विलम्ब से कालेज पहुँचते हैं।

केशवप्र०—कालेज के छात्रालय में क्यों नहीं रहते? वहाँ तो सब प्रकार से आराम होगा।

माधव—और सब तो ठीक है, पर खर्च बहुत अधिक लगता है, उतना खर्च भी नहीं हो सकता है, तथा और भी कई कठिनाइयाँ हैं।

केशवप्र०—अब परीक्षा के दिन निकट हैं कालेज के छात्रालय में ही रहना अच्छा है, खर्च की चिन्ता न करो।

लोचन प्रसाद भीतर कमरे से चुपचाप अपने पूज्य पिताजी तथा माधव की बातें सुन रहा था। अब परीक्षा निकट है, कालेज के छात्रालय में ही रहना अच्छा है, खर्च की चिन्ता न करो"। इसका समर्थन लोचन प्रसाद ने भी कमरे के भीतर से ही किया। हाँ बाबूजी, मेरा विचार भी यही है

माधव—विचार तो मेरा भी है लेकिन कोरा विचार किस काम का? मेरे लिये तो असम्भव है।

केशव प्र०—तुम को घर से कितना खर्च मिलता है?

केशव बाबू के इस प्रश्न का उत्तर माधव के बदले लोचन प्रसाद ने इस प्रकार दिया। "इनको घर से खर्च आने के बदले घर को ही माता के लिये दस रु० मासिक देना पड़ता है। आज डेढ़ वर्ष हुआ इनके पूज्य पिताजी स्वर्गीय होगये। उन्होंने अपनी कुल सम्पत्ति इनको बी. ए. तक पढ़ाने में लगादी। वृद्धा माता के अतिरिक्त इनके परिवार में कोई नहीं है"।

केशव प्रसाद—खर्च कहाँ से आता है?

लोचन—प्राइवेट ट्यूशन करके पढ़ते हैं और घर भी भेजते हैं।

केशव प्रसाद—छात्रावास (बोर्डिंग) में रहने से अधिकाधिक कितना खर्च होगा?

लोचन—सब लेकर ३० पचास रुपये मासिक?

केशवप्र०—तुम लोगों की परीक्षा कब होगी?

लोचन—चलते मार्च के अन्त।

केशवप्र०—परीक्षा के दिन निकट हैं, अब तुम लोगों को छात्रालय में रहना अच्छा होगा। मैं किसी प्रकार [illegible] [illegible] ... [illegible] खर्च भी दूँगा। बस, छात्रालय में ही रहो [illegible] [illegible]।

[illegible] माधव प्रसाद के [illegible] [illegible]।

— • • —

[illegible]

वर्षती ही। प्रकृति पर नीरवता का साम्राज्य छाया सा होता है। लोग निद्रादेवी की उपासना में लगे हुए हैं। [illegible] बाबू के घर की अवस्था कुछ और ही होगई है। कमरे में [illegible] प्रकाश होरहा है, चारपाई पर एक नव युवक लेटा हुआ है। [illegible] पैताने म्लान मुँह बैठा है। लोचन की माता हाथ में औषधि लिये खड़ी है, केशव बाबू माधव प्रसाद को औषधि पिलाने के लिये उठा रहे हैं। लोचन की अनुजा 'दामिनी' पिता के पास खड़ी माधव की ओर देख रही है। माधव ज्ञान शून्य हो भूल में बक रहा है। हाथ पैर ठंडे पड़ गये हैं, उल्टी और दस्त बराबर हो रहे हैं। दर्वाजे पर गाड़ी की घर घराहट सुना पड़ी। केशव बाबू ने लोचन से कहा देखो लोचन, डाक्टर साहब आये होंगे, शीघ्र ले आओ।

लोचन ने बाहर जाकर देखा, डाक्टर साहब की गाड़ी आ लगी थी। श्याम सुन्दर (लोचन प्रसाद का अनुचर) हाथ में डाक्टर साहब का बेग लिये खड़ा है। लोचन प्रसाद ने डाक्टर साहब का अभिवादन किया।

डाक्टर साहब—"क्या है लोचन बाबू, कौन बीमार है"?

लोचन—मेरे प्रिय मित्र बाबू माधव प्रसाद, आज आठ बजे रात से।

डाक्टर साहब—"क्या हुआ है"?

लोचन—"उलटी और दस्त होते हैं"।

डाक्टर—"चिन्ता नहीं शीघ्र अच्छे हो जायँगे"।

डाक्टर साहब के साथ लोचन ने माधव के कमरे में प्रवेश किया। लोचन की माता बगल के दूसरे कमरे में चली गई। डाक्टर साहब ने रोगी को देख कर, केशव बाबू से कहा, "आप घबड़ा क्यों गये हैं! मैं शीघ्र इसको भला चंगा कर दूँगा।"

केशव बाबू के शरीर में प्राण लौट आया। काली बाबू, "आप इसे आराम करदें, मैं बड़ा उपकार मानूँगा।"

डाक्टर सा०—चिन्ता नहीं, आराम कर दूँगा।

डा० ने श्यामा के हाथ से बेग लेकर, उसमें से तरल औषध की एक छोटी शीशी निकल कर उसे जल में मिला माधव को पिला दिया और वह शीशी केशव बाबू के हाथ में देकर कहा, "घण्टे में दो २ बार इसे पिला दिया करें, भोर तक बिलकुल अच्छा होजायगा।"

केशव बाबू—"क्या आप दो घण्ट के लिये कष्ट नहीं करेंगे?"

डाक्टर साहब—'अब मेरी आवश्यकता नहीं है, ऐसा, ही होगा तो कल और एक बार देख जाऊँगा।'

केशव बाबू ने दश २ रुपये के दो नोट डाक्टर साहब को नज़र किये और श्यामा को एक रुपया गाड़ीवान को देने कह कर डाक्टर साहब को विदा किया।

थोड़ी देर के बाद उल्टी और दस्त बन्द हुए, बदन में गर्मी आने लगी रोगी को नींद आगयी। लोचन और केशव बाबू भी अपने २ कमरे में आराम करने गये। माधव के निकट लोचन की माता दूसरी चारपायी पर लेट रही, दामिनी अपनी माता के साथ ही थी। दामिनी की माता तो सोगयीं लेकिन 'दामिनी' को नींद कहाँ? तमाम रात जगती ही रही, उठ कर माधव के निकट आती, और उसका बदन छूती। पुनः लौट कर माता की चारपायी पर लेटकर कुछ सोचती।

—+ + —

पाँचवें दिन माधव को पथ्य मिला। केशव बाबू को पूर्ण शांति मिली। [illegible] की बारह बजेवाली गाड़ी से माधव प्रसाद मित्र के साथ [illegible] [illegible] आने को थे। [illegible] [illegible] [illegible] ग्राम को ही [illegible] [illegible] [illegible] होगयी थी। [illegible] माधव, लोचन प्रसाद के [illegible] उनकी माता दयामयी से कलकत्ते जाने की आज्ञा [illegible] गये। [illegible] [illegible] [illegible] दयामयी ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देकर [illegible] [illegible] [illegible]। माधव ने लोचन की माता के [illegible] [illegible] [illegible] से प्रणाम किया, दयामयी ने प्रेम से माधव को उठा कर [illegible] दिया। दामिनी माता के निकट ही खड़ी थी। माधव के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो गई, [illegible] [illegible] [illegible] माधव को [illegible] [illegible] लेकिन माधव के [illegible] और किसी ने इसको [illegible] नहीं देखा। माधव ने लोचन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अन्दर में कहा—"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

स्वराज्य की लढ़त

(लेखकः—श्रीयुत दामोदर विश्वनाथ गोखले बी. ए. एल-एल. बी.)

ष्ट्रीय सभा, मुस्लिम लीग, और भिन्न २ स्वराज्य संघों की ओर से विलायत को जो २ नेता लोग गये हुए हैं, वे विलायत की जनता के सन्मुख अपनी दीन स्थिति का हृदय द्रावक वर्णन करके स्वराज्य दान की भीख मांग रहे हैं, इस प्रकार की एक अज्ञान फैलानेवाली अफवाह लोगों में उड रही है। परन्तु वहां गये हुए नेताओं की संयुक्त कमेटी के सन्मुख दी हुई गवाहियाँ, उनके लेखों उत्तर, भिन्न२ स्थानों में होते हुए उनके सार्वजनिक, व्यख्यान इन सब पर ध्यान देकर विचार करने से उपरोक्त भ्रम पूर्ण किंवदन्ती के लिये कहीं भी स्थान नहीं रह सकता है। युद्ध की ओर मुँह करते ही सेनापति और उसकी सेना के लिये अपने कर्तव्य ज्ञान, बलाबल और कार्योपयोगी साधनों का पूर्ण परिचय होना अत्यन्त आवश्यक होता है, और इस विषय में सेना तथा सेनापति के बीच मतभेद होना युक्ति युक्त नहीं माना जाता। राजकीय लढ़त में भी यह नियम लागू होता है। विशेषतः राष्ट्र के मानापमान के लिये जो २ बातें विशेष चिन्तनीय होती हैं, उनके विषय में मतभेद होना ठीक नहीं। हमारे राजकीय नेता विलायत में जाकर स्वराज्य मांग रहे हैं, यह बात ठीक है। परन्तु यह मांग वे भिखारी बनकर नहीं कर रहे हैं, बल्कि समानता के नाते, और देन लेन की बुद्धि से तथा दो राष्ट्रों के बीच मुसद्दी लोग जिस स्वाभिमान के साथ करार मदार निश्चित करते हैं उसी स्वाभिमान से प्रेरित होकर हमारे देश को इतने अधिकार मिलना ही चाहिये, इस प्रकार के आह्वान पूर्वक स्पष्ट रूप से बजा रहे हैं। तल्वार के जोर पर अंग्रेजोंने भारत को जीता यह बात जो भी ठीक है, और इस बात का दोनों दलों को पूर्ण ज्ञान भी है। किन्तु साथ ही उस तल्वार में तीन चतुर्थांश भाग हिंदुस्तानी और शेष भाग अंग्रेजी था, यह बात भी अभी लोग भूले नहीं हैं। इसी प्रकार तल्वार के जोर पर जीते हुए प्रदेश की रक्षा भी तल्वार के द्वारा ही करना पड़ती है; और यह बात इस सुधारणावाली बीसवीं शताब्दि में हो सकना सर्वथा अशक्य है। क्योंकि केवल रणभूमि प्रदत्त निर्णय न हो सकने से उसपर अवलम्बित नहीं रहा जा सकता, इस प्रकार सर्व साधारण का अनुभव है। इस भांति उभय पक्ष में मुख्य तत्व सम्बन्धी एक वाक्यता होने के कारण तात्विक दृष्टि से भी दाता और भिखारि का सम्बन्ध नहीं लग सकता। नौकरशाही के सम्प्रदाय में *अलबत्ता तल्वार के सामर्थ्य पर विश्वास रखनाही चाहिये,* और बेलगामी कारोबार ही राज्य-व्यवस्था चलाने का राजमार्ग है ऐसा कहने वाले हरी के लाल भी इस देश में मौजूद हैं, किन्तु अब उनकी संख्या दिनों २ दिन कम होती जाकर क्रमशः उनका उन्मूल भी होजाने के लक्षण दीख पड़ते हैं। इस समूह के व्यक्तियों के उत्पन्न किये हुए भ्रम का उच्छेद करने के लिये भारत और इंग्लैण्ड में प्रयत्न होरहा है।

भीख माँगने से राज्य नहीं मिलता।

यह बात जिस प्रकार सत्य और यथार्थ है, उसी भांति केवल मनमानी हुकूमत और मालिक तथा गुलाम के नाते चलाये जानेवाले राज्य टिकने भी नहीं, इसका परिचय विलायत की जनता को स्पष्ट रूप से करादेने का ही काम भारतीय नेता मुख्य रूप से कर रहे हैं। 'लोकमान्य तिलक' ने अपने विलायत के सभी व्याख्यानों में भारत को स्वराज्य के अधिकार देने में इंग्लैण्ड स्वतः का ही स्वार्थ साधन कर रहा है, इस बात को स्पष्ट शब्दों में बतला दिया है। भारत साम्राज्य से बाहर नहीं जाना चाहता, क्योंकि साम्राज्य में रहने में ही भारत का भला होसकेगा। इसी प्रकार भारत को स्वराज्य के ... देकर शक्तिमान बनाने में भी ब्रिटिश साम्राज्य का ही हित ... । ये बातें उन्होंने बारंबार ब्रिटिश मुत्सद्दियों और यहां की जनता ... उपस्थित की हैं। स्वतः इंग्लैण्ड और साम्राज्य के अन्यान्य ... उपनिवेशों के साम्राज्य की टेबुल पर बैठ मानताल ... हाथ लगने रहने की दशा में भारत को उनके मुँह की ओर ताकता ... उनके डाले टुकड़े पर लपकने वाला पालतू कुत्ता बनाने की यदि आप लोगों की मनसा हो, तो आप अवश्य धोखा खायेंगे। इस प्रकार का संकेत भी वे बारम्बार कर रहे हैं। हम स्वराज्य को अपना अधिकार समझ कर मांगते हैं, न कि हम उसकी याचना करते हैं दो देशों के बीच का युद्ध समाप्त होजाने पर उनमें से जिसका भव हुआ हो उसे आजन्म अपने शत्रु का दास बनकर रहना यह कोई ईश्वरी संकेत नहीं है। यदि किसी की ऐसी भ्रम पूर्ण होगई हो कि; वह आजन्म ही दास बन कर रहे, तो उसे बीच सम्बन्ध का नियन्त्रण करनेवाले देवता उसका फल चखा देंगे; यह एक ऐतिहासिक सिद्धान्त है। घड़ी भर के लिये जेता राष्ट्र अपने फौजी बल पर अपने राज्य की इमारत खड़ी रख सकते हैं, परन्तु यह उपाय स्थायी नहीं है। इतिहास की शिक्षा को लक्ष्य में *रख कर यदि अपना आचरण नहीं बदला गया तो संसार में शांति* बनी रहना असम्भव बात है। ब्रिटिश जनता और मुसद्दियों को उपरोक्त त्रिकालाबाधित सत्य तत्वों का उपदेश हमारे नेता लोग सिखा रहे हैं। 'मि० बसन्तीदेवी (एनीबिसेन्ट)' भी इन्हीं तत्वों का स्थान२ पर उच्चारण करके नौकरशाही और साम्राज्य वैभव की हवा से हौल दिल बने हुए साम्राज्यवादी लोगों के कान गर्माती है। भारतीय प्रश्न-*सम्बन्धी मान्चेस्टर के फ्री ट्रेड हाल में व्याख्यान देते हुए मि० बिसेन्ट* ने स्पष्ट कहा है कि, "राज्यक्रांति की ज्वाला में भारतवाली नौकरशाही की एकतन्त्री राज्य पद्धति की आहुति गिरने के पूर्वही ब्रिटिश जनता को जागृत होकर इस बे लगामी कारोबार को दफना देना चाहिये। भारत में पार्लमेन्ट न होने के कारण ब्रिटिश पार्लमेन्ट को ही यह काम कर डालना चाहिये। स्वतन्त्रतादेवी को दोनों राष्ट्रों के लिये *समानाधिकारों का आशीर्वाद देने के लिये खड़ी करना तुम्हारे हाथ* है। यह बात यदि पूरी न हुई तो जो न्याययुक्त मांग 'देंगे, दिलायेंगे' कहकर पूरी न करोगे वह आज नहीं कलही सही-परन्तु दूसरे राष्ट्रों के द्वारा विवश किये जाने पर देना ही पड़ेगी। आयर्लैण्ड का उदाहरण तुम्हारी नज़र के सामने मौजूद ही है। इन दोनों में से प्रथम या दूसरे; जिस मार्ग से जाना हो, हर्ष के साथ जासकते हो।' *यहां इस बात के प्रगट करने की आवश्यकता नहीं है कि;* ऐसी२ खरी बातें भीख मांगनेवाले के मुँह से निकल सकती है। मा० पटेल, दीवान बहादुर वी० पी० माधवराव की मार्मिक और मुँहतोड़ उत्तर वाली गवाहियाँ जिन्होंने पढ़ी होंगी, उन्हें स्पष्ट ज्ञात होजायगा कि राष्ट्रीय सभा के प्रतिनिधियों का यह ढँग भिखारीपन का न होकर स्वाभिमानी राष्ट्र के वीर प्रतिनिधियों को शोभने योग्य है। भिक्षा वृत्ति का अवलम्बन करनेवाले लोग भूत काल में थे, इस वर्तमान युग में नहीं और न भविष्य काल में उत्पन्नहीं होंगे, ऐसे शुभ चिन्ह दीख पड़ते हैं। देश की आज भयंकर अग्नि—परीक्षा होरही है। बुझने की दशा में पहुँचा हुआ नौकरशाही का दीपक फिर पूर्ववत् प्रज्वलित हो उठा है, और उसकी लौ भी भड़क रहीहै। भारत में भी भिक्षा वृत्ति का लोप होकर वीर वृत्ति का उदय होता चला है। जिन्हें अभी तक भिक्षावृत्ति स्वीकार करना ही योग्य जान पड़ता हो, वे सामने के राजनैतिक क्षेत्र में खड़े नहीं रह सकते। बाँम्बे क्रानिकल के सुप्रसिद्ध सम्पादक

मि० हार्निमन का उपदेश

इस विषय में भिक्षावृत्ति का अवलम्बन करने वाले कदाचित जो कुछ थोड़े बहुत बचे हुए हों; उनके लिये सुनने और मनन करने योग्य है। मि० हार्निमन अपने पत्र में कहते हैं कि, "यहां की परिस्थिति का तीन महिने अभ्यास करने पर मुझे जान पड़ता है कि; जो सुधारणाएँ हम मांग रहे हैं, वे आजही यदि हमें न दे दीगई तो फिर उन अधविही सुधारणाओं को लेने के बदले हमें चुप बैठ रहनाही भला है, और इस तरह चुप बैठने से ये सुधारणाएँ हमें बहुत शीघ्र मिल जायँगी, इसमें भी किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। भिक्षावृत्ति प्रत्येक स्वाभिमानी राष्ट्र को अपमानास्पद जान पड़ती है, और विशेषतः आधुनिक विकट-प्रसंग पर हमारे लिये यह वृत्ति अधिक अपमानास्पद होनी चाहिये। यदि सब लोगों की यही इच्छा हो कि भारत सुखी अपना कारोबार चलाये, यदि लोग नौकरशाही के बे लगामी कारोबार से सदा के लिये मुक्त होना चाहें, यदि भूतकालीन समस्त दुःख और संकटों से अपना छुटकारा करा लेना हो, यदि विगत क्लेशवाली पञ्जाबी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने देने की आपकी इच्छा हो, यदि लोगों

यदि पहुँचता तो उसका परिणाम अवश्यक ही दृष्टिगोचर होता। विगत चार महीनों में पंजाबमें जो अशान्ति मची की उसकी कारण परम्परा मिलाते समय उसमें बाल्शेविकों को घसीटने की आवश्यकता नहीं थी। इस अशान्ति के कारण; स्थानिक होकर वे बिलकुल ही भिन्न स्वरूप के हैं। "राउण्ड टेबल" जैसे जबाबदार पत्र की दी हुई इस मुखचपेटिका से हमारे टाइम्स कोही होश आजाय तो हम बस समझेंगे। तात्पर्य बाल्शेविकों का खजाना, और विद्रोह जैसे कल्पित कथानकों से अपनी लंगड़े पक्ष के समर्थन करने का सर्कार की ओर से प्रयत्न न होना ही, अच्छा है।

बाल्शेविकों का कोप और पञ्जाबी विद्रोह की धूम मची रहने की दशा में उसे मटियामेट करने को मार्शललला की जो पुकार मचाई गई, और उस कानून की आड़ में जो २ अत्याचार हुए उनके विषय में सर्कार को खेद प्रदर्शित कर जांच कमीशन के निर्णय की प्रतीक्षा करते बैठना था। परन्तु इतना सरला मार्ग स्वीकार करना नौकरशाही कभी जानती ही नहीं। अपनी इज्जत का डंका पीट कर उस मान रक्षा की चादर के नीचे अपने सारे कृत्यों के समर्थन करने की युक्ति उसने आज नई नहीं सीखी है। इंडेम्निटि बिल कौन्सिल के सन्मुख लाया जाने के बाद 'मा० मालवीयजी' ने इंग्लैण्ड के इतिहास में के प्राचीन उदाहरण देकर सिद्ध कर दिया कि; पहले मुआफ़ी का कानून और बाद कमेटी की चौकसी, इस तरह का घोड़े के सामने गाड़ी रखने का उदाहरण इंग्लैण्ड के इतिहास में तो एक भी नहीं मिलता। इंग्लैण्ड के सिवाय अन्य देशों में भी जहां कहीं और जब २ ऐसा मौका आया, कमेटी की रिपोर्ट करने के ही बाद इन्डेम्निटि बिल पास किया गया। परन्तु इन लोक प्रतिनिधियों की सुनता कौन है? पञ्जाबी दंगे के सम्बन्ध में सर्कार और लोकपक्ष के बीच तीव्रतर मतभेद होरहा है, और निम्नलिखित प्रश्न मुख्य रूप से सामने रक्खे गये हैं। (१) पंजाब में 'विद्रोह' मचा था क्या? (२) विद्रोह के वास्तविक कारण क्या हैं? (३) क्या मार्शललला जारी करने की आवश्यकता थी? (४) मार्शललला जारी कर देने के बाद भी उसकी आड़ में जो अनावश्यक कार्य फौजी अधिकारियों द्वारा हुए, उनके लिये वे जबाबदार क्यों न समझे जायँ? (५) आरम्भ में मार्शललला पुकारनेवाले सर मायकल ओडायर और लार्ड चेम्सफोर्ड की चौकसी क्यों न की जाय? बस यही मुख्य पांच प्रश्न हैं। और खुल्लमखुल्ला सर मायकल ओडायर पर यह आरोप लगाया गया है कि; पंजाब के लोगों से अपना-निजी बदला चुकाने के लिये ही उन्होंने यह विद्रोह का भूत खड़ा किया है। बात सच है या झूंठ; परन्तु यह स्पष्टरूप से कहा जारहा है कि, लोहारी दर्वाजे के पासवाले कुछ दूकानदारों से जब सर मायकल ओडायर ने पूछा कि दूकानें कब खोलोगे? उस समय दूकानदारों ने खरा उत्तर दिया कि

'जब हुजूर पंजाब से तशरीफ लेजायँगे'

इस उत्तर से उन्हें बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ, और आपने वहां वाले दूकानदारों से बदला लिया। पिछली बार वाइसराय साहब की कौन्सिल में मांगी हुई मुआफ़ी को भी वे भूले न थे। सार्वजनिक कामों में योग देनेवाले पंजाबियों के सम्बन्ध में उनका मत क्या था सो भी सब जानते ही हैं। ऐसी दशा में एकदम सर मायकल ओडायर निर्दोष नहीं कहे जासकते। ओडायर साहब की प्रेरणा से जिन फौजी अधिकारियों ने मार्शललला की पंजाब में अमल बजावरी की, उन लोगों के भी विलायत लौट जाने पर जो २ उद्गार निकले हैं, वे ध्यान देने योग्य हैं। उन लोगों ने कहा है कि, "हमने पंजाब के लोगों की इस तरह पिटाई की है कि, जिसकी याद वे पचास वर्ष तक भी न भूल सकेंगे"।-विलायत के एक जबाबदार पत्र ने ये उद्गार प्रसिद्ध किये हैं, इस कारण इनकी असत्यता पर विश्वास नहीं होता। इन उद्गारों पर से ओडायर ... और उनके फौजी अधिकारियों की विचारश्रेणी और मनोरचनाओं का हमारे नेत्रों के सन्मुख स्पष्ट चित्र अंकित होजाता है। इस जिलयानो हुकूमत का पुरस्कार करते हुए लार्ड सिडेनहम ने जो उद्गार निकाले थे भी ध्यान देने योग्य हैं। पार्लमेन्ट में बोलते हुए लार्ड सिडेनहम ने कहा कि, सन १८५७ के विद्रोह (गदर) के बाद पंजाब की अशान्ति के समान भयंकर घटना अब तक नहीं हुई। अंग्रेजी ढंग की पोशाक पहन कर अंग्रेजी भाषा बोलनेवाले सुशिक्षित लोगों ने भारतीयों का नेतृत्व स्वीकार कर उन्हें दंगे के लिये प्रवृत्त किया। इस बात का यह पहलाही उदाहरण है। इस उक्ति का अब क्या है, उसका खुलासा करने की आवश्यकता नहीं। तथापि यह बतलाना कठिन है कि; निजी और सर्वजनिक बैर चुकाने की बुद्धि इस घटना के मूल में थी ही नहीं। और इसीलिये मुक्तिकारक बिल को पास करने से पहले ही जांच कमेटी का निर्णय प्रसिद्ध होजाना चाहिये था।

इन्डेम्निटी बिल उपस्थित करते समय "जिन फौजी अधिकारियों ने सर्कारी हुक्म के अनुसार अमलबजावरी की, उनको दोष मुक्त करने के सिवा हमारा कोई उद्देश्य नहीं था।" ऐसा कहा गया है। परन्तु यदि सर्कार का यही उद्देश्य था तो उन फौजी अधिकारियों के विरुद्ध दीवानी अथवा फौजदारी दावा दायर न किया जासके, इतनासा कानून बना देने से ही काम चल सकता था। जिस जांच का निर्णय होने तक लोगों ने सर्कारी हुक्म की अमलबजावरी की, उन पर अपराध लगा कर दण्ड दिलवाने सम्बन्धी लोकपक्ष में किसी की इच्छा नहीं थी, और न अब ही है। प्रश्न यही है कि; आवश्यकता न रहते हुए भी केवल धाक जमाने के लिये जिन्होंने अत्याचार किये, उनके कृत्यों पर चादर न डाली जाय! मिस् शेरवुड् को सायकल पर से खींच कर मारा, इस अपराध के लिये कुछ लोगों को कोर्ट ने फांसी की सजा दी थी, यह भी कदाचित क्षम्य होसकेगा: परन्तु उस अपराध के लिये जिस भाग में कि यह घटना हुई वहां के निरपराधी लोगों को उस मार्ग पर से मनुष्य की तरह सीधे खड़े पैरों के बल न चलने देकर घुटने और हाथ टेक कर सरपट चालसे पशुओं की भांति चलने को विवश करने वाले अधिकारियों का समर्थन कैसे होगा? जालियान वाला बाग में की एक साधारणतः निःशस्त्र लोकसभा क्या चीज़ थी, परन्तु उसका भंग करने के लिये पचास फौजी जवानों का सशस्त्र हो युद्ध सामग्री की गाड़ियाँ लेकर जाना और बिना सूचना दिये एकदम उन पर गोलीबार कर सैकड़ों लोगों को घायल कर देना। क्या इस मामले की जांच न होनी चाहिये? तात्पर्य इस मामले में लार्ड चेम्सफोर्ड और सर मायकल ओडायर तथा उनके साथही उपरोक्त कुछ उछृंखल अधिकारियों की चौकसी होने पर ही हम इन्साफ हुआ समझेंगे।

परन्तु इस अवस्था में ये बातें होसकना अशक्य हैं। एक ओर स्वाभिमानी देशभक्त नेता और सामान्य जनता तथा दूसरी ओर सर्व सत्ताधारी सामर्थ्यवान अधिकारीवर्ग के बीच की यह लड़त है। इसमें तो सन्देह ही नहीं कि अन्त को सत्य और न्याय की जीत होगी। परन्तु इसमें सामना करनेवाले लोग अवश्य धन्यता के पात्र हैं।

मा० पंडित मदनमोहन मालवीय

ने वर्तमान विकट परिस्थिति में यह लड़त प्रचलित रक्खी, इसके लिये देश उनका आजन्म ऋणी रहेगा। मालवीयजी से कौन्सिल के बेजबाबदार मदमस्त सर्कारी सभासद कितनाही कठोर बोले, कितनीही उनकी बातों की अवहेलना की, परन्तु इतना अवश्य हुआ कि, आपने अपने कर्तव्य का भलीभांति पालन किया। मालवीयजी की हँसी करनेवाले लोग आज अधिकारारूढ़ हैं, इस कारण उनकी हँसी केवल उनकी लिये ही नहीं वरन् सारे देश के लिये अपमानकारक है, और हम बात को भारतवासी कभी नहीं भूल सकते। भारत को निर्जीव कर धाक जमाने के आशय से ही यदि नौकरशाही ने यह प्रयत्न किया हो तो, यह सब व्यर्थ है। बंगाई रौटन का 'पाजिटिविस्ट रीव्यू' में दिया हुआ उपदेश नौकरशाही के लिये ध्यान देने योग्य है। रौटन सा० कहते हैं कि "पंजाब में नौकरशाही ने जिस मार्ग का अनुसरण किया, वह अत्यन्त दुष्टता और मूर्खता का था। फौजी सत्ता के बल पर देश का तेजभंग करने और प्रजा के स्वदेशाभिमान की ज्योति को बुझा देने के दिन बीत गये। जर्मन से पीट खानेही देशाभिमान दुगना बढ़ जाता है। और उसका दमन करना अशक्य होजाता है। तुर्क लोग बल्गारिया का देशाभिमान नष्ट नहीं कर सके। इसी प्रकार अपनी अपार सेना के बल पर जार अथवा कैसर भी पोलैण्ड का देशाभिमान नष्ट न कर सके। तीन वर्ष मनमानी हुकूमत चला कर भी आज आयर्लैण्ड "सिनफीन," और "रिपब्लिकन" ही बना हुआ है। आपने भारत को पार्लमेण्ट के आधीन कर देने का तो प्रयत्न किया, किन्तु उस से तो हिन्दू मुसल्मानों का मेलही अधिक बढ़ गया। पर फौजी सत्ता में बात कुछ भी नहीं सीख सकती और आज भी भारत में वे स्वेच्छाचारी हुकूमत और राक्षसी का ही ज़ोर है।" क्या हमारी सर्कार इन विचारों से कुछ भी शिक्षा नहीं ग्रहण करेगी?

कर रहे हैं। इसीसे हमें जीवन की आशा है। ... ...आशावादी का नहीं वरन् अपनी उन्नति करने का है, इस बात पर सब को विश्वास हो गया है। सब से अधिक आनन्द की बात यह है कि जिस प्रकार विलायत में हमारे प्रतिनिधि स्पष्ट रूप से उत्तर देकर अपने पक्ष का समर्थन कर रहे हैं, उसी प्रकार भारत में भी इस कठिन समय में लोगों के सच्चे नेता स्पष्ट रूप से मार्ग दिखा रहे हैं।

वाइसराय साहबने पंजाब के साधारण से लोकक्षोभ को आज से चार महिने पूर्व ही विद्रोह का स्वरूप प्रदान किया था, परन्तु अब तो आप की बातों में उसका कहीं पता तक नहीं लगता।

साधारण दंगा या भीषण विद्रोह

इसकी स्वयं उन्हें ही खबर नहीं सी दीखती है। भारत में की नौकरशाही अथवा नौकरशाही की इच्छानुसार कठ् पुतली की तरह नाचनेवाले वॉइसराय साहब का न्याय ही कुछ विचित्र है। अपने पक्ष का समर्थन करते समय उन्हें सत्यासत्य की भी विशेष पर्वाह नहीं रहती। आपने विगत मास की शिमलेवाली बड़ी धारा सभा में प्रास्ताविक भाषण करते हुए कहा कि; "रौलेट बिल सम्बन्धी कौन्सिल में वादविवाद होता रहने की दशा में कुछ सभासदोंने धमकी दीथी कि देश में उपद्रव मच जायगा, और उसे सत्य कर दिखाने को ही उपद्रव भी किये गये। परन्तु ऐसी धमकियों की न तो कोई सर्कार पर्वाह ही करती है, और न आगे कभी करेगी।" उपरोक्त विचार सरणी में सत्यासत्य का अतिशय मिश्रण हो गया है, और उसमें सत्य की अपेक्षा असत्य का अंश ही विशेष है। पहली बात यह है कि, रौलेट बिल का वादविवाद होता रहने की दशा में उपद्रव होगा इस विषय की जो सूचना दी गई उसमें धमकी का नाम तक नथा। रौलेट बिल के कारण जनता अत्यन्त क्षुब्ध हो गई है और यदि लोकमत की पर्वाह न करते हुए आप यह बिल पास करेंगे तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा। इस वस्तुस्थिति का निदर्शन कराना उनका कर्तव्य ही था। लोकक्षोभ की ...नता का परिचय सर्कार को ...देना तो लोक प्रतिनिधियों का ...काम ही है। इस सूचना में ...की का रूपान्तर वाइसराय सा० ...किया। यदि यह भी मान ...जाय कि सूचना धमकी ...में थी, तो भी उसमें अनु... ...हुआ? नियम बद्ध ...लन कर लोकपक्ष का कथन सर्कार के सन्मुख उपस्थित कर ...वैध उपायों द्वारा सर्कार से लोकमत के विरुद्ध बनाये हुए कानून ...ने को प्रयत्न करना कौनसा गुनाह है! मा० पं० मदन मोहन ..., मा० पटेल, मा० खापर्डे, इन लोक प्रतिनिधियोंने सर्कार को ...से सुना दिया कि; आपने यदि यह कानून लोकमत की अव...कर प्रचलित कर दिया तो देशभर में "न भूतोनभविष्यति" ...चल होगी। इसका वास्तविक अर्थ यही था कि; यथाशक्ति ...द मार्ग से लोकक्षोभ की तीव्रता विलायत तक सूचित कर ...को रद्द कराने को विवश किया जायगा। परंतु वस्तुस्थिति ...की रहने पर भी लोकपक्ष के नेताओं पर आक्षेप करने ...वाइसराय महाशय से न सहा। आ सकने से, अपनी

कल्पना शक्ति को उन्होंने एक बार और भोंका देकर "उन को सच्ची करने के लिये ही पंजाब में उपद्रव मचाये गये।" इस का निराधार विधान वे बटके ठोक दिया, और जो बात कमीशन निश्चय करने को थी उसका निर्णय स्वयं ही अपने मन कर दिया। अर्थात् यह बात नौकरशाही के नियमित ध्येय से की नहीं वरन् अनुकूल ही हुई। "लोगों की ऐसी धमकी की पर्वाह नहीं करती ।" वाइसराय सा० के इस सिद्धान्त पर करनी होगी। सर्कार—किसी भी देशकी सर्कार किसी एक अथवा व्यक्ति समूह के हितार्थ किंवा व्यक्ति समूह की मन लहरी की तृप्ति कर देने के लिये स्थापित नहीं की जाती है। से कम इस प्रकार की एक तन्त्री और बे—लगामी सुल्तान शाही दिन अब नहीं रहे। वर्तमान काल लोकशाही का है, अथवा नौकरशाही का नहीं। इस बात का परिचय वाइसरॉय

मा० पं० मदनमोहन मालवीय।

को नहीं, ऐसा जान पड़ता है परन्तु वे विश्वास रक्खें कि न सही कलही सही; पर वर्ष में लोकशाही का स्थापित होगा और आजका उनका प्रतिपादित सिद्धान्त फिर खड़ा न कर सकेगा।

वाइसराय साहबने विगत महीनों में ... सरमायकल ओडायर के कृत्यों पर चादर डालने का प्रयत्न किया है, और सर्कारको उस समय के ... का प्रतीकार करने के ... नुसार उपायों की योजना लेने की निर्बन्ध आज्ञा हमने थी, इस बात को कह दो गये हैं। परन्तु जिस परिस्थिति के कारण ... ने अधिकार भ्रष्ट कर दिया

"विद्रोह का" भूत

एकदम ही अदृश्य कैसे हो गया सो कुछ समझ में नहीं आता। विद्रोह और उत्पात की पुकार पहले भारत सर्कारने ही मचाई। परन्तु आज देखा जाता है तो उसके भाषण में कहीं 'विद्रोह' का उच्चार तक नहीं, यही नहीं वरन् उस उपद्रव के प्रतीकारार्थ जो 'क्षमा का कानून' पास किया गया है, उसके आरम्भ में भी विद्रोह का नाम ... होकर उसके बदले दंगा फसाद लिखा गया है। जान पड़ता है कि बाल्शेविकों का ... खजाना, पंजाब में के ...

... सुनाना मेरा कर्तव्य है।)

कारियों को यह सेना, ये राजा आदि सारा ही गौड़ बंगाला ... अंतर्धान हो गया है। बम्बई "टाइम्स" जैसा हठी पत्र उन लोगों ... एक नामवली लिख रहा है, जो इस बात का अकाट्य प्रयत्न करते ... कि अपने "विद्रोह" का कहीं प्रमाण मिल जाय। और ... ... फंद में किसी भी भारतवासी का नाम आया कि वह लिखे ... है। परन्तु उनके इस खिलवाड़ से होही क्या सकता है। "... टेबल" नामक जबाबदार मासिक पत्र में इस बाल्शेविक प्रकरण ... सम्बन्ध में स्पष्ट लिखा गया है कि, "रेलिंग सफोर्स" से ... वाले उपन्यास रूपात्मक कथानकों को व्यर्थ काही महत्व देकर ... समाचार पत्र पंजाब की अशान्ति का बाल्शेविकों से सम्बन्ध ... रहे हैं परन्तु इसके लिये विश्वासनीय प्रमाण कुछ भी नहीं है, ... अवश्य सत्य है कि, बाल्शेविज्म का विष भारत तक पहुँचा ...

मा. गव्हर्नर सा. का दो स्थानों में शुभागमन ।

डेक्कन एज्यूकेशन सोसायटी की नवीन मराठी पाठशाला ।

ता० २६ सितम्बर सन १९१९ को बम्बई प्रांत के गवर्नर महोदय ने इस पाठशाला के नये भवन की कोण शिला बैठाई । डेकन एज्यूकेशन सोसायटी ने यह पाठशाला सन १८९९ के जनवरी में स्थापित की [illegible] ने अपना प्रयत्न प्रचलित रक्खा । इस कार्य में उसे अच्छी सफलता मिली है । और डायरेक्टर आफ् पब्लिक् इन्स्ट्रक्शन् ने रिमार्क बुक में लिखा है कि बम्बई प्रांत भर में यह एक आदर्श पाठशाला है, बम्बई सर्कार ने इस पाठशाला की इमारत के लिये । १२५००० की फ्री ग्रॅन्ट दी है । सोसायटी सर्कार से निवेदन कर रही है कि इस इमारत के सिवाय एक बड़ा सा हॉल और भी होना चाहिये । इसी प्रकार इस आदर्श पाठशाला के लिये खर्च का ½ भाग देने की भी प्रार्थना की है । इस संस्था को देख गवर्नर साहब ने कहा कि "विगत चार पांच महीनों में मैं पूने की अन्यान्य शिक्षा संस्थाओं में गया हूं, वहां मुझे कई बातों की आलोचना करने को भी विवश होना पड़ा । परन्तु इस संस्था के विषय में मुझे वैसा करने को कोई कारण ही न मिला-यह कहते हुए मुझे बड़ा ही आनन्द होता है ।

पूना के जरी कारखाने में गवर्नर महोदय का आगमन ।

विगत २३ सितम्बर को सेठ चिमनलाल किशनदास के यहां मा० गवर्नर महोदय ने जरीतार तय्यार करने के कारखाने और तय्यार किये हुए जरी के काम का परिदर्शन किया । कारखाने को देख आने इस स्वदेशी उद्योग की उन्नति के लिये शुभ कामना की ।

भाद्रपद-मास।

(कविवर श्री० ' अनुज ')

वर्षा विहार।
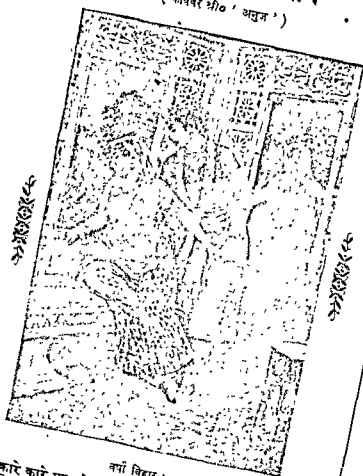
कारे कारे मतवारे से बादर धावें।
बिच बिच चपला चमकत लोचन मिच मिच जावें॥
घन गर्जत नभ बीच है प्रतिध्वनि चहुँदिशि होय।
मानहुँ सुभट विशाल बहु लरत भीति सब खोय॥
बलाहक शोभते॥१॥

शीतल चलत बयार चील्ह प्रमुदित मड़राते।
मानहु गमन विमान उड़त बहु विधि सरांते॥
जित तित दूर दिखा रहीं नीर वृष्टि छहरान।
प्रकृति नाट्य गृह जवनिका मानहु स्वेत सोहान॥
घर सो घूमती॥२॥

प्रगटत तुरत दिनेश प्रकृति छवि मान हूँ झांकत।
मृदुलन ऋतु मुरझाय समुझि जनु फिर मुख ढांकत॥
सतरंगी नभ धनुष की नैनन छवि सरसाय।
रत्न जटित जनु बन्दनी प्रकृति भाल दरसाय॥
भाद्रपद साजिरहो॥३॥

लखि छवि गगन झरोखन सौं फिरि भूतल झांकत।
देखहु प्राणाधार सुछवि यों सुन्दरी भाखत॥
कर अंगुलि धर युगुल धर निरखत प्रकृति विहार।
कनक भवन में सोहते मानहु रति अरु मार॥
लुनाई छारही॥४॥

आर्द्र धरनि पट हरित ओढ़ि सुन्दर दरसाती।
सघन बनन महँ ललित लता लहलह लहराती॥
पारिजात के फूल बहु झरत पवन सौं भूमि।
मातृभूमि अति प्यार सों रही तिन्हैं अनुचूमि॥
मालती लहलही॥५॥

हरे भरे हैं खेत चौंपुदी क्यारी सोहैं।
मध-हूबे हैं धान पवन से लहरत मोहैं॥
ताल तलैयन में अहा कमल रहे हैं फूल।
लहरन सों हिलने लसैं मधुपरहे हैं भूल॥
मस्त गुञ्जारते॥६॥

ोहन! देखो इनके दीन दुखी दिखावें।
न बहुत उपजावें ते भूखे रहिजावें॥
ाम अब धैसो नहीं छांड़ मरेंगे मावें।
क उनके देखिये मुंह सेक बवावें॥
नहीं शोकित हुए॥७॥

इनकी दशा विलोकि नरस अतिही मन आवे।
राग अकाल कराल इन्हें नितहीं बिनसावे॥
नहीं आपको चाहिये अब ऐसी गोपाल।
करुणदृष्टि की वृष्टि कर करिये इन्हें निहाल॥
तबहि मन चैन हो॥८॥

दीन दुखी बिलपाय फिरत बहु मारे मारे।
महँगाई इनके जीवन कों पकरि पछारे॥
बसनन के लाले परे टूटे फुटे मकान।
सोवत गीली भूमि में कैसो-हो? भगवान॥
हटावो दीनता॥९॥

है भर भादों पै न दूधदधिकी बहुताई।
याही सों ऋषि मुनि हिमगिरि रहे महँ छिपाई॥
होत न धैसे मत कहीं न-है साधु सन्मान।
करहु प्रेमधन-अब उही जासों हो कल्यान॥
तुम्हारे दास ये॥१०॥

मृदु मुसकाय जताय दई-जननी विपता कों।
फिर प्रमोद भर लगी दिखावन प्रकृति छटा कों॥
सोच न कीजे सांवरे, कीजो अवसर पाय।
यहि छिन-भरि अखियन लखहु तुलसी वन लहराय॥
सांवरी स्यामसी॥११॥

प्रीतम देखहु इतै बाटिकाकी छविन्यारी।
रंग विरंगी फूल रही हैं सब ही क्यारी॥
लजवन्ती बूंदन परे कैसी रही लजाय।
दानी की सम यह जुही सुमनन-रही झराय॥
तितिलियां-मोहनी॥१२॥

विद्युत्।

(वसन्ततिलक)

उत्तुंग मेघ नभ में घिरने लगे हैं॥
बिन्दु-प्रपात नभ से गिरने लगे हैं॥
काली निशा तिमिर में तनु को डुबोती।
विद्युच्छटा प्रकट जो नभ में न होती॥१॥
है चञ्चला चमकती जब वेग वाली।
ब्रह्माण्ड मण्डल अखण्ड छटा निराली॥
छाता समस्त जग में यह धाम भारी।
होता न धाम इतना वर तेज धारी॥२॥
तेरे बिना सघन नीरद नीलिमाकी।
प्यारी छटा न लगती इस भांति बाँको॥
तू दिव्य देह अपनी जब है दिखाती।
चाञ्चल्य चित्रण चमत्कृत है सिखाती॥३॥
है तीव्र तेज तुमसा न तड़ित कहीं भी।
उद्दाम शब्द तुमसा न सुना कहीं भी॥
तेरी छटा चपलता सब भाँति न्यारी।
अभ्राङ्क में विलसना चिरकाल प्यारी॥४॥
उद्दण्ड मण्डल प्रभाकर कान्तिहीन।
होते प्रसह्य हत तेज नभोविलीन॥
सौदामिनी चमकती जिस काल मित्र।
छाता प्रकाश नभ में उसका विचित्र॥५॥
हो चन्द्र मन्द यदि तो फिर क्या भला है?।
सौदामिनी ललित क्या उसकी कला है?
कोई प्रकाश रहता न समक्ष तेरे।
हे चञ्चले! अचल हों जब मेघ घेरे
उत्ताल तीव्र ध्वनि को सुनि सिंह तेरी
विभ्रस्त चित्त रहते घन नाद भेरी॥
कैसा प्रचण्ड रव है सब को कँपाता।
उन्माद उत्कट कठोर सुना न आता॥७॥
सारी छटा चपलतावश एक तेरे।
तेरा कहीं न मिलता उपमान हेरे॥
होवें अभी सघन नीरद नील घेरे।
तेरे अनेक लगने नभ बीच फेरे॥८॥

" कविकुमार " पं० महेश्वर प्रसाद शास्त्री, [illegible]

मा. गव्हर्नर सा. का दो स्थानों में शुभागमन।

डेकन एज्यूकेशन सोसायटी की नवीन मराठी पाठशाला।

ता० २६ सितम्बर सन १९१९ को बम्बई प्रांत के गवर्नर महोदय ने इस पाठशाला के नये भवन की कोण शिला बैठाई। डेकन एज्यूकेशन सोसायटी ने यह पाठशाला सन १८९९ के जनवरी में स्थापित की थी। इसकी स्थापना का उद्देश्य यह था कि; प्राथमिक शिक्षा को यथोचित रूप में प्राप्त कर लेने के बाद विद्यार्थी इसी सोसायटी के न्यूइंग्लिश स्कूल में भर्ती किये जाँय। साधारण विषयों को नये ढंग से शिक्षा देने के साथही शिल्पकला के नये विषय आरम्भ कर यह देखने को कि बालकों की शिक्षा पर इसका क्या परिणाम होता है—सोसायटी ने अपना प्रयत्न प्रचलित रक्खा। इस कार्य में उसे अच्छी सफलता मिली है। और डायरेक्टर आफ् पब्लिक् इन्स्ट्रक्शन् ने रिमार्क बुक में लिखा है कि; बम्बई प्रांत भर में यह एक आदर्श पाठशाला है, बम्... सर्कार ने इस पाठशाला की इमारत के लिये। १२५००० की ग्रां... दी है। सोसायटी सर्कार से निवेदन कर रही है कि इस इमारत... सिवाय एक बड़ा सा हॉल और भी होना चाहिये। इसी प्रकार इ... आदर्श पाठशाला के लिये खर्च का $\frac{1}{3}$ भाग देने की भी प्रार्थना की है... इस संस्था को देख गवर्नर साहब ने कहा कि; "विगत चार पां... महीनों में मैं पूने की अन्यान्य शिक्षा संस्थाओं में गया हूं, वहां मुझे ब... बातों की आलोचना करने को भी विवश होना पड़ा। परन्तु इस संस्... के विषय में मुझे वैसा करने को कोई कारण ही न मिला-यह कह... हुए मुझे बड़ा ही आनन्द होता है।

पूना के जरी कारखाने में गवर्नर महोदय का आगमन।

विगत २३ सितम्बर को सेठ चिमनलाल त्रिगुनदास के यहां मा० गवर्नर महोदय ने जरीतार तय्यार करने के कारखाने और ... तय्यार किये हुए जरी के काम का परिदर्शन किया। कारखाने को देख ...

श्रीविनोद मण्डल गणपत्युत्सव; उज्जैन ।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष ४ को श्री गणपति का जन्म दिवस हिन्दुस्थान में सर्वत्र मनाया जाता है। जिस भांति राम, कृष्ण जन्मोत्सव अति प्राचीन काल से होता आया है, उसी भांति गणपत्युत्सव भी प्राचीन समय से हो रहा है। इस उत्सव में विशेष बात यह देखने में आती है, कि इसके द्वारा मनुष्य की प्रवृत्ति समाज सेवा की ओर होजाती है। क्योंकि धार्मिक तथा सामाजिक कार्य में प्रवेश करनेका यह एक सुगम साधन है।

विनोद मिल में जहां उपरोक्त गणपत्युत्सव हुआ था लगभग १५०० स्त्री पुरुष और बालक काम करते हैं, और इन्हें सूर्योदय से सूर्यास्त तक मिल के काम में व्यग्र रहना पड़ता है। इसलिये यह कहना अनुचित न होगा कि कारखानों में काम करनेवालों का समस्त जीवन अपने पेट पालने में ही व्यतीत होता है। अब यदि एक मास में इन्हें ४।५ दिन की छुट्टियां त्योहार आदि की मिल भी जाती हैं, परन्तु इन छुट्टियों में ये आनन्द मनावें, या सांसारिक कार्य अथवा अपने खान पान की व्यवस्था करें। तात्पर्य यह कि आनन्द लाभ लेने के अवसर इन्हें बहुत ही कम प्राप्त होते हैं, इसीलिये अपोत इन मिलवाले भाइयों को कुछ दिन आनन्द प्राप्त हो कर, उत्सव के महत्व को जानने और [illegible] मिल [illegible] मंडल [illegible] बात [illegible] पूर्ण· [illegible], और [illegible] सार्व· [illegible] सम्मि· [illegible]

—शिवेश रावल।

पैसाफण्ड गणेश मेला (तीसरा वार्षिकोत्सव ।)

[illegible]

विलायत में युद्धविषयक समारम्भ।

लंदन की सड़क पर भारतीय सैनिकों का जुलूस।

विगत २ अगस्त को लन्दन की जनताने भारतीय सिपाहियों का गौरव पूर्वक स्वागत किया। भारत की सब जाति के योद्धाओं की यह

पल्टन ... स्टेशन से बकिंघम महल तक दोनों ओर खड़ीहुई जनता के मुख से जय २ कार सुनती हुई गई, और वहां उन्हें सम्बोधित कर सम्राट् ने उत्साह वर्धक व्याख्यान दिया। उसमें महायुद्ध के समय

भारतीय सैनिकों के दिखलाये हुए पराक्रम की प्रशंसा ... नीचे की दाहिनी ओर के कोने में ब्रिटिश साम्राज्यान्त ... भागों के एशियाटिक भण्डे दिखाये गये हैं।

मृतवीरों का पुष्पश्राद्ध।

मृतपुरुषों का पुष्पश्राद्ध करने की प्रथा अंग्रेज लोगों में भी प्रचलित है। अन्तर यही है कि ये फूलों के साथ तिल नहीं चढ़ाते

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी की जयंती।

विगत २२ सितम्बर को भारत के भिन्न २ नगरों में आपकी ५१ वीं वर्षगांठ बड़े समारोह से मनाई गई। इस अवसर पर आप को २५ हजार की थैली भेंट कीगई है।

इँग्लैण्ड के युवराज प्रिंस ऑफ वेल्स।

आप अमेरिका यात्रा के लिये ता० ५ अगस्त को 'रिनाउन' जहाज द्वारा पोर्ट्स्माउथ से प्रयानित हुए। कनाडा में चारों ओर घूम कर टोरेन्टो की प्रदर्शनी खोल कर ओटावा में पार्लमेन्ट के समागृह का शिलारोपण करते हुए अक्टूबर के अन्त तक कनाडा की यात्रा समाप्त करने का निश्चय हुआ है। इसके बाद प्रे० विल्सन ने संयुक्त राज्यों में आप को भेजने के लिये सम्राट् की सेवा में आमन्त्रण भेजा। जिस को सधन्यवाद स्वीकार कर सम्राट ने समाचार भेजा कि 'कनाडा प्रयास से निपट कर युवराज न्यूयार्क आवेंगे!' महायुद्ध के कारण इँग्लैण्ड और अमेरिका का सम्बन्ध दृढ़ होगया है। और युवराज के इस शुभागमन से यह और भी दृढ़ हो जाने की आशा है।

पंजाब की फौजी सोंटेशाही ।

(लेखक:—श्रीयुत विष्णु महादेव भट बी. ए)

पंजाब में हाल ही में जो सोंटेशाही कुछ दिन तक धूमम- चा रही थी, और जिसके कारण पंजाब अत्यन्त हैरान होकर वहां के हजारों अर्भक, अनाथस्त्रियां और असहाय वृद्ध माता पिता आज भी दुख भोग रहे हैं—उसके नियमित अथवा अनियमित स्वरुप के सम्बन्ध में सर्व साधारण हिन्दी भाषा भाषियों को कुछ जानकारी होना अवश्यक है। सन १८५७ के सच्चे गदर के बाद और अस्त्र आईन बनाकर भारतीयों को निः शस्त्र बना देने के पश्चात् भारत या उसका कोईसा भी भाग सर्कार के विरुद्ध उपद्रव मचावेगा, यह बात आज भी सूज्ञ पुरुष असम्भाव्य ही समझते हैं। उसमें भी फिर १८५७ के विद्रोह को दाबनेवाला राजनिष्ठ पंजाब, १९१४ से १९१९ तक के महायुद्ध में पुनरपि राज्य-निष्ठा के सिक्के से सुशोभित किया हुआ पजाब, महात्मागान्धी जसे शांत पुरुषों का अनुगामी पंजाब, 'उपद्रव मचावेगा या ब्रिटिश सत्ता विरुद्ध युद्ध करेगा, महायुद्ध में जर्मनी जैसे लड़ाके देश को पराजित कर अपने फौजी सामर्थ्य के बल पर महत्ता प्राप्त कर लेनेवाले ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध की दुहाई देगा, यह बात तो कल्पना से भी परे की थी। परन्तु ओडायर शाहीने उसी पजाब को—स्वयंही 'राजनिष्ठ, राजनिष्ठ' के नाते दुहाई दिये हुए पंजाब को, उपकारी पंजाब को बातकी बात में "उपद्रवी" ठहरा दिया! रौलेट कानून का बनना, नर्म-गर्मदल का उसके लिये विरोध प्रगट करना और महात्मा गान्धी सदृश निस्पृह और बानेदार साधु पुरुष का उसके विरुद्ध सत्याग्रह का आन्दोलन मचाना, और उस आन्दोलन की पंजाब में शुरुआत होते ही शांतिमय आन्दोलन को 'विद्रोह,' नियम बद्ध सभाओं को षड्यन्त्र, और सत्याग्रह के सौम्य वचनों को "युद्ध गर्जना" के स्वरूप प्राप्त कराना—ये सभी बातें अजीब हुईं। और वहां एक अतर्क्य, अचिन्त्य तथा अनपेक्षित घटना घटित हो गई! यह बात न्याय संगत हुई या नहीं इसका तो अभी निर्णय होना शेष है। परन्तु आज हम इतना तो सत्य मान सकते हैं कि "पंजाब सर्कार की दृष्टि से राजनिष्ठ पंजाब राजद्रोही समझा गया, महात्मागान्धी जैसा साधु पुरुष 'विद्रो-हकारी" समझा जाकर सत्याग्रह का आन्दोलन "युद्ध की पुकार" माना गया। इस काल्पनिक विद्रोह को जन्म देकर पंजाब सर्कारने अकारण फौजी सोंटेशाही गजाई, इस प्रकार सूज्ञ पुरुषों का मत है, फिर यह भले ही कैसा क्यों न हो। पंजाब सर्कारने उसे गजाई और भारत सर्कारने उसका अनुमोदन किया, ये बातें तो अवश्यही सत्य हैं। उनके इस कृत्य के न्यायान्यायपन का निर्णय शीघ्रही एक सर्कार नियुक्त कमेटी करनेवाली है। और उस कमेटी की सारी कारंवाई खुल्लमखुल्ला होगी। उसका काम शुरु होने से पहले यदि फौजी डण्डशाही का स्वरुप पाठकों को समझा दिया जायगा तो वे जांच कमेटी का काम ध्यानपूर्वक देख कर उसे समझ भी सकेंगे, और तत्सम्बन्धी कुछ निर्णय भी कर सकेंगे।

यह फौजी सोंटेशाही (मोर्शल-ला) "फौजी कानून" से बिलकुल ही भिन्न है। दूसरे प्रकार का कानून केवल सेना में सैनिक और उनके वरिष्ठ अधिकारियों सम्बन्ध रखने जितना ही है। उसका अमल सामान्य प्रजा पर कभी नहीं किया जा सकता। सेना में धाक रहे। इसी निमित्त उसका अस्तित्व रहता है, और सेना तक ही उसकी अधिकार मर्यादा है। परन्तु यह सोंटेशाही उससे बिलकुल भिन्न है। जब कोई परचक्र आता है। अथवा प्रजा विमनस्क होकर स्वय ही राजसत्ता के विरुद्ध उपद्रव मचा देती है, तब राज्य में शांति स्थापित रखना और उसके लिये सशस्त्र शत्रु को शस्त्र के द्वारा हरा देना—यह प्रत्येक सर्कार उसके सैनिक और राजनिष्ठ प्रजा का कर्तव्य कर्म होता है। ऐसी धूमधाम के समय कानून, कचहरी पर ध्यान आदि शांति काल के लिये आवश्यक, किन्तु उस के समय शीघ्रता से निपटा सकने के लिये अशक्य होने से, इन सब को अलग रख देना पड़ता है, और इनके बदले शांति का ही एक मात्र ध्येय सामने रख कर सारा व्यवहार शीघ्र निपटा लेना पड़ता है। "सिर सलामत है तो पगड़ियां पचास जायँगी" इस न्यायानुसार राज्य के सुरक्षित रहने परही प्रजा के अधिकारों की भी रक्षा हो सकेगी। और यह राज्य व्यवस्थाही जब अस्थिर हो जाय तो उसे व्यवस्थित करने के लिये कुछ समय तक शांति कालीन सर्व व्यवहारों को बन्द रखना पड़ता है। और वह किसके हाथों व्यवस्थित बनाई जा सकती है उन्हें यथा समय जो कुछ उपयुक्त और आवश्यक कार्य करना पड़े उनके लिये अधिकार दे देना पड़ता है। इस शांति स्थापना के कार्य में प्रत्येक प्रजाजन को राज्य कर्त्ता की सहायता करने का अधिकार रहता है। यही नहीं बरन् इंग्लैण्ड में चतुर्थ एडवर्ड के शासन काल में बने हुए एक कानून के अनुरोध से उसे राज्य रक्षा के लिये सैनिक की भांति सब अधिकार भी दिये गये हैं। परन्तु यह शांति स्थापना का कार्य जो भी सार्वजनिक हो; तथापि उसी काम के जानकार सैनिकों की तरह दूसरों के लिये वह काम ठीक २ दशा में और शीघ्रता से निपटाना अशक्य होने से उसका सारा भार सेना पर ही पड़ता है। और ये सब स्वतन्त्रताएँ उन्हें ही दीजाती हैं। उस समय न्यायालय को दाहिने बायें किसी प्रकार की भी रुकावट न रख कर सब अधिकार सौंप देना पड़ते हैं, और प्रजा के अधिकारों का प्रतिबन्ध कर दिया जाता है। फौजी सत्ता के लिये आवश्यक और अत्यावश्यक जान पड़ने वाली बातें शांति स्थापना के कार्य में उपयोग करने का जो अधिकार दान करना पड़ता है, उसी को फौजी सोंटेशाही अथवा अंग्रेजी में 'मौर्शल-ला' कहते हैं। वास्तव में यह कार्य सब के हित का होने के कारण एक प्रकार से पवित्र ही है, और इसी कारण उसे सोंटे शाही जैसा कटु नाम निर्देश करना भी योग्य नहीं, यह बात अवश्य ठीक है। परन्तु फौज में के अनजान और अज्ञान मजदूरों को उस कर्तव्य की पवित्रता सम्बन्धी विशेष जानकारी न होने से उनके हाथों जो २ अनावश्यक और निन्दनीय तथा अघोर काम होजाते हैं; उनके कारण ही उन कार्यों को अघोर स्वरूप प्राप्त हुआ है। और इसलिये उसे सोंटेशाही का नाम देना पड़ा है।

डॉ सत्यपाल।

[जन्म ११।७।१८८५, बी ए. १९०२, एम बी. १९०८, स्वर्ण पदक मिला। महा-युद्ध में सितम्बर १९१५ से १९१६ अक्टू-बर तक अदन में लेफ्टिनेन्ट, आय. एम. एस। १०।४।१९ को धर्मसाला से बहि-ष्कार, ६ मई को रोक, सजा आजन्म कालापानी]

उपरोक्त विवेचन पर से केवल सेना के ही प्रबन्ध के लिये आवश्यक फौजी कानून और राज्य रक्षा के लिये सेनापतियों को दिये जाने वाले आवश्यक अधिकारों में क्या अन्तर है, सो पाठकों को ज्ञात होगया होगा। परन्तु इतने पर से ही कोई यह न समझले कि, सेनापति को जो २ दूसरे अधिकार दिये रहते हैं, उनके द्वारा वह मनमाने क्रूर कृत्य कर सकता है! क्योंकि उसके अधिकारों के लिये भी सीमा होती है। साधारण पुलिस के द्वारा शांति रक्षा होसकना अशक्य समझा जाने से ये अधिकार सेना को उतनी ही देर के लिये दिये जाते हैं। और जिस आवश्यकता के कारण ही ये अधिकार सैनिकों को दिये जाते हैं, उसी आवश्यकता की मर्यादा उनके कारोपभोग के समय की भी होती है। अर्थात् जो कुछ बिलकुलही विश्वास पूर्वक उन्हें शांति रक्षा के और अनिवार्य जान पड़ते हैं उन्हें उनको स्वतन्त्रता दीजाती है। अपने अधिकार मर्यादा से पर काम करने पर कानून पड़ता है, और कोर्ट को उन्हें सब प्रकार इस पर से आवश्यकता की मर्यादा बात जानी जा सकेगी। इस आवश्यकता माण भी ले लेना पड़ते हैं, और मिला देना पड़ता है। परन्तु 'आवश्यक' सिद्ध करना पड़ता। से हम आए हुए और यहां तक बतलाये हुए नियम

मोटी सब प्रकार की सज़ा पाये अपराधियों की संख्या कुल १७१२
होती है। इनमें से १०८ को फांसी, २६४ को आजन्म कालापानी और
१८३ मनुष्यों को, वर्ष सख्त मज़दूरी की सजाएं दी गई थीं। इस पर
से पंजाब में न्याय की कैसी पुकार मच गई होगी। इस की कल्पना
हमारे पाठकगण कर सकते हैं! इन १७१२ में से अब तक केवल
८८७ मनुष्यों की ही सजाएँ कम की गई हैं।

यह सॉटेशाही के न्यायप्रदान सम्बन्धी कार्य का निदर्शन हुआ!
परन्तु प्रत्यक्ष फौज ने कितनी प्राणहत्या की इसकी ठीक २ गणना अभी
तक न हो पाई है। भारतीयों के हाथ से ७ योरोपियन मारे गये,
यह दुःखद वार्ता अवश्यही सची है। और इन अकारण ही मारे
जाने वाले योरोपियनों के लिये, उन्हें मारने वाले अपराधियों
को जितना दोष दिया जाय थोड़ा है। परन्तु उन सात व्यक्तियों के
प्राण का मूल्य फौज ने अकेले अमृतसर में के ही ५३० से अधिक
भारतवासियों को यमसदन भेज कर चुका लिया, यह बात भी उतनी
ही शरीर पर कांटे खड़े करदेन वाली है। लगभग १८०० लोगों को
तड़ाक्-फड़ाक् सजा, ६१० सौ लोगों की प्राणहत्या और घायलों की
संख्या भी कम से कम यदि इतनीही मान लीजाय; तो लगभग ३०००
लोगों को इस सोटेशाही ने न्यूनाधिक प्रमाण में सर्वतोपरि विनष्ट
कर दिया, यह बात प्रत्येक भारतीय के अन्तःकरण
में सदा तीरसी चुभती रहेगी। और अधिकारियों
के इन काले कर्मों पर कितनी ही सफेदी चढ़ाने का
यत्न किया गया, तो भी वह व्यर्थ ही होगा।

फौजी सॉटेशाही का फर्मान निकालना आवश्यक
था या नहीं, यह वादग्रस्त प्रश्न है। परन्तु एक बार
फर्मान निकलते ही, फौजी अधिकारियों को सुना-
दिया गया कि; शान्ति स्थापना के लिये उन्हें जो बातें
धर्म मार्ग से आवश्यक जान पड़ें; उन्हें कर डालने के
लिये उन्हें स्वतंत्रता रहेगी। उन कामों के करते
समय कई मौकों पर कानून का उल्लंघन करने की
आवश्यकता होती है। और ये जो अत्यावश्यक बनी
हुई, किन्तु कायदे से परे की कृत्य, करतूतें घटित
होती हैं, उनके लिये फौजी अधिकारियों को कायदे
के अनुसार कुछ भी कलंक न लग सके। इसके
लिये प्रत्येक सर्कार दोष विमोचन या मुक्तिदाई कानून
पास करती है। फौजी सॉटेशाही का कार्य समाप्त
होजाने पर यह क्षमा कानून पास होना एक
साधारण नियमही है। परन्तु यदि फौज के
हाथ से भयंकर दुष्कृत्य, कठोरता, गर्हणीय कृत्य होने का
संदेह उत्पन्न होगया हो, तो किसी तीसरे ही न्यायप्रिय और सत्य-
निष्ठ व्यक्ति के द्वारा चौकसी करवा कर अत्यावश्यक काम जिन २ ने
किये हों, उन्हीं के अनुसार क्षमा का कानून बनाने का नियम है। और
यही न्याय का सच्चा राजमार्ग है। सन १८९६ में भारत सर्कार ने भी
इसके लिये स्वीकृती दी है। परन्तु १९१९ की भारत सर्कार ने इस
राजमार्ग का भी अनुकरण न किया। फौज के दुष्कृत्यों की
अशान्ति का शमन करने के लिये, और खुदने ही जो सॉटशाही का
फर्मान निकाला था, वह योग्य था या नहीं, इनका निर्णय करने के
लिये उसने स्वयंही एक कमेटी बनाली, और उसे अपने पास ही
रिपोर्ट भेजने को कहा! अर्थात् आरोपित अपने पर का आरोप लगा है
उसकी चौकसी का भार अपनी ही ओर के आदमियों को सौंप
कर उस पर स्वयं ही निर्णय दे दे, इसी प्रकार की यह बात है। न्याय
का यह मार्ग सर्व सम्मत नहीं, इसे हर एक आदमी स्वीकार करेगा,
खैर सर्कारने कमेटी बनाई सो ठीक, फिर उसका भार बनाये रखने
तक सर्कार को कुछ दिन के लिये यह माफ़ी का कानून मांग
लेना चाहिये था, पर यह भी न हुआ। इसी कारण फैसला पहले,
चौकसी पीछे से, इस तरह का यह फार्स हुआ। अपनी ही कमेटी
और आप ही न्याय कर्ता! सर्कार कहती है कि "आवश्यक जान कर
किये बेकायदा कामों के लिये हम क्षमा करेंगे, इस प्रकार सेना
को वचन दिया गया था, इस कारण और कुछ तड़ाक्-फड़ाक् से

फौजी अदालतों ने अधिकार से बाहर के परन्तु मधे अपराधियों
जो कुछ सज़ा दी है, उन्हें बाकायदा बनाना आवश्यक होने से,
यह कानून फुर्ती से पास कर डालने की आवश्यकता हुई।"
कथन में के पहले कारण में तो विशेष तथ्य ही नहीं, क्योंकि १८
में गदर समाप्त हो जाने के बाद सर्कार ने घोषणा पत्र निकाला। और
एक वर्ष के बाद १८६० में माफ़ी का कानून बनाया। इसी प्रकार अफ
प्रकरण में भी सर्कार ने माफ़ी का कानून बनाया। इसी प्रकार अफ
कानून पास करने तक १ वर्ष से भी अधिक दिन लगाये। अत 'वचन
दिया रहने के कारण हमें शीघ्रता से कानून पास करना पड़ता है, यह
कारण ही निरर्थक है। दूसरा कारण अलबत्ता विशेष युक्तियुक्त जान
पड़ता है। क्योंकि यदि यह कानून पास न हुआ होता, और बेकायदा
कोर्ट से बेकायदा दीहुई सजाएँ यदि बाकायदा न कीगई होती, तो
सर्कार को उन दोषियों को एकदम ही छोड़ देने के लिये विवश होना
पड़ता। अन्यथा दूसरे ही दिन सर्कार पर अभियोग चलाये जाने का
मौका आता। इस क्षमा कानून से ये सब बातें टल गई और बेकायदा
दी हुई, सज़ाएं न्याय सम्मत बना लीगई। और हमारे मत से यही
एक बात क्षमा कानून से साधी गई है। यद्यपि फौजी अधिकारियों
को आवश्यक किन्तु बेकायदा कृत्यों के लिये माफी आवश्य दे दीगई
और इसके लिये कि उनपर कोई दावा दायर न कर
सकें एसी एक क़लम भी उसमें डाल दीगई, परन्तु
सभी अधिकारियों के काम आवश्यक; और धर्म-
पूर्वक आवश्यक थे या नहीं, इस बात का निर्णय
करने के लिये भी तो प्रत्येक अधिकारी अदालत में
खींच लाया जासकता है। तब "क्षमा किया है।"
यह एक प्रकार का आशीर्वाद ही फौजी अधि-
कारियों को दे दिया गया है, ऐसा कहना अनुचित
नहीं। और सर्कारी सेक्रेट्री का सार्टिफिकेट
यदि किसी अधिकारी को उसकेकार्यों की आवश्य-
कता के लिये, तथा उसकी उस ईमान, इतबार की
सेवा के लिये मिल जाय तो भी वह कोर्ट में बेकाम-
सिद्ध किया जासकता है। तब अधिकारियों के
विरुद्ध प्रजाजन के लिये न्यायालय की ओर जाने
का मार्ग, मूर्खता का हो तो भी वह अभीतक
खुला खुलाहुआ ही है। इसी प्रकार इस कानून से
फौजी अधिकारियों को खाली आशीर्वाद ही मिला,
और सर्कार ने आपन को क्षमा कर लिया। अर्थात्
सर्कार न सन १८८९ में स्वयं ही स्वीकार किया हुआ
सर्व मान्य राजमार्ग त्यागकर चौकसी से पहले ही फैसला कर देने
का फार्स कर, अपनी ही नियुक्त की हुई कमेटी का प्रपंच रच अपने ही
लिये पूरी २ क्षमा मांगली! और अधिकारियों को यह अधूरी ही
मिली। सर्कार के इस सर्वमान्य राजमार्ग को छोड़ने के सम्बन्ध में मा०
मालवीयजी, मा० सिंह, आदि लोकपक्षीय नेताओं ने उसकी खासी
आलोचना की। मा० मालवीयजी ने तो सप्रमाण सिद्ध कर दिया कि,
फौजी अधिकारियों ने शांति स्थापना के कार्य में अनावश्यक कठोरता
का बर्ताव किया। उन्होंने अपने ६५ प्रश्नों की जो श्रृंखला तय्यार की
है, उसका कुछ अंश तो भी स्फुट ठहरा दिया गया है, तथापि अ
वशिष्ट इतनी उपयोगी और आवश्यक है कि, उसपर पूरी २
दीजाय तो किसी न किसी अधिकारी के अवश्य फंसा लिये जाने
सम्भावना है। परन्तु जब जांच कमेटी क्या रिपे लगाती है, उसे दे
करही और बातों का निर्णय करना ठीक होगा।

इस प्रकार फौजी सॉटेशाही के पुराण में का यह पंजाब प्रकरण है
युद्ध किंवा विद्रोह के समय में सॉटेशाही को जन्म देना पड़ता है, यह
बात ठीक है, परन्तु लार्ड मोर्ले का कथन है कि, इस प्रकार शांतिभंग
होने का समय देश में आने देकर फौजी सॉटेशाही का फर्मान निका-
लना; मानो सर्कार की राजनीति पटुता का लोप होजाने का एक खासा
विज्ञापन बांटना है! तो फिर क्या भारत सर्कार ने अपनी खुद की
अवलमन्दी का विज्ञापन स्वयं ही फौजी सॉटेशाही के फर्मान द्वारा
निकाल दिया यह बात सिद्ध नहीं होती है!

डॉ मुहम्मद बशीर एल. एम एस
[जन्म १४।४।१८०२, रोक १०।४।१९
हजा फांसी और जायदाद जप्ती, घटाई
हुई सजा ६ वर्ष सख्त मजूरी। अत्यन्त
लोक प्रिय।
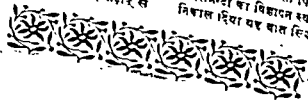
प्रसंग उपस्थित होंगे, तभी उनमें सम्मिलित होना, और अन्य प्रसंगों पर राजकीय पुरुषों के प्रपंच में न फँसना चाहिये, इस प्रकार महायुद्ध से पूर्व का ही ध्येय अब पुनः अमेरिका धारण करेगा-इसमें नाम को भी सन्देह नहीं है। अमेरिका के इस ध्येय को स्थायी रूप मिलने का सम्भव समझ कर ही इँग्लैण्ड, फ्रांस, इटली और जापान इन चार राष्ट्रों ने अपना अगला मार्ग अंकित करने की शुरूआत की है। अक्टूबर के दूसरे या तीसरे सप्ताह में इन चारों राष्ट्र की ओर से जर्मन सन्धी स्वीकार कर लेने की बात प्रगट होजायगी। और अक्टूबर-नवम्बर महिने में टर्की की सन्धी निश्चित करना और जर्मन सन्धी के अनुसार जर्मनी को निःशस्त्र करना इन्हीं दो कार्यों को मित्र सर्कार हाथ में लेगी। अमेरिका के अलग होजाने की बात मान लेने पर मित्रसर्कार इस शब्द पर से पंचमहाराष्ट्रों का बोधक अर्थ न करते हुए इँग्लैण्ड फ्रांस और इटली की त्रिमूर्ति का ही भाव लिया जायगा। क्योंकि जापान, चीन और साईबेरिया में अपना जो सिक्का बिठाना चाहता है, उससे इस त्रिकूट का आज प्रत्यक्ष में कुछ भी सम्बन्ध होने से और इस त्रिकूट वाले राष्ट्रों की महत्वाकांक्षा से जापान का भी प्रत्यक्ष में कुछ सम्बन्ध न रहने के कारण योरोपीय कारस्थान से जापान भी एक प्रकार से अलग ही है, ऐसा मान लेने में कोई हानि नहीं जान पड़ती। सितम्बर में फ्रांस को इँग्लैण्ड की ओर से सीरिया प्रांत दे दिया जाने के कारण वह अब इँग्लैण्ड की मुसलमानी महत्वाकांक्षा के लिये अवरोधक न बनेगा। जर्मनी को निशस्त्र बना कर रशिया में अपने तंत्रानुकूल राज्य सत्ता यदि राष्ट्रत्रिकूट के द्वारा स्थापित होसकी तो वह अपने को कृतार्थ समझेगा। अतः रशिया में से बाल्शेविक सत्ता को हटा कर वहां अपने अनुकूल सत्ता किस प्रकार स्थापित कीजाय यही एक विकट प्रश्न आज उसके सन्मुख खड़ा हुआ है। रशियन बाल्शेविकों पर साइबेरिया में से आक्रमण कर आने वाले एडमिरल कोलचॉक की सेना का पराभव होकर अगस्त और सितम्बर इन दो महिनों में उसकी लगातार खदेड़ हुई। सितम्बर के अन्त में बाल्शेविकों ने एडमिरल कोलचाक का टोबोलस्क शहर लेलिया और पश्चिम साइबेरिया भर की रेलों पर भी अधिकार जमालिया, यह समाचार मास्को सर्कार ने प्रगट किया है। अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में खबर मिली है कि, कोलचाक ने नदीवाली सामरिक नावों के द्वारा पुनः टोबालस्क शहर लौटा लिया। अर्थात् साइबेरियन रेल्वे बाल्शेविकों के अधिकार में चली जाने के बाद उससे उत्तर की ओर कोलचाक की सेना पहुँची है, और वह इस रेल के द्वारा उतरना चाहती है यही भावार्थ इन समाचारों पर से निकलता है। रशियन तुर्किस्तान में भी बाल्शेविक स्वरूप की सर्कार पुनः स्थापित होकर मास्को और रशियन तुर्किस्तान का फिर से सम्बन्ध होगया है। रशियन तुर्किस्तान और मुसलमानी प्रदेश की सम्बन्ध—व्यवस्था की ओर ध्यान देने के लिये मास्को में एक स्वतंत्र विभाग खोला गया है। और अफगानिस्थान में के भारतीय क्रांतिकारक लोग भी इस नये विभाग की ओर न्याय याचनार्थ जाने की बात भी प्रगट हुई है। हिरात, बुखारा और समरकंद रेल्वे पर भी बाल्शेविकों की सत्ता स्थापित हुई या नहीं, सो अभी प्रगट नहीं हुआ है। परन्तु रशियन तुर्किस्तान भी बाल्शेविकों ने ले लिया है और ईरान और अफगानिस्तान की सीमा तक उनकी सत्ता शीघ्रही स्थापित होगी ऐसा भय प्रतीत होने लगा है। रशियन तुर्किस्तान और पश्चिम साइबेरिया की रेलें बाल्शेविकों के हाथ लग जाने से अन्नादि सामग्री का संग्रह उन के पास खासी तादाद में होता जाकर कोलचाक की सेना के भय से आगामी वसन्त काल तक के लिये तो बाल्शेविक बिलकुल ही मुक्त बन गये हैं। बिलकुलही उत्तर की ओर आर्चेंगल वाली अंग्रेजी सेना ने सितम्बर के अन्त में रशियन भूमि को अन्तिम प्रणाम कर आगामी वर्ष के मई मास में बर्फ के ढलक जाने पर तथा आर्चेंगल में पुनः अंग्रेजी जहाजों का आवा गमन शुरू होने के बाद उस ओर के संकट का यदि बाल्शेविकों ने विचार किया, तो भी चल सकेगा। तब यह कहने में हानि नहीं कि, आर्चेंगल की ओर का यह संकट [illegible]। मास्को वाली लेनिन सर्कार को अक्टूबर में दक्षिण रशिया [illegible] सेनापति डेनिकन का भय, में ही मृत्यु का भय [illegible] है। आरम्भ में कीव शहर में लेकर सेनापति डेनिकन और [illegible] मिल कर एक होगई, और उसने कीव के उत्तर [illegible] मास्को के तरफ से सितम्बर में बाल्शेविकों पर आक्रमण करने की हलचल की है। सितम्बर के आरम्भ में बाल्शेविकों ने सेनापति डेनिकन के दाहिने ओर तथा मध्यभाग पर भारी हमले किये। सितम्बर में सेनापति डेनिकन ने दाहिनी बाजू कुछ पीछे हटाली, को सम्हाले रह कर बांई ओर कीव के उत्तर में आक्रमण कर [illegible]बर के प्रथम सप्ताह में अपनी सेना को मास्को से दक्षिण की [illegible] तीन सौ मील तक पहुँचा दिया। एडमिरल कोलचाक की मार्गे होजाने के कारण बाल्शेविकों के विरुद्ध लड़ने वाली रशियन सेना श्रेय कोलचाक से छीनकर सितम्बर में मित्र सर्कारने से० [illegible] सौंप दिया। बाल्शेविकों के स्थान पर रशिया में नई सर्कार स्थापित का काम से० डेनिकन को सौंपा जाकर पौलैण्ड, फिनलैण्ड और [illegible] प्रांत के लोगों से उन्होंने उसी दृष्टि से बात चीत भी शुरू की है। पौलैण्ड, युक्रैन और सेनापति डेनिकन तीनों की सेनाएँ एक होगई और कीव शहर में इनका मध्य भाग है। पोलैण्ड बायीं सीमा [illegible] डान नदी के किनारा का प्रांत सीधी सरहद है [illegible]। युक्रैन की सेना मिलने से पूर्व डेनिकन के पास [illegible] लाख सेना थी। युक्रेन और पोलैण्ड की सेना मि[illegible] आज से० डेनिकन के अधिकार में पांच छह लाख सेना हो सकती है। काले सागर में से अंग्रेज आज उन्हें शस्त्रास्त्र और गोलीबारूद की अच्छी सहायता पहुँचा रहे हैं। इसी कारण अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में से० डेनिकनने प्रगट किया है कि अब हम बाल्शेविकों की सत्ता को पूर्णतयः विनष्ट करसकेंगे। इँग्लैंड और फ्रांस से सेनापति डेनिकन को मनुष्यबल मिलने की विशेषतः आशा नहीं। नया युद्ध करने को आज इँग्लैंड और फ्रांस के लोगों में उत्साह शेष नहीं रहा है। इसके सिवाय रशिया में जाकर बोल्शेविकों के विरुद्ध युद्ध करने के झगड़े में अपना देश न पड़े, इस प्रकार का सामान्य लोकमत होने के कारण आज इँग्लैंड और फ्रांस के मुत्सद्दी अपनी सेना रशिया की ओर भेजने में हिचकते हैं। सितम्बर में इँग्लैंड और फ्रांस दोनों देशों में रेल्वे सम्बन्धी हड़ताल की धूम मची रहने के कारण रशिया के झगड़े में सेना भेजना, दोनों देशों के लिये असुविधाजनक होगा। अतः पोलैंड और युक्रैन की सेना पर भरोसा रख कर से० डेनिकन को मास्को शहर लेना चाहिये। बाहर से मनुष्यबल मिल नहीं सकता ऐसा मान लेने पर तो कहा जा सकता है कि; से० डेनिकन की सेना ५।७ लाख की सीमा भी पार न कर सकेगी। शस्त्रास्त्रों की अच्छी सहायता मिलती रहने पर भी इतनीसी सेना बोल्शेविकों का पराभव करने को समर्थ हो सकेगी क्या? से० डेनिकन क्या, और एडमिरल कोलचाक क्या, इनके अधिकार में की रशियन सेना में एक ऐसी कुछ मिफत है कि इनकी सेना कब बिखर जायगी इसका कोई नेम ही नहीं है। इनकी सेना में के कितने ही सेनानायक राजवंशोंपर प्रेम करनेवाले हैं, और अब जो भी लोकशाही स्थापित करने के लिये उन्होंने शपथ लेली है तथापि विजय प्राप्त होने पर येही सेनानायक पुनः राजवंश के पुरुषों को गद्दी पर बिठावेंगे, इस प्रकार उन्हीं में से कई सेनानायकों का भय प्रतीत हो रहा है। इस भय का अनुकरण कर बोल्शेविकों ने सेनापति डेनिकन की सेना में गुप्त रूपसे हैण्डबिल बांट दिये कि बस इस, सेना के होश उड़कर यह न जाने कहां हिम्मत हार जायगी। इसके सिवाय युक्रेनियन सेना को भी से० डेनिकन पर विश्वास नहीं होता। अक्टूबर के आरंभ में डेनिकन के मास्को से दक्षिण की ओर तीन सौ मील तक पहुंच जाने पर युक्रेनियाने अपनी पूर्ण स्वतंत्रता स्वीकार करने के लिये मित्र सर्कार और डेनिकन से प्रार्थना की। उस पर कुछ भी ध्यान न दिया जाने से ता० ८ अक्टूबर को युक्रेनियाने सेनापति डेनिकन पर आक्रमण कर दिया, इसी कारण कीव में की से० डेनिकन की सेना का मध्यभाग विचलित हो उठा है। जर्मन सन्धी से पौलेण्ड की स्वतंत्रता निश्चित होकर वह मित्र सर्कार की ओर से बाल्शेविकों के विरुद्ध लड़ रहा है, यह बात जो भी ठीक है, परन्तु अपना देश छोड़ बहुत अन्तर पर जाकर सेना की भारी हानि करते हुए लड़ने का जोश पोलैण्ड में नहीं है। उसे अभी तक जर्मनी का भय बनाही हुआ है, साथही यह भी चिन्ता है कि, कहीं देश में बाल्शेविकों का मत फैल कर अपनी स्थिति तो नहीं बिगड़ती है! पूर्व की ओर एडमिरल कोलचाक पर भेजी हुई सेना को लौटाकर सेनापति डेनिकन पर यही सेना अक्टूबर के आरम्भ में मास्को सर्कार भेजने लगी है, इस कारण रशिया का यह झगड़ा मिटने तक तटस्थ बैठे रहने के सिवा सेनापति डेनिकन अक्टूबर में कुछ भी न कर सकेंगे। बाल्शेविक सर्कार के पास आगस्त में कुल बारह लाख सेना थी-ऐसा प्रगट हुआ है। उसमें से सात लाख सेना तो भिन्न २ मोर्चों पर थी और पांच लाख मुख्य स्थान पर थी।

अगस्त सितम्बर में सेनापति डेनिकन के विरुद्ध बाल्शेविकों की दो तीन लाख ही सेना लड़ती थी, सितम्बर के अन्त में पूर्व ओर के पड़-मिरल कोलचाक के मोर्चे पर और उत्तर वाले आर्चेंगल के मोर्चे पर उतना भय न रहने से, अक्टूबर में से० डेनिकन पर पाँच छह लाख सेना से बाल्शेविकों का आक्रमण होने का सम्भव है। और इसी मौके पर युक्रेनिया और बाल्शेविकों के बीच स्पर्धा होगई तो से० डेनिकन की बड़ी दुर्दशा होगी। से० डेनिकन की सेना में रंग ढंग बिगाड़नेवाले जैसे बीज हैं, वैसे ही बाल्शेविकों की सेना और मास्को वाली बाल्शेविक सर्कार में भी हैं। बाल्शेविकों की सेना परदेशीय वेतन भोगियों की बनती जाने के कारण; और उसमें जर्मनी की नई भर्ती अधिकारियों के पद पर बढ़ती जाने से मास्को सर्कार बाल्शेविक स्वरूप की न रहे तो ठीक है, इस प्रकार सेना की कानाफूसी चल रही है। स्वतः जर्मनी के षड्यन्त्र भी रशिया में जर्मनी की इच्छानुसार नई सोशियालिष्ट सर्कार स्थापित कर उसके द्वारा शांति स्थापना करवाते हुए रशियन लोगों से धन्यवाद के उद्गार निकलेवाले की इच्छा से सेनापति डेनिकन के आक्रमण से नहीं वरन्, जर्मनी के षड्यन्त्र के कारण लेनिन का आसन मास्को में अधिक दिन न टिक सकेगा। निदान लेनिन को स्वयंही जर्मन पद्धति की सोशियालिष्टिक सत्ता मास्को में स्थापित करने का विवश होना पड़ेगा, इस प्रकार भी कई बुद्धिमानों को भय प्रतीत होने लगा है। रूसो-जर्मन सोशियालिष्टिक सर्कार की इस प्रकार से यदि मित्रता होगई तो यह इंग्लैण्ड, फ्रांस और इटली की त्रिकुटी के लिये भी आफत खड़ी कर सकेगी, इस प्रकार विद्वानों का मत है। जर्मन लोग बाल्शेविकों की सेना में घुस गये हैं, और उनसे बाल्शेविक सेना का बल बढ़गया है। इसके सिवाय जर्मनी में से सात लाख निरुद्योगी मज़दूर उपनिवेश स्थापित करने के लिये भेजने को आज ही जर्मन सर्कार तय्यार है, और इस विषय में मास्को सर्कार से जर्मन सर्कार की बात चीत भी शुरू होगई है। पहले ये निरुद्योगी लोग अमेरिका जाया करते थे, परन्तु अब वहां जाने के लिये मार्ग न रहने से, उसके इस अतिरिक्त बल की व्यवस्था रशिया में ही करनी चाहिये—इस प्रकार जर्मनी कह रहा है। और इस कारण पर से रीगा के आसपास की १।२ लाख जर्मन सेना वहां की रशियन सेना में मिलकर अपने को वहीं का निवासी कहलवा—वहीं धरना दे कर बैठ गई है। मित्र सर्कारने जर्मनी के पीछे यह अड़ङ्गा लगाया है कि, रीगा की ओर की सेना को स्वदेश में लौटा लो, अन्यथा तुम्हारा व्यापारी सम्बन्ध तोड़ कर बाहर से आनेवाली अन्नादि सामग्री भी रोक दी जायगी। एक ओर तो जर्मन सर्कार अपने को भूखों न मारने के लिये मित्र सर्कार के पाँव पकड़ने से नहीं चूकता, और दूसरी ओर से वह रीगा में की अपनी सेना को भी वापस नहीं बुलवाता। रीगा की ओर फिनलैंड की खाड़ियों की ओर के टापू में के रशियन लोगों में दो दल बनाये हैं। एक मित्र सर्कार का पक्षपाती है और दूसरा जर्मनों का। मित्र सर्कार की इच्छा पेट्रोग्राड में अपनी सत्ता स्थापित करने की है, और इसी आशा से वे अपने अनुकूल दल की सहायता कर रहे हैं। अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में इस दल ने बाल्शेविकों का पराभव भी किया है परंतु तत्कालही जर्मन पक्षने उनकी पिछली ओर से हमला कर उन्हें पीछे भी हटा दिया है। रीगा-फिनलैंड की ओर का जर्मन पक्ष सन्धी करने को तय्यार है, किन्तु इस शर्त पर कि मास्कोवाली बाल्शेविक सर्कार रशियन राज्यतंत्र को जर्मन पद्धति पर सोशियालिष्टिक रूप देने को राजी हो। जर्मनी के इस षड्यंत्र को नष्ट करने के लिये, उसे अच्छी तरह लानत देने का मित्रसर्कार विचार कर रही है। भूखों मारने से ही वह होश में आता है या अधिक कठोर उपायों की योजना करने से, इसका पता अक्टूबर के अंत में लग सकेगा।

शरत्--निदर्शन।

(१)

दशा एक सी नित्य, किसी की रहै न प्यारे।
राजा है जो आज, फिरे कल मारे-मारे॥
जग परिवर्तनशील, नहीं कुछ वश चलता है।
जैसे बोये काज, विभव ही बनता है॥
जो मिलता सो होता विलग, आता है सो जात है।
है आज शरत् को देखिये, चलीगई बरसात है॥

(२)

हिन्दू विधिवत् पितृ-पक्ष में तर्पण करते।
खिला विप्र को देहि दान, बहु आदर करते॥
मची धूम फिर दुर्गा-पूजा की घर घर में।
फैल गया उत्साह, सभी लोगों के उर में॥
सब पूजि पूजि जगदम्ब को विमल चरण शिर नावहीं।
"हे जननि! हरहु संकट विपुल" कहि २ वचन सुनावहीं॥

(३)

सुखदायक त्योहार, दशहरा भी आया है।
वनिता, बालक, युवक, जरठ के मन भाया है॥
रावण का मद रोष सभी जिससे हारे थे।
रघु-कुल-भूषण राम, इसी दिन जा मारे थे॥
बस इसी स्मरण के हेतु हम, मान रहे इस पर्व को।
उसका विनाश होता सदहि, अपनाता जो गर्व को॥

(४)

निरुदित हरी न मेघ, पंक का नाम नहीं है।
मैले जल के हेतु, नदी बदनाम नहीं है॥
घन विहीन नभनील, अधिक शोभा देता है।
रजनी में शशि विमल, अहो! मन हर लेता है॥
हैं कास फूल फूले अमित, सो जनु मानव स्वाय के।
यदि दधिर वेष नव साधु का, शरत् प्रकट भी आय के॥

(५)

सर में निर्मल नीर, कमल सब फूल रहे हैं।
हर्षित होकर मधुप, आय दिग गूँज रहे हैं॥
विविध भाँति के जीव, नहीं पड़ते दिखलाई।
पाय सुजुग को मनहुँ, दुष्ट सब चले पराई॥
हैं उद्यम के दिन आगये, भिड़े काम में लोग सब
मन दिये भ्रमण में सुजन बहु, निकल पड़े चहुँ ओर अब॥

(६)

लगे सुहावन प्रात, बाल रवि की छवि प्यारी।
खिली चमेली मधुर गंध जिसकी अति प्यारी॥
पके हुए सर्वत्र, खेत में धान भरे हैं।
कृषकों के ये रत्न, कहैं या प्राण खड़े हैं॥
लखि इन्हें मुदित होते कृषक, खिली हृदय-पंकज-कली।
मन में भविष्य के हेतु कुछ, बँधी आश दुनहीं भली॥

(७)

बढ़ती क्रमशः रैन, दिवस लघु होते जाते।
आत शरत् ऋतु सुखद, लखहु खंजन हैं आते॥
बांधे गेहूँ मृदुल, उगे अंकुर अति प्यारे।
पड़ उन पर कण ओस, अहो! अनुपम छवि धारे॥
सब गेह स्वच्छ करने लगे, लखि दीपावलि को निकट।
है सभी पर्व उपदेशप्रद, समझहि नहिं मूरख विकट॥

(८)

कौनि तुम्हारी शरत्! कहो कैसे हम गावैं?।
करैं प्रयत्न अनेक, अन्त फिर भी नहिं पावैं॥
तुम में श्रम है नित्य, लगा हर यही हमारा।
घर देखा दिन रात, हमैं जो गमन तुम्हारा॥
जिसके आने में दुख हो, वहीं प्रेम-साधन भरैं।
धिक् उसको जिसके गमन में, शोषित नीर जगत लहै॥

[illegible] त्रिपाठी ([illegible])

श्रीशंकराचार्य का आत्म-साक्षात्कार ।

(लेखक—प्रो० रामचन्द्र दत्तात्रेय रानडे एम्. ए.)

सर्व साधारण रीति से जिन २ लोगों ने शंकराचार्य के तत्वज्ञान का अभ्यास किया है उन्हें जान पड़ता है कि; शंकराचार्य का अद्वैत वाद केवल बुद्धिगम्य विषय होकर प्रत्यक्ष अनुभव के लिये क्रमशः आत्मसाक्षात्कार करने की आवश्यकता नहीं है। बहुत कम लोगों की ऐसी कल्पना नहीं है; इस बात को हम मानते हैं। परन्तु साधारणतः वेदान्त के मुख्य ध्येय का केवल अपनी ही बुद्धि द्वारा निश्चय होसकता है, और राजयोगादि की वेदान्त सिद्धान्त के लिये आवश्यकता नहीं है, ऐसा भी कितने ही लोग मानते हैं। जिन लोगों ने केवल शंकराचार्य की 'प्रस्थानत्रयी' को पढ़ा है; उन लोगों को शंकराचार्य की आत्मसाक्षात्कार के लिये पिपीलिका मार्ग के अवलंबन की बात अधिकतर ज्ञात नहीं होती। इस कारण शंकराचार्य के समस्त ग्रंथों में से 'योगतारावली' नामक प्रकरण उद्धृत कर आज यहां उसी पर विचार किया जाता है।

यह प्रकरण शंकराचार्य के समग्र ग्रंथ में प्रत्येक मनुष्य को देखने को मिल सकता है। सन १८९९ ई० में मैसोर सर्कार ने शंकराचार्य के संकीर्ण ग्रन्थ जो चार भागों में छपाकर प्रकाशित किये हैं, उनमें से चौथे भाग में 'योगतारावली' नामक प्रकरण पाठकों को पृष्ठ १११ पर देखने को मिल सकता है। इसी प्रकार आज कल वाणी-विलास प्रेस ने भी शंकराचार्य के समग्र ग्रन्थ बीस भागों में छाप कर प्रकाशित किये हैं उनमें भी यह प्रकरण उपलब्ध है। लगभग सभी लोगों का विश्वास है कि यह प्रकरण आद्य शंकराचार्य का ही रचा हुआ है। क्योंकि इसमें के २० वे श्लोक में 'श्रीशैल' का उल्लेख पाया जाता है, जहां आद्य शंकराचार्य ने तपश्चर्या की थी। और वह उल्लेख भी उनकी तपश्चर्या के अनुरोध से ही यहां आया है, इसे अच्छी तरह ध्यान में रखना चाहिये। वह श्लोक इस प्रकार है—

> सिद्धिं तथाविधमनो विलयां समाधौ
> श्रीशैलशृंग कुहरेषु कदोपलप्स्ये।
> गात्रं यदा ममलता परिवेष्टयन्ति,
> कर्णौ यदा विरचयंति खगाश्च नीडान् ॥

श्रीशैल पर्वत की उत्तुंग गुफाओं में लताएँ वृक्षों से लिपटने की अपेक्षा मेरे शरीर को ही एक निश्चल वृक्ष समझ कर चारों ओर कब लिपट जायँगी, और वृक्षों तथा उनकी खोहों में घोंसले बनाने की अपेक्षा मेरे कर्ण विवरों को ही एकान्त स्थान समझ कर पक्षी इनमें कब अपने घोंसले बनावेंगे। इस प्रकार के मनोविलय की आतुरता शंकराचार्य ने उपरोक्त श्लोक में प्रगट की है।

इस बात को भी याद रखना चाहिये कि; इस प्रकार की सर्व साम्यावस्था का अनुभव करने की सभी साधु पुरुषों को सुदृढ इच्छा रहा करती है। मेरे कर्ण विवरों में आकर पक्षी कब अपने घोंसले बनावेंगे, इस प्रकार अपनी मनीषा को जिस आतुरता से शंकराचार्य ने उपरोक्त श्लोक में प्रगट किया है, उसी प्रकार एक बार तुकाराम महाराज ने भी इच्छा प्रगट की थी। वे एक बार अपने रास्ते आरहे थे, और थोड़ी दूर पर उन्हें कुछ पक्षी दाने चुगते दिखाई दिये, जब तुकाराम उनके पास चले गये तो वे डर कर उड़ गये। इस पर से उन्होंने यह अनुमान निकाला कि, स्वतः अपने में का ही भेद भाव नष्ट न हो जाने से ये पक्षी उड़ गये हैं, इस पर से उन्होंने अभंग (कविता) बनाई। जिसका भावार्थ यह है कि, 'मैंने जिन २ भूतों को देखा वे मुझे देख डर गये। कारण ईश्वर जाने। परन्तु अब मैं कहनाहूं संसार निर्वैर बन जाय, कोई मुझ पर शंका न करे, आदि। इस पर स्वतः को साम्यावस्था प्राप्त हुई है या नहीं इस संदेहात्मक प्रश्न में से प्रत्येक साधुपुरुष को निकलना पड़ता है। अस्तु।

'योगतारावली' को आद्य शंकराचार्य का मानने के लिये एक कारण और भी है। बृहत्स्तोत्र रत्नाकर आदि ग्रंथों में शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध कितने ही स्तोत्र मिलते हैं, इसमें शंका नहीं है। परन्तु उन स्तोत्रों के अन्त में 'शंकराचार्य विरचित स्तोत्रं सम्पूर्णम्' ऐसा ही उल्लेख होता है। इस प्रकार के कई स्तोत्र शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हैं, किन्तु वे सब आद्य शंकराचार्य के ही बनाये हैं, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। 'विवेक चूड़ामणि', 'शतश्लोकी' आदि प्रकरण शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हैं, उनके अन्त में 'श्रीगोविन्द भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्रीमच्छंकराचार्य विरचित' का उल्लेख मिलता है और वह 'योगतारावली' के अन्त में भी है। 'योगतारावली' आद्य शंकराचार्य की मानने में कोई हानि नहीं दीख लेख में योगमार्ग से अद्वैत का साक्षात्कार स्वतः किस प्रकार आसकता है, इसके विषय में योगतारावली में वर्णित अत्युत्कृ पर से ही कुछ लिखा जायगा। अद्वैत साक्षात्कार के सम्बन्ध में ही लोगों के मन में भूल भरी बातें समाई हुई हैं। "अव्यक्ताहि दुःखं देहवद्भिरवाप्यते" इस गीतावाक्य को ताक में रख कर अ मार्ग से ही अव्यक्त का साक्षात्कार करने की प्रवृत्ति कितने लोगों में होती है। मैं ब्रह्महूं, इस प्रकार केवल बुद्धि के निश्चय से भ्रामक कल्पना करके अद्वैत के प्रत्यक्ष अनुभव के मार्ग को देखने की गड़बड़ में अधिकतर लोग नहीं पड़ते। ऐसे मनुष्यों को शंकराचार्य का योगतारावली प्रकरण अवश्य देखना चाहिये। अद्वैतानुभव की परमावधि को पहुँचते हुए शंकराचार्य भी अपनी साधक स्थिति में किस मार्ग से गये, इसे समझ लेने के लिये उनका स्वकृत 'योगतारावली' प्रकरण उनके प्रस्थानत्रयी से भी हमारे लिये अधिक उपयोगी होसकता है। सारांश 'योगतारावली' शंकराचार्य की साधकावस्था का आत्मचरित्रही है।

अब हम इस 'योगतारावली' प्रकरण में श्रीशंकराचार्य ने अद्वैत साक्षात्कार के लिये उपयोगी राजयोग का मार्ग किस प्रकार अंकित किया है, उसे देखें। जिसके योग से परमात्मस्वरूप में अपना मन स्थिरता से लीन होसकता है उसे राजयोग की संज्ञा दीजाने पर ऐसे राजयोग को हठयोग किंवा निग्रह योग की कहां तक आवश्यकता है? यह एक महत्व का प्रश्न है। इस स्थान पर इस प्रश्न का साङ्गोपाङ्ग विवेचन करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती। तथापि इतना अवश्य कहा जासकता है कि, कुंभक से अथवा कुंभक के बिना केवल प्राणायाम के द्वारा अपना मन परमात्मा की ओर ले जाने में हठयोग की थोडी सी आवश्यकता है। इतने पुरताही श्रीशंकराचार्य ने हठयोग का आश्रय लिया था, ऐसा उनकी योगतारावली पर से सिद्ध होता है। जालंधर, उड्डीयान, और मूलबन्ध इन तीनों बन्धन का यदि हम नित्य अभ्यास करने लगें तो दारुण काल का भी हमें भय न रहेगा, ऐसा उन्होंने इस प्रकरण के पांचवे श्लोक में कहा है। उसी भांति इन तीनों बन्धन की सहायता से हमारी कुंडलिनी जागृत होजाने पर 'प्राण की गति' सुषुम्ना में होने लगकर प्राणवायु स्वयंही कुंठित होने लगती है, और रेचक और पूरक दोनों क्रियाएँ बन्द होजाने से केवल कुंभ-रूपी प्राण की स्थिति हमारे अनुभव में आती है। उसी प्रकार कुंडलिनी जागृत होने पर हमारी चन्द्रनाडी संतप्त होती है, और उससे जो अमृतधारा का स्राव होता है, उसका स्वाद लेनेवाला योगी धन्य समझना चाहिये, ऐसा शंकराचार्य ने कहा है। केवल कुंभ से प्राण की गति और अगति कुंठित होजाने पर प्राण सहजही 'विष्णुपदान्तराली' लीन होजाता है। ऐसी दशा में धारणा ध्यान का परिश्रम नहीं करना पड़ता। देश, काल का लोप होना जान पड़ता है और दृश्य वस्तुओं का लोप होकर जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति से परे की दशा प्राप्त होजाती है। जीवन-मरण की पर्वाह नहीं रहती। मन उन्मत्त होकर केवल संचित अनुभव में आने लगता है। शांत स्थिति में जिस प्रकार कोई दीपक निश्चल रहता है, उसी प्रकार संकल्प विकल्प का आवेग बन्द होकर योगी अत्यन्त निश्चल स्थिति को प्राप्त होजाता है। इस प्रकार की योग निद्रा का अनुभव करते हुए अज्ञानान्धकार का निरास होकर परमात्मभानु का प्रकाश चारों ओर फैल जाने के कारण से योगियों को यह संसार दीखता रहने पर भी अरण्य सा जान पड़ता है। उनकी दृष्टि में किसी भी प्रकार का ध्येय न रहते हुए केवल परमात्म स्वरूप से ही उनकी दृष्टि परिपूर्ण होजाने के कारण ऐसा विलक्षण चमत्कार उनके अनुभव में आता है, ऐसा शंकराचार्य ने कहा है।

यहां एक बात का और भी उल्लेख किये बिना हम नहीं रह सकते, श्रीशंकराचार्य ने इस प्रकरण के आरम्भ में ऐसा कहा है कि, परमात्म स्वरूप में मनोलय करने के जो लक्षावधि मार्ग हैं उन सब में नादानु-संधान से उत्पन्न होनेवाला लयही श्रेष्ठ है:—

महाशिवोक्तानि सपादलक्ष लयावधानीनि वसंति लोके ।
नादानुसंधान समाधिमेकं मन्यामहे मन्यतमं लयानाम ॥

हमारी सभी नाड़ियों का शोधन होजाने पर 'अनाहत' नामक नाद भिन्न २ प्रकार से भीतर का भीतर ही साधक को सर्वदा अनुभव में आता रहता है, और 'तत्त्वमसि' के वाक्य का साक्षात्कार करने को यह लयही उपयोगी है ।

नादानुसंधान! नमोस्तु तुभ्यं त्वां साधनं तत्त्व पदस्य जाने ।
भगवन् प्रसादात् पवनेन साकं विलीयते विष्णुपदे मनोमे ॥

इस पर से इतना स्पष्ट दीख पड़ता है कि; शंकराचार्य को स्वतः आत्मसाक्षात्कार कर लेने को यह नादानुसंधान लय ही उपयोगी हुआ होगा । अब नादानुसंधान लय क्या है, शंकराचार्य के सिवाय दूसरे को भी इसका अनुभव हुआ है या नहीं, योरोपस्थ राजयोगी लोगों का अनुभव भी इसी प्रकार का है या नहीं, मानसशास्त्र दृष्टि से धर्मप्रवृत्ति के विकास का जो विवेचन आज कल पाश्चात्य पंडितों ने किया है, उसमें भी इस प्रकार के अनुभव को स्थान मिला है या नहीं, इन सब बातों का विचार हम आगे किसी समय करेंगे । आज इतना कहना आवश्यक जान पड़ता है कि, अद्वैत् साक्षात्कार होने के लिये केवल बौद्धिक मार्ग का ही अवलम्बन न करते हुए प्रत्यक्ष शंकराचार्य को भी राजयोग के मार्ग से ही आत्मसाक्षात्कार करने को क्यों विवश होना पड़ा, इस बात को स्पष्टतयः दिखाने के लिये जिस में हमारे मतानुसार शंकराचार्य ने प्रत्यक्ष अपना अनुभव ग्रथित किया है, इस प्रकार के लोगों का ध्यान आज तक दुर्लक्ष्य किये हुए 'योगतारावली' प्रकरण की ओर आकृष्ट करने और तदनुसार उन्हें आत्मसाक्षात्कार का मार्ग खोजने की प्रवृत्ति दिलाने के उद्देश्य से ही यह लेख लिखा गया है ।

मिस्टर ग्लैडस्टन की कुछ बातें।

(ले०—अध्यापक जहूरबख्श ।)

हमारे पाठक महामति ग्लैडस्टन के नाम से अवश्य ही परिचित होंगे । आप एक दो बार ही नहीं बल्कि पूरे चार बार महारानी विक्टोरिया के प्रधान मंत्री बनाये गये थे । इस महत् पद के लिये कितनी योग्यता दरकार है, इसके कहने की जरूरत नहीं । फिर ग्लैडस्टन, अब चार २ बार इतने बड़े पद पर नियुक्त किये गये, तब उनकी योग्यता के विषय कुछ कहना धृष्टता मात्र है । इन महात्मा का जन्म इँगलैंड के लिवरपूल नगर में एक प्रतिष्ठित व्यापारी कुल में सन १८०९ के दिसम्बर मासकी ९ वीं तारीख को हुआथा । अपनी शाला में आप सदैव प्रथम रहे । तथा सहपाठियों और अपने अध्यापकों तक से यथेष्ट मान पाते रहे । विद्यार्थि दशा में ही आपकी वक्तृत्व शक्ति को देख लोग कहने लगे थे कि ये अवश्यही इंगलैंड के प्रधान मंत्री होंगे । उनकी भविष्यवाणी सच निकली । स्कूल छोड़ने के कुछ दिनों बाद ही आप पार्लमेंट के सदस्य चुने गये तथा उसमें लगातार पूरे ६१ वर्ष तक कार्य किया ! इस सुदीर्घ काल में आपने अपने देश की खूब सेवा की और यूरोप के अन्य कई राष्ट्रों को भी बड़ा लाभ पहुँचाया । बलगारिया आज इन्हीं की कृपा से स्वतंत्रतामृत पान कर रहा है । जिस इटली ने आज इतनी उन्नति की है उसके उद्धार कर्त्ताओं में आप भी एक थे । यद्यपि यह सच है कि इटली के पुत्र होने के कारण मैजिनी, गैरीबाल्डी तथा कावूर आदिने उसे एक राष्ट्र का रूप देने और स्वतंत्र करने के लिये अतुल परिश्रम किया था, पर ग्लैडस्टन के दो तीन पत्रों ने ही इटाली के उद्धार में बड़ी सहायता पहुँचाई थी । इसे स्वयं मेज़िनी और गैरीबाल्डी ने स्वीकार किया है । आपने बद्किस्मत् आयर्लेंड को भी स्वराज्य दिलाने के लिये बड़ा प्रयत्न किया था, जिससे इन्हें बहुत ही मानापमान सहना पड़ा । पर आयर्लेंड का भाग्य ! आप भारत को भी नहीं भूले थे । लॉर्ड रिपन इन्हीं की चेष्टा से भारत के वाइसराय हुए थे । इसके लिये भी इन्हें बहुत कटाक्ष सहना पड़े थे । इन्हीं की प्रेरणा से लॉर्ड रिपन ने भारत का बहुत हित किया था । रिपन महोदय भारत का जितना भला कर गये हैं उतना न तो उनसे पहिले के ही किसी वाइसराय ने किया था, और न बादके ही । वास्तव में रिपन महोदय भारत में अपना नाम चिरस्थायी कर गये हैं । भारतीय उन्हें सदैव प्रसन्नता पूर्वक याद करेंगे ।

मि. ग्लैडस्टन

ग्लैडस्टन ने देश सेवा ही की हो सो नहीं, आपने अनेक अच्छे २ ग्रंथ लिख कर अपनी मातृभाषा का भी बड़ा उपकार किया है । वे बड़े ही विद्याव्यसनी थे वे बड़े ही धार्मिक तथा सुशील थे । उन्हें छल कपट छू भी न गया था । यह सभी जानते हैं कि राजनैतिक लोग कितने धूर्त होते हैं, ६१ वर्ष तक पार्लमेंट सरीखी राजनैतिक संस्था में काम करने पर भी उनमें इस दुर्गुण का न होना बड़े ही आश्चर्य की बात है। आप शांति तथा सहृदयता के समुद्र थे । वह अपने समय में प्रिंस बिस्मार्क के सदृश विद्वान् तथा चतुर समझे जाते थे । एक विद्वान् की सम्मातमें १९ वें शतक में नेपोलियन के बाद ग्लैडस्टन सरीखा मनुष्य उत्पन्न नहीं हुआ ! अमेरिका के प्रेसीडेंट माकिनले की सम्मति में आप अपने समय के सर्व श्रेष्ठ पुरुष रत्न थे ! इनके बाद ऐसा पुरुष होगा या नहीं, इसमें भी प्रेसीडेंट महोदय को शक ही था ! (यदि हमारी धृष्टता क्षमा कीजाय तो हम कह सकते हैं कि, इनके बाद भी अनेक महा पुरुष होसकते हैं । उदाहरणार्थ लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, दादाभाई नौरोजी, कैसर विलियम, प्रेसीडेंट विल्सन, लाइडजार्ज आदि का नाम लिया जा सकता है । हमारे मालवीयजी, अलीबन्धु, लाला, लजपतराय, महात्मा रानडे, सुरेंद्र, गोखले आदि ग्लैडस्टन सी सुविधा पाने पर क्या नहीं कर सकते ?) यदि हम अपने पाठकों के सामने ऐसे महापुरुष की दो चार बातें उपस्थित करने का साहस करें तो अनुचित न होगा ! क्योंकि हम आप ऐसे ही महापुरुषों के चरित्रोंका मनन और अनुकरण करने से कुछ सीख सकते हैं । खैर ।

(१) व्यसन से घृणा।

इँगलैंड में मद्यपान का प्रचार बहुत है, पर ग्लैडस्टन उसे कभी छूते भी न थे । भला जिसे विद्यापान का व्यसन लग चुका है उसे मद्यपान रुचिकर हो सकता है ? विद्याव्यसन त्याग कर मद्य-व्यसन कैसा ! इस विषय में उनका एक सहपाठी मित्र लिखता है—" एक समय न्योते में जाने पर जब उन्हें थोड़ा मद्य लेने को कहा गया, तब आपने घृणा-पूर्वक साफ़ इन्कार कर दिया ! उनकी इस बात से मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा । " सच है सदाचार अपना प्रभाव कहाँ नहीं दिखाता ? हमारे व्यसन प्रेमी भाई इस बात पर विचार करें और होसके तो अपना शिर भी झुकाकर लज्जित होवें । भला जो शख्स अपने परंपरागत मद्यव्यसन को लात मार सकता है, उसका अनुकरण कर हमारे नवयुवक बंधु क्या मद्यपान से भी निकृष्ट धूम्रपान को त्याग नहीं देसकते ? यही विद्यार्थी उनकी

(२) दयालुता

के विषय में लिखता है—" ईटन की पाठशाला के विद्यार्थियों में बहुत समय से यह प्रथा चली आती थी कि; वन यात्रा करते
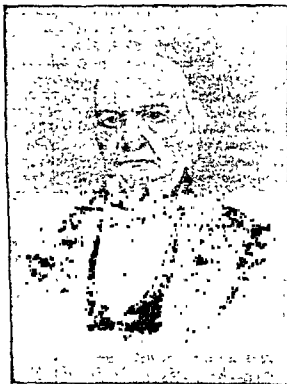
यदि उनको राह में कोई जानवर आदि पड़ जाये तो उनकी पूंछ काट डालते थे। उनकी यह क्रूरता ग्लैडस्टन को अच्छी न लगी। उन्होंने उनकी निन्दा कर कहा—"शिक्षित लोगों में इस प्रकार की क्रूरता का होना बड़े लज्जा की बात है।" इस पर शाला के विद्यार्थियों ने उनकी बड़ी हँसी की। अन्त में उनके सत्याग्रह पर विद्यार्थियों ने लज्जित हो उनकी बात मानली और यह प्रथा बंद होगई।" वास्तव में हमारे नवयुवकों को यह कभी न भूलना चाहिये कि "दया धरम का मूल है।" पशु पक्षी से बेज़बान प्राणियों पर दया दिखलाने से परमात्मा अवश्यही प्रसन्न होता होगा।

(३) नौकरी से घृणा।

सन् १८२७ में शाला से विद्याभ्यास समाप्त कर निकलने पर आपने "धनतृष्णा" शीर्षक एक अच्छा लेख लिखा। उसके अन्त में आप लिखते हैं:—"जो नवयुवक लोगों में अपना नाम चिरस्थायी करना चाहते हैं, वे यही सोचते हैं कि मैं किसी अच्छे सरकारी ओहदे को प्राप्त करूँ, या किसी अमीर उमरा या राजा महाराजा की खुशामद करूँ।" इससे स्पष्ट है कि आप नौकरी को घृणा की दृष्टि से देखते थे। ठीक भी तो है कि ऊँचे सरकारी ओहदे या किसी की चापलूसी करने से थोड़े ही कोई प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। महात्मा तिलक, महात्मा गांधी, मालवीय, लाजपत आदि भारत रत्नों ने किसकी नौकरी की है? ये महात्मा क्यों इतने प्रतिष्ठा प्राप्त हैं? हर कोई उत्तर देगा–देशसेवा करने से। अतः सिद्ध है कि देशसेवा अक्षय कीर्ति का द्वार है। पर हमारे नवयुवक तो नौकरी ही को कल्पवृक्ष समझ बैठे हैं।

(४) नीति प्रियता।

ग्लैडस्टन जैसे दयालु और विद्वान् थे, वैसे ही नीतिज्ञ भी थे। आप का सिद्धान्त था कि यदि मनुष्य किसी ग़लत सिद्धान्तपर चल कर ग़लती कर बैठे तो मालूम होने पर उसे बिना लज्जा तथा संकोच के वह भूल सुधार लेना चाहिये। त्रुटि ज्ञात होने पर असत् मार्ग छोड़ सत् मार्ग पर चलना प्रत्येक मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। पार्लमेंट में सदैव से लिबरल और कंजर्वेटिव नामक दो दल रहते आये हैं। ग्लैडस्टन आरंभ में कट्टर कंजर्वेटिव थे। जब आप को कंजर्वेटिव पक्ष के दोष तथा लिबरल के गुण ज्ञात हुए, तब आप बिना किसी संकोच और लज्जा के लिबरल दल में आ मिले! उस समय कुछ संकुचित हृदयों ने आप पर तीक्ष्ण कटाक्ष किये। पर ग्लैडस्टन भी अपनी धुनके पक्के थे।

जब अमेरिका की संयुक्त रियासतों में ग़ुलामी प्रथा के उच्छेद के लिये युद्ध शुरू हुआ तब आपने पार्लमेंट में एक बार व्याख्यान देकर कहा कि इस युद्ध में दक्षिणी रियासतों की ही विजय होगी। क्योंकि आप की सहानुभूति भी ग़ुलामी प्रथा से थी। इसके प्रमाण में भी उन्होंने बहुत कुछ कहा था। एक सदस्य ने आप की बातों का खंडन कर कहा कि, इस युद्ध में उत्तरीय रियासतों की जय होगी और दास प्रथा का अवश्यही उच्छेद होगा। परन्तु ग्लैडस्टन ने उसकी बातों को योंही उड़ा दिया। जब ४ वर्ष तक युद्ध चलकर उत्तरीय पक्ष विजयी हुआ और ग़ुलाम प्रथा का नाश होगया तब आप को अपनी भूल पर पश्चात्ताप हुआ और आपने मुक्त कंठ से भूल स्वीकार करली।

ग्रीस के पश्चिम में आयोनियन नामक द्वीप हैं। ये सन् १८१५ में अंगरेज़ों के कब्ज़े में आगये। स्वतंत्रता प्रिय ग्रीक अंगरेज़ों के आधीन नहीं रहना चाहते थे। इसलिये यहां सदैव ही अशांति बनी रहती थी। ग्लैडस्टन इस अशांति का उच्छेद करने के लिये यहां भेजे गये। आपने भी यहां शांति रखने के लिये अनेक उपाय किये पर व्यर्थ हुए। ग्रीकों से प्रेम करने के लिये आपने होमर के काव्यग्रन्थों का अनुशीलन किया। ग्रीक ग्लैडस्टन का मान तो करते थे, पर उन्हें अंगरेज़ों के साथ रहना पसन्द नहीं था। अन्त में ग्लैडस्टन के प्रयत्न से ग्रीक फिर स्वाधीन कर दिये गये। इस पर विलायतवालों ने ग्लैडस्टन को खूब कोसा। उन्होंने यहां तक कह डाला कि, ग्रीकों को प्रसन्न करने के लिये होमर के काव्य छूने भी न चाहिये थे। बेचारे ग्लैडस्टन ने यह सब चुपचाप सह लिया!

(६) सादगी।

आप को अपने बड़े होने का ज़रा भी अभिमान न था। आप सदैव रेल के तीसरे दर्जे में ही यात्रा किया करते थे। एक बार एक महाशय ने पूछा आप तीसरे दर्जे में क्यों यात्रा करते हैं। आपने उत्तर दिया—"क्योंकि चौथा दर्जा नहीं है।" पाठक! यह सादगी तो देखिये!

(५) मनस्विता।

७८ वर्ष की उम्र में वृद्धावस्था के मारे आप की नेत्र ज्योतिक्षीण हो गई तथा शरीर भी अशक्त होगया। परन्तु मानसिक शक्ति ज़रा भी क्षीण नहीं हुई थी। आप बराबर पढ़ने लिखने में लगे रहते थे। यहां तक कि प्रति दिन आप ८–१० घण्टे तक पढ़ा करते थे। एक बार इन्हें शादी में निमंत्रित होकर प्रिंस आफ़ वेल्स के यहां जाना पड़ा। इस धूम धाम के समय में भी आप प्रति दिन अपनी कोठरी में पढ़ा ही करते थे। विद्यार्थियों! विद्या-प्रेम का कैसा उत्कृष्ट उदाहरण है! आप अपने जीवन काल के ८६ वर्ष के लम्बे समय में कभी बीमार नहीं हुए, यह सादगी से ही रहने का परिणाम है। परन्तु मरते समय आपकी नाक में बड़ा भयंकर रोग होगया था। दर्द असहनीय था पर आप उसे चुपचाप सहते थे! उस समय आपने कहा था—"मेरा जो शरीर ८७ वर्ष तक नीरोग रहा, अब यदि वह मरते काल चार ६ महीने के लिये अस्वस्थ भी हो गया तो मैं क्यों चिढ़ चिढ़ाऊं?" उस समय जो लोग आप से मिलने आते थे, आप उनसे कहते थे—"मृत्यु समय तुम लोगों में से जो लोग साधु होकर भक्ति भाव से इस संसार का त्याग करेंगे वे इस स्थान की अपेक्षा भी अच्छे स्थान पर पुनः परस्पर मिलेंगे। यह मुझे दृढ़ विश्वास है।" "उस भक्तवत्सल परमात्मा पर मुझे दृढ़ विश्वास है। यह पीड़ा मुझे इस दृढ़ विश्वास से नहीं हटा सकती। मैं जब परमात्माका ध्यान करता हूं, तब मेरी सारी पीड़ा मिट जाती है।" इसी प्रकार आप इस असहनीय कष्ट को सहते २ सन् १८९८ के मई मास की १९ तारीख को ८७ वर्ष ६ मास की अवस्था में संसार त्याग परलोकवासी होगये।

सिखावन।

(चौतुका)

(ले० साहित्यरत्न श्री. पं. अयोध्यासिंहजी उपाध्याय "हरि-औध")

जाति को है अगर जिला रखना। तो न मीठी को मानलें खट्टी॥
भेद का बांध बांधती बेला। आँख पर बांधलें न हम पट्टी॥१॥
तब भला क्या सुधर सकेंगे हम। जब कि सुनते सुधार नाम जले॥
देखने के समय कसर अपनी। छागया जो अँधेरा आँख तले॥२॥
जोत में आइये जतन करिये। जागिये होरहा सवेरा है॥
बन गये हैं इसीलिये अन्धे! आँख के सामने अँधेरा है॥३॥
क्यों सुनोगे; मरे या जाति जिये! बस तुम्हें खाना पीना सोना है॥
सच है अँधे के सामने रोना। अपने आप अपनी आँख खोना है॥४॥
पौ फटी है निकल रहा सूरज! हैं सभी लोग ढंग में ढलते॥
देख करके मलाल होता है। आप हैं आँखही अभी मलते॥५॥

पुत्रवधू की पत्रिका।

(ले० कविता कामिनिकान्त पं. नाथूराम शंकर शर्मा 'शंकर')

दोहा—माजी पालागन करूं; पातिव्रत उरधार।
पुत्रवधू की पत्रिका; पढ़िये प्रेम पसार॥१॥

कवित्त—सावन में सारे भील भाबर भिलार गये,
धार से कछार चढ़े बाँगर भरन लगे।
घेर घेर अम्बर भदैय्याँ घन गाज रहे;
बोरे न नदी की बाढ़ गाँव के डरन लगे।
मेह और मारी के लताड़े लोग भाग रहे,
'शंकर' बयान चारों ओर को करन लगे।
अम्माजी पतोहू जो न चाहती हो दूसरी तो!
भेजो रथ मायके में मूसटा मरन लगे॥१॥

दोहा—बिछुड़ी मैं आषाढ़ में, सावन गयो भुलाय।
भादों से भयभीत हूं, लेहु तुरन्त बुलाय॥

धरोहर ।

(ले॰ विमल)

रे भाई चक्रधर ! तुम्हारी शादी के झंझट में तो बेतरह उलझ जाना पड़ा, कहो क्या करना होगा, परीक्षा के दिन भी तो निकट हैं । कुछ ख्याल भी है ? या बिल्कुल शादी ही में रंगे रहोगे ?

चक्रधर—अब मुझे क्यों कोसते हो गोविन्द ! उस समय तो तुम लोगों ने जिद करके शादी ठानी, मैंने तो पहले ही कहा था कि इस वर्ष विवाह न करूँगा । B. A. की परीक्षा देने दो, आखिर विवाह तो करना ही है ।

गोविन्द—जिद तो मैंने नहीं की थी, हाँ; अलबत्ता तुम्हारी मित्राणी ने ऐसा करने को मुझे विवश किया था ।

चक्रधर—खैर तुम नहीं वही सही, मुझे तो उनकी आज्ञा भी पालन करनी चाहिये ।

गोविन्द—जो होने को था सो होगया, अब कलकत्ते चलने का यत्न करो । विवाह भी हो ही गया; श्वसुर गृह में अधिक दिनों तक रहने की आवश्यकता ही क्या ? चलो, परीक्षा देकर आना तो खूब चैन बजाना, मैं भी साथ ही आऊँगा ।

चक्रधर—मैं तो चलने को तैयार हूँ पर यहाँ वाले एक दिन और ठहर जाने का अनुरोध करते हैं, सब लोगों का कहना है कि एक दिन से उतना हर्ज नहीं होगा ।

गोविन्द—यहाँ वाले रोकते हैं या यहाँ वाली,

चक्रधर—तुम को तो हमेशा दिल्लगी ही सूझती है,

गोविन्द—क्यों ? रंज होगये क्या ?

चक्रधर—इस में रंज की क्या बात है । लो यह रूमाल तुमको मिला है ।

गोविन्द ने जल्दी से रूमाल हाथ में लेकर हृदय से लगा कर कहा— भाई, इस कृपा के लिये मेरी ओर से धन्यवाद दे देना ।

चक्रधर—मुझे धन्यवाद देने की आवश्यकता ? तुम जानो, तुम्हारा काम जाने । हाँ मैंने तुम्हारा कार्य किया इसके लिये दो, क्या देते हो ?

गोविन्द ने अपनी कलाई में की रिष्टवाच निकाल कर चक्रधर को देकर कहा, लो भाई, अपनी मजदूरी लो और कृपा कर मेरी ओर से भी धन्यवाद लेकर आओ, आखिर उधर से भी तो कुछ पुरस्कार मिलही जायगा ।

चक्रधर—उधर का पुरस्कार फिर तुम्हें ही दूँगा ।

गोविन्द ने रूमाल को भलिभाँति देखा । उसकी कारीगिरी से उस को बड़ी प्रसन्नता हुई, अपने अभिन्न हृदयी मित्र चक्रधर के हाथ में देकर कहने लगा—चक्रधर देखो इसमें कैसा अच्छा काम किया हुआ है किस खूबी के साथ फूल पत्ती अङ्कित की गयी हैं मेरा नाम भी अंगरेजी अक्षरों में किस खूबी के साथ लिखा गया है, जान पड़ता है कि इसकी बनानेवाली इन सब कार्यों में बड़ी दक्षा, सिद्ध हस्ता हैं ।

चक्रधर—क्या उसको भी कुछ पुरस्कार दोगे ?

गोविन्द—अवश्य दूँगा । कार्य तो पुरस्कार योग्य है, कहो किसका बनाया है ?

चक्रधर—और किसका.........

गोविन्द - (बड़ी प्रसन्नता से) वाह भाई वाह ! तब तो अवश्य पुरस्कार मिलना चाहिये, यह कह कर एक सुन्दर सोने का चन्द्रहार चक्रधर के हाथ में देकर बोला लो मेरी ओर से यह चन्द्रहार पुरस्कार के रूप में देना और कहना कि शेष बाकी रहा, B. A. में उत्तीर्ण होने पर चुका दूँगा ।

चक्रधर—और मुझे क्या दोगे ?

गोविन्द—इसका परवंश,

चक्रधर ने मकान आकर अपने मित्र का दिया हुआ पुरस्कार अपनी प्राणप्यारी 'कामिनी' को देकर कहा गोविन्द ने रूमाल की बनावट से प्रसन्न होकर यह पुरस्कार दिया है । और इसके अतिरिक्त धन्यवाद की झड़ी हुई सो तुम्हारे माथे पर उलट देने को कहा है । लो सम्हालो, कहीं धन्यवाद के बोझ से दब मत जाना ।

कामिनी ने चन्द्रहार लेकर कहा, और अभी आप तो मौजूद हैं यदि मैं इतने सर्गों तो आप इतने दोहे ही देते ? कहिये वे और कुछ बोलते थे ?

चक्रधर—उसने तुम्हारी बड़ी तारीफ की और कहा कि मुझे B. A. कर लेने दो शेष पुरस्कार पीछे चुकादूँगा ।

कामिनी—अब मुझे पुरस्कार की आवश्यकता नहीं । कहिये आज यह सोने की घड़ी कहाँ से लाये ?

चक्रधर—लाऊँगा कहाँ से, रूमाल पहुँचाने की मजदूरी है । अब तुम पुरस्कार लाने की मजदूरी क्या देती हो दो !

कामिनी—मैं क्या दूँगी, मेरे पास रह ही क्या गया, यह शरीर भी तो अब आप ही का है ।

चक्रधर—बात बनाने से नहीं होगा, जो कुछ देना है दो, कल गोविन्द को भी दिखाना पड़ेगा कि यह मजदूरी मिली है । कामिनी ने अपने हाथ की अंगुली से एक अँगूठी निकाल दी और कहा अब तो आप के मित्रजी प्रसन्न होंगे न ?

चक्रधर—अब क्यों नहीं ?

कामिनी— आपने कई बार मुझ से कहा कि " मुझ को अपने मित्र की धर्मपत्नी सुभद्रा देवी बहुत प्यार करती थी, " कहिये उसका कुछ अंश मेरे लिये भी रक्खा है या प्यार का प्याला आपही पी गये ।

चक्रधर—नहीं जी उनको मैंके से तो आने दो । देखना जैसी सौम्य मूर्ति है वैसी ही गुणों की खान है । उनसे तुम को बहुत कुछ सहायता मिलेगी ।

कामिनी—ईश्वर आप का कहना पूर्ण करे ।

× × × × ×

आज रात की गाड़ी से बाबू गोविन्द प्रसाद अपने अभिन्न मित्र चक्रधर बाबू के साथ कलकत्ता जाने को हैं । मित्र-द्वय कलकत्ते के प्रेसिडेन्सी कालेज के B A के छात्र हैं । दोनों में बाल्यावस्था ही से घनी मैत्री है, एक के बिना दूसरे को चैन ही नहीं पड़ती । दोनों पढ़ने में भी करीब २ एकही प्रकार के हैं, साथ ही B A में कम्पीटीशन छात्र वृत्ति (२५ रु मासिक) ले चुके हैं । चक्रधर बाबू का निवास स्थान तो बाँकीपुर था; लेकिन गोविन्द बाबू का घर था बनारस । बांकीपुर में उनके पिता लक्ष्मी बाबू वकालत करते थे । पिता माता के अतिरिक्त गोविन्द बाबू को और कोई नहीं था, जन्म से ही बांकीपुर में पिता के साथ रहते थे । लक्ष्मीबाबू के डेरे के पासही चक्रधर बाबू का घर था, उनके पिता मुरारी बाबू स्वर्गीय होचुके थे, घर में वृद्धा माता के अतिरिक्त चक्रधर को कोई नहीं था । न्यूनाधिक २०००० बीस हजार जमीन्दारी की आमदानी थी । खर्च बहुतही थोड़ा था । लाखों रुपये बनारस बैंक में जमा थे । लक्ष्मीबाबू उसकी देखरेख के लिये नियत थे B A परीक्षा में उत्तीर्ण होने के साथ ही लक्ष्मीबाबू ने गोविन्द का विवाह जौनपुर के जमीन्दार राय विश्वेश्वर प्रसाद बहादुर की कन्या 'सुभद्रा' से करा दिया था । सुभद्रा जैसी रूपवती थी वैसीही गुणवती भी । लक्ष्मीबाबू के ४०००० रु बैंक में थे, इसके अतिरिक्त स्थायी सम्पत्ति कुछ नहीं थी । हाँ गोविन्द को थोड़ीसी जमीन्दारी जौनपुर में विवाह के समय मिल गयी थी ।

चक्रधर का विवाह बांकीपुर के निकट ही दूसरे मुहल्ले महेन्द्रू में जगन्नाथ प्रसाद जमीन्दार की लड़की कामिनी से हुआ था । शाम के पांच बज चुके थे, गोविन्द प्रसाद अपने मित्र चक्रधर प्रसाद के साथ किले की ओर से जोड़ी पर वायु सेवन करके लौटे आते थे । चक्रधर बाबू के घर पर से उनके कई मित्र उनसे मिलने की इच्छा से आकर लौटने को थे कि जोड़ी देख पड़ी । वे लोग ठहर गये । चक्रधर बाबू अपने मित्रों को मिलने के लिये शीघ्रता से जोड़ी से उतर आये । मित्रों में आनन्द की धारा प्रवाहित होने लगी, बंगले पर खासी भीड़ लग गयी, कारण, ये दोनों शाम को ही कलकत्ते से आये थे और इस वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय के B. A. ऑनर्स छात्रों में इनका नम्बर पहला और दूसरा था । मित्रों में से किसी ने कहा, कहो कब भोज देते हो ? किसी ने कहा अरे तो दो भोज ? एक शादी का और दूसरा परीक्षा में सफलता पाने का । गोविन्द ने कहा ठहरो भाई, घबड़ाते क्यों हो जिम्मा हमारा, खा लेना हो । उनमें से किसी ने कहा यह सब तो होता ही रहता है, पर यह तो कहो तुम लोग आनर्स्वाला कब जाते हो ? क्योंकि पहले तो कहा करते थे कि " B. A. होकर जाऊँगा " अब तो वह भी हुआ ।

गोविन्द—इच्छा तो ऐसी ही थी, पर ईश्वर परमात्मा क्या करते हैं। रास्ते तक इन लोगों में अनेक प्रकार की बातें होती रहीं। पश्चात् एक एक करके सब खिसकने लगे। आठ बजे गोविन्द बाबू भी जाने लगे, जाते समय चक्रधर बाबू को कहते गये कि आज तुम मेरे ही यहाँ खाना। वहीं भोजन तैयार होता है।

चक्रधर अच्छा आऊँगा कह कर भीतर चले गये। वहाँ कामिनी इनके आने की प्रतिक्षा कर रही थी। इनको-आया देख बोली, आज इतनी देर क्यों होगयी? क्या किसी से नयी दोस्ती तो नहीं लगी है? एक तो घर में रहते ही नहीं, कभी २ आने पर भी दिन रात बाहर ही रहते हैं।

चक्रधर—कई पुराने ही मित्र मिलने आगये थे, उनसे मिलने में देर होगयी। फिर भी तो बाहर जाताहूँ, गोविन्द ने जाते समय कहा कि "मेरे यहां भोजन करने आना"

कामिनी—सो तो हमें पहले होसे मालूम था, प्यार ही बहिन सुभद्रा ने मुझ को पत्र लिखा था। मेरे लिये भी सब कुछ वहीं से आवेगा।

चक्रधर—क्यों? क्या तुम वहाँ नहीं जासकती?

कामिनी—जाने को तो थी, पर, आप की आज्ञा बिना कैसे कहती?

चक्रधर—इसमें आज्ञा की क्या आवश्यकता? वह घर भी तो अपना ही है। क्या तुमको सुभद्रा कम प्यार करती है?

कामिनी—बहिन सुभद्रा मुझ को हृदय से प्यार करती हैं। ऐसा प्यार तो सहोदरा भी नहीं करती, वे नारियों में आदर्श हैं। उनके साथ रहने की इच्छा रहती है। पर क्या करूँ। हर समय कुछ न कुछ मान की बातें बताती ही रहती है। मुझे दुख है कि मेरे आज के व्यवहार से उनको दुख हुआ होगा।

चक्रधर—दुख तो होने की बात ही है। पर इसका वे कुछ दूसरा ख्याल नहीं करेंगी, वह सत्य ही नारीरत्न है। मैं अभी वहीं जाता हूँ, पीछे तुम्हारे लिये सवारी आयगी।

कामिनी—लेकिन माताजी अप्रसन्न होती हैं। वे यद्यपि आपके मित्र को आप से कम नहीं चाहती, पर आना जाना बुरा समझती हैं।

चक्रधर—अच्छा मैं माता को मनाये देता हूँ।

चक्रधर बाबू माता के कमरे में गये, माताने स्नेह पूर्वक बैठा कर कहा इतनी रात तक कहाँ था बच्चू!

चक्रधर—माता, बंगले पर ही तो चार घण्टे पूरे लग गये, कई मित्र आये हुये थे

चक्रधर की माँ—अच्छा कहो कलकत्ता फिर तो नहीं जाना होगा?

चक्रधर—क्यों माता?

चक्रधर की माँ—सूने घर में जी नहीं लगता बेटा, हमारी आँख की पुतली तू ही है। बेटा, तुम्हारे बिना कैसे रहूँ?

चक्रधर—अच्छा अब बाहर नहीं जाऊँगा।

चक्रधर की माँ—तुमने भोजन किया?

चक्रधर—आज गोविन्द के यहाँ भोजन बना है।

वृद्धा—अच्छा? कल गोविन्द को भी यहां भोजन कराना।

चक्रधर—सब का भोजन वहीं बनता है।

वृद्धा—मैं तो नहीं जाऊँगी और बहू भी कैसे जायगी। मैं अकेली नहीं रहूंगी।

चक्रधर—मैं भोजन करके आऊँगा तब जायगी। पालकी लगी है, शीघ्र वह लौट आवेगी।

वृद्धा—दूसरे घर में नयी बहू नहीं जाती है। बेटा, तुम को क्या मालूम! लोग निन्दा करते हैं।

चक्रधर—इसमें निन्दा कैसी? वह घर भी अपना ही है, क्या तुम गोविन्द को दूसरा समझती हो?

वृद्धा—मेरे समझने से क्या? समाजवाले तो दूसरा समझते, हैं, तुम कायस्थ और वह वैश्य,

चक्रधर—दूसरे के समझने से क्या? मैं उसको दूसरा नहीं कहूँगा, इन ढकोसालों से मैं दूरही रहना उचित समझताहूँ।

वृद्धा की इच्छा नहीं होने पर भी पुत्र की हालत देख कर उसके जाने में विघ्न नहीं हुआ। पहले चक्रधर गोविन्द के यहां गया, गोविन्द कोई पुस्तक देख रहा था। चक्रधर ने सुभद्रा के निकट जाकर कहा क्या २ भोजन करने देती हो।

सुभद्रा—अभी थोड़ी देर है बाबू, जरा सब्र करो, पर यह तो कहो बहिन को क्यों नहीं आने दिया?

चक्रधर—मैं कई को रोकने आऊँगा। आज कल तो उनकी पिता तुम्हारे यहाँ हैं, न मालूम क्या २ करते कहती और क्या नहीं?

सुभद्रा—खिल खिला कर हँस पड़ी। हां! हां! ठीक कहते हो

चक्रधर—मेरे भोजन करने बाद आयगी।

सुभद्रा—क्यों?

चक्रधर—माताजी के निकट है

भोजन तैयार होगया, दोनों मित्र काठ ही आसन पर बैठ कर भोजन करने लगे, सुभद्रा तरह २ के व्यंजन दे देकर दोनों को भोजन कराने लगी। गोविन्द ने चक्रधर से कहा-क्या कलकत्ते में ऐसा भोजन नसीब हुआ था?

गोविन्द—कलकत्ते की बात जाने दो।

चक्रधर—जाने क्यों दूं?

गोविन्द—इसीलिये कि यहाँ इससे कहीं अच्छा भोजन मिलता है।

गोविन्द—तुम को तो इसकी प्रशंसा सूझती है, भोजन का स्वाद जानोगे।

चक्रधर—मैं किसी की प्रशंसा नहीं करता, उचित कहताहूँ।

सुभद्रा ने बीच में पड़ कर कहा, और कहीं का अच्छा हो, झगड़े को जाने दीजिये। दो २ कटोरे में मलाई और रबड़ी लाकर दोनों के सामने रखदी। चक्रधर ने कहा, अब पेट में जगह नहीं, कहाँ रक्खूं? बहुत कहने पर थोड़ासा लिया। भोजनोपरान्त दोनों एक सजे हुए कमरे में गये। कमरा अच्छा सजा हुआ था। दीवालों पर देवी देवताओं के अतिरिक्त देशभक्तों के चित्र टंगे हुये थे। बीच में एक बड़ासा टेबुल रक्खा था, उसके चारों ओर अच्छी कुर्सियां लगी हुई थी। टेबुल पर कई हिन्दी अंगरेजी के दैनिक सप्ताहिक और मासिक पत्र रक्खे थे, दीवाल से सटी हुई चार पांच अलमारियां किताबों से खचाखच भरी हुई थीं, एक सुन्दर लैम्प कमरे को प्रकाशित कर रहा था। चक्रधर एक आराम कुर्सी पर बैठ गया, और "सर्चलायट" देखने लगा। गोविन्द पासही एक आराम चेयर पर लेट गया। सुभद्रा ने हाथ में पनबट्टी लिये कमरे में प्रवेश किया। चक्रधर को दो बीड़ापान देकर बोली, बाबू आप को आराम करने नहीं मिलेगा। जाइये शीघ्र मेरी बहिन को भेज दीजिये, सवारी भेजी जाचुकी है।

चक्रधर—आज तुम ने मुझको इतना खिलाया है कि, मैं चल नहीं सकता। मुझ से जाया नहीं जायगा, चाहे तुम्हारी बहिन आवें या नहीं आवें! मुझे आराम करने को जगह दो, मैं यहीं सो रहूँगा।

गोविन्द—यहाँ तुम्हारे लिये जगह नहीं है, जाओ अपने घर। इतना पैदल नहीं जासकते, अजगर होगये तो गाड़ी ले लो।

चक्रधर—चाहे जगह दो या नहीं। पर मैं यहीं रहूँगा तुम मेरे यहां जाकर माता के निकट ठहरो तब वह आवेगी।

गोविन्द—अच्छा चलो मैं भी जाताहूँ।

गाड़ी तैयार हुई, चक्रधर अपने मित्र के साथ अपने घर पर आया। पालकी लगी थी, कामिनी उस पर सवार हो सुभद्रा के घर गई। सुभद्रा पहले ही से बाट जोह रही थी, कामिनी के आने पर बड़े प्रेम से उसे अपने उसी कमरे में लेगयी जहां मित्र-द्वय भोजन कर ठहरे थे। कामिनी को एक कुर्सी पर बैठा कर उसका हाथ पकड़ कर अमृतमयी वाणी बर्षाने लगी—क्यों बहिन कामिनी! आज मुझ से कौनसी भूल होगयी जो यहाँ आना नहीं स्वीकारती थीं?

कामिनी का मुख लज्जा से फीका पड़ गया, मुस्कुराती हुई बोली नहीं भूल क्या होगी। माताजी बकने झकने लगती हैं इसीलिये ऐसा कहा था, क्षमा करना।

\+ × + + ×

अब गोविन्द और चक्रधर बाबू M.A.B.L. होकर पटना हाइकोर्ट में वकालत करते हैं। वकालत जोरों पर चली है। लक्ष्मी बाबू अब वृद्ध होगये हैं कचहरी नहीं आसकते। आँख से सूझता भी नहीं था दिनों दिन अबलता बढ़ती जाती थी। यद्यपि गोविन्द और चक्रधर की इच्छा अमेरिका जाने की थी, लेकिन लक्ष्मीबाबू उन्हें जाने नहीं देते और इन लोगों का साहस भी उनकी आज्ञा उल्लंघन करने का नहीं होता। दो वर्ष हुए गोविन्द की धर्मपत्नी 'सुभद्रा' ने एक पुत्र रत्न प्रसव किया था। उसके जन्मोपलक्ष में चक्रधर ने हजारों का ... किया। हजारों रुपये इष्टमित्रों के भोज्यादि में उड़ा दिये। हजारों

इसमें विद्यालय और चिकित्सालय में दान दिये। 'कामिनी' ने भी सुभद्रा से दो स्वर्ण के आभूषण पुरस्कार रूप पाए और अपने कई आभूषण दूसरे को लुटा कर ही छोड़े।

\+ + + + × +

गोविन्द और चक्रधर बाबू कचहरी से वापस आरहे थे, जोड़ी खुलने को थी कि सुन्दरा खवास हाँफता हुआ सामने आकर बोला, हुजूर बूढ़े मालिक की (लक्ष्मीबाबू) जबान बन्द होगयी, हिचकी आरही है, मैं आप लोगों को बुलाने भेजा गया हूँ। चलने में शीघ्रता करें अन्यथा............

चक्रधर बाबू ने कोचवान को गाड़ी तेजी से चलाने को कहा। गाड़ी तेजी से चलने लगी।

चक्रधर—भाई गोविन्द, आप देखते हैं बाबूजी नहीं बचेंगे?

गोविन्द—मालूम तो ऐसाही होता है।

चक्रधर—अब इनको यहाँ आराम नहीं है। दिनों दिन कष्टही होता है?

गाड़ी धड़धड़ाती हुई, दरवाजे आकर लगी। डाक्टर साहब दरवाजे पर आचुके थे।

चक्रधर—क्या डाक्टर साहब, बाबूजी को कैसा देखा?

डाक्टर—अब अन्तिम समय है!

युगल मित्र घबड़ाते हुए अन्दर गये, तुलसी चबूतरे के पास लक्ष्मी बाबू का बिस्तर रक्खा गया था सुभद्रा, कामिनी, पैर की ओर खड़ी थी। लक्ष्मी बाबू की धर्मपत्नी 'यशोदा देवी' पति का सर गोद में लिये बैठी थी, चक्रधर की माता यशोदा देवी से लग कर ही बैठी थी। चक्रधर सामने आकर लक्ष्मी बाबू का हाथ पकड़ कर बोले-बाबूजी! बाबूजी! लक्ष्मीबाबू ने आँख खोली, सामने गोविन्द और चक्रधर को देख कर मुँह खोला, इन दोनों ने क्रमशः गंगाजल उनके [illegible] लक्ष्मीबाबू ने मुँह बन्द कर लिया. यदन से प्रसन्नता [illegible] ने कहा, बाबूजी [illegible] आज तक दुख नहीं हुआ था, आज तुमभी मुझ अनाथ को छोड़ मौन होगये, अब मेरी देखरेख करनेवाला कौन रहा? इतना कह विह्वल हो फूट फूट कर बच्चे की तरह रोने लगे, और पछाड़ खाकर गिरपड़े। लक्ष्मीबाबू के घर में एक बार ही सब के रोने का तुमुल नाद होगया, मुहल्ले के लोग दौड़े, आखिर सब को बोधप्रबोध दे चुप किया. लक्ष्मीबाबू की बोलने की शक्ति न रही, पर होश था। उन्होंने चक्रधर का हाथ पकड़ कर गोविन्द के हाथ में दिया और आँख बन्द करलीं। उनकी भवलीला पूर्ण होगयी। यद्यपि उनके वियोग से परिवार दुखी था, पर चक्रधर बाबू सब से अधिक दुखी थे। गोविन्द बाबू की पूज्या माता यशोदा-देवी' पति के साथ सती होगई। माता पिता की अन्त्येष्टी क्रिया करने बाद गोविन्द बीमार पड़ गये। पर दो-तीन दिनों बाद विस्तर छोड़ दिया। [illegible] चार महीने के बाद चक्रधर बाबू की पूज्या वृद्ध माता भी स्वर्गीया होगयी। जिससे चक्रधर को असह्य दुख हुआ।

× × × × × –

अब चक्रधर और गोविन्द बाबू एकही मकान में रहते हैं, क्योंकि 'सुभद्रा' और कामिनी के अतिरिक्त इन दोनों के परिवार में भी कोई स्त्री नहीं थी। ये दोनों मित्र जब कचहरी जाते थे, तो 'सुभद्रा' कामिनी के साथ मिलकर कुछ धर्मग्रन्थों का अवलोकन करती थी और 'कामिनी' जब तब सुभद्रा की पुत्र "मनोहर" को गोद में लेकर जी बहलाती। मनोहर 'कामिनी' को मौसी कह कर पुकारता था, और उसके साथ ही सर्वदा रहता। अभी तक चक्रधर और गोविन्द का दुख दिन नहीं भूलने पाया था, होली चार दिनों के अन्दर में पुत्र-ज्वर के प्रकोप में सुभद्रा पड़ गयी और बची भी नहीं, अन्त में उसकी शिकार होही गयी। ईश्वर की लीला भी विचित्र है, उजड़े को बसाता और बसे को उजाड़ना उसका काम है। जिस सुभद्रा के कारण गोविन्द और चक्रधर का घर श्रीमान् होरहा था, आज ईश्वर ने उसके उस घर को श्रीहत कर दिया। जलते हुए चिराग को हवा के झोंके ने गुल कर दिया। चक्रधर और गोविन्द के सिर पर वज्रपात सा होगया। पर बाहर कहीं चैन नहीं, कामिनी अकेली रोती रहती थी, मनोहर के रह करने पर उसको गोदी में लिये इधर उधर जी बहलाती थी। गोविन्द धीरे धीरे इस दुखों को भूल के लगे चित्त में उदासी छागयी, "इस नश्वर शरीर से कुछ देश सेवा करें" यह भाव उठने लगा।"

रात के दश बज गये थे। गोविन्द और चक्रधर भोजन कर लेटे थे और आपस में अनेक प्रकार की बातें होरही थीं।

चक्रधर—भाई गोविन्द, तुमको इसी महीने अमेरिका जाना पड़ेगा, मेरी इच्छा भी जाने की थी लेकिन क्या करूं, कामिनी और 'मनोहर' को किस पर छोड़ूँ?

गोविन्द—मैं तो अवश्य जाता, पर अकेला कैसे रहूँगा? और तुम कहते हो तो अवश्य जाऊँगा, पर देखना मुझको भूल मत जाना। समय २ पर अपने घर का समाचार लिखा करना।

चक्रधर—लिखा करूँगा! पर तुम्हारे बिना जी लगेगा कैसे, जाओ दो तीन वर्ष जिस तिस प्रकार दिन काट लूँगा।

अमेरिका जाने की बात ठीक होगयी। चक्रधर बाबू मित्र के लिये उचित सामान ट्रँक में रखवा रहे हैं। कामिनी भी इस कार्य में योग देरही है, पर उसका हृदय न मालूम क्यों भारी होरहा है, रह २ कर आँख में आँसू भर आता है। 'मनोहर' उसकी गोद में है, कामिनी का हाथ पकड़ कर कहता है, मौसी हम को भूख लगी है खाने दे, यह सब क्या होगा?

कामिनी ने मनोहर के हाथ मिठाई देकर कहा ले खा! ये सब चीजें बड़े बाबा की हैं, वे अमेरिका जायँगे।

मनोहर—उनको कह दो मेरे लिये खिलौना लेते आवेंगे।

कामिनी—अच्छा कह दूंगी।

जाने की तैयारी होगयी, चक्रधर भी बम्बई तक जाने को तैयार थे, सब चीजें गाड़ी पर लादी गयी; गोविन्द बाबू कपड़ा पहने तैयार थे 'मनोहर' दौड़ कर सामने आकर बोला, बाबा! मेरे लिये खिलौना लेते आना, गोविन्द ने मनोहर को गोद में उठा लिया और सजल नेत्रों से उसका मुखारविन्द देखने लगे, हलकासा चुम्बन लेकर कहा अच्छा बेटा, लेता आऊंगा। चक्रधर निकट ही खड़े थे, गोविन्द ने कहा चक्रधर, लो मेरी 'धरोहर" रक्खो, चक्रधर ने हाथ बढ़ा कर मनोहर को गोद में लेकर कामिनी की गोद में दे दिया, कामिनी ने मनोहर का मुँह बड़े प्रेम से चूम लिया सबों के नेत्र से प्रेमाश्रुपात होने लगा, चलते समय गोविन्द ने कामिनी की ओर देखा, आँखें चार होगयी, गोविन्द ने भूल नहीं जाने का संकेत किया और मनोहर पर पूर्ण प्रेम बनाये रखने की भिक्षा मांगी—

कामिनी—आप किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करें, लल्ला को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दूंगी। हां मेरी चिन्ता अवश्य करें, क्योंकि मैं अकेली नहीं रह सकूंगी, अन्यथा आप का घर कुछ दिनों में घर के रूप में नहीं रहेगा।

गोविन्द—परमात्मा की जो इच्छा है वही होगी।

चक्रधर—अभी कहां की तैयारी है और क्या होने लगा। चलो गाड़ी का समय होगया, जोड़ी दरवाजे लगी है।

बम्बई मेल से गोविन्द बाबू अपने मित्र चक्रधर के साथ अमेरिका के लिये रवाना होगये। बांकीपुर से चलने के चौथे दिन जहाज घाट पर उतर पड़े, जहाज बारह को खुलनेवाला था, अमेरिकन यात्रियों की खासी भीड़ लग गयी थी। यात्रियों की संख्या में अधिक व्यापारी थे, इनमें अधिक संख्या गोरे व्यापारियों की ही थी। गोविन्द बाबू को पासपोर्ट जो पहले ही मिल गया था, वहां जाने पर डाक्टरों से स्वास्थ्य की जाँच हुई, उसमें भी वे अच्छे निकले। दस बजे रात को चक्रधर बाबू ने अपने मित्र के लिये दूसरे दर्जे का टिकट खरीदा, बारह बजे जहाज खुल गया। चक्रधर किनारे खड़े जहाज की ओर देखते रहे, जलयान सागर के वक्षस्थल को विदीर्ण करता हुआ, दम में आगे निकल गया। बिजली की रश्मियों में जल की तरंगें स्फटिक सदृश भी प्रतीत होती थी। चक्रधर बाबू समुद्र के किनारे एकटक जहाज की ओर दृष्टि किये खड़े थे, देखते ही देखते वे उसी सागर में विलीन सा होगये। चक्रधर बाबू भी मोटर की गाड़ी से घर को लौट पड़े।

जहाज के डेक पर गोविन्द बाबू को जगह मिली थी। दो बंगाली और एक मद्रासी विद्यार्थियों ने भी इसी जहाज से अमेरिका के लिये प्रस्थान किया था, चारों एक ही जगह बैठे थे। आपस में कई प्रकार की बातें होने लगीं थीं। गोविन्द डेक में लगा इन सब की बातें सुन रहा था और समय २ पर केवल हां और नहीं में उत्तर देता जाता था। बदन से खिन्नता प्रतीत होता था।

चक्रधर बाबू को घर जंगल सा ज्ञात पड़ता था, जो रातों दिन श्यामा-सुन्दर एक साथ रहते थे वे आज अकेले कैसे रहते? न तो कचहरी में

ही जी लगता और न घर में ही मन लगता। कामिनी मनोहर को लिये जी बहलाती थी लेकिन वह भी विपन्न रहती थी, गोविन्द बाबू अपने बंगाली और मद्रासी मित्रों के साथ अमेरिका पहुंच गये और शिकागो कालेज में भरती होगये। अमेरिका उत्तरोत्तर उन्नति करता जारहा है, कला कौशल में तो दुनियां का आदर्श होरहा है। इन भारतीय छात्रों ने विज्ञान की ओर अधिक ध्यान दिया था, वहां भारतीय छात्रों का एक अलग होटल था, ये चारों भी उसी में रहने लगे। यद्यपि भारतीय छात्र एक दूसरे से हजारों मील की दूरीवाले थे पर वहां सब एकही घर के भाई २ से प्रतीत होते थे, कभी किसी को कष्ट होता तो सब मिलकर उसे दूर करने के यत्न में लग जाते। सब अमन चैन से रहते थे।

\+ + + + + +

गोविन्द को गये आज पूरे दो महीने होगये, पर अभी तक चक्रधर के पास उसका एक पत्र भी नहीं आया है इससे चक्रधर बाबू अधिक खिन्न होरहे थे, किसी काम में जी नहीं लगता था। सुबह को ८ बजे भोजन करके कचहरी जाने के लिये कपड़ा पहन रहे थे, कामिनी पान का बीड़ा लगा रही थी, मनोहर घर की चीजों को उलट पलट कर रहा था, कि डकिये ने पुकारा सुन्दर! बाबू की चिट्ठी लेजाव'। चक्रधर बाबू ने सुन्दर को कहा देख सुन्दर कहां की चिट्ठी आयी है? सुन्दर लपकता हुआ बाहर आया और हरे रंग का लिफाफा लाकर बाबू के हाथ पर रख दिया। चक्रधर बाबू ने लिफाफे की मोहर को देखते ही कहा यह तो गोविन्द का पत्र सा जान पड़ता है। कामिनी पान का बीड़ा लिये दौड़ी आयी, और बोली देखिये तो अच्छे हैं न?

पत्र पढ़ कर चक्रधर बाबू ने कामिनी के हाथ में दे दिया, कामिनी ने पत्र पढ़ कर कहा, पहुँच तो गये कुशल पूर्वक! अब ईश्वर उन्हें सफलता प्राप्त करा कर कुशल से स्वदेश लौटादें। + + +

गोविन्द बाबू को अमेरिका गये पूरे चार वर्ष होगये। अब तक यहाँ वहाँ दोनों ही जगह में अमन चैन थी, यहां कामिनी ने एक पुत्र रत्न उत्पन्न किया। जिसकी सूचना गोविन्द बाबू को भी यथासमय दीगई थी। इस शुभप्रसंग के उपलक्ष में अपने मित्रों को उन्होंने भोज दिया, दीन दरिद्रों को दान दिया। गोविन्द बाबू को जब जितने रुपये की आवश्यकता होती थी चक्रधर बाबू भेज दिया करते थे। जिन भारतीय छात्रों को खर्च नहीं जुटता वे अखबार बेच कर अवकाश के समय नौकरी कर के उसे पूरे कर लेते थे। अमेरिका में गोविन्द बाबू ने अच्छा नाम पैदा किया। अमेरिकन विद्यार्थी भी इनकी धाक मानते थे। यथार्थ में ये थे भी बड़े प्रतिभावान, इनकी योग्यता देख कर अमेरिकन प्रोफेसर दांतोंतले उँगली दबाते थे।

विपत्ति ने अभी तक गोविन्द का पीछा नहीं छोड़ा है, हर तरह से तो तंग कर दिया पर तो भी संतोष नहीं। हा दैव! तुझे दुखियों को दुखी देख कर भी दया नहीं होती। दूसरे का आमोद प्रमोद देखा नहीं जाता। हाय! इस अबोध कोमल मातृहीना "मनोहर" को उठाते देर नहीं लगी। एकही घण्टे में विशूचिका ने उसको डकार लिया! चक्रधर बाबू के माथे दुख का पहाड़ गिर गया। कामिनी के कलेजे साँप लोट गया। दम्पति का सर्वस्व हरन होगया, रोते पीटते हिचकियां बँध गयीं। महीनों तक लोग घर से भी निकले नहीं, शरीर कृश होगया था, केवल अस्थि चर्म भर बच गया था। किसी कार्य में जी नहीं लगता। दो चार पड़ोस के स्त्री पुरुष इन लोगों को बोध प्रबोध देते रहते थे, इस अवस्था में तीन मास बीत गये। गोविन्द बाबू को इसकी सूचना दे दीगयी। यद्यपि दुख सहते २ गोविन्द बाबू का कलेजा पत्थर होगया था, पर तो भी इस समाचार के सुनते ही कलेजा फट गया, मानो वज्राघात से छिन्न भिन्न होगया। आँख के सामने चिर तिमिराच्छन्न होगया, पैर के नीचे की धरती खिसक गयी हाथ की हड्डी टोई गई, हा ईश्वर, जब किसी को दुख देने लगते हो तो लगातार दुख की झड़ी लगा देते हो! गोविन्द बाबू के उरमें वैराग्य उत्पन्न होगया, पढ़ने लिखने से मन को हटा कर अमेरिका छोड़ देश लौटने की इच्छा हुई-पढ़ना छोड़ तपस्या करने की भावना उठी। गोविन्द बाबू को सहपाठियों ने बहुत समझाया अनेक प्रकार का उपदेश दिया, जिससे उनके मनमें कुछ शान्ति का प्रादुर्भाव हुआ, आशा का उदय हुआ इस नश्वर शरीर की चिन्ता दूर हुई, देश सेवा करने की प्रबल इच्छा हुई। शरीर सब कुछ सह लेता है किन्तु ... पर कठिन से कठिन दुख भी भूल सा जान पड़ता है, सांसारिक माया में जी उलझ जाता है। अब गोविन्द बाबू 'दुर्धर्ष पठन पाठन' में लीन रहने ..। चक्रधर बाबू को दुखड़ा बाँध दे दिया था, कामिनी को नव जात पुत्र रत्न का पालन करने के लिये आदेश पत्र लिख भेजा था, घात की चिन्ता दूर करने को लिखा था। लेकिन चक्रधर बाबू को कहां, मन विह्वल रहता था, घर आते ही मनोहर २ करते ढूँढने लगते, नहीं पाने पर रोने लगते। लोगों को इनकी अवस्था... इनके प्राण का भय होता था। चक्रधर बाबू निरे पागल से ... यद्यपि मनोहर को स्वर्गीय हुए आज पूरे दो वर्ष होगये, ... अवस्था सुधरी नहीं, उत्तरोत्तर बिगड़ती ही गयी। कामिनी अधिक घबड़ा गयी, शीघ्र 'गोविन्द' बाबू को पत्र लिखा कि "देखने के साथ आइये अन्यथा मित्र से भेंट नहीं होगी"। शिकागो ...नालय से गोविन्द बाबू लौटे आरहे थे कि डाकिये ने एक लिफाफा को दे दिया, घर का पत्र देख बड़ी उत्कंठा से उसे खोला, पढ़ते माथा घूम गया, चित्राकार बैठ गये। सहपाठियों ने कहा क्यों ... बाबू? कैसा पत्र है, गोविन्द ने अपने मित्र के हाथ पत्र ... भाई अब मैं घर जाऊँगा, घर की अवस्था बड़ी चिन्तनीय होरही है।

\+ + × + + +

आज बांकीपुर के शिक्षित समाज में एक प्रकार का विशेष ... छाया हुआ है। चौराहे सड़कों पर मेहराब लगाये हैं, जगह ... फूलपत्तियां सजायी गयी हैं, रेलवे स्टेशन पर स्वागत की बड़ी तैयारी की गयी है। चक्रधर बाबू का घर बेलबूटों तोरन बन्दनवारों से सजाया गया, पर उनका कलेजा न जाने क्यों अधिक वेग से धड़क रहा है, कामिनी का सर घूम रहा है उसे उत्तरदायित्व का भय होरहा है। दस बजे सुबह बांकीपुर स्टेशन पर खासी भीड़ लग गयी। मोटरों और जोड़ियों से बाहर का स्थान बिलकुल भर गया था, झुण्ड के झुण्ड वकील बैरिष्टर इधर से उधर जाते दिखाते थे, सब के चेहरे से आनन्द बरस रहा था, लेकिन चक्रधर बाबू विपन्न वदन मुख नीचे ... एक छोर में खड़े थे।

घण्टी बजी, सिगनल् डाउन हुआ उधर से सनसनाती हुई ... आ लगी, स्टेशन पर वन्देमातरम् की ध्वनि हुई, और ... क्लास के डब्बे से बाबू गोविन्द प्रसाद M. L. B. A Lt. निकले निकलते ही फूलों की वर्षा होने लगी, मालायें पहनायी गयी, मालाओं से गला भर गया, लोग उनसे गले लग मिलने लगे, इधर का तो यह दृश्य था और उधर चक्रधर बाबू कोने खड़े सिसक रहे थे, कि ... नक उनके गले में उनके मित्र गोविन्द बाबू आकर लिपट गये, ... अपूर्व था। आज छः वर्ष में गोविन्द बाबू अपनी जननी जन्म... लौट कर आये हैं। गोविन्द बाबू चक्रधर बाबू के साथ मोटर पर ... होकर घर आये, इनके घर पर भी भीड़ लगी रही, दो जाते तो ... आते, अमेरिका की शिक्षा सम्बन्धी बातों की झड़ी लग गयी, ... बात को कईबार कहना पड़ता था। गोविन्द बाबू आने के साथ घर के अन्दर गये। 'कामिनी' बाहर की ओर झांक रही थी, ... आते देख रोने लगी, गोविन्द बाबू ने उसकी गोद से चक्रधर बाबू के पुत्र "नीलाम्बर" को उठा लिया और आँसू पोछने बाहर निकल ... चार बजे शाम से चक्रधर बाबू को ज्वर अधिक वेग से आया, डाक्टर ने आकर देखा और कुछ दवा देकर कहा किसी प्रकार का डर ... मामूली ज्वर है। आठ बजे रात का समय था, कमरे में लेम्प जल ... था; एक पलंग के सुन्दर स्वच्छ बिछावन पर चक्रधर बाबू रुग्णावस्था ... लेटे थे, पलंग के पासही एक कुर्सी लगी थी। उस पर गोविन्द ... बैठे थे, कामिनी चक्रधर के सिराहने बैठ सिर में लेपकर रही थी। ... प्रकाश में 'नीलाम्बर' अमेरिका से लाये हुए खिलौने से खेल ... था। चक्रधर बाबू की आंखे बन्द थीं, ज्वर जोरों से चढ़ और ... रहा था। हठात् चक्रधर बाबू चौंक पड़े आंखे खुल गयीं।

गोविन्द बाबू ने पूछा क्या हुआ चक्रधर?

चक्रधर—कुछ नहीं।

गोविन्द—मन कैसा है?

चक्रधर—अच्छा है?

चक्रधर बाबू धीरे २ उठ कर बैठे, गोविन्द बाबू ने लेट रहने ... कहा। चक्रधर बाबू ने कहा नहीं; लेटूँगा नहीं। चक्रधर बाबू ने 'नीलाम्बर' को बुलाया, पर नीलाम्बर सुनता कैसे, वह तो अपने खेल ... धुन में मस्त था। स्वामी के कहने पर कामिनी ने नीलाम्बर को ... कर उनकी गोद में रख दिया। चक्रधर बाबू ने नीलाम्बर का मुँह ... कर गोविन्द बाबू की गोद में देकर कहा, भाई गोविन्द, अपनी धरोहर ... लो। इतना कहते २ आंखें बन्द होगयीं। इधर गोविन्द ने नीलाम्बर ... गोद में लिया उधर चक्रधर की भवलीला समाप्त हुई, कामिनी पति के साथ सती होगयी!

ाबर भाग होजायँ तो दो पुत्र अथवा दो कन्यायें उत्पन्न होंगी। किंतु दि वायु अपना सनसनीलपन होकर माता के आहार को परिपक्व दशा आने के पूर्व ही रज और वीर्य के विभाग कर डाले तो उस गर्भ से क पुत्र और दूसरी कन्या उत्पन्न होगी।

गर्भ—स्थापन के लिये १६ रात्रियाँ नियत की गई हैं, परन्तु कितनी ी बार ऐसा होता है कि, ऋतु काल से पूर्व ही अर्थात् ऋतुस्नान होने : पश्चात् एक मास भी पूर्ण न हो, और जब स्त्री को यह मालूम ो जाय कि अब ऋतु प्राप्त होगा (अर्थात् अपने स्तन में भारीपन ान पड़े, कमर में दर्द हो, पेडू में हलका और थोड़ा थोड़ा शूल होने गे तथा योनिद्वार में दुर्गन्ध उत्पन्न हो तब स्त्रियाँ समझ लेती हैं कि ब एक दो दिनमें ऋतु प्राप्त होगा) उस समय भी समागम से गर्भ रह ाने का सम्भव रहता है, और यदि उस समय गर्भ रहजाय तो समें या तो स्त्री अपने गर्भ के महीनों की गणना भूल जाती है, अथवा ऊपर कहे अनुसार वायु से विभाग होकर दो गर्भ धारण होने से ीसरा गर्भ और रह जाता है। यहांपर कोई प्रश्न कर सकता है कि र्भाशय के दो पर्दे होते हैं, इसके सिवाय गर्भाशय में रहने के लिये ालक को कोई स्थान नहीं रहता, तो फिर तीसरा अथवा उससे अधिक बालकों का किस प्रकार गुजारा होगा? इसका उत्तर यह दिया जा सकता है कि, एक स्थान में एकसे अधिक बालक रह सकते हैं, क्योंकि मनुष्य जरायुज श्रेणी का प्राणी है, अर्थात् प्रत्येक बालक के चारों जरायू का एक पर्दा बंध जाता है। उसमें बालक और उसके आस पास पञ्चतत्व मिश्रित मसाला द्रव रूप में रहता है। प्रसूति के समय पहले यह पानी बह जाता है और उस पर्दे (जरायू) को फाड़कर बालक बाहर आता है। इसमें बालक के प्रसव होने के पश्चात् पर्दे में का मसाला आँवल के नाम से बाहर निकल आता है। इस प्रकार एक गर्भ—स्थान में चाहे जितने गर्भ उत्पन्न हों, उन सबकी जरायू अलग अलग होने से एक दूसरे को स्पर्श किये बिना अथवा किसी प्रकार की हानि पहुंचाये बिना वृद्धिगत होकर ये बालक के रूप में जन्म ले लेते हैं। और उनके पैदा होने के बाद ही अलग अलग आँवल भी गिर जाती है। परन्तु दो से अधिक बालकों के लिये रहने का स्थान पर्याप्त न होने से उनकी वृद्धि में संकोच हो जाता है। जिससे बालक आकार में बहुत ही छोटे हो जाते हैं। संयोग से कभी कभी जरायू का पर्दा फटकर जरायू द्वार जुड़ भी जाते हैं। जिससे दोनों गर्भ एक साथ जुड़े हुए जन्म लेते हैं, इस कारण ये चार हाथ, चार पांव और दो सिर वाले बनजाते हैं। इस प्रकार के जुड़े हुए कई बालक देखे गये हैं। जिन महाशयों को कभी देखने का मौका न मिला हो, वे अंग्रेज़ी वैद्यक शास्त्र के कितने ही ग्रंथों में उनके चित्र देखकर समझ सकते हैं। पाश्चात्य विद्या में भी इसके पुष्टिकरण के कई प्रमाण पाये जाते हैं।

ऊपर बतला ही चुके हैं कि गर्भ के लिये प्रसव होने का समय अधिक से अधिक १२ महीने का है। किन्तु यदि गर्भ में विकार हो जाय तो बालक अपरिमित काल तक गर्भ में रह सकता है, क्योंकि दुष्ट पिता या पितापक्ष के सम्बन्धी द्वारा कुलाभिमान अथवा किसी कारण से स्त्रीपर अन्याय हो और वह हमेशा भय और [illegible] में रहे तो यह गर्भ अधूरी अवस्था में गिर जाने अथवा गर्भ में मर जाने का सम्भव रहता है। यदि वह प्रसव-कालतक रहे [illegible] प्रसव होने के पश्चात् अल्पायुषी होता है। इसी प्रकार यदि [illegible] वाली माता के लिये काम—शोक अथवा भय का प्रसंग आवे [illegible] माता सदा सर्वदा ग्लानियुक्त रहे तो "कामशोकभयाद्वायु" [illegible] वचन के अनुसार काम, शोक और भय से वायु उत्पन्न होकर [illegible] गर्भ को सुखा डालता है, जिसके लिये कितने ही लोग भूल से [illegible] को दोष देते हैं। परन्तु इसके सम्बन्ध में सुश्रुत, चरक, वाग्भट जैसे ग्रंथों में भी वायु से दूषित हो जाने वाले गर्भ का "उपविष्टक" [illegible] से परिचय कराया गया है। यह गर्भ अपरिमित कालतक गर्भाशय में रह सकता है। इस विषय में पश्चिमी विद्या जानने वालों [illegible] अन्य चिकित्साशास्त्रों को न मानने वालों का यह मत है कि, [illegible] बालक २८० से ३१० दिन के सिवाय अधिक दिन रहही नहीं सकता। भारत की हाईकोर्टों ने भी यही अवधि निश्चित की है। ऐसी अवस्था में इस सिद्धान्त को सहसा कौन मान सकता है? परन्तु [illegible] प्रश्नकर्ता को बतला सकते हैं कि, शुष्क हो जाने वाले गर्भ [illegible] चिकित्सा में आयुर्वेद के आचार्य पौष्टिक बलवर्द्धक मांसरस [illegible] परिहारक औषधियाँ तथा पथ्य की व्यवस्था करते हैं। और इस प्रकार के शुष्क गर्भ का पोषण कर, उसे प्रफुल्लावस्था में लाकर [illegible] से प्रसव कराने की सम्मति देते हैं, इससे सिद्ध होता है कि मांसाहारी प्रजा में मांस भोजन के कारण तथा उसकी गर्मी से वायु [illegible] होकर गर्भ नहीं सूख सकता। इसी से पश्चिमी ग्रंथों में यदि [illegible] का प्रतिपादन न मिले तो इसमें आश्चर्य की कोई भी बात नहीं है। किन्तु हमारे आयुर्वेदशास्त्र में इस विषय की संहिता पर स्पष्ट [illegible] में चर्चा की गई है। इससे बालक के गर्भाशय में रहने की [illegible] मर्यादा निश्चित नहीं की जासकती। इसके सिवाय गर्भिणी [illegible] अपने मनोविकार के वशीभूत होकर जिस प्रकार के विचारों का [illegible] करती है वे सब बातें भी गर्भस्थ बालक के अन्त करण पर प्रतिबिम्बित हो जाती हैं, और उसी प्रकार के स्वभाव से वह जन्म लेता है। यदि पाठकों ने इस विषय को पसंद किया तो हम शीघ्र ही "उत्तम [illegible] उत्पन्न करने के उपायों" पर अपने विचार प्रगट करेंगे।

आशा है कि हमारे भूले भटके भाई इन सब बातों को [illegible] गर्भ तथा उसकी स्थापना, रक्षा आदि पर ध्यान देंगे। कई अर्थ [illegible] लोग आजकल के कोकशास्त्र (!) जिन्हें हम धोखा देनेवाले [illegible] कह सकते हैं—पढ़कर मनमाने ढंग से समागम करते हैं, और [illegible] की गड़बड़ कर डालते हैं। जो कभी कभी बिचारी अबलाओं [illegible] बालकों के लिये प्राणहारक बनजाती है। आशा है कि पाठक [illegible] पर खूब विचार करेंगे।

([illegible])

ऐतिहासिक दृश्य

बालशेविकों का नेता

महर्षिकुल विद्यालय ।

प्रिय सज्जनो! जब इस भारतवर्ष की पूर्व काल की दशा से आजकल की दशा का मिलन करते हैं तो पृथ्वी आकाश जैसा अंतर दीखता है। ध्यानसे देखिये तो ज्ञात होगा कि; पूर्वकालमें भारतीयोंमें एक ऐसी प्रधान शक्ति रक्षित रहती थी जिसके बलसे वे बड़ेही बलिष्टात्मा होते थे, उस आश्रम रूपिणी शक्ति का नाम "ब्रह्मचर्य" था। ब्राह्मण बालक तो इसकी पूर्णरक्षा करते ही थे, पर क्षत्रिय वैश्यों के बालक भी इसके महत्व को अच्छी तरह जानते थे। ऐसा एक भी उदाहरण न मिलेगा कि ब्राह्मणादि वर्णाश्रम के बालक बिना इसको पाले किसी लौकिक कार्यमें प्रवृत्त हो गये हों, यदि किसीने इसके विरुद्धाचरण किया तो उसे उसका फल भी भोगना पड़ा।

पहिले द्विज बालक उपनयन होते ही अपने गुरुओं के पास विद्याध्ययनार्थ वनोंमें जाकर यमनियम पूर्वक ब्रह्मचर्य की रक्षा करते हुए सब शास्त्रों का अध्ययन करते थे, फिर स्नातक हो गृहस्थाश्रममें प्रवेश करते थे। आज उसी के अभावसे देश दिनोंदिन हीनता को प्राप्त होता जा रहा है।

अब आवश्यक्ता है कि, उसी प्राचीन प्रणालीसे शिक्षा हो, अन्यथा देश के बालक २० वर्ष की ही आयुमें वृद्धतांगत होने लगेंगे और होही रहे हैं।

इन्हीं सब बातों का पूर्वापर देख लक्ष्मणझूला ऋषीकेशमें श्री भागीरथी के तटपर एकान्त तपोभूमिमें महर्षिकुल विद्यालय की स्थापना की गई है। यद्यपि इस एक विद्यालयसे देश की आवश्यकता पूर्ण न हो सकेगी, पर सांप्रत जो थोड़ा २ हो सो भी अच्छा है।

इस विद्यालयमें ८ वर्ष से १२ वर्ष तक के द्विज (ब्रा० क्ष० वै०) बालक प्रविष्ट किये जाते हैं। जो २१ वर्ष की आयुतक वहीं रह सकेंगे। इस बीचमें उनको प्रधानतया संस्कृत के ग्रन्थों का अभ्यास कराया जाता है, एवं राज भाषा इंग्लिश की एन्ट्रेन्स तक की योग्यता करायी जाती है। आर्ट (कला) के लिये भी प्रबंध किया गया है। (जैसा कि प्रेम महाविद्यालय वृन्दावनमें है) छात्र संस्कृत की काशी, कलकत्ता, लाहौर की उच्च परीक्षायें इतने समयमें पूर्ण कर लेंगे।

इस समय १४ छात्र यमनियमसे विद्याभ्यास कर रहे हैं। सनातन धर्म के अनुसार उनसे किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती। भोजन वस्त्र पुस्तकें सब विद्यालयसे देने का प्रबंध है। अब देश के धनी धर्मात्माओं से सानुरोध प्रार्थना है कि, वे तन, मन, धनसे इसकी सहायता करें। दया, सेवा, धर्मसेवा, उचित दान ये तीनों बातें एक साथ ही हैं।

अभी ब्रह्मचारियों की कुटियें बनने को हैं, धनी लोग यदि १।१ कुटिया बनाने ही का व्यय स्वीकार कर लें तो छात्रों की संख्या शीघ्र ही बढ़ा दी जायगी। इस समय स्थान का घोर कष्ट है। एवं भोजन छादनकी भी आवश्यकता है। सब हिन्दू भ्राताओं से हमारा निवेदन पर्याप्त है।

निवेदक

गोविंद [illegible] शास्त्री मंत्री महर्षिकुल विद्यालय

लक्ष्मण झूला [illegible]

"मद्रास में हिंदी प्रचार।"

एक वर्ष से अधिक हुआ, तब से हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने मद्रास में हिन्दी प्रचार का काम हाथ में लिया है। इतने समय में ही आशातीत सफलता हुई है। मद्रास में हिन्दी प्रचार आफिस खोल दिया गया और वहां महात्मा गांधी के सुपुत्र श्रीयुत देवीदासजी गांधी और स्वामी सत्यदेव परिव्राजक काम कर रहे हैं, कुंभकोनम और मुसली पट्टम् में नेशनल कालेज और स्कूलों में हिन्दी कक्षाएँ खुल गई हैं, और उनमें सम्मेलन द्वारा भेजे हुए हिन्दी अध्यापक हिन्दी पढा रहे हैं। इनके अतिरिक्त प्रातःकाल और सन्ध्या को भी समय रक्खा गया है, और उस समय कितने ही वकील तथा अन्य व्यवसाय श्रेणी के लोग हिन्दी सीखने आते हैं। छः मद्रासी विद्यार्थी-एक स्त्री, पांच पुरुष-सम्मेलन से छात्रवृत्ति पाकर प्रयाग में हिन्दी पढ रहे हैं। अगस्त में ये सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा देकर मद्रास वापस जायँगे और हिन्दी प्रचार का कार्य करेंगे। इस काम में सम्मेलन का बहुत धन व्यय होरहा है। मद्रास में हिन्दी प्रचार की रिपोर्ट शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है, उससे सब विवरण प्रकट होजायगा।

अब मद्रास में एक हिन्दी-पुस्तकालय की बड़ी आवश्यकता है। श्रीयुत देवीदासजी गांधी ने भी मुझे इस विषय में पत्र लिखा है। सम्मेलन इस काम में हिन्दी पुस्तक प्रकाशकों से सहायता चाहता है। हिन्दी की चुनी हुई पुस्तकों के संग्रह में दो हजार रुपये से कम नहीं लगेंगे। मद्रास प्रचार में ही इतना धन खर्च होरहा है, और अभी आगे इससे कई गुना खर्च होगा कि जिससे सम्मेलन को धन के लिये सदैव चिंतित रहना पड़ता है। इस समय पुस्तकें खरीदने के लिये धन की बिलकुल गुंजाइश नहीं। अतएव यदि हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशक गण अपनी प्रकाशित पुस्तकों की एक २ प्रति देदें तो सम्मेलन के सिर का एक बड़ा बोझा उतर जायगा। हिन्दी पुस्तक प्रकाशकों से पुस्तकें मांगने का अधिकार सम्मेलन को एक कारण से और भी है कि, हिन्दी प्रचार का काम जितनाही विस्तार पूर्वक होगा, उतना ही प्रकाशकों की आमदनी का क्षेत्र भी बढ़ जायगा। भारतीय राष्ट्र की उन्नति के एक आवश्यक कार्य के साथ सम्मेलन हिन्दी-पुस्तक प्रकाशकों की आमदनी बढ़ाने का भी काम कर रहा है। अतएव प्रकाशकों से सहायता मांगना अनुचित नहीं जान पड़ती। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारे उदार हिन्दी पुस्तक प्रकाशकगण मेरी प्रार्थना को निष्फल न जानेदेंगे। पुस्तकें, श्रीयुत देवीदासजी गांधी, हिन्दी प्रचार आफिस, मद्रास, के पते से भेजी जायँ और उसकी सूचना सम्मेलन कार्यालय को दीजाय। मद्रास प्रचार की वार्षिक रिपोर्ट में पुस्तकें भेजनेवाले सज्जनों का नाम धन्यवाद पूर्वक प्रकाशित किया जायगा।

इस काम में जो सज्जन पुस्तकें न देकर आर्थिक सहायता देना चाहें वे, मंत्री हिन्दी-साहित्य सम्मेलन-कार्यालय, प्रयाग, के पते से शीघ्र धन भेजदें।

हिन्दी समाचार पत्रों के मालिकों से भी प्रार्थना है कि वे अपना २ पत्र हिन्दी-प्रचार-आफिस, मद्रास, के हिन्दी-पुस्तकालय के लिये मुफ्त देने की कृपा करें।

निवेदक,

[illegible]।

प्रचार मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग,

विद्यार्थियों को सूचना।

सनातन धर्मावलम्बी द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) विद्यार्थियों को सूचना दी जाती है कि, सं. १९.९ की [illegible] की प्रधान सभा के प्रस्ताव के अनुसार ऋषिकुल में वे भी द्विज बालक प्रविष्ट हो सकेंगे जिनकी अवस्था १४ वर्ष से अधिक नहीं। [illegible] हो और [illegible] में ठीक योग्यता रखते हों। [illegible] इस वर्ष ऋषिकुल में १० से [illegible] विद्यार्थी प्रविष्ट हो सकते हैं जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य [illegible] के हों, अवस्था में १४ वर्ष से अधिक न हो [illegible] से [illegible] हो जिनका [illegible] विवाह या [illegible] न हुआ हो। [illegible] कि, [illegible] के अधिकारी [illegible] बालक हो [illegible] में [illegible] परीक्षा [illegible] होंगे। [illegible] ऋषिकुल की भांति ऋषिकुल में भोजन का व्यय [illegible] विद्यार्थियों को कुछ नहीं देना पड़ता। [illegible] आवश्यक [illegible] के साथ ३० सितम्बर के पहले हमारे पास पहुँच जानेचाहिये।

[illegible]

स्वराज्य की लढ़त।

(लेखक—श्रीयुत दामोदर विश्वनाथ गोखले बी. ए. एल-एल बी।)

स्वराज्य की मांग करते समय भारतीय नेताओं ने अपनी मांग पाश्चिमात्य प्रचलित शासन शास्त्र की मर्यादा को ध्यान में रखकर ही की थी। इसीसे उसकी शास्त्र शुद्धता के विषय में कोई भी शंका नहीं कर सकता। प्रजा की ओर से जो कर वसूल किया जाता है, उसकी व्यवस्था प्रजा के अथवा प्रजापक्षीय प्रतिनिधियों के मतानुसार ही होनी चाहिये यही एक मात्र अंग्रेजी राज्यशासन का आधारस्तंभ है। उसी प्रकार प्रजासत्ताक राज्यपद्धति ही सर्व श्रेष्ट समझी जाकर उसेही सर्वत्र अमल में लाने का प्रयत्न आज समस्त संसार में होरहा है। और इस दृष्टि से विचार करने पर भारतीय स्वराज्य की मांग एक प्रकार से बिलकुलही थोड़ी जान पड़ती है। राज्य कारोबार के विषय में प्रत्येक राष्ट्र स्वतन्त्र रहे और उसके अन्तर्गत कारोबार में अथवा पर राष्ट्रीय सम्बन्ध में तद्देशीय लोगों के सिवा दूसरे किसी का हाथ न रहे, उस देश की फौजी सत्ता भी उसी के अधिकार में रहे, और अपने व्यापार तथा कलाकौशल्य की वृद्धी करने को भी वह स्वतन्त्र रहे, तथा उस राष्ट्र की राज्यसत्ता उसके प्रतिनिधियों के हाथ में रहे। ये तत्व सभी योरोपीय शास्त्रवेत्ताओं ने पूर्णतयः स्वीकार किये हैं, यही नहीं बरन् बिना इसके संसार में शांति स्थापित होना कठिन है, और इसीलिये महायुद्ध की आग भड़काई गई थी। परन्तु योरोप और अमेरिका में जो राजकीय मांग योग्य और उपयुक्त तथा शास्त्रशुद्ध समझी जाती है वह एशियाखण्ड और उसके अन्तर्गत् भारतवर्ष के विषय में योग्य उपयुक्त और शास्त्रशुद्ध हो तो भी व्यवहार्य नहीं मानी जासकती, इसके लिये भारत की परतन्त्रता के सिवाय और कुछ भी कारण नहीं बतलाया जासकता। कनाड़ा की शीत के निवारणार्थ उपयोग में लाया जानेवाला ऊनी कोट भारत की गरम हवा में काम नहीं देसकता, यह मोर्ले साहब का भ्रामक कोटिक्रम केवल सत्ता के बल पर ही खड़ा रह सकता है। इस कोटिक्रम के लिये हम उत्तर देसकते हैं कि, हमें कनाड़ा का ऊनी कोट नहीं चाहिये, हमें तो हमारा निज का शुभ्र स्वेत मलमल का राजकीय अधिकारों का जामा पहनने दीजिये। वस्तुस्थिति ऐसी है कि; हमारा यह राजकीय स्वतन्त्र सत्ता का जामा कभी से छीना जाचुका है, और इसी कारण राजकीय आपत्ति के जाड़े में भारतवासियों को ठिठुरते बैठना पड़ता है। अपना जामा चला जाने और फिर से उसके मिलने की आशा न होने से ही भारतवासियों को, कनाड़ा, आष्ट्रेलिया आदि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य घटकावयवों के शरीर पर के कोट के सरीखा कोट मांगने का मौका आया है।

भारतवासियों की स्वराज्य की मांग न्याय्य है और उसे पूर्ण करना ही ब्रिटिश राजनीति का ध्येय है, इस बात को स्पष्ट रूप से मि० मान्टेग्यूने पार्लमेन्ट में सिद्ध किया, परन्तु इस वजन का परिपाक अर्थात् जिन नौकरों के हाथ में भारत की राज्यसत्ता, प्रत्यक्ष अटकी हुई है, उनका यह शाहियाना ठाट दूर होकर वे भारत के सच्चे नौकर बनना चाहिये। मान्टेग्यू साहब ने यह बात अपने भिन्न २ भाषणों में स्पष्टतयः सिद्ध की है। अंग्रेजी पार्लमेन्ट अथवा अंग्रेजी पार्लमेन्ट के प्रतिनिधि के नाते भारत में आज जो लोग राजदण्ड धारण कर रहे हैं, उनसे धीरे २ सारी सत्ता लेकर उसे भारत के प्रतिनिधियों को सौंप देना ही 'स्वराज्य' का भावार्थ है। नौकरशाही के पुरस्कर्ताओं को यह अर्थ असुविधा जनक जान पड़ने से उन्होंने इस सुधार योजना के सम्बन्ध में मनमाने आक्षेप करके वॉइसराय साहब तथा मि० मान्टेग्यू से अपने हाने चार का प्रबन्ध पहले से ही कर लिया है। और यह प्रबन्ध हो जाने से ही जान पड़ता है कि, स्वराज्य योजना अधकचरी हाथ लगेगी। राजकीय व्यक्तिस्वातंत्र्य, राष्ट्रीय आर्थिक स्वातंत्र्य और प्रजासत्ताक पद्धतिकामी सभी राजकीय सुधारों

स्वराज्य का त्रिशंकी पाया

है, ऐसा कहना हमें अनुचित नहीं जान पड़ता। राजकीय. व्यक्तिस्वातंत्र्य की आवश्यकता कितनी है, इसका परिचय भारतवासियों को २ दर भिन्न रहा है। पंजाब की विगत चार महिनों की राजकीय ... पर सूक्ष्मतः विचार करनेवाले किसी भी स्वाभिमानी मनुष्य ... रतवासियों की दीनहीन स्थिति के लिये मरणप्राय दुःख हुए न रहेगा। बम्बई की विशेष कांग्रेस ने अपनी सुधारों की मांग उपस्थित करने से पूर्व अपने मनुष्यत्व के अधिकारों को सम्हाले सम्बन्धी प्रस्ताव पास किया था। उस समय कितने ही एँग्लोइंडि पत्रकारों ने और भारतीयों में से कितने ही पंडितम्मन्यों ने इस प्रस्त की कुचेष्टा करने का भरसक प्रयत्न किया था। केवल प्रस्ताव मात्र ही हमारे अधिकारों की रक्षा नहीं होसकती इस आशय की टी टिप्पणी करने से कदाचित् कुछ अर्थ निकल सकता था; परन्तु अंग्रेजी राज्य में सर्वत्र सुकाल होने से "दस अपराधी छूटें पर भी निरपराधी मनुष्य को दण्ड न मिले।" इस प्रकार का यह राज्य होने से. ऐसे प्रस्तावों की आवश्यकताही नहीं है, यों कह वालों की आंखों में पंजाब के काण्ड से बढ़िया तीव्र अञ्जन लग गया होगा, ऐसा कहना अनुचित नहीं जान पड़ता। अंग्रेजी राज्य में साधा रण और निरुपद्रवी व्यवहार में अधिकांश सच्चा इन्साफ होता है, इस भी किसी प्रकार की शंका नहीं है; परन्तु राजकीय विषयों में अथ काले विरुद्ध गोरे का स बन्ध आने पर वह न्याय निश्चय पूर्वक निर्भ स्वरूप में ही मिलता है, ऐसा अलबत्ता लोकपक्ष को तो नहीं जा पड़ता, इस बात को स्वीकार करने की आवश्यकता जान पड़ेगी विगत चार महिनों में पंजाब की घटनाएँ और लेफ्टिनेन्ट सॅकेट मामला ऊपर की बातों के लिये उत्तम उदाहरण हैं। पंजाब और बंगाल प्रान्त में हजारों युवकों को देश रक्षा कानून की दुहाई देकर हवालात में डाल दिया। इस कृत्य का समर्थन करने के लिये रौलेट कमेटी की रचना हुई। इस कमेटी ने एक ओर के सुबूत सुने निदान जिन लोगों पर राजद्रोह के समान आरोप बे धड़क लगाये गये, उनकी बहस करने की तय्यारी रहने पर भी उनका कहना नहीं सुना गया। और इस कमटीने नौकरशाही के कृत्यों का समर्थन किया, यही नहीं बरन् उन्हें मनमाना शस्त्र हाथ में देने की भी तय्यारी की, रौलेट कमेटी का निर्वाचन और उनकी रिपोर्ट दोनों का ही लोकपक्षने सख्त विरोध किया। इस रिपोर्ट में के विष को निकाल देकर निरुपद्रवी बनाने के लिये मा० खापर्डेने बड़ी धारा सभा में प्रस्ताव किया और इसके बाद इस रिपोर्ट के पाये पर खड़े किये हुए रौलेट बिल के भूत को गाड़ देने के लिये लोकपक्ष की ओर से खटपट शुरु हुई; परन्तु सर जार्ज लॉडिस साहबने यह कहने में कि; तुम चाहे सो करो, कितनेही चिल्लाते रहो, हम इस बिल को पास कर कानून का रूप देंगेही, कुछ कमी नहीं की। अर्थात् लोकपक्षने भी उसका नियम बद्ध पद्धति से विरोध करने का निश्चय किया। सभाएँ भरी जाकर निषेध प्रदर्शक प्रस्ताव करने, अर्जे मारूज करने, कौन्सिल में लोक प्रतिनिधियोंने यथा शक्ति रुकावट डालने, कौन्सिल से उठ जाने, कौंसिल में विरुद्ध मत देने आदि आन्दोलन की ऊपरी सीढ़ियों पर लोकपक्ष के नेता चढ़ने लगे। और लोकमत की तीव्रता का सर्कार को परिचय दिलाने का यथाशक्ति यत्न किया गया, तो भी हठी नौकरशाहीने हठ न छोड़ा इसीलिये नियम बद्ध आन्दोलन की अगली सीढ़ियां चढ़ने की लोक पक्षने शुरुआत की। मा० मालवीय, मा० मजरुलहक, मा० शुक्ल ने अपने कौन्सिलपद से इस्तीफे दे दिये। महात्मा गान्धीजीने सत्याग्रह का शंख फूंका और निषेध प्रदर्शक हड़तालों की शुरुआत हुई। अर्थात् नौकरशाही को सहज ही में तीव्र लोकमत की आंच लगने लगी। और इस तीव्र लोकमत की आग की खबरें विलायत में अपने बड़े अधिकारियों के पास तक न पहुँचने देने के लिये 'हम सारो हलचल के रूप में, लोगों! बालशेविज्म का

भेड़िया आया, भेड़िया आया

की पुकार मचा कर अपने घर की आग बुझाने और उसे निरुपद्रवी तथा सात्विक नियम बद्ध पद्धति के धरपर डालने का यत्न किया गया है का नाम सुनते ही मार्शल ला की शुरुआत हुई और इस फौजी कानून की चक्की में पंजाब पेल डाला गया। अर्थात् विलायत में इसमें मदद मांगनेवाली पार्लमेन्ट की दिशाभूल होकर प्रथम सर्वत्र शांति स्थापित होना चाहिये, इस तत्व का अवलंबन किया गया. और सर माइकल ओडायर साहब के हाथ में की लगाम छूट जाने से उनका अन्धाधुन्द राज्यकारोबार का घोड़ा बे तरह चारों ओर भागने लगा। अधिकांश सभी देश भक्त नेताओं की पकड़ धकड़ और नजरबंद हुई, और पंजाब अदालतों के सामने फौजी अमल शुरु करने से पूर्व उनके इतवार

...नौकरशाही युक्त दुर्दामकारी अधिकारियों का मान बढ़े और ...नों को धाक जमे, इस आशय से कितनी ही जगह उन्होंने सबको ...सलाम करना ही चाहिये, इस प्रकार के सर्कारी हुक्म छोड़े। ...तों में चलाये हुए मुकदमों में पंजाब से बाहर के बेरिस्टर ... विद्वान वकील बेरिस्टर को आने में रुकावट डाली गई। ...र केवल लाला हर किशनलाल आदि नेताओं की रक्षा के ... हसन इमाम जैसे लोगों को बड़ी मिन्नत बारी से परवानगी ... परन्तु फौजी अदालत का फौजी इन्साफ भी उसी ढंग का ... उस न्याय में म० गान्धीजी बड़े बड़े षड्यन्त्रकारी समझे गये। ... भरी हुई सभाएँ भयंकर षड्यन्त्र समझी ...बिल के निषेधार्थ ...नों के भाषण ... सर्कार को दी ...मकी और इड़ ... प्रत्यक्ष षड्यंत्र ...क गये। लाला हर ...नलाल के समान ...ओं के दिये हुए ... हजार रुपये का ...ड इस युद्धका फंड ...मझा गया। सारांश ...ला हर किसनलाल ... दुनीचंद जैसे वृद्ध ...और लोकप्रिय नेता उस षड्यंत्र के नायक, नियम-बद्ध आन्दोलन के लिये की हुई सभा यह षड्यंत्र और फण्ड ही खजाना और प्रस्ताव शस्त्र समझे गये। और इन क्रांतिकारियों की मिल्कियत जप्त कर उन पर राज्यसत्ता विरुद्ध क्रांति करने का अपराध लगाया जाकर आजन्म कालेपानी की सजा दी गई। अंग्रेजी न्याय देवता की हँसी करने के लिये यदि किसीने कल्पनिक कथानक की रचना की होती तो उसे यह इस वस्तुस्थिति की अपेक्षा अधिक चमत्कृत बना सकता था। तकदीर से पंजाब के वर्तमान लेफ्टिनेन्ट गवर्नर का दयालुत्व जाग्रत हो जाने के कारण उन्हों ने ये सजाएँ कम कर दीं। इसी प्रकार स्टेट सेक्रेटरी साहबने इस न्याय की सत्यता के लिये सशंक होकर कहिये। अथवा उन्हें ब्रिटिश जनता के सन्मुख जवाब देना पड़ने के कारण कहिये उन्होंने एक जांच कमीशन नियत करने का वचन दिया है। इसी प्रकार प्रायो कौंसिलने न्याय की रक्षा के लिये अपीलें मंजूर की हैं। परन्तु प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि प्रीवी कौंसिलने कदाचित् फौजी अदालतों को यह न्याय पद्धति बेकायदा बतलाई अथवा उस कमीशनने दोष का ठीकरा नौकरशाही के सिर पर फोड़ा, तो भी जो होके बहुत आदमी आज फांसी पर चढ़ाये जा चुके हैं, या जो लोग मातृभूमि के बलिदान हो चुके हैं उनके लिये जवाबदार कौन है! इसी प्रकार इस निरपराधी ...

रिफार्म बिलकमेटी के मुख्य लोग।

१ लार्ड सेलबर्न (अध्यक्ष), २ लार्ड सिडेनहम, ३ मि० माण्टेग्यू, ४ लार्ड कार्मायकेल, ५ लार्ड मिडल्टन, ६ लार्ड सिंह ७ मि टी जे बेनेट, ८ सर जे डी· ...रीस, ९ लार्ड क्यू।

...छूट जांय ... निरपराधी को दण्ड न दिया जायगा, इस तत्व पर हर्ताल फेरने की जवाबदारी किसके सिर पड़ेगी? तीव्र लोकमत का दाब अथवा धमकी सरकार पर पड़कर वह लोकमत का आदर करे यही सब नियम बद्ध आन्दोलनों का उद्देश्य होता है परंतु इस प्रकारका दबाव डालना मानो सर्कार को डांटना है। और इन्हें ... लिये इस आन्दोलन की गणना क्रान्तिमें की जाने चाहिये। इस विचार... सरणी का प्रतिरोध किस प्रकार किया जाय? परंतु इन सब से ... अधिक महत्व का प्रश्न यह है कि—इस प्रकार से भारत वर्ष ... किसी भी ब्रिटिश नागरिक के स्वातन्त्र्य पर जब जी चाहे दबाव डा... की सत्ता यदि नौकरशाही के हाथ में रही तो स्वराज्य का अधि... मिला क्या और न ... ला क्य—बराबर ... है। जिनके हित के लिये कोईसा भी राज्य कारोबार चलाया जाता है, उनकी सम्मति के बिना अथवा उनके बहुमत विरुद्ध राज्य का नियंत्रण न किया जाय, इतनाही लो... सत्ताक राज्य पद्धति में के तत्वों का अ... स्वसम्मति के त... का अर्थ करने में ... हानि नहीं जानपड़... इससे भी आग... कर इतना तो भी ... कार करना चा... कि, निदान उन ... की इच्छा के वि... उनके भूल भरे म... भी क्यों न हो, ... उनकी स्वतन्त्रता का नाश करनेवाले और उन्हें दुबा देनेवाले कानून अपने अधिकारी वर्ग के बल पर पास कर लेना मानो लोक सत्ताक राज्य पद्धति का, स्वसम्मति के तत्वों का अथ... स्वराज्य के अधिकार का विनाश करना है। पंजाब के मुकदमों पर ही सब दारोमदार होने के कारण सहज ही स्वराज्य के प्रश्न की अपेक्षा पंजाब की समस्या पर ही सब का ध्यान लगा हुआ है। स्वराज्य के चतुर्थांश अथवा अर्धांश अधिकार मिलने से भारत वासियों का आसन संसार के लोकसत्ताक राष्ट्रों की बराबरी में बिछाया जाने के बाद हमारे राष्ट्र का बोलबाला होगा—इस स्वप्न के देखनेवालों को पंजाब में बैठे हुए धक्के और मारपीट ने भली भांति जागृत कर स्पष्ट में प्रत्यक्ष सृष्टि में ला दिया है। भारत से बाहर जानेवाले भारतीयों को हम जिन हैं; स्वराज्याधिकार में हीन हैं, हमारा दर्जा नीचा है इसका परिचय मिल कर

गुलामी से लज्जा

आती है, यह बात भारत से बाहर घूमनेवाले सभी आंखवाले कह...

है परन्तु भारतवर्ष में इसका परिचय प्रतिक्षण हर मनुष्य को आये विना नहीं रह सकता। ब्रिटिश पार्लमेन्ट की स्वातन्त्र्य प्रीति पर और न्याय बुद्धि पर भारत वासियों को विश्वास है, इसीलिये पार्लमेन्ट में इस काम पर अधिक ध्यान देकर मान्टेग्यू साहब को जांच कमीशन नियत करने का अभिवचन तत्कालही पूरा करना चाहिये। और उस कमीशन को निष्पक्षपात हो जांच करके पंजाब में बालशेविकों के साहस से भारत के नेताओं ने षड्यंत्र की रचना की थी क्या? इस बात के सिद्ध करने को पंजाब के अधिकारी लोग तय्यार रहें, और यदि यह बात सिद्ध न होतो पंजाब के भूत पूर्व ले० गवर्नर सर मायकल ओडायर को पार्लमेन्ट के सामने जांच के लिये खींच लाना चाहिये। बिना इसके लोकपक्ष का समाधान नहोगा। और आगे के लिये कोईसा भी कानून लोकपक्षके मत विरुद्ध पास न किया जाय और यदि पास कर दिया गया होतो वह उठा लिया जाय। इसी बुद्धि से शुरु किये हुए सारे आन्दोलनों को नौकरशाही को क्रांति का स्वरूप प्राप्त कराने के लिये मौका न मिले, इस प्रकार का प्रबन्ध करने पर ही सीमाबद्ध मार्ग से स्वराज्य प्राप्ती के उद्योग में लगे हुए स्वराज्य वादी पक्ष की खटपट है। अंग्रेज लोगों की स्वातन्त्र्य प्रियता पर, उनकी न्यायबुद्धि पर अभी तक लोगों को विश्वास है, इसीलिये यह विश्वास और यह अंग्रेजी राज्य का पाया विचलित न होने दिया जाय, इस बात पर सर्कार को ध्यान रखना चाहिये। राजकीय सुधारणा के नये अधिकार भारतवासियों को देते हुए इस मुद्दे की ओर खासकर ध्यान दिया जाकर खुद इंग्लैण्ड में जिस प्रकार सब ब्रिटिश नागरिकों के स्वातन्त्र्य की रक्षा की जाती है, उसी प्रकार भारतवासी भी ब्रिटिश नागरिक हैं, इस बात का विश्वास दिलाने के लिये इंग्लैण्ड की ही तरह उन्हें स्वतन्त्रता के अधिकार दिये जायँ ऐसा प्रन्बध करना उचित है। स्वातंत्र्य संरक्षण ही स्वराज्याधिकार की नींव है, और बिना इस के इमारत टिक नहीं सकती।

राष्ट्र की आर्थिक स्वतंत्रता ही स्वराज्य की नींव का दूसरा और महत्व का भाग है। आर्थिक स्वान्तन्त्र्य न हो कर केवल राजकीय स्वान्तन्त्र्य होनेकी बात करना ही चमत्कारिक है। इससे तो मुँहपर ताला लगाकर खुशी से स्वैर संचार करने को मुक्त किये हुए घोड़े की ही दशा उस राष्ट्र को प्राप्त होजायगी। मनमाने कानून बनाना, मनमाना कारोबार चलाना, केवल उद्योग धन्दों पर, औद्योगिक साधन संपत्ति पर और व्यापार पर उस राष्ट्र का अधिकार न रहे ऐसा कहना मानो उस राष्ट्र को औद्योगिक गुलामी में दिन निकालने को विवश करने जैसा है। इस प्रकार की स्वतन्त्रता में केवल नाम का ही अन्तर है। क्योंकि दूसरे राष्ट्र को जीत कर अपनी गुलामी में रखने का उद्देश्य सम्पत्ति की हाय ही निदान आज कल के युग में तो होता है, ऐसा कहने में हानि नहीं। तो फिर आर्थिक स्वतन्त्रता न रहने पर वह स्वतन्त्रता केवल पोलीही ठहरेगी। देश का देश में ही उत्पन्न होनेवाले माल की व्यवस्था करना, आने जानेवाले माल पर कर बैठाना, स्वदेशी उद्योग धन्दों को उत्तेजन देना, ये बातें यदि स्वाधीन न हों तो कोई भी राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता। भारत की आर्थिक नाड़ियां अंग्रेजी राज्य कर्ताओं के हाथ में हैं। यही नहीं वरन् इंग्लैण्ड के ही हिताहित की दृष्टि से भारत के व्यापार और उद्योगधन्दों की व्यवस्था की जाती है, इस प्रकार लोकपक्ष का भारी आक्षेप है। इस आक्षेप का निरसन अभी कोई भी समाधानकारक रीति से कर नहीं सका। ऐसी अवस्था होने पर जिस स्वराज्य की योजना में यह आर्थिक स्वातन्त्र्य की मांग पूरी नहीं की जाती। उस योजना के विषय में लोगों को आदरभाव होना अशक्य है। मार्गदर्शक साधन, व्यापार उद्योग धन्दे आदि बातें यदि परकीयों के अधिकार में रखी गई तो शीघ्रही भारत वर्ष केवल 'कुलियों का देश' बने विना न रहेगा। योरोपियन व्यापारी, मद्रानवाले, और [illegible] की ही भारत में भीड़ होकर सारा मक्खन योरोपियनों के पल्ले में ही पड़ने से भारतवासियों के मुँह में मजदूरी का मठा भी न पड़ सकेगा।

पूर्ण राज्यसत्ता के पर्यन्त भारत में भविष्य काल में ही शुरू हो ऐसा किसी भी स्वराज्य योजना का साधार होना चाहिये। और इसी दृष्टि से मान्टेग्यू साहब की नवीन योजना का परीक्षण करने पर उस योजना की उस ध्येय की ओर जाने की

गोगल्गाय गति

... स्पष्ट होजाती है। वहां सर्कार एक वर्ष में इस नई ... द्वारा अधिक दे जवाबदार बन कर प्रान्तिक सर्कार पहले की ... न की सभी बातों में मोकरशाह के लिये बजबावदार रहेगी।

जो कुछ थोड़े बहुत विभाग ... ही पूरे नहीं हैं। ये विभाग जि ... के अधिकार बिलकुल ... का गवर्नर साहब को अधिकार है, और वेतन ठहराने का भा[र] भी उन्हीं पर है। उसे जब जी चाहे निकाल सकते हैं, और सब अधिक कहा जाय तो उसकी बात सुनने को भी कोई विवश नहीं किया जासकता। इस प्रकार इस नवीन विभाग बंटनी की योजना हो[ने] के कारण इस योजना से किसी को सन्तोष नहीं होसकता।

उपरोक्त व्यक्तिस्वातन्त्र्य, अर्थ स्वातन्त्र्य, और लोकसत्तात्मक राज्य पद्धति का ध्येय; इन तीन तत्वों की नींव पर ही स्वराज्य योजना की इमारत खड़ी कीजायगी। इस प्रकार की आशा अंग्रेज और अमेरिका मुसद्दियों के युद्धकालीन व्याख्यानों पर से बँधती थी। परन्तु यह स्वराज्य का निर्मल दूध भारतवासियों को पच भी सकेगा या नहीं, इस के लिये खास कर सशंक होकर; प्रत्येक अंग्रेज मुसद्दी इस दूध में नौकरशाही के हितार्थ की हुई सूचना का जल मिलाने लगा है, और होते होते इस निर्मल

दूध का पानी

होगया ऐसा कहने में हानि नहीं जान पड़ती। मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड स्कीम, भारत सर्कार की रिपोर्ट और प्रान्तिक सर्कार की रिपोर्ट; इन सब ने मूल योजना को धक्के देकर सुधारणा का जो शकट एक बार ढीला कर दिया वह पूर्व स्थान को पहुँचता नहीं दीख पड़ता। अब यह सब योजना हाउस ऑफ कामन्स और हाउस ऑफ लार्ड्स के सभासदों की नियत की हुई संयुक्त कमेटी के सामने है। इस कमेटी में सब पक्षों और मतों के मनुष्य हैं। इस नई सुधारणा के योग से भारतवर्ष को योग्य अधिकार मिलने के बदले भारत का भारतत्व नष्ट होकर आठ चार आने उसे इंग्लैएड बनाने का ही यह उद्योग है। ऐसा कहनेवाले मजदूर दल के बेनासपूर से लगा कर स्वराज्य के अधिकार भारत को देने से संसार पर भारी संकट आने का सम्भव है, ऐसा कहनेवाले लार्ड सिडनहम तकके सभी लोग हैं। भारतवासियों के हिताहित की चिन्ता करके उनके लिये जीजानसे यत्न करनेवाला कोइ भी मनुष्य नहीं है। स्वतः मि. मान्टेग्यू भी इतनेही के लिये खटपट करेंगे कि, मेरी बतलाई हुई सुधारणा ही भारतको दी जावे। परंतु मान्टेग्यूसाहब को इतने पर ही संतोष होजानेवाला है कि हमने भारत को कुछ दे दिया है। इस संयुक्त कमेटीने भारत प्रतिनिधियोंका कहना भारतके अधिकारियोंका कहना, और अन्य नेताओंकी जो कि भारतसे विलायत को गये हुए हैं; बातें सुननेकी शुरुआत की है। इस संयुक्त कमेटी को नवीन सुधार योजना में कमी बेशी करने का अधिकार दिया गया है—ऐसा कहा गया था। और उसी के कारण कदाचित राष्ट्रीय सभा की मांग के अनुसार सुधार होने का सम्भव है। परन्तु इस कमेटी के अध्यक्ष लार्ड सेलबर्न ने कमेटी के काम की मर्यादा इतनी संकीर्ण करदी है, कि जो मौजूद है उसमें भी क्या मिलेगा इसकी शंका उत्पन्न हो चली है। सर जेम्स मेस्टन, लार्ड साउथबरो, सर क्राड हिल, आदि अधिकारियों के ही साथ मा० सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी की भी गवाही तो होही चुकी है, अन्य नेताओं की भी होरही हैं। भारत के प्रतिनिधियों का जिस विषय में एक मत है, उस पर सब का मत य[ह] लेने के लिये एक सूची तय्यार कीजाकर अन्य प्रतिनिधियों ने अपने २ मन्तव्य स्वतन्त्रता पूर्वक प्रगट करनेवाली सूचनाएँ तय्यार की हैं। इन सब पर विचार होकर यह नई योजना किस स्वरूप को प्राप्त होगी, यह बतलाना अभी कठिन है। सारी परिस्थिति का विचार करने पर किसी भी स्वदेश प्रेमी व्यक्ति का दिल खट्टा हुए बिना न रहेगा। व्यवहार में क्या, और राज कार्य में क्या, याचक वृत्ति मनुष्य का तेज भंग किये बिना नहीं रह सकती। लो० तिलक, मा० बनर्जी, दिवान बहादुर माधवराव, मा० शास्त्री, मा० पटेल, मा० खापर्डे, रा० केलकर के समान बुद्धिमान और कर्तव्यशील राजनीतिनिष्ठ पुरुष अपनी अपेक्षा कितनेही कम बुद्धिमत्तावाले पुरुष के पास जाकर अपनी बातें प्रगट करें, और उनकी उपेक्षा करने का उन्हें अधिकार रहे। यह देख कर भारतवासी भ्रम में पड़ जाते हैं, इसमें किसी भी प्रकार की शंका नहीं। मि० मान्टेग्यू का पार्लमेन्ट में दायित्व पूर्ण राज्यपद्धति शुरू करने का दिया हुआ अभिवचन और उसके बाद का उनका दौरा—इनको समानता के लेन देन का स्वरूप प्राप्त था। और इसीलिये स्वराज्य योजना सम्बन्धी लोगों में एक प्रकार का उत्साह था। परन्तु महायुद्ध की समाप्ति के साथ ही परिस्थिति बदल गई सी दीख पड़ती है।

सुनी। गया की लक्ष्मी का आकार प्रकार बढ़ता देख आनंद हुआ, परन्तु कुछ महिने तकही यह समय पर निकल सकी। अब फिर लेट होरही है। आरा की साहित्य पत्रिका को भी बन्द पाया। यहां से गहमर के जासूस कार्यालय में पहुँचा तो गोपालरामजी को उसी धुन में पाया। परन्तु अब जासूस के उपन्यास उतने मनोरंजक नहीं देखे गये। यहां से आगे बढ़ा तो बस्ती के हरिहरपुर से आदर्श के निकलने की खबर मिली। इसी प्रकार आजमगढ़ में जगद्गुरु के अवतार का समाचार भी सुना। फैजाबाद की कायस्थ महिला हितैषी, को भी जातीय कार्य अच्छा करते देख सन्तोष हुआ। फतेहपुर का आर्य कुमार भी बन्द होगया सुना। इटावे के नारद के दर्शन न हुए। बरस छह महिने में कभी नारदजी महाराज मृत्युलोक में पधारते हैं, और यकायक झलक दिखा फिर स्वर्ग की सैर कर जाते हैं। गोरखपुर की ब्रह्मशक्ति अपनी धुन की पक्की है। नवजात स्वदेश भी दिनों दिन उन्नति पथ पर अग्रसर होरहा है। अयोध्या के चक्रवर्ती और तुलसीपत्र किसी प्रकार ठीक दशा में पाये तिघरा से 'कवि' पत्र भी निकल गया है। परन्तु अभी उस की दशा पूर्णतयः सन्तोषप्रद नहीं। इसी को विद्या को भी समय पर न निकलने के रोग का शिकार पाया। परन्तु पत्रिका किसी क़दर ठीक है। यहां से मैं अल्मोड़ा पहुँचा। पं० बदरीदत्तजी की शक्ति को देखा। परन्तु उसमें प्रान्तिक भावही विशेष पाया गया। अल्मोड़े से हरिद्वार होकर देहरादून पहुँचा। गढ़वाली की दशा मामूली पाई। परन्तु रानीखेत का नया पत्र हिमालय उन्नति करता हुआ पाया। किन्तु उसकी हिन्दी कुछ विचित्र ढंग की देखी। हेडिंग के बदले हेडि और पंक्ति के बदले पंति तथा घ के बदले भ को देख बड़ा आश्चर्य हुआ। हरिद्वार में ज्वालापुर के भारतोदय की दशा वैसी वैसी ही सुन मैं मेरठ पहुँचा। यहां 'ललिता' को प्रेस की पराधीनता से बेतरह पिछड़ती देख हार्दिक खेद हुआ। सुना है कि यह अब घर का प्रेस करके शीघ्रही समय पर निकलने लगेगी। अच्छी बात है। यहां से अलीगढ़ आया-परन्तु यहां के पत्रों की दशा भी वैसी वैसी ही देखी। मथुरा पहुँचा तो यहां न कोई मासिकही था न साप्ताहिक। वृन्दावन का प्रेम भी बन्द होगया। तब मैं आगरे पहुँचा। यहां के जाति विशेष के पत्रों की दशा किसी प्रकार ठीक पाई। राजपूत, जैन पथ प्रदर्शक, जैसवाल जैन, अग्रवाल आदि ठीक चले हैं। बेलनगंज का धर्माभ्युदय २।३ सम्पादकों के बदल जाने पर भी साधारणतः अच्छी दशा में है। आर्य मित्रकी दशा ही विचित्र देखी। स्वदेश बान्धव को समय पर न निकलते पाया। ब्रह्मचारी चलरहा है आगरे से मैं इटावे पहुँचा, तो जनरल प्रेस को बिजली को उन्नति करते देख आनंद हुआ ब्राह्मण सर्वस्व को केवल आर्य समाज की निंदा करते ही देखा। इटावे में उर्दू (जालीम) का अच्छा काम करते पाया। उसके ओमप्रकाश की आंखों में बड़ी ... वस्तुएं देखीं। यहां से मैं कानपुर पहुँचा। प्रताप को ... भलीभांति काम करते देख आनंद हुआ। प्रभात भी बन्द होकर फिर निकला है। व्यापारी तो बन्द होगया। चिकित्सक ... कर रहा है। मुरादाबादी प्रतिभा भी उन्नत दशा में है। ... पत्रिका के प्राण व्याकुल हैं। ... को अच्छी दशा में पाया। वहां प्रयाग आया। यह तो मानों हिन्दी का केन्द्र है। ... पत्र यहां से निकलते हैं पर समय पर कोई भी नहीं निकलता। ... स्वती का काम जब तक द्विवेदीजी के हाथ में रहा यह हिन्दी ... अच्छी सेवा करती रही, और समय पर भी निकलती रही। ... के सहकारीजी ने उसका रंग ढंगही बदल दिया। अब न तो ... पहले के से मार्मिक और मनोरंजक लेख ही रहते हैं, न ... टिप्पणियों, समालोचना और चित्र संतोषकारक होते हैं। मर्यादा ... एक मात्र उच्च पत्रिका होकर भी यह समय पर नहीं निकलती। ... में अब नये सहकारी आये-तो १५ दिन में ही अंक निकाल ... जिस मास की उसी मास में १५ तारीख के भीतर पहुँचने लगी, ... दिसम्बर के बाद धीरे २ जो पिछड़ने लगी सो अब तो ... महिना लेट होगई। बिचारे ग्राहकगण ऊब से गये हैं। ... शीघ्रही इस ओर ध्यान देना चाहिये। मर्यादा सादे रूप में राजनैतिक ... की अच्छी चर्चा कर रही है। अभ्युदय भी उन्नतावस्था में है। विद्यार्थी, गृहलक्ष्मी, कन्या मनोरंजन, आदि भी पिछड़ रहे हैं। परन्तु इनका काम किसी तरह अच्छा होरहा है। स्त्रीदर्पण और विज्ञान ठीक समय पर निकल रहे हैं और उनका काम भी सन्तोषकारक है। यहां से मैं बनारस पहुँचा, सो यहां भी हिन्दी के अच्छे मासिकपत्रों का अभाव पाया। एक दो पत्र उपन्यास थोड़ा २ छापते हैं, परन्तु उनसे साहित्य का कोई उपकार नहीं होसकता। यहां एक मात्र साप्ताहिक हिन्दी केसरी है, परन्तु उसमें मराठी केसरी के एक सप्ताह पहिले के लेखों और टिप्पणियों का अनुवाद मात्र रहने से बासी खबरें तथा लेखादि पढ़ने का जी नहीं चाहता। उसे चाहिये कि यह अन्य प्रकार से ठीक २ प्रबन्ध कर मराठी केसरीके विचारों को कम से कम जिस सप्ताह के उसी सप्ताह में प्रकाशित करने का प्रबन्ध करे तो ... विशेष लोकप्रिय होसकता है, रामनगर की कालिन्दी बन्द होगई। काशी में ही मेरा दौरा पूरा होजाने से तथा गर्मी का मौसम भी होजाने पर मैं सीधा मुकाम पर आ पहुँचा।

श्री उदीच्य युवक मंडल मे धार्मिक शिक्षा पानेवाले विद्यार्थी.

यह औदिच्य युवक मंडल नाम की संस्था काठियावाड़ प्रान्त के वढ़वाण शहर मे आज पांच वर्षों से अस्तित्व मे आचुकी है। इसका उद्देश विद्या प्रचार द्वारा औदिच्य ब्राह्मण जाति की उन्नति करना है। गुजरात और काठियावाड़ मे औदिच्य ब्राह्मणों की घनी बस्ती हैं। इसी प्रकार मालवा, युक्त प्रदेश और पंजाब मे भी औदिच्य ब्राह्मण बड़ी सी संख्या मे रहते हैं, किंतु समय के फेर से इस जाति मे प्रान्तीयता का भेद इस तरह बढ़गया है, मानो तीनों प्रदेश के औदिच्य अपने को अलग २ जाति वाले समझने लगे हैं। यह दशा शोचनीय है। जाति के नेताओं को संघशक्ति का महत्व समझ कर परस्पर सम्बन्ध जोड़ना चाहिये। गुजरात और काठियावाड़ मे ऐसी कई संस्थाएँ है, जहां इस जाति के विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। उन्ही की भांति इस मंडल की ओर से गरीब विद्यार्थियों को पाठशाला की फीस, पुस्तकें और छात्रवृत्ति आदि दी जाने के सिवाय एक धार्मिक पाठशाला और सार्वजनिक निःशुल्क वाचनालय भी चलाया जाता है। जिस से कई लोग लाभ उठा रहे हैं। निरपेक्ष बुद्धि से चलाई जानेवाली इस संस्था को अधिक उपयुक्त और विशेष कार्यक्षम बनाने के लिये ... श्री मानों को अवश्य सहायता देना ... मंडल आश्रय देने के लिये सर्वथैव

महायुद्ध के पांचवें वर्ष का जुलाई मास

(लखक—कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर, बी ए)

जर्मनी के साथ की हुई सन्धी; पर जुलाई महिने में जर्मनी व इँग्लैण्ड की पार्लमेन्ट सभाने अपनी सम्मति दी। फ्रांस, इँग्लैण्ड और जर्मनी तीनों की सम्मति मिल जाने से जर्मनी के साथ व्यापारी व्यवहार जुलाई से ही आरम्भ हो गया। जुलाई के अन्त में पत्रव्यवहार भी शुरु होकर अगस्त के आरम्भ से जर्मनी महायुद्ध से पूर्व की ही तरह बरतने को मुक्त हो गया है। पौलेण्ड की पार्लमेन्ट की ओर से भी सन्धी के लिये सम्मति मिलजाने से जर्मनी और पौलेण्ड का झगड़ा भी मिट सा गया है। पौलेण्ड जो भी जर्मनी की ओर से मुक्त हो गया है, तथापि रशियाकी ओर पौलेण्ड अभी युद्धमें लगा हुआ सा है। रशियन बालशेविकों और युक्रैन की स्वतन्त्र सेना से पौलैंडका युद्ध शुरु ही है। आष्ट्रिया से सन्धी होकर उस संधी शर्तें की शर्तें अमल में लाई जाने पर पौलेण्डको बहुत कुछ स्वस्थता मिलेगी। जुलाई महिने में आष्ट्रिया को अपनी ओर से सन्धी की शर्तें मित्र सर्कारने सूचित की, परन्तु विचार करने के लिये आष्ट्रियाने बारम्बार समय मांगकर जुलाई में संधी का योग न आने दिया। अगस्तके आरम्भ में आष्ट्रिया की सन्धी ढील पर न डाल सकने की अनुकूल परिस्थिती प्राप्त हो जाने से, अगस्त के तीसरे अथवा चौथे सप्ताह में आष्ट्रिया के सन्धी पर हस्ताक्षर होने के रंग ढंग दीख पड़ते हैं। आष्ट्रिया की सन्धी की शर्तें जर्मनी के ही समान हैं। जेकोस्लाव, हँगेरी, जुगोस्लाव, और इटली इन चार प्रदेशों को आष्ट्रियन साम्राज्य का बड़ासा भाग बाँट दिया जाकर स्वीझरलैण्ड की तरह छोटासा टापू आष्ट्रियन राज्य के नाते बाकी छोड़ दिया गया है। आष्ट्रिया को सन्धी की फौज अलग कर केवल २०–४० हजार से अधिक सेना न रख सकने को बाध्य होना पड़ा है। परराष्ट्रीय सभी अधिकार आष्ट्रियाको मित्र सर्कार को सौंप देकर जर्मनी की भांति युद्ध दण्ड भी देना पड़ेगा। परन्तु जर्मनी की अपेक्षा आष्ट्रिया पर मित्रसर्कार की मेहर्बानी विशेष होने से आष्ट्रिया की युद्ध दण्ड सम्बन्धी रकम बहुत थोड़ी रखी जाने की बात कही जाती है। सन्धी की शर्तें तत्कालही स्वीकार करने के लिये जुलाई महिने में आष्ट्रियाने बहुत कुछ बहानेबाजी की। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि, आष्ट्रिया का परराष्ट्रीय मंत्री, इटली और फ्रांस में स्पर्धा उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहा था, और सन्धी के समय उससे अपने लाभ उठा सकने की आष्ट्रिया को आशा थी, परन्तु जुलाई के अंत में उन सब बातों के अधिकांश नष्ट हो जाने से अब आष्ट्रियन सन्धी का मार्ग साफ हो गया है। जुलाई के आरम्भ में फ्यूम बन्दरगाह सम्बन्धी इटली और फ्रांस का झगड़ा बेतरह बढ़ गया था। एड्रियाटिक सागर के पूर्व तट पर फ्यूम बन्दर होने से-जिस समय इटली महायुद्ध में सम्मिलित हुआ, तब इँग्लैण्ड और फ्रांसने लन्दन में इटली को वचन दिया कि सारे एड्रियाटिक सागर का वर्चस्व प्राप्त होने के लिये युद्ध के बाद आष्ट्रिया के सभी बन्दरगाह दे दिये जायँगे। वचनानुसार फ्यूम बन्दर स्थान भी मुझे दिया जाना चाहि[ये इस] प्रकार सन्धी के समय इटलीने हठ धारण किया, परन्तु प्रे० वि[लसन ने] यह बात न्याय संगत न बतलाई। उनका कहना यह था कि; अ[मेरिका] लन्दन के गुप्त वचन के लिये विवश नहीं हो सकता। यही [नहीं] बरन् किसी को मुफ्त का लाभ देनेवाले गुप्त वचन एक ओ[र रख] कर छोटे मोटे राष्ट्रों के हित सम्बन्ध पर पूरा ध्यान दिया जायगा, [इस] प्रकार सब छोटे बड़े देशों को आश्वासन देकर ही अमेरिक[ा] युद्ध में सम्मिलित होने के कारण, गुप्त वचनों के अनुसार फ्यूम ब[न्दर] इटली को देकर सर्बिया और जिगोस्लाव देश की अमेरिका हानि [नहीं] करना चाहता। फ्यूम बन्दर में स्लाव लोगों की बस्ती है, यही न[हीं] वरन् आसपास [का] प्रांत भी स्लाव लोगों का है। फ्यूम [के] दक्षिण की ओर एड्रि[याटिक] समु[द्र का] किनारा भी [...] का है। [...] बन्दर श्यामि [...] को दिया [...] या को [...] समुद्र [...] दूसरे [...] का [...] और [...] को [...] हार [...] का बन्दर [...] है। [...] इटली [...] के [...] हो [...] और [...] फिनिय [...] समर

आस्ट्रिया के साम्राज्य के होनेवाले टुकड़े

नया राज्य सन्धी के अनुसार निर्माण कि[या] [...] उसके उत्तर की ओर के हँगेरी प्रदेश के [...] पर व्यापारी बन्दर स्थान रहते ही नहीं। [...] हित सम्बन्ध के लिये फ्यूम बन्दर इट[ली] [...] प्रकार प्रे० विलसनने निश्चय किया। [...] हो उठा। इँग्लैण्ड फ्रांस आदि रा[...] यदि बड़े २ प्रांत अपने साम्राज्य [...] लन्दन के वचनानुसार फ्यूम [...] उत्तर था। इटली को [...] स्थान सहित ट्रिस्टी प्रांत [...] सागर के पूर्वतट पर [...] गई। परन्तु ट्रिस्टी [...] के कारण एड्रियाटिक [...] हो गया, उसे फ्यूम [...] गड़बड़ करेंगे, इस [...] अपने मांव में [...] पत्र पर हस्ताक्षर [...] जाने पर; फ्यूम [...] गया। उस [...] में स्पर्धा थी

[...] कामन प्रान्तमें कोमिन्याक [...] होने की स्पर्धा में मास्को [...] ध्याक. लेनिन को स्पर्धा [...] उत्पन्न थी। परन्तु जर्मनी [...] नलजाने से; लेनिन की

ामारी भी हुई, और एक दंगे में तो स्लाव लोगोंने इटालियनों की ड़ी तरह खबर भी ली । फ्रेन्च के विरुद्ध होने से स्लाव सिरं बन गये हैं, ऐसी इटली को विश्वास होकर हँगेरी के बाल्शेविकों चढ़ाई करनेवाली मित्रसर्कार की सेना को मदद देने को इटलीने ार किया । इटली व फ्रांस के बेबनाव से लाभ उठा कर आपने ोल प्रांत का अधिकांश भाग अपने पास रखने को मिले तथा दंड का बोझा अपने ऊपर न लादा जाय, इस हेतु से सन्धी में ावट डालने के लिये आष्ट्रिया के मित्रमण्डलने शुरुआत की । ावट डालने का ज़ोर आष्ट्रिया में देखा गया, और यह फ्रांस र इटली के बीच के बेबनाव के कारण था । आष्ट्रिया के साम्राज्य नक्शा आज यहां दिया जाता है । उसमें का काला भाग मात्र आष्ट्रियन राज्य के नाते बाकी रखा जायगा । बोहेमिया, पश्चिम ाशिया और उत्तर हँगेरी मिलकर झेकोस्लावों का नया राज्य र्माण होनेवाला है । दक्षिण ओर का टिरोल प्रांत, ट्रिस्टी प्रांत और ालेशिया ये भाग इटली को दिये जाकर, जिगोस्लाविया, दक्षिण री का बेनेट प्रांत, सर्विया, बोसनिया आदि मिला कर जिगोस्लावों नया राज्य बनेगा । हँगेरी के पूर्व और दक्षिण भाग में भी रोमानिया को स्सा मिलेगा । आष्ट्रिया की सन्धी से आष्ट्रियन साम्राज्य के इस ार-टुकड़े होने, से हँगेरियन बाल्शेविकों का बन्दोबस्त किये बिना

ाष्ट्रियन सन्धी निरर्थक होगी, ऐसा मित्रसर्कार को सहज ही जान ड़ा । जून महिने में तो हँगेरियन बाल्शेविकोंने रुमानियन सेना का ामय कर दिया । और उत्तर की ओर से झेकोस्लावों को भी भगा या । जून के अन्त और जुलाई के आरम्भ में इटली और फ्रांस को बनाव बढ़ जाने से अपने पर मित्रसर्कार का आक्रमण न होगा सा समझ कर हँगेरी में बाल्शेविकोंने आष्ट्रिया की राजधानी व्हियना र चढ़ाई करने का विचार किया, और आष्ट्रिया के छोटेसे ज्य के बालशेविक बन जाने का भय प्रतीत होने लगा । झेकोस्लाव, ोमेनियन्स, सर्वियन्स और बल्गेरियन्स के टापू में बाल्शेविकों का न फैलता जाकर सारा आष्ट्रिया साम्राज्य और बाल्कन प्रदेश नई ाज्यक्रांति के हवाले करने को इटली-फ्रांस का बेबनाव कारणीभूत ोने के चिन्ह दीखने लगे । परन्तु जुलाई के अन्त में यह बेबनाव र हो गया । प्रे० विल्सन के अमेरिका पहुँच जाने पर राष्ट्रसंघ के ारण कहिये अथवा अन्य किसी कारण से कहिये, परन्तु अमेरिका ो योरोप के अन्तर्कलह में न पड़ने दिया जाय; इस मत को अमेरिका ी ओर से पुष्टि मिल कर यह राष्ट्रसंघ के मुख्त्यार के नाते भी योरोप खण्ड में के कोई से भी भाग पर अधिकार न जमा सकेगा, ऐसा ार दीखने लगा । अमेरिका ने इस प्रकार से योरोप के प्रपंच से ाथ खींच लेने पर रशिया और हँगेरी के बाल्शेविकों का प्रबंध ारने सम्बन्धी भार इंग्लैण्ड—फ्रांस पर आगिरा । इन दोनों देशों में— ाशियन बाल्शेविकों पर इंग्लैण्ड या फ्रांस की ओर से सेना न भेजी ाय इस प्रकार का हठ धारण कर दोनों देश के मजदूरदलने दंगा , करने की हलचल की । इस कारण इन्हें मजदूर दल को

आश्वासन देना पड़ा कि, हम रशिया से अपनी सेना हटा लेते हैं । अमेरिकाने हाथ खींच लिया, रशिया पर सेना नहीं भेजी जा सकती और इटली के वैमनस्य के कारण आष्ट्रिया—हँगेरी को अच्छा लगा, ऐसी अवस्था जुलाई के दूसरे-तीसरे सप्ताहों में दीख पड़ने लगी । तब फ्यूम बन्दर स्थान सम्बन्धी प्रे० विल्सन के मत को ताक में रख कर आष्ट्रो हँगेरी को मुकाम पर लाने के लिये इटली को प्रसन्न कर लेना अवश्यक हुआ । फ्यूम बन्दर स्थान इटली को देकर जिगोस्लावों के व्यापार के लिये उस बन्दर स्थान से रस्ता खोल दिया जाय-ऐसा निश्चय कर जुलाई के चौथे सप्ताह में आष्ट्रो हँगेरियन कारस्थान में, इटली को पुनः ऐंग्लो फ्रेन्चों के पक्ष में खींच लिया गया । इटली के ऐंग्लो फ्रेन्चों के पक्ष में होते ही आष्ट्रिया हँगेरी दोनों देशों में एकदम परिवर्तन हो गया । सन्धी में रुकावट डालनेवाले आष्ट्रिया के मित्र मण्डल को त्याग पत्र देना पड़ा । और फ्रान्को-इटालियनों के मतानुसार चलनेवाला नया मन्त्रिमण्डल आष्ट्रिया में अधिकारारूढ़ हो गया । फ्रांस और इटली एक होकर आष्ट्रिया भी उनके मतानुसार—चलेगा ऐसा देख कर हँगेरी के बालशेविकोंने अपना बोरा बँधना समेट लेने की शुरुआत की । हँगेरियन बालशेविकों के प्रधान बेलाकूनने स्वयंही त्यागपत्र दे दिया । हँगेरी में सोशियालिष्ट पक्ष, मजदूरदल, और धनिकों का पक्ष इस प्रकार तीनों पक्ष का संयुक्त नया मन्त्रिमण्डल स्थापित कि गया । हँगेरिया में आगे के लिये मालमत्ते पर का खानगी अधि नष्ट करनेवाले बाल्शेविकों के तत्व अमल में न लाये जाकर व उद्योग धन्दों को राष्ट्रीय स्वामित्व के बनानेवाले सोशियालि के मत अमल में लाये जाकर सोशियालिष्ट पक्ष की लोकशा स्थापित की जाने की बात हँगेरी के नये मन्त्रिमण्डलने प्रगट की । बेलाकून और अन्य बाल्शेविक नेता आष्ट्रिया के व्हियना शहर गये हैं, और हँगेरी की नई लोकशाही की ठीक२ व्यवस्था होने त उन्हें वहां आष्ट्रियन सर्कारने नजर कैद में डाल दिया है । हँगेरी नये मन्त्रिमण्डल के आमन्त्रण पर से फ्रान्को-इटालियन सेना बुधापे में पहुँच गई है, और अगस्त की ४।५ तारीख को रोमानिया की तीस हजार सेना वहां पहुँच जायगी । इस प्रकार मित्रसर्कार सेना के द्वारा सारा हँगेरी प्रांत घेर लिया जाने के कारण औ हँगेरियन बोल्शेविकों की सेना को छुट्टी मिल जानेके कारण, आष्ट्रि साम्राज्य और बाल्कन प्रदेश के पीछे लगा हुआ बाल्शेविकों प्रहण अगस्त के प्रथम सप्ताह में निवारण होकर आष्ट्रिया और हँगे की सन्धी अब बेरोक टोक मार्ग को लग गई है । हँगेरियन बाल्शे विकों का झगड़ा मिटाने के लिये फ्रांस और इटली की पुनर्मित्र का उपयोग अच्छा हुआ यह तो ठीक है ही, परन्तु साथ ही इस कितने ही कारणों से यह षड्यन्त्र अन्दाज से पूर्व ही जल्दी ढ गया । रशियन बाल्शेविकों की ओर अच्छी सहायता मिलने की हँगेरियन बाल्शेविकों को आशा थी, परन्तु वह निराशा मात्र हुई । मास्कोवाली लेनिन सर्कारने उनके प्रति सहानुभूति बतल

, परन्तु सहायता के लिये न तो सेना भेजी न अनाज का एक दाना। रशिया के लेनिन को अपनी ही दशा सम्हालते हुए संतप्त की दशा में वह हंगेरी को सहायता कहां से कर सकता ? इसके सिवाय हंगेरी के पास के रशिया के युक्रैन प्रांतने बाल्शेविकों की सत्ता नष्ट कर दी, और वहां के सेनानायक स्वतन्त्र हो गये। ये न तो लेनिन की पर्वाह करते हैं न मित्रसर्कार की सेना को ही अपने टापू में थाने देते हैं। हो सके उतनी सेना इकट्ठी कर मिल सके उतना द्रव्य संग्रह किया जाय, और जो चल सके वहीं सत्ता चलने दी जाय, इस प्रकार की विचित्र वृत्ति युक्रैन के सेनानायकों ने स्वीकार की है। इस युक्रैन का उपयोग किसी को न होकर यह स्वतन्त्र माल सब में आने लगा है। युक्रैन किसी में भी मिलना नहीं चाहता। परन्तु रुकावट हर एक के काम में डालता है। हंगेरी के बाल्शेविकोंने जून के अन्त में रोमानिया का पराभव कर दिया तो भी रोमानियन सेना मित्रदल की सहायता से तेज़ तर्रार हो गई है। और हंगेरियन बाल्शेविकों के थक जाने पर उन्हें नये सैनिक, गोला बारूद और अन्यसामग्री की मदद मिलना बन्द हो गई। जर्मनी बाल्शेविक होगा, आष्ट्रिया भी उसी का अनुकरण करेगा. झेकोस्लाव भी बालशेविक बनेंगे—इससे सम्बन्ध रखनेवाली आशाएँ नष्ट होगई। जर्मनी के जिस मन्त्रिमण्डलने सन्धी पर हस्ताक्षर किये वह सोशियालिष्टिक मत का तो है ही, परन्तु बाल्शेविकों का उच्छेद करके फिर धीरे २ बड़े २ उद्योग धन्दों के सम्बन्ध में सोशियालिष्टिक मत अमल में लाये जायँ, यह कार्यक्रम मन्त्रिमण्डल का होने से, बाल्शेविकों की अपेक्षा फ्रांस की ओर इस मन्त्रिमण्डल का अधिक झुकाव है। राष्ट्रीय वैभव सम्हाल कर सोशियालिष्टिक मत अमल में लाये जाने चाहियें, इस तोड़ जोड़ का ध्येय आष्ट्रियन सोशियालिष्टिक मन्त्रिमण्डलने स्वीकार किया है, और शुरू से ही आष्ट्रिया पर फ्रांस का क्रोध न होने से, आष्ट्रिया और फ्रांस की अधिक पटती है। राष्ट्र का वैभव, उसका दर्जा, और उसके भिन्न २ स्वरूप की स्वतन्त्रता की रक्षा कर तथा उन्हें कायम रख कर अंतस्थ रचना में सोशियालिष्टिक तत्वों के अमल लाने का प्रयोग, यदि जर्मनी और आष्ट्रियाने यशस्वी कर दिखाया, तो भी उसकी फ्रांस और इटली को आवश्यकता न होसो बात नहीं है। इंग्लैण्ड की ही तरह फ्रांस और इटली दोनों देश पूंजीदारों की लोकशाही के अमल में हैं, परन्तु इंग्लैण्ड और फ्रांस का अन्तर यह है कि, राजकार्य में सोशियालिष्टिक मत का प्रभाव इंग्लैण्ड में अब कहीं पड़ने लगा है। फ्रांस में एक पीढ़ीपूर्व से ये मत मन्त्रिमण्डल में प्रवेश कर चुके हैं। इन सब मतों की राज्यकार्य में पूर्णतयः विजय होती देखने को आज फ्रांस की सामान्य जनता प्रतिकूल नहीं है। यही नहीं वरन् जर्मनीने इस काम में यदि यश सम्पादन किया तो फ्रांस की लोकशाही तत्काल ही सोशियालिष्टिक मत की छाप बिना न रहेगी। फ्रांस इस प्रकार जर्मनी आष्ट्रिया के लिये अनुकूल होने से जर्मन सन्धी होने के साथ ही बाल्शेविकों के विरुद्ध बना हुआ जर्मनी का मित्रमण्डल अधिक स्थिर हो गया, आष्ट्रिया के ध्येय को पुष्टि मिली, और पड़ोसियों के उदाहरण के कारण हंगेरी के बाल्शेविकों के वेशमें बनने के साथ ही मजदूरों के हाथ में सत्ता चली जाकर खासगी मालमत्ते का तत्व समूल नष्ट होने की अपेक्षा केवल बड़े २ उद्योग साधनों को राष्ट्रीय स्वामित्व का बनानेवाले सोशियालिष्टिक तत्व उदारता से हंगेरी में भी सर्व सम्मत हो गये। इन तत्वोंका नेतृत्व योरोप में ट्रेड यूनियन्स अर्थात् भिन्न २ उद्योगों के संघों की ओर है। इन संघों में मजदूरों की तरह उनके धंधों के व्यवस्थापक, चालक और तज्ज्ञों का भी समावेश किया गया है, यही नहीं वरन् प्रत्येक उद्योग में इन ऊपरी लोगों के हाथ में ट्रेडयूनियन के अर्थात् उद्योग-संघ के सूत्र हैं। बाल्शेविक खासगी मालमत्ता नाम को नहीं मानते। यही नहीं वरन् सर्व संग्रही लोगों का नाश गर्हणीय कृत्यों द्वारा करने में भी उन्हें असुविधा नहीं जान पड़ती। बाल्शेविकों को राष्ट्र का ज्ञान नहीं, न राष्ट्र के वैभव कोही वे कुछ समझते हैं। और मजदूरों के हाथ में सत्ता रखने की बात को वे कह रहे हैं। उद्योग संघ को वे राष्ट्र मानते हैं, राष्ट्र का दर्जा पहचानते हैं, और राष्ट्र की सत्ता परराष्ट्र में पसारने के वे विरोधी हैं। तो भी परराष्ट्र में से अपना नाम और कीर्ति गवाँने के लिये तय्यार नहीं। राजकीय विषयों में जिस प्रकार लोकनियुक्त मुखियाओं के हाथ में सत्ता रखी जाना इष्ट समझा जाता है, उसी भांति बड़े उद्योग धन्दों में भी घर बैठ रहनेवाले पूंजीदारों के हाथ में सत्ता न रख कर, वह उद्योग में स्वयंही लग जानेवाले तथा उद्योग में के छोटे बड़े सभी लोगों के नियुक्त किये हुए प्रमुखों के हाथ में देजाकर उद्योग का लाभ पूंजीदारों के पल्ले न पड़ कर मजदूरों को मिलना चाहिये। ट्रेडयूनियन के ये सोशियालिष्टि तत्व आज कल जर्मनी आष्ट्रिया, हंगरी तीनों जगह अधिकारारूढ़ हो रहे है। और मध्य योरोप में के ये तीनों सिद्धान्त स्थिर होकर उनका नमूना स्वदेश में लाने का मौका आने पर उसके लिये आज फ्रांस और इटली को विशेष बुरा नहीं मालूम होता। जर्मनी, पोलेण्ड, झेकोस्लाव, आष्ट्रिया और हंगेरी के सोशियालिष्टिक तत्व रशिया के पड़ोस में झलकने लगे। अर्थात् हंगेरियन बाल्शेविक जिस प्रकार अपने यहां के ट्रेडयूनियन के तेज के सामने झेंप गये, उसी तरह रशिया का लेनिन भी थर्ड छह महिने में नष्ट होजायगा। इस प्रकार फ्रान्स और इटली को भरोसा है। इटली के मजदूर दल के रशिया की ओर जाने वाले जहाज पर खलासियों का काम करने से इन्कार कर देने पर, इटली के सोशियालिष्टिक मत को मान देकर उसने रशिया पर सेना भेजने से इन्कार कर दिया। फ्रांस की काले सागर में भेजी हुई नौ सेना में के कुछ जहाजों ने रशिया के विरुद्ध लड़ने से इनकार कर दिया, इस कारण फ्रांस को क्रीमिया से अपनी फौज पीछे हटाना पड़ी। खुद फ्रांस में के तोपखानेवालों ने भी रशिया पर भेजा जाने के विरुद्ध अपने न जाने का झगड़ा मचाया, इस कारण फ्रांस के मन्त्रीमण्डल ने अपने यहां के सोशियालिष्टिक पक्ष को फ्रेंच सेना रशिया पर न भेजी जासकने का आश्वासन दिया है, इंग्लैण्ड में भी सोशियालिष्टिक पक्ष के दंगे फसाद शुरू होजाने से उत्तर रशिया में आर्चेंगल की ओर भेजी हुई और दक्षिण रशिया में डेनिकिन्स की सहायतार्थ गई हुई; काकेशियस में की सेना जाड़े से पूर्व ही इंग्लैण्ड को वापस बुलवा ली जायगी, ऐसा पार्लमेन्ट सभामें प्रगट किया गया है। आर्चेंगल की ओर ओनेगा के पास जिन रशियन लोगों की सहायतार्थ अंग्रेजी सेना गई थी, उन रशियन लोगों के अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े होने से लेनिन का पक्ष उस टापू में कुछ भारी सा हो गया है। शीत काल में यहां से सेना निकाली जाने के कारण और पट्रोग्राड पर चढ़ाई करनेवाले बाल्टिक सागर के किनारे के फिनिश और लिथिश लोग स्वदेश सीमामें लौट जाने से उत्तर रशिया की समर भूमि पर से लेनिन की मृत्यु अभी टल गई है, ऐसा मानने में हानि नहीं। पूर्व की ओर से सायबेरियन रेल्वे के मार्ग से उराल पर्वत में अपनी राज्यधानी स्थापित करके, सेनापति कोलचाक मास्को पर जून महिने में चढ़ाई करने जारहा था। उत्तर की ओर पर्म प्रांत और दक्षिण की ओर कामा नदी के तटपर के थामन प्रान्तमें कोलचाक की सेना जून में पैठ चुकी थी। और ७।८ महिने की अवधी में मास्को हस्तगत कर चढ़ाई के ज़ोर पर सेनापति कोलचाक लेनिन को सर्वथा तरह उलट देगा, इस प्रकार जून में आशा दिखती थी। परन्तु जर्मनी के द्वारा गुप्त रूप से गोली बारूद की मदद मिलजाने से, लेनिन की

रशिया की पूर्वोत्तर सीमा

रशिया की दक्षिण रणभूमि

सेना न कामा नदी से लगाकर उराल पर्वत तक सेनापति कोलचाक को खदेड़ा और उराल पर्वत में के एकटोनियर्ग और यूफा ये दोनों शहर बाल्शेविकों के हाथ पड़ गये। सेनापति कोलचाक पर प्राप्त की हुई इस भारी विजय के कारण पूर्व ओर के समरांगण पर की लेनिन की मृत्यु और भी एक वर्ष के लिये आगे बढ़ गई है। दक्षिण की ओर से काकेशियस पर्वत पर जाकर कोसकों की डान नदी के प्रदेश में घुसी हुई सेनापति डेनिकन की सेना के रास्टाफ-खारकाफ में फैल जाने से सराटा तक अपनी सत्ता जमाई है। सेनापति डेनिकन की प्राप्त विजय के कारण रशिया के बाल्शेविकों का बहुत कुछ मान मर जाने का सम्भव है। परन्तु शीत काल से पूर्व ही लेनिन को रणभूमि पर अपनी सत्ता त्याग देने को विवश करने की शक्ति इस विजय में नहीं है। तब जर्मनी आष्ट्रिया के ट्रेड यूनियन के ... उदाहरण रशिया के सर्व साधारण लोगों के सन्मुख ... के द्वारा सेनापति डेनिकन की इस तरह पश्चिम की ओर ... को देकर हंगेरी के बाल्शेविकों को जिस प्रकार पदच्युत ... उसी तरह रशिया के बाल्शेविकों पर भी रशिया की ... की सत्ता में अन्तर्धान होने का मौका लाने का दाव फ्रांस आज कल खेल रहा है। अगस्त महिने में आष्ट्रिया से सन्धी होकर सितंबर मास में बल्गेरिया और टर्की की फैसला होजाने पर फ्रांस का यह दाव शीत काल के आरम्भ रूप को प्राप्त होगा, ऐसा अन्दाज है।

साहित्य समालोचन

(ग्रंथसाहित्य)

(१) दिव्य जीवन—ले० श्री० सुखसम्पति रायजी भण्डारी, प्रकाशक जीतमलजी लूणिया प्रोप्रायटर हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला, इन्दौर। पृ० सं० १३४ मू० ॥) आने। छपाई सफाई उत्तम। प्रकाशक से प्राप्त। यह पुस्तक नवयुग ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प है, जो डा० स्विट् मार्सडन की 'दि मिरेकल्स ऑफ राइट थाट्स' नामक पुस्तक का सरल भावानुवाद है। माला के नाम की ही तरह पुस्तक दिव्य जीवन बनाने सम्बन्धी एक अपूर्व सन्देसा है। पुस्तक पढ़ते २ एक अपूर्व आनन्द का अनुभव होने लगता है। ऐसी बढ़िया पुस्तक हिन्दी साहित्य में उपस्थित करने लिये हम भण्डारीजी और लूणियाजी को हृदय से धन्यवाद देते हैं। पुस्तक सचमुच दिव्य है। प्रत्येक मनुष्य इसे अवश्य पढ़े।

(२) शिवाजी की योग्यता—ले० तरुण भारत एम० ए० एल० टी, प्रकाशक उपरोक्त ग्रन्थमाला पृ० सं० ११८ मू० ॥) आने। छपाई कागज आदि सब बढ़िया है। इस पुस्तक में लेखक महाशयने सचमुच ही अपने ऐतिहासिक ज्ञान का अच्छा परिचय दिया है। छत्रपति शिवाजी महाराज आर्यों के आदर्श पुरुष हुए हैं। परन्तु विदेशीय इतिहास लेखकोंने उनके विषय में गलती ही बातें लिख कर लोगों को भ्रम में डाल दिया है। यहां तक कि, शिवाजी महाराज को लुटेरा, पहाड़ी चूहा आदि कई अपमानास्पद नामों से सम्बोधित किया है। इस पुस्तक में उन्हीं सब बातों का युक्तिपूर्वक खण्डन किया गया है। इसके लिये लेखक को कई ऐतिहासिक ग्रन्थों का मनन पूर्वक अध्ययन करना पड़ा है। पुस्तक में दस परिच्छेद और दो परिशिष्ट हैं। जिनमें उस समय की दशा, पूर्वस्थिति, शिवाजी की समकालीन परिस्थिती, लोक नायक के रूप में शिवाजी, शिवाजी की राज्य व्यवस्था, शिवाजी का उद्देश्य शिवाजी की अन्य पुरुषों से तुलना, शिवाजी के विरुद्ध आक्षेपों पर विचार और शिवाजी के विषय में विदेशियों का मत, तथा उपसंहार दिया गया है। परिशिष्ट भाग में मराठी सत्ता के नाश का कारण, और शिवाजी तथा औरंगजेब की भेट का स्थान निर्णय किया गया है। पुस्तक सचमुच माला के नवयुग नाम को सार्थक करती है। प्रत्येक इतिहास प्रेमी अवश्य पढे। यह पुस्तक माला दुसरा पुष्प है।

(३) चित्रांगदा—लेखक श्री० पं० गिरिधर शर्माजी नवरत्न'। प्रकाशक उपरोक्त ग्रन्थ माला इन्दौर पृ० सं० ४३ मू० ।-) आने। छपाई सफाई बढ़िया। आवरण पर कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ तथा भीतर श्री० सरोजिनी नायडू के चित्र दिये गये हैं। मि० नायडू को यह समर्पित की गई है। यह पुस्तक नवयुग ग्रन्थमाला का पांचवा पुष्प है। जो कवि सम्राट् रवीन्द्रनाथ टागोर की बंगला चित्रांगदा का सरल हिंदी अनुवाद है। इसमें धनुर्धर अर्जुन और चित्रांगदा के पवित्र और स्वाभाविक प्रेम का बड़ी उत्तमता पूर्वक चित्र अंकित किया गया है। पुस्तक संग्राह्य है।

ओसवाल जैन समाज में सब से प्रथम हिंदी साहित्य सेवा का प्रयत्न हमारी सम्मति में इस माला के प्रकाशक श्रीयुत जीतमलजी लूणियाने ही किया है। इसके लिये हम उन्हें अंतःकरण पूर्वक धन्यवाद देते हैं, और आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार हिंदी साहित्य की वृद्धि के लिये सहायक बने रहेंगे। आपका उदाहरण लेकर अन्य ओसवाल युवक भी हिंदी सेवा में योग देंगे।

(४) स्वर्गीय दवाओं की ... —ले० प्रो० माणिकरावजी, प्रकाशक जगदेव ... बड़ौदा पृ० सं० ६६ मू० ।) आने इस पुस्तक में प्रो० माणिकरावजी के उन लेखों को संग्रह रूप में प्रकाशित किया गया है। ... और नवनीत में छप चुके हैं। यह पुस्तक आरोग्य ग्रन्थमाला का पुष्प है। इसमें व्यायाम की आवश्यकता, शरीररक्षा, वर्तमान की शारिरीक सम्पत्ति का न्हास और उसके ... शिक्षा पद्धति और ब्रह्मचर्याभाव—ये चार बढ़िया निबन्ध हैं। पुस्तक केवल नवयुवक और विद्यार्थियों के ही काम की नहीं प्रत्येक मनुष्य के पढ़ने और मनन करने योग्य है।

(५) भीमचरित्र—लेखक पं० गणेशदत्त शर्मा गौड "इन्द्र"। ... सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मंडल १० हरि सर्कार लेन बड़ा बाजार कलकत्ता पृ० सं० १६४ मूल्य लिखा नहीं। छपाई सफाई साधारणतः कलकत्ते की। इसके रचयिताने अभीतक कोई सवा दर्जन जग ... पुस्तकें लिख डाली हैं, वही पुस्तक यही निकली है, और भी छोटी २ पुस्तिकाएँ आप की छप चुकी हैं। किन्तु वे ... नहीं। उन्हीं की तरह यह पुस्तक भी महाभारत पर से वाक्यांशों की नकल कर तय्यार की गई है। अभी तक काम शुरु कर अधूरे छोड़ दिये यह ढंग ठीक नहीं। प्राक्कथनमें साहित्य का विवेचन करते हुए लिखा है कि, विलासिता के ... से तल्वारों में भी जंग लग जाता है और वीर साहित्य से ... जी उठते हैं। इस बात का मर्म हमारी समझ में नहीं आया। लिखा है कि वीर साहित्य का हिन्दी में बिलकुल ही अभाव है, आपने उस अभाव की पूर्ति के लिये ही इसे लिखा है। परन्तु समझ सकते इससे हिन्दी साहित्य का क्या भला होगा। हम महाभारत कह सकते हैं, और हिंदी में महाभारत कई निकल हैं, ऐसी दशा में इस पुस्तक की कुछ भी आवश्यकता नहीं थी। ... से दो तीन महाभारतों पर से पूरे के पूरे पेरिग्राफ उद्धृत करने भाषा की भिन्नता स्पष्ट दीख पड़ती है। हमें गौड महाशय से कुछ आशा है और हम चाहते हैं कि, आप एसी वैसी पुस्तकें ... कर व्यर्थ का पिष्टपेषण न करते हुए कोई उपयुक्त ग्रंथ तय्यार ... तो अलबत्ता आपका नाम और साहित्य का काम दोनों हो सकते ... अन्यथा कोरी डेढ़ डेढ़ पुस्तकों के रचयिता बन जाने से लाभ नहीं है। हमें समय नहीं है अन्यथा हम इसमें की त्रुटियों अच्छी तरह दिग्दर्शन कराते।

(६) भारत में सर्कारी नौकरियां—अनुवादक श्री० पं० माधवरावजी... प्रकाशक श्रीयुत बाबू भगवानदासजी हालना "भारत बंधु" ... हाथरस। डेमी अठ्ठपत्री दो सौ अधिक पृष्ठ मूल्य १२ आने। यह पुस्तक पं० हृदयनाथ कुंजरू की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद है, जो भारत-बन्धु के ग्राहकों उपहार में दी गई है। ... का विषय नाम से ही प्रगट है। पुस्तक बड़े परिश्रम से ... है। राजनीति के प्रत्येक प्रेमीयों को इसे अवश्य देखना चाहिये।

पुस ... के ... को ...

पुष्करत एम० डी० एस० अमृतसर द्वारा संग्रहीत और ... हुई है। इस जरासी ८० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य दो पैसे से होना चाहिये था, जिसे आप दो आनेमें बेचते हैं। इसमें ... के संकलन और कुछ अन्य श्लोक दिये गये हैं। पुस्तक भोजन मद कम पढ़े कम कोडियों के काम की है।

—××—

करने की उस समय मे आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी । वेही सब जाति पर उपकार करते थे । आजकल तत्व दर्शन का लोप हो गया है । अस्तु. ऊपर कहा जा चुका है कि शालिग्राम के दो भेद है । एक स्वर्णदायी दूसरा रौप्यदायी, उनमें से स्वर्णदायी का पूजन श्रेष्ठ समझा गया है । यदि यह मूर्ति न मिले तो रौप्यदायी का पूजन किया जाय । पूजन के विधान बहुत से होंगे, परन्तु उनमें से मुख्य-जिसके कि विषय में हम यहां लिखनेवाले हैं वह यह है कि शालिग्राम को तुलसी पत्र बहुत प्रिय है । और वह श्याम तुलसी के पत्र होने चाहिये, यदि मञ्जरी हो तब तो और भी अच्छी बात होगी । अब हमें यह देखना है कि हमारे प्राचीन पुरुषों ने शालिग्राम के लिये तुलसी की आवश्यकता क्यों बतलाई है । कारण यह है कि उपरोक्त प्राणी जहां रहता है, वहां की भूमि में से यह ताम्र भाग ग्रहण करता है । इसके बाद वहां के शिलोदक (Fossil watter) के लिये श्री शैल और शैलोदक कल्प देखना चाहिये और अन्य रसायनिक पदार्थों के उस पर गिरने से उस ताम्र या तांबे का सोना बन जाता है । [illegible]

का है । शंक के कीड़े के जल से उस शाल नामक कीड़े में अधिक तेज उत्पन्न होता है । और वह प्राणी जीवित रह सकता है, यही मुख्य गुण है । शंख भी बहुमूल्य होते हैं । हमारे देखने में एक मोतिया बिन्दु नामक शंख देखने में आया है, उसका आकार बड़े रूप का है । बढ़िया मोती के समान उसका पानी है और प्रकाशमान हो कर बहुमूल्य बतलाया गया है ।

सारांश शंखोदक के बिना शालिग्राम की पूजा नहीं हो सकती । इस से कम अभिषेक [illegible] दक डालना ही चाहिये । [illegible] बाद फिर दूसरा [illegible] डालना चाहिये । [illegible] हमारे पूर्वजों ने [illegible] के पूजा [illegible]

वनस्पतिके गुणधर्म

(लेखकः—डॉ. नरहर रामचंद्र भिड़े, एल. एम. एण्ड. एस.)

आँवला

संस्कृत—अमलकी; धात्री, कमू आँवली (श्रीफल). निघंटः—धात्रीफल, अमृतफल।

हिन्दीः—आमुली, आम्लकी, आँगरा, औरा, अनोला, अनवर्द्ध, आँवला, आमला, अमरो।

बंगाली—अंबोलनी, अमुलती, आमलकी।

पंजाबी—अंबल, अंमली, औनली।

तामिल—नेल्लिकाई, चोपी, नेल्ली।

कनारीः—नेल्ली, नेल्लीका।

अर्बी—आम्लज़।

गुजराती—आंवला,

मराठी—आँवळा

उत्पत्तिस्थान—भारत का ऊष्ण प्रदेश और ब्रह्मदेश।

जातिभेद—लगाये हुए और जंगली, कुछ गहरे जर्दियारंग के और कुछ सफेदीयुक्त हरे रंग के। जंगली आँवले बहुत छोटे कसैले और खट्टे होते हैं। देश २ के आँवले छोटे और बड़े दोनो प्रकार के होते हैं। स्वाद मुख्यतः कसैला, खट्टा और कुछ २ मीठा कडुआ और तीखा होता है। इतने सब रस इस अकेले फलमे रहने के कारण लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। इस से रायता, अचार, मुरब्बा, सिर्का आदि कितनी ही चीजें बनाई जाती हैं।

अन्य उपयोग—(रंग के काम मे) वृक्षों के पत्ते और कच्चे फलों का रंग देने के काम में बहुत उपयोग होता है। फलों के सम्बन्ध मे एक बात ध्यान मे रखनी चाहिये, वह यह है कि फल ज्यों २ पकते जाते हैं त्यों २ अन्य फलों की भांति उनमे का टानिक एसिड कम होता जाता है। इस लिये रंगों मे कच्चे फल का जितना उपयोग होता है, उतना पके फल का नहीं। उत्तर भारत मे फलोंके बदले पत्तियों का उपयोग किया जाता है। कितने ही लोगों का मत है कि फल की अपेक्षा पत्तियों मे टानिक एसिड अधिक प्रमाण मे होता है। किन्तु इस के सम्बन्ध मे भी बड़ा मतभेद है। अन्य वृक्षों की छालका आंवले के साथ रंग के काम मे उपयोग करने से अथवा लोहसार का रंग के काम मे योग देने मे काला और हलका काला रंग तय्यार हो जाता है। केवल आंवले या उस की पत्तियों का उपयोग करने से कपासी, और कुछ पीला रंग तयार होता है, और रूई की अपेक्षा रेशम और ऊनपर यह रंग अच्छी तरह जमता है। (२) स्याही बनाने मेभी आंवले का उपयोग किया जाता है। (३) बाल रंगने मे आंवले का उपयोग होता है। (४) सूखे हुए फलों का साबुन के बदले बाल और त्वचा धोने के काम मे उपयोग किया जाता है। (५) खाने के पदार्थ आंवले से बनते हैं। यह बात ऊपर कही जा चुकी है। (६) आंवलों के पत्तों का घांस, कड़बी के बदले भी उपयोग होता है, जानवर पत्तों को बड़ी रुचिसे खाते हैं। (७) कत्था—वृक्ष की छाल, लकड़ी के टुकड़े आदि को पकाकर कत्था बनाया जाता है। और उत्तर भारत के लोग उसे पान के साथ खाते हैं। यहाँ और से भी कत्था बनाया जाता है। आंवले के कत्थे का [illegible] कामों मे भी उपयोग होता है। (८) इसकी छाल आदि [illegible] मे डालने से पानी साफ हो जाता है। (९) धार्मिकः—इसके वृक्ष का उपयोग कई प्रकार से होता है। कार्तिक महात्म्य मे इस की पूजा करना बतलाया गया है। आंवली भोजन की प्रथा आज भी [illegible] है। लोगों का विश्वास है कि [illegible] [illegible] आँवला कभी २ ही मिलता है, और जिस भाग्यवान को वह [illegible] मिलता है उसे [illegible] [illegible] [illegible] नहीं होगी। [illegible] भूख की बाधा भी नहीं होगी।

आँवले की लकड़ीः—गेरूए रंग की, कड़ी, लचदार और थोड़े टेढ़ी हो जानेवाली होती है। इतना होने पर भी यह लचीलेपन से काम लेने पर इमारत के काम मे भी आसकती है। खेती के यन्त्र, लकड़ी का सामान और बन्दूक का कुन्दा आदि हैं। पानी लगने पर भी यह लकड़ी टिकाऊ रहती है और सड़ जाती। कुँए बांधने के काम मे अधिकतर इसी लकड़ी का होता है। इस पर बैठ कर काम किया जाता है।

१ औषधी उपयोग—बाह्योपचार—फलों की लुगदी बना कर इसी स्थान पेट पर बांधने से मूत्राशय का दाह कम हो जाता है।

२ फलों में छेद करने के बाद जो रस निकले उसे आंखों से आंखों की जलन कम हो जाती है।

३ आँवले मे शीत-दाह शामक और स्तम्भक गुण होने से लोग बाह्योपचार में इस का अधिक उपयोग करते हैं।

४ दूध के समान जो गाढ़ा रस निकलता है, उसे सड़े घाले पर लगाने से वह दुरुस्त हो जाते है।

५ त्वक् रोगों पर भी इस का उपयोग होता है।

६ केशवर्धक गुण के कारण कितने ही [illegible] बालों [illegible] धोते और बालों को इससे रंगते भी हैं।

७ आँखें दूखने आने पर आँवलकाठी का कषाय आँखों मे पर आराम हो जाता है।

८ त्वचा शुद्ध कर उस की कान्ति वृद्धि करने का गुण होने लोग साबुन के बदले इसीका अधिक उपयोग करते हैं।

पेट मे पहुंचने पर इसके गुण—शामक और ठंडा, पाचक, आंव सारक और पश्चात् अवरोधक, स्तम्भक, मूत्ररेचक, रक्तदोषहर शक्तिवर्धक, कफनाशक, और पित्तशामक है।

पचनेन्द्रिय व्यूह—अग्निमांद्य पर सूखे आँवले का अन्य औषधियों साथ उपयोग किया जाता है। इस में सारक गुण होने से त्रिफला चूर्ण मे भी इसका समावेश किया गया है। केवल सूखे आँवलेके से दस्त साफ हो जाता है। मलावरोध और कितने ही दिनों के हुए आँव पर भी सूखे आँवले उपयोग मे लाये जाते हैं। ताजे आँ खाना अधिक गुण करता है। इसीप्रकार पित्त प्रकोपादि से होने वाला पचनेन्द्रिय दाह और अग्निमांद्य भी इस औषधि से समूल हो जाता है। रक्त की उल्टियाँ भी इस से बंद होती हैं। फलों कषाय अथवा शर्बत पीने से तृषा शमन होती है। इसलिये शारी बुखार के होने पर आँवले का शर्बत बनाकर थोड़ा २ पिलाने से प्यास बहुत कुछ शान्त हो जाती है।

जननेंद्रिय और मूत्रेन्द्रियदोष—प्रमेह पर हल्दी के साथ मिला आँवले की छाल का रस सेवन कराया जाता है। आँवले में मूत्र [illegible] गुण है। ऊष्णता होने पर या पेशाब बिलकुल लाल रंग का होने, आँवले अथवा उसकी छाल का रस बड़ा उपयोगी होता है। स्राव बन्द करने के लिये-फिर वह चाहे जिस जगह से आता वैद्य लोग इस का बहुत उपयोग करते हैं। इसीलिये गर्भाशय और मूत्राशय मे बहनेवाले दूषित स्राव पर सूखे आँवले का उपयोग किया जाता है। पेशाब के साथ होनेवाले रक्तस्राव पर भी इस का उपयोग होता है।

[illegible]—सब प्रकार के रक्तस्रावों पर इस का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थः—रक्त की उल्टियाँ, [illegible] बहनेवाले अथवा फेफड़े में से आनेवाले रक्त का मूत्र के साथ जाना स्राव और खूनी आँव पर इस का उपयोग होता है।

[illegible] और [illegible] में मिलने से [illegible] [illegible] रोग है, इस के साधारण चिन्ह इस प्रकार हैः—रक्तस्राव, [illegible] [illegible] पर रक्त का जमना, [illegible], [illegible], [illegible] आदि [illegible]

देख कर चिन्तित हो गये। कमरे में धीमी २ रोशनी हो रही थी, चार-पायी के नीचे अपनी प्राणवल्लभा रेवती को लोटते पाया, कपड़ा खून से भीग रहा था। उसको उठाने की चेष्टा की, पर वह उठती काहे को? उसने तो अपना मायाजाल ऐसा फैलाया कि इनका उससे निकलना कठिन था, इनको कमरे में आया देख और फूट फूट कर रोने लगी। शीतलबाबू ने धायी को पुकारा। धायी सामने आई।

शीतलबाबू—कहो इसको क्या हुआ है?

धायी—बाबू, मैं कुछ नहीं जानती, मैं पानी लाने के लिये कल पर गयी; वहां अधिक भीड़ थी जिससे मैं कुछ विलम्ब से आई मुझे क्या मालूम कि इस बीचमें क्या २ हुआ।

इतना सुनते ही रेवती भूखी सिंहनी सी गरज उठी; और बोली भला तू काहे को जानेगी? तू तो उसकी ओर मिलगयी है सब का पेट एक हो गया, ये सवेरे अपने कार्य पर चले जाते हैं इधर तुम सब मिल कर हमारी दुर्गति करती हो। इनको हम से मतलब ही क्या है; रात दिन भाई भौजाई के पीछे जान देते हैं, और भाई भौजाई जैसा समझता है उसे ईश्वर ही जानता है। मेरी बात का इनको विश्वास थोड़ा ही है, इसी कारण तो मेरी यह दशा हो रही है। मैंने हजारों बार कहा कि यदि तुम को भाई भौजाई लेकर रहना है तो रहो, मुझे मैके भेज दो। मैं भी तो किसी की लाड प्यार की बेटी हूँ। आज इनकी भौजाई ने लकड़ी चौले से मेरा कपाल फोड़ दिया और इनके भाईराम टकाटक देखते रहे, चूँ तक नहीं बोले, जिसकी कमाई से दोनों फूले नहीं समाते उसकी स्त्री की यह दुर्गति?। कह कर जोर से रोने लगी, शीतल प्रसाद को भी इस बार क्रोध आगया शरीर थर थर कांपने लगा; आंखें लाल हो गयी; बोले चुप रहो। भोरे इसका प्रबन्ध हो ही जायगा, आज तक उनका बहुत कुछ सहा अब हद हो गया अब नहीं सहा जायगा। कल इस घर में वे ही रहें अथवा मैं ही रहूँगा। रेवती ने आशा पूरी होते देख और भी माया फैलाई और सिसक२ कर अपनी जेठानी मालती की और भी निन्दा करने लगी। पाठक! देखा आपने अबला चरित्र कैसा प्रबल है। शीतलबाबू ने बोध प्रबोध देकर रेवती को चुप किया और अपने हाथ से बदन की धूल झाड़ कर दूसरा वस्त्र पहनाया, जिस तिस प्रकार रात कट गई।

प्रात काल शीतलने मदन से कहा, दादा, इस घर में मेरा निर्वाह नहीं है, इसमें आप ही रहें अथवा मैं ही रहूँ।

मदनबाबूने कहा ऐसा ही होगा।

(४)

मदनबाबू विपन्न वदन अपने कमरे में बैठे हैं; पास ही उनकी धर्म-पत्नी अपने षष्ठवर्षीय पुत्र परमानन्द को लिये बैठी है, स्वामी को चिन्तित देख कर यह कहने लगी आप इतनी चिन्ता क्यों करते हैं? मैं ने तो पहले ही आप से कहा था कि यह कलिकाल है इसमें कोई किसी का नहीं हुआ है। इस युगमें लोग भलाई का बदला बुराई से देते हैं। आशा से भी अधिक प्रेम से जिस 'शीतल' को पाला था, अपनी जगह पर उसको बहाल करा दिया था, हमेशा जिसके लिये जीते मरते थे, वही आज स्त्री की झूंठी २ बात में पड़ कर घर से निकल जाने को कहता है!!! कहने दीजिये। चालिये, घर छोड़ दें अभी तो आप के कमाये और नहीं तो चार पाँच सौ के जेवर तो हैं, इन्हीं को बेचकर कोई व्यवसाय करें परमात्मा मालिक हैं। सब पर ईश्वर है यहां क्या कोई किसी की आशा पर जन्मा है? जिसने जन्म दिया है वही पालन करेगा।

(५)

दिन के बारह बजे शीतलबाबू अपने कार्यालय में थे, इधर मदन-बाबू पुत्र कलत्र के साथ बनारस के लिये रवाना हो गये, वहां पर एक सेठ के मुनीमी का कार्य करने लगे जिसमें थोड़े ही दिनों में इनको बहुत लाभ हुआ।

× × ×

अब मदनबाबू बनारस में अपनी मकान निवास करते हैं, दश वर्ष के अध्यवसाय कार्यों का कारबार हो गया, अपनी कई कोठियां खरीदी गई। मदन बाबू का पुत्र परमानन्द B. A. की डिग्री प्राप्त कर अपना तिजारती कार्य सम्हालने लगा, मदनबाबू भी वृद्धावस्था में ... से रहने लगे। मालती अपनी पुत्रवधु मनोरमा के साथ गृहकार्य सुचारु रूप से सम्पादित करने लगी।

जब से मदनबाबू ने शीतलबाबू का साथ छोड़ा; तभी से ... विपत्ति आने लगी और उनका चरित्र भी बिगड़ने लगा, ... उसका सर्व नाश किया। रेवती का मांगे साफ हो गया था, वह जो चाहती थी मंगवा कर छोड़ती थी, शीतलबाबू तो उसके सेवक हो गये थे। चार ही वर्ष के बाद नौकरी भी छुट गयी, चार वर्ष घर में बैठे २ घर को भी डकार गये अब तो रहने के जगह तन पर वस्त्र नहीं खाने के शाक भी नहीं। फूट और विलासिता ने इनको घर घर का भिखारी बनाया। फूटने ही इस भारत को मि... में मिलाया, जहां भाई भाई में विरोध वहां शांति और सुख कहां!

(६)

शीतलबाबू इन दिनों अपने एक मित्र के यहां पेट पालते हैं, ... इनको छोड़ अपने पिता के घर चली गयी, दिन बहुत दुख से ... हैं, मित्र के अतिरिक्त वहां कोई इनको अच्छी बात भी नहीं कहता, शिर झुका कर सब कुछ सहलेते हैं।

एक दिन इनके मित्र ने कहा शीतल! तुम दरखास्त लिखो, बनारस M. P. के यहां एक क्लार्क की आवश्यकता है; जगह ५० रु. की है आज बिहारी में उसका वान्टेड देखा है।

मित्र के कहने पर शीतलने प्रार्थना पत्र भेजदिया।

आठवें दिन उन को आज्ञापत्र मिल गया, आज्ञापत्र देखते ही उनके आनन्द का ठिकाना न रहा। शीतलबाबू ने मित्र से २५ रुपये उधार ले कर आवश्यक कपड़ा बनवा बनारस का मार्ग लिया।

(७)

पांच बजे शाम का समय है, ... शीतल ... प्रसाद वायु सेवन करने लिये जाने को थे कि, दरवान ने कहा, नये क्लार्क साहब आगये, श्रीमान् का दर्शन चाहते हैं। ... कहा शीघ्र बुला लाओ, दर्वान उन्हें बुलाने गया, इधर मदनबाबू मन में भाई से मिलने की उत्कण्ठा बढने लगी, क्योंकि उन्होंने शीतलबाबू की दरखास्त से ही जान लिया था कि यह मेरा अनुज ही है।

दर्वान के साथ बहुत मामूली ड्रेस में शीतलबाबू अपने नये मालिक से मिलने जारहे हैं; शरीर अत्यन्त कृष हो गया था। दर्वान ने दूर ही से संकेत किया; यही हमारे अन्नदाता स्वामी हैं, शीतलबाबू ने दूर ही से झुककर सलाम किया। मदनबाबू भी कुछ आगे बढ़ आये, इनकी खिन्नावस्था देख दुखित होकर पूछा, शीतल तुम्हारी खिन्नावस्था क्यों? क्या बीमार थे? शीतल ने मदनबाबू की ओर देखा, देखते ही अवाक् हो गये। लज्जा से मस्तक नीचा हो गया बिना कुछ बोले भाई के चरण में लिपट गये। मदनबाबू ने बलपूर्वक उठा कर हृदय से लगा लिया। दर्शक गण यह दृश्य देख मर्म जानने के लिये उत्सुक हो गये।

मदनबाबू—कहो शीतल अच्छे तो हो न?

शीतल—अवाक्

मदनबाबू—तुम्हारी नौकरी क्यों छुट गयी?

शीतल—धीरे धीरे, अपने किये पापके फल से।

इसी समय भीतर से एक नवयुवक सुन्दर पोशाक में बाहर निकला मदनबाबूने कहा परमानन्द! यही तुम्हारे चचा शीतलप्रसाद हैं। परमानन्द ने झुक कर प्रणाम किया और उन्हें बुलाकर भीतर माता के निकट ले गया। मालती खिड़की से झांक रही थी, शीतलबाबू को भीतर आते देख बाहर बरामडे पर आयी और कहाः—कहो अच्छे तो हो? बहिन रेवती भी सुख से है न?

शीतल ने भाभी के पैर छूकर प्रणाम किया और उत्तर में कहा कि, हम लोगों ने जैसा कर्म किया था वैसा हाथ उसका फल मिल गया। लज्जा से शिर झुक गया आंखों से आंसुपात होने लगा मालती ने अंचल से आंसू पोछ कर देवर को चुप किया।

पाठक! अब ये सब साथ ही बनारस में रहने लगे। शी... भाई के कार्य में हाथ बटाया, मालती ने रेवती को भी मंगवा लिया अब उसका स्वभाव भी बदल गया, सब आनन्द पूर्वक रहने लगे।

भ्रमर-दूत।

(स्वर्गीय पं. सत्यनारायण कविरत्न द्वारा रचित ।)

स्वर्गीय पं० सत्यनारायण " कविरत्न "

हिय आवेग रोकि किहि भाँती तुम्हरो परिचय देहुँ ।
सत्य कहौं कि, सूर तुलसी कहि मनहि शान्त करि लेहुँ ॥
असमय को वियोग सहियत ना, पर का बस की बात ।
'हरिइच्छा बलवान' हती जो स्वरग पठाये तात ॥
कहूँ रहो हम तो तुम्हे, सुमरहिंगे दिन रैन ।
मनहर मूरति लखि सुखद, हीय जुरहिंगे नैन ॥

"युवराज"

सम्मति —

स्वर्गीय कविरत्नजी की 'भ्रमर-दूत' कविता सब से अंतम रचना है । वह कैसा सुदिन होता कि, हम इस काव्य को पूर्णावस्था मे पढ़कर स्वर्गीय आनंद का अनुभव प्राप्त करते । परंतु दुर्भाग्य ! कि, कविरत्नजी अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन(इन्दौर) मे 'गान्धीस्तव' रूपी अपनी अंतिम तान सुमधुर वाणी में सुना कविता कामिनी को अकाल वैधव्य प्रदान कर गोलोक के पथिक बनगये । हा ! इस अघट घटना का किसे स्मर्णथा " बलियसी केवलमीश्वरेच्छा " । अस्तु । भ्रमर-दूत कविता कैसी है, इस का मर्म रसिक और मर्मज्ञ पाठक इसे पढ़करही जान सकते हैं । इन पंक्तियों का लेखक तो इसे प्राय नित्यप्रति गान कर एक अपूर्व आनंद का अनुभव करता है ।

संपादक 'जगत'

श्री राधावर निज जन बाधा सकल नसावन ।
जाको ब्रज मनभावन जो ब्रज को मनभावन ॥
रसिक सिरोमनि मनहरन निरमल नेह निकुंज ।
मोदभरन उर सुखकरन अविचल आनँद पुंज ॥
रंगीलो साँवरो ॥ १ ॥

कंस मारि भूभार उतारन खलदल तारन ।
विस्तारन विज्ञान विमल श्रुति सेतु सँवारन ॥
जनमन रंजन सोहना गुन आगर चितचोर ।
भवभय भंजन मोहना नागर नन्द किशोर ॥
गयो जब द्वारिका ॥ २ ॥

बिलखानी सनेह पुलकानी जसुमति माई ।
स्याम विरह अकुलानी पानी कतहूँ न पाई ॥
जिय प्रिय हरि दरसन बिना दिन दिन परम अधीर ।
सोचति मोचति सिसिरनिसा निसरत नैननु नीर ॥
बिकल कल ना हिये ॥ ३ ॥

पावन सावन मास नई उनई घनपाँती ।
मुनिमन भाई छई रसमई मंजुल काँती ॥
सोहत सुन्दर चहुँ सजल सरिता पोखर ताल ।
लोल लोल तहँ अति अमल दादुर बोल रसाल ॥
छटा छाई छटा ॥ ४ ॥

अलबेली कहुँ बेलि द्रुमन सों लिपटि सुहाई ।
धोये धोये पातन की अनुपम कमनाई ॥
चातक चातिक चोंपन सोहन सोभन मधुरे बोल ।
कूकि कूकि केकी कलित कुंजनु करत कलोल ॥
निरखि घन की छटा ॥ ५ ॥

इन्द्र धनुष अरु इन्द्र वधूटिन की छवि सोभा ।
को जग जनम्यो मनुज जासु मन निरखि न लोभा ॥

प्रिय पावन पावस लहरि लहलहात चहुँ ओर ।
छाई छवि छिति पर छहरि ताको ओर न छोर ॥
लसै मन मोहनी ॥ ६ ॥

कहुँ बालिका पुंज कुंज लखि परियत पावन ।
सुख सरसावन सरल सुहावन हिय हरसावन ॥
कोकिल कंठ लजावनी मन भावनी अपार ।
भ्रातृप्रेम सरसावनी गावत मंजु मल्हार ॥
हिंडोलनि झूलतीं ॥ ७ ॥

बालवृन्द हरसत अरु दरसत चहुँ चलि आवें ।
मधुर मधुर मुसकाइ सरस बतियाँ बतरावें ॥
तरुवर डार हलावहीं धाँवैं घूमरि टेरि ।
सुन्दर राग अलापहीं भौंरा चकई फेरि ॥
विविध क्रीड़ा करैं ॥ ८ ॥

लखि यह सुखमा जाल लाल निज बिन नँदरानी ।
हरि सुधि उमड़ी घुमड़ी तन उर अति अकुलानी ॥
सुधि बुधि तजि माथौ पकरि करि करि सोच अपार ।
दृग जल मिस मानहुँ निकरि बही बिरह की धार ॥
कृष्ण रटना लगी ॥ ९ ॥

कृष्ण विरह की बेलि भई ता उर हरि भाई ।
लोचन जुग बिलोचन दोउ दल दल अधिकाई ॥
तार हेम रस बढ़गई तन तरु लिपटी धाय ।
फैल फूटि चहुँधा दई जिया न पायौ पार ॥
[illegible] ॥ १० ॥

बरनति विरह सन मरोर कहाँ हरि ढूँढन जाऊँ ।
कब कहँ लालन ललकन मन नहिं हृदय लगाऊँ ॥
कैसे कब दूनी करौं तब तन दरसन पाऊँ ।
कहै रोद निज मन कहाँ फिरि कर धार पछाड़ं ॥
कहाँ मेरो स्याम है ॥ ११ ॥

वस्तुस्थिति आप ही लगा रखती है। और उसीके साथ अदाय पञ्चांग की योजना कर उस वर्ष के ईस्टर आदि त्योहार भी बतला देती है। इसमें वृहद् खगोल दर्शक एक पोला कांच का गोला लगा हुआ है, और बुध, शुक्र, पृथ्वी, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि, वरुण आदि गृहगोल भी अपने स्थान पर बनाये गये हैं। इसके सिवाय यह घड़ी सौ से भी अधिक चलचित्रों से अलंकृत की गई है। इसमें बाईं ओर से प्रति पंद्रह मिनट पर एक द्वारपाल (Guardian angel) रंगभूमी पर आता है, और उसी समय दूसरे दो दूत उसके पास की ही कमानी में से निकल कर घंटे बजाते हैं, और छुटी कमानी में से प्रत्येक बार दो व्यक्ति मनुष्य की चार अवस्थायें प्रति घण्टे पर एक के हिसाब से बदल कर दिखाते हैं।

रूपकचित्रः—रंग भूमी के दाहिनी ओर से एक यमदूत (Angal of Death) सामने आता है, और अपनी फांसी से (Scythe) घड़ी का डायल दिखता है। जब घण्टा बजता है, तब एक रणदूत (Sentry angel) सन्तरी सिपाही दूसरी कमानी में खड़ा रह कर रेती की (बालू की) घड़ी उठाकर दिखाता है। और उसी समय दाहिनी ओर से एक दूसरा दूत रणसिंगा फूंकता है।

घड़ी के छप्पर के नीचे एक चित्र; वर्ष की ऋतुएँ संकेत कर २ के दिखाता है, और उस समय वर्ष के आरम्भ का तारा दृष्टिगोचर होता है। घड़ी की पेटी के बाईं ओर के भाग में एक मुर्गा खड़ा रह कर मध्यान्ह (दो पहर) से पूर्व पांच मिनिट तक अपने पंख फटफटाता है। और उंची गर्दन कर तीन बार कुछ शब्द भी सुनाता है। जिस समय वसन्त ऋतु दर्शक चित्र सामने आता है। उस समय मुर्गे के बदले कोयल कूकने लगती है। गर्मी की ऋतु में लवा पक्षी बायें भाग से सामने आकर सात बार पुकारता है। वर्षाऋतु में एक बैल सेन्टलूई के पैरों में पड़ कर डकारता है। और शिशिरऋतु आते ही सेन्टमार्क के पास बैठा हुआ एक सिंह गर्जना करने लगता है।

मधुर गायनः—इसी घड़ी में एक अच्छी और सुनने योग्य स्वरमाला लगी हुई है। उसमें दस गतें हैं। प्रत्येक गत बारी बारी से मिनिट भर तक बजती रह कर श्रोता का मन मोह लेती है। इसके सिवाय १२ छोटी २ घण्टियाँ भी इसमें लगी हुई हैं और आवाज़ देनेवाले रूल पर ९९७ सुइयां जैसे कांटे बने हुए हैं। जिससे एक सुरीला गाना बाजे में बजने लगता है। इसके स्वर बदलना हों तो वे हर समय घड़ी को बन्द कर कर बदल जा सकते हैं और इसके लिये घड़ी को खोलने की कुछ भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

इस घड़ी के बनानेवाले ने इसके लिये ३ पुस्तकें भी लिखी हैं। उन

आशय से उसने घड़ी के प्रत्येक छोटे छोटे अवयव का पूरा वर्णन कर दिया है।

शेप को इस घड़ी के बनाने की कल्पना स्ट्रासबर्ग कैथेड्रल में लगभग २५ वर्ष पूर्व बनी हुई घड़ी पर से सूझी। इस घड़ी के उसने लगातार १६ वर्ष तक कठिन श्रम किया, और इस लिये उसे लाखों रुपये का चन्दा इकट्ठा कर खर्च करना पड़ा है। नहीं वरन् इस में उसने अपनी भी सारी पूंजी भी लगा दी और दीन हीन बन गया, किन्तु अन्त में उसने स्ट्रासबर्ग की घड़ी को कर अपना नाम अमर कर लिया।

(२) डेविड रिटेनहाऊस की पुरानी अमेरिकन ज्योतिषी घड़ीः—शेप की से कुछ २ मिलती हुई यह एक घड़ी है। यह डाक्टर और डेविड रिटेनहाउस महाशय द्वारा निर्माण होकर [illegible] (अमेरिका) के फिलासॉफिकल हॉल में रखने के लिये उसने दे दी है। वहां यह घड़ी ई० सन १८१० से अबतक अर्थात् [illegible] अधिक दिनोंतक बिना गड़बड़ के टिक्‌टिक्‌ कर रही है। इसकी कारीगरी बड़ी प्रशंसनीय है।

सन १७६९ ई. वाले शुक्र के विधान ने (Transit) १८ से तत्कालीन सूर्य मालिका के आकर्षण नियमों में बहुत कुछ अन्तर [illegible] दिखाया। यह एक महत्व का संशोधन काल था और [illegible] घड़ी शुरू ही में कहीं नये बसे हुए अमेरिका के सिर में समाने लगी थी। यही बात इस घड़ी के ऐतिहासिक दृष्टि से स्मारक बनाने के लिये कारण बनगई। क्योंकि उस समय इसकी रचना शुक्र के विधान का अचूक वेध करने के लिये ही हुई थी। रिटेनहाउस ने वेध लेने के लिये आवश्यक सब सामग्री अपने हाथों से बनाई थी। और उसका दृश्य रूप यह घड़ी है।

रिटेनहाउस स्कूल में कभी पढ़ने नहीं गया। वह अपनी ईश्वरीय बुद्धि से ही ज्योतिषी बन गया। यही नहीं वरन् प्रेस का काम समय उसे प्रकृति नियम (Nature's laws) सहज ही होगये। अपनी आयु के २४ वें वर्ष-खेती करते हुए वह घड़ी अभ्यास करने लगा। गणित में उसकी बुद्धि अलौकिक थी। कारण प्रसिद्ध तत्ववेत्ता न्यूटन और लिबनित्स को भी वह मात कर गया। इस घड़ी का सारा हस्त कौशल्य रिटेनहाउस के खुद हाथों का किया हुआ है।

वर्णनः—इस घड़ी की उंचाई ७ फूट होकर सादी है। इसका डायल फौलादी और बड़ा है। यह पांच पौंड भारी वज़न से चलती है। वह वज़न घड़ी के चलते रहने से नीचे उतर जाने पर सप्ताह के अन्त में स्वयं ही अपने स्थान पर आजाता है। इसके लट्टू का गोला ११ पौंड का है और वह आन्दोलन पानेवाली फौलादी चाबी में बंधी कर दिया गया है। हवाके शीतोष्ण हो जाने पर उसके अंशमानानुसार लट्टू को ऊपर नीचे हटाने के लिये ३ फूट लांबी पेंचदार कांच की नली जोड़ दी गई है। इसके अधोभाग में अल्कोहल भर दिया गया है और ऊपर के भाग में पारे का खंभा इतना सोच समझ कर बैठाया गया है कि थोड़ासा भी शीतोष्ण कार्य होते ही पारद स्तंभ मानसे तत्काल ही सिकुड़ने या बढ़ने लग जाता है।

विचित्र वैज्ञानिक आविष्कार कर्ता

मि. पी. सी. दत्त बॅरिष्टर मध्यप्रदेश के एक ख्यात नामा व्यक्ति हैं। ई. दत्त आप ही के सुपुत्र हैं जिनकी अवस्था इस समय १९ वर्ष की है। पिता के साथ में आप का शैशव काल इंग्लैण्ड में बीता है। हाल ही में आपने रासायनिक जगत में एक विचित्र आविष्कार कर दिखाया है, जिससे भारत के शिल्प में अशातीत उन्नति की सम्भावना की जा सकती है। मार्श गैस जो अब तक विशेषतः कोयले की खानों में ही मिलती थी, वह अब सब जगह प्राप्त की जा सकती है। यह गैस एंजिन आदि चलाने में बड़ा काम देती है। आपने दो वर्ष पूर्व ही यह आविष्कार कर लिया था, परन्तु महायुद्ध के कारण यह प्रगट न किया क्योंकि इससे शत्रु के लाभ उठा सकने [illegible] थी। मि० ई० दत्त ने ऐसे ढंगों [illegible] आविष्कार किया है जिनके द्वारा चूने [illegible] से शुद्ध गन्धक भी निकाला जा [illegible] है। सोडा और कार्बोनेट ऑफ सोडा और फ्लूमीना तय्यार करने के [illegible] और इससे [illegible] लाने [illegible] रोग [illegible]

मि ई. दत्त।

अमेरिका अब तक इन दो पदार्थों के लिये जर्मनी पर अवलम्बित थे। परन्तु अब यह भारत से मिल सकेगा। मि० दत्त ने साधारण ढंग से भी कालेज में शिक्षा नहीं पाई है। मि० दत्त बचपन से ही अशक्त थे। सन १९१५ में जब आप भारत को लौटे तो पिता के साथ कई खानों में आप को घूमना पड़ा; और अन्त आपने रसायज्ञ ही बनने का निश्चय किया। पिता ने आपके लिये सब प्रकार की सुविधायें कर के प्रयोग शाला भी बनवादी है। १४ वर्ष की आयु में आपने पहला आविष्कार किया। अब कुछ महिनों से आप बम्बई में एक बड़े साबुन के कारखाने में प्रयोग कर रहे हैं, और अपने आविष्कारों को समझा रहे हैं। शीघ्र ही आप के आविष्कृत ढंग के अनुसार गन्धक तय्यार करने के लिये एक बड़ी कम्पनी स्थापित होनेवाली है।

राजकीय सुधारणा का चित्र।

भारत की दशा आजकल किसी एक दिवालिये सर्कार की सी हुआ चाहती है। सर्दारी ठाटबाट के साथ बड़ेजाओं को कायम रखना है और पास में पैसा एक भी नहीं। ऐसी दशा में इन लोगों के लिये "ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्" की नीति उपयोग में लाई जाती है; अधिकांश यही बात भारत के सम्बन्ध में भी कही जा सकेगी। हाल ही में समाप्त होनेवाले, स्वातंत्र्य संग्राममें हम अपने ही नहीं, वरन् साम्राज्य के भी भागीदार रहे हैं, और रहा चाहते हैं। जिस साम्राज्य की आबरू एन वक्तपर अपने शौर्य का उपयोग कर, मौके पर जानों के ढेर लगाकर भी बचाई; उसमें विजय सम्पादन करने के लिये अपने हाथों यथाभर द्रव्य से, शरीर श्रम से और स्वार्थ त्याग से सहायता की, जो कुछ शक्य था वह सब किया, और और दूसरों के साथ विजय प्राप्त कर सन्धीपत्र पर हस्ताक्षर करने का स्वतः भारत वर्ष की ओर से जेता की हैसियत से अधिकार प्राप्त किया। इस प्रकार हम सब की बराबरी के बन बैठे। अब हमारे प्रतिनिधि राष्ट्रसंघ में जाकर बैठ सकेंगे, और संसार में जो २ स्वातंत्र्यसम्पन्न और वैभवशाली धनाढ्य राष्ट्र हैं उनके प्रतिनिधियों के साथ हमारे भारत के प्रतिनिधि भी जाकर हिताहित का विचार करेंगे। सारे संसार की दृष्टि से इस प्रकार हमारा मान और मूल्य बढ़ गया है। यह दशा वास्तव में प्रशंसनीय है। अन्य कितने ही राष्ट्र इस अवस्था को पहुंचने के लिये जीजान से यत्न करते हैं, और राष्ट्रसंघ के द्वार पर जाकर 'हमें भी आने दीजिये' की याचना कर रहे हैं। उनसे भी हमारी स्थिति; आज हमारे राष्ट्रसंघ के घटक बन जाने के कारण श्रेष्ठ है यह बात भी हर्षकारक है। इस महनीय पद की प्राप्ति पर भारत की जनता को भी हर्ष होगा। गत वर्ष हम जिसमें कभी सूर्य अस्त नहीं होता-ऐसे बड़े साम्राज्य के मुख्य और महत्व के घटक बन गये थे; परन्तु आज उससे भी आगे की सिढ़ी पर; संसार के अन्य स्वतंत्र और सन्माननीय राष्ट्रों की बराबरी में आपहुंचे हैं। सर्व श्रेष्ठ राष्ट्रीय समानता का पद हमने प्राप्त कर लिया है। और उसे हम अपनी राजनैतिक कुशलता और मौका पड़ने पर रणभूमी में भी अपरिचित शौर्य के बल पर कायम ही बनाये रहेंगे, ऐसा हमें दृढ़ विश्वास है।

उपरोक्त सर्दार के उदाहरणानुसार हमने पद तो प्राप्त कर लिया, परन्तु अब उसे सुशोभित करने के लिये हमें यह देखना चाहिये हमारे पास इतनी पूंजी भी है? हम अन्य राष्ट्रों की 'बराबरी' के बन गये, परन्तु इस बराबरी पर बने रहने के लिये हम उनके समान स्वतंत्र कहां हैं? जिसके राज्य में आज लक्ष्मी दौड़ती और खेलती फिरती है उसी की 'बराबरी' के हम भी हैं, परन्तु हमारे पास है क्या? जो भी ब्रिटिश साम्राज्य ने हमें यह राष्ट्रीय समानता का अधिकार प्राप्त करा दिया है, परन्तु साथ ही उस समानता को सार्थक करने के लिये, उन राष्ट्रों की 'बराबरी' तक ले जाकर बिठा देना—सच्ची समानता को पहुँचा देना, क्या यह उनका कर्तव्य नहीं है? यदि नहीं तो यह सूखी समानता किस काम की? अन्य राष्ट्रों की स्वतन्त्रतावाली टसक के सामने हमारे गुलामगिरी वाले कपालपर का मिला भाग्यके से हमारी परतंत्रता का दिग्दर्शन आलदस्ता हो जायगा। "तुम कौन? क्या भारत के प्रतिनिधि हो? तुमको किसने चुना?" इस प्रकार यदि हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रसंघ में के स्वतंत्र राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने पूछा तो वे लोग क्या उत्तर देंगे? यही कि, 'हम स्वयं एक स्वतंत्र राष्ट्र के लोगों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि हैं।' और स्वयं परतन्त्रता से जकड़े रह कर यदि हम दूसरे राष्ट्रों को स्वतंत्रता दी जाय या नहीं इसकी चर्चा करने लगे तो हमें हमारा मन और अन्य लोग क्या कहेंगे? 'अजी! पहले अपनी सम्हालो और फिर दूसरे की फिक्र करना।' इस प्रकार यदि किसी राष्ट्र ने टपका दिया तो हमारे प्रतिनिधियों की क्या दशा होगी? क्या उन्हें सिर उठाने की भी हिम्मत होगी? अपनी ही स्वतन्त्रता के फेर में पड़े हुए हम भारतीय लोग इस समानता के दिखाव की किस प्रकार रक्षा कर सकेंगे? युद्ध चलते रहने की दशा में बेलजियम सर्विया, रुमानिया पोलैण्ड आदि राष्ट्रों की स्वातंत्र्य रक्षा के लिये हमारे भारतीय भाई जानों पर खेल रहे थे, उस समय भी यही प्रश्न मन को सताता था। परन्तु उस समय ऐसा जान पड़ता था कि; जो ब्रिटिश सर्कार हमारे देशभाइयोंको स्वतन्त्रता के युद्ध में लड़ने के लिये ले जा रही है, वही सर्कार हमें स्वतन्त्र बनाये बिना न रहेगी। सभी भारतीय युवकों को यही आशा थी, और उस समय ऐसा जान भी पड़ता था। हमें जो स्वराज्य, ब्रिटिश सर्कार से मिलनेवाला है वह हमने जिन हताश और पदभ्रष्ट राष्ट्रों को स्वराज्य दिलाय दिया है, उसी की जोड़ का अथवा कमसे कम उससे सन्निकटता रखनेवाला तो अवश्य होगा। परन्तु यह आशा भी व्यर्थ हुई दूसरों को पूर्ण स्वतन्त्र बनानेवाले खुद हमही 'अपूर्ण' स्वराज्य के योग्य समझे गये! मान्टेग्यू-चेम्सफर्ड रिपोर्ट ने उस आशा पर पानी फेर दिया! हम दूसरों के स्वातन्त्र्य की रक्षा करनेवाले थे, पर खुद हमारीही आबरू बचाते २ तंग होने पर स्वतन्त्रता के सागर में जाकर यदि कोरा कोई रहा हो तो वे एक मात्र हम भारतवासीही! जेतृ राष्ट्र स्वतन्त्र थेही, पदभ्रष्ट राष्ट्र भी स्वतन्त्र बन गये। परन्तु सब से आश्चर्य की बात तो यह हुई कि, जित जर्मनी अथवा आष्ट्रिया—ये राष्ट्र भी स्वतन्त्रतासे रहेंगे। परन्तु हम जेता लोग मात्र स्वतन्त्रता के विषय में उनसे भी हीन रहेंगे! जेतृ संघ में बैठनेवाले होकर भी हमें जितों की अपेक्षा हीन स्थिति में रखना क्या ब्रिटिश सर्कार उचित समझेगी?

भारतीयों के स्वराज्य का प्रश्न हल करते हुए ब्रिटिश मुत्सद्दियों को इसी दृष्टि से विचार करना चाहिये। भारत को साम्राज्य में ही नहीं, वरन् जेतृराष्ट्रसंघ में भी यदि हम अपनी समानता का स्थान देते हैं तो भारत को स्वराज्य सम्पन्न बना देना अनिवार्य है। यह बात उन्हें कैसे ज्ञात न हुई—कौन जाने? ब्रिटिश मुत्सद्दी, अविचारी नहीं हैं। उन्हें यह इतनी सादी सरल बात भी समझ में न आवे? यदि यह कहा जाय कि उन्हें भारतीयों की आकांक्षा ज्ञात न हुई हो; तो खुद मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट के २४ वे परिमाण में भारतीय लोकमत निदर्शक स्पष्ट वाक्य हैं। रिपोर्टकार कहते हैं कि—

Attention is repeatedly called to the fact that in Europe Britain is fighting on the side of liberty, and it is urged that Britain cannot deny to the peopel of India that for which she herself is fighting in Europe, and in the fight for which she has been helped by India's blood and treasure"

इसका आशय यह है कि "इंग्लैण्ड स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये लड़ता है, यह बात बारम्बार लोगों पर प्रगट की जाती है। और जिस बात (स्वतन्त्रता) के लिये इंग्लैण्ड योरोप में लड़ रहा है, और जिस युद्ध में भारत धन जन द्रव्य और खून बहा कर सहायता दे रहा है। वह स्वतन्त्रतासे वञ्चित न रह सकेगा, और न इंग्लैंड ऐसा कर्ही सकता है। इस बात का भी बारम्बार प्रतिपादन किया जा रहा है" इस वाक्य पर से ही कोई ऐसा नहीं कह सकता कि, हमारी आकांक्षा ब्रिटिश मुत्सद्दियों को ज्ञात नहीं। और हमें जिस आशय से उन्होंने संसार का राष्ट्रीय समता का अधिकार प्रदान किया है। सब उन्हें यह ज्ञात हो, यही नहीं वरन् तदनुसार उन्होंने व्यवहार भी किया है, सो भी सब पर प्रगट है। इसीप्रकार भारत को इस श्रेष्ठतम अधिकार के प्राप्त हो जाने पर स्वयं मान्टेग्यू साहबने भी पार्लमेंट में भाषण करते हुए बड़े अभिमान के उद्गार निकाले हैं। और ऐसा जब है तो फिर "सिर मुंडी सब और हाथ खाली" की सी हमारी दशा क्यों की

गई? यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न हो सकता है । संसार की दृष्टि से यदि वे हमें स्वतंत्र राष्ट्रों के समान बरतने को कहेंगे तो संसार को भी कम से कम १।२ बार ही क्यों न हो, परन्तु बरतने को विवश करेंगे। साम्राज्य के मण्डल में भी यदि वे हमें अन्य उपनिवेशों की समता से देखेंगे तो फिर हमारे घर भारतमें ही हमारे लिये असमानता अथवा अपूर्ण स्वतन्त्रता या अस्वतन्त्रता की बाधा क्यों? उक्ती और कृति में भारी अन्तर होने के कारण, प्रत्यक्ष व्यवहार में खुद दक्षिण आफ्रिकन बोअर लोग ही हमें अत्यन्त तुच्छता से देखते हैं। इस बात को मान्टेग्यू साहबने स्वीकार किया है । और जिन्हें हमने धूल के दिये दिखाये, इस प्रकार के किसी जित; किन्तु स्वतन्त्र आस्ट्रिया के समान राष्ट्र अथवा जर्मनी ने कल ही यदि हमारा अपमान किया तो हम सर्वतोपरि निदान तुम्हारी बराबरी के हैं; इस बात को सिद्ध करने के लिये हममें कुछ साहस न रहेगा। क्या यह अपमान मृत्यु की अपेक्षा असह्य नहीं है?

इस सब व्याधियों को टालने का ब्रिटिश राष्ट्र के लिये एक ही सुगम उपाय है। भारत का महात्म बढ़ाने के लिये उसे स्वतः स्वराज्य सम्पन्न बना देना ही वह उपाय है । सीधे सच्चे मनुष्य को यही सुहाता है। श्री. नरसिंह चिन्तामण केलकर के केसरी में छपे हुए पत्र में विलायतीय मजदूरदल का "भारत चौथाई रोटी का टुकड़ा ही क्यों मांगता है, सारी रोटी ही एकदम क्यों नहीं मांगलेता ।" इस प्रकार जो मत प्रसिद्ध हुआ है, उस पर से भी तो यही सिद्ध होता है। गत वर्ष जब दिल्ली में कांग्रेस हुई थी उस समय भारत को संसार की राष्ट्र सभा में बैठने का महनीय और स्पृहणीय समाचार भी न मिला था। इसी कारण राष्ट्रीय सभा को पूर्ण स्वराज्य मांगना शक्य या इष्ट न जान पड़ा। तथापि पदभ्रष्ट राष्ट्रों को यदि भारतीय लोग स्वतन्त्र बनावें तो फिर स्वतः भारतीयों का ही परतन्त्र रहना उनके लिये असमाधानकारक है। इस विचार से ही पूर्ण प्रान्तिक स्वराज्य और वरिष्ठ सर्कार के कुछ भाग के लिये पर्याप्त स्वराज्य मांगा गया। आज भारत के इस महत्पद के लिये यह मांग भी अधूरी ही होगी, इसे कोई भी निःपक्षपाती अस्वीकार न करेगा । पञ्चवार्षिक महायुद्ध के अन्त में सारे संसार की उथल पुथल जिस सन्धी से होनेवाली है, उस पर भारत की ओर से बीकानेर के महाराजा के हस्ताक्षर हो जाने पर उसी भारत को अपने घर में परिवर्तन करने का अधिकार न रहे, क्या इसमें विपरीतता की पराकाष्ठा नहीं हो गई है? यह विपर्यस्त स्थिति यदि समुच्चय ही नष्ट होनी होगी तो भारत को पूर्ण स्वराज्य मिलना ही उचित है । भारतीय उसके लिये योग्य नहीं ऐसा आक्षेप किया जाता है, परन्तु निःपक्षपात से ही देखाजाय तो आधे योरोप में आज जो बालशेविकों का ही हल्ला मचा हुआ है और नित्य नये २ राज्य अस्तित्व में आते और नष्ट हो जाते हैं, इन सब बातों को देखकर भी संयुक्तों को ऐसा क्यों कर जान पड़ता है कि ये राष्ट्र अथवा ये लोग ही हमारी अपेक्षा स्वराज्य के लिये अधिक योग्य हैं? अभी संयुक्तों के स्वराज्यपद पर अधिष्ठित किये हुए जेकोस्लाव्हेकिया राष्ट्र को स्वराज्य के बदले बालशेविक सौंट भैरवों के तत्व पसंद हो कर उनके मतानुयायी बन जाने के समाचार भी फैल गया है। गौरवर्णी योरोपियन लोग ही हम से अधिक स्वराज्य के लिये योग्य हैं, इस बात की बड़ाई अब कौन हांकेगा? परन्तु ऐसा होने पर भी उन राष्ट्रों के लिये स्वयं निर्णय का तत्व लागू किया जाता है! उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता दी जानेवाली है। और हमारे अलबत्ता हमारे ही मांगे हुए अपूर्ण स्वराज्य के देने में आनाकानी की जाती है, जो कि भारत शासन सुधार बिल पर से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। क्या यह विचित्र और विपरीत तथा विस्मयजनक स्थिति नहीं है?

हां, विपरीत, विचित्र और विस्मयजनक स्थिति अवश्य है तथापि उसका हमें ही क्या उपयोग? जिन के हाथ में हमारी भवितव्यता है, उन्हें यदि वैसा भास न हो, हम केवल अपने ही लिये ऐसा मान लें तो उसका क्या उपयोग? कुछ भी नहीं। उन्हें जितना कुछ देना आज उचित जान पड़ता है उतना ही वे हमें देंगे। और यह कितना होगा-ऐसा यदि कोई पूछे; तो भारत सर्कार के निमित्त जितना कुछ मांगते हैं, उतना वे हमें प्रान्तिक कारोबार में देंगे। हमारा कहना यह है कि प्रान्तिक कारोबार हमें सब सौंप कर अखिल भारत में का कुछ भाग दीजिये। वे कहते हैं कि तुम्हें प्रान्तिक कारोबार में से कुछ अंश दे कर हिन्दुस्तान के कारोबार में से कुछ भी न देंगे। इस पर से यह बात सब की समझमें आसकती है कि उनका कहना बिलकुल ही हमारी मांग के विरुद्ध है। इतने से हमें सन्तोष कैसे हो और हमारी इज्जत ही कैसे बच सकती है? राष्ट्रमंत्र में अन्य साथ बैठनेवालों भारत के लिये यह टुकड़ा क्यों कर पर्याप्त है? अस्तु, परन्तु यह टुकड़ा ही हमें निश्चय पूर्वक मिल[illegible] यह कैसे कहा जा सकता है? क्या २ देना चाहिये-इसके तो नियम बननेवाले हैं। यह नियमों का घटाटोप हमें अपने पूर्व भय पर से इतना भयंकर जान पड़ता है कि आगे के लिये बात नियमों पर टालना-मानों उसे सर्वांश ही खो देना है। कारण भी प्रगट ही है। क्योंकि जो लोग यह चाहते हैं हमें बिलकुल ही कम अधिकार मिलें, उन्हीं के हाथ में इन बनाने का अधिकार है, और उन नियमोंको बनानेवाला[illegible] गद्दी पर हाथ साफ होगा, इतने कठोर नियम यदि बने किंबहुना [illegible]तम ही समझिये। नियमों पर ये महत्व की बातें अड़ा रखने के अनेक कारण बतलाये जाते हैं, वे इतने पोच और उपहास्यास्पद हैं उनमें कोई अनजान छोकरा भी नहीं फँस सकता। पहिला नियमों से बिल का बोजर बन जाना है। जिन्हों ने [illegible] सिविल प्रोसिजर कोड क्रिमिनल कोड आदि पांचपांच सौ पोथे देखे नहीं उन्हें ही कदाचित् मांटेग्यू साहब की [illegible] जाय, परन्तु इन कानूनी पुस्तकों का एकबार अवलोकन कर [illegible] को यह युक्ती कभी न पट सकेगी। दूसरा कारण कायदे में ही नियम डाल देने से उसमें मुलामियत बिलकुल न रहेगी और कायदा संक्रमण कालीन होने से, इस अवस्था में बदलनेवाली परि[illegible] स्थिति के अनुरूप कानून बार २ बनाना आवश्यक है। यह सच्चा और कितने ही अंशमें लंगड़ा भी है। इंग्लैंड में कुछ २ बातें [illegible] वर्ष पास करनी पड़ती हैं यह बात हम भारतवासियों को ज्ञात और जो इंग्लैण्ड अपने पूरते प्रतिवर्ष उन्हीं विषयों पर कायदे बना[illegible] आगापीछा नहीं देखता वही इंग्लैण्ड समय पड़ने पर और होने पर हमारे लिये भी कायदे बना सकेगा, तो भी कितनी ही [illegible] के लिये नियम बनाने की आवश्यकता है यह बात मैं भी [illegible] करता हूं। परन्तु हम भारतवासियों की नियम बनाने की [illegible] जो भी पट गई है, तथापि उन नियमों के बनाने का अधिकार हमारे प्रतिनिधि के हाथ में प्रमुखतः रहना चाहिये। और अड़चन का मामला यही है। भारतीय लोकप्रतिनिधि के हाथ में [illegible] यह नियम बनाने की सत्ता दे दी गई, तो हम नियमों पर भी सन्तु[illegible] रहेंगे। इसीका हम यहां पर एक उदाहरण देते हैं। भारतीयों [illegible] स्वराज्य की सनद के नाते २० अगस्त को पार्लमेंट ने जो घोषणा प्रगट की थी, उस पर सर मायकल ओडायर, सर रेजिनाल्ड क्रेडाक सर एडवर्ड गेट, सर बेंजिमन राबर्टसन आदि प्रान्ताधिकारियों और सि[illegible] विल सर्विसवाले अन्य गोरे अमलदारों के मतों पर यदि विचार किया जाय तो जान पड़ेगा कि हम भारतीयों केलिये ध्येय तो पार्लमेंट ठहराये और नियम बनाने का अधिकार इन लोगों का सौंप दिया जाय-इस पर से हमारे भयका खुलासा हो सकता है। उपरोक्त सूबेदारों [illegible] कथन इस प्रकार है कि "स्थानिक स्वराज्य के अधिकार कुछ [illegible] दिये गये, कानूनी कौंसिलों को अधिकार न देते हुए उसमें दस[illegible] देनेवालों की संख्या बढ़ादीगई और थोड़ासा शिक्षाप्रसार अधि[illegible] कर दिया कि बस हम २० अगस्तवाली घोषणा से मुक्त हो गये [illegible] [illegible] मेंट में जितना अधिकार [illegible] [illegible] ही चाहिये ऐसा उस घो[illegible] [illegible] और न ऐसा करने के लिये [illegible] विवश ही किये जा सकते हैं। कहिये इन सूबेदारों की कैसी मनोरम चौकड़ी है? जो इस प्रकार उस घोषणा का हमारे सामने [illegible] कर रहे हैं, उनके तथा तत्समान धर्मानुयाइयों के हाथ में यदि पार्ल[illegible] मेंटवाले निश्चय के अनुसार नियम बनाने की सत्ता दे दी गई तो उस घोषणा के अनुसार हमारे हाथ में यथाशक्य थोड़े ही अधिकार [illegible] सकेंगे-ऐसा कौन नहीं जान सकता। मोर्ले मिन्टो सुधारणा के सम[illegible] उसकी गलचम्पी इस नौकरशाही के बनाये हुए नियमों ने ही की [illegible] कई बार हमारे नेता लोग सुना चुके हैं। और उसे खुद मांटेग्यू साहबने भी स्वीकार किया है। एक बार ठोकर खाने पर जिस प्रकार मनुष्य सचेत हो जाता है, तो फिर बार २ ठोकर खाने के लिये क्यों कर मांटेग्यूसाहब प्रयत्न कर रहे हैं, सो कुछ समझ नहीं पड़ता; कदाचित उनकी यह समझहो कि ये सब नियम अथवा इनमें के कुछ [illegible] कांश नियम ही पार्लमेंट के सामने रख जांय और उसके विरुद्ध [illegible]

पार्लमेंट ने प्रस्ताव किया हो तो वह रद्द किया जाय। इस प्रकार की जो एक योजना बिलमें है उससे डरकरही नौकरशाही नियम बनाने का काम उद्दारतासे करेगी। परन्तु यह केवल भ्रम है। भारत सम्बन्धी प्रश्न उठने पर ७०७ में से जहां कुल १२ मनुष्य ही हाजिर हों उस पार्लमेंट से वे डरते ही क्यों हैं? और वे अपना ध्येय भी क्यों कर बदलने लगेंगे? इस कारण पार्लमेंट के दांवे में भी कुछ दम नहीं है। तब यदि सारी सत्ता ही नियमों पर अवलम्बित रक्खी जानी हो तो उन नियमों के बनाने की सत्ता हमें दीजिये, तब हमें वे नियम भी सोहन होंगे। भारत के जो लोकप्रतिनिधि भारत के हिताहित के कानून बनाने को समर्थ हैं, वे ऐसी बातोंमें स्वयं निश्चित कर देने पर निपुन भी अवश्य बना रहेंगे।

अस्तु। नियमों में ही सब सुधारणाएँ खड़ा देने में कहां और कि[illegible]ना धोखा है, इस बात का यथार्थ दिग्दर्शन कराने के लिये ही इतना विवेचन करना पड़ा है। अब हम संक्षेप में संसार के अन्दर राष्ट्रों को स्वतन्त्रता प्राप्त करा देने वाले भारतीयों को अपने पुरानी कितनी स्वत[illegible]न्त्रता मिलनेवाली है, इसका विवेचन कर यह लेख समाप्त करेंगे। [illegible]बिल का स्वरूप लोगों को विदित होही चुका है। इस कारण अब हम उसका विश्लेषण नहीं करना चाहते। संक्षेप में वह इस प्रकार है कि भारत में बम्बई, मद्रास, बंगाल, यू. पी., सी. पी. पंजाब, बिहार, उड़ीसा व आसाम इन आठ प्रान्तों में प्रान्तिक स्वराज्य का कुछ अंश दिया जानेवाला है। इनमें एक एक गवर्नर रह कर—तीन प्रकारों के सिवाय यह गवर्नर सिविलसर्विस में काही होना चाहिये उन्हें एक योरोपियन सर्कारी सभासद और एक गैरसर्कारी भारतीय तथा १२ लोकनियुक्त मन्त्री सहायक मिलनेवाले हैं। इन सब को मिला कर एक प्रान्तिक सर्कार बनेगी। उन सर्कार के पास प्रान्तिक राज्य व्यवस्था और भारत सर्कार के कुछ विभागों का अधिकार रहेगा। उसमें वरिष्ट सर्कार की ओर से बहुत कुछ स्वतन्त्रता मिलने वाली है। उस कारोबार में फिर विभाग किये जाकर कुछ विभाग लोकनियुक्त मन्त्रियों को मिलनेवाले हैं। वे कितने हों, प्रत्येक प्रान्त में कितने [illegible] जाँय यह अभी निश्चित होना है। और दोनों विभाग जो मन्त्रिय[illegible] सौंपे जायंगे, उनसे पुरताही स्वराज्य हमें दिया जानेवाला है! [illegible] यह स्वराज्यपूर्ण है? ऐसा प्रश्न विचारने पर हमें नाहीं का ही [illegible] देना पड़ता है। मान्टेग्यू साहब ने बिल के साथ ही जो विज्ञप्ति [illegible] काली है उसी में Such responsibility cannot be Compl[illegible] ऐसा स्पष्ट कहा है। वाइसराय को मतपत्रिका में By the diarch[illegible] method however you can insure full responsibility [illegible] certain subjects में ऐसा जो भी कहा गया है तो भी वह ठी[illegible] नहीं और उसका कारण भी स्पष्ट है। क्योंकि खुद सहायक अर्थात् मन्त्रीजी भी गवर्नर साहब की मर्जी तक अधिकारारूढ़ रह सकेंगे। किसी विभाग का उन्हें सौंपना गवर्नर की मर्जी पर निर्भर है, यदि समय पर इच्छानुसार दिवान या मन्त्री न मिला तो उस विभाग को भी गवर्नर ही चलावेंगे। प्रान्ट कमेटी जब चाहे मनमानी रीति से न[illegible] चाई जा सकेगी। इत्यादि अनेक अधिकार गवर्नर को रहेंगे। इसके सिवाय कोई विभाग किसी अन्य विभागसे संलग्न भी किया जा सकेगा। बम्बई सर्कार ने शिक्षा का जो उदाहरण दिया है उसे ही प्रमाणार्थ हम ले सकते हैं अनिवार्यशिक्षा करने पर सख्ती के पुलिस और माजेष्ट्रेट की आवश्यकता पड़तीही है। इस कारण उ[illegible] सम्बन्ध सर्कार के रिजर्व डिपार्टमेंट से जोड़ा जायगा। इस का हमारा स्वराज्य अधोवेष्ट से भी थोड़ाही है। कायदा कौन्सिल में सं[illegible] बढ़न अथवा अधिकारों की वृद्धि होने से स्वराज्य मिलना नहीं समझ[illegible] जा सकता है। दिवान या मन्त्री को सौंपे जानेवाले विभागों के सिवा हमारा स्वराज्य तत्र है ही नहीं और उसमें भी गवर्नर, गवर्नर जन[illegible] रल इन कौन्सिल, स्टेटसेक्रेटरी ऐंड कमेटी के सलाह से जो कुछ बचेगा वही हमारे स्वराज्य की मर्यादा रहेगी यह स्पष्टही है। यह अंगुली पर गिनने के बराबर स्वराज्य ही क्या हमारे देश की इज्जत के लिये पर्याप्त जान पड़ता है?

आदर्श रमणी रत्न

(लेखक [illegible])

[illegible]प प्रदेश में रायपुर जिले में बिन्द्रा नवागढ़ नामक एक बड़ी और प्रसिद्ध जमींदारी है। [illegible] [illegible] इस जमींदारी की दशा जितनी कुछ चाहिये उतनी [illegible] नहीं है, पर पूर्व काल में यह रियासत अपने विस्तार, [illegible] प्रबन्ध, और यहां के मालिकोंद्वारा प्रजा [illegible] तथा सार्वजनिक कार्यों में उत्साह पूर्ण [illegible] देने के कारण, इस प्रान्त में विशेष प्रसिद्ध [illegible]। इस स्टेट के भूतपूर्व जिमींदार श्रीमान [illegible] बहादुर महाराज को लोग अभी [illegible] [illegible]

(चित्र का शीर्षक [illegible])

यह [illegible] अनुराग और [illegible] का [illegible] विशेष प्रशंसनीय है। राज महल के [illegible] भीतर [illegible] पालन ही कर श्रीमती राजकुमारी के इन उच्च विचार और सार्वजनिक कार्यों में उत्साह पूर्वक [illegible] को देखकर बलात् ही मुख से धन्य २ निकल पड़ता है। अभी इनका विवाह नहीं हुआ है। जिस दिन आप [illegible] राज सिंहासन की अधिष्ठात्री के रूप में देखी जा सकेंगी, वास्तव में वह समय बड़ा ही [illegible] होगा। [illegible] के सभी शुभेच्छु लोग इस शुभ अवसर की प्रतीक्षा में हैं। [illegible]

[illegible]

पर पुस्तक भेज दी जाती है; पुस्तक देखने ही योग्य हैं ।

श्रीमती का विचार है कि राजिम में एक "अनाथ विधवाश्रम" शीघ्र ही खोला जाय; आप इसके उद्योग में हृदय से लगी हुई हैं।

ईश्वर वह दिन शीघ्र दिखलावे कि जिस से आप की इस [illegible] हम लोग कार्य के रूपमें परिणत देख सकें; और भारत [illegible] राज कुमार और राजपुत्रियों के हृदय में इसी प्रकार की देश प्रेम [illegible] विद्या की ज्योति जगती रहे।

स्वराज्य की लढ़त

(लेखक.—श्री. दामोदर विश्वनाथ गोखले बी ए. एल. एल. बी.)

हिंदुस्तान के सच्चे राजा कौन है? यह भारत की राजनीति में एक बड़ा महत्व का प्रश्न है। भारत का राज्य कारोबार यहां के बादशाह कैसरे हिन्द के नाम से चलाया जाता है यह बात जो भी ठीक है, तथापि व्यक्तिश हमारे बादशाह के हाथ में प्रत्यक्ष राज्य कारोबार में एक कौड़ी की भी सत्ता और मत्ता नहीं है। क्योंकि जिस अंग्रेजी साम्राज्य का भारत एक घटकावयव है, उसकी सारी निर्णायक सत्ता पार्लमेंट के ताबे में है। तत्वत· पार्लमेंट खुद मुख्तार नहीं है। क्योंकि अंग्रेजी राज्य सत्ता 'हाउस ऑफ कामन्स' और 'हाउस ऑफ लार्ड्स' 'और बादशाह' अथवा सर्व साधारण ब्रिटिश जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा, अंग्रेजी उमरावों की सभा और राजासाहब इन तीनों में संलग्न कर दी गई है, ऐसा अंग्रेजी शासन शास्त्रज्ञों का कथन है। तत्वतः यह बात सत्य हो तो भी वस्तुतः पहली लोकसभा ने उमरावों की सभा और खुद राजासाहब तक को इतने निष्प्रभ सत्ता शून्य और,निरुपद्रवी बना दिया है कि, उनके मुंह से शब्द और हाथों से लोकसभा को जो योग्य जान पड़े वही बुलवाया और लिखाया जा सकता है। तात्पर्य आज की परिस्थिति ऐसी है कि ब्रिटिश राजसत्ता लोकसभा के सभासदों में संगठित कर दी जाकर लोक सभा बतलाये वही पूर्व दिशा, कहे वही ध्येय और जो बांध दे वही बन्धनवार इस प्रकार की स्थिति हो गई है। राजासाहब और अमीरों की सत्ता मर्यादित करने के लिये अंग्रेजी जनताने आज सैकड़ों वर्ष से झगड़े किये और मौके पर एक राजा को सूली और एक को देश निकाला करने से भी वे नहीं चुके। इस प्रकार बहुजन समाज के हाथ में राजसत्ता खींच लाने के लिये उन्होंने जो कुछ श्रम किया, उसका उन्हें अभिमान है और अंग्रेजी शासन शास्त्रज्ञ जिस राज्यपद्धति में सर्व राजसत्ता लोकसभा के हाथ में सौंप दी जाती है उसे ही 'स्वराज्य' और 'सेल्फगवर्नमेंट' कहते हैं। अंग्रेजों ने भारत को जीत कर साम्राज्य से संयुक्त कर दिया इस कारण इंग्लैण्ड के जो राजा हैं वही भारत के भी सच्चे राजा हो सकते हैं ऐसा कहने में कोई हानि नहीं दिखती। परन्तु नवीन अथवा प्राचीन शास्त्रों के अनुसार राजसत्ता जिन के हाथ में है उनके गुणावगुण हमें देखना चाहिये कि जिससे भारतीय स्वराज्य की लढ़त में हमें किससे झगड़ना है और हम क्या प्राप्त कर सकेंगे इसकी कल्पना हो सकेगी।

किसी भी देश का प्रत्यक्ष कारोबार उस देश के बहुजन समाज द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि के हाथ में रहकर उस कारोबार के चलानेवाले लोग और अधिकारी उन प्रतिनिधियों के लिये जवाबदार होना ही—

"स्वराज्य अथवा सेल्फगवर्नमेंट"

कहलाता है। सारे योरोप [illegible] सारे जगत में यही राज्यपद्धति प्रचलित करने के लिये महायुद्ध शुरू हुआ और उपरोक्त राज्यपद्धति को अमल में लाकर ही समाप्त हुआ। [illegible] से लगा कर तारीख १९१५ के [illegible] तक यही राज्यपद्धति भारत में प्रचलित करने के लिये ही अंग्रेजी राज्य का उदय है—ऐसा प्रगट किया गया। और [illegible] उस दिन माण्टेग्यू साहब ने पार्लमेन्ट में [illegible] ब्रिटिश पार्लमेन्ट ने भारत के राज्य कारोबार की [illegible] प्रतिनिधियों के आधीन करने की ही अपनी [illegible] है। परन्तु [illegible] भारतीय राज्य कारोबार पर ही सत्ता [illegible] पार्लमेन्ट [illegible] [illegible]

[illegible]

राज्यसत्ता की स्वामिनी पार्लमेन्ट ने कम्पनी के कारोबार में हाथ डाला। परन्तु वैश्य वृत्ति के साथ ही अथवा कुछ पीछे [illegible] का उपक्रम करके कम्पनी राज्य कमाकर सर्कार बनने लगी। [illegible] समय पार्लमेन्ट और राजासाहब ने अपनी तटस्थ वृत्ति [illegible] कम्पनी के सम्पादित राज्य को अपना ही राज्य मानलेने का [illegible] किया और नाना भांति के कानून बनाकर कम्पनी को बद्ध कर [illegible] अंग्रेज सर्कार और कम्पनी दोनों ही भारत के व्यापार और [illegible] कारोबार रूपी मक्खन पर हाथ साफ करने लगे। और इस में [illegible] स्पर्धा होने लगी। कितनी ही बार कुछ उदार महात्मा [illegible] कम्पनी के अन्याय से चिढ़ कर सन्तप्त भी हुए और उन के क्रोध [illegible] लिये वारन हेस्टिंग्ज तथा क्लाइव्ह जैसे को बलिदान होना पड़ा। [illegible] कम्पनी के समय में उसके कारोबार पर पार्लमेन्ट ने जो हुकूमत [illegible] थी—वह एक मात्र इसी उद्देश्य से थी कि; उस समय भारत से [illegible] कर जाता हुआ द्रव्यौघ यथा शक्ति अपनी ओर घुमाये जा सकें। सन १८५८ में जब भारतमें भयंकर बलवा हुआ, तब राजकीय [illegible] कम्पनी का राज्य अंग्रेजी राज्यसत्ता ने हस्तगत कर लिया और [illegible] साथ ही पूर्वीय काकदोष भी नष्ट हो गई। पार्लमेन्ट ने अपने [illegible] अधिकार और कम्पनी के समय का बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल और [illegible] ऑफ डायरेक्टर का भी सब अधिकार स्टेट सेक्रेटरी को सौंप [illegible] तत्वतः उसी दिन से भारत के कारोबार पर का अधिकार [illegible] पार्लमेन्ट के पास रहा हो तथापि व्यवहारतः स्टेट सेक्रेटरी और [illegible] का कारोबार करनेवाली नौकरशाही के हाथ में ही सब सत्ता आ [illegible] खासी सम्पत्ति हाथ लग जाने पर जिस प्रकार विलासी सेठजी [illegible] गुमास्ते को सारा कारोबार सौंप कर स्वतः चैनबाजी में गर्क हो [illegible] है, उसी प्रकार अंग्रेजी पार्लमेन्ट भी सन १८५८ से अपने [illegible] विलास और व्यवसाय में गर्क है। इस

विलासी पार्लमेन्ट

—को अपनी सत्ता गवाँ बैठने और भारत के राज्य कारोबार के [illegible] में बेफ़िक्र रहने सम्बन्धी अन्ध विश्वास हो जाने के कारण—सन [illegible] तक लगभग यह भारत के कारोबार के सम्बन्ध में बेफ़िक्र [illegible] रही थी, ऐसा कहने में किसी प्रकार की हानि नहीं जान पड़ती। [illegible] कहने को इस ५० वर्ष में पार्लमेंट ने भारत के कारोबार के [illegible] कुछ कानून बनाये, परन्तु इन सब कानूनों को बनाते समय [illegible] भारतीय जनता से उसकी आवश्यकता के विषय में नहीं पूछा [illegible] स्टेट सेक्रेटरी की भारत सम्बन्धी पूछी हुई बातों का उत्तर [illegible] भारत सर्कार, और भारत की नौकरशाही थी, और दोनों के [illegible] स्टेटसेक्रेटरी थे। इस प्रकारका यह रहस्यमय प्रबन्ध था। यह [illegible] [illegible] इसी प्रकार का था कि, राजासाहब प्रधान से पूछें 'कहो, [illegible] राज का कारोबार कैसा चलता है?' उस पर प्रधान सीधा सा [illegible] दे दें कि, 'पृथ्वीनाथ सब ठीक है'। वर्ष में एक बार बजट के [illegible] समय लगभग निर्मनुष्य सभागृह में खाली कुर्सियों के सामने [illegible] सेक्रेटरी 'भारत की प्रगति' किस प्रकार होती है, इसका [illegible] पढ़ देना और दो चार मनुष्य मिल कर उस पर [illegible] [illegible] [illegible]

अत्याचार के अंत की बात गैय के कान पर पड़ने के बाद ही ढेंच रोगी को नौकरी धोगा, अभिकतर यही दशा भारत की हो रही है। हमारे ऊपरवाले इस प्रश्न का उत्तर कि "भारत का सच्चा राजा कौन है" इसी में गर्भित है। भारत की सच्ची स्वामिनी पार्लमेन्ट न हो कर यहां की नौकरशाही है, यह बात उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो सकती है। पार्लमेन्ट के हाथ से सत्ता न चल सकने के कारण उसके हाथ में सत्ता रहना न रहना एक सा ही है। और इसीलिये आज तक पार्लमेंट के नाम से मन मानी उठारखी करने को नौकरशाही को अच्छा मौका मिला। आज तक नौकरशाही साफ २ उत्तर देती रही है कि हम भारतीयों के लिये जवाबदार नहीं, परन्तु जिसने हम को नियत किया है, उसी पार्लमेंट के जवाबदार हैं, किन्तु पार्लमेन्ट को इसकी भी खबर नहीं। हिन्दुस्तान के राज्य कारोबार की विपत्तावस्था के लिये यदि कोई कारण हो तो वह एक मात्र इस नौकरशाही का बेजवाबदार कारोबार और उसी के साथ पार्लमेंट की भारतीय राज्य कारोबार के विषय में अविश्वास है। और इस परिस्थिति में पार्लमेंट का हिन्दुस्तान के राज कारोबार की कुञ्जी अपने हाथ में रखने का हठ धारण करना मानो अपने हाथों ही अपने आंखों पर पट्टी बांध लेना है। पूरा अंधा और आखों पर पट्टी बांध लेनेवाला (आंखवाला) दोनों समान ही हैं। दोनों ही पीसने बैठे तो भी

कुत्ते आटा खावेंगे ही।

पार्लमेंट अपनी सत्ता नहीं चला सकती, इस कारण नौकरशाही का अयास्तव प्रश्न भारत में मच रहा है। परन्तु इस में भारत वासियों का कचूमर बन रहा है, इसका इलाज क्या? वस्तुस्थिति ऐसी है कि पार्लमेंट को अपने घर का कारोबार समेटने २ बड़ी कठिनता होती है। और जिन लोगों ने पार्लमेंट के सभासदों को चुन दिया है, उनके हिताहित पर दृष्टि रखनाही उनका पहला कर्तव्य समझा जाता है। दूसरी बात पार्लमेन्ट के अधिकांश सभासदों का भारत विषयक ज्ञान से शून्य होना है। लार्ड सिंह राजपुताने के एक राजा हैं, बीकानेर के राजा एक बड़े उत्पाती ब्राह्मण नेता हैं, अहमदाबाद पंजाबमें है और तिलक ने पहले एक बार दंगा किया था। ऐसी एक दोही नहीं हजारों बातें कही जा सकेंगी। जिस समय भारत के स्टेटसेक्रेटरी की माला इनके गले में गयी, उस समय खुद इन्हीं मान्टेग्यू साहब ने बीच पार्लमेंट में खड़े होकर ये सब बातें सुना कर सिद्ध कर दिया था कि हम भारत की राज्यसत्ता को अपने हाथमें रखने के लिये सर्वथैव अयोग्य हैं। परन्तु इससे अधिक महत्व की बात भारत और इंग्लैंड का हिताहित समाजदृष्टि से एक हो तो भी व्यापार, उद्योग धंदे, और राज्य कारोबार चलाने के लिये मिलनेवाले मेहनताना आदिबातों में पूरा २ विरोध है। यदि एक गज़ भर कपड़ा भारत का बना हुआ बिका; कि मांचेस्टरकी उतनीही खपत घटी। भारतमें पक्के माल का एक कारखाना निकलते ही वहां का एक कारखाना बंद हो जाता है। समुद्र पर आवागमन करने के लिये यदि भारत ने एक जहाज तय्यार किया कि अंग्रेज व्यापारियोंके एक जहाज का नफा गयाही समझिये। ये बातें इतनी स्पष्ट है कि इनके विषयमें कोई शंका नहीं करसकता। ऐसी परिस्थिति में ब्रिटिश साम्राज्य में ही किन्तु भारत-राष्ट्र की सब ओर से पूर्ण उन्नति होने का एक ही उपाय है, और वह उपाय-प्रचलित राज्य पद्धति को बदल कर भारत के राज्य कारोबार की जवाबदारी पार्लमेन्ट से ले कर वह भारत के प्रतिनिधियों पर डाल दी जाय। और भारत का राज्य कारोबार चलानेवाली सारी नौकरशाही भारत की जनता के लिये जवाबदार रहे। नई सुधारणा का यही आत्मा है, और यदि उस में यह आत्मा न हो तो सारी सुधारणाएं व्यर्थ होंगी इस बात को स्वतः मान्टेग्यू साहब ने स्वीकार किया है और उन्हों ने वारम्बार बजा २ कर कहा है कि नई सुधारणा के लिये यही नियम उपयोग में लाया जाय।

मान्टेग्यूसाहब ने ही दूसरी अनेक परीक्षाएँ बतलाई हैं। माइक-बहादुर ने पार्लमेन्ट को संकेत किया है कि 'आप जो कुछ अधिकार दिया चाहते हैं वे एक ओर टोल दीं। थोड़े ही क्यों नहीं, किन्तु वह नक्द होना चाहिये-कहा उधार नहीं। इसी प्रकार उस सुधारणा की अमल दज़ावरी किसी एक विवक्षित गवर्नर जनरल अथवा सेक्रेटरी-मेट गवर्नर पर अवलम्बित न रक्खी जाय। और सचमुच ही जो कुछ थोड़े से अधिकार आप देना चाहते हैं वे सब 'स्वराज्य' के दीजिये। इस दिस व से लोगों के पल्ले क्या पड़ता है-इस दृष्टि से नवीन सुधारणा की परीक्षा करनी चाहिये। राष्ट्रीय सभा और मुस्लिमलीग ने भी जो कुछ मांग की है उस में भी कायदा कमेटी को सारे राज्य कारोबार पर पूर्ण निर्णायक सत्ता देने का आग्रह किया है। वस्तुस्थिति इस प्रकार है कि, साम्राज्य के हिताहित सम्बन्ध में आज भारतवासी पड़ना नहीं चाहते। सेना, जलसेना, विमानादि, पर-राष्ट्रीय सम्बन्ध और युद्ध; इन बातों में से आज भारतवासी कुछ भी अधिकार नहीं चाहते। भारत का राष्ट्रान्तर्गत कारोबार भारत वासियों को सौंप दो और उन्हें अपने खाने पीने की व्यवस्था करने दो, इतनी सी मांग है। इस दृष्टि से पार्लमेन्ट के सामने आये हुए बिल का परीक्षण होना चाहिये। मान्टेग्यूसाहब ने विगतमास में अपनी पसंदी की स्वराज्य योजना पार्लमेन्ट के सामने उपस्थित की है। परन्तु यह नई योजना अथवा स्वराज्य के अधिकार देनेवाला बिल उपरोक्त एक भी कसौटी पर उतर सकेगा, ऐसा नहीं जान पड़ता। आज दो वर्ष से भारत जिस सुधार योजना की चातक की तरह प्रतीक्षा कर रहा है, वह योजना ढीली पोली समझी जाकर वह उतारू बादलों की ओर दीन दृष्टि से देखनेवाले चातक की तरह पागल समझा जानेवाला है। सन्तप्त भूमि को अमृततुल्य जलसे शान्त करनेवाले सजल, शान्त और कृष्ण मेघ निराले होते हैं, और खूब गर्जना कर बरसने का भास करानेवाले निर्जल, रुई के तुल्य आकाश में सर्वत्र फैले हुए कोरे बादल निराले होते हैं। परन्तु ये मान्टेग्यूसाहब

वृथा गरजनेवाले

मेघ निकलेंगे ऐसा पहली बार विश्वास न होता था। परन्तु आज जो स्वराज्य योजना उन्होंने सामने रक्खी है, वह उन्हें जलाई, न बतला कर कोरे और शुष्क सिद्ध करती दीख पड़ती है। जिस समय उन्हों ने पार्लमेन्ट के सम्मुख यह योजना उपस्थित की, उस समय पार्लमेन्ट का सभागृह लगभग जन शून्य ही था। जिस समय बिल की पुनरावृत्ति हुई तब बड़ी कठिनता से तीस बत्तीस सभासद वहां उपस्थित रह सके थे। प्रधान मण्डल में से; वे स्वत और मि० फिशर के सिवाय और कोई नया। इस प्रकार इस बेफ़िक्र और बे जवाबदार पार्लमेन्ट के सामने भारत के हिताहित का बिल उपस्थित करते समय 'इस प्रकार की पार्लमेन्ट के अधिकार छीन कर वे सब भारतीय प्रतिनिधियों को सौंप देने चाहिये' इसका उन्हें परिचय अवश्य मिल जाना चाहिये। जिस पाये पर बिल की यह इमारत उन्होंने खड़ी की है अथवा जिन तत्वों को अमल में लाने की उन्हों ने प्रतिज्ञा की थी, उनका तो इस बिल में पता भी नहीं। भारत सर्कार के पिछले सभी अधिकार कायम रखे गये है। और 'हिनोज़ देहली दूरस्त' वाली बात ही अत को सच्ची ठहरी। भारत की राज्य कारोबार की जवाबदारी का बोझा सिरपर लेने के लिये पार्लमेंट योग्य नहीं; इस बात का विश्वास हो जाने से भारत सर्कार पर देखरेख रखने का अधिकार पार्लमेन्ट को दिया गया है। भारत सर्कार के कानून मण्डल में लोकनियुक्त सभासदों का मताधिक्य रखा गया है। परन्तु उसका उपयोग क्या! साथ ही कौन्सिल ऑफ स्टेट उत्पन्न कर मन मानें कानून पास कर लेने का अधिकार सर्कार ने अपने पास ही रक्खा है। प्रान्तिक सर्कार के कारोबार में भी रिज़र्व और बहाल इस प्रकार के भेद कर रिज़र्व विभाग का कारोबार पहले की ही तरह चलाते रहने का निश्चय हुआ है। भारतीय जनता के सुखदुःख, मानापमान और देशहानी से संलग्न विभाग अर्थात् जमीन, करविभाग, शिक्षा, पुलिस, न्यायालय, फारेस्ट, नमक विभागादि हैं। परन्तु ये सब विभाग सर्कार ने अपने पास रिज़र्व कर लिये हैं और इतने कारोबार के लिये पहले की ही तरह पार्लमेन्ट जवाबदार रहेगी। इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि, नौकरशाही अब भी मनमानी रीति से सत्ता चलाती रहेगी, और पार्लमेन्ट का उस पर केवल आच्छादनरूप अधिकार रहेगा। आज तक पार्लमेन्ट ने अपना कितना कुछ अधिकार चलाया है और नौकरशाही पर उसकी बातों का कहां तक मानती है यह स्वयं-सिद्ध बात है। अर्थात् इस बिल के पास हो जाने पर भी लगभग सब प्रकार के कारोबार में नौकरशाही से जवाब लेनेवाला कोई न रह कर पहले की ही तरह अब भी पार्लमेन्ट का सौभाग्य तिलक माथे पर लगा कर सर्वत्र बेगुमान हो कर घूमते रहने से नौकरशाही को कोई न रोक सकेगा।

दायित्वपूर्ण राज्यपद्धति, जवाबदारी की राज्यपद्धति के नाम से जो राज्यपद्धति का ढिंढोरा पीटा जाता था, वह भी कहां तक अमल में

ज़ोरदार है। उनके प्रयत्नों से सुधारणाएँ निःसत्व न बनने पावें। यदि आप की इच्छा हो तो आप अपनी योजना मान्टेग्यू की योजना की कक्षा के भीतरही रखिये, इस प्रकार सलाह ... पोलक साहब की बात पर उन्हें विश्वास बैठ गया। यही एक महान् दुःख की बात हुई। अब मान्टेग्यू साहब ने बीच पार्लमेन्ट में लार्ड सिडनहॅम और उनके कम्पू की खासी आलोचना की, तो इन लोगों की भी आंखे खुल गई। यह मनःप्रवृत्ति शोचनीय है। इसी से रौलेट बिल के विरुद्ध आन्दोलन मचने पर कितनेही के हाथ पांव बँध गये। इस नये पाठ को सीख कर भी नवयुग के साथ नई सभ्यता की यदि उदय हो सका तो यह दुफस्लीपन अवश्य दूर हो जायगा।

विशेष उपाधि परीक्षा।

आर्य साहित्यसमाज का संगठन और निर्माण इस विचार से हुआ है कि समस्त भारतवर्षमें प्रत्येक भाषाके विशेषत संस्कृत के प्रचार की वृद्धि हो। यह अत्यावश्यक है कि भिन्न भिन्न भाषाओं का प्रचार किया जाय; क्योंकि विदेशी भाषा के माध्यम द्वारा राष्ट्रीयता की वृद्धि कदापि नहीं हो सकती। विगत सात वर्षों से केवल बंगला भाषा में ही समाज की ओर से परीक्षाएँ ली गई हैं। परन्तु अब समाज ने भारत की प्रत्येक प्रान्तिक भाषाओं में परीक्षाएँ लेने का निश्चय किया है। विशेष उपाधि परीक्षा भी इस वर्ष होगी।

परीक्षार्थियों के लिये नियम।

परीक्षासम्बन्धी विषय

१ रामायण—उपाधि काव्यनिधि

२ महाभारत—उपाधि काव्यविनोद

३ आयुर्वेद (चरक और सुश्रुत)—उपाधि 'आयुर्वेदरत्न' अथवा आयुर्वेद शास्त्री अथवा कविरत्न।

४ राजस्थान (टाड साहब)— उपाधि साहित्यशास्त्री।

५ लेख व निबन्ध—(निम्न लिखित १० विषयोंमें से किसी एक पर) साहित्य, प्रचलित इतिहास, समाज धर्म, स्वास्थ्य रक्षा, दर्शन, विज्ञान, कृषिशास्त्र, कलाकौशल, व्यापार (commerce) परीक्षार्थी केवल एकही विषयपर निबन्ध लिखें। स्त्रियों के लिए अलग से प्रश्न दिये जायँगे) उपाधि विद्याविनोद अथवा विद्याभूषण।

६ आख्यायिका अथवा उपन्यास—परीक्षार्थियों को दो आख्यायिकाएँ पौराणिक, ऐतिहासिक, प्राचीन साहित्य अथवा सामाजिक विषयपर लिखनी पड़ेंगी। परीक्षार्थियों को ऐतिहासिक दार्शनिक अथवा सामाजिक उपन्यास लिखना होगा। उपाधि साहित्यसरस्वती।

७ न्यायदर्शन (गौतमसूत्र)—उपाधि न्यायभूषण।

८ नव्यन्याय—व्याप्तिपञ्चक अथवा मालापरिच्छेद, उपाधि तर्कनिधि।

९ सांख्यदर्शन— उपाधि सांख्यरत्न।

१० वेदान्तदर्शन—उपाधि वेदान्तभूषण।

११ ज्योतिष—उपाधि ज्योतिषार्णव।

१२ श्रीमद्भागवत—उपाधि भागवतरत्न।

१३ श्रीमद्भगवद्गीता —तत्वनिधि।

१४ महानिर्वाणतन्त्र—तन्त्ररत्न।

१५ आत्मविज्ञान—उपाधि योगविद्यामहार्णव अथवा विद्याभूषण।

स्त्रियों के लिए निम्नांकित उपाधियां हैं—

भारती, रत्नप्रभा, भामती, सरस्वती, कविकल्पलता, विद्याविनोदिनी।

भिन्न भिन्न भाषाओं में निर्धारित पुस्तकों के अनुवाद भी व्यवहार हो सकते हैं। विद्यार्थी, अध्यापक, स्त्री पुरुष सभी एकही समय में घर बैठे एक या अधिक परीक्षाओं में बैठ सकते हैं। उत्तर पुस्तकों के लिये चार मास का समय है। अमेरिका की लेखन-परीक्षा की तरह ये परीक्षाएं हैं। बंगला, हिन्दी, गुजराती मराठी गुरुमुखी, तेलगू, तामिल, मलयालम, कैनरीज़, उड़िया, उर्दू, सिन्धी, आसामी, सीलोनी और फारसी भाषाओं में से किसी में भी परीक्षार्थी उत्तर लिख सकते हैं। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को उपाधि के अतिरिक्त पुरस्कार भी दिया जाता है। प्रत्येक विषय की ५) रु० फीस है। भारतीयों के अतिरिक्त दूसरी जाति के लोग अंग्रेजी में उत्तर लिख सकते हैं। ग्रन्थकारों और सामयिक तथा मासिक पत्रों के लेखकों को भी उपाधि दी जाती है। डाक खर्च अलग। इसके देने वालों के नाम भेजने चाहिये और सब पत्रव्यवहार अंग्रेजी में होना चाहिये। विशेष नियमों के लिए आध आने का टिकट भेजना चाहिये।

७० सोनाबाजार कलकत्ता } चन्द्रशेखर खाने बैरिस्टर एट. ला 'सभापति'
ज्ञानेन्द्रकुमार कौम्यार्णव 'मंत्री'

स्वर्गीय पं० सत्यनारायण कविरत्न
की

'हृदयतरंग' तथा उनकी 'जीवनी'

पण्डित जी के मित्र तथा उनकी रसीली कविताओं के प्रेमी यह सुनकर प्रसन्न होंगे कि कविरत्न जी कविताओं का संग्रह 'हृदय तरंग' के नाम से शीघ्रही प्रकाशित होगा।

कविरत्न जी की जीवनी भी लिखी जा रही है। उनके मित्रों तथा उनके प्रतिभायुक्त और प्रभावशाली पद्यों के प्रशंसकों की संख्या इतनी अधिक है कि हम उन सब के पास अलग अलग पत्र भेजकर इस शुभ समाचार के पहुँचाने में असमर्थ हैं; अतएव इस पत्र द्वारा उनकी सेवा में यह सूचना भेजी जाती है। जिन महानुभावों ने पण्डितजी के विषय में सम्मति देकर अथवा उनके बारे में लेख भेजकर नागरी प्रचारिणी सभा आगरा को तथा जीवनी लेखक को अनुग्रहीत किया है उनके नाम निम्न लिखित हैं।

१ पूज्य पं० श्रीधरजी पाठक

२ राइट रेवरेण्ड एच बी डेरन्ट एम. ए.डी.डी. लार्ड विशप लाहौर

३ रेवरेण्ड ए डब्ल्यू डेविस एम.ए प्रिन्सीपल सेण्टजान्स कॉ० आगरा

४ रेवरेण्ड एल. बी. जोन्स ढाका

५ मि० सी. ए डाबसन इन्दौर

६ पं० पद्मसिंहजी शर्मा

७ पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी एम. आर.ए एस.

८ पं० लोचन प्रसादजी पांडे

९ पं० कृष्णकान्तजी मालवीय

१० पं० बदरीनाथ जी भट्ट बी ए.

११ लाला कन्नोमल जी एम ए. जज धौलपुर

१२ लाला गुलाबराय जी एम ए. छतरपूर

१३ पं० मुकुटधर जी पांडेय बी ए.

१४ पं० भगवन्नारायणजी भार्गव बी ए. एम एल. बी.

१५ चतुर्वेदी पं० अयोध्याप्रसादजी पाठक बी. ए. एम एल बी.

१६ श्री० बालभूषण महंत लक्ष्मणाचार्यजी

१७ श्रीयुत शालिग्रामजी वर्मा

१८ गोस्वामी ब्रजनाथ शर्मा

१९ श्री श्रीसत्यभक्त जी

२० डाक्टर लक्ष्मीदत्त जी

इत्यादि

इनके अतिरिक्त स्वर्गीय पंडित जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी ने भी इस कार्य्य में प्रशंसनीय सहायता की है। पं० पद्मसिंह जी शर्मा इस पुस्तक की भूमिका लिखेंगे। इन सब के हम कृतज्ञ हैं,

कविरत्न जी के अन्य मित्रों की सेवा में सादर निवेदन है, कि यदि उनके पास पंडितजी के पुराने पत्र हों अथवा यदि वे पंडितजी के विषय में लेख या नोट लिखना चाहते हों तो कृपा कर 'भारतीय, सत्यनारायण सदन' इन्दौर से पत्रव्यवहार करें।

[illegible] उपरोक्त [illegible] द्वारा सत्यनारायणजी ने मातृभाषा की जो उपकार किया था उस पर ध्यान देते हुए हमें पूर्ण दृढ़ विश्वास है कि हमारा यह विनीत निवेदन व्यर्थ नहीं जायगा।

—x x—

श्री शिवजयन्ती उत्सव रायगढ १९१९

कार्यकारी मण्डली में के कुछ सभ्य ।

बैठे (बाईं ओर से) डा० साठये, श्री० पिंगले, श्री० टिपनीस, श्री० मण्डलिक, श्रीमच्छंकराचार्य (अध्यक्ष) डा० वेलकर डा० सावरकर

बंबई उत्सव मण्डल की ओर से विगत मई महिने में रायगढ़ पर श्रीशिवजयन्ती का उत्सव भली भांति मनाया गया । इस कार्य के लिये श्रीमच्छंकराचार्य करवीर मठाधीश की सवारी वहां गई हुई थी । उत्सवनिमित्त ५००० लोगों को भोजन कराया गया ।

श्री शिवाजी महाराजकी समाधि
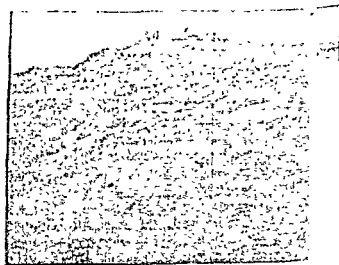
रायगढ़ पर के राजमहल का पूर्वीय द्वार

रायगढ़ पर श्रीशिवाजी महाराज का राजमहल

महायुद्ध के पांचवें वर्ष का जून मास

(लेखक:—कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर, बी. ए.)

जून की नौमी तारीख को जर्मन पार्लमेन्ट ने सन्धीपत्र पर हस्ताक्षर करने की सम्मति दी और २५ तारीख को जर्मन वकीलों ने हस्ताक्षर कर दिये। जर्मन वकीलों के हस्ताक्षर कर देने पर फ्रांस इंग्लैंड, अमेरिका आदि के द्वारा बने हुए मित्रदलने भी हस्ताक्षर कर दिये, और महायुद्ध की समाप्ती हो गई। सारे संसार को त्रस्त कर डालने वाला जो महायुद्ध पांच वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था, उस में का युद्ध सम्बन्धी कार्य विगत नवम्बर में ही समाप्त होगया था। महायुद्ध की सच्ची समाप्ति उसी समय हुई और इन छह महिनों में सन्धी की चर्चा हुई। इन छह महिनों के अन्तिम दो अर्थात् मई जून में तो इस काम को यह स्वरूप प्राप्त हो गया कि सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर न होकर वंद कीहुई लड़ाई फिर शुरू होने के लक्षण दीखने लगे। परन्तु जून के अन्त में जर्मनी की ओर से हस्ताक्षर करने की सम्मति मिल जाने पर यह संकट दूर हो गया, और युद्ध कार्य बन्द हो गया। यह सन्धी योरोप में कहां तक शान्ति स्थापित करती है, इस पर अब चारों ओर चर्चा होने लगी है। जिस कारण से महायुद्ध का आरम्भ हुआ वे कारण सन्धी के समय कहां तक नष्ट हुए है; इस पर दृष्टि डालने से सन्धीद्वारा प्रादुर्भूत शान्ति की स्थिरता का निश्चय हो सकेगा। महायुद्ध के कारणों में से दो पक्षों को तू तू मैं मैं के लिये प्रवृत्त करनेवाले अंतिम तात्कालिक कारण एक ओर रख दिये जांय तो अन्य कारणों के दो विभाग किये जा सकते हैं। पहला विभाग योरोपीय लष्करशाही की वृद्धि और उसके कारण सारे योरोपखण्ड में विशेषतः जर्मनी में लड़ने की उमंग उठना है। दूसरा विभाग जिन वासनाओं के बलिदान हो कर योरोपियन राष्ट्रों को लष्करशाही की सत्ता सुखप्रद जान पड़ी, उन वासनाओं का ज़ोर है। जर्मन सन्धीके समय लड़नेकी उमंग योरोपियन राष्ट्रोंमें कहांतक नष्ट होगई है और महायुद्ध को आरम्भ करनेवाली वासनाओं की प्रवृत्ति, किस ओर हुई है; इस पर अब हम विचार करते हैं—युद्ध की स्पर्धा के सम्बध में विचार करने पर महायुद्ध की समाप्ती में रणभूमी पर के भीषण कृत्य जितने सहायक हुए उतने ही भिन्न २ मतों के वाद-विवाद भी हुए, ऐसा कहना पड़ता है। सब से प्रथम बल्गेरिया महायुद्ध से अलग हुआ। सॉलिनोका की ओर से बल्गेरिया का पराभव हो कर उनकी खदेड़ शुरू होने से बल्गेरियन सर्कार युद्ध से अलग हो गई। ऐसा करना युद्ध कला में अथवा सामर्थ्य में स्वपक्ष से विरुद्ध पक्ष रणभूमी पर विलक्षण रीति से स्पर्धा करनेवाला निश्चित होने पर और अपना पक्ष चारों खाने चित होजाने से नहीं वरन् युद्ध न करतेहुए भी प्रे० विलसन के १४ तत्वों के अनुसार अपनी इष्टकार्य सिद्धि हो सकेगी–ऐसा बल्गेरिया को जान पड़ने से हुआ। युद्ध करने से हमारा भाग्य जितना चमक सकेगा उतना ही लड़ने से भी, इस प्रकार हंगेरिया के बहुजन समाज को विश्वास हो जाने से ही उसने भी युद्ध से टालाटूली शुरू की। सॉलिनोका की रणभूमी पर हंगेरी की ओर से बल्गेरिया को सहायता न मिलती देख, हंगेरिया की विचार सरणी बल्गेरिया से प्रहण की और युद्ध से पिण्ड छुड़ाया। बल्गेरिया की तरह हंगेरिया ने भी महायुद्ध के विरुद्ध अपना मत प्रगट किया और आस्ट्रियन बादशाही को सत्ता रुपी रस्सी त्याग दी। इस कारण वह फिसल पड़ी। आस्ट्रियन बादशाही के नष्ट होते ही जर्मनी की कैसरशाही भी गिर पड़ी। महायुद्ध की समाप्ती के कारणों में हंगेरी का मतान्तर एक मुख्य कारण हो कर-इसके द्वारा बल्गेरिया, आस्ट्रिया और जर्मनी को बात की बात में पछाड़ दिया जाने से, युद्ध बड़ी शीघ्रता से समाप्त हो गया। फ्रान्स की रणभूमी में यदि जर्मन सेना की

एकदम खदेड़ न हुई होती, तो हंगेरी की विचार क्रान्ति इतनी शीघ्रता से सारे योरोप में न फैल सकती। सेनापति फॉक ने जर्मन सेना पर विलक्षण विजय सम्पादन की और फिर जर्मनी की बराबर खदेड़ होती रही। उस समय युद्ध बन्द न हो कर २।४ महिने बराबर यदि यही क्रम चला आता तो जर्मन सेना शकट सेनापति फाक द्वारा पूरा नष्ट भी कर दिया जाता। परन्तु जर्मन सेना शकट का नाश होने के पूर्व ही केवल खदेड़ शुरू रहने की दशामें ही युद्ध बन्द हो गया, खदेड़ के कारण विचार क्रान्ति को जोर आया। और वह क्रांति प्रबल बन जाने से ही जर्मन सेना को युद्ध विराम आवश्यक जान पड़ा अर्थात् किसी भी एक दल की सेना का विनाश न हो कर दोनों दल की सेना लड़ने की दशा में कायम रहकर युद्ध बन्द हो जाने का परिणाम यह हुआ है कि, सेनापति लुडेनडार्फ, हिण्डेनबुर्ग अपने पदच्युत होने की बात को ही अब स्वीकार नहीं करते हैं:—जर्मन सेना और उसके अधिकारी अपने को उद्योग धन्दों में मित्र राष्ट्रों से अधिक जानकार और योग्य समझते हैं। पराभव न हो कर अत्यन्त अपमानास्पद सन्धि नियमों को स्वीकार करने के लिये विवश करनेवाली दुस्थिति का खपरैल वे नई विचार क्रांती पर फोड़ते हुए महायुद्ध के सच्चे कर्तृत्ववान पुरुष की ठसक से जर्मन साम्राज्य में जर्मन सेना नायकत्व-सन्धी के बाद भी कायम रखा चाहते हैं। अर्थात् सन्धी के योगसे जर्मन लष्करशाही का जोश नष्ट न हो कर आपद् काल के कारण इस जोशने थोड़ी देरके लिये सत्ता छोड़ दी है। जर्मनी में कैसरशाही के नष्ट हो जाने के बाद सोशियालिष्टों की लोकशाही शुरु हो गई। मि० सिडमॅन्, काउंटरेंझा आदि मण्डली इस लोकशाही की सत्ता धारक हुई। इन सत्ता धारियों ने विगत मई जून मास में सन्धी की चर्चा जिस ठसक से की, उस पर ध्यान देने से युद्ध में जर्मनी की हार होने की बात को जर्मनी की नई लोकशाही स्वीकार नहीं करती ऐसा जान पड़ता है। काउण्टरेंझा वकील के नाते पॅरिस को आये, वे प्रे० विल्सन, मि० लायड जार्ज, मि० पॉन्कारे आदि से समानता के नाते बरताव करने लगे। चारों खाने चित् हो जाने के कारण दांतों में तिनका दबा कर शरण में आये हुए शत्रु कासा भाव उन में बिलकुलही नहीं दीखता था। मई महिने में सन्धी की शर्तें जर्मनी को सूचित कर देने के बाद वहां के भिन्न २ दलों और सामान्य लोक समाज ने जो चर्चा की, वह हारे हुए राष्ट्र की दीनता युक्त न थी। खुद जर्मन पार्लमेंट में मुख्य मन्त्री सिडमन ने भी मित्र सर्कार पर यथेच्छ वाक्प्रहार किया। सोशियालिष्ट पक्ष को राज्यक्रांति उत्पन्न कर वही पक्ष जर्मनी में अधिकारारूढ बनगया। इसके लिये सब लोगों को जर्मनी की प्रशंसा कर उसको बड़े अदब से सम्मान करना चाहिये, इस प्रकार सभी नेता अपने व्याख्यानों में तथा समाचार पत्रों और पार्लमेंटरी व्याख्यानों में डंका पीट रहे हैं। यह बात मई जून के जर्मनी में मचे हुए आंदोलन पर से कहे बिना नहीं रहा जा सकता। सब मित्रराष्ट्रों ने एक हो कर जो एक महत्कार्य किया, उसके समान अथवा उससे कुछ अधिक मूल्य का महत्कार्य जर्मनी के वर्तमान सत्ताधारियों ने कर दिखाया। इस प्रकार जर्मन सोशियालिष्ट पक्ष का दृढ़ विश्वास हो गया सा दीखता है। तुम जिस प्रकार बड़े हो उसी प्रकार हम भी बड़े हैं, किम्बहुना हमारे ही मन का पानी तुम लोगों को अजुली से पीना पड़ेगा। इस दिमाग से वर्तमान जर्मन सत्ताधारी विगत दो महिनों से बराबर बोल रहे हैं। कैसरशाही में कैसर बादशाह उसके सेनापति और मन्त्रिमंडल को जिस उत्साह के साथ बोलना चाहिये, उस

में लोकशाही में भी रत्ती भर कमी नहीं की है। यह बात विगत ३।४ महिनों के वादविवाद पर से स्पष्ट हो चुकी है। जर्मनी में सामान्यतः आज तीन पक्ष हैं, डूबी हुई कैसरशाही का प्रथम पक्ष, कैसरशाही को नष्ट करनेवाला सोशियालिस्टों का दूसरा पक्ष, और पूर्वीय अधिकारियों की परम्परा एकदम तोड़ कर आज ही सारे सोशियालिस्ट तत्वों को सर्वतोपरि अमल में लाने के इच्छुक सोशियालिस्टों का पक्ष तीसरा है। ये तीनों पक्ष अभिमान और ठसक से जकड़े हुए दीख पड़ते हैं। सन्धी की शर्तों के लिये सम्मति दी जाय अथवा नहीं, इस विषयका वादविवाद होते रहने की दशा में सेनापति हिण्डेनबुर्ग ने प्रगट किया कि, लड़ते २ मरना स्वीकार है, परन्तु अपमानास्पद सन्धी की हमें आवश्यकता नहीं। पूर्वीय प्राशिया में के फौज़ी लोगों ने तो स्वतन्त्र सेना की टोलियां खड़ी कर कुछ तो भी कारण निकाल पोलैण्ड से लड़ने की जोर शोर से तय्यारी की है। सोशियालिस्टिक जर्मन सर्कार ने सन्धीपत्र पर हस्ताक्षर करने का जब निश्चय किया उस समय ५० जर्मन फौजी जहाजों के कप्तानों ने अपने २ जहाज के नीचेवाले भाग में छेद कर उन्हें समुद्र में डुबा दिया। ये जहाज लगभग १२५-१३० करोड़ रुपये मूल्य के थे। युद्धविराम के समय अंग्रेजी जलसेना की नजर कैद में ये जर्मन जहाज लंगर डाल कर पड़े हुए थे। सन्धी की कलमों से ये सब जहाज मित्रसर्कार को मिल जाते। कल ये सब मित्रसर्कार के अधिकार में चले जायँगे, ऐसा विश्वास होतेही, इस जंगी बेड़े के प्रधान एडमिरल रीटर ने अपने अधिकार में के खलासियोंको जहाज डुबो देने की आज्ञा दी, और सब खलासियोंने उन की आज्ञा का पालन भी किया। इस कार्य से कितनेही जर्मन खलासी समुद्र में डूब मरे, और शेष ४।५ हजार अंग्रेजों के कैदी बन गये। इस कार्य के विषय में जबाब लिया जाने पर एडमिरल रीटर ने कहा कि शत्रु के अधीन न होना चाहिये इस प्रकार का फौज़ी हुक्म होने से मैंने यह कार्य किया, और मौका आनेपर फिर भी मैं ऐसेही काम करने से न चूकूंगा। महायुद्ध में लड़ने से जर्मन लोगोंका युद्ध करने सम्बन्धी नस अभी दब नहीं गई है, और चारों खाने चित होजानेवाला पहलवान जिस प्रकार सुस्त पड़ आता है, उस भांति जर्मनी का फौजी प्राण अभी गलित नहीं होगया है, यह बात प्रथम पक्षके सन्धी के समय के बर्ताव परसे स्पष्ट होती है। दूसरे पक्ष की ओर ध्यान देने पर जो कि; जर्मन सोशियालिस्टिक मतवाला है, और आजकल जो जर्मनीमें अधिकारारूढ़ होकर सामान्य लोकसमूह का ध्यान भी जिस की ओर लगा हुआ है, मई महिने में सन्धी की बात चीत के समय इस में का एक व्यक्ति काउन्टरेन्झा पेरिस में उपस्थित था। उसने वहां अपनी ठसक सेही बर्ताव किया। प्रे० विल्सन की चौदह बातें छोड़ कर सन्धी की कलमें बनी हैं, ऐसा मित्रसर्कार को सुनाकर पट्टी पढ़ाने का क्रम शुरू किया। वह इस ठसक से बर्ताव कर रहा था मानो जर्मनी का पराभवही नहीं हुआ। युद्धदण्ड के सम्बन्ध में पौलैण्ड को दिये जानेवाले प्रान्त और राष्ट्रसंघ में जर्मनी का प्रवेश करा देनेवाली कलमों के सम्बन्ध में मित्रसर्कार की ओर से कुछ रिआयतें की जाने पर भी काउण्टरेन्झा ने सन्धी पत्र पर हस्ताक्षर न किये और अपने पदका इस्तीफा दे दिया। सन्धी की शर्तें नई जर्मन सर्कार के सामने विचारार्थ उपस्थित होने के समय मुख्य मन्त्री सिडमन ने यह बात आकुलता युक्त स्वीकार की कि अब जर्मनी आगे के लिये युद्ध नहीं चला सकता। परन्तु सन्धी की, शर्तों को उसने भी स्वीकार नहीं किया। मन्त्री मण्डल की ओर से सोशियालिस्ट पक्ष की ओर जब विचारार्थ ये शर्तें भेजी गईं तो इन शर्तों से जर्मनराष्ट्र का नाश मित्र सर्कार का हेतु है, इस प्रकार सब सोशियालिस्टों ने मित्रों को गालिप्रदान और शाप दिया। तथापि आज अपने पास फौज पलटन नहीं, तोप और विमान भी नहीं, इस कारण लड़ाई नहीं हो सकती, ऐसे पोच कारणों से सन्धी पर हस्ताक्षर करने के लिये बहुमत अनुकूल हो गया। कैसर की फौज का मित्रों ने पराभव कर के हमें लष्करशाही से मुक्त कर दिया इसके लिये जर्मनी की सोशियालिस्ट पार्टी को कुछ भी विशेष सा नहीं जान पड़ता। हमारी दिनदशा जरा ठीक न होने से ही हार खानी पड़ी है, इतना मात्र भाव उनमें दीखने लगा है। परन्तु आन्तरिक ठसक और गर्व में कुछ भी कमी नहीं हुई है। जर्मन सर्कार और सोशियालिस्ट पक्ष की ऐसी स्थिति क्यों हो? पराभूतों की लीनता उनमें क्यों दिखाई न दे? जर्मन राष्ट्र का यह ठसकदार स्वभाव है, ऐसा कहने पर तो जर्मन राष्ट्र की बुद्धिमत्ता के लिये यह बात शोभा नहीं देती। स्वभाव का यह अंशतः दोष हो, परन्तु उतने मात्र से इस गर्व का कारण समझ में नहीं आ सकता; पेरिस के सन्धीपत्र पर जिस प्रकार जर्मनी ने अप्रसन्नता से हस्ताक्षर किये, उसी प्रकार वर्ष सवा वर्ष पूर्व ब्रेस्टलिटोव्हास्क में रशियन लेलिन के पक्ष ने भी बड़ी अप्रसन्नता से जर्मनी की लिखी हुई शर्तों के खरेंपर हस्ताक्षर किये थे। उस समय जर्मनी से थोड़ासा वादविवाद करनेका लेलिन ने प्रयत्न किया। परन्तु जब देखा कि जर्मनी सुनता नहीं; तो ऐंठ और गर्व से बेपर्वाही की लहर में हस्ताक्षर कर के-अब क्षणभर के लिये भी जर्मन वकील का मुँह न देखने का निश्चय कर लेलिन का वकील बड़ी गुर्मी से सभा के गांव में से स्पेशल ट्रेन द्वारा चल दिया। उस समय उसका यह बर्ताव केवल उद्दंडता का जान पड़ा। कर्म-धर्म संयोग से कुछ भिखारी ज़ार के बाद रशिया के सिंहासन पर बैठे, परन्तु अपने पास किसी भी प्रकारकी सेना न रहते हुए, शस्त्रास्त्र और गोली बारुद के बिना चतुर सेनापति के अभाव रहते हुए भी उनका ऐसी विजयशाली ठसक कैसरशाही दिखाना, उससमय जर्मन मुस को हास्यकारक जान पड़ता तो आश्चर्य जैसी बात ही क्या है?

विगत दो वर्षके इतिहासने सिद्ध किया है कि, उस ठसकमें हास्य बातें अधिक नहीं। विजयशाली जर्मन सेना से लड़ने का बल लेलि न था। और इतने ही के लिये उन्हों ने सन्धी पर हस्ताक्षर कर किन्तु वह जर्मनी के कैसर और उसकी सेना तथा मुसद्दियों पर्वाह भी न करता था। इस बेपर्वाही का कारण-यह नहीं था उसे जर्मन सेना का प्रभाव विदित न हो, परन्तु जिन तत्वों को स्वीकार किया और करता है, उनके सामने कैसरशाही डांवा हो जायगी यह बात उसे निस्सन्देह जान पड़ती थी, इसी क जर्मन मुसद्दियों से बोलचाल में लेनिन का वकील बेपर्वाही घमण्ड का बर्ताव करता था। उसके बाद वर्ष डेढ़ वर्ष के इति की ओर देखा जाय तो भी लेलिन पक्ष की तत्कालीन ठसक बेपर्वाही निरर्थक नहीं कही जा सकती। ज़ारशाही को लेनिनशा खा डाला; यह बात कैसरशाही को अच्छी जान पड़ी। परन्तु ज़ार को खाने के बाद रशिया में लेलिन की सत्ता स्थापित होने के साथ आष्ट्रिया और जर्मनी में की बादशाही का पाया डांवाडोल होने लग सोशियालिस्टिक मतों का समूह अनुयायी ज़ार की सत्ता का रशि में वारिस हो गया, और कुछ दिन अधिकारी भी बना रहा यह जर्मनी और आष्ट्रिया के सोशालिस्टों को प्रोत्साहित करने के लि पर्याप्त थी। रशिया में बाल्शेविकों ने कितने ही अमानुषी अत्या

किये, तो भी उनकी ओर सोशियालिस्ट अधिकाधिक झुकने लगे। लेनिन रशिया में मुख्याधिकारी हो सकता है, और सोशियालिस्ट के तत्व जितने हों पूर्ण क्यों न हों परन्तु अमल में ला सकता है, यह बात ही आष्ट्रो-जर्मन सोशियालिस्टों को महत्व की जान पड़ी। जिस प्रकार से नये माने हुए लेनिन के पक्ष का यदि रशिया में वश चला और वह सोशियालिष्टिक मत का है इतने पर ही यदि वह निभा सका तो लेनिन का जिस मार्ग चलने से आष्ट्रो-जर्मन सोशियालिस्टों का अपने २ देश में [illegible] अस्तित्व क्यों न स्थापित किया जाय. इस प्रकार की महत्वाकांक्षा आष्ट्रो जर्मन सोशियालिस्टों के मन में लेनिन के उदाहरण से स्वयं ही उत्पन्न हो गई। यह महत्वाकांक्षा मित्रों की विजय के जितनी ही कैसरशाही को डुबाने के लिये कारण रूप बन गई। जर्मनी के सोशियालिस्ट आज अपने मत के अभिमान में रंगे हुए हैं। जर्मन स्वभाव की स्फूर्ती, और कड़ापन आज उन में दीख पड़ता है। इस का कारण सोशियालिष्टिक मत सम्बन्धी उनका दृढ़ विश्वास ही है। महायुद्ध की व्यापकता बढ़ जाने के कारण सब लोगों को युद्ध का कष्टाला आ जाने से-इस सोशियालिष्टिक मत को सिर ऊंचा करने को अच्छा मौका मिला यह बात ठीक है, तथापि कैसर का ही रूपान्तर सोशियालिष्टिक मत में हुआ है ऐसा मानना असत्य है। आर्थिक प्रश्न न उठाने देकर सोशियालिष्टिक मतों को महायुद्ध ने सिंहासन पर बिठा दिया, किन्तु वह रोते झींकते उस पर नहीं बैठा। जर्मन कैसरशाही की स्फूर्ति और कड़ापन और दिमाग से यह अधिकारारूढ़ हुआ है। लेनिन जिस प्रकार एक तत्व पर जमा हुआ है और उसके लिये सब कुछ सत्ता वश करके अधिकार की बागडोर अपने हाथ में ले न छोड़ने को तत्पर है ये सभी बातें जर्मनी और आष्ट्रिया के अनुयायियों में पाई जाती हैं। अब उस संकट का ज्यों त्यों सामना कर यदि हम जीवित रहे और अपने मतों की सत्ता देश में बनी रही तो वह कितनीही भली बुरी और दुर्बल हो; तथापि केवल जीवित मात्र रहने से अड़ोस पड़ोस के लोगों के लिये उदाहरण बनकर उन्हें सहायता देने के लिये आकर्षित कर सकेगी। और धीरे २ उस पर के संकट दूर कर यह सशक्त हो विद्रूपता के बदले मोहक बन जायगी। ऐसा लेनिन का मत है। सोशियालिष्टिक मत सारे योरोप में स्थापित होना चाहिये। इस मत का पूर्ण अभिमानी लेनिन होने से रशियन बाल्शेविकों के कुरूप की ओर उसने नहीं देखा और सोशियालिष्टिक मतों की सत्ता जैसे बन पड़ी उसी रूप में रशिया में स्थापित की। वर्ष डेढ़ वर्ष में ही उसकी सत्ता का अस्तित्व आष्ट्रो-जर्मन बादशाही ने कायम किया। आष्ट्रियन बादशाही की सत्ता को हटा देने की शुरुआत करनेवाले हंगेरी में आज बाल्शेविकों के रूप की सत्ता है। हंगेरियन बोलशेविक रशियन बाल्शेविकों की तरह निश्च मार्ग से नहीं जाते। जर्मनी में बाल्शेविकों की सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न विगत छह सात महिनों में दोतीन बार हुआ, किन्तु व्यर्थ गया। जर्मनी में जो भी बाल्शेविक अधिकारूढ़ न हो सके तथापि सोशियालिस्टों के पाँव पूरी तरह जमगये हैं। इस प्रकार स्वदेश में जम जाने से जर्मन सोशियालिस्टों को स्वाभाविक अहंकार के कारण ऐसा जान पड़ता है कि, योरोप खंड में सच्चा मान वर्द्धित करनेवाली राजसत्ता स्थापित करने का मान हमही मिला है और हमाराही अनुकरण किये बिना अन्य राष्ट्र बच नहीं सकते। रशियन बाल्शेविकों की भुकभुला दूर कर के सोशियालिष्टिक मतों को हमने कैसर के सिंहासन पर बिठाया, इस कारण रशिया और हंगेरी ने भी हमाराही उदाहरण लिया है, इस प्रकार का गुरुपद हमने प्राप्त किया है। मानव [illegible] राज्य [illegible] मतों [illegible] युद्ध [illegible] इन तीनों काम के सोशियालिष्टिक मतों द्वारा होने रहने की दशा में रशिया में इनके मत का स्वरूप राक्षसी बन गया। परन्तु रशियन सोशियालिस्टों से हम जर्मन सोशियालिस्ट अधिक होशियार बुद्धिमान और विवेकी होने से सोशियालिष्टिक राज्यसत्ता का सच्चा नमूना निर्माण कर सारे संसार के लिये आदर्श बनने का मान हमही मिलता है। रणभूमी पर मित्र सरकार के वर्तमान सुसंगत रूप के कारण और हमारे शत्रु ही अधिकारारूढ़ होकर पूर्व का सैना हाकट हटेगा बन जाने से मित्र सरकार आज हमें डाट डपट दिखाकर नापसन्दी वालों संधी हम पर लाद रही है। परन्तु थोड़ेही दिनों में मित्र सरकार का प्रजावर्ग भी हमारा उदाहरण देख कर हमारी ही राज्यसत्ता का अनुकरण किये बिना न रहेगा, इसी कारण कुछ समय तक के लिये हमें सन्धी की आपत्ति में दिन बिताना पड़ेंगे। इतनी भी ही कठिन बात है। मित्र सरकार के देश की बुद्धि ने आज हम दबे हुए धारण कर लिया है। आज जो बातें गुपचुप होरही हैं, वही कल खुल्लमखुल्ला शुरू होजाने पर हमारा वर्चस्व सारे संसार में स्थापित हुए बिना न रहेगा, जर्मनी के अधिकारारूढ़ सोशियालिस्टों का मताभिमान उपरोक्त स्वरूप का होने से एक प्रकार की ठसकसे बरताव करते रहकरही उस पक्षने बहुमत से सन्धी पर हस्ताक्षर करने की सम्मति दी, जर्मनी के तीसरे पक्ष की ओर देखने पर अपने मत के लिये निशंकता अधिक जोरों पर दृष्टिगोचर होती है। यह तीसरा पक्ष स्वतंत्र सोशियालिस्टों का है। बाल्शेविकों का अनुकरण करने में यह पक्ष धन्यता मानता है। पूंजीदारों के कारखाने और सम्पत्ति आज ही जब्त कर लेने चाहिये और इसके लिये उन्हें कुछ भी बदला न दिया जाय, इस प्रकार बालशेविकों की तरह इस पक्ष का भी मत है। रेलगाड़ियाँ खदानें, आदि बड़े २ कारखानों का स्वामित्व पूंजीदारों से छीन कर समाज के हाथ में आने तक हड़ताल करके कारखाने बन्द कराने का इस तीसरे पक्ष ने अपने हाथ में शस्त्रग्रहण किया है। इस प्रकार की हड़तालों से समाज के अन्य लोगों का मन अपनी ओर आकृष्ट किया जासकेगा। और शीघ्रही सामान्य जनसमूह या तो अपनी ओर हो जायगा, अथवा विदान पक्ष में अपने विरुद्ध न रहेगा, ऐसा इस पक्ष को जान पड़ता है। हड़तालें करते २ जिस दिन फौजी लोक हड़ताल के तत्वों के लिये अनुकूल बन जायँगे उसी दिन हम अधिकारारूढ़ होसकेंगे। और वह दिन भी बहुत दूर नहीं है, ऐसा इस पक्ष को विश्वास है। सन्धी की शर्तों से आर्थिक दृष्ट्या जर्मनी के रसातल को पहुँचने की सम्भव रहने से जर्मनी का फौजी सामर्थ्य सामान्य की सर्कार उठा रखने को उतनी उत्सुक नहीं है। सोशियालिष्टिक सर्कार के उलट जाने पर भी कोई हानि नहीं, ऐसा कहनेवालों का फौजी सत्तावाला दल सन्धी होने के बाद से दिनों दिन फूलता चला है। बड़े २ पूंजीदारों को सन्धी के बाद अपने उत्कर्ष के विषय में शंका उत्पन्न होने से, वे भी उदास बन गये हैं। महायुद्ध के संकट सारे संसार को सहन करना पड़े, इसका कारण किसी राज्य अथवा देश की राजकीय महत्वाकांक्षा न हो कर बड़े २ कारखानों के बल पर स्वदेश की सम्पत्ति को अपनी मुट्ठी में रख कर उसमें विदेशीय सम्पत्ति को मिलाकर अपने हाथनीचे के लोगों पर जीवनक्रम सम्बन्धी अन्याय पूर्ण सत्ता चलाई जाय, इस प्रकार सारे योरोप में पूंजीदारों की विगत ५०-७५ वर्ष से जो हाय होरही थी वही महायुद्ध का मूल कारण हो सकती है। इस प्रकार सोशियालिस्टों का दृढ़ विश्वास है। जर्मनी के साथ की हुई सन्धी से सम्पत्ति सम्बन्धी यह हवस कम न हो कर, पंच महाराष्ट्रों में के सभी पूंजीदारों को पूर्व क्रम से बलपूर्वक आगे पैर बढ़ाने के लिये नई सुविधाएं और नई आशा प्राप्त हो गई हैं, प्रकार इस जर्मन सोशियालिष्ट सन्धीका अर्थ बतला रहे हैं। बड़े २ कारखानों के बल पर स्वदेश की सम्पत्ति अपने घर में खींच लाना ही योरोपियन पराक्रम का लाक्षण में अर्थ है। इस पराक्रम को विगत सौ वर्षों से योरोप में उत्तेजन देते २ मध्य और पूर्व योरोप को आज यह अनुभव हुआ है कि इसकी बातों में आकर योरोप के हाथ पाँव निकम्मे, आलसी और असन्तुष्ट बन कर आगे के लिये पराक्रम कर दिखाने की अब उन में कुछ भी शेष नहीं रहा है। अपने शरीर को खा डालनेवाले पराक्रम को नष्ट कर करना ही पथ्य है? जिस दिन यह यह पराक्रम संपुट में आ जायगा, वही सुदिन होगा, इस प्रकार रशियन बाल्शेविकों ने समझ रक्खा है। मजूरों को कारखाने अधिकृत कर लेने में क्या हानि है, इस प्रकार का अविश्वास बढ़ता चला है। स्वदेश में के मजूरों को कष्ट दे कर परदेश की लूट खसोट करने की अपेक्षा अपने ही मजूरों के हाथ में कारखानों का चले जाना क्या बुरा है? इस बुद्धि से सिर उठाने की ओर पूंजीदारों की भी प्रवृत्ति होने लगी है।

इस सिवाय सारे मध्य योरोप में खाने पीने के सम्बन्ध में लोगों की दुर्दशा विगत चार वर्षों से भी अधिक बुरी होती चली है। कितने ही कारखाने वैसे ही बन्द हो चले हैं। खेती की ओर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है और भूखों मरने का कष्ट सहने का भार लोगों के सिर

पढ़ने से-काम काज कर के भी पया करना है-इस प्रकार संसार के विपय में चारों ओर वेपर्वाही फैलती चली है। यह वेपर्वाही सोशियालिष्टिक मतों को ही अधिक प्रबल बनाती है। नवीन शास्त्रीय शोध के बल पर पूंजीदारों ने अपने अधिकारों में बड़े २ कारखाने रख कर एक एक कारखानेवाले के अधिकार में हजारों मज़दूरों से असह्य परिश्रम कराकर उनके श्रम के बल पर विदेशी सम्पत्ति स्वदेश में खींच लाने और शारीरिक कष्ट उठानेवाले तथा पूंजी नचानेवालों के रहन सहन और नित्य के शृंगार में कष्ट उठानेवालों की दृष्टि से भी दुःसह अन्तर पड जाय इस ढंग से उस सम्पत्ति का उपभोग करना ही सोशियालिष्टों की दृष्टि से पूंजीवालों का जीवनक्रम निश्चित हुआ है। पूर्वकालीन एक मुखी सत्ता के अभिमानी राजा और सर्दार जिस प्रकार परदेश के विजय पर अपने अधिकार में नौकरों को असह्य कष्ट दिया करते थे, और राजा अथवा सर्दारों का आराम उनके निकटस्थ परिवार के लिये असह्य हो जाता था, इसी प्रकार आज योरोप भर में बड़े २ कारखानों के स्वामी गरीबों की आंखों में खटकने लगे हैं। यह बात ठीक है कि ये पूंजीदार परदेश से स्वदेश में सम्पत्ति खींच लाते हैं। परन्तु उस क्रिया के लिये स्वदेशीय मज़दूरों को इतना कष्ट उठाना पड़ता है, और धनाढ्य तथा गरीबों के रहन सहन में इतना विलक्षण अन्तर पड जाता है कि, उससे गरीबों को ऐसा जान पड़ने लगता है कि; न हमें यह परदेशी सम्पत्ति ही चाहिये, न यह कठिन श्रम और अपमानास्पद अन्तर ही। आज योरोप में इसी ढंग से गरीबों के मन धनाढ्यों के विरुद्ध भड़क उठे हैं। सारे योरोप में अपना मत फैला देनेके लिये आज सोशियालिष्टों ने जोर शोर का उद्योग शुरू किया है। और जर्मनी की सन्धी से इस उद्योग को मध्य योरोपमें अनुमोदन मिला है। हँगेरिया का अनुकरण करने की ओर मध्य योरोप में अधिक प्रवृत्ति हो कर हँगेरी की नई सर्कार के अन्याय से त्रस्त हो फ्रान्स में भाग आनेवाले हँगेरियन लोग भी-हँगेरियन बालशेविकों को नष्ट करने सम्बन्धी फ्रान्स से विनय करते हुए-तुम्हारे जैसी सत्ता हमारे देश में भी स्थापित कीजिये-यों न कह कर बालशेविकों के बदले सोशियालिष्ट स्वरूप की सत्ता हमें दो, इस प्रकार मांग कर रहे हैं। अर्थात मध्य और पूर्व योरोप में सोशियालिष्टिक मत आज लोगों के अंतःकरण पर अच्छी तरह जम गये हैं, और पश्चिम योरोप के पूंजीदारों की लोकशाही का मत वहां फैलना कठिन हो गया है। सन्धी की शर्तों ने-पूंजीदार और सोशियालिष्टों की दो लोकशाहियाँ मान सारे योरोप के दो विभाग कर दिये हैं। पश्चिम योरोप पूंजीदारों के हाथ में है, और मध्य तथा पूर्व योरोप सोशियालिष्टों के हाथ में है। संसार का कल्याण हमने महायुद्ध के समय अपनी कृतियों से किया,

पहले जिस ठसक और बुद्धि तथा करारेपन से [illegible] लगा था वही सब बातें योरोप भर में सोशियालिष्टिक मत [illegible] करने के कार्य में उपयोग करने की यह सन्धी के बाद प्रवृत्त [illegible] इस बात को सूचित करने वाला नया संचार आज जर्मनी में [illegible] दे रहा है। जून के अन्त में जो सन्धी हुई उसने पंचमहाराष्ट्रों [illegible] पूर्वीय महत्वाकांक्षाएँ कायम रख कर राष्ट्रसंघ ने पारस्परिक दोष [illegible] महत्वाकांक्षा के सिर मढ़ने का प्रयत्न किया है। ये [illegible] सदृढ़ हो गई है, और राष्ट्रसंघ दुर्बल प्राणी की तरह इनके [illegible] तुच्छ गहना बन जायगा, ऐसा कितने ही तत्वज्ञों का मत प्रगट हुआ [illegible] अर्थात् पञ्च महाराष्ट्रों के लिये पर्याप्त रीति से ही देखा जाय तो [illegible] पूर्वीय स्पर्धा के कारणों का इस सन्धी से नाश नहीं हुआ; [illegible] कहना पड़ता है। इस सन्धी ने मध्य योरोप को फौजी अथवा [illegible] यान किंवा आर्थिक दृष्टि से जो भी कंगाल बना दिया है, तथापि सोशियालिष्टिक मतों का वहां संचार होने में यह कंगालपन [illegible] कारण बन कर मध्य और पश्चिम योरोप का झगड़ा; स्वमत [illegible] करने की दृष्टि से फ्रेञ्च राज्यक्रांति के दिवस तुल्य जाज्वल्य स्व[illegible] वाला इस सन्धी के कारण बन जायगा। रशिया जर्मनी और हं[illegible] में के सोशियालिष्टिक मतों को नष्ट कर दिये [illegible] ना फ्रान्स और इ[illegible] को चैन नहीं पड सकता। इँग्लैण्ड अमेरिका और जापान ये राष्ट्र [illegible] मत स्थापना के झगड़े से अलग रहना चाहते हैं, यह बात ठीक [illegible] मत स्थापना का झगड़ा क्रमशः योरोप में या तो बुझ ही [illegible] या भड़क ही उठेगा। धीरे २ बुझने पर भी फ्रान्स को अगले बार आंखों में तेल डाल कर होशियार रहना पड़ेगा। परन्तु इस [illegible] स्थापना के झगडे को यदि सन्धी ने भड़का दिया तो खुद फ्रान्स [illegible] इटली में ही सोशियालिष्टों का पसारा बढ़ कर वहां के पूंजीदारों [illegible] सर्कार स्वदेशीय सोशियालिष्टों के सन्मुख निर्बल रहने लगेगी। [illegible] निर्बलता यदि संसारको थोड़ी सी भी दृष्टिगोचर होगई, और मध्य [illegible] पूर्व योरोप में के सोशियालिष्ट सन्धी के कारण फौजी नज़र से [illegible] ही दुर्बल बन गये तो भी फ्रान्स में के सोशियालिष्टों की सहायता [illegible] लिये वे दौड़ते आकर अपने मत का दिग्विजय सारे योरोप में [illegible] लेने के मौके को कभी व्यर्थ न जाने देंगे। सन्धी से उन्मुक्त बने [illegible] जर्मनी ने यदि फ्रान्स पर चढ़ाई करने का आगे कभी साहस किया तो [illegible] वह उपरोक्त स्वरूप का ही बन जायगा। इस योग का भय फ्रान्स को न बना रहे-इसके लिये जर्मनी के अकारण ही फ्रान्स पर चढ़ाई कर देने पर इंग्लैण्ड और अमेरिका उस (फ्रान्स) की सहायता के लिये दौड़ आवेंगे। इस बात का फ्रान्स को विश्वास दिलानेवाली एक नई-सन्धी पर प्रे० विल्सन और लायड जार्ज ने जुलाई के आरम्भ में हस्ताक्षर कर दिये हैं। आष्ट्रिया से होनेवाली सन्धी का शर्तें जुलाई के अन्त में तय्यार हो कर अगस्त के आरम्भ में आष्ट्रिया के उस पर हस्ताक्षर हो जायँगे। और सितम्बर में बलगेरिया तथा टर्की की सन्धी होगी-ऐसा अनुमान किया जाता है।

अभिलाषा।

(राग देश)

भगवन्! शरण हुई है मेरी,
  अबला हो प्रबला थी प्रभुवर! अबल हुई फिर चेरी ॥१॥
विश्व-सिन्धु के दुःख-भँवर में, तीस कोटि सुत मेरे;
  [illegible] के [illegible], भी है हा! आ घेरे ॥२॥
कृपा-[illegible], निज हाथ उठा कर, कृपासिन्धु! भयहारी!
  [illegible] पार लगा दे, त्रिभुवन-स्वामि! हितकारी ॥३॥
[illegible] स्वार्थ हा! हृद २ में आ छाये;
  [illegible] भाव, सद्भाव नहीं है, [illegible] ॥४॥
प्रेम परस्पर सब में हो अब, द्वेष वैर को छोड़ें;
  निज [illegible] मन सूझे, [illegible] में जोड़ें ॥५॥
" हम भारत-सन्तान सब हैं " निज हृद्-पट पर धारें,
  देश [illegible] के कारण वे, [illegible] तन मन वारें ॥६॥
[illegible] न कभी भी, [illegible]!
  [illegible] अनुराग [illegible], [illegible] हमारे ॥७॥
[illegible] विक्रमादित्य के, [illegible];
  [illegible] ॥८॥
हे [illegible]! [illegible]! [illegible]!
  [illegible] कर, बस है विनय हमारी ॥९॥

पं० [illegible]

'भविष्य' की सहायता कीजिये !

प्रयाग के सहयोगी 'भविष्य' का परिचय हम अपने जनवरी के अंकमें दे चुके हैं। भविष्यकी नीति निर्भीक और स्पष्टवादी होनेके कारण प्रेस एक्ट की तलवार उस पर टूट पड़ी। जन्म होने से पूर्व ही उससे १५००) रुपये की जो जमानत दाखिल करायी गई थी। वह [illegible] ही लेखों को अराजक बतला कर जप्त करली गई, और नई जमानत पांच हजार की मांगी गई है। एक नवजात पत्र के लिये असमय में इतना द्रव्यभार सिरपर आपड़ना, वास्तव में एक विचित्र सी बात है। यद्यपि चार मास की अवधी में ही भविष्य की ग्राहक संख्या साधारणतया ठीक हो गई थी, तथापि कागज आदि की मँहगाई ने उसका खाता बराबर कर घाटे में डाल दिया, क्योंकि पत्र में आरम्भ से ही बढ़िया कागज लगाया गया था। इसी बीच [illegible] [illegible] घटनायें हो गई। [illegible]। जनता को [illegible] भांति विश्वास हो गया है कि चार महीनेमें ही भविष्य ने [illegible] [illegible] का मान कर दिया है और आगे के लिये हमें 'भविष्य' के [illegible] क्यों आवश्यकता है! कोई भी अच्छा कार्य आरम्भ करने पर [illegible] अवश्य उपस्थित हुआ करते हैं, और लोग उनका युक्तिपूर्वक निवारण भी किया करते हैं। किंतु जो कार्य [illegible] हो उनके लिये भी [illegible] सहायता की आवश्यकता हुआ करती है, ऐसी दशा में भविष्य के [illegible] राष्ट्रियकार्य करनेवाले पत्र की सहायता अनिवार्य समझता [illegible] हमें आशा है कि जनता [illegible] भविष्य को यथाशक्ति [illegible] [illegible] देकर [illegible] उसके पुनर्जन्म में सहायक होगी और [illegible] तथा देश के भविष्य का [illegible] हम करेंगे। भविष्य का पुनर्जन्म [illegible] के लिये सब प्रकार हितकर और आवश्यक समझा जाता है।

साहित्य समलोचन।

(ग्रंथ-साहित्य)

(१) गीतादर्शन —ले० लाला कन्नोमलजी एम० ए०। प्रकाशक आत्मानन्द पुस्तक प्रकाशक मण्डल रोशन मुहल्ला आगरा। पृ० सं० डेमी अष्ट पत्री लगभग ४०० पृष्ठ। कागज छपाई सफाई उत्तम। प्रकाशक से प्राप्य।

लालाजी के विषय में हिन्दी जनता को परिचित कराने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि आप के विचित्र दार्शनिक लेखों से जनता भली भांति लाभ उठा रही है। इस पुस्तक में महाराजा काश्मीर, महाराजा छतरपुर तथा माननीय राजा साहब कोटाला लिखित अंग्रेजी वाङ्मुख और हिन्दी अनुवाद के अतिरिक्त पं दीन दयालु शर्मा व्याख्यान वाचस्पति का लिखा हुआ वचनारम्भ और श्रद्धेय पं० महावीर प्रसादजी द्विवेदी लिखित वक्तव्य है। इसी पर से पुस्तक की उपयोगिता ध्यान में आसकती है। पुस्तक के आरम्भ में पाश्चात्य शास्त्रीय विचार और गीता का विवेचन करते हुए भौतिक विज्ञान, अध्यात्मशास्त्र, मनोविज्ञान-शास्त्र, आचारशास्त्र, सामाजिक और धर्मशास्त्र का परिचय देकर भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के जीवन पर एक दृष्टि डाली गई है, जिसमें उनके चरित्र का गूढाशय प्रगट किया गया है। इसके बाद भगवद्गीता के बनने का समय बतलाया गया है। भगवद्गीता के सिवाय और कौन २ गीतायें हैं उनका उल्लेख किया जाकर भगवान श्रीकृष्णचन्द्र का संदेश और उनकी गीता का परिचय दिया है। इसके बाद दर्शनशास्त्रों के सिद्धान्त का विवेचन कियागया है, जिस में वेदान्तदर्शन, उपनिषद, सांख्यदर्शन, योग, न्याय, और वैशेषिक दर्शन, पूर्व मीमांसा, भागवत धर्म, नारद भक्ति सूत्र और आचार धर्म का निदर्शन है। इसके बाद भगवद्गीता के सिद्धान्तों का सप्रमाण शृंखलाबद्ध वर्णन किया गया है, जिसमें सृष्टि, जीव, आत्मा और परमात्मा इन दोनों का सम्बन्ध, परमपद, उसकी प्राप्ति का मार्ग, कर्म, पाप कैसे होता है, कर्मयोग, ईश्वर पूजन के भिन्न २ मार्ग, ध्यानयोग, ज्ञानयोग, सन्यासयोग, भक्तियोग, आचार के साथही मोक्ष और परमपद पानेवालों के लक्षण बतलाये गये हैं। फिर विश्वरूप दर्शन की व्याख्या कर गीतोपदेश की परंपरा और उसकी महिमा बतलाई गई है। परिशिष्ट विभाग में ईश्वरगीता, गणेशगीता और शुकाष्टक का संक्षिप्त परिचय देकर अन्त में भगवद्गीता का मूल पाठ दिया गया है। इस प्रकार लालाजी ने गागर में सागर को भर देने का अलौकिक प्रयत्न किया है। इस एक ही ग्रंथ के पढ़ लेने से मनुष्य प्रायः सभी वेदान्त विषयक बातों से भिज्ञ होसकता है। हमारा अनुरोध है कि यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परिक्षा के दर्शन विभाग में पाठ्यपुस्तक नियत की जाय। इतने सब श्रम को देखते हुए जिल्द बँधी पुस्तक का २) रुपये मूल्य कुछ भी नहीं है। पुस्तक संग्राह्य है।

(२) कविता कौमुदी —सम्पादक पं० रामनरेशजी त्रिपाठी और प्रकाशक साहित्य भवन प्रयाग। पृ० सं० डबल क्राउन १६ पेजी ५०० पक्की कपड़े की जिल्द और छपाई सफाई बढ़िया। प्रकाशक से प्राप्त।

यह कौमुदी का द्वितीय संस्करण है। जो पहले की अपेक्षा बहुत सुधार के साथ वृद्धिगत रूप में प्रकाशित हुआ है। इसमें चन्द से लेकर गोविन्द गिल्ला भाई तक कोई ८६ कवियों के संक्षिप्त परिचय सहित उनकी उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह किया गया है। यह संग्रह इतना उत्तम हुआ है कि इस छोटे संग्रह रूपी गागर में सागर भर दिया गया सा जान पड़ता है। वास्तव में इसका नाम सार्थक है, कविता जगत की यह कौमुदी है। जो मिश्र बन्धु विनोद जैसी भारी पुस्तक को न पढ़ सकें उन्हें इसे पढ़ने से वह सब बातें ज्ञात होसकती हैं। पुस्तक सम्मेलन परिक्षा की पाठ्यपुस्तकों में रखी गई है। आरम्भ में हिन्दी का मार्मिक और संक्षिप्त इतिहास तथा पुस्तक के अन्त में कौमुदी कुंज नाम से अनेक कवियों की मनोरंजक कविताओं का संग्रह भी दे दिया गया है। पुस्तक हिन्दी साहित्य का एक उज्वल रत्न है। ऐसी स्तकों का अधिकाधिक आदर होना चाहिये। इसके दूसरे भाग में आधुनिक कवियों की परिचय और कविता संग्रह कीजायगी।

(३) आदर्श विद्यार्थी —लेखक श्री० पं० सिद्धिनाथ दीक्षित और काशक दीक्षित और द्विवेदी दारागंज प्रयाग मू० ।) आने। यह एक द्यार्थी की जीवन कहानी है। अनेक प्रकार के संकटों का सहन कर स प्रकार उत्तम विद्या संपादन की जासकती है, इसकी शिक्षा पुस्तक अच्छी तरह मिल सकती है। पुस्तक सब के पढ़ने योग्य है।

(४) साधना —ले० श्री० राय कृष्णदासजी; प्रकाशक साहित्य चिरगाँव (झाँसी)। पृ० सं० ११२। छपाई सफाई तथा कागज और मनोहर जिल्द बंधी हुई। मूल्य १) रुपया मात्र।

यदि इस पुस्तक को हिन्दी साहित्य का उज्वल रत्न कह दिया तो कुछ हानि न होगी। बंगला भाषामें जिस प्रकार गीताञ्जलीका है, उसी प्रकार से यह पुस्तक भी हिन्दी भाषा भाषियोंको ईश्वरसे रससम्बन्ध और स्वकीय कार्य-कर्मोंपर अध्यात्मनिष्ठ भावनाओंका स्वादन करा यह मान प्राप्तकर सकतीहै। राय कृष्णदासजी हिन्दीके सम्माननीय सेवकों में से हैं, जो इसे अमूल्य रत्नों द्वारा अलंकृत रहे हैं। पुस्तक में लिखित कितनी ही भावनाएँ तो इतनी गूढ़ हो हैं कि, कितनीही बार मनन पूर्वक पढ़ने पर भी उनका समझ कठिन होजाता है। पुस्तक का परिचय लिखनेवाले हिन्दी के स्वना धन्य कवि श्रीमैथिली शरणजी गुप्त हैं। अध्यात्म विद्या के प्रेमियों को इसे अवश्य देखना चाहिये।

(५) भारत वर्ष का इतिहास (प्राचीन और अर्वाचीन)—लेखक श्रीमान पं० श्याम बिहारी मिश्र एम ए, एम आर ए एस, तथा पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी ए। प्रकाशक हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय प्रयाग। पृ सं (ड क्रा १६ पेजी) लगभग ४२५, छपाई सफाई उच्च कोटि की और सुन्दर कपड़े की जिल्दवाली पुस्तक का मूल्य १।) रु० कुछ भी नहीं है।

मिश्र बन्धुओं ने हिन्दी साहित्य के मुकुट को जिन २ अमूल्य रत्नों द्वारा सुशोभित किया है, उन्ही में का यह भी एक उज्वल रत्न है। इन दिनों हिन्दी साहित्य में इस प्रकार के उज्वल रत्नों को प्रकाशित होते देख हृदय आनन्दित होता है। यह इतिहास का प्रथम खण्ड है और इसमें वैदिक काल से सूत्र काल तक अर्थात ईसा के ६००० वर्ष पूर्व से ५०० वर्ष पूर्व तक का क्रमबद्ध इतिहास दिया गया है। यद्यपि हिन्दी साहित्य में भारत के कई इतिहास निकल चुके हैं, किन्तु उनमें अधिक से अधिक एक या दो इतिहासों में वैदिक या सूत्र काल के इतिहास के विषय में उल्लेख पाया जाता है, और वह भी केवल ८-१० पृष्ठ या अधिक हुआ तो एकाध परिच्छेद इस विषय का होगा। परन्तु इस ४०० पृष्ठ की पुस्तक में उन सब बातों का इतनी सरलता और खोज के साथ इतिहास दिया गया है कि, जिसे पढ़ कर लेखक महोदय के श्रम के लिये धन्यवाद दिये बिना नहीं रहा जाता। आरम्भ में २० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका भी दीगई है। इस भाग को देखते हुए विश्वास होता है, मिश्र बन्धु अगले भागों में भी इसी प्रकार की खोज पूर्ण बातों का समावेश करेंगे। सम्मेलन की सुलभ साहित्य माला सचमुच ही अपने नाम को सार्थक कर रही है, इसके लिये सम्मेलन को बधाई।

(६) सूर्य सिद्धान्त —अनुवादक और सम्पादक श्री. पं. इन्द्रनारायण द्विवेदी। प्रकाशक-हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग पृ सं. कोई ढाईसौ। कागज की जिल्द और मूल्य एक रुपया, पुस्तक के परिश्रम को देखते हुए अधिक नहीं जान पड़ता।

पं. इन्द्रनारायणजी हिन्दी में ज्योतिष विषय के सिद्ध हस्तलेखक समझे जाते हैं। आप के द्वारा इस पुस्तक का अनुवाद करवा कर सम्मेलन ने यह अच्छा प्रयत्न किया है। इसमें मूल श्लोक उनका अनुवाद, टीका और आलोचना हैं। अब तक सूर्य सिद्धान्त की जितनी भर टीकायें छप चुकी है, उन्हें संस्कृत के पंडित भी पूर्णतयः नहीं समझ सकते हैं। क्योंकि उनमें बिलकुल संस्कृत शब्दों का अर्थ मात्र देदिया जाता है, भाव समझाने की चेष्टा नहीं की जाती। ऐसी अवस्था में सम्मेलन की मध्यमा और उत्तमा परिक्षा के लिये यह ग्रंथ नियत किया गया है, परन्तु उपयुक्त हिन्दी टीका के अभाव से परिक्षार्थियों को बड़ी कठिनता पड़ती थी, अब वह द्विवेदीजी के प्रयत्न से बहुत कुछ दूर होगई है। आरम्भ में ४१ पृष्ठ की मार्मिक प्रस्तावना भी दीगई है। आज कल के ज्योतिषी भी इससे लाभ उठा सकते है।

(७) भारतीयराष्ट्र निर्माण—लेखक और प्रकाशक—भगवानदास केला (माहेश्वरी) अलीगढ़। पृ. सं. लगभग १४० मूल्य १० आने छपाई सफाई कागज आदि उत्तम। जनरल ब्यूरो कंपनी प्रयाग की ओर से प्राप्त। केलाजी की पिछली दो पुस्तकों की भांति यह भी अपने ढंग की अनूठी पुस्तक है। आरम्भ का विषय प्रवेश बड़ी विद्वता से लिखा गया है। प्रथमखण्ड में सामाजिक बल, दूसरे में उद्योग के साधन, तीसरे में राष्ट्रीयता और चौथे में स्वाधीनता का विषय विभाग करके अच्छी तरह विवेचन किया गया है। परिशिष्ट में भी कई

वर्ष ९ मई १९१९ May 1919 अंक ५

हे अज्ञानतमोविनाशक विभो ! आत्मीयता दीजिए। देखें हार्दिक दृष्टि से सब हमें ऐसी कृपा कीजिए ॥
देखें त्यों हम भी सदैव सब को सन्मित्र की दृष्टि से। फूलें और फलें परस्पर सभी सौहार्द्र की वृष्टि से ॥

स्वप्न।

जेठ की थी पूर्णिमा; बुधवार था।
चांदनी चारों दिशा में व्याप्त थी ॥
कोक औ कोकी अकेली को नहीं।
शेष जगती मात्र को पर्य्याप्त थी ॥१॥

घोर निद्रा में स्वयं मैं लीन था।
ध्यान था मुझको नहीं संसार का ॥
ज्यों पड़ा होवे तली में जीव तो;
है पता लगता न पारावार का ॥ २ ॥

स्वप्न की धारा अचानक बह चली।
बुद्धि ने भी छोड़ मेरे साथ को
भाग कर जाने कहाँ पर जा बसी।
और दिखलाने लगी दुखपाथ को ॥३॥

देखता हूँ क्या, खड़ी है सामने।
एक सुकुमारी अनूठे वेष में ॥
एक कर में है लिये खप्पर बड़ा।
चमचमाता खड्ग भी है एक में ॥४॥

बाल चारों ओर हैं बिखरे हुए।
तेज काली-सा मुझे बस याद है ॥
किन्तु विकराली निराली मूर्ति थी।
देख कर मेरा हुआ दिल शाद है ॥५॥

पूछ ही बैठा, कड़ा करके हृदय,
'दास पर कैसे कृपा इतनी हुई ?
लीजिये, यह तो रही चुप सोचती।
और फिर रोने लगी, कहती हुई— ॥६॥

हेतु मेरे आगमन का पूछते ?
हाय ! भारी भीर तुम पर आपड़ी ॥
होश में आओ, लखो उस ओर तो।
सामने चण्डालिनी कोई खड़ी' ॥७॥

आप ही आँखें अचानक फिर गईं।
दृश्य भी वह काल से विकराल था ॥
आज तक देखा नहीं था लोक में।
शाल के भी हेतु तो यह शाल था ॥८॥

वर्ष एक सहस्र की तो आयु थी।
श्वेतबालों की लटें थी छा रहीं ॥
ज्यों निरी काली घटा के बीच में।
दामिनी की ही छटा हो भा रही ॥९॥

थी खड़ी तलवार खींचे हाथ से।
लक्ष्य ही मानो बना यह दास था ॥
पर न जाने, क्यों रुकी थी बावरी।
प्राण कर्ता भी कदाचित् पास था ॥१०॥

डाट कर मुझ को लगी वह बोलने—
"क्यों नहीं उठता अगन का दास तू ॥
लोग कहते हैं मुझे 'परतन्त्रता'।
कौनसा अब चाहता है हंस तू"! ॥११॥

'आज खाऊँगी तुझे, बचता नहीं।
लक्ष्य मेरा दास ही रहता सदा ॥
जो बने रहते हमारे भृत्य हैं।
है उन्हीं के भाग्य में ऐसा बदा' ॥१२॥

भीत भय से हो, लगा कुछ सोचने।
अन्त में दोनों करों को जोड़ने ॥
भीरुता का छत्र सिर में बाँध के,
वीरता से हा ! लगा मुँह मोड़ने ॥१३॥

कायरों कीसी दशा मेरी लखी।
दूसरी बाला जगी अति क्रोध से ॥
और फिर धिक्कारने मुझ को लगी।
सांत्वना फिर दे चली अनुरोध से ॥१४॥

'शोक है, मेरे खड़े रहते यहाँ।
व्यर्थ ही साहस तनय, हो त्यागते।
क्या प्रभाकर की प्रभा के सामने।
क्षुद्रतारा भी कभी हैं जागते ? ॥१५॥

जन्म से मेरे उपासक तुम रहे।
त्याग सकती क्या तुम्हारा साथ मैं ?
प्राण भी चाहे दगा दे चलबसें।
वह छुकी, तब छोड़ सकती हाथ मैं ? ॥१६॥

देखलो, चण्डालिनी के काम का,
मैं चखाती हूँ मज़ा, निजधार से ॥
हाथ तो मेरा निरा कमजोर है।
खून तो भी चूसती तलवार से ॥१७॥

लो, करारे वार वह करने लगी।
औ लगी दुष्टा उन्हें तब रोकने ॥
स्वप्न की मेरी दशा थी, किन्तु मैं,
भाग जाने को लगा हा ! सोचने ॥१८॥

किस समय वे खड्ग ये खींचगये।
और कब वे म्यान में डाले गये ॥
देखने को शक्ति थी मुझको, नहीं;
किस समय वे शत्रु पर घाले गये ॥१९॥

किन्तु थी आश्चर्य की सीमा नहीं;
देख कर 'परतन्त्रता' का सिर कटा ॥
धीरता का दूसरा वपु धीर था।
और उदयाचल सरीखा था डटा ॥२०॥

\+ × × × ×

बूँद मानों खून की कुछ आपड़ीं।
पूर्व सी, मेरी दशा अब थी नहीं ॥
नींद भी टूटी, हुआ जब होश, तो,
देखता हूँ क्या, कहीं कुछ भी नहीं ॥२१॥

'विदग्ध'

* शास्त्रशास्त्र के अनुसार जीव की चार अवस्थाएँ होती हैं और स्वप्न अवस्था में बुद्धि उसका साथ छोड़ देती है। लेखक

के दक्षिण ओर आठ मील पर दर्भशयन नामक एक स्थान है। सीता की खोज करते २ राम यहां आये, और यहां ७ दिन निराहार रह कर समुद्र की प्रार्थना की थी। उस समय सोने, बैठने, के लिये दर्भ की शय्या बनाई थी, इसी से इस स्थान का नाम दर्भशयन पड़ गया है। मैं रामानन्द स्टेशन पर नहीं उतरा, इसी कारण दोनों स्थानों को न जा सका। त्रिचनापल्ली को जाते हुए मार्ग में मदुरा स्टेशन आया, यहां पहिली बार मैं उतर ही चुका था अतः आगे बढ़ा तो डिंडुगल नामक स्टेशन आया। यह पहले मदुरा प्रान्त की राजधानी था, यहां एक प्राचीन किला है, जो गाड़ी में से दीखता है। यहीं सिगरेट बनाने का भी कारखाना है। खेत से तम्बाकू लाकर उसकी सिगार बनने तक सब काम कम्पनी में होता है, यहां से ३२ मील पर 'पालनी' नामक एक क्षेत्र है। यहां के नैवेद्य के समय में ऐसा कहा जाता है कि वह कितनेही दिन रक्खा जाय तो भी नहीं बिगड़ता। मैं यहां भी न उतर सीधा त्रिचनापल्ली पहुँचा। यहां गाड़ी बदलनी पड़ती है। वह बदल कर दूसरी गाड़ी में बैठ कर रात को ८ बजे त्रिचनापल्ली फोर्ट स्टेशन पर आया। स्टेशन के निकट ही एक धर्मशाला है। यहीं अधिकतर यात्री लोग उतरते हैं। गाँव में भी धर्मशाला है।

ता० २ को सवेरे उठ कर धक्का गाड़ी करके श्रीरंग को चल दिया।

मदुरा के देवालय में गणपती की मूर्ति

यह स्थान त्रिचनापल्ली फोर्ट से ३ मील पर है। मार्ग में कावेरी का पुल आता है। आगे बढ़ते हुए श्रीरंग के निकट ही कावेरी पश्चिम वाहिनी होगई है, यहां घाट बँधा हुआ है। पश्चिम वाहिनी नदी पर स्नान करना बड़ा ही पवित्र माना जाता है। इसलिये यहां स्नान करने के बाद मैं श्रीरंग को आया। श्रीरंग का देवालय भारत के समस्त देवालयों से बड़ा है, उसमें सात प्राकार हैं। ऐसा भी कह दिया जाय कि सारा गाँव उसी में बसा हुआ है, तो अत्युक्ति न होगी। दुनिया भर के काम उसी में होते हैं। उन प्राकार में १५ हजार की बस्ती है। बाहर ४।५ हजार की बस्ती होगी। सब से बाहर के प्राकार की दीवार सोलह फुट चौड़ी है, और लंबाई २ मील से भी अधिक है। देवालय के प्राकार में ही एक देवालय श्रीरंग के दीवान का भी है। अमन नायकी नामक एक लक्ष्मी का भी देवालय है। नृसिंह का देवालय और एक तीर्थ भी है। यहां एक उंडी का वृक्ष भी है।

मुख्य देवालय श्रीरंग का है। श्रीरंग लेटे हुए हैं। मूर्ती की लम्बाई कोई १० फुट होगी। उत्सव मूर्ति सोने की है। सामने का सभामण्डप भी बड़ा है। मण्डप में गरुड़ की मूर्ति है। मूर्ति बड़ी सुन्दर और बड़ी है। मंदिर का शिखर सोने का है। इस देवालय में सब मिला कर १५ गोपुर हैं, किन्तु वे छोटे २ हैं। देवालय का विस्तार बहुत है, परन्तु नकशकारी कुछ भी नहीं। मदुरा के देवालय जिस प्रकार शोभायुक्त दीखते हैं, सो बात यहां पर नहीं है, किन्तु देवताओं के आभूषण इतने मूल्यवान हैं, कि उनका मूल्य लगभग लाख रुपये होगा। उनमें एक तश्तरी सन १८८५ में जब कि स्व० एडवर्ड बादशाह प्रिंस ऑफ वेल्स के नाते भारत में पधारे थे, उन्होंने देवता को अर्पण किया था। उन आभूषणों के देखने की फीस १५ रुपये लगती है। यहां यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है, उन्हें हम नहीं देख सके। १ दिन पूर्व युनिवर्सिटी कमीशन के डाक्टर मुकुर्जी यहां आये हुए थे, उन्होंने फीस देकर उन्हें देखा था यदि हम भी उनके साथ आते तो आभूषण हमें भी देखने को मिल जाते।

श्रीरंग के देवालय से एक मील के अन्तर पर जंबुकेश्वर का देवालय है, यहां एक जामुन के वृक्ष के नीचे मंदिर होने से ही उसका नाम जंबुकेश्वर होगया है। देवालय का मण्डप बहुत ऊंचा है। देवालय के वाहन लकड़ी के हैं, किन्तु वे रंगीन और सुन्दर बने हुए हैं। देवालय के बाहर एक धर्मशाला है, वह बहुत बड़ी है। ऐसी ही एक धर्मशाला त्रिचनापल्ली में भी है।

इन सब को देख कर मैं मुकाम पर आया और भोजनादि से निपट त्रिचनापल्ली का किला देखने को चला। यह किला गाँव में ही एक टेकड़ी पर बना हुआ है। ऊपर चढ़ने के लिये चौड़ी सिढ़ियाँ बनी हैं।

त्रिमुल नायक का महल मदुरा

३७ सिढ़ियाँ चढ़ जाने पर बस्ती का आरंभ होता है, आगे ४८ सिढ़ी चढ़ जाने पर मार्ग के दोनों ओर मण्डप आता है। उसकी छत की नकाशी दर्शनीय है। आगे फिर ६२ सिढ़ी चढ़ जाने पर गणपति का मंदिर आता है, उससे आगे ६१ सिढ़ियाँ चढ़ जाने पर भूतकेश्वर महादेव का देवालय आता है। इसके भीतर दो शिल्प कलायुक्त मंडप आते हैं, वे दुमजिली हैं। भूतकेश्वर का देवालय दूसरी मंजिल पर है। मंदिर का शिखर सोने का है। मंदिर की आय बीस हजार रुपये है।

नीचे के मंजिल में पार्वती का देवालय है, उसे देख कर दर्वाजे से बाहर निकलने पर ऊपर आने का रास्ता मिलता है। उस मार्ग के बाईं ओर दर्वाजे के सिरे पर पहाड़ी खोद कर एक छोटासा गुफा गृह बनाया है। उसकी एक दीवार पर संस्कृत में पुराण लिखा हुआ है। ऊपर चढ़ जाने पर शिखर पर गणपति का देवालय आता है उसके सामने गेलेरी बनी हुई है। उसमें खड़े रह कर सारे शहर की शोभा देखी जासकती है। एक स्थान पर जब कि बिभीषण रामचन्द्रजी को आकाश मार्ग से ले जारहा था, और बीच में विश्राम के लिये जहां ठहरा, वहां पादुकाएँ बनी हुई हैं, किन्तु वहां जाने के लिये जो मार्ग है वह बड़ा विकट होने के कारण बहुधा वहां कोई नहीं जाता, ऐसा विदित होने से मैंने भी साहस न किया। इसके बाद मैं किले पर से

उतर कर नीचे आया यहां, एक तालाब है, और उसके किनारे एक सुन्दर इमारत है। उसमें पहले कालेज का काम होता था; किन्तु पहले यहां लार्ड क्लाइव रहा करते थे। इस गाँव में भी तंजौर की भांति बहुत से महाराष्ट्रीय ब्राह्मण रहते हैं और उन्होंने महाराष्ट्र भाषोत्तेजनार्थ एक संस्था भी स्थापित कर रक्खी है।

तारीख ३ को दिन के बारा बजे मैं त्रिचनापल्ली से चला, तो श्याम को येरोड़ स्टेशन पर आया, यहां से कोईम्बटूर होकर नीलगिरी को जाने का विचार था, किन्तु उन दिनों वहां ठंड की विशेषता सुन कर-यह विचार स्थगित कर दिया और कोयम्बटूर से जालारपेट को जाने वाली गाड़ी से चल कर जालारपेट पहुँचा, यहां से फिर मद्रास से बंगलौर की ओर जानेवाली गाड़ी से रवाना होकर भौरंगीपेठ को उतर गया। इसके पश्चात कोलर की सोने की खदान की ओर जानेवाली गाड़ी में सवार हो सबेरे पांच बजे उरीगम को पहुँचा। अर्थात् त्रिचनापल्ली से जो दिन के बारह बजे रेल में बैठा सो दूसरे दिन सबेरे सोने की खदानों पर उतरा। रात भर जागरण, एक बार का भोजन और ४ स्थान पर गाड़ी बदलने से इस यात्रा में बड़ा त्रास हुआ।

ता० ४ को सबेरे खदानें देखने गया। प्रथम जहां बिजली का संग्रह किया रहता है, उस स्थान को देखा। शिवगंगा सागर नामक कावेरी नदी के तट पर एक क्षेत्र है, यहां एक बड़ा जल प्रपात है। यही कावेरी का मुख्य जल प्रपात है। गिरिसप्पा के बिलकुल नीचे ही यह प्रपात है। यहां ३०० फ़ुट पर से पानी गिरता है। यहां से बिजली उत्पन्न करके १०० मील पर कोलर और उरीगम की सोने की खदानों में पहुँचाई गई है। उरीगम में उसे संग्रहित रख कर उसका नियमन किया गया है। पांच स्थानों में खदानों का काम चल रहा है। उन सब को बिजली पहुँचाने का काम उरीगम में होता है। ये सब मैसौर सर्कार के ताबे में हैं। परन्तु सोने की खदानें चलाने का काम एक योरोपियन कम्पनी के ताबे में है। यह कम्पनी बिजली पहुँचाने के लिये प्रतिमास एक लाख पचासी हजार रुपये देती है, अर्थात् वर्षभर में २२ लाख रुपया होता है। सिवाय में यह कम्पनी सोने की आय पर सैकड़ा ५ रुपये के हिसाब से रायल्टी देती है। जो कि वर्षभर में १५ लाख रुपये होती है। अर्थात् मैसोर सर्कार को उस सोने की खदान से ३७ लाख से भी अधिक आय है।

यहां पर बिजली का काम देख कर मैं सोने की खदान का काम देखने गया। सोने की खदान की गहराई लगभग १ मील है, इसमें ऊपर नीचे आने जाने के लिये हैड्रालिक लिफ्ट की भांति झूले बने हुए हैं, उनमें बैठ कर मनुष्य भीतर खानों में काम करने को जाते हैं और काम होजाने पर छुट्टी के समय बाहर निकल आते हैं भीतर उतरने में तीन मिनिट लगते हैं। शुद्ध वायु सब को पहुँचाने का काम बराबर होता रहता है। एक बार दुर्घटना हो जाने के कारण अधिकतर प्रेक्षकों को भीतर जाने की मनाही कर दी गई है। यहां से सोने के पत्थर फोड़ २ कर ऊपर लाये जाते हैं। उन्हें छोटे २ करने के लिये एक यंत्र में डालते हैं और फिर दूसरे यंत्र में उनको और भी बारीक बना लेते हैं। इसके बाद उसमें पानी और पारे का मिश्रण मिलकर बड़ी २ पट्टियों पर फैला देते हैं, इस प्रकार पारा-सोना और पानी का मिलाकर मिश्रण होजाता है। फिर बाद में पारे के मिश्रण को अलग कर उसे एक भट्टी में रख जलाते हैं, जिससे पारा उड़ जाता है और सोना अलग होजाता है। इन सब कामों को देख कर मुकाम पर आया और भोजनादि से निपट उरीगम में स्टेशन पर गाड़ी में सवार हो भौरंगी पेठ पर गाड़ी बदल कर बंगलौर वाली गाड़ी में बैठ कर रवाना हुआ। यहां [illegible] पर १५ धर्मशालायें हैं।

ता० ५ को बंगलौर पहुँचा, यहां का अजायबघर देखने योग्य है। [illegible] के नमूने [illegible] रखे हुए हैं। [illegible] [illegible] रखे हुए हैं। [illegible] हुए हैं। [illegible]

लालबाग देखने को गया। इसमें प्रायः सभी वनस्पतियाँ होने से यह बड़ा महत्व का बाग समझा जाता है। बाग में कहीं २ पिंजरे में भिन्न २ जाति के बन्दर और पक्षी भी रखे हुए हैं।

ता० ६ को सबेरे गाँवीपुर को आया, यहां एक पर्वत कोर कर मंदिर तय्यार किया गया है। उसके चारों ओर प्रदक्षिणा मार्ग भी बोगदे की तरह बनाया हुआ है। यहां शंकराचार्य का मठ नामक एक नई इमारत बनाई हुई है, इसमें संस्कृत पाठशाला खोली जायगी, इसका कार्य शीघ्र ही आरंभ होनेवाला है। दोपहर को भोजनादि से निपट 'टाटा-रिसर्च इन्स्टीट्यूट देखने गया। यह स्थान गाँव से ५ मील पर है। यहां कई विद्यार्थी दक्षिणी भी थे। सेन्द्रिय रसायन, निरीन्द्रिय रसायन, उपयुक्त रसायन, सामान्य रसायन इस प्रकार रसायन की ४ शाखायें और १ बिजली की शाखा है। बिजली की शाखा में लोहा फूट जाने पर बिजली की सहायता से किस प्रकार जोड़ा जाता है, यह प्रयोग करके मुझे दिखलाया गया। लोहार लोग दो टुकड़ों को लाल कर (गर्मी से) घन से ठोंक पीट कर एक जीव करते हैं। कल्पना कीजिये कि एक स्टीमर में दराज हो गई, तो वहां इन लोहारों का क्या वश चलेगा? परन्तु घन विद्युत् के सिरों को बराबर मिलाने से वह दराज जुड़ जाती है। यह कितना भारी चमत्कार है, मैंने और भी कई चमत्कार देखे। एक विद्यार्थीने अशुद्ध मिट्टी से केलशियम निकाल कर दिखाया, इस प्रकार अशुद्ध धातुओं से शुद्ध करके बोतल में भरे हुए पदार्थ भी मैंने देखे। चन्दन का तैल निकालने का भी बंगलोर में एक बड़ा कारखाना है उसे देखने का विचार था परन्तु समय न रहने से मुकाम पर लौटना पड़ा।

ता०७को सबेरे बंगलौर से निकल कर१०बजे श्रीरंगपट्टन को आया यहां कावेरी नदी के तीन फांटे हो गये हैं। एक फांटा श्रीरंगपट्टन के उत्तर की ओर, दूसरा दक्षिण की ओर, और तीसरा दक्षिण की ओर से पश्चिम को जाता है। श्रीरंगपट्टन कावेरी के बीच में आ जाने से यहां हमेशा मलेरिया बना रहता है और हवा भी दूषित रहती है। यहां कावेरी की एक धारा पश्चिम वाहिनी होजाने के कारण यह पवित्र तीर्थ मानी जाती है। उस दिन एकादशी होने से मैं ख़ास कर इसीलिये गाड़ी से स्नानार्थ उतरा और कावेरी में स्नान कर तट पर के तीन देवालयों के सम्बन्ध पूछताछ ज्ञात हुआ कि श्रीरंग कावेरी के तट पर आड़े सोये हुए हैं। उनका मस्तक श्रीरंगपट्टन में नाभी शिवगंगा सागर और पांव त्रिचनापल्ली में है। शिवगंगा सागर के जल प्रपात से बिजली उत्पन्न कर कोलर को पहुँचाई जाती है, स्नान से निपट श्रीरंग के दर्शनार्थ गया, उस समय पूजन हो रहा था। पूजा होने पर यहां भी पका हुआ भात खिचड़ी-बांटा गया उस दिन एकादशी होने पर भी लोग भात खा रहे थे। मैंने तो एकादशी व्रत के कारण भात न खा कर बाजार में फलाहार किया। इसके बाद गांव के पूर्व सिरे पर की मसजिद देखने गया। इस मसजिद की मीनारें ऊंची हैं और उन पर सोने के कलश हैं। इसके बाद गांव के निकट ही दर्यादौलत नामक इमारत है उसे देखने को गया, यह इमारत हैदर टीपू के समय की है। इमारत नदी के किनारे पर बनी हुई है और छोटी होकर भी सुन्दर है। इमारत के पश्चिम की ओर की दीवार पर अंग्रेज और टीपू की अन्तिम लड़ाई के रंगीन चित्र बनाये गये हैं। पूर्व भाग की दीवार पर मुगल मामी दर्बार के दृश्यों के चित्र हैं। अन्य दीवारों पर फूल बागादि के रंगीन चित्र बने हुए हैं। इमारत छोटी होने पर भी उसमें कारीगिरी का काम विशेष होने से यह बड़ी सुन्दर दिखाई देती है और पूर्व काल के वैभव का स्मर्ण कराती है। इमारत के चारों ओर बाग है। यह भी बड़ा [illegible] रूप में [illegible] की बड़ी [illegible] से काट कर मोर, हाथी, कुर्सियां आदि का आकार दिया गया है। कावेरी के तट पर एक [illegible] बना हुआ है। दूसरी एक जगह कावेरी के तट पर [illegible] के लिये [illegible] हुई है। बाग में [illegible] [illegible]

... नदी की तीन धाराएं हो गई हैं और किला श्रीरंगपट्टन से ... ओर को है। जहां दीवार फोड़ दी गई थी, उस बुर्ज पर ... खड़ा किया गया है, और उस पर चारों ओर लिखा ... कि सन १७९९ के अप्रैल को ५ तारीख से ४ मई तक किला लड़ता रहा। लेफ्टिनेन्ट जनरल हेरिस मुख्य सेनापति थे।

	मारे गये	घायल	लापता
अंग्रेज	११२	६५७	२१
नेटिव	१०८	३८५	९७

२४ योरोपियन आफिसर्स काम आये, ऐसा लेख है।

इसको देख कर मै मुकाम पर से समान ले स्टेशन पर आया। और गाड़ी में सवार हो रात को ८ बजे मैसोर पहुँचा। यहां कई धर्मशालाएं है। उनमें नन्दराज बहादुर की धर्मशाला बहुत बड़ी और दुमंजिली है। उस धर्मशाला में स्थान न रहने से मुझे दूसरी एक धर्मशाला में ठहरना पड़ा।

ता० ८ को स्नानादि से निपट द्वादशी होने के कारण भोजनादि से भी निपट मैसोर के भिन्न २ स्थान देखने गया। प्रथम प्राणि-संग्रहालय में गया। यह स्थान मैसोर से तीन मील पर है। यहां भिन्न २ जाति के सिंह, बाघ सियार, चीते, बन्दर आदि थे उनमें एक ओरंग ओतांग भी था। कई प्रकार के पत्ती, हिमालय की ओर के काले और अर्कार्ट की ओर के सफेदरीछ भी थे। सफेद रीछ की गर्दन बहुत बड़ी होती है, किन्तु उसके शरीर पर बहुत बाल नहीं होते। यहां जिराफ भी है। न्यू नामक एक घोड़े के समान सींगवाला जानवर भी है। मोर भी भिन्न २ रंग के हैं, उनमें एक नीले रंग का बड़ा सुन्दर मोर भी था। इसके बाद मैं ग्रेफर पेलेस की ओर गया इसे देखने की मनाही है, तथापि बाहर से जो भाग दीख सका उसे देख सर्कारी घुड़साल देखने गया। उसमें सौ डेढ़सौ घोड़े हैं, वे सब मजबूत और बड़े हैं। महाराज के बैठने का रथ भी है, उस पर की कारीगरी दर्शनीय है। इस के बाद बाडीगार्ड की घुड़साल देखने को गया उसमें ६० घोड़े हैं, वे सब मजबूत और काले रंग के हैं। पास ही एक सड़क है। सड़क के दोनों ओर फूल के वृक्ष और बेलबूटियां लगा कर एक फर्लांग का बगीचा बनाया गया है, दोनों ओर वायु सेवनार्थ बेन्चे भी रखी गई हैं। द्वार पर दोनों ओर ऊंचे खम्भे खड़े कर उन पर जाली डाली गई है, जिससे मार्ग पर छत जैसा बन गया है, उस पर बेल चलाई जाने से दृश्य बड़ा सुन्दर होगया है।

इसके बाद मै राजमहल देखने को गया। मार्ग में दोड नयरी अर्थात् बड़ा तालाब आया। राजमहल में भीतर नहीं जाने देते, इसीलिये उसे भी बाहर से ही देखा। महल बहुत ऊंचा है। बाहर की कारीगरी भी बड़ी विचित्र है। भीतर इन्द्रभवन है या क्या, सो हमें ज्ञात नहीं! पास ही हनुमान का एक छोटासा मंदिर भी है। इसके बाद कर्ज़न पार्क, हार्डिंज सर्कल, और मंडी देख कर गाँव से ३ मील पर दक्षिण की ओर के चन्दन का इत्र निकालने के मिल को देखने गया। यहां चन्दन के वृक्ष काट कर उनका चूरा किया जाता है और फिर भाफ के द्वारा उसका इत्र तय्यार किया जाता है।

ता० ९ को सवेरे उठकर स्नानादि से निपट मैसोर से ३ मील पर के मुंडी के पर्वत पर देवी का जो देवालय है, उसे देखने गया। ऊपर चढ़ने के लिये अच्छी सिढ़ियाँ बनी हुई है। प्रति १०० सिढ़ियों के चढ़ जाने पर वहां १००।२०० के अंक बने हुए हैं। ये अंक १००० तक हैं और आगे भी दोसौ के लगभग सिढ़ियां हैं परन्तु उन पर अंक नहीं लिखे गये हैं। इतनी इसकी ऊंचाई है। ४५० सिढ़ियां चढ़ जाने पर बसवन्ना का देवालय आता है। यह नन्दी पिछले चार पांच नंदियों से बड़ा है, यहां एक बड़ा भारी पत्थर था, उसे ही गढ़ २ कर यह बनाया गया है, क्योंकि दूसरे स्थान से गढ़ कर यहां लाना अशक्य था। यह २७ फुट लम्बा, १८ फुट चौड़ा और १५ फुट ऊंचा है। पहाड़ी पर चढ़ कर देवी के दर्शन किये। गर्मी के दिनों में रहने के लिये यह महाराज ने ऊंचे स्थान पर बंगला बनवा रखा है। इन सब को देख कर नीचे उतरा और गौशाला देखी। इसमें कई जाति की २० गायें हैं। इसके बाद हाथीखाना देखने गया। यहां २० हाथी रहते हैं उनमें से ७।८ बाहर चले गये थे। इतना सब देख कर मुकाम पर आकर भोजनादि से निपट दो प्रहर को १८ कचहरियों, नई यूनिवर्सिटि आदि देखने गया। यहां की १८ कचहरियां बंगलौर की भांति रम्य नहीं हैं। इसके बाद कालेज में आया, यहां बीच के होल में विद्यार्थी गण बैठे हुए थे, और श्री० सरोजिनी नायडू का व्याख्यान होरहा था। मि० नायडू का विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती। साथ में उनके पति मि० नायडू और कन्या भी थी। इसके बाद कालेज का होस्टल और नये विश्वविद्यालय की बनती हुई इमारत देखी। हिंदुस्तान की अनेक राजधानियां देखी गई, किन्तु वे मैसोर के समान सुन्दर नहीं हैं। शहर में घनी बस्ती कहीं भी नहीं है, जिधर देखिये उधर ही बँगले, चौड़े २ मार्ग जिनकी लम्बाई कहीं २ सौ फूट तक की है। चारों ओर बिजली के दीपक हैं। चामुंडी की १२०० सिढ़ियों पर भी बिजली के दिये हैं इस कारण रात के समय शहर में से टेकड़ी भी सुन्दर दीखती है।

ता० १० को मैसोर से सवेरे ८ बजे रवाना हुआ उस दिन अर्धोदय पर्व था, और उसका हेतु यह था कि, उस पर्व पर तुंगभद्रा में स्नानार्थ जाना चाहिये, परन्तु वैसा सध न सका। क्योंकि गाड़ी अरसकरी के श्याम के ५ बजे पहुँची और वहां से हरिहर जाने के लिये रात के सिवाय गाड़ीही न थी। मैसूर से अरसकरी तक रेल का यह फाँटा मैसोर सर्कार ने नया ही बनाया है और विगत जनवरी से ही यह खुला है। इस रेल्वे का सारा काम हिन्दुस्तानी इंजिनियरों की देखरेख में हुआ है।

मैसोर से चलने पर पहल स्टेशन बलगोल आता है, यहां से दो मील पर कनभाड़ी नामक एक बड़ा भारी तालाब है। उस का बांध २॥ मील का है। संसार में उससे बड़ा एक ही तालाब सुना है। यह तालाब गाड़ी में से दिखाई देता है। श्याम को अरसकरी उतर कर १० बजे रात को बंगलौर से हरिहर को जानेवाली गाड़ी में बैठ कर दूसरे दिन सवेरे हरिहर पहुँचा।

ता० १० को अगले दिन अर्धोदय होने से यहां बहुत से यात्री आये हुए थे। ज्यों त्यों धर्मशाला में सामान रख कर तुंगभद्रा पर स्नानार्थ गया। तुंगापान और गंगास्नान की कहावत के अनुसार तुंगभद्रा का जल बड़ा ही मीठा है। स्नान से निपट हरिहर के दर्शनार्थ गया। यहां की मूर्ति में हरि और हर दोनों की आकृतियां है। एक हाथ में शंख और दूसरे में चक्र तीसरे में त्रिशूल और चौथा हाथ खाली है। मस्तक पर आधे में किरीट और आधे में जटा है। इस मूर्ति के घुटने तक पाँव नहीं है। कि वे तुंगभद्रा में हैं और गर्मी के दिन में जब नदी का जल सूख जाता है, तब दृष्टिगोचर होते हैं। इसके बाद मुकाम पर आकर भोजनादि से निपट पुनः देवालय में गया, उस समय मूर्ति को वस्त्र आदि पहनाये जाते थे। रात भर यहीं ठहरा।

ता० ११ को मैल से रवाना होकर पूना आया। इस प्रकार इस यात्रा में एक मास व्यतीत हुआ।

अन्योक्तियां।

चन्द्र—कालिमा

चन्द्रमा हरता निशिका शोक।
  हृदय का दे उसको आलोक॥
दिवाकर रम्य रूप सु विशाल।
  मोह लेता तत्क्षण तत्काल॥
गोद में बैठी, निशा सु-शान्ति।
  दिखाती अपनी प्यारी कान्ति॥
प्रेम का जिसमें भरा प्रवाह।
  शान्ति है उसके हृदय अथाह॥
देख अतिरम्य रूप सुविशाल।
  दूर जाता कलंक तत्काल॥

अज्ञान और ज्ञान—

दिव्यालोक हुआ अब सारा मिटा मोह-अज्ञान।
दुःख शोक सब दूर हो गये होने ज्योति प्रदान॥
दृष्टि हीन अज्ञान तिमिर में था न कहीं आलोक।
दुख सरितामें जीवन नैया झायाथा दुख शोक॥
था भी निशा शांति देती थी चन्द्र मनोहर कान्ति।
मिटी हुई थी सारी मन की भेदभाव विभ्रान्ति॥
छुप गई थी अन्धकार में कितनी सुन्दर सृष्टि।
पर अब भी तो क्षणभंगुर है यह है कैसा दृष्टि॥
अन्धकार औ दिव्यज्ञान हैं दोनों एक समान।
मानव तू बन ज्ञानवान ए अह मति मूढ़ महान॥

पं० ...न्द्र हरजुन्दा

डा० सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शिक्षा विषयक कुछ विचार

(लेखकः—श्रीपाद सखाराम गोखले बी० ए, एल-टी.)

विगत जनवरी मास में डा० रवीन्द्रने मैसूर, बंगलौर आदि स्थानों का प्रवास किया था। उस समय श्रीयुत इही० सुब्रह्मण्य अय्यर बी० ए० ने उनसे भेट की थी, और कविश्रेष्ठ के शिक्षा विषयक कुछ विचारों के समझने का भी उन्हें सुयोग प्राप्त हुआ था। उस समय के लिये हुए नोट्स उन्होंने "मैसोर अर्थ शास्त्रीय मासिक" में छपवाये थे। वही विचार आज हम अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लाभार्थ यहां प्रकाशित करते हैं।

(१) विश्वविद्यालय

(१) अध्यापक (प्रोफेसर):—

विश्वविद्यालय के अभ्यासक्रम में विद्यार्थियों को सहायता देने के लिये और विश्वविद्यालय के अन्यान्य फुटकर कार्यों के लिये, परिक्षा के सन्मान और विश्वविद्यालय की पदवियों पर ध्यान देकर 'सहकारी अध्यापकों' की नियति करने से काम चल सकेगा; परन्तु विश्वविद्यालय के मुख्य और श्रेष्ठ प्रति के काम को करने के लिये जो अध्यापक नियत किये जायँ उनका निर्वाचन इस तत्वानुसार करने से बड़ी भूल होगी। इसका कारण स्पष्ट ही है कि सहायकों अपेक्षा अध्यापकों का काम निराला ही होता है। विचारों का परिपोषण करके उन्हें योग्य मार्ग की ओर प्रेरित करने का काम अध्यापक का होता है, और ज्ञानार्जन के काम में वे पथप्रदर्शक और नेता माने जाते हैं, इतने महत्व और जवाबदारी के स्थान के लिये प्रतिभा और स्वतन्त्र बुद्धि हम में है या नहीं—यह बात जिन्होंने विश्वास पूर्वक सिद्ध करके दिखादी हो, उन्हें छोड़ दूसरे को कभी नियत न करना चाहिये। इस प्रकार के प्रतिभा संपन्न और स्वतन्त्र बुद्धि के मनुष्यों को जबावदारी का काम सौंपने से जो उद्दिष्ट साध्य किया जा सकता है, वह वर्तमान पद्धति से बहुधा नहीं हो सकता, यही आज कल के विश्वविद्यालयों में बड़ी भारी कमी है।

कविरत्न रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

(अ) अध्यापकों की नियति इस प्रकार हो:—

भिन्न २ विषयों का अध्ययन और मनन करनेवाले लोग और उत्तम प्रतिभावान लेखक अर्थात् जो मिल सकें—उन्हें जाति, वर्ण और धर्म तक पर ध्यान न देते हुए, बुलवा कर व्याख्यान दिलवाना चाहिये, और उनमें जो सर्वोत्कृष्ट समझे जांय, उन्हें अध्यापक बनाना चाहिये।

(ब) इस प्रकार अध्यापकों का निर्वाचन करते समय ही उनसे एक प्रतिज्ञा करवालेनी चाहिये। वह इस प्रकार कि:—तीन वर्ष के भीतर उन्हें कोई नई कृति निर्माण कर लेनी चाहिये। इसी प्रकार आगे भी प्रति तीन वर्ष की अवधी में अपने मस्तिष्क के द्वारा स्वतन्त्र बुद्धि से हम कुछ आविष्कार कर रहे हैं, इस प्रकार का विश्वास दिलाने योग्य उन्हें कुछ काम कर दिखाना चाहिये।

(क) भिन्न २ विश्वविद्यालय के अध्यापकों की मर्यादित काल तक बदली करने सम्बन्धी अमेरिकन पद्धति यहां प्रचलित कर देना लाभदायक होगा।

अध्यापकों को भरपूर वेतन देना पड़ेगा। किन्तु सब मिलाकर देखने से आज कल की अपेक्षा अधिक सुगम होगा। आज कल की अपेक्षा वेतन जो भी अधिक देना पड़ेगा, तथापि खर्च के अनुसार उसका फल भी कितनेही अंशों में अधिक मिलेगा। आज कल न मालूम कितना भी द्रव्य व्यय होता है, और उसका फल जो मिलना चाहिये वह नहीं मिलता, इसी से वर्तमान पद्धती को अधिक खर्च की अनुचित नहीं है।

(२) विशिष्ट विषयों के ज्ञाता बनने के लिये लोगों का चुनाव.—

विशिष्ट विषयों का अभ्यास करके उसमें प्रवीणता सम्पादन के लिये विश्वविद्यालय में के कुछ विद्यार्थियों का निर्वाचन करने की प्रथा आजकल प्रचलित हो गई है, और कई विद्यार्थी भारत से ... को भेजे जाते हैं। इसीरीति से एतद्देशीय अथवा योरोपियन ... अमेरिकन विश्वविद्यालयों मे विशिष्ट विषयों के पारंगत होने के ... जो विद्यार्थी भेजे जाते हैं, उनमें से कितने ही विद्यार्थियोंने सचमुच अपने श्रम और द्रव्य को उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर दिखाई है। तथापि दूर तक विचार करने पर अधिकांश ऐसे विद्यार्थियोंने आज तक जो काम कर दिखाया है, और जो ज्ञान सम्पादन किया है वह अधिकांश आशा जनक न होकर निराशा ही उत्पन्न करता है। इसके वास्तविक कारण पर विचार किया जाय तो यही कहना पड़ेगा कि, विद्यार्थियों का चुनाव भली भांति नहीं होता। परिक्षा कोई सहज साध्य वस्तु नहीं है। विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ देकर प्राप्त की हुई पदवियों पर अवलम्बित रह कर बैठने से हमारा निर्वाचन हो जायगा, सो बात नहीं है। इसके सिवाय वास्तविक प्रकार यह है कि; ऐसे विद्यार्थियों के गुण और कर्तव्य शीलता की परीक्षा कर सकनेवाले योग्य विद्वानों के द्वारा यह निर्वाचन नहीं होता। स्वतन्त्र बुद्धि से विचार करने की शक्ति जिन अध्यापकों में हो, उनसे विद्यार्थियों का निकट सम्बन्ध होना चाहिये। तभी विद्यार्थियों में सद्गुण हैं या नहीं, और स्वतन्त्र कृति करने की ओर उनकी रुचि है या नहीं, इसकी भली भांति परिक्षा की जा सकती है। विद्यार्थियों के छुपे हुए गुणों की परिक्षा साधारण श्रेणि के व्याख्याताओं (जिन्हें प्रोफेसर कहा जाता है) द्वारा होना अशक्य है। इस की परिक्षा करने के लिये योग्य मनुष्य वही होसकते हैं; जिन्होंने कुछ स्वतन्त्र शोध की है और जो स्वतन्त्र रचना कर सकते हैं।

(अ) विद्यार्थियों को भारत के भिन्न २ स्थानों में घुमा कर विशिष्ट विषयों के अभ्यास के लिये स्वतः साहित्य इकट्ठित करना चाहिये और उसे अधिकृत विज्ञजनों के सन्मुख रखना चाहिये। इस कार्य में विद्यार्थियों को सहायता देने के लिये प्रवासी छात्र वृत्तियाँ स्थापित की जानी चाहिये।

(ब) जो अध्यापक सदा सर्वदा संशोधन करते हों, उन्हें सहायतार्थ कुछ विद्यार्थियों को चुन लेना चाहिये। भिन्न २ वस्तुएँ इकट्ठित कर उन पर पूर्व पक्ष की तय्यारी करना, पुस्तक के भिन्न २ पाठ को विचार पूर्व मनन करना, भिन्न २ वस्तुओं के साम्य को ढूंढ निकालना आदि केवल यंत्रद्वारा होनेवाले काम इन विद्यार्थियों को सौंपे जांय। और इस काम में अध्यापक केवल मार्ग ही दिखाते रहें।

(३) अभ्यास के विषय:—

स्वतन्त्र और शोधक बुद्धि से लिखे हुए ग्रंथ अधिकतर निर्माण नहीं होते, संशोधन का काम भी अधिक नहीं हुआ देता, यही वर्तमान विश्व विद्यालयों की भारी खामी है। कॉलेज के अभ्यासक्रम में नानाविध विषय रक्खे जाते हैं। और विद्यार्थियों को

उन सब विषयों का अभ्यास करना पड़ता है, इस कारण उतने परिश्रम के हिस्से हो जाते हैं, और एक भी विषय पूर्णावस्था को नहीं पहुंच सकता। सभी कुछ अधकचरी हालत में उनके गले में ठूंस दिया जाता है। इस बात की ओर उपरिनिर्दिष्ट कमतरता पहुंचा सारांश रहता है। सर्वसाधारण बातों का ज्ञान प्रदान करने का विलम्ब; प्रवेश परिक्षा तकही होता है। और इसीलिये दूसरे शिक्षाक्रम में अभ्यास के लिये विविध विषय रखने में कोई हानि नहीं। परन्तु विश्व विद्यालय के अभ्यासक्रम में यह ढंग रहना बहुत बुरा है। उच्च शिक्षा क्रम में केवल किसी एकही विषय का विद्यार्थी को अभ्यास करके उसमें प्रवीणता सम्पादन कर पदवी प्राप्त करनी चाहिये। अभ्यास में एक ही विषय रखा जाय और उसमें अब की अपेक्षा विद्यार्थियों को अधिक गुण प्राप्त होसकें, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये। इस प्रकार एक ही विषय का अभ्यास करके पदवी प्राप्त करनेवाला विद्यार्थी आज कल के अधकचरे विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत कुछ श्रेष्ठ भांति का निकलेगा। अपने विषय का उसे अप्रैति ज्ञान होगा और उसमें न्यूनाधिक प्रवेश होने से तद्विषयक उसकी प्रेम वृत्ति भी बढ़ेगी, और उसे वह अपना सा बना कर संशोधन करने की रुचि भी उत्पन्न करलेगा। यदि उसमें स्वतन्त्रबुद्धि हुई, तो उसका की वह उपयोग कर सकेगा। आज कल के पदवीधारियों में इन बातों में से क्या पाया जाता है? अभ्यासक्रम में, इस प्रकार से योग्य परिवर्तन कर देने पर आज कल की अपेक्षा उच्च श्रेणि के पदवीधारी विद्यार्थी विश्वविद्यालय से निकलने लगेंगे, और देश में सच्ची ज्ञान वृद्धी का यही एक उत्तम साधन है।

(४) विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यमः—

विद्यार्थियों की मातृभाषा भारत की प्रमुख भाषाओं में से ही कोई एक होने के कारण मातृभाषा के द्वारा ही शिक्षा दिये जाने का एक साधारण नियम रहे। किन्तु इस नियम का अवलम्ब क्रम २ से हो शास्त्रों की (Science) शिक्षा एकदम ही मातृभाषा में नहीं दीजासकेगी। अत. शिक्षा के माध्यम की दृष्टि से विश्व विद्यालयीन अभ्यासक्रम के विभाग कर देना आवश्यक है। इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, तत्वज्ञान आदि उदात्त वाङ्मय का अभ्यास करने के इच्छुक विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दीजाय। शास्त्रीय विषयों में उत्तीर्णता प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा के द्वारा उन शास्त्रों की शिक्षा दीजाय। उदात्त वाङ्मयात्मक विषय के अभ्यासार्थ आवश्यक पुस्तकों के शीघ्रता से अनुवाद होने चाहिये। धीरे २ दस पंद्रह वर्ष की अवधी में इस प्रकार का विभाग कार्य दूर कर शास्त्रीय विषयों की भी अन्य विषयों के साथ मातृभाषा में ही शिक्षा देने की व्यवस्था कीजाय। दूसरी भाषा के नाते अंग्रेज़ी की शिक्षा सब जगह दीजाय। और शिक्षा क्रम में यह विषय आवश्यक रूप में रखा जाय।

(५) ललित कला:—

ललित कला की शिक्षा व्यवस्था भारत के लिये बड़ी आवश्यक है। भारत वर्ष में वर्तमान प्रचलित अभ्यासक्रम में जिस भाग के विकास होने की बिलकुल सुविधा नहीं है, उसका विकास इसी के द्वारा होगा। आज कल मन का जो विकास हो रहा है, वह अत्यंत दोषयुक्त और राष्ट्रीय जीवन की वृद्धि को रोकनेवाला है।

इस ओर किये जानेवाले प्रयत्नों की प्रथम सिढ़ी विद्वान और अधिकारी व्यक्तियों के नेतृत्व में शास्त्रीय पद्धति पर पदार्थ संग्रहालयों की स्थापना करना है। भारत वर्ष के सब जाति और धर्म के लोगों के जीवन क्रम और संस्कृति का दिग्दर्शन करानेवाली समस्त वस्तुओं को प्राप्त कर एक स्थान पर संग्रहीत किया जाय। इसके बाद संसार के अन्य राष्ट्रों के जीवन क्रम और संस्कृति की निदर्शक वस्तुएं इकट्ठित कर उन स्थानों में रखी जायें। उन वस्तुओं के उद्देश्यानुसार वर्ग विभाग किये जायें। मतलब यह कि उस वस्तु के मूल की कल्पना का अभ्यास केवल अर्थशास्त्र, ऐतिहासिक अथवा मानवजातिशास्त्र की दृष्टि से न होकर नीतिशास्त्र और सौन्दर्यविज्ञानशास्त्र की दृष्टि से हो।

(६) संस्कृत भाषा की शिक्षा:—

बौद्धधर्मीय संस्कृति हिन्दू संस्कृति से बिलकुल विरुद्ध है, इस प्रकार की एक भूल भरी कल्पना हमारे यहां प्रचलित है। वास्तविक रीति से देखने पर आर्य संस्कृति और द्राविड़ संस्कृति की अपेक्षा बौद्ध धर्मीय और हिन्दू संस्कृति का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। संस्कृत वाङ्मय के अभ्यास में बौद्ध और पाली वाङ्मय का समावेश किया जाय। पेहलवी वाङ्मय भी संस्कृत के साथ रखा जाय। वैदिक, पाली और पेहलवी इन तीनों वाङ्मय की संस्कृती की योग्य और सर्वाङ्गीन कल्पना नहीं की जासकेगी।

(७) स्त्रीशिक्षा:—

स्त्री पुरुषों की शिक्षा एकही प्रकार की होना असम्भव है। स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों से निराली ही होनी चाहिये। इसका कारण भी स्पष्ट है कि; स्त्रियों को समाज और मानव जाति सम्बन्धी कुछ विशेष कर्तव्यों को बजाना पड़ता है। प्रत्येक स्त्री को पाकशास्त्र सीखना ही चाहिये; परन्तु केवल पाक कला में सिद्ध होकर तथा गृहव्यवस्थापक होने के सिवाय अन्य किसी प्रकार की महत्वाकांक्षा स्त्रियों को न करना चाहिये, ऐसा मेरे कहने का तात्पर्य नहीं है। विविध शास्त्र और कलाएं सीखने का अधिकार पुरुषों की भांति स्त्रियों को भी है। यही नहीं बरन् पुरुषों की भांति किसी सीमा तक भिन्न २ उद्योगों में भी योग देने का स्त्रियों को अधिकार मिल सकता है। इतना होने पर भी जीवन के अत्यन्त श्रेष्ठ अधिकारों में से विधाताने एक विशिष्ट अधिकार केवल स्त्रियों के ही हिस्से में रख दिया है, इसे अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये। निसर्ग या प्रकृति ने मानव जाति को जो दान दे रखा है, उसमें सब से श्रेष्ठ मनुष्य का 'व्यक्तित्व' है। व्यक्तित्व की रक्षा कर उसका विकास करना मानवजाति का आद्य कर्तव्य है। और इस कर्तव्य को उत्तम रीति पूर्ण करने को यदि कोई सामर्थ्यवान कहा जासकता है, तो वह एक मात्र स्त्री ही है। स्त्रियाँ ही इस काम को अच्छी तरह पूरा कर सकती हैं। इसीलिये भविष्य के 'सच्चे मनुष्यत्व' की रक्षा, वृद्धी और उसका विकास करना, इन सब महत्व के कर्तव्यों को पूरा करने के लिये योग्य और सामर्थ्यबनानेवाली शिक्षा ही सब से प्रथम स्त्रियों को दीजाय। इसी ध्येय के अनुसार शेष अभ्यास क्रम भी निश्चित करना चाहिये। ऐसा न करने से उद्दिष्ट कार्य में सफलता न मिल सकेगी। इस ध्येय को सामने रख कर स्त्री शिक्षा के लिये अभ्यासक्रम निश्चित करना चाहिये। इस प्रकार की शिक्षा मातृभाषा के द्वारा अच्छी तरह दी जासकेगी।

(८) आरंभिक और उच्च शिक्षा

आरंभिक शिक्षा के लिये ही पर्याप्त विचार करने से ऐसा कहना पड़ेगा कि 'एक विषय के बाद दूसरा' इस क्रम से बालकों को शिक्षा देने की प्राचीनपद्धती अच्छी थी। इसका मतलब यह नहीं है कि; भाषा और अंकगणित सीखते रहने की दशा में महिनों या वर्षों तक इतिहास या भूगोल की कुछ भी शिक्षा न दीजाय। मेरे कहने का तात्पर्य इतना ही है कि; भाषा की शिक्षा आरंभ करने पर उस एक ही विषय की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। शिक्षा के समय को छोड़ अन्य समय बाग बगीचे में, मार्ग में या भोजन करते समय अथवा इतरत्र शिक्षक और माता पिता को साधारणतः विदित विषयों पर उनसे बातें करनी चाहिये। संभाषण के द्वारा ही चलते २ उन्हें विविध विषयों से जानकार बना देना चाहिये। शिक्षा के समय अलबत्ता बालक का ध्यान एक ही विषय की ओर आकर्षित किया जाय। बालकों को जो कुछ अभ्यास करना हो वह एक ही विषय का हो। यहां आप प्रश्न करेंगे कि; तब संभाषण के द्वारा विविध विषयों की जानकारी कराने का आशय क्या है? आप के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया जायगा कि, बाल्यावस्था के पश्चात शिक्षाक्रम में लड़कों को जिन अनेक विषयों का अभ्यास करना पड़ता है, उन विषयों की शिक्षा सुलभता से मिल सके। इसीलिये संभाषण द्वारा कराई हुई जानकारी से विद्यार्थियों के मन पुष्ट बनाये जांय। उच्च शिक्षा के भिन्न २ विषयों की शिक्षा उच्च कक्षा या निचले दर्जे में एक ही बार दिये जाने में कोई हानि नहीं है।

इन दोनों शिक्षाक्रम में मातृभाषा के द्वारा ही शिक्षा दी जानी चाहिये। प्राथमिक शिक्षाक्रम में, इसी प्रकार उच्च शिक्षा के लिये निम्न वर्ग में पुस्तकों की संख्या जितनी ही कम रखी जायगी, ठीक होगा। उच्च शिक्षा के बड़े दर्जों के लिये सब विषयों की क्रमिक पुस्तकें मातृभाषा में बड़ी जल्दी से तय्यार होनी चाहिये। आगे समय बिलकुल हानिकर होगा।

(९) सर्व साधारण शिक्षा विषयक कुछ विचार

शिक्षा संबन्धी वृद्धी भीतर से बाहर की होती हुई आनी चाहिये. विकास की यह हानि केवल बौद्धिक अथवा यांत्रिक ही नहीं; बरन्

आत्मिक है। शरीर अथवा मानवीय मन की अपेक्षा आत्मा श्रेष्ठ होने के कारण शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक बनगया है। वैयक्तिक संकीर्णता की शृंखलाएँ तोड़ने का कठिन कार्य एक मात्र शिक्षा को करना पड़ता है।

मन के व्यक्ति-विशिष्ट गुणों के विकास करने मात्र का ध्येय सच्चा न मान लेना चाहिये, वरन् मन के विश्वव्यापी अथवा आध्यात्मिक गुणों का विकास करना ही शिक्षा का सच्चा ध्येय होसकता है। प्राचीन हिन्दू शिक्षा पद्धती का यही विशिष्ट गुण था। *शिक्षा के इस ध्येय को* साध लेने के लिये भारत की समस्त संस्कृति, और संसारभर की शक्य संस्कृतियाँ, प्रत्येक युग और राष्ट्रों में से विश्वव्यापी मन ने जो नानाविध रूप प्रगट किये, वे सब प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थाओं में इकत्रित करने चाहिये। *भिन्न २ संस्कृतियों अथवा धर्मों में* का स्वाभाविक अन्तर दूर करने का प्रयत्न न करते हुए ये सब संस्कृतियाँ इकट्ठी कर लेनी चाहियें। एक रूपता का परिचय कराने में सहायता देना ही शिक्षा का सच्चा ध्येय होना चाहिये। एक रूपता अस्वाभाविक बात है। और एक रूप होने की *बात भी अशक्य ही है। निर्दोष* पाये पर खड़ी कीहुई शिक्षा पद्धति से आध्यात्मिक एकयता पर का अधिकार न गवाँते हुए विविधता का विकास करने के साधन निर्माण होने चाहिये।

भिन्न २ धर्म और संस्कृति के विद्यार्थियों को एक स्थान पर इकत्रित कर उनकी वृद्धी करना, उन्हें एकत्र शिक्षा देना, और इस ढंग से हम सब अध्यात्मिक दृष्टया एकही हैं, इस प्रकार उनमें आत्मिक बन्धुत्व के नाते का परिचय उत्पन्न कराया जाय, तभी वैय्यक्तिक और जाति विषयक विशिष्ट गुणों की स्वच्छंदता पूर्वक पूर्ण वृद्धी करने की उन्हें आज्ञा दीजाय। *इसी कल्पना पर बोलपुर की शिक्षा संस्था स्थापित* की गई है।

(१०) अखिल भारतीय विद्यापीठ

भारतवर्ष के तथा बाहर के अलौकिक बुद्धिमत्तावाले लोग इकत्रित *किये जासकें,* इस प्रकार के प्रत्येक प्रान्त में नहीं तो केवल भारतवर्ष जैसे विस्तीर्ण प्रदेश के किसी एक मध्यवर्ती नगर में एक स्थान की बड़ी ही आवश्यकता है। इस स्थान में लोग काम के समय ही रहें अथवा स्थायी बन कर रहें। जब वे एक दूसरे से बार २ मिलेंगे और अपने पास का ज्ञान भंडार जनता को अर्पण करेंगे, जाति २ और पंथ २ की अन्तर्ज्योति और भिन्न २ धर्म पन्थों की अन्यान्य पूर्व विषमताएँ इस योग से मिट जायँगी, और यह स्थान विश्वज्ञानगंगा का वास्तविक उद्गम बन जायगा। भारत के संस्थानिकों की रक्तवाहिनियों में एकता और विश्वबन्धुत्व के पाये पर स्थापित की हुई प्राचीन आध्यात्मिक आर्य संस्कृति का रक्त बहता रहने के कारण, इस प्रकार के आदर्श विद्यापीठ का महत्व केवल उन्हीं के ध्यान आसकेगा और वे(स्वयं) ही उसे स्थापित कर सकेंगे। *इस प्रकार के विद्यापीठ के योग* से संसार की प्रगति में भारतवर्ष शिक्षा के मार्ग से अच्छा भाग ले सकेगा।

ब्राह्मणहितवर्धिनी सभा बंबई।
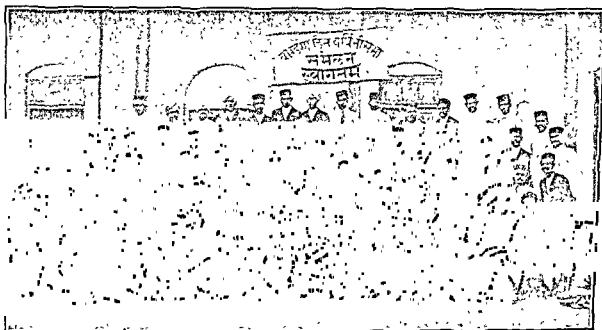
युद्ध के पश्चात् की स्थिति

अमेरिकन व्यापारियों को महायुद्ध के समय व्यापार में बहुत कुछ नफा हुआ; उसमें का कुछ हिस्सा प्र० विल्सन राष्ट्र के लिये काट कर ले रहे हैं। बिचारे अमेरिकन व्यापारी इसमें चूं तक नहीं कर सकते। और इसके विरुद्ध अपने जब में डाले हुए पैसे का हिस्सा प्रेसिडन्ट ले रहे हैं, यह सोते बैठे देखा भी नहीं जाता, इन्हीं दो कारणों से उनमें बड़ी गड़बड़ मच रही है।

—××—

बोलशेविज्म का आद्य गुरु लेनिन जब से सत्ताधारी हुआ है, उसने समाज की *प्राचीन प्रथा* को तोड़ कर रशिया में चारों ओर बड़ी गड़बड़ मचा रक्खी है। मजदूर दल और अन्य लोगों के अलग २ दो विभाग करके जिमींदार, सरदार, सेठ-साहूकार आदि ने मालदारों के विरुद्ध युद्ध पुकारा है।

स्टेन्डर्ड टाइम अथवा प्रमाण काल।

(लेखक—श्री० वैकुंठराय।)

आज इतने दिन से हमारे इस पूना शहर में वसन्त व्याख्यानमाला ती रहने के साथ ही कुर्सी का टिकिट लेने पर भी अनेक व्यवसायोंके रण में एक दिन भी यहां नहीं आसका, इससे मेरे मन को बहुत ा लगा। परन्तु आज न जाने क्या कारण था कि मेरे पाँव उधर की र ही खिंच रहे थे, मैं अपने स्थान पर जाकर देखता हूं, तो इस ला में पुष्प रखने का कौशल्य आज श्रीयुत लक्ष्मण बलवंत भोपटकर स्वीकार किया है। क्योंकि वे उस समय प्रस्ताव कर रहे थे कि; न्दुस्थान की आर्थिक स्थिति पर मैं आज आप के सामने कुछ विवे- न करूंगा। कंपनी सर्कार की स्थापना होने के समय से हिन्दुस्तान के संपत्ति सागर' की क्या दशा होती गई है, इसके स्पष्ट ज्ञान से व्याख्याता अन्तःकरण की क्या चलविचल दशा होरही थी, उसे अपनी मुद- र विचार सरणी और सर्व सुगम मोटी २ संख्या के प्रमाणों द्वारा र्ते स्वरुप प्रदान कर लगभग डेढ़ घंटे तक समस्त श्रोताओं के चित्त ो व्याख्याता ने बिलकुल मुग्ध और गंभीर बना दिया था। यदि यही थिती और कुछ दिन रही तो हमारी और भावी सन्तान की जीवित- नक के समान दशा होजायगी, इसमें किसी भी प्रकार का संदेह हीं है। इस प्रकार के निराशावाद रूपी काले बादलों के अँधेरे से मुक्त ोकर महात्मा गांधी के स्वदेशी व्रत की उपासना से हमें अपने घर ा रास्ता सहज ही मालूम होजायगा, इस प्रकार देशभक्त 'लघाटे' ने ोताओं को धैर्य बँधाया और प्र० देशभक्त श्री० खाडिलकर ने सभा ति के स्थान पर से 'काल की दैविक शक्ति की प्रेरणा से पश्चिम की ओर उदित होनेवाले आशा रूप भास्कर की एक किरण दिखला कर भा विसर्जन की। इतने में रात के नौ बज गये। मैं घर पर आया तो ी हमारे पड़ोसी पंडितजी का अभी भोजन कार्य न निपटा था! ने उनसे पूछा "क्यों पंडितजी, तुम्हारा भोजन तो प्रतिदिन दिये गने से पहले ही होजाता है! आज किस कारण से इतना विलम्ब आ! तीनलट भी तो अभी कोई मस्ता नहीं होगया है।"

पंडितजी—भाई, अजी आज संकष्ट चतुर्थी है, और चन्द्रोदय आज ही देर से होगा। जब से ये नये पंचांग बनने लगे हैं, तब से समय ी बड़ी गड़बड़ मच गई है!

मैं—समय की गड़बड़ कैसी! समय या काल जिस वेग से जाता उसी से वह व्यतीत होता रहेगा। और इन्हें पंचांग क्यों न जाय?

पंडितजी—सो बात नहीं है। परन्तु देखिये कि एक पंचांग में सूर्यो- ा का समय 'बंबई टाइम,' तो दूसरे पंचांगवाले कहते हैं, 'स्टेन्डर्ड इम'। जब मैं पंचांग में यह देखने लगा कि आज चन्द्रोदय कितने ो होगा, तो एक पंचांग में साढ़े नौ बजे और दूसरे में दस बजे, ा है, इसी प्रकार बड़ी गड़बड़ मची हुई है। मैं तो समझता हूं कि सी पचांग में ऐसा भी लिखा हुआ मिलेगा कि; प्रत्यक्ष चन्द्रोदय हो पर भी पंचांग का चन्द्रोदय काल आधा घण्टे अभी शेष रहा है।!!

मैं—पंडितजी! इसमें तो कुछ नहीं, सिर्फ ज्योतिर्गणित की ही बड़ है।

पंडितजी—तो फिर ये सब मोटी २ मोटीवाले पंडित भट्ट और ज्योति- [illegible] हैं, ये सब एक बार इकट्ठे होकर इस सारी गड़बड़ का [illegible] क्यों नहीं कर डालते, कि जिससे फिर हमारे जैसे [illegible] [illegible] का तो संकट दूर हो। जाने दीजिये। परन्तु यह तो समझाइये [illegible] स्टेन्डर्ड टाइम क्या है, यह [illegible] समय है सो मुझे समझाइये। [illegible] टाइम और मद्रास टाइम इन दो के [illegible], मैंने सुने हैं, परन्तु [illegible] तीसरा [illegible] उत्पन्न हुआ है, [illegible] 'स्टेन्डर्ड' शब्द क्या है?

[illegible]—अच्छा समझाता हूं, परन्तु आज तुम्हें फुरसत है कि, इसलिये निवृत्त हो आओ। फिर हम घड़ी भर चांदनी में बैठ कर बातें करेंगे।

पंडितजी—ठीक है। परन्तु संकष्टी का मैं जो व्रत करता हूं, वह किसी इच्छा या कामना से नहीं। कितने ही वर्ष पूर्व मैं एक तीर्थ को गया था, उसी समय लहर में आकर कवि दृष्टि से जो व्रत आरंभ किया सो वह आज तक चालू है। यह भी एक स्वदेशी का ही व्रत है, ऐसा आप को मानना होगा। सारा देश दारिद्र्यमय होरहा है, नई शिक्षा के कारण कितनोंही की बुद्धि इतनी स्वाभिमान शून्य होगई है कि, उन्हें-अपनी जितनी भर वस्तुएँ हैं सब कम टिकाऊ दीखती है, परन्तु निश्चय पूर्वक कोई नई बात बना कर उसे सर्वत्र प्रचलित करने का सामर्थ्य और तेज उसमें नाम को भी नहीं है। ऐसी स्थिति में बुद्धि के दाता जो गणपति हैं वे सब की बुद्धि का मालिन्य धोकर उसमें स्वधर्म का चन्द्रोदय करें। इस प्रकार के 'व्यापक स्वार्थ के लिये ही मैं यह, व्रत करताहूं।

मैं—इसीलिये तो हम तुम्हें पंडितजी कहते हैं। अच्छा तो अब उठिये, देखिये दिशाएँ उज्वल हो उठीं, स्नान कर भोजन कर आइये, मैं भी भोजन कर यहीं आजाताहूं।

कुछ देर के बाद भोजनादि से निपट हम चांदनी में आकर बैठ गये, और पंडितजी ने अपना वही पहला प्रश्न किया कि 'स्टेन्डर्ड टाइम' किसे कहते हैं?

मैं—ठीक है, सुनिये। पिछली बार मैं तुम्हें समझा चुका हूं, कि पृथ्वी गोल है। सो यह पृथ्वी एक कल्पित ध्रुव के चारों ओर अपनी नित्य की गति से पश्चिम की ओर से पूर्व को २४ घण्टे में एक बार अर्थात् २४ घण्टे में ३६० अंश घूम जाती है।

इसीसे सूर्योदय, सूर्यास्त आदि बातें सब स्थानों पर एक ही समय नहीं होसकती। जो स्थान एक ही रेखांश पर होते हैं, अर्थात् जिनमें पूर्व पश्चिम अन्तर ० होता है, वहां पर अलबत्ता ये सब बातें एक ही समय होती हैं। पूर्व की ओर के स्थानों में पश्चिमीय स्थानों से पहले सूर्योदय होता है। पृथ्वी एक घण्टे में पंद्रह अंश अपनी धुरी के आस- पास घूमती है। इसीलिये जिन स्थानों में १५ अंश का अन्तर हो ऐसे स्थानों में सूर्योदय एक घण्टे के अन्तर से होगा। मद्रास शहर बंबई से पूर्व की ओर लगभग ७॥ अंश पर है। इसीलिये मद्रास में सूर्योदय होजाने के आधा घण्टे बाद बंबई में सूर्योदय होगा।

उत्तर, दक्षिण और ख्वस्तिक (मस्तक-परका बिन्दु) के बीच निकलनेवाले वृत्त को 'याम्योत्तर' वृत्त कहते हैं। किसी भी स्थान में इस वृत्त पर जब सूर्य आता है, उस समय मध्यान्ह होता है। अर्थात् ऐसा मान लिया जाय कि उस स्थान पर की घड़ी में बारह बजेंगे।

एक याम्योत्तर वृत्त पर जितने स्थान होते हैं, वहां एक ही समय मध्यान्ह होता है। दो स्थानों के बीच पूर्व पश्चिम अंतर १ अंश होगा (पृथ्वी १ अंश ४ मिनिट में घूमती है, इसलिये) उन स्थानों के मध्यान्ह में चार मिनिट का अन्तर पड़ेगा। पूना शहर बम्बई से पूर्व की ओर १ अंश पर है, अतः पूने में मध्यान्ह सूर्य आजाने के ४ मिनिट बाद बम्बई में मध्यान्ह होगा। मद्रास बम्बई से पूर्व की ओर ७॥ अंश पर है, अतः मद्रास में मध्यान्ह हो जाने के आधा घंटा बाद बम्बई में होगा। अर्थात् जब बम्बई में १२ बजेंगे, उस समय पूने में १२ बज कर ४ मिनिट और मद्रास में साढ़े बारा बज जावेंगे। इसी भांति [illegible] देश की राजधानी [illegible] शहर में [illegible] समय [illegible] ही बजे होंगे, और [illegible] सदा [illegible] पश्चिम में होने से वहां क्रमशः सवेरे के [illegible] और ४ बज कर ३१ मिनिट हुए होंगे। पंडितजी! स्टेन्डर्ड टाइम क्या है सो अब मैं समझाता हूं, [illegible] में तो [illegible]

पंडितजी:—वाह, खूब कही । मैं तो बड़े ध्यान से सुन रहा हूं। परन्तु विचार यह करता हूं कि, आप जो कुछ कह रहे हैं, वह बात हम ३१ करोड़ लोगों के लिये कितनी समझने जैसी होकर भी समझ में क्यों न आई होगी।

मैं:—अजी पहले तुमतो समझलो ! लोग भी विचारे क्या करें ? आज कल तो पेट का प्रश्न ही ऐसा विकट बन बैठा है कि, उसके आगे लोगों को इन बातों के समझने को समय ही नहीं मिलता, और न किसी समझानेवाले को ही फुर्सत् है । अस्तु ।

पंडित—अच्छा तो चलने दीजिये—आपने अब तक जो कुछ कहा उस पर से मुझे इतना समझ में आ गया है कि; भिन्न २ स्थान पर घड़ियों में समय जुदा २ होता है, क्यों यही न ?

मैं:—हां, बहुत ठीक कह रहे हो । इस समय को 'निजकाल' अथवा स्थानिक काल कहते हैं। हमें यदि किसी स्थान का अक्षांश मालूम होतो वहां का 'निजकाल' हम कह सकेंगे।

कल्पना कीजिये कि; ह्विएना का पूर्व रेखांश १५ अंश है। अर्थात् बम्बई से पश्चिम की ओर वह ५८ अंश के अन्तर पर है । अब यदि बम्बई में १२ बजे हों तो वहां प्रातःकाल के ८ बज कर ८१ मिनिट हुए होंगे, और इसके विरुद्ध यदि किसी स्थान का निजकाल हमें ज्ञात होतो हम वहां का रेखांश निकाल सकेंगे। उदाहरणार्थ बम्बई में जब दो पहर के दो बजते हैं, उस समय दूसरे एक स्थान पर सवेरे के साढ़े दस बजते हैं, तब बतलाओ वह स्थान कितने रेखांश पर होगा ? जब कि दिया हुआ निज काल बम्बई के समय से पीछे का है, तो वह स्थान बम्बई से पश्चिम की ओर होना चाहिये। इन दोनों टाइम में ३॥ घंटे का अंतर है इसलिये प्रति घंटा १५ अंश के हिसाब से वह स्थान १५ × ३॥=५२॥ अंश पर बम्बई से पश्चिम की ओर होना चाहिये। बंबई का रेखांश पश्चिम ७३ है। इसलिये इस स्थान का रेखांश ७३-५२॥=२०॥ होना है। पेट्रोग्रेड (सेन्टपीटर्स बर्ग) ३१ वे पश्चिम रेखांश पर है।

अब पृथ्वी पर के मुख्य २ शहरों की सार्वजनिक घड़ियां, वहां के स्थानिक काल से मिली हुई होती है, उस समय एक बड़ी मजे की बात होती है।

(भिन्न २ मुख्य शहरोंका स्टैन्डर्ड टाइम बतलानेवाली एक घड़ी दिखाई है।)

मान लीजिये कि बम्बई का एक मनुष्य पूने में आया उस समय उसके जेब में की घड़ी में १२ बजे हैं, परन्तु पूना की घड़ी में उसे बारा बज कर ४ मिनिट दिखाई देंगे, और वह अपनी इस शंका से कि कदाचित मेरी घड़ी पीछे रह गई हो ४ मिनिट बढ़ा देगा । वहां से आगे बढ़ कर वह यदि मद्रास को गया तो वहां उसके जेब में की घड़ी में जब १२ बजे होंगे, तो मद्रास की घड़ी में उसे १२—२६ मिनिट दिखाई देंगे, और वह पहले की तरह फिर अपनी घड़ी को २६ मिनिट आगे कर देगा । इस प्रकार बम्बई से हम ज्यों २ पूर्व की ओर बढ़ते जावेंगे, त्यों हमें घड़ी को आगे बढ़ानी पड़ेगी, और इसके विरुद्ध बम्बई से पश्चिम की ओर जाने पर घड़ी के कांटे पीछे हटाने पड़ेंगे। [illegible] स्थानिक कालानुसार [illegible] पूर्व की ओर जानेवाले मनुष्य को [illegible] घड़ी के समयानुसार [illegible] पूरे करेंगे, [illegible] और

पश्चिम से पूर्व की ओर आने पर जाने पर ठीक ? बम्बई से ठीक दो बजे दोपहर को यदि किसीने पैरिस तार यह वहां क्षणभर में पहुँच सकेगा, परन्तु वहां उस समय कितने होंगे, आप जानते हैं ? वहां सवेरे के ६ बज कर ४४ मिनिट कहिये कैसी गम्मत है । मतलब यह कि भिन्न २ बड़े स्थानिक काल दिखानेवाली घड़ियों के समय पर ही काम काज लगें; तो केवल घोटाला ही न होगा वरन् रेलगाड़ियों के [illegible] का मेल न मिलने पर अनर्थकारी दुर्घटना हो जाने की [illegible] बना रहेगी।

इस आपत्ति से मुक्त होने के लिये सब राष्ट्रोंने मिलकर घड़ियों के मिलाने की एक नई ही पद्धति निकाली है । उन भूगोल पर के एक दूसरे से १५ अंश के अन्तर पर २४ मुख्य वृत्तों की कल्पना की है। इंग्लैण्ड में लंदन शहर के निकट ग्री[नि]च की जो वेधशाला है, उस पर निकलनेवाला याम्योत्तर वृत्त ऐसा सर्वासम्मति से ठहराया गया। ग्रीनिच का रेखांश भी ० है। ग्रीनिच के पश्चिम ७॥ अंश और पूर्व की ओर ७॥ अंश १५ अंश के इस 'पहिले मण्डल' अर्थात् पट्टी में ग्रीनिच के अनुसार सब घड़ियां मिलाई जांय। इस मण्डल में की सारी घड़ियों एक ही प्रकार का टाइम पड़ेगा। उस मण्डल से लगे पूर्व की ओर के १५ अंश पर [दू]सरे मण्डल' में सब स्थानों घड़ियां एक घंटा आगे हों इसी प्रकार पहले मण्डल पश्चिम ओर के प्रथम मण्डल घड़ियां १ घंटा पीछे हों। उस स्थान का निजकाल हो। नित्य व्यवहार [illegible] का समय इस नई पद्धति निश्चित किया रहता है। [इस] प्रकार मिलाई हुई घड़ियां [स्टै]न्डर्ड टाइम' अथवा [प्रमाण] काल' या प्रमित काल [कहते] हैं। यह टाइम विषसित के लिये पर्याप्त 'प्रमाण' पड़ता है। अर्थात् इस प्रकार एक ही समय भिन्न २४ [मण्डलों] की घड़ियों में भिन्न २ टाइम दिखाई देंगे, यही [नहीं] वरन् किसी भी [दो] २ मण्डल की घड़ियों के [टाइम] में कुछ पूरे घंटों का [ही अन्तर] दिखाई देगा। किन्तु मिनिट [और] सेकण्ड सब घड़ियों में [एक से] होंगे। इस काम के लिये बस्ता ये मण्डल ही कारण भूल चल सकते हैं।

इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड और आयर्लैण्ड अर्थात् ब्रिटिश द्वीप [illegible] और हालैण्ड इन देशों में ग्रीनिच का ही 'प्रमाणकाल' है। जर्मनी, इटली, स्वीडन और स्वीजरलैण्ड का '[illegible]' टाइम से एक घंटा आगे का होगा। 'जापान का प्रमाण काल' ग्री[निच से] आगे ९ घंटे होगा।

परन्तु अमेरिका के कनाडा और संयुक्त राज्यों का [illegible] भारी है कि, उस सारे मण्डल के लिये एक ही 'प्रमाणकाल' असुविधाजनक जान पड़ने से उनके चार विभाग करके भिन्न २ प्रमाण काल प्रचलित किये गये। उनके नाम पूर्व (प्रमाण) काल, [illegible] (प्रमाण) काल, पहाड़ी काल (पहाड़ी मुल्कों में प्रचलित [illegible]) और पैसिफिक (प्रमाण) काल हैं। ये ४ काल' अर्थात् स्टैन्डर्ड टाइम ग्रीनिच से क्रमशः [illegible] घंटे हैं।

हमारे देश में ई० स० ११०५ तक सारे मुल्क में [illegible] टाइम 'प्रचलित था। केवल रेलगाड़ियों पर मद्रास 'प्रमाण काल' प्रचलित था। परन्तु सन ११०५ में भारत [illegible]

उन्नीसवीं बम्बई प्रांतिक परिषद।

अहमदनगर १९१९

परिषद के सभापति बे० बेप्टिस्टा, कार्यकर्ता गण और स्वयंसेवक।

यह परिषद ता० २४ और २५ अप्रैल १९१९ को अहमदनगर में बेरिस्टर बेप्टिस्टा के सभापतित्व में हुई थी। स्वागत समिति के [स]भापति रावबहादुर चितले और परिषद के सभापति बे० बेप्टिस्टा के भाषणों में रौलेट बिल का बलपूर्वक निषेध किया गया था। बे० बेप्टिस्टाने ने 'आपण ही' मैं मराठा हूँ' इस बात को प्रगट कर सत्याग्रह और बहिष्कार का सविस्तार और मार्मिक विवेचन किया।

न्यू पूना कॉलेज का द्वितीय वार्षिक सम्मेलन १९१९.

इस बार के सम्मेलन में खेले हुए नाटक में काम करनेवाली मण्डली।

ईस्ट इंडिया कंपनी का कारोबार और पार्लमेन्ट ।

(लेखकः—श्रीयुत दत्तात्रय विष्णु आपटे बी॰ ए०)

भारतवर्ष में ईस्ट इण्डिया कंपनी का कारोबार ई०सन१६००से १८५८ तक अर्थात् बराबर ढाई सौ वर्ष तक चलता रहा । आरम्भ में सूरत, मछलीपट्टन, हुगली आदि बन्दर स्थानों में कोठिया स्थापित कर व्यापार बढ़ाते २ अंग्रेजी कंपनीने राज्य कारोबार में हाथ डाला । पहली बार यह हाथ व्यापार सम्हालने के लिये डालागया था, किन्तु धीरे २ व्यापारी स्वरूप बदल कर सन १८३२ के लगभग कंपनी पूर्णतया राजकीय बन गई । कंपनी को अपने व्यवहार में बहुत लाभ होने लगा । इसीसे इँग्लैण्ड के अन्य लोग (और राज भी) मत्सरग्रस्त होकर कंपनी के अधिकार अनेकानेक कारणों को बतलाते हुए संकुचित कर अपना पैर आगे बढ़ाने लगे । परिणाम यह हुआ कि सन १८५८ में हिन्दुस्तान की सत्ता कंपनी के हाथ में से पूरी२ लेकर इँग्लैण्ड के राजा स्वय उसके अधिकारी बनगये ।

कम्पनी का अधिकार संपुष्ट होकर राजा की सत्ता जब बढ़ती चली, तो ब्रिटिश पार्लमेन्ट के सन्मुख भारत का प्रश्न बारम्बार उपस्थित होने लगा । कौनसा ध्येय न्याय का और कौन अन्याय का है, अथवा किस ढंग से अंग्रेजी राष्ट्र का लाभ होगा और किस ढंग से हानि, इसका निर्णय करते समय पार्लमेन्टमें भारी वाद विवाद होने लगे । हिन्दुस्तान सम्बन्धी पार्लमेन्ट के इस वादविवाद का वर्णन पढ़ते समय हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि; उस पर से कोई भी सिद्धान्त निश्चय करना ठीक २ नहीं हो सकता । पार्लमेन्ट नाम पर से तो यह संस्था किसीएक निश्चित ध्येय के अनुसार चलनेवाली होगी, ऐसा सर्वसाधारण को भास हो सकने का सम्भव है, किन्तु यह भास होना भ्रममूलक है । शास्त्रीय संशोधन के लिये स्थापित की हुई संस्थाओं की चर्चा में बहुत कुछ स्थिरता होती है, और प्राचीन संशोधकोंने जो कुछ खोज की होगी, उसे ही अधिकतर मान्य करके नया संशोधक आगे पैर बढ़ाया करता है । परन्तु पार्लमेन्ट की स्थिति ऐसी नहीं है । यह अतिशय चंचल स्वरूप की है । उसके सभासद पांच सात वर्षमें ही बदलकर नये निर्वाचित होते हैं । इस कारण ज्योंही एक वर्ष हिंदुस्तान की परिस्थितिके जानकार चार पांच सभासद पार्लमेन्ट में होने से लोगों के कान पर हमारे देश का नाम बारम्बार पड़ता था, तो अगले ही वर्ष नयानियोंचन होकर कम्पनी की ओर बोलनेवाले सभासदों के सिवाय उसमें भारत की ओर का जानकार कोई भी न रह पाता । इसमें रुकावट डालने का प्रयत्न कभी २ स्वयं इँग्लैण्ड के राजा की ओर से भी होता था । क्योंकि इँग्लैण्ड के व्यवहार में पार्लमेन्ट के मत की प्रबलता जो भी मान्य की जाती; तो भी अठारहवीं शताब्दि में अंग्रेजी राजाओं को साम्राज्य विषयक व्यवहार में उठापटकी करने का बहुत कुछ मौका मिलता था । सारांश कम्पनी के नौकर, पार्लमेन्ट के सभासद अंग्रेजी राजा और भारत की परिस्थिति, ये सब ही उस समय अत्यन्त चंचल स्वरूप के होने से कम्पनी का व्यवहार और पार्लमेन्ट के इस विषय का वादविवाद प्रत्येक बार भिन्न २ स्वरूप का हुआ करता था ।

आज हम अठारहवीं शताब्दि के उत्तरार्धवाली भारत की परिस्थिति पर विचार करनेवाले हैं । औरंगजेब की कारकीर्दगी में कम्पनीने बड़ी विनय प्रारम्भ करके व्यापार की आज्ञा प्राप्त की थी; और उससे लाभ उठाकर स्थान २ पर कम्पनीने व्यापार का ढंग जमाने की दूकान की । उसने निश्चय किया था कि, इस ढंग को ठीक २ जमाकर अधिकाधिक लाभ उठा जाय । इस काम में फ्रेञ्च लोगों से बड़ा झगड़ा हो जाने के कारण और अंग्रेजी राजकर्ताओं का फ्रेंचों के मिटाने का सरकारी परम्परागत ध्येय होने से कम्पनी और अंग्रेजी प्रधान मंडल में पटनी नयी । क्योंकि कम्पनी को इतनीसी ही राजनैतिक उठा रखी करने की आवश्यकता जान पड़ती थी । योरोप में इँग्लैण्ड और फ्रान्स के बीच अनबन होतेही भारतवर्ष में इन्हीं दो राष्ट्रों की व्यापारी कम्पनियाँ एक दूसरे पर टूट पड़ती; और परस्पर एक दूसरे को गिराने के लिये भारत के देशी राज्यों के दर्बार में अपनी तुक लगाने का मौका देखा करती । उन दिनों भारत के राजा लोग यादवी युद्ध में निमग्न होने के कारण, उन्हें योरोपीय यादवी से बराबरी करना लाभप्रद जान पड़ा, और इस प्रकार योरोपियन कम्पनियां देशी राजकारोबार में दखल देने लगीं ।

कई दिनों तक कम्पनी के संचालकों ने केवल व्यापार पर ही दृष्टि रख कर देशी राजाओं के झगड़े में न पड़ने का प्रयत्न किया था, इसका कारण कम्पनी के स्वामियों का अशास्त्रज्ञ होना मात्र है । उन्हें जान पड़ता था कि हमारा व्यापार राजनीति की सहायता के बिना ही सरलता से चल सकेगा; और राजनीति तथा व्यापार का अलग रख सकना सम्भव है, परन्तु उनकी यह समझ भूल भरी थी । व्यापार बढ़ो हो अथवा, धर्म प्रसार किंवा शास्त्र संशोधन या देशोन्नति हो, प्रत्येक सामाजिक व्यवहार को सरलता और उत्तमता से चलाने के लिये सब से पहले राज्ययन्त्र उन महात्वाकांक्षी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के हाथ में होना चाहिये । गुरुनानक, मुहम्मद खिस्त आदि धर्म संस्थापकों का हेतु प्रथमतः शुद्ध धार्मिक स्वरुप का था । परन्तु उनकी शिक्षा का पर्यवसान राजनीति में हो गया, यह संसार का अनुभव है । जब पारलौकिक हेतु से व्यवहार करनेवाले संन्यासी की यह दशा हो, तब ऐहिक व्यवहार करने की इच्छा रखनेवाली कम्पनी की दशा कैसी हो सकती है, इसके लिये अलग विवेचन करने की आवश्यकता नहीं । आकाश से पानी गिरने ही जिस प्रकार वह समुद्र में ही जाकर मिलता है, उसी प्रकार मनुष्य के मस्तिष्कसे कोई अच्छी, धैर्य और व्यवहारिक काम करने की बुद्धि उत्पन्न हुई कि, फिर थोड़े बहुत समय के बाद राज्ययन्त्र स्वाधीन किये बिना उसका काम ही नहीं चल सकता ।

अर्काट का नवाब मुहम्मद अली ।

इसी न्यायवश अनुसरण कर कम्पनी भी अनजानी राजनीति के समुद्र में बहने लगी । तब कम्पनी के संचालकों को अपने दिशाभूल होजानेकी पुकार मचाने का कईबार विचार हुआ, किन्तु अंत को उसे विश्वास हो गया कि बिना राजनीति का आश्रय लिये अपना ढंग न जमेगा । इसके बाद यह गड़बड़ मची कि यह हाथ डालना भी परिमित और काम निकालने जितना ही हो, और किनारा छोड़ कर इस राजनीति के समुद्र में हमें व्यर्थ ही तैरते रहने की इच्छा न करनी चाहिये । इसीकारण अर्थ केवल स्वसंरक्षण के लिये कम्पनी को युद्ध में पड़ना और आगे के लिये किसी से भी स्थायी संधि न करना था परन्तु सृष्टि नियम के विरुद्ध कम्पनी भी कैसे और कितने दिन चल सकती थी ? प्रतिदिन अपना पांव आगे बढ़ाना चाहिये, ऐसा कहनेवाले कर्णधारों के आधीन की हुई नौका को उन्हीं लहरों में बहा कर उनको सीधा समुद्र में डाल ही तो दी ।

उदाहरणार्थ:—अर्काट के नवाब मुहम्मद अली के साथ किया हुआ, कम्पनी का व्यवहार देखना चाहिये । इस नवाब को गद्दी के लिये कम्पनीने भारत में फ्रेंचों से युद्ध किया, और उसे सिंहासन पर बिठाने के लिये बहुतसा रुपया और मनुष्य बल भी व्यय किया । और काम बन जाने पर कर्ज की वसूली के लिये इसके कारोबार की देखरेख रखने और इसके साथ विभाग को अपने हाथ में लेने की युक्ति

उन्नीसवीं बम्बई प्रांतिक परिषद।

अहमदनगर १९१९

परिषद के सभापति बे० बेप्टिस्टा, कार्यकर्ता गण और स्वयंसेवक ।

यह परिषद ता० २४ और २५ अप्रैल १९१९ को अहमदनगर में बेरिष्टर बेप्टिस्टा के सभापतित्व में हुई थ
सभापति रायबहादुर चितले और परिषद के सभापति बे० बेप्टिस्टा के भाषणों में रौलेट बिल का बलपूर्वक निषेध किय
अपने भाषण में 'मैं मराठा हूं' इस बात को प्रगट कर सत्याग्रह और बहिष्कार का सविस्तार और मार्मिक विवेचन क

न्यू पूना कॉलेज का द्वितीय वार्षिक सम्मेलन

चिंता।

(लेखक—श्री० मदारीलाल गुप्त।)

(१)

धन धान्य से मेरा ग्रह परिपूर्ण है। अनेक दासदासियां नौकर हैं। मुझे स्वयं किंचित मात्र भी शारीरिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता। कहीं भूमि पर मैं पग भर भी नहीं चलाता। जिस वस्तु की मैं जिस समय इच्छा करता हूं, वह मुझे तत्क्षण प्राप्त होजाती है। इतना सब तो है पर मुझे कुछ ऐसा मालूम पड़ता है कि, मुझे किसी प्रकार की चिन्ता है। यद्यपि मैं जान नहीं सकता कि मुझे किस बात की चिन्ता है, तथापि चिन्ता है अवश्य। यदि मुझे मेरी चिंता अवगत होजाय तो वह मेरे चुटकी बजातेही दूर होजायगी, इस बात का मुझे पक्का निश्चय है। पर बड़ी कठिनता की बात तो यह है कि वह मुझे विदित ही नहीं होती। रह २ कर मेरा मन घबड़ा उठता है। ऐसा मालूम पड़ता है मानों मैं कोई कार्य करना भूल गया हूं। बहुत परिश्रम करने पर भी मुझे मेरी चिन्ता का कारण नहीं विदित होता कि मैं क्या भूल गया हूं। मेरे यहां सर्व सुख की सामग्रियां हाथ जोड़े प्रस्तुत हैं। पर उस रोग की क्या दवा कीजाय जो मुझे मालूमही नहीं।

कभी २ मैं बड़ी दूर तक की सोचने लगताहूं। मेरे सन्मुख एक अपूर्व दृश्य आकर उपस्थित होजाता है। मैं राजा तो नहीं हूं पर ऐसा सोचने लगताहूं कि मैं किसी स्वर्ण जड़ित सिंहासन पर बैठा हूं। मेरे सन्मुख सर्दारगण कर जोड़े खड़े हैं। मैं किसी को मालदार बना देता हूं, तो किसी को कंगाल कर देताहूं। यदि मेरी इच्छा होगई तो मैं किसी को फांसी पर लटकवा देताहूं या नहीं तो फांसी पर चढ़ते हुए को धन मान देकर छोड़ देता हूं। उस समय मैं ईश्वर की आस्तित्वता को बिलकुलही भूल जाताहूं। अपने को ही ईश्वर समझने लगताहूं। पर यकायक मेरा यह सुखकारक दृश्य मेरे सामने से लोप होजाता है। फिर वही चिन्ता घेर लेती है। मैं उसके जानने के लिये सैकड़ों उपाय करताहूं, पर हजार सिर मारने पर भी स्मरण में नहीं आता कि मैं किस चिन्ता में मग्न हूं। मैं क्या करना भूल गया हूं।

(२)

मेरा ब्याह तो होगया है पर मैं अपनी स्त्री को घर नहीं लाया। इस बात एक कारण है। लोगों ने मेरा कान यह कहकर भर दिया है कि, मेरी स्त्री बड़ी कुरूपा है। वह काली है कलूटी है, इत्यादि बातें मुझे उसके विषय में मालूम हुई हैं। मेरा ब्याह जब मेरी अवस्था दश वर्ष की थी तभी होगया था। इस समय मैं तीस वर्ष का हूं, पर इन्हीं लोगों के कहने से मैं अपनी स्त्री को नहीं लाया, भला मैं इतना धनवान होकर कुरूपा स्त्री को क्यों लाने लगा।

आज से कई दिन पूर्व मेरा संसर्ग एक युवक से हुआ था। ईश्वर जाने क्यों मेरा चित्त उसके देखने से कुछ शांत होगया। मुझे उस समय ऐसा मालूम हुआ मानों बड़ा भारी बोझ मेरे सिर से उतर गया है। वह मुझे कई दिनों से नहीं मिला। उसका सुन्दर मुख प्रत्येक समय मेरी आंखों के सामने घूमता रहता है। उसकी सुन्दर मृग के समान बड़ी २ चमकीली आंखें मुझे शांति प्रदान करती हैं। अब तो मैं उसी युवक के ढूंढने में लग गया हूं। मेरी भीतरी चिन्ता मुझे भूल गई है। एक दिन उसने मुझ से कहा था कि मैं तुम्हें प्यारकाहूं, मैं तुम्हें हृदय से प्यार करता हूं-यही बात मेरे कानों में बार २ गूंजती है। उसने ऐसी सरलता से ये वाक्य कहे थे कि मुझे उसके कथन में लेश मात्र भेद होनेका भी संदेह न हुआ था। उसने यह भी कहा था कि यदि ईश्वर चाहेगा तो हम तुम सर्वदा एक संग रहेंगे। वह यकायक न मालूम क्यों गुम होगया। बहुधा वह मुझे प्रकृति के दृश्यों की छटा समझा २ कर कहा करता था। भांति की बहुतसी बातें समझाया करता था, पर मैं उसकी बातें तो बिलकुल समझाही न था। मैं सुनता था तो उस की सुरीली आवाज़। जब कभी वह हंसता तो बहुतही अच्छा मालूम पड़ता था। वह बहुधा मुझे अपनी तरफ एकटक देखने पर कहा करता था कि, मेरी तरफ क्या देखते हो। जो कुछ मैं कहता हूं वह सत्य है। एक पल के लिये मैं आंखें हटाने लगता पर फिर उसकी बांकी सूरत। मुझे इस बात पर बड़ा दुःख है कि वह मुझे कई दिनों से नहीं मिला।

(३)

एक दिन दोपहर को जब मैं अपने कमरे में आराम कुर्सी पर बैठा था, एक नौकर ने आकर कहा कि एक स्त्री आप से मिलाना चाहती है। मैंने उससे उसे भीतर बुला लाने के लिये कहा। आने पर वह मुझसे बड़ी नम्रता से बोली "क्या आपको दासीकी आवश्यकता है!" मुझे ऐसा मालूम हुआ मानों मैंने इस तरह की आवाज कहीं सुनी है? मैं मन ही मन सोचने लगा। उसने कहा आप क्या सोच रहे हैं, यदि आवश्यकता न हो तो आज्ञा दीजिये;मैं जाऊं। उसकी आवाज में जादू का सा असर था। मैं उसे नाहीं न कर सका। वह घूंघट काढ़े थी इससे मैं उसका मुंह न देख सका। मैंने पूछा "तुम्हारा क्या नाम है।" उसने धीमे; पर मधुर आवाज से कहा "कमल"।

ठीक यही नाम मुझे उस सुन्दर युवक ने बतलाया था। मैंने दोनों की आवाजों का मिलान किया। बिलकुल मिलतीथी। थोड़ा भी अन्तर न था। मैं फिर विचार में मग्न होगया। अब की बार रमणी ने बाहर जाने का भाव दिखलाया। मैं चिल्ला उठा, "ठहरो २ मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।" रमणी ने अपना घूंघट हटाकर मुस्कुराते हुए पूछा "कितना वेतन मिलेगा।" मैं रूप देख कर और भी घबराहट में पड़ा ठीक वही सूरत। वही चेहरा। जैसा मुखकमल मेरे कमल का था ठीक वसाही इस कमल का है। उसकी मुस्कुराहट से सारा कमरा खिल उठा। एक बिजली सी चारों ओर फैल गई। मैंने कांपती हुई आवाज़ से पूछा "तुम कौन कमल हो?—"अब की वह खिलखिला कर हंस पड़ी। सारे कमरे में मधुर हंसी गूंज गई। मैंने एक तस्वीर को देखा। मालूम पड़ा वह हंस रही है। दूसरी तस्वीर को देखा वह भी हंस रही थी। खिड़की से बाहर की ओर दृष्टि की। मालूम हुआ वृक्षों के पत्ते भी हंस रहे हैं। उनकी टहनियां भी हंस रहीं हैं। मुझे सब हंसते ही दृष्टिगोचर होने लगे। केवल मैं भर उस समय हंसमुख न था। रमणी ने कहा "मैं तीनों कमल हूं।" दो कमल तो मैं जानता था, पर यह तीसरा कमल कौन है, यह न जान सका। मैंने उत्सुकता से पूछा तीसरा कमल कौनसा है, इस समय उसका चेहरा फीका पड़ गया। चेहरा फीका पड़ने से पाठक यह समझलें कि उसकी सुन्दरता में कमी आगई थी। नहीं वरन् वह पहिले से दुगनी सुन्दर मालूम पड़ने लगी। उसने बड़ी नम्रता से कहा "तो क्या तुम सचमुच ही तीसरे कमल को नहीं जानते?—"मैं कुछ न बोला। उसने सांस लेकर फिर कहा "तीसरी कमल तुम्हारी ब्याही हुई तुम्हारी स्त्री है।" उसके सुन्दर मुख पर लज्जा शोभा पाने लगी।

कमल को पूरा विश्वास था कि, यदि वह अपने पति के सन्मुख प्रगट होजायगी तो वे उसे अपना लेंगे। लोगों ने जो उनका कान धन घसीटने के लोभ से दिया है वह सब भ्रम दूर होजायगा। कमल एक कोने में जाकर घूंघट निकाल कर बैठ गई। मुझे अपने बहकाने वालों पर उस समय बड़ा क्रोध आया। मैं दांत पीसता हुआ कमरे के बाहर चला आया।

(४

मैं अपनी स्त्री को पाकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। एक दिन मैंने उससे अपनी चिन्ता का कारण पूछा। मैंने कहा "मेरे मन में कुछ घबराहट सी मालूम पड़ती है, मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि मैं कुछ करना भूल गया हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मुझे मेरा भूला हुआ कार्य बतला कर मेरी चिन्ता दूर करोगी। आज यही साच कर मैंने तुम से अपनी भीतरी चिन्ता का कारण पूछा भी है। सच तो यह है कि मेरी कुछ चिन्ता तुम्हारे देखने मात्र ही से दूर हो जाती है।"

मेरी स्त्री ने कहा-"मैं तुम्हारी चिन्ता का कारण समझ गई।" मैंने कहा-"क्या समझ गई हो! बतलाओ क्या कारण है!"

कमल—"अच्छा कहो। ईश्वर ने यह सृष्टि किस लिये रची है?"

मैं—"मैं तुम्हारे प्रश्न का अर्थ भी नहीं समझ सका। तुम्हारा क्या अभिप्राय है!"

हटो हालैंण्ड का समाधान ऐसी बातों से क्यों होने लगा? उसने तत्कालही तो कम्पनी के लोगों पर इंग्लैण्ड के राजा के अधिकार की बेअदबी करने का आरोप लगाकर, और इस बात से भी सूचित किया कि राजा के अधिकारों की भांति इंग्लैण्ड में प्रजा के भी अधिकार हैं।

इस लिखा पढ़ी का यह परिणाम हुआ कि, हैदर को कम्पनी की ओर से सहायता नहीं मिली। यही नहीं बरन् हालैंण्ड ने मराठों से स्वतन्त्रता पूर्वक बोलना शुरू कर युद्ध स्थगित करने को कहा। साथ ही यह भी सूचित किया कि, मराठे, इंग्लैण्ड के राजा साहब, और अर्काट के नवाब की मित्रता की सन्धि करने के लिये ही मैं यह युद्ध विराम की बात इंग्लैण्ड के दर्बार वकील की हैसियत से चाह रहा हूं। तब मराठों ने उस समय तक के लिये अपनी सेना को पीछे हटाली।

इस काम को देख कम्पनी की नौकरशाही संतप्त हो उठी। उसे जान पड़ा कि, अब आगे के लिये डरने से अपनी सत्ता को धोखा पहुँचेगा। इस लिये कुछ भी करके यहां से हालैंण्ड को हटवा देना चाहिये, इस प्रकार उन्होंने निश्चय किया। इधर हालैंण्ड भी अपनी दिन दशा को सोच बिना किसी से कहे सुने चुपचाप जहाज में सवार हो भारत से चल दिया। अर्थात् जिसके ज़ोर पर उड़ी लगाई जारही थी, वह आधार टूट जाने से मुहम्मद अली चक्कर में पड़ गया और फिर उसे कम्पनी की अंजली से पानी पीनेको विवश होना पड़ा। यद्यपि मराठोंके विरुद्ध हैदर की सहायता न की जासकी तथापि कम्पनी छोटी मोटी शिकार साधने के काम में सहायता देने को हमेशा तय्यार रहने लगी। उदाहरणार्थ, तंजौर के राजा पर मुहम्मद अली नाराज था, परन्तु वह कम्पनी के कहे अनुसार जब तक चलता रहा; तब तक कम्पनी उस पर हाथ न डाल सकी। परन्तु जब कम्पनी और तंजौर के राजा के बीच कारण वशात् बिगाड़ होगया, तब कम्पनीने मुहम्मद अलीका पक्ष लेकर अपनी सेना एकदम जनरल स्मिथ के सेनापतित्व में तंजौर पर चढ़ाई करने को भेजदी। इस सेना ने तंजौर से ७।८ मील पर के वेलम दुर्ग को घेर लिया, और वह सहजही में हस्तगत होजाने को था कि, इसी बीच मुहम्मद अली ने कम्पनी से बिना पूछताछ किये परस्पर तंजौर के राजा से सन्धी करली, और कम्पनी को युद्ध बंद करने की आज्ञा दी। तथापि इस सन्धिपत्र के नियमानुसार मुहम्मद अली व्यवहार करेगा, इस बात की जवाबदारी कम्पनी ने अपने सिर पर ले रक्खी थी, इस कारण तंजौर के राजा को कुछ समाधान हुआ। इसके बाद एक दो वर्ष भी न बीते थे कि, इतने में मुहम्मद अली ने तंजौर का राज्य पालसा करने की शुरुआत की। तब तंजौर के राजा ने कम्पनी ओर दौड़ लगाई, और "विगत सन्धि के नियमानुसार मेरी रक्षा की जबाबदारी कम्पनी पर है, मैंने सन्धि के किसी भी नियम का नहीं किया है" इस प्रकार उन्हें स्मर्ण दिलाया। जब कम्पनी कौन्सिल हुई, तब भी उन्होंने तंजौर के तुलजाजी का पक्ष ठहराया। परन्तु नवाब ने इस आक्रमण के लिये जितना खर्च देने के सिवाय और ३५ लाख रुपये देने का वचन दिया था, ... ओर ध्यान देकर कम्पनी ने दस हजार फौज के साथ तंजौर ... तुलजाजी को पदच्युत कर दिया। और 'तुलजाजी किसी भी ... न पड़ता हो तथापि उसका झुकाव मराठों की ओर है, ... कभी युद्ध उपस्थित होने पर वह कम्पनी के विरुद्ध उठ ... ऐसा दीख पड़ता है। इसलिये जब तक अवकाश है, इस ... निपटा लेना ठीक होगा।' इस प्रकार अपने कृत्य का समर्थन ... क्टर को भेजा। डायरेक्टर को इस प्रश्न का तत्कालही ... करना चाहिये था। परन्तु कारण कुछ भी हो, उसने वर्ष डेढ़ वर्ष ... ओर ध्यान तक न दिया।

परन्तु अंग्रेजी मुसद्दी कम्पनी के कारोबार में उठा रखी करने ... मौका देखही रहे थे, उन्होंने सन १७७३ में एक नया कानून ... उसका नाम 'रेग्यूलेटिंग एक्ट' रक्खा। और फिर वे अनेक ... कागजपत्र मांगने लगे। तब यह प्रकरण चौड़े में आने पर ... फजीहत होगी, यह बात डायरेक्टर के ध्यान में आगई; और ... एक दम मद्रास कौन्सिल का निर्णय बदल कर राजा को गद्दी पर बिठाने का फिर से हुक्म दिया।

इस प्रकार कम्पनी के कारोबार में पहले जिधर से मौका मिले अपना मतलब साधने का जो एक साधारण ध्येय निश्चित था, उसमें रेग्युलेटिंग एक्ट से कुछ बाधा पड़ने लगी। उन बाधाओं का मूल हेतु यह था कि, कम्पनी के भारी नफ़े का कुछ भाग इंग्लैण्ड के जन साधारण को भी मिले। तब इस दृष्टि से कम्पनी का व्यवहार ... चलता है या नहीं, इसकी जांच करने के लिये जो मोटे २ ... बनाये गये, उसेही कम्पनी का ध्येय कहा जासकेगा। इस ध्येय ... चर्चा कभी २ पार्लमेन्ट में भी निकला करती, और उस समय ... ही वक्ता स्वभावानुसार नीति, परोपकार, और स्वातंत्र्यबुद्धि आदि मोटे २ शब्दों की योजना कर अपने पक्ष का समर्थन करते रहते थे। परन्तु इंग्लैण्ड के प्रधान मंडल और कम्पनी के डायरेक्टर इन वक्ताओं के शब्द की ओर अधिकार ध्यान देते हुए 'तत्वमसि' किस प्रकार साध्य होगा, यही देखते थे।

कौतुक संग्रह।

सर्प मणिः—यह मणि सर्प के (फनवाले नाग) तालु में रहती है, और प्रत्येक जाति के सर्प दंश पर लगाने से तत्काल गुण दिखाती है। इस प्रकारका एक मणि नारागोला पेटा उँबरगाँव के निवासी श्री० वासुदेव गोपाल आरेकर के पास आज ४० वर्षों से है। इन्होंने मणि के द्वारा सैकड़ों सर्प-दंशवाले मनुष्यों को अच्छा किया है। और आज तक किसी की मृत्यु नहीं हुई है।

दर्दुर मणिः—हिमालय के बड़े २ मेंडकों के सिर में से भूनानी लोग एक प्रकार की मणि निकालते हैं, उसका उपयोग यह है कि, इस मणि को थोड़ासा घिस कर विष दंश के स्थान पर उसे लगा देना चाहिये,

दूसरे वह विष को खींच कर फूल जायगा, और फिर उसे दूध में डालने से सारा विष निकल कर दूध हरा हो जायगा।

हिमशायी—यह बर्फ में रहनेवाला गिलहरी के आकार का बालिश्त भर लम्बा जानवर होता है, इसकी खाल बहुतही मुलायम होती है जिसे आंखों पर फेरने से नेत्र विकार दूर होते हैं।

यात्रागुंबु—(अथवा—'भूनानी नाम से प्रसिद्ध) एक जाति का गहरे ज़र्दिया रंग का विलक्षण कीड़ा है। इसकी लम्बाई अधिक से अधिक अंगुल भर होती है। इसके आँख, नाक पाँव आदि सब अवयव होते हैं। मृगसिर नक्षत्र के सूर्य आने पर इस कीड़े का सिर फूट कर एक अंकुर निकलता है और वह लगभग हाथ भर ऊंचा पौदा बन जाता है और कीड़ा मर जाता है। इस पौदे की पत्तियाँ छोटी पाई के बराबर ... होती हैं और डंडी के दोनों ओर बराबरी से लगती हैं। ये पत्तियाँ उधर सोने के भाव बिकती हैं और उनका उपयोग वाजीकरण में किया जाता है।

चिंता।

(लेखक—श्री० मदारीलाल गुप्त ।)

(१)

धन धान्य से मेरा गृह परिपूर्ण है। अनेक दासदासियां नौकर हैं। मुझे स्वयं किंचित मात्र भी शारीरिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता। कहीं भूमि पर मैं पग भर भी नहीं चलाता। जिस वस्तु की मैं जिस समय इच्छा करता हूं, वह मुझे तत्क्षण प्राप्त होजाती है। इतना सब तो है पर मुझे कुछ ऐसा मालूम पड़ता है कि, मुझे किसी प्रकार की चिन्ता है। यद्यपि मैं जान नहीं सकता कि मुझे किस बात की चिन्ता है, तथापि चिन्ता है अवश्य। यदि मुझे मेरी चिंता अवगत होजाय तो वह मेरे चुटकी बजातेही दूर होजायगी, इस बात का मुझे पक्का निश्चय है। पर बड़ी कठिनता की बात तो यह है कि वह मुझे विदित ही नहीं होती। रह २ कर मेरा मन घबड़ा उठता है। ऐसा मालूम पड़ता है मानों मैं कोई कार्य करना भूल गया हूं। बहुत परिश्रम करने पर भी मुझे मेरी चिन्ता का कारण नहीं विदित होता कि मैं क्या भूल गया हूं। मेरे यहां सर्व सुख की सामग्रियां हाथ जोड़े प्रस्तुत हैं। पर उस रोग की क्या दवा कीजाय जो मुझे मालमही नहीं।

कभी २ मैं बड़ी दूर तक की सोचने लगताहूं। मेरे सन्मुख एक अपूर्व दृश्य आकर उपस्थित होजाता है। मैं राजा तो नहीं हूं पर ऐसा सोचने लगताहूं कि मैं किसी स्वर्ण जड़ित सिंहासन पर बैठा हूं। मेरे सन्मुख सर्दारगण कर जोड़े खड़े हैं। मैं किसी को मालदार बना देता हूं, तो किसी को कंगाल कर देताहूं। यदि मेरी इच्छा होगई तो मैं किसी को फांसी पर लटकवा देताहूं या नहीं तो फांसी पर चढ़ते हुए को धन मान देकर छोड़ देता हूं। उस समय मैं ईश्वर की आस्तित्वता को बिलकुलही भूल जाताहूं। अपने को ही ईश्वर समझने लगताहूं। पर एकायक मेरा यह सुखकारक दृश्य मेरे सामने से लोप होजाता है। फिर वही चिन्ता घेर लेती है। मैं उसके जानने के लिये सैकड़ों उपाय करताहूं, पर हजार सिर मारने पर भी स्मरण में नहीं आता कि मैं किस चिन्ता में मग्न हूं। मैं क्या करना भूल गया हूं।

(२)

मेरा ब्याह तो होगया है पर मैं अपनी स्त्री को घर नहीं लाया। इस बात का एक कारण है। लोगों ने मेरा कान यह कहकर भर दिया है कि, मेरी स्त्री बड़ी कुरूपा है। वह काली है कलूटी है, इत्यादि बातें मुझे उसके विषय में मालूम हुई हैं। मेरा ब्याह जब मेरी अवस्था दश वर्ष की थी तभी होगया था। इस समय मैं तीस वर्ष का हूं, पर इन्हीं लोगों के कहने से मैं अपनी स्त्री को नहीं लाया, भला मैं इतना धनवान होकर कुरूपा स्त्री को क्यों लाने लगा।

आज से कई दिन पूर्व मेरा संसर्ग एक युवक से हुआ था। ईश्वर जाने क्यों मेरा चित्त उसके देखने से कुछ शांत होगया। मुझे उस समय ऐसा मालूम हुआ मानों बड़ा भारी बोझा मेरे सिर से उतर गया है। वह मुझे कई दिनों से नहीं मिला। उसका सुन्दर मुख प्रत्येक समय मेरी आंखों के सामने घूमता रहता है। उसकी सुन्दर मृग के समान बड़ी २ चमकीली आंखें मुझे शांति प्रदान करती हैं। अब तो मैं उसी युवक के ढूंढने में लग गया हूं। मेरी भीतरी चिन्ता मुझे भूल गई है। एक दिन उसने मुझ से कहा था कि मैं तुम्हें चाहताहूं। मैं तुम्हें हृदय से प्यार करता हूं-यही बात मेरे कानों में बार २ गूंजती है। उसने ऐसी सरलता से ये वाक्य कहे थे कि मुझे उसके कथन में लेश मात्र झूठ होनेका भी संदेह न हुआ था। उसने यह भी कहा था कि यदि ईश्वर चाहेगा तो हम तुम सर्वदा एक संग रहेंगे। वह एकाएक न मालूम क्यों गुम होगया। बहुधा वह मुझे प्रकृति के दृश्यों की छटा समझा २ कर कहा करता था। भांति की बहुतसी बातें बतलाया करता था, पर मैं उसकी बातें तो बिलकुल सुनताही न था। मैं सुनता था तो उस की सुरीली आवाज़। जब कभी वह हंसता तो बहुतही भला मालूम पड़ता था। वह बहुधा मुझे अपनी तरफ़ एकटक देखते पर कहा करता था कि, मेरी तरफ़ क्या देखते हो। जो कुछ मैं कहता हूं वह सत्य है। एक पल के लिये मैं नीचे देखने लगता पर फिर वहीं पुरानी आदत। मुझे इस बात पर बड़ा दुःख है कि वह मुझे कई दिनों से नहीं मिला।

(३)

एक दिन दोपहर को जब मैं अपने कमरे में आराम कुर्सी पर बैठा था, एक नौकर ने आकर कहा कि एक स्त्री आप से मिलना चाहती है। मैंने उससे उसे भीतर बुला लाने के लिये कहा। आने पर वह मुझसे बड़ी नम्रता से बोली "क्या आपको दासीकी आवश्यकता है?" मुझे ऐसा मालूम हुआ मानों मैंने इस तरह की आवाज कहीं सुनी है? मैं मन ही मन सोचने लगा। उसने कहा आप क्या सोच रहे हैं, यदि आवश्यकता न हो तो आज्ञा दीजिये, मैं जाऊं। उसकी आवाज में जादू का सा असर था। मैं उसे नाहीं न कर सका। वह घूंघट काढ़े थी इससे मैं उसका मुँह न देख सका। मैंने पूछा "तुम्हारा क्या नाम है।" उसने धीमे; पर मधुर आवाज से कहा "कमल"।

ठीक यही नाम मुझे उस सुन्दर युवक ने बतलाया था। मैंने दोनों की आवाजों का मिलान किया। बिलकुल मिलतीथी। थोड़ा भी अन्तर न था। मैं फिर विचार में मग्न होगया। अब की बार रमणी ने बाहर जाने का भाव दिखलाया। मैं चिल्ला उठा, "ठहरो २ मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।" रमणी ने अपना घूंघट हटाकर मुसकुराते हुए पूछा "कितना वेतन मिलेगा।" मैं रूप देख कर और भी घबराहट में पड़ा ठीक वही सूरत। वही चेहरा। जैसा मुखकमल मेरे कमल का था ठीक वैसाही इस कमल का है। उसकी मुसकुराहट से सारा कमरा खिल उठा। एक बिजली सी चारों ओर फैल गई। मैंने कांपती हुई आवाज़ से पूछा "तुम कौन कमल हो?—"अब की वह खिलखिला कर हंस पड़ी। सारे कमरे में मधुर हंसी गूंज गई। मैंने एक तस्वीर को देखा। मालूम पड़ा वह हंस रही है। दूसरी तस्वीर को देखा वह भी हंस रही थी। खिड़की से बाहर की ओर दृष्टि की। मालूम हुआ वृक्षों के पत्ते भी हंस रहे हैं। उनकी टहनियां भी हंस रहीं हैं। मुझे सब हंसते ही दृष्टिगोचर होने लगे। केवल मैं भर उस समय हंसमुख न था। रमणी ने कहा "मैं तीनों कमल हूं।" दो कमल तो मैं जानता था, पर यह तीसरा कमल कौन है, यह न जान सका। मैंने उत्सुकता से पूछा तीसरा कमल कौनसा है, इस समय उसका चेहरा फीका पड़ गया। चेहरा फीका पड़ने से पाठक यह समझलें कि उसकी सुन्दरता में कमी आगई थी। नहीं वरन् वह पहिले से दुगनी सुन्दर मालूम पड़ने लगी। उसने बड़ी रुखाई से कहा "तो क्या तुम सचमुच ही तीसरे कमल को नहीं जानते?—" मैं कुछ न बोला। उसने सांस लेकर फिर कहा "तीसरी कमल तुम्हारी ब्याही हुई तुम्हारी स्त्री है।" उसके सुन्दर मुख पर लज्जा शोभा पाने लगी।

कमल को पूरा विश्वास था कि, यदि वह अपने पति के सन्मुख प्रगट होजायगी तो वे उसे अपना लेंगे। लोगों ने जो उनका कान धन घसीटने के लोभ से दिया है वह सब भ्रम दूर होजायगा। कमल एक कोने में आकर घूंघट निकाल कर बैठ गई। मुझे अपने बहकाने वालों पर उस समय बड़ा क्रोध आया। मैं दांत पीसता हुआ कमरे के बाहर चला आया।

(४

मैं अपनी स्त्री को पाकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। एक दिन मैंने उससे अपनी चिन्ता का कारण पूछा। मैंने कहा "मेरे मन में कुछ घबराहट सी मालूम पड़ती है, मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि मैं कुछ करना भूल गया हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मुझे मेरा भूला हुआ कार्य बतला कर मेरी चिन्ता दूर करोगी। और यही नाथ कर मैंने तुम से अपनी भीतरी चिन्ता का कारण पूछा भी है। सच तो यह है कि मेरी कुछ चिन्ता तुम्हारे देखने मात्र ही से दूर हो जाती है।"

मेरी स्त्री ने कहा—"मैं तुम्हारी चिन्ता का कारण समझ गई।" मैंने कहा—"क्या समझ गई हो? बतलाओ क्या कारण है?"

कमल—"अच्छा बोलो। ईश्वर ने यह शरीर किस लिये दिया है?"

मैं—"मैं तुम्हारे प्रश्न का अर्थ भी नहीं समझ सका। तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

कमल—"अच्छा यह बतलाओ कि ईश्वर ने तुम्हें इस संसार में क्यों पैदा किया है?"

मैं—"मैं यह भी नहीं जानता। तुम्ही कहो मैं किस हेतु इस संसार में आया हूं?"

मेरी स्त्री ने अपने पति की इतनी अज्ञानता देख कर लज्जा से नीचे को मुख कर लिया।

मैंने हंसते हुए कहा—"क्या सोचने लगी? क्या तुम्हें भी नहीं मालूम?"

कमल ने घृणा की दृष्टि से मेरी ओर देखते हुए कहा 'क्या तुम अपनी चिन्ता का कारण सचमुचही जानना चाहते हो?"

मैंने कहा, "क्यों नहीं।"

कमल—"तो क्या तुम कारण जानकर उसके मिटाने का उद्योग करोगे?"

मैं—"जिसके कारण मेरी इतनी सुख सामग्रियां भी मुझे सुखप्रद नहीं होतीं। उसे जड़ से खोद कर बहादेने का उपाय मैं क्यों न करूंगा!"

कमल ने शान्ति पूर्वक कहा "तुम बड़े नीच हो।"

मुझे उसका कहना जरा भी बुरा न लगा। मैंने पूछा "मैं नीच क्यों हूं?"

कमल—"सुनो, ईश्वर ने तुम्हें इस संसार में अपना महात्म्य प्रगट करने के लिये भेजा है। पर तुम उलटे उसकी मिट्टी पलीत करते हो। वह चाहता है कि तुम दुनियां के दुखी लोगों को सुखी बना कर उस का गौरव बढ़ाओ। उसका नाम कृपासागर है वह तुम्हारे द्वारा लोगों को अपनी कृपा का परिचय देना चाहता है। पर तुम उसके ठीक विपरीतही करते हो। उसकी आज्ञा है कि तुम सत्य बोला करो, [illegible] धन के लोभ से मिथ्या बोल कर बड़ा पाप करते हो। वह चाहता [illegible] कि तुम सब जीवों को अपने ही समान समझो, पर तुम ऐसा [illegible] करते। उसकी इच्छा है कि तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो, [illegible] ध्यान उधर को जराभी नहीं है। ये सारी बातें तुम्हारी आत्मा [illegible] है; पर जो काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, इत्यादि तुम्हारे शत्रु हैं उसकी बातें तुम्हारे कर्णगोचर नहीं होने देते। तुम्हारे कानों में भनक भर पड़ जाती है। तुम उसे अच्छी तरह नहीं सुन पाते। आत्मा कहती है कि तुम सत्य मार्ग को छोड़ कर कुमार्ग पर चल [illegible] हो। तुम अपना सच्चा रास्ता भूल रहे हो। बस यही बात है जो भूल रहे हो।"

मेरा हृदय बिलकुल हलका होगया। मेरी भीतरी चिन्ता [illegible] होगई। मुझे दुनियां अब दूसरी ही दिखने लगी। मेरे पास [illegible] है वह दूसरे का मालूम पड़ने लगा। मैंने सोचा मेरा यह [illegible] गरीबों को सुखी करने के लिये है। मेरी सारी शक्तियां जो [illegible] ने मुझ को दी हैं, दूसरों की भलाई में काम आने के लिये हैं। मैं [illegible] भी सारे संसार भर का चाकर हूं। जिस पर संकट पड़ेगा, मैं [illegible] कुछ देकर उसका दुःख दूर करूंगा।

मैंने उसी क्षण अपनी स्त्री कमल के सन्मुख प्रण किया कि मैं जन्मपर्यन्त अपना कर्त्तव्य पालन करूंगा। ईश्वर ने मुझे जो शक्तियां दी हैं; उन्हें दूसरे की भलाई में लगा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।

मेरी स्त्री को रोमांच हो आया। कमल के कमल नेत्रों में से मोती के समान हर्षसूचक आंसुओं की बूंदोंने उसके कोमल कपोलोंको गीला कर दिया।

सैरन्ध्री

[illegible]

(१)

[illegible]

(२)

शीशफूल शिर में बांध कर, माला गले में डाल ली।
ले कुन्त दन्तुर पाणि में, कस कटि में करवाल ली॥
ले धीर वेष बना लिया, लटकी हुई यह ढाल है।
कैसा सुसज्जित हो रहा, मन काम से बेहाल है॥

(३)

सज कर निराले वेष में-उद्भ्रान्त आशा मस्त था।
करता प्रतीक्षा था सदा-हा काम अस्त व्यस्त था॥
अभिलाष जो थी चित्त में-किस भांति पूरा कर सकूं।
उसके हृदय में प्रेम का, आवेश क्योंकर भर सकूं॥

(४)

यह सोच चंचल चित्त में, आती हुई को जान के।
घर के निकट ही मार्ग में-आकर जमा हठ ठान के॥
अनिमेष नेत्रों से अहा, ! उस ओर वो लखने लगा।
व्यभिचार वारि मार्ग में-यह ध्यान वो रखने लगा॥

(५)

ज्यों ज्यों निकट आती गई-त्यों त्यों हृदय में मस्त था।
यह दुःख [illegible] हृदय को, कर रहा [illegible] था॥
देखा खड़ा है दुष्ट वह-उसका हृदय कम्पित हुआ।
उसका [illegible] हुआ॥

(६)

[illegible]

(७)

[illegible]

(८)

[illegible]

क्या चन्द्रिका तजती कभी, निज चन्द्रमा की गोद को ?।
क्या कोकनद रविको निरख के-प्राप्त होते मोद को ? ॥

(९)

फिर प्रेम सैरन्ध्री सती, पति अन्य से क्योंकर करे ?।
जिसको वरी वह वर चुकी-वर अन्यको क्योंकर वरे ? ॥
इस हेतु कीचक केतु से-भयभीत इतनी हो रही।
होकर विमुख मुख, अश्रु धारा के सहारे धोरही ॥

(१०)

निश्चल नयन से रूप कीचक, देखते ही रह गया।
उसके हृदय में प्रेम का-सागर उमड़ कर बह गया ॥
अर्पण हृदय उसने किया, थी चाह क्या उसकी यहां ?।
है कांच कीचक क्या यहां, हैं पांच रत्नाकर जहां ॥

(११)

इस चित्र में चित्रित यही-घटना यहां पर दी गई।
अनुसार ही उसके यहां, कवितावली है की गई ॥
शिक्षा पुराणों की यही-मन इन्द्रियों को वशकरो।
मत नीच कीचक से बनो, विख्यात अपना यश करो ॥

"नृपवेश कीचक"

"शिखरिणी"

(१)

नभूली सैरन्ध्री, निशिदिन वही कीचक व्यथा।
उसी की आभा को हृदय करता कोशल कदा ॥
अनेकों यत्नों से, मिलन सुख के हेतु करता,।
उपायों को पूरे, सब विधि रहा प्रेम-परता ॥

(२)

उसी सैरन्ध्री को, निरख मति कामी कर चुका।
जली काम ज्वाला, हृदय लपटों से भर चुका ॥
मिले कैसे तापोत्तरण तरणी-शीतललता।
उन्हीं मार्गों में हा कविचल चला चाल चलता ॥

(३)

उसे थी आशायें-विषय कलिकायें खिलगई।
बढ़ी तृष्णा मानो-अखिल प्रभुतायें मिल गई ॥
निराले वेषों की-चतुर रचना चारु कितनी।
लुभाए सैरन्ध्री-इस विधि सभी पद्धति बनी ॥

(४)

कभी वीरों का सा, उचित अपना वेष करता।
अनेकों अस्त्रों को सज कर वृथा क्लेश करता ॥
लुभाने की चेष्टा, चपल करता ही वह रहा।
बड़ी आकांक्षा से, हृदय उसका था बह रहा ॥

(५)

कभी खद्योतों की झलक नलिनी है खिलसकी-
बकों या काकों के-श्रमवश मराली मिल सकी-
सती नारी, प्यारे-पति चरण की भक्ति रत थी।
यही सच्चे स्वामी-सब विधि उन्हीं में निरत थी ॥

(६)

उसीकी तृष्णा में विधिवश रहा कीचक पड़ा।
बनाए राजश्री-विनय करता सादर खड़ा ॥
सजे राजा का सा-रुचिर अपना वेष वर था।
वही सैरन्ध्री के-हित सब हुआ क्लेशकर था ॥

(७)

बँधा साफा कैसा मुकुट मणि के छोर छहरें।
अनेकों रत्नों के जटिल छवि के गुच्छ लहरें॥
गले में मुक्ताकी-ललित अवली हैं लहरती।
सुवर्णाभा भारी, वसन रचना चित्त हरती ॥

(८)

बनाई शोभा है सुकटितट-पाटाम्बर कसे।
उसी की छाया में नियमित हुआ खड्ग विलसे ॥
करों को फैलाये-प्रणयवश मैं है बह रहा।
इसी सैरन्ध्री के-मिलन सुख को है चह रहा ॥

(९)

विचारी को देखो, सुपथ उसका घेर करके।
बलात्कारी कैसा-रहसि-छलका फेर करके॥
महाकामी प्रेमी ?-प्रणय-परिपाटी चह रहा।
"मिलो मेरी प्यारी" यह हृदय से है कह रहा ॥

(१०)

विचारी सैरन्ध्री-निकट भयसे भीत करसे।
"मुझे तू क्यों ? छेड़े-प्रणय तुझसे तुच्छ नरसे ॥
करूंगा मैं कैसे-?" विकल यह मानो कह रही।
डरी दुष्टात्मा से-कुशल अपना है चह रही ॥

(११)

लुभाया क्यों ? तू है कुटिल परदारा निरखके।
सुखी होना चाहे-अहह ? विष की वेलि चखके ॥
इन्हीं भावों से था हृदय उसका पूरित रहा।
यही लज्जाशाली-वदन उसका है कह रहा ॥

(१२)

हटी लज्जा से है-तुरत परदा आड़ करके।
खड़ी है सैरन्ध्री-समय कुछ पीछे पिछड़के ॥
अरे ? अत्याचारी-मन पर अनाविष्ट यहां।
परी नारी प्यारी-समझ कुछ ? है तू सन कहां ? ॥

(१३)

जिसे आंसे चारा-प्रणय परि पाटीवश रहा।
इसी तृष्णा में क्या-अखिल भुवनों का रस रहा ॥
उसी की लीला से-विदलित हुआ सम्य यह है।
पुरानी गाथा का-अविचलित सिद्धान्त यह है ॥

(१४)

कुमार्गी कामी का-उचित फल कल्याण कब है ?।
सदा निन्दा पाते-कुटिल उनके हेतु सब है ॥
किए कर्मों के ही-विविध फल होते भुवन में।
न ऐसी तृष्णायें-उचित रखनी मित्र ! मन में ॥

"रत्नाकर" पं. महेश प्रसाद शर्मा साहित्यरत्न,

स्वराज्य की लढ़त

(लेखकः—श्री० दामोदर विश्वनाथ गोखले बी. ए. एल एल. बी.)

योरोपिय महाभारत की शुरूआत १९१४ में हुई। जर्मनी का सितारा योरोप के राजकीय आकाश में अधिकाधिक प्रकाश मान होने लगा। लीज नामुर देकर बेल्जिम सत्ताहीन कर दिया गया। फ्रांस का मोबेज किला जाते ही मित्रोंकी सेना में खरगोशी भाग पड़ गई। मॉन्स वाली कतार टूट कर अंग्रेजी सेना पीछे हटने लगी। यह समय केवल फ्रांसही के लिये नहीं बरन् सब मित्रों के लिये परीक्षा का था। जनरल व्हॉन क्लुक पैरिस का द्वार खटखटा रहा था और इस समय हमारा एक मात्र परमेश्वर ही सहायक है, इस प्रकार फ्रांस को बाल बाल विश्वास हो गया था। परमेश्वर को भी उस प्रार्थना पर दया आई और सहायता करने को वह युद्ध भूमि पर उतर आया। परन्तु पूर्वीय युग के अवतारों की तरह परमेश्वरने इस बार प्रत्यक्ष विभूतिरूप से अवतार न लेते हुए, भारतीय सेना का रूप धारण किया। पंजाब के सिक्ख, मुसलमान, पहाड़ी, राजपुताने के वीर, नेपाल के गुर्खों दक्षिण के मराठों के शरीर में उस दैवी शौर्य का अवतार हुआ, मित्र सेना की कमी को इन भारतीय वीरोंने पूरी करदी। जर्मनी की कीर्ति मन्द पड़ने लगी, उसकी सेना पीछे हटने लगी। पेरिस की रक्षा हुई। फ्रांस उस दिन को कभी नहीं भूल सकता, उसके अन्तः करण में उन भारतीय वीरों के प्रति प्रगट करने की कृतज्ञता ने उस-दिन चिरस्थायी स्थान प्राप्त कर लिया। अंग्रेजी जनताने भी उस दिन के पराक्रम के सम्बन्ध में धन्यवाद प्रकट किया। परन्तु हम पूछते हैं कि क्या उस दिन को इंग्लैण्डने अपने हृत्पटल पर स्थायी रूप से स्थान दिया है? महायुद्ध के पश्चात् अंग्रेजो राजकर्ताओंने भारत की राजकीय आकाक्षाएँ पूर्ण करने के विषय में जो प्रश्न घोटाला मचा दिया है, उस पर से उपरोक्त प्रश्न का उत्तर 'हाँ' के रूप में दिया जा सकेगा या नहीं, इसमें अभी शंका ही है।

महायुद्ध के पिछले इतिहास में भी भारतीय सेनाने फ्रांस, मेसोपोटामिया, मिश्र, गेलीपोली, पूर्व ऑफ्रिका आदि रणभूमी पर खासा पराक्रम दिखा कर मित्रों का पक्ष बचाया था। भारत की जनताने सहायता के रूप में रुपयों की वर्षा कर दी, गोली बारूद पहुँचाया, खुद खाली पेट रह कर अन्नसामग्री पहुँचाई। देश में अन्न का हाहाकार मचा रहनेकी दशा में भी अन्न की पूर्ति करनेवाले रेल्वे के डिब्बे पहुँचाये, औषधियां भेजीं। अधिकतो क्या, पुराने कपडे, समाचार पत्र और चिन्दियां तक भेजीं। भारत में दंगा मचाने के लिये जर्मनी के सब प्रयत्न व्यर्थ कर दिये गये, और महायुद्ध की इस भयंकर कसौटी के समय भारत की राज्यनिष्ठा सौ टंच सोने के समान शुद्ध ठहरी। जिस स्वातन्त्र्य, स्वराज्य, स्वसम्मती आदि उच्च तत्वों के लिये हम योरोप में लड़ रहे हैं, उन्हीं तत्वों के अनुसार हम यदि अपना भारत के राज्य कारोबार का गाड़ा न चलावें, तो हम कृतघ्न समझे जावेंगे, यही नहीं बरन् हमें मिलनेवाली सहायता भी घटती जायगी, इस प्रकार वाइसरॉय और हिन्दुस्तान के अंग्रेजी राज्यकर्ताओं को भी भास होने लगा। लखनऊ में भारत की जनताने एक स्वर से स्वराज्य की मांग की; और इस सारी राष्ट्रीय हलचल का परिणाम भी निकला। और भारत की अंग्रेजी राज्यपद्धती किस तत्व पर चलाई जायगी इसका ध्येय एकबार पार्लमेन्ट में प्रगट करो, वर्ना बचाव नहीं, इस प्रकार भारत के स्टेट सेक्रेटरी के पीछे

वाइसरॉय की रट

लगाई गई। हिंदुस्तान में कीजाती हुई कामगिरी, भारत का स्वार्थ-त्याग, और यहां के लोगों की मनस्थिति पर ध्यान देकर हमें अपना राजकीय ध्येय धारण करना चाहिये, इस प्रकार उनका आग्रह था। सच पूछ जायतो उसी समय ही अंग्रेज सर्कार को भारत के पल्ले में स्वरा-का पूरा २ हिस्सा डाल देना चाहिये था। परन्तु मारवाड़ी बानेवाली

अंग्रेज सर्कार की ओर से ऐसा नहीं हुआ। तथापि 'हमें ... राज्यपद्धति ही हिन्दुस्तान की राज्यपद्धती का ध्येय निश्चित हैं, और धीरे २ हम स्वराज्य के सारे अधिकार भारत को देंगे' प्रकार बादशाह के नाम से बीच पार्लमेन्ट में आश्वासन दिया भारत में इस आश्वासन अथवा घोषणा पत्र में लिखी हुई सम्बन्ध में किसी को संतोष न हुआ। परन्तु 'भागते भूत के भले' की तरह जिस मनः प्रवृति के कारण समाधान होता है, कुल उसी प्रवृत्ति के कारण न सही, परन्तु उसीके जैसी भारतने संतोष कर लिया। इसके बाद मान्टेग्यू साहब स्वतः आये और महायुद्ध की गड़बड़ में भी उन्होंने वॉइसराय के में भ्रमण कर सारी परिस्थिति का निरीक्षण किया और एक योजना तय्यार करके पार्लमेन्ट में पेशकी। परन्तु बीचमें ही बन्द हो गया। स्वराज्य विरोधी लार्ड सिडॅनहम ने अपनी जोरों से शुरू की, और धीरे २ सारा मन्वन्तर ही बदलता चला। राजकर्ताओं के मत भी क्रमशः बदलने लगे। भारत का विस्मरण लगा। 'भारतने जो कुछ सहायता दी वह उसका कर्तव्य ही था, योरोप में संकट भोग रहे हैं, उसी प्रकार यदि भारतने संकट तो उसमें विशेषता ही क्या,। इत्यादि प्रकार के का प्रादुर्भाव हुआ। जमाना पलटा और नये युग के साथ नई कल्पना और विचार सरणी, उत्पन्न होने लगी। इक्कीस राज्यनिष्ठ लोगों में मुट्ठी भर भी क्यों नहीं, परन्तु अराजक हैं था इस प्रकार की विचार सरणी उत्पन्न होकर रौलेट बिलों का हुआ। भारत की नौकरशाही के इस बदलेहुए मत का भिन्न २ प्रान्तिक सर्कारोंने स्वराज्य योजना के सम्बन्ध अपने जो मत प्रगिथत किये थे, उनमें भी स्पष्टतयः होता है।

भारत की नौकरशाही की लहर के अनुसार हो यहां की राज्यनौका यदि चलाई जाती तो, स्वराज्य अथवा यदि आजकल की भाषा में कहा जाय तो दायित्व पूर्ण राज्यपद्धती के ध्येय की ओर न जाकर, धनाढ्य और दास, जेता और जित अथवा योरोपियन चाय के ठेकेदार और कुलियों के बीच जो सम्बन्ध होता है, वही सम्बन्ध जिस राज्यपद्धती से अमल में आ सकता वही पद्धति जारी कर दी जाती। कदाचित यह जॅलयान नौकरशाही के हठ के कारण ही किसी चट्टान से टकरा कर टुकडे २ भी हो जाता। परन्तु खुशी की बात है कि इस नौका का पतवार सब प्रकारसे नौकरशाही के हाथ में नहीं है। विलायत के मुसद्दी लोगों की दूरदर्शिता, उनकी मानरक्षा सम्बन्धी चाह, और अंग्रेजी जनता की स्वातन्त्र्य प्रियता, आदि के मिश्रण से जो एक शक्ति उत्पन्न हो गई है उसीके हाथ में इसके सब सूत्र रहे गये हैं। और इन सब से अधिक महत्व की बात यह है कि जिस प्रवाह पर, ओघ पर यह नाव चलाई जा रही है वह

काल का ओघ

इतना प्रचंड है कि नाविकों की बुद्धिमानी तक उसके सम्मुख पदार्थ ठहरती है। इस शताब्दि में काल का ओघ किस प्रकार रहा है, इस बात की ओर ध्यान देने पर हमें विश्वास हो जायगा कि प्रत्येक जीवित राष्ट्र को भविष्य के लिये निराश होने की आवश्यकता नहीं है। आज नहीं तो कल प्रत्येक राष्ट्र को स्वतन्त्रता और स्वराज्य के समान अधिकार और शांतता का सुख मिले बिना न रहेगा। ईश्वर प्रेरणा और नियमन ही इस प्रकार है। और इसी पर विश्वास रख कर हमें हमारा मार्ग खोजना चाहिये। रौलेट कानून के पास होने के समय की; तथा वर्तमान स्थिति हमें बतलानी है।

रौलेट कानून पास हुए, सत्याग्रह शुरु हो गया, दंगा फसाद हो

दुःखद प्राण हानि भी हुई परन्तु इन सब का परिणाम यह हुआ है कि अंग्रेजी राष्ट्र का ध्यान भारत तथा उसके मुख्य प्रश्न की ओर अभूत पूर्व आकृष्ट होगया है। सुभाग्य से 'लोकमान्य तिलक' इस समय विलायत में हैं। उनके परिश्रम और मजदूर दल के नेताओं के सुसंघटित प्रयत्न से विलायत के लोगों को हिन्दुस्तान विषयक सम्यक ज्ञान होने लगा है। भारत में भयंकर दंगे फसाद हो रहे हैं, किन्तु इन सब का कारण यहां की नौकरशाही का बे लगामी कारोबार ही है, इस प्रकार उन्हें विश्वास होने लगा, इसी सुअवसर में मान्टेग्यू साहब की स्वराज्य योजना की परिपूर्ति करनेवाली साऊथबरो कमेटी की रिपोर्ट भी भारत और विलायत में प्रसिद्ध हो चुकी है। स्वराज्य योजनाको घाताहत इन सब रिपोर्टों से कैसे धक्का लगती है, सो देखना है मान्टेग्यू साहबने जितने विभाग लोकशाही को देने के लिये सूचित किया था, उनमें से अधिकांश विभागों को इस कमेटीने उड़ा दिया है, और इस कमेटी पर भारत सर्कार के नाम से जो एक खरीता प्रकाशित हुआ है; उसमें तो इस कमेटी की दी हुई अधिकांश सूचनाओं पर हर्ताल फेरी जाकर जहां तक हो प्रचलित राज्यपद्धति ही कायम रखने का उन्होंने विचार किया है। प्रांतिक सर्कार की सूचनाएँ देखने सिवाय बंबई सर्कार के अन्य प्रांतिक सर्कार तो मानों मारवाडियों का अवतार बन गई हैं और सब की शिरमौर मद्रास सर्कार है। मध्य प्रांतीय सर्कार भी कुछ कम नहीं है। उसका तो मत था कि कोईभी विभाग लोक-पक्ष को न दिया जाय, परन्तु साउथबरो कमेटीने; मान्टेग्यू साहब से भी हम अधिक समझदार हैं, ऐसी यदि तुम्हारी भावना हो तो भी हमने अपने उत्तर पर से ही अपनी बुद्धि की परख करा दी है, इस भावार्थ की थपत लगा कर मध्य प्रांतीय सर्कारको होश में ला दिया। इस प्रकार एक दोही नहीं, कितनी ही मजेदार बातें प्रांतिक सर्कार की सूचनाओं से निकाली जा सकती हैं। परन्तु प्रांतिक सर्कार के इस निनाद की ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं जान पड़ती है। नौकरशाही की तलैय्या में का पानी गदला और दुर्गन्ध युक्त है, और उस गदले पानी में टर्र २ करनेवाले बर्सातीं मेंडक की भांति उसकी चिल्लाहट भी कुछ ही दिन टिक सकेगी। परन्तु भारत सर्कार के खरीते की ओर देखने से आश्चर्य हुए बिना न रहेगा। जिन लार्ड चेम्सफोर्ड साहबने पहली रिपोर्ट लिखी, उन्होंने आज अपना मुँह दूसरी ओर मोड़ लिया है। जिन विभागों को लोकशाही को सौंपने के लिये कमेटीने सिफारिश की है, उनकी संख्या भरसक कम की जाय, सब विषय और विभागों पर भारत सर्कार और प्रांतिक सर्कार का अधिकार रहे और आवश्यक जान पड़ने पर सौंपे हुए विभाग भी पुनः अपने अधिकार में लिये जा सकें, इस प्रकार का उन्होंने दाव फांसा है। कमीशन नियत करना, स्थानिक सर्कार के मत लेना आदि बातों का कटु अनुभव आज तक भारत को अनेक बार मिल चुका है। हमें आज कुछ देना नहीं है, इसी लिये नौकरशाही यह उपद्व्याप करती है, और यही युक्ति उन्हें इस बार भी उपयोगी हो पड़ी है, ऐसा ज्ञान पड़ता है! मान्टेग्यू साहब की योजना को हटा देने के लिये मत लेने का एक नयातर्क निकला है, और वह

अधिकारियों के मत का कोल्हू

उस योजना को रस विरहित छूंछा बनाये बिना न रहेगा, इस प्रकार नौकरशाही को विश्वास था। मान्टेग्यू साहब की योजना का प्राण मानो अधिकार विभाजन था, और इसीलिये, इस प्रश्न के समय नौकरशाहीने अपनी पराकाष्ठा कर दिखाई है। हमारी मांग क्या थी और हमें क्या दिया जानेवाला है, इसकी तुलना करने पर तत्काल ही हमें यह बात ध्यान में आ सकेगी। भारत राष्ट्र की ओर से लखनऊ और कलकत्ता तदा इसके बाद बम्बई और दिल्ली में राष्ट्रीय सभा ने जो मांग की थी, उसमें मुख्य मुद्दे तीन थे। पहला यह कि प्रांतिक सर्कार में के सब विभाग, कम से कानून, न्याय, और पुलिस विभागों के सिवाय अन्य सब विभाग लोकनिर्वाचित और लोकोत्तर दायी दीवान को सौंप दीजिये। इस मांग का कारण यही था कि, लोगों का सर्व हित सम्बन्ध, उनका सुख दुःख उन विभागों पर ही अवलम्बित है, प्राथमिक माध्यमिक और उच्च शिक्षा, औद्योगिक तथा कलाकौशल्य की शिक्षा, इन सब भांति की शिक्षा के बिना हमें अपने राष्ट्र के उद्धार के लिये और कोई मार्ग ही नहीं है, इसीलिये ये सब विभाग हमें सौंप दीजिये, इस प्रकार लोकपक्ष के सब प्रतिनिधियोंने मांग की थी। साउथबरो कमेटीने सिफारिश की है कि सब प्रकार की शिक्षा का विभाग लोगों को सौंप दीजिये, परन्तु भारत सर्कारने उसमें भी टांग अड़ादी है। उसका कहना है कि केवल प्राथमिक शिक्षा ही लोगों के आधीन कर दी जावे। भारत सर्कार की कौन्सिल के सभासद सर शंकरन् नायरने अपनी भिन्न मत प्रदर्शक पत्रिका में सर्कार के इस ध्येय पर प्रखर टीका कर, केवल राजकीय हेतु से सर्कारने खास कर सब प्रकार की शिक्षा की गलचप्पी आज तक की है, इस बात को उन्होंने स्पष्ट प्रगट कर दिया है। अंग्रेजी राज्य में की शिक्षा विषयक प्रगति के सम्बन्ध में मन भर कर सर्कार के गीत गानेवाले स्तुति पाठकों और आत्मवंचकों को एक बार अवश्य ही सर शंकरन् नायर की पत्रिका पढ़नी चाहिये। यही दशा भूमि कर और उद्योग विभागकी भी है। नौकरशाहीने आज तक जिस पद्धति से भूमिकर की व्यवस्था की है, अथवा उद्योग धंधों को उत्तेजन दिया है, वही पद्धति प्रचलित रखने से भारत वर्तमान से भी अधिक दारिद्र्य के गड्ढे में गिरे बिना न रहेगा, सर शंकरन् नायरने, ईस्ट इण्डिया कम्पनीने किस प्रकार अन्यायी राज्यपद्धति के द्वारा भारत के कला कौशल्य को नष्ट कर दिया इसका सुन्दर चित्र अंकित किया है। इसी प्रकार कृषिकर की वृद्धी स्वयं ही केवल अधिकारियों की मर्जी से किस प्रकार होती है, इसका भी आपने भयानक किन्तु यथातथ्य वर्णन किया है, और यह बात प्रगट की है कि; शिक्षा विभाग भारतीयों के अधिकार में सौंपे बिना शिक्षा की प्रगति कभी न हो सकेगी। इसी प्रकार भूमिकर औद्योगिक विभाग भी यदि भारतीय जनता को न सौंपे गये तो स्वराज्य का मिलना न मिलना बराबर ही समझना चाहिये।

राष्ट्रीय सभा का दूसरा मुद्दा यह था कि राज कारोबार पर लोक प्रतिनिधि की हुकूमत रहे, किंबहुना दूसरे शब्दों में कहा जाय तो सारी नौकरशाही अपने कारोबार के लिये लोकशाही की जवाबदार होनी चाहिये। परन्तु उपरोक्त पहली मांग के अस्वीकार होते ही इस प्रकार की दायित्व पूर्ण राज्यपद्धती शुरू होना अशक्य है। राष्ट्रीय सभा की आर्थिक स्वातन्त्र्य और प्रजा स्वातंत्र्य सम्बन्धी तीसरी और चोथी मांग बिलकुलही उड़ा दी गई है। ऐसी दशा में दी जानेवाली सुधारणाएँ एक प्रकार से राष्ट्र के लिये अपमान कारक ही हैं। जिस प्रकार हम सुन्दर पक्वान्न पर सपाटे से हाथ मार रहे हों और उस समय आशायुक्त हमारे मुँह की ओर ताकनेवाले कुत्ते के सन्मुख जिस प्रकार हम

आधा या चौथाई टुकड़ा

डाल देते हैं, वही बात यहां भी लागू की जासकती है। माँगने और देने में जमीन आस्मान का अन्तर है। मांगनेवाला जब तक भिकारी बन कर मांगने जाता है, तब तक देनेवाले पर धनाढ्यता की (!) गर्मी चढ़ी रहती है, इस में आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं है। सुप्रसिद्ध देशभक्त लाला लाजपतराय ने हाल ही में लिखे हुए अपने एक सुन्दर लेख के आरम्भ में कहा है कि, परकीय राज्य का जिन राष्ट्र की जनतापर ऐसा कुछ प्रभाव पड़ता है कि, अपने राज्य कर्ताओं की भोजनचौकी पर पड़े हुए टुकड़ों के लिये जिन लोगही एक दूसरे को दबोचने लगजाते हैं। इससे बढ़कर दुष्प्रभाव और क्या होसकता है। उनके लेख का तात्पर्य यह है कि हमें अपनी मांग इस प्रकार से ही मांगनी चाहिये कि जिस में फिर देनेवाले को 'नहीं' कहना अशक्य होजाय, किन्तु आज वह परिस्थिति नहीं है, इसे खूब ध्यान में रखना चाहिये। दाता और याचक का सम्बन्ध न रहने के लिये सारा भारत राष्ट्रप्रयत्न कर रहा है। इस दिशा में याचक और दाता दोनों के विचारों में क्रांति होचली है, और किन्तु यह प्रत्यक्ष कृति रूप में कब अवतीर्ण होगी, सो देखना चाहिये। आज केवल टुकड़े के लिये ही यह सारी खटपट हो रही है।

परन्तु यह टुकड़ा भी मर सक शीघ्रता से न मिलजावे, इस प्रकार स्वराज्य विरोधियों का प्रयत्न चल रहा है, और इसके विरुद्ध बंबई के गवर्नर मा० सर जार्ज लाइड ने अपने खरीते में भारत सर्कार को फटकार दिया है। सर जार्ज लाइड ने भारत सर्कार और मद्रास जिला एक सर्कार को स्पष्ट और निर्भय होकर सुना दिया है कि, तुम कुछ भी दो, दिये जानेवाले अधिकार थोड़े हों या अधिक, जो कुछ देना हो, अभी दे डालो। शुभस्य शीघ्रम्। एक बार इस वर्ष के चूक जाने पर इससे दुगुना भी फिर दिया गया, तो भी लोगों को संतोष न होगा। यही विचार सरदी विभागका के मुसलमानों के दिमाग में भी समाई है, और मान्टेग्यू साहब ने मि० बैपटिस्टा और मि० तिलक की सहायता से स्वतन्त्र स्वराज्य बिल पार्लमेन्ट में सन्मुख उपस्थित भी कर दिया है।

इस बिल का प्रथम पाठ ता० २१ को होकर ता० ५ जून को द्वितीय पारायण भी होगया। परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि मान्टेग्यू साहब की बंद मुट्ठी में कुछ भारी वस्तु है या केवल खाली ही हाथ है, इसका भारतवासियों पता तक नहीं है। हम स्वराज्य का बिल पेश कर भारत पर बड़ी कृपा दिखा रहे हैं, यही भावना इस घृत्ति का मूल है। डार्बी की घुड़दौड़ में कौनसा घोड़ा पहला आया, किस क्रिकेट मेच में किसकी जीत हुई। अथवा अमुक एक नाटकगृह में अमुक खेल हुआ, अमुक लार्ड साहब का विवाह हुआ, इस प्रकार की खबरें तो यहां दूसरे ही दिन छप जाती हैं, परन्तु जिससे हिन्दुस्तान का प्राण-पर सम्बन्ध है, उस बिल के प्रसिद्ध करने की सर्कार की ओर से तजवीज़ न हो, भला इस पर किस भारतवासी की आत्मा संतप्त हुए हुए बिना न रहेगी? भारत के राजकीय भवितव्य की स्वामिनी पार्लमेन्ट *होने के कारण अथवा भारत की राजकीय चोटी इँग्लैण्ड के मुट्ठी भर* लोगों के हाथ में रहने के कारण; उसे किस ओर झटका दिया जाय, इसकी सूचना भारत सर्कार को पहले से ही देने की उन्हें आवश्यकता नहीं जान पड़ती, यह बात एक प्रकार से साधारण ही है। सारांश आज १९१४ से शुरू की हुई हलचल का इन दो चार महिनों में अवश्य कुछ फल मिलेगा। वह फल छोटाही क्यों न हो, परन्तु पुष्ट और अच्छा निकलता है या सूखा और गलाहुआ रोगयुक्त, सो देखना चाहिये।

स्वराज्य योजना का मसौदा पार्लमेन्ट के सन्मुख उपस्थित करने से पूर्व ही मान्टेग्यू साहब ने अपने भाषण में रौलेट बिल का समर्थन किया है। इस क़ानून से भारतीय जनता के स्वातंत्र्य पर हम कोई नया दबाव नहीं डालते हैं। जिस स्वतन्त्रता के चले जाने के सम्बन्ध में आज भारतवासी चिल्ला रहे हैं, वह पहले से ही अन्य कानूनों के द्वारा छीन लीगई है, इस प्रकार आपने विचित्र विधान किया। परन्तु यदि वस्तुस्थिति ही ऐसी है तो फिर इन नये कानून के बनाने का खटाटोप करने को कहा किस ने था? विलायत का

स्वतंत्रताप्रिय मजदूर दल

अलबत्ता इस समय चुपचाप नहीं बैठा है। मज़दूर दल के नेता राबर्ट विलियम, राबर्ट स्मिली और जार्ज लेन्सबरी ने एक घोषणापत्र प्रकाशित कर भारतवर्ष में की नौकरशाही का बल पूर्वक निषेध किया है। और रौलेट कानून को शीघ्रता पूर्वक उठा कर स्वराज्य के अधिकार भारतवासियों को देना आवश्यक हैं, इस प्रकार का मत दिया है। मई महिने की पहली तारीख को लंदन में तीन लाख लोगों की सभा में उपरोक्त प्रस्ताव पास हुआ है। इसी प्रकार 'राष्ट्रीय स्वातंत्र्य रक्षक मण्डल' नामक विलायत की एक प्रभाव शालिनी संस्थाने यह प्रगट कर कि,—जिस देश के राज्य कारोबार की जवाबदारी आप लोगों पर है, उस देश का राज्य कारोबार लोकशाही के तत्वों को ताक में रख कर चलाया जाता है, भारतीय जनता के प्रतिनिधियों को सम्मति के विरुद्ध जो कायदे उनके सिरलादे जाते हैं, वे अन्यान्य युक्त है—रौलेट बिल का विरोध किया है। सम्राट् ने अभीतक रौलेट बिल के लिये सम्मति नहीं दी है, ऐसा कहा जाता है। और यदि वस्तुस्थिति ऐसीही हो तो इन सब हलचलों का अवश्य कुछ न कुछ परिणाम निकले बिना न रहेगा। यहां भारत में इस कानून के सम्बन्ध में जो झगड़ा हुआ, उस पर विचार करने से सब पर दया करनी होगी। इस काम में नौकरशाही की दशा बुरी बन गई है, इसे कहने की कोई आवश्यकता नहीं। हमें आज वर्तमान पीढ़ी के भारतीय लोगों से सहायता या अनुमोदन नहीं मिलता, अतः उन्होंने अगली पीढ़ी के नागरिकों अर्थात् आज कल के विद्यार्थियों को रौलेट कानून की शिक्षा देना आरंभ किया है। इस महत्व के विषय की परिक्षा भी रखी गई है। इतना तो भी ठीक हुआ कि, इस विषय में उत्तमता पूर्वक सफल होनेवाले विद्यार्थियों को भारत सर्कार के पोलिटीकल और सी० आई० डी० विभाग की नौकरी दीजायगी-ऐसा प्रगट नहीं किया गया। नौकरशाही को यह बात अच्छी तरह ध्यान में रखनी चाहिये कि इन पूर्वकाल की परिस्थितियोंने कितने ही राजकीय पातक किये हों, किन्तु अब भी उन्हें इस भारत भूमि में अपने लाभ के लिये देश से निमक हरामी करनेवाला एक भी मनुष्य किसी भी जाति या धर्म में न मिलेगा।

पंजाब में के फौजी कानून की छाया अभी तक दीख पड़ती है। अमृतसर के हैदवाले लूटो मुकदमे के २१ अपराधियों में से २० को फाँसी की सजा दीगई है। ट्रिब्यून के संपादक कालीनाथ रॉय . . . को सरल मजदूरी युक्त कैद और एक हजार रुपये जुर्माने की . . . दीगई। दूसरे स्थानों के अन्य मुकद्दमों में भी अमानुष सजा दीजा रही है . . . पंजाब इस जुल्म की जन्त्री में से निकाला जारहा है। इन सब . . . मित, वे लगामी, अप्रमाणबद्ध अन्यायों से संतप्त होकर बंगाल त्रिखण्ड कीर्ति कवि और महासाधु डॉ–रवीन्द्रनाथ टागोरने . . . पूर्व वॉइसराय की ओर से दीहुई 'सर' की उपाधि का परित्याग . . . दिया है। रवीन्द्र बाबू उदार विचारोंवाले हैं। योरोप . . . आपके अगणित भक्त हैं; आप की राज्यनिष्ठा के . . . वाइसराय महोदय ने आप को प्रशंसापत्र दिया था। परन्तु इन . . . का भी अंतःकरण असहाय भारतीय जनता के लिये टूक २ होने लगा और इसी कारण पंजाबवाले अन्याय का निषेध करने को आप . . . ये उद्गार निकले हैं। वॉइसराय को भेजे हुए अपने पत्र के अन्त . . . रवीन्द्र बाबू लिखते हैं कि मेरे देश भाइयों को जो सर्कार इस . . . त्रास दे रही है, मुझे उसकी दीहुई

सर्कारी उपाधि धारण करने में लज्जा

प्रतीत होती है। मैं अपने जिन देश भाइयों में से एक हूं, उनकी होती हुई दुर्दशामें; उपाधि मुक्त कर मुझे भी भाग लेने दीजिये। अपने दूसरे एक पत्र में आप लिखते हैं कि, अंग्रेजी समाचार पत्र हम लोगों पर होने वाले जुल्म को देख अपना मनोरंजन कर लेते हैं। और हमारी अतुल सामर्थ्यशाली सर्कार में क्षमा करने जितनी महत्ता नहीं है। ऐसी परिस्थिति में मैं इस पदवी से उदासीन बनताहूं। धन्य रवीन्द्र बाबू! आप वास्तव में ही धन्यवादार्ह हैं। डॉ० सुब्रह्मण्यम् अय्यर तथा आप जैसे अद्वितीय देशभक्त में शिरोमणि इस भारत में हैं, इसीसे सर्वत्र फैले हुए घोर अन्धकार में आप के तेज के दिव्य प्रकाश से भारत अपना मार्ग खोज सका है।

महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन पर स्वकीय और परकीयों के आक्रमण होते देख बड़ा खेद होता है। सत्याग्रह के सिवाय अन्य सब नियमबद्ध मार्गों अवसान होजाने के कारण ही महात्माजी ने यह पवित्र आन्दोलन अत्यन्त सात्विक बुद्धि से सत्य और अहिंसा रूपी सुदृढ़ तत्वों के पाये पर आरम्भ किया है। 'हम किसी भी मनुष्य के शरीर, मन, अथवा मालमत्ते को यत् किंचित् भी धक्का न पहुँच सके, इस प्रकार से वह आन्दोलन मचायेंगे।' यह सत्याग्रह की प्रतिज्ञा है। सत्याग्रह के विरोधियों ने भी इसके विरुद्ध–प्रतिज्ञा तय्यार की है, जिस पर अधिकांश सभी दर्बारियों के हस्ताक्षर हैं। पहले सप्ताह में ही इस पर ग्यारह सौ हस्ताक्षर होगये हैं, और इस प्रकार की सर्कार प्रिय . . . प्रतिज्ञा पर ग्यारह हजार ही क्या! ग्यारह लाख हस्ताक्षर भी . . . इस दुर्दैवी देश में होसकेंगे। इस प्रतिज्ञा में सत्याग्रह ही . . . प्रत्येक कानून भंग करनेवाले आन्दोलन का हम भरसक प्रय . . . भंग कर डालेंगे, इस प्रकार हस्ताक्षर करनेवालों ने प्रगट किय . . . स्वतः मान्टेग्यू साहब ने महात्मा गांधी के सम्बन्ध में पार्लमेंट के . . . अपना आदर व्यक्त किया और साथही सत्याग्रह का विरोध . . . तब मान्टेग्यू साहब के समान ही मेरा मत है, यों कह कर स . . . कृपा कटाक्ष की कक्षा में आनन्द से दौड़ लगानेवाले दूधमुँहे इस . . . में हों तो क्या आश्चर्य है? इन सब स्वकीय परकीयों ने म . . . गांधी पर ढेले लुढ़काने की शुरूआत की है। परन्तु महात्मा गांधी . . . आन्दोलन इतना पवित्र, शुद्ध और सात्विक तथा दैवी . . . उस पर

ढेलेही क्या, पर सारा हिमालय

ढहा दिया जाय तो भी वे अपने मत से च्युत न होंगे। महात्मा . . . के आन्दोलन का विरोध करनेवालों ने सारे भारत के तिरस्कृत . . . बिल के प्रतीकारार्थ कोई अन्य राजमान्य मार्ग ही दिखाया . . . रौलेट बिल के विरुद्ध खाली तलफने, या हाथ पाँव पटकने . . . कोरी नापसंदगी दर्शाने से क्या होगा? रौलेट कानून का उठा . . . के लिये सर्कार को एकही नहीं, वरन् दूसरे किसी नियमबद्ध मार्ग . . . विवश करना ही चाहिये, यह बात सूर्य प्रकाश के समान स्पष्ट . . . तो फिर सत्याग्रह व्यतिरिक्त किसी अन्य मार्ग के दिखाने का पुण्य . . . सब मुमदियों में से कोई भी क्यों ग्रहण नहीं करता, सो समझ में . . . आता। सत्याग्रह ने जनता में विश्वास उत्पन्न कर दिया है। सत्याग्रह . . . ने हिन्दू-मुसल्मानों में एका कर दिया है। सत्याग्रह ने असहाय . . .

के हाथ में एक सतेज शस्त्र देदिया है। विगत मास के दंगे के लिये सत्याग्रह ज़िम्मेदार नहीं, इस बात को एक दृष्टि से ये सत्याग्रह विरोधी भी स्वीकार करते हैं। इस आन्दोलन से अराजकों ने लाभ उठाया, ऐसा जब कहा जाता है उस समय सत्याग्रह के कारण दंगा फसाद नहीं हुआ, न सत्याग्रहीयों ने ही दंगा किया है, ऐसा स्वीकार करना होगा। परन्तु फिर ये लोग सत्याग्रह को फांसी देने के लिये क्यों उतारू हुए हैं? उनके उद्गारों परसे तो यह स्पष्ट प्रगट होरहा है कि; मारपीट या लूटपाट ये अंग्रेज़ी राजनीति के तत्व नहीं हैं, इस प्रकार ठसक से कहनेवाले अंग्रेज मुसद्दियों को भी हिन्दू-मुसलमानों का एका देख कर अच्छा नहीं लगता। यह एका सत्याग्रह ने करा दिया, क्या यह भारत पर थोड़ा उपकार हुआ? सर शंकरन् नायर ने अपनी मतभेद पत्रिका में स्पष्ट कहा दिया है कि; 'यदि लोकायत्त राज्यसत्ता होती तो सन १८९७ में प्लेग निमित्त पूने में खून न हुआ होता। सन १९०८ में तिनेवल्ली में दंगा न होपाता। इसी प्रकार आज १९१९ में लोकायत्त सत्ता होती तो रौलेट बिल जैसे कानून पास न हुए होते। और यदि होते वे वापस उठा लिये जाते, और पंजाब में प्रचलित अनन्वित कृत्यों के होने का मौका न आता। परन्तु इतनी बातें

[illegible]

भी इस प्रकार की अज्ञतामय विचार सरणी द्वारा अपनी आत्मवञ्चना करली है। उन्हें केवल भारत की ही नहीं वरन् सारे संसार की प्रगति की फिकर पड़ रही है। इतिहास ऐसे उदाहरण बुद्धिमानी सिखाने के लिये हमारे सामने रखता है।

अमेरिका में होमिओपेथिक शिक्षा।

(लेखक—श्री. कृष्णगोपाल माथुर)

वर्तमान युग का अमेरिका सब बातों में सब से आगे बढ़ा हुआ है। विद्या, कला-कौशल में उसने हद कर डाली है। जिस प्रकार वहां अनेक विद्याओं की शिक्षा दी जाती है उसीप्रकार होमिओपेथिक शिक्षा का भी वहां अच्छा प्रबन्ध है। इस विद्या का अमेरिका प्रधान केन्द्र समझा जाता है। अस्तु, आज "चित्रमय जगत्" के प्रेमी पाठकों को इसका थोड़ासा हाल सुना देना ठीक होगा।

अमेरिका में पहले इस विद्या का प्रचार नहीं था। सन् १७९६ ई० में महात्मा सामवेल हानेमन् ने जर्मनी में इस विद्या का आविष्कार किया था। उस ज़माने में जर्मनी को इस आविष्कार से बहुत फायदा हुआ। इसके बाद मि० हेरींग, लिपि आदि सज्जन इस आविष्कार को अमेरिका में लाये और वहां इसका खूब प्रचार बढ़ाया। आपको इस उदारता के लिये अमेरिका वालों ने आपका बड़ा अहसान माना और आपको अनेक धन्यवाद दिये। इन दोनों सज्जनोंने यह बात साबित करदी कि,—होमिओपेथिक वह चिकित्सा पद्धति है, जिसमें विज्ञान का सौलहों आने हाथ है और जो विज्ञान के बिना चल नहीं सकती।

इस बात को बहुत अर्सा बीत गया। इसके बाद कई लोगों में इसका प्रचार बढ़ गया, और अब यह बताना भी मुश्किल हो गया कि, पहले किस देश में किस समय इसका प्रचार हुआ था।

हेरिंग और लिपि ने सन् १८४८ ई० में, सब से पहले अमेरिका के फिलेडेलफिया शहर में एक होमिओपेथिक कालेज खोला। अमेरिका में यही प्रथम कालेज हुआ। इसके बाद धीरे २ कई स्थानों में कई कालेज खुल गये। इस समय वहां सब से अच्छे कालेज जिनको कहना चाहिये १०—१२ हैं। इन कालेजों में प्रवेश करने के लिये "प्रिलिमिनरी एज्यूकेशन" से बात चीत करनी पड़ती है। प्रथम दो साल तक वहां कालेज की शिक्षा अर्थात् ब्रिटिश गवर्नमेन्ट स्थापित "यूनिवर्सिटी आफ इन्टरमेडियट्" की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की शिक्षा दी जाती है। फिर सब कालेजों में उत्तीर्ण होने के लिये पढ़ाई शुरू कर वाई जाती है।

बहुतों का ख़याल है कि, यहां सिर्फ होमिओपेथिक औषध प्रयोग की ही शिक्षा दी जाती है, पर ऐसा नहीं है। यहां एलोपेथिक, होमिओपेथिक, केमिस्ट्री, बक्टीरिओलोजी, आदि की शिक्षा बराबर दी जाती है। यहां शस्त्र चिकित्सकों की प्रधानता खूब है। जिनमें डा० हेट का नाम विशेष उल्लेख योग्य है। इन्होंने 'Orificial Surgery' का आविष्कार करके शस्त्रचिकित्सा में सब से ऊंचा स्थान प्राप्त किया है।

इसी तरह डॉ० केंट ने भी खूब नाम कमाया है। इन्होंने बड़े २ होमिओपेथिक ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित किये हैं। इनके ग्रन्थ यहां बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। अब थोड़े दिनों से इन्होंने अवसर लेलिया है। इसी तरह डा० बरिक फोपर्सवेंट, डिवे, कोपलैण्ड आदि सज्जनों के सुनाम उल्लेख योग्य समझे जाते हैं। इन्होंने कालेजों में बड़े २ काम कर दिखाये हैं।

यहां पर दो साल तक विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय के साथ लेबोरटरी वर्क करना पड़ता है। यहां की लेबोरटरियां बहुत अच्छी हैं। वैसी दूसरे देशों में नहीं देखी जातीं। यहां प्रत्येक कालेज के साथ एक २ अस्पताल भी है। इनमें प्राय २००।३०० स्थान (Bed) ऐसे हैं, जहां छात्र रोगियों की परीक्षा द्वारा अपना ज्ञान बढ़ाते हैं।

यहां पर एक ऐसा श्रेष्ठ हास्पिटल है, जैसा पृथ्वी में भी नहीं है।

[illegible]

यहां के विद्यार्थी स्वावलम्बी होते हैं। बिना स्वावलम्बन के इनका किसी प्रकार ठिकाना नहीं लगता। भारतवर्ष के छात्र भी यहां पढ़ने को आते रहते हैं। उनमें से अगर किसी के पास भारत के होमियोपेथिक कालेज का सर्टिफिकेट होता है, तो वह नहीं माना जाता और उस छात्र को यहां के ढंग पर शुरू से पढ़ाई सिखाई जाती है। यहां के प्रति छात्र का खर्च १२५ डालर से १७५ डालर तक है। किसी २ स्टेट यूनीवर्सिटी में इससे कुछ कम पड़ता है। खर्च विद्यार्थियों की मर्ज़ी पर निर्भर है। इससे अमीर गरीब छात्रों का काम बराबर चल जाता है।

इन कालेजों के अध्यापक बड़े मिलनसार और सज्जन पुरुष होते हैं। भारत के छात्रों को वे उसी दृष्टि से देखते हैं जिससे कि अमेरिका आदि देशों के छात्रों को देखते हैं। यह उनमें बड़ा अच्छा गुण होता है। इसीलिये यहां पर दूर २ देशों के छात्र पढ़ने आते हैं और यहां से विद्वत्ता प्राप्त कर देशान्तरों में अपना नाम करते हैं। यहां की शिक्षा पद्धति ऐसी है कि, कितनी ही कठिनाइयों के रहते भी विद्यार्थी थोड़े समय में होशियार हो जाता है। बात यह है कि, यहां की शिक्षा खाली पुस्तकों या ज़बानी जमाखर्च से नहीं होती, बल्कि, रोगियों पर परिक्षा कर २ के छात्रों के दिमागों में बात समाई जाती है। इसका फल जो होता है, वह प्रत्यक्ष ही है। हमारे यहां कोरी भिन्न २ बातें नहीं हैं। यहां सब काम परिश्रम से किये जाते हैं।

लेख का कद बढ़ जाने के भय से मैं इस लेख को यहीं समाप्त करता हूं। यदि किसी महाशय को इसका पूरा विवरण जानना हो, तो वे इस पते पर पत्रव्यवहार कर सकते हैं,—

"पद्मरतियम, हानिमेन मेडिकल कालेज एण्ड हास्पिटल शिकागो, अमेरिका।" ये भारत के बंगाली छात्र हैं, और प्रत्येक बात का उत्तर बड़ी सहृदयता के साथ देते हैं।

के अभिमानी भी जर्मन सोशियालिष्टिक सर्कार से अलग होकर मित्रसर्कार की सहायता से जर्मनी में ही अमेरिका की तरह पूंजीदारों की लोकशाही स्थापित किया चाहते हैं, अन्त इन लोगों की सहायता पर भी जर्मनी की सोशियालिष्टिक सर्कार को भरोसा नहीं हो सकता। जर्मनी में सोशियालिष्ट पक्ष का मताधिक्य जो भी बढ़ गया है, तथापि इसमें भी और दो भेद हैं। पर राष्ट्रीय सम्बन्ध में अपना पूर्व पद सम्हाल कर बैठने की आवश्यकता नहीं, इस प्रकार कहनेवाला मजदूरों का बड़ा दल आज लड़ने को तय्यार नहीं है। उस दल का कहना है कि जर्मनी की अन्तर्गत व्यवस्था सोशियालिष्टिक मतानुसार शीघ्रता से करके समाज की स्थिति सोशियालिष्टिक मत से ठीक सुधारती है, इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण संसार को दिखा कर, इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमेरिकामें भी अपने मत का आन्दोलन जोरों पर शुरू किया जाय कि; जिससे वहां की सर्कार भी सोशियालिष्टिक बन जाय और और राष्ट्रों में परस्पर का सम्बन्ध नाम शेष होने का मोका जर्मनी पर आने का संकट दो चार वर्षों की अवधी में दूर हो जायगा। यह पक्ष जर्मनी को यों कहता है कि, व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो! सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करदो, परन्तु उसमें की शर्तों का पालन न करना। यदि मित्र सर्कार बलात् तुम से सन्धी की शर्तों का पालन कराने ही लगे तो उतने ही के लिये गड़बड़ मचाओ, मित्रदल को त्रास दो। और इतने पर भी यदि ये लोग पीछा न छोड़ें, तो उनकी बात सुनलो! और मिली हुई अवधी में संसार भर में सोशियालिष्टिक मत के प्रसार में अपनी शक्ति लगा दो। यह कार्यक्रम न लड़नेवाले सोशियालिष्टोंने बतलाया है। मि० शीडमन के मन्त्रिमण्डल का कहना है कि यह कार्यक्रम हमें पसन्द नहीं। जो शर्तें हमें नहीं पालनी हैं, उनके ऊपर पर बैठे हस्ताक्षर क्यों किये जायें? इस प्रकार वर्तमान जर्मन सर्कारने हठ धारण किया है। ऐसा करने का कारण यह जान पड़ता है कि जर्मनी के सब मजदूरोंने भी मि० शीडमन के मन्त्रिमण्डल को लड़ने के मोके पर भी एके के निश्चय और मनोभाव से सहायता करने का वचन दिया होगा। अपने काम में सब लोगों की ओर से अनुमोदन प्राप्त कराने के लिये मि० शीडमनने प्रे० विलसन की १४ शर्तों

पड़ता है कि जर्मनी के सब मजदूरोंने भी मि० शीडमन के मन्त्रिमण्डल को लड़ने के मोके पर भी एके के निश्चय और मनोभाव से सहायता करने का वचन दिया होगा। अपने काम में सब लोगों की ओर से अनुमोदन प्राप्त कराने के लिये मि० शीडमनने प्रे० विलसन की १४ शर्तों
को पकड़ कर जर्मनी की ओर से सन्धि की शर्तों को १८० पृष्ठ की

पुस्तक तय्यार कर उसका भारी और प्रसार कर दिया है। जर्मनी को अपने उपनिवेश छोड़ देना चाहिये, इस कलम के सम्बन्ध में जर्मनी का यह कहना है कि राष्ट्रसंघ की ओर से इन उपनिवेशों का कारोबार यदि किसी को सौंपा जावे तो वह जर्मनी ही को मिलना चाहिये। राष्ट्रसंघ की कल्पना जर्मनी को स्वीकार है। और तद्विषयक कुछ नियम भी जर्मनीने तय्यार किये हैं। राष्ट्रसंघ में शुरू से ही समानता के अधिकार से बैठने की आशा जर्मनी चाहता है। इस मुद्दे के सम्बन्ध में पंच महाराष्ट्रों का उलटा उत्तर यह है कि राष्ट्रोंमें के परस्पर के सन्धि-नियमों का जर्मनी की ओर से भंग होने के कारण राष्ट्रों के परस्पर के सम्बन्ध और कानून को पूज्य मानने की आदत पड़ने तक कुछ वर्ष के लिये जर्मनी का राष्ट्रसंघ में एकदम प्रविष्ट होने देना संसार के लिये हितकर नहीं। जर्मनी की परीक्षा करके उसे राष्ट्रसंघ में सम्मिलित कर लेना मि० विलसन की, १४ शर्तों के विरुद्ध नहीं है। जर्मनी अपराधी है, अतः उसकी परीक्षा लेना आवश्यक है, इसमें भी कुछ वर्ष लगेंगे, अतः राष्ट्रसंघ की ओर से कारभारी के नाते जर्मन उपनिवेश पुनः उसको मिल ही नहीं सकते। जर्मनी को एक लाख से अधिक सेना न रखनी चाहिये, और विमान तथा नौसेना पर भी प्रतिबन्ध रहे। इस शर्त की सब बातें जर्मनी को स्वीकार हैं। परन्तु साथ ही इस पर वह यों कहता है कि अन्य राष्ट्रों की सेना और जल सेना ज्यों २ कम होती जायगी, त्यों २ जर्मनी भी अपनी सेना कम कर देगा। राष्ट्रसंघ के नियमानुसार सब राष्ट्रों की सेना और नौसेना कम होनेवाली है। इस विषय में राष्ट्रसंघ के नियम बन कर, उनपर जो राष्ट्र अपनी सम्मति दे उसेही अपनी फौजी बल निश्चित मर्यादा से बाहर न बढ़ने देना चाहिये, ऐसा प्रतिबन्ध है। परन्तु राष्ट्रसंघ के इस उद्योग में लगजाने पर नियम तय्यार होने में और राष्ट्रों की उन नियमोंके लिये सम्मति प्राप्त करने में योरोपखंड को डरा देनेवाला जर्मनी का हौआ भगा देना चाहिये। छुपकर फौज तय्यार करने की कला जर्मनी में बहुत बढ़ी हुई है। और इसीलिये फ्रांस का जर्मनी सम्बन्धी भय किसी भी प्रकार कम नहीं हो सकता। जर्मनी की फौजीशक्ति को बन्धन में डालने से वह बिलकुल निर्बल हो गया है, ऐसा कितने ही वर्ष तक प्रत्यक्ष देखे बिना फ्रांस कभी अपना सेना परिमाण कम करने को तय्यार न होगा। और फौजी व नौसेना सम्बन्धी खर्च कम करने के लिये यदि फ्रांस की सम्मति न मिलेगी तो योरोपखण्ड में दूसरों की सम्मति भी न मिल सकेगी। अर्थात् प्रे० विलसन के चौदह तत्वों के अनुसार सारे संसार का फौजी भार हलका करने के लिये प्रथम जर्मनी को खस्सी बना देना आवश्यक है। औरों से कुछ वर्ष पहले जर्मनी खस्सी हो जाय इतना अन्याय फौज का दुरुपयोग करनेवाले जर्मनी के पल्ले बांधना प्रे०विलसन और लाइड जार्ज के लिये अनिवार्य हो गया है। अपने हाथों से जर्मन उपनिवेश निकल जाने के कारण उनके लिये हठ धारण करने और गड़बड़ मचाने के सिवाय वह कुछ नहीं कर सकेगा। राष्ट्रसंघ में प्रविष्ट होने के लिये कुछ वर्ष लगे तो भी, और अन्य लोगों से पूर्व ही कुछ वर्ष तक सेना बल घट जाय तो भी मानहानि के सिवाय जर्मनी का कुछ भी नुकसान न होगा। फौजी शिक्षा में पारंगत बने हुए आज भी ७० लाख आदमी जर्मनी में मौजूद हैं। तब अन्य राष्ट्रों से पहले ही ५ वर्ष फौज को कम कर देने का समय आया तो इसमें जर्मनी को कोई विशेष हानि नहीं है। उपनिवेश, राष्ट्रसंघ और फौज घटा देने के विषय में आज जर्मनी चिल्लाता हो, तथापि वह फिर से लड़ने के लिये तय्यार होगा ऐसा नहीं जान पड़ता। मुख्य झगड़ा है वह हर्जाना देने और पौलैण्ड को फ्रांस में सम्मिलित कर देने सम्बन्धी है। ऱ्हाइन नदी के किनारे का जानदार जिला और वहां की कोयले की खदानें १५ वर्ष के लिये फ्रांस को सौंप देने और इतने ही मुद्दत तक ऱ्हाइन के तटपर मित्र सर्कार की सेना रखने को जर्मनी तय्यार नहीं है। इस प्रकार जर्मनी का मुल्क कुछ समय के लिये मुंह से मांगना प्रे० विलसनकी १४ शर्तों के विरुद्ध होने से भी जर्मनी इन कलमों के विरुद्ध है। जान पड़ता है कि ऱ्हाइन नदी के इस प्रश्न को सीमामर्यादा ... को भी जर्मनी उत्पन्न होजायगा। फ्रांस को ऱ्हाइन नदी पर्यन्त में किये बिना जर्मनी से उसकी रक्षा होना असम्भव है। नेपोलियन के समय से ही फ्रांस की मनमें यह भ्रम घुसा है। विरुद्ध ऱ्हाइन नदी को अपने अधिकार में किये बिना पश्चिम अर्थात् हालैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, आदि राष्ट्रों के राज्यभाग से हम वञ्चित रह जायेंगे, इस प्रकार जर्मनी का दृढ़ विश्वास है। यहां तक फ्रांस के अधिकार में रहा हुआ 'सार' प्रांत ... से ही फ्रांस का हुए बिना न रहेगा और भावी युद्धदंड की चूकने पर ऱ्हाइन नदी का प्रांत भी सदा के लिये मित्रों के हाथ चला जायगा, इस प्रकार जर्मनी को भय होरहा है। यह जानकता है कि जो १५ वर्ष तक धरना देकर बैठे रहें, वह लिये ही स्वामी न बन जायेंगे? क्या यह बंधु प्रवेश दूसरे मुल्क अधिकार में न करने के तत्व को छोड़कर है? जर्मनी के प्रलाप पर मित्र सर्कार की ओर से यह उत्तर दिया गया है यह बंधुप्रवेश हमेशा के लिये मुल्क तोड़ देने की दृष्टि से नहीं किया गया है। यदि जर्मनी से युद्धदण्ड न लिया जाय तो भी हर्जाना अवश्य वसूल किया जायगा। इस हर्जाने का रुपया समय समय पर ही जमा करा देने का जिम्मेदार कौन है? मित्र ... हानि पहुँचाने की दुष्ट बुद्धि से अथवा जर्मनी में बोलशेविकी का विशेष प्रचार होजाने के ... यदि जर्मनी ने सिर उठाया तो हर्जाना कैसे वसूल किया जायगा। जर्मनी की अन्तस्थ स्थिति ... रहे, तो भी फ्रांस को कुछ न कुछ द्रव्य जर्मनी की ओर से ही चाहिये, और इसीलिये ... प्रांत में की कोयले की खदानें पर आज अधिकार जमाये बिना फ्रांस को कुछ चारा नहीं। १५ वर्ष तक इन खदानों का योग करने के बाद यदि जर्मनी आचरण ठीक २ जानपड़ा तो खदानें बेच देने में फ्रांस की हानि नहीं है। जर्मनी के मुल्क को अधिकार में लेने को सार जिला और ऱ्हाइन नदी सम्बन्धी शर्तें सन्धिपत्र में नहीं ... गई हैं, वरन् हर्जाने की वसूली सम्बन्धी कलमों की अमल कराते रहने के लिये जर्मनी की चोटी अपने हाथ में रहे, इस से ये कलमें सन्धिपत्र में रखी गई हैं। अर्थात् ये प्रे० विलसन के तत्वों को से परे नहीं हैं, इस प्रकार मित्र सर्कार का कहना है। ... का बोझ भयंकर स्वरूप का निश्चय कर दिया जाने के ... ही इसके लिये जर्मनी से हामी भराई जाती है, इस ... जर्मनी की तकरार है। जर्मनी हर्जाना चुकाने ... तय्यार है, परन्तु ७५ अरब रुपयों से अधिक ... निश्चित करने पर जर्मनी से वह वसूल होना अशक्य होगा। ... फिर किश्त चूकने पर जर्मनी को अपना मुल्क सदा के लिये त्याग देना पड़ेगा, इस प्रकार की जर्मनी की विचार-सरणी है। ७५ अरब रुपये हर्जाना निश्चित कीजिये, जर्मनी को व्यापार सम्बन्धी सुभीता दीजिये, न उसके व्यापारी जहाज ही छीनिये कि जिससे हर्जाने की किश्तें भी न चूक सकें और न मित्र सर्कार को ही किश्त चूकने के ... से उसकी चोटी अपने हाथ में रखने का प्रयोजन रहे। ७५ अरब से अधिक द्रव्य न मांगियें, राष्ट्रसंघ में शुरू से ही सम्मिलित कीजिये और ऱ्हाइन नदी को खुली छोड़ दीजिये, इस प्रकार जर्मनी का हर्जाने के सम्बन्ध में उत्तर है। हर्जाने की रकम कम करने के लिये फ्रांस और इँग्लैण्ड का लोकमत तय्यार नहीं, किन्तु मजदूर पक्ष इसको स्वीकार करता है। इँग्लैण्ड और फ्रांस को पूंजीवालों का यह भय होरहा है कि यदि जर्मनी को थोड़ी सी रकम लेकर छोड़ दिया, तो इँग्लैण्ड और फ्रांस खर्च के बोझ से दब जायेंगे और व्यापारी चढ़ा उतरी में जर्मनी ... राष्ट्रों से आगे बढ़ जायगा। जर्मनी ने जहाज डुबोये, घर ... नाश किया और फौजी पेन्शन का बोझा बढ़ाया इन सब ...

की पाई २ जर्मनी से वसूल करना न्याय संगत है। तीस वर्ष तक जर्मनी कष्ट उठावे और उसके इस कष्टसाध्य द्रव्य का लाभ मित्र सर्कार ले। यदि आज की सन्धि से इस प्रकार की व्यवस्था न होसकी तो लड़ाई फिर अपने सिर ही पड़ेगी, इस प्रकार पूंजीदार पक्ष का मत है। जर्मनी से हर्जाना क्यों छोड़ दिया जाय? जबकि प्रे० विलसन के १४ तत्वानुसार हर्जाना वसूल किया जासकता है, तो फिर वह पूरा २ क्यों न लिया जाय? इस समय शत्रु पर दया करने का कारण क्या है? न्हाइन नदी के किनारे पर का मुल्क अधिकार में लेकर उसके द्वारा हर्जाना ३० वर्ष तक भरपूर वसूल करना और पोलेण्ड को उत्तर सिलेशिया और डन्झिक बन्दर तक का मुल्क दे देना, इन तीन कलमों के कारण ही कदाचित् जर्मनी के लोग घिसिया कर अपनी नाक काटकर मित्र सर्कार के लिये अपशकुन करने को तय्यार हुए हों? अतः इन तीन कलमों में समझौता होसके तो देखना चाहिये, इस प्रकार फिर से लड़ाई का त्रास दूर करने के लिये कितने ही मुत्सद्दियों को भास होना स्वाभाविक है। जून के प्रथम सप्ताह में पञ्च महाराष्ट्रों ने उपरोक्त बातों के सम्बन्ध में थोड़े से समझौते के उपाय सूचित किये हैं। और जान पड़ता है कि न्हाइन नदी के किनारे के देश के सम्बन्ध में कुछ निराला रंग जमेगा। मई के अन्त में न्हाइन नदी के किनारे पर के लोगों की स्वतन्त्र लोकशाही स्थापित होने की बात प्रसिद्ध हुई है। इस नई लोकशाही के प्रतिनिधि मित्र सर्कार के पास जून के आरंभ में सन्धी की बात चीत करने गये हैं। न्हाइन नदी के किनारे की यह नई लोकशाही और कोई न होकर जर्मन सर्कार के विरुद्ध बलवा करनेवाली टोली ही है। इसीलिये जर्मनी कहता है कि मित्र सर्कार इन्हें आश्रय न दे। परन्तु स्वसम्मति के तत्वानुसार जर्मनी के किसी प्रान्त ने यदि स्वतन्त्र लोकशाही स्थापित की, तो उसमें रुकावट डालने का प्रयोजन प्रे० विलसन के तत्वों में न होने से न्हाइन नदी की लोकशाही को सन्धी की शर्तों में ही मिला देने की ओर मित्र सर्कार की प्रवृत्ति दीख पड़ती है। इस नये कारस्थान के कारण यदि न्हाइन नदी का स्वतन्त्र राज्य स्थापित होगया तो नेपोलियन के समय का फ्रांस का हेतु सफल हो कर फ्रांस-जर्मनी के बीच के झगड़े का बीजही नष्ट होजायगा। इसके सिवाय न्हाइन नदी के किनारे के लोग मुख्य जर्मनी से फूट कर अलग होजानेवाले हैं, इस कारण जर्मनी का अन्तस्थ भी कमजोर पड़ जायगा। यदि जून महिने में न्हाइन नदी का कारोबार सधगया तो हर्जाने की रकम भी ७४ अरब के लगभग निश्चित होसकने का सम्भव है। न्हाइन नदी की नई लोकशाही के अस्तित्व में आजाने पर बव्हेरिया और जर्मनी की सम्मिलित स्वतन्त्र लोकशाही के स्थापित होने का सम्भव है। इस प्रकार सन्धी की चर्चा में रशिया की भांति यदि जर्मनी के आप ही आप टुकड़े होगये तो उन भिन्न २ टुकड़ों की ओर से सन्धि के लिये तत्काल ही सम्मति मिल जायगी। और मुख्य जर्मनी अर्थात् प्रशिया को भी स्वीकार करने लिये विवश होना पड़ेगा। स्वीकार करते समय जर्मनी के अन्तःकरण को तीव्र वेदना न होने पावे, इसके लिये हर्जाने की रकम बहुत कुछ घटाई जा रही और पोलेण्ड को दिये जानेवाले उत्तर सिलेशिया प्रान्त के सम्बन्ध में भी जर्मनी के लिये कुछ सुभीता कर दिया जायगा, ऐसा कहते हैं। न्हाइन नदी के तट पर की स्वतन्त्र लोकशाही के कारण समझौते का मार्ग दोनों पक्ष के लिये खुला हुआ है, और उसका पूर्ण उपयोग करने की ओर प्रे० विलसन और मि० लायड जार्ज का ध्यान है, ऐसा प्रगट हुआ है। सन्धी की शर्तों के विरुद्ध जर्मनी ने जो कुछ प्रस्ताव किया है उसमें फ्रांस, इंग्लैण्ड और अमेरिका के मजदूर पक्ष की ओर से बहुत कुछ सहानुभूति मिली है, पर जो भी हो, तब [illegible] पञ्चमहाराष्ट्र अपने [illegible] हेतुओं को छोड़ देने के लिये विवश न होंगे। आस्ट्रिया की सन्धि का [illegible] भी प्रगट होचुकी है, और उसका एक [illegible] राज्य बनाकर [illegible] और जुगोस्लावी का [illegible] है। टर्की [illegible] [illegible] के [illegible] विभागी का कारोबार [illegible] दिया जायेगा है। आस्ट्रिया और टर्की [illegible] सम्बन्ध पर [illegible] करने की बात बाकी है। परन्तु पुनः लड़ने के लिये इनमें से एक भी समर्थ न होगा। क्योंकि [illegible] के [illegible] कर इनके कुछ भी [illegible] पर [illegible] करने के [illegible] के कारण [illegible] करने [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] है। [illegible] और

रूमानिया की सेना का पराभव किया है। परन्तु हंगेरी और रशिया की सेना का मेल अभी न होसकने के कारण तथा हंगेरी की अज्ञानगत दशा होती जाने से उस पर भरोसा रख कर जर्मनी का बैठा रहना मानो एकादशी के घर शिवरात्रि के जाने जैसा होगा। यदि ऐसा कहा जाय कि रशिया की ओर से जर्मनी को सहायता मिलेगी, तो लेनिन को भी मित्र सर्कार ने मई में बहुत कुछ घेर लिया है। पेट्रोग्राड शहर और उत्तर रशिया का प्रांत जून जुलाई में बालशेविकों के हाथसे लेकर वहां मित्र सर्कार के लिये अनुकूल राज्य पद्धति स्थापित होने का तर्क है। पश्चिम की ओर से पोलेण्ड ने भी लेनिन को रोक दिया है। पूर्व ओर से नई साइबेरियन सर्कार की सम्मति और सहायता से मास्को पर आक्रमण करने की तय्यारी हुई है। काकेशस पर्वत में की रशियन सेना ने बोलशेविकों से काकेशस प्रांत छीन कर मास्को का बुखारा समरकंद रेल्वे का सम्बन्ध तोड़ दिया है। इस सम्बन्ध के टूट जाने के कारण अफगानिस्तान और कास्पियन समुद्र के बीच के टापू में की बालशेविक सेना निरुपयोगी होकर अंग्रेजों के विरुद्ध अफगानिस्तान को सहायता देने के काम में भी न आवेगी। बोलशेविकों की सहायता अफगानिस्तान को न मिलने के कारण काबुल के अमीर साहब ने भारत सर्कार से सन्धी की बात चीत शुरू की है। सन्धी की योजना करने के लिये अंग्रेजी और अफगान सेना के बीच युद्ध स्थगित कर दिया गया है। अफगान सेना की हलचल से जागे हुए खोस्त वजीरिस्थान, अफरीदी आदि स्थानों के पठान अब भी अंग्रेजी प्रांत को थोड़ा बहुत त्रास दे रहे हैं। परन्तु मुख्य अफगानिस्तान के साथ का युद्ध समाप्त होजाने जैसा ही है। अफगानिस्तान से सन्धि होजाने पर इस ओर की अंग्रेजी सेना के द्वारा, कास्पियन प्रांत में की बोलशेविकों की खासी खबर लीजायगी। लेनिन स्वतः इस रीति से चारों ओर से घेरा जाने के कारण फौजी नज़र से रशिया में की बोलशेविक सेना जर्मनी के लिये कहांतक उपयोगी होसकेगी, सो स्पष्ट ही दीख पड़ता है। तथापि हंगेरी और रशिया से मेल करने का जर्मन सर्कार ने उद्योग शुरू किया है, और रशियन बोलशेविकों ने धनवान लोगों से बदला का व्यवहार कर उस वर्ग के अधिकार [illegible] का ध्येय स्वीकार करने से जर्मनी, रशिया और हंगेरी की खासी मरम्मत होकर पञ्चमहाराष्ट्रों से सामना करने को ठीक पड़ेगा। इस प्रकार का नया सन्धिपत्र जर्मनी के मुत्सद्दी गुप्त रीति से तय्यार कर रहे हैं। तीन राष्ट्र एकही जगह इकट्ठे किये जाने पर मित्र सर्कार का त्रास कहना बढ़ जायगा। किन्तु इससे जर्मनी, रशिया अथवा हंगेरी में पञ्चमहाराष्ट्रों को भयभीत करनेवाली शक्ति कहीं भी उत्पन्न होसकेगी। न्हाइन नदी के किनारेवाली लोकशाही यदि जून में ज़ोर शोर से स्थापित होगई तो अपने टुकड़े होने के भय से हताश बना हुआ जर्मनी बाहरी सहायता से कमर कसने का मार्ग त्याग कर मित्र सर्कार के साथ नम्रता का व्यवहार कर, सन्धि की बात चीत में कुछ परिवर्तन प्राप्त करने के उद्योग में लगेगा, ऐसे चिन्ह दीख पड़ते हैं।

[illegible] विनायकराव [illegible]

आप मा [illegible] [illegible] (हैदराबाद, दक्षिण) के सुपुत्र हैं। १४ वर्ष तक [illegible] विश्वविद्यालय हाईस्कूल में शिक्षा [illegible] सन १९१८ में [illegible] कर आप [illegible] के कृषि कालेज में प्रविष्ट हुए थे। [illegible] में [illegible] पर [illegible] प्रथम [illegible] का [illegible] प्राप्त कि[illegible] और [illegible] [illegible] में [illegible] द्वारा [illegible] [illegible] है, [illegible] के [illegible] का [illegible] को [illegible] [illegible]

साहित्य-समालोचन ।

ग्रंथ-साहित्य

(१) सदाचारदर्पण—लेखक राय साहब पं० रघुवर प्रसादजी द्विवेदी बी० ए० सम्पादक 'हितकारिणी' प्रकाशक 'हितकारिणी प्रेस जबलपुर पृ० सं० ३४६ छपाई सफ़ाई उत्तम मूल्य १।) रु०। लेखक महाशय से प्राप्त।

हिन्दी में आचार नीति की शिक्षा देनेवाली पुस्तकें बहुत कम हैं। द्विवेदीजी महाराज की इस पुस्तक ने मध्यप्रदेश में बड़ा मान पाया है। इसका प्रमाण यही है कि थोड़े से ही समय में इसकी यह द्वितीयावृत्ति निकल गई है। पुस्तक का विषय क्या है, सो नाम से ही प्रगट है। यदि हिन्दी पाठशाला की उच्च कक्षाओं में इसके पढ़ाने का प्रबंध किया जाय तो बड़ी अच्छी बात होगी।

(२) कालचक्र—लेखक 'विमल' प्रकाशक मनोनीत पुस्तकालय असरगंज मुँगेर पृ० सं० ५६ मूल्य ।) आने छपाई सफाई उत्तम। और प्रकाशक से प्राप्त होगा। वर्तमान समाज में शिक्षित कहानेवाले कई लोगों का व्यवहार अपने कौटुम्बिक जनों के साथ किस प्रकार का घृणास्पद होता है, उसकी झलक विमल महाशय की इन गल्पों में अच्छी तरह दिखाई देगी। सहोदर, विमाता, कृतज्ञता, और प्रेमपरिक्षा ये चारों गल्पें श्रीकमला, विद्यार्थी, चन्द्रप्रभा आदि पत्रों में प्रकाशित होचुकी है। पुस्तक नव शिक्षितों के पढ़ने योग्य हुई है।

(३) राजर्षि भीष्म पितामह—लेखक चन्द्रभूषण अवस्थी बी० ए० प्रकाशक ओंकार आदर्श चरितमाला-ओंकार प्रेस प्रयाग। पृ० सं० ११९ मू० ।=) यह पुस्तकमाला की २५ वीं मणि है। ब्रह्मचर्य का सच्चा आदर्श दिखानेवाले महापुरुष आदित्य ब्रह्मचारी भीष्म पितामह की पुण्यकथा पढ़ कर प्रत्येक भारतवासी को उससे अपने लिये शिक्षा ग्रहण करना चाहिये। पुस्तक बड़ी मनोरंजक और सरल सुबोध भाषा में लिखी गई है। भीष्म सम्बन्धी हिन्दी में २।३ नाटक और १।२ जीवनियाँ निकल चुकी हैं, परन्तु उनमें कितनी ही जगह पक्षपात से काम लिया गया है। यह पुस्तक छोटी होकर भी पढ़ने योग्य हुई है।

(४) पं० मदन मोहन मालवीय—यह भी उपरोक्त माला की २७ वी पुस्तक है। इसके लेखक पं० नंदकिशोर द्विवेदी एम० ए० और पृ० सं० १२६ मू० ।=)। माननीय मालवीयजी का परिचय कराने की किसी भी भारतवासी के लिये आवश्यकता नहीं है। क्योंकि आप की कीर्ति भारत में शुभ्र चन्द्रिका की भांति व्याप्त होरही है। प्रस्तुत चरित्र में आप के जन्म से लगाकर १९१८ की दिल्ली कांग्रेस से पूर्व तक की समस्त घटनाओं का संक्षिप्त किन्तु पूरा २ वर्णन किया गया है। मालवीयजी का जीवन प्रत्येक युवक के लिये अनुकरणीय है। यह पुस्तक माला के लिये भूषण है। हमें आशा है कि माला के सम्पादक महोदय इसी प्रकार कार्य बढ़ाते रह कर हिन्दी-साहित्य को पूर्ण करेंगे।

(५) चितौड़ की चढ़ाइयाँ—लेखक श्री० गौरीशंकर लाल अख़तर प्रकाशक हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ। पृ० सं० १०१ मूल्य ॥=)। अख़तर महाशय ने पहले यही पुस्तक उर्दू भाषा में लिखी थी। जिस का अच्छा आदर हुआ। इसी कारण अब उसे अपने हिन्दी में प्रकाशित कराया है। इसमें चितौड़ की तीन-चढ़ाइयों का वर्णन है। पहली 'महाराणी पद्मिनी' के लिये दूसरी महाराणी-करुणावती, राणा उदय सिंह, तीसरी हल्दी घांटी की लड़ाई महाराणा प्रताप, शक्ति सिंह के सोलह पुत्र, दिल्ली और मेवाड़ का मिलाप आदि प्रत्येक ऐतिहासिक घटना का वर्णन पढ़ते २ नाना भावों की उत्पत्ति होने लगती है। कभी वीररस तो कभी करुणा के स्रोत बहने लगते हैं। हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का आदर होना चाहिये। भाषा कहीं २ संशोधन के योग्य है।

(६) [illegible]—लेखक कृष्णबिहारी मिश्र बी० ए, एल-एल० बी, प्रकाशक उपरोक्त साहित्य भण्डार लखनऊ, पृ०सं० ४८ मू० ।) है। यह पुस्तक अंग्रेजी कवि 'टेनिसन' के एनक आर्डेन नामक काव्य के आधार पर लिखी गई है। भावों की गूढ़ता, विचारों की सरलता, कथा की मनोरंजकता आदि सभी अपूर्व हैं। पुस्तक पढ़ते समय बड़ा आनन्द मिलता है। इसे प्रकाशित करने के लिये स्व० बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बड़ा परिश्रम कर रहे थे, किंतु दुर्भाग्य वश बीच में ही वे गुरु ज्वर से काल कवलित होगये और हम प्रगट रूप में न देख सके। हम आशा करते हैं कि स्वर्ग में भी उनकी आत्मा इसे देख संतुष्ट होगी।

तनमन और परिस्थितियों का नेता मनुष्य—यह सद्विचार पुस्तक का आठवाँ मनका है। महात्मा जेम्स एलन की अंग्रेजी पुस्तक यह अनुवाद स्व० बाबू दयाचन्द्र गोयलीय बी०ए० तथा ... सिंघई द्वारा हुआ है। गोयलीयजी ने इस प्रकार की पुस्तकें ... कर हिन्दी साहित्य के अंग्रेजी फिलासफी वाले अंग की पूर्ति ... प्रयत्न आरम्भ किया था और हमें आशा है कि उसके छोटे भाई ... चन्द्रजी गोयलीय इस कार्य को बराबर चलाते रहेंगे। इस पुस्तक मू०। और पृ० सं० ४० है। पुस्तक के पढ़ने से कई प्रकार का ज्ञान प्राप्त ... है।

(८) प्रातःकाल और सायंकाल के विचार—यह उपरोक्त माला की पुस्तक है। श्रीमती लिली एल, एलन द्वारा संकलित 'मॉर्निंग इविनिंग थाट्स' का यह हिन्दी अनुवाद बाबू दयाचन्द्रजी गोयली द्वारा हुआ है। श्री० लिली महोदया जेम्सएलन महोदय की ... आप ने एलन महाशय की भिन्न २ पुस्तकों से इन विचारों का ... किया है। यदि इनमे दो चार ही विचारों के अनुसार मनुष्य ... लगे तो उसे आनंद या शान्ति की प्राप्ती होसकती है। पुस्तक नित्य पाठकी सामग्री कही जासकती है।

(९) चरित्र शिक्षा—लेखक श्रीयुत प० बद्रीदत्त शर्मा प्रकाशक हिन्दी प्रेस प्रयाग। पृ० १५० मूल्य आठ आने प्रकाशक से प्राप्त। पं० बद्रीदत्तजी के नैतिक शिक्षा सम्बन्धी लेखों से विद्यार्थी पत्र सदा अलंकृत रहा करता है। इस पुस्तक में भी आप के, सदाचार, गृहशिक्षा, सत्संग, पौरुष और उद्योग, आत्मसंयम, कर्तव्याकर्तव्य और विद्यार्थियों ... सान शिक्षा पूर्ण और मनन के योग्य निबंध हैं। पुस्तक विद्यार्थियों और नवयुवकों के लिये बड़े काम की है।

(१०) सचित्र ऐतिहासिक लेख—लेखक श्री० बाबू रामकुमार गोयनका प्रकाशक हिन्दी पुस्तक एजंसी १२६ हेरिसन रोड़ कलकत्ता पृ०सं० ८० मूल्य ।=) में प्रकाशक से मिलती है।

गोयनकाजी हिन्दी भाषा के अच्छे लेखक सुने जाते हैं। इस पुस्तक में आप के नये अनुसंधान, चूरू की बही, बड़े लार्ड आर्कलैण्ड की हिन्दी में पत्र, सैरूल मुत्तारीन, ईष्ट इंडिया कम्पनी की रचना और, और वाणिज्य में परिवर्तन इन छह लेखों का संग्रह है। पुस्तक बड़े काम की है और सरल भाषा में अध्ययन पूर्वक लिखी गई है। ३ चित्र भी हैं।

(११) श्रीमती निवेदिता—लेखक—अवधकिशोर नारायण सिंह, प्रकाशक लक्ष्मी प्रेस गया पृ० सं० ८४+४ मूल्य पांच आने प्रकाशक से प्राप्त। भगिनी निवेदिता का नाम कौन भारतवासी नहीं जानता। यही एक विदेशी महिला थीं कि जिसने स्वामी विवेकानन्द का शिष्यत्व स्वीकार भारत में आदर्श कार्य कर दिखलाया है। पुस्तक बंगला ... से लिखी गई है। एक सुन्दर चित्र भी है। पुस्तक छोटी होकर ... शिक्षाप्रद है।

सामयिक साहित्य

धर्माभ्युदय—यह मासिकपत्र विगतडेढ़ वर्ष से बेलनगंज आगरा में ... रहा है। इन दिनों इसके सम्पादक श्रीयुत् पन्नालाल वर्मा इसे ... रंजक के बनाने के लिये अच्छा उद्योग कर रहे हैं। इस समय ... सामने इस का जून का अंक है। इसमें कई उपयोगी और शिक्षा ... मनोरंजक लेखों का समावेश किया गया है। वार्षिक मूल्य २) ... और छपाई सफाई बढ़िया है। पत्र में एक अंग्रेजी लेख भी रहता ...

बिजली—यह मासिकपत्रिका इटावे के जनरल प्रेस से निकलने ... है। पहले अंक के सम्पादक श्री० शिवनारायण वर्मा थे, दूसरे ... सम्पादक उदय नारायण जी वाजपेयी हैं। दो महिने में ही इसका ... आकार प्रकार आदि सब बदल गया है। वार्षिक मूल्य भी पहले ... रुपया था और अब ... कर दिये हैं। किन्तु अब यह सब प्रकार ... श्रेणि की पत्रिका बन गई है। लेखादि सब सुपाठ्य हैं।

उद्योग—यह साप्ताहिक पत्र ३।४ महिने हुए लखनऊ से निकलने ... है। अमीपत्र में सुधार की बड़ी आवश्यकता है। हम इसकी उन्नति ... हते हैं। वार्षिक मूल्य २) रु० कुछ अधिक है।

हिमालय—यह मासिक पत्र ... महिने से दार्जिलिंग से निकल ... है। पत्र में साहित्य, धर्म आदि सभी के पोषक तथा ... का समावेश रहता है। भाषा संशोधनीय है, मैनेजर हिमालय दार्जिलिंग से २) रु० वा० मू० में प्राप्त होता है।

नवम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

बम्बई में १९, २० और २१ अप्रैल को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का नवम अधिवेशन देशपूज्य मालवीयजी की अध्यक्षता में सुचारुरूप से सम्पन्न हुआ। एम्पायर थिएटर का सुन्दर भवन अधिवेशन के लिये नियत था। उपस्थिति की दृष्टि से इस वर्ष का सम्मेलन फीका रहा। कुल १५६ प्रतिनिधि थे, जिनमें ६१ बम्बई के और केवल ६४ बाहर से गये थे। उत्तर भारत के कितने ही लोग जो प्रत्येक अधिवेशन में शरीक होते थे, बम्बई के बहुत दूर होने अथवा अन्य कारण से इस वर्ष अनुपस्थित थे। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों में से भी बहुत ही कम सज्जन उपस्थित थे। हिन्दी-पत्र-सम्पादक भी चार पांच थे। स्त्रियां कुल १५-२० थीं। दर्शकों की संख्या भी बहुत अल्प थी, जिसका कुछ दोष स्वागत-समिति को भी दिया जासकता है। उपस्थित सज्जनों में निम्न लिखित नाम उल्लेख योग्य हैं—म० गांधी, मिसेज बेसंट, 'हिन्दू' सम्पादक श्रीयुक्त कस्तूरी रंग अयंगार, स्वदेश मित्रम्' सम्पादक श्रीयुक्त रंग स्वामी आयंगर, श्रीयुक्त यमुनादास द्वारकादास, से० खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीमती मगनबाई, श्रीयुक्त उमरसुबहानी बेरिस्टर, दीवान बहादुर रणछोड़ भाई उदयराम, मा० कामत, सर स्टेनले रीड, पं० अमृतलाल चक्रवर्ती, पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, श्रीमती अवन्तिका बाई गोखले, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, श्रीयुत पुरुषोत्तमदास टण्डन, पटने के बाबू राजेन्द्रप्रसाद, पं० नकीराम शर्मा, पं० जीवानन्द शर्मा काव्यतीर्थ, पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी, स्वामी सत्यदेव, रा०ब०वैद्य, आदि—

प्रथम दिन

पहले दिन शनिवार को पौने दो बजे से कार्य आरम्भ हुआ। गांधर्व महाविद्यालय के छात्रों ने पील रागिनी में मंगलाचरण का गाना गाया।

मंगलाचरण।

(श्री० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर द्वारा गेय)

(१)

ईश ज्ञान घन! दयासिन्धु हरि हे परमेश्वर,
पिता परमप्रिय दीनबन्धु जय जय जय प्रभुवर।
जगती तल के देश रत्न भारत के वासी,
करते हैं हम तुम्हें प्रार्थना हे अविनाशी॥

(२)

नित्य हमारा रम्यदेश सुख समृद्धिमय हो,
हम लोगों का प्रेमभावमय शुद्ध हृदय हो।
यहाँ शीघ्र सर्वत्र ज्ञान-रवि का समुदय हो,
अन्धकार के सदृश विघ्नबाधा सब लय हों॥

(३)

सुजला सुफला धीर-वीर-नर रत्न प्रसविनी,
व्यास वसिष्ठ युधिष्ठिर की प्यारी यह जननी।
तेरी प्यारी पुण्य भूमि प्रभुवर यह ऐसी,
फिर से शोभित हो जावे पहले थी जैसी॥

(४)

ईश्वर! सद्गुणपूर्ण सभी हम होवें, जिससे,
मान परम आदर्श सभी शिक्षालें हमसे।
पण्डित, कवि विद्वान सभी हम होवें ऐसे,
श्रीशंकर, मनु, व्यास, सूर, तुलसी थे जैसे॥

(५)

मनोमलिनता द्वेष आदि भावों का क्षय हो,
ऐक्य-शक्तिका द्रोह-जन्य दुर्मतिपर जय हो।
देश परम-परिपूज्य-मदन मोहन की जय हो,
हिन्दी भाषा हिन्द देशकी प्रभो! विजय हो॥

प० हनुमत्प्रसाद जोशी वैद्यरत्न,

अनन्तर स्वागत-समिति के अध्यक्ष जगद्गुरु करवीर [illegible] कराचार्य का स्वागत भाषण पढ़ा गया। कई अनिवार्य कारणों *पहले दिन उपस्थित नहोसके, इसलिये उनका भाषण पं०* [illegible] चक्रवर्ती ने पढ़ सुनाया।

स्वागत कारिणी समितिके सभापति का भाषण

मैं आज सर्वशक्तिमान परमात्माकी प्रार्थना करनेके पश्चात् आप का स्वागत करता हूँ जो कि हिन्दी भाषाको राष्ट्रभाषा [illegible] प्रयत्न कर रहे हैं। सारे भारतवर्ष की एकता होने को, सहिष्णुताकी वृद्धि होने के लिए और अपने राष्ट्र की उन्नति होने राष्ट्रभाषा हिन्दी होना अत्यन्त आवश्यक है। धार्मिक कामों के भी एक भाषा होना अत्यन्त आवश्यक है, ऐसा मेरा पूर्ण [illegible] होने के कारण से मैंने आज आप लोगों के स्वागत करने का कार्य आनन्द के साथ अंगिकार किया है। धर्म [illegible] *बुनियाद, है और जिसमें धर्म सरलता से सर्वत्र फैल सके,* ऐसे में सहायता करना धर्मगुरू के कार्यों में से प्रधान कार्य है ऐसा पूर्ण विश्वास है। इसीलिये मैं धर्म की जाग्रति के हित समय २ व्यावहारिक कार्य की ओर ध्यान देता आया हूँ। अपने धर्म मुख्य रहस्य यह है कि उसमें अभ्युदय और निःश्रेयस का रमणीय मिलन है। धर्म के बिना व्यवहार नहीं और सब परमार्थ के लिए ही हैं। अंग्रेजी राज्य प्रारम्भ होने के २४-४० वर्षों ही पाश्चिमात्य शिक्षण के कारण और उन लोगों के व्यवहार से यहां बड़ी ही क्रांति हो गयी। पहिले पहल उन लोगों की [illegible] हमारे दिल उधर आकर्षण हो गये और हम अपने विचारों, आचारों को, साहित्य को तुच्छ मानने लगे। और यह विचार [illegible] हो गया कि अंग्रेजी का जो कुछ कार्य इत्यादि है, वह सर्वोत्तम है [illegible] अपने यहां की सब बातें तुच्छ हैं। भारतवर्ष सेवक बन कर योग्य है। यह बातें लोग अपने विचारों से प्रकाश करने लगे में देखा जाय तो यह पश्चिमी शिक्षा का फल था, और अ[illegible] की उदासीनता और अपमान का कारण भी पाश्चमीय है। किसी बात का विरोध फिर भी ठीक है, परन्तु उदासी है। धर्म का द्वेष भी इतना बुरा नहीं क्योंकि उससे सत्[illegible] उज्वल होगा। आजकल हमारी धर्म के विषय में जो उ[illegible] है वही हमारे कष्टों का कारण है। अतएव जब हम लोगों नीच विचार लोप हो जायँगे, और अपने साहित्य को स्वतं[illegible] निहारने का अवसर प्राप्त होगा, तबही उसकी उत्तम वास्तविक स्वरूप ज्ञात होगा। कुछ उन्नति अब अवश्य हुई है। हिन्दी साहित्य को कई बार अन्य साहित्योंने कुच[illegible] का भर पेट यत्न किया, पर फिरभी आज वह अपना [illegible] साहित्याचार्यों के प्रताप से शेष रख रहा है। आर्यधर्म के[illegible] में कभी किसी शस्त्र से सहायता नहीं ली गई, न किसी [illegible] को विवश कर अपने धर्म में लेने की चेष्टा की गई है। किन्तु फैलना स्वयं के उत्तमोत्तम तत्त्वों से और व्यवहारिक सम्बन्ध होने के कारण ही से है। हमारे धर्म के तत्व हमारे रग २ [illegible] कर गये हैं कि यदि कोई हमारे धर्म का स्वतन्त्र तत्व क्या है [illegible] पूछे तो उसका उत्तर देना कठिन हो जाता है। क्योंकि हम [illegible] और व्यवहार में कुछ भी अन्तर नहीं मानते। इन गुणों से हम [illegible] समझने लगे हैं कि हमारी संस्कृती सर्वोत्तम है, उसे दूसरी [illegible] संस्कृती की समानता करने की आवश्यकता नहीं। उसमें स्वत[illegible] शक्ति है। उसके ऊपर दूसरी संस्कृतियों का अनेक बार आ[illegible] और उसके व्यवहारिक स्वरूपों में ही थोड़ासा उलट फेर हो ग[illegible] है। तिस पर भी उसकी नींव ऐसी संगीन है कि उसको [illegible]

नहीं है। वह जंगली मनुष्यों की भाषा है। उसमें व्याकरण नहीं है उसमें उत्तमोत्तम ग्रन्थ नहीं। इस तरह के तमाम आक्षेपों का खंडन करते हुए मैं केवल इतना ही कहता हूँ कि हिंदी भाषा यदि मिश्र भाषा है तो वह भाषा सब लोगों के समझने में और भी सुलभ होगी। आज सैंकडों वर्षों के परिचय से इस भाषा के आरम्भ होने से मुसलमान व हिन्दू इन दोनों को इस भाषा को अपनी भाषा माननी पडेगी। उन दोनों को ही उसके लिए प्रेम व अभिमान होने लगेगा। अपने धर्मग्रन्थ हिन्दी में लिखे हुए जान कर अपने धर्मसम्बन्धी विषय में दूसरों का दुराग्रह हट जायगा। कुरान इत्यादि धर्म ग्रन्थों का उल्था हिन्दी में होने से अपने को उनके धर्म की सहानुभूति उत्पन्न होगी व अपना राष्ट्रसाधन सफल होगा। आज अल्प प्रयत्न से ही अंग्रेज लोग हिन्दी समझ सकते हैं इसी कारण हिन्दी भाषा का प्रचार सब जगह फुर्ती से हो रहा है। आज हिन्दुस्थान के उत्तरी भाग में हिन्दी ही का प्रचार है। वहां पर हिन्दी में उत्तमोत्तम ग्रन्थों का अनुवाद व स्वतन्त्र स्वतंत्र ग्रन्थ रचना होरही है, व बहुत से मासिक पत्र व समाचार पत्र निकलते हैं। महाराष्ट्र में भी बंबई जैसे शहर में वेङ्कटेश्वरसमाचार जैसा दैनिक पत्र निकलता है। आज कल मराठी समाचार पत्र भी कुछ स्थान (कॉलम) हिन्दी के लिये रख छोडते हैं। इलाहाबाद में सरस्वती जैसा मासिक पत्र हिन्दी में ही निकलता है। और पूने में चित्रमय जगत् भी हिन्दी में निकलता है। आज मद्रास प्रान्त में भी श्रीमान् कर्मवीर गान्धीजी के परिश्रम से हिन्दी भाषा के लिये आदर और उसका पठन करने की इच्छा बढती जाती है। इसी तरह से हर-एक सुशिक्षित सामान्यजनों में ध्येय की जाग्रती होजाने से उपाय की योजना स्वयंस्फूर्ति से ही होरही है। इसलिये मैं कहता हूँ, कि मनुष्यों को अपने सामने उच्च ध्येय रखना चाहिये और उसकी सिद्धि के उपाय करना चाहिये। हिन्दी राष्ट्र का ध्येय भी अत्यन्त उच्च होना चाहिये व सब हिन्दू मुसलमान पारसी, इसाई आदि लोगों को भारत वर्ष की उन्नति के लिये एक भाव से परिश्रम करना चाहिये। हमें हमारी क्षुद्र मनोवृत्ति से घृणा उत्पन्न होनी चाहिये, और इन मनोवृत्तियों के सुधारने का काम धर्म व नीति के द्वारा ही होसकता है। इसी तरह से धर्म प्रसार का काम हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा होने से ही होगा और उस भाषा की उन्नति के लिये दूसरे आक्षेपों का विचार करना भी आवश्यक है। क्योंकि भाषा यह एक साधन है उसे उत्तम बनाना अपने हाथ में है। हिन्दी भाषा को उत्तम अवस्था प्राप्त करना यह अपना कर्त्तव्य है। भाषा विचारों पर ही अवलम्बित है उत्तम विचारों की भाषा स्वाभाविकता से ही उदात्त रहेगी, इसी प्रकार भाषा के प्रचार के अनुसार उसका व्याकरण स्वयं ही सिद्ध होता है। इस-लिये आज हम को जो कुछ करना है वह ऐसा होना चाहिये कि, जिससे हिन्दी राष्ट्रभाषा होसके।

अब यही शंका है कि हरएक को अपनी भाषा क्या छोड़ना होगा? ऐसी शंका का उत्तर यही है कि जन्मभाषा कोई भी हो परन्तु राष्ट्र कार्य के लिये जिस प्रकार सब जाति के, पन्थके व धर्मके लोगों में एकता होना आवश्यक है, उसी न्यायसे राष्ट्रव्यवहार के लिये एक भाषा होना भी बहुत ही आवश्यक है। हमें जिस तरह से जन्मभाषा के सिवाय आंग्ल व प्राचीन भाषा के पढ़ने की आवश्यकता है। उतनी ही वरन् अधिकतर राष्ट्र एकजीव करने के लिये एक सुलभ राष्ट्रभाषा की अत्यन्त जरूर है और वह हिन्दी सिवाय दूसरी कोई नहीं हो सकती।

आज कल भारत वर्ष में सब धर्मके, भिन्न २ जातिके, लोग एक विचार से भारतवर्ष की उन्नति के लिये अपना मतभेद एक ओर रख कर प्रयत्न कर रहे हैं। यह भारतवर्ष के भावी ऐश्वर्य का आशाजनक शुभ चिन्ह है। व्यवहार के लिये भारतवासियों को एक ही भाषा हो जाने पर परस्पर सहिष्णुता और प्रेम बढ़ेगा, व राष्ट्रीय ध्येय का सब जगह प्रचार होकर सिद्ध का द्वार बहुत ही निकट आजायगा।

सबों में एकभाव उत्पन्न करना यह धर्म का एक अंग है, व राष्ट्र में ऐक्य उत्पन्न करना ही इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश है। प्रस्तुत सम्मेलन के लिये पंडित मदन मोहन मालवीयजी जैसे निस्पृह हिन्दी प्रेमी सभापति मिले हैं। उनके हाथों से इस सम्मेलन का काम उत्तम रीति से सम्पन्न होगा इसमें कोई भी शंका नहीं है। इस पवित्र कार्य को सब तरह से यश मिले ऐसी परमात्मा से प्रार्थना करके अब मैं श्रीमान् पंडितजी को सम्मेलन का कार्य आरम्भ करने के लिये आग्रह के साथ सूचना करता हूं।

[illegible] जगद्गुरु शंकराचार्य [illegible]

इसके बाद गांधीजी का लिखा हुआ भाषण बा० राजेन्द्रप्रसाद [illegible] सुनाया, जिसमें माननीय पं० [illegible] चित करने का प्रस्ताव था। इसका समर्थन माननीय [illegible] साहब ने किया। मिसेज ऐनी बीसेंट ने इसका अनुमोदन हिन्दी [illegible] किया—"मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करती हूं।" [illegible] प्रसाद चतुर्वेदी ने अनुमोदन करते हुए कहा, "अब [illegible] ने राजनीतिक दृष्टि से देखा और बताया कि मालवीयजी [illegible] योग्य हैं। पर यह साहित्य-सम्मेलन है इसलिये मैं उन्हें साहित्य से देखता हूं, कि वे इस सम्मेलन के सभापति के उपयुक्त हैं या [illegible]

इसके बाद आपने साहित्यिक दृष्टि से मालवीयजी के [illegible] मनोरंजक विवेचन किया।

तदनन्तर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ श्रीमान् मालवीयजी सभापति का आसन ग्रहण किया [illegible] जो डेढ़ घण्टे में समाप्त हुआ। मालवीयजी का व्याख्यान कितनी विशेषताओं से युक्त था, किन्तु मौखिक होने के कारण उसे [illegible] का कोई सुभीता न था। कई पत्रों ने उसका सारांश [illegible]

दूसरा दिन।

बडोदा नरेश का आगमन।

आज आल इंडिया कांग्रेस की बैठक थी, इस कारण मा० [illegible] महाराज देर से आये और कार्य सवा दो बजे आरम्भ हुआ। [illegible] श्रीलालजी याज्ञिकने मंगलाचरण किया। आज स्वागत समिति के अध्यक्ष श्रीमान् जगद्गुरु शंकराचार्य्यजी महाराज पधारे थे। कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए; जो आगे दिये गये हैं। जब [illegible] प्रस्ताव उपस्थित था, श्रीमान् बड़ोदा नरेशने पदार्पण किया, [illegible] कोई एक घंटे तक रहे। सभापति ने आपका स्वागत करते हुए आप के उन कार्यों का वर्णन किया जो आपने अपनी प्रजा [illegible] शिक्षा विस्तार करने के लिये किये हैं। सभापति [illegible] प्रस्तुत प्रस्ताव पर अपना मत प्रगट करने की प्रार्थना करने पर श्रीमानने कहा कि "जब मैंने यहां आने का निमन्त्रण स्वीकार किया था और तब नहीं जानता था कि मुझे सम्मेलन में भाषण करना [illegible] जो कार्य अप[illegible] [illegible] नात्यन्त महत्वपूर्ण [illegible] [illegible] रूप में सफलता [illegible] [illegible] सी भाषा नहीं [illegible] [illegible] के मनुष्यों [illegible] [illegible] धार का कार्य करना बहुत कठिन होगा।' मातृ भाषा द्वारा शिक्षा दिये जानेवाले [illegible] प्रस्ताव का श्रीमान् ने समर्थन किया और अन्य भाषाओं की अच्छी पुस्तकों का हिन्दी उल्था करने के लिये ५०००) पांच हजार रु० देने का वचन दिया। धन के लिये अपील करने पर लगभग ६००) नगद और कोई १०००) के वचन मिले। चन्दे में [illegible] रकम २५००) की है, जो सेठ शिवनारायण बलदे[illegible] की है। अपील के अनुमोदन में मि० नायडूका भी जोरदा[illegible]

तीसरा दिन।

सोमवार को डेढ़ बजे कार्य आरम्भ हुआ। सम्मेल[illegible] और स्वागत-समिति के अध्यक्ष की अनुपस्थिति के [illegible] मदाबाद के दीवान बहादुर रण छोड भाई उदयराम श्रोभ[illegible] के आसन पर बिठा कार्यारम्भ किया गया। पं० [illegible] गन्धर्व महाविद्यालय के शिष्योंने मंगलाचरण किया। [illegible] अवन्तिका बाई गोखले ने मधुर स्वर में जन्मभूमि की [illegible] कई प्रस्ताव स्वीकृत होने पर शंकराचार्य्यजी महाराज सभापति के आसन पर विराजमान हुए। पं० [illegible] काव्यतीर्थ के व्याख्यान के बाद पं० जगन्नाथ प्रसाद चतु[illegible] लिंग विचार' शीर्षक प्रबन्ध पाठ किया जिसे समय न [illegible] श्रीमान् गांधीजी भी इस समय पधारे थे श्रीमती मगन [illegible] मूलादेवी एम० डी० (पंजाब) श्रीमती अवन्तिका [illegible] मनोरमा बाई (रतलाम) के व्याख्यान हुए थे। [illegible] मालवीय जी भी पधारे। श्रीयुत बा० राजेन्द्रप्रसाद एम० [illegible] अगले सम्मेलन को पटने चलने के लिये निमन्त्रण [illegible] सम्मति से स्वीकृत हुआ। अन्त में सभापति महाशय [illegible] भाषण हुआ जो बड़ा हृदयग्राही था। आपने समय [illegible] के लिये क्षमा मांगी और नागरी अक्षरों और हि[illegible] प्रचार की अपील की।

[illegible]

[illegible] विद्यार्थियों को पदक और प्रमाणपत्र भी दिये गये

रामेश्वरयात्रा--वर्णन ।

(लेखक—बालकृष्ण श्रीधर वोल्हटकर ।)

तारीख २३ को प्रातःकाल उठकर पक्षीतीर्थ को जाने का विचार किया । यह स्थान चिंगलपट्ट से १० मील है । एक तांगा करके रवाना हुआ । यहां एक शंखतीर्थ है, उसमें स्नान करने के बाद में पक्षितीर्थ की टेकड़ी चढ़ने लगा । यह चढ़ाई ४ फर्लांग की है, और ऊपर शिवजी का मन्दिर है । मन्दिर में इतना अंधेरा है कि हाथोंहाथ नहीं सूझता । दिन के समय कुछ उजेला था, उसके कारण शंकर के दर्शन होसके ! इसके बाद पक्षीतीर्थ पर आया, यह तीर्थ अर्थात् एक विशाल पत्थर की खांच में का संग्रहीत जल है, उस जल से मार्जन करके एक ओर आकर बैठ गया । इसके बाद बारह बजे एक पुजारी भात का पात्र लेकर आया, और एक पटे पर नैवेद्य रख कर दूसरे पर आप स्वयं पक्षियों की प्रतीक्षा करता बैठगया । इतने ही एक पक्षी सन्नाटे से उड़ता हुआ आया उसके आते ही भट्टजी ने उसे साष्टांग प्रणाम किया और दूसरे पटे पर बैठ गया । इसके बाद वह पक्षी भी पास आगया, और उसके सामने पुजारी ने थोड़ा २ करके नैवेद्य रख दिया तथा एक ओर कटोरी रखदी । कदाचित उसमें पानी होगा, उसे पीकर वह पक्षी आकाश में उड़ गया । बहुत देर होजाने पर भी दूसरा पक्षी नहीं आया तब पुजारी ने अपने चेले से कुछ कहा । मेरी कल्पना है कि कदाचित उसे यह देखने को भेजा हो कि वह पक्षी पींजरे से छूट कर बाहर निकला है या नहीं, सो तू देख आ । चेले के जाने के बड़ी देर बाद दूसरा पक्षी आया । यह पक्षी पहले पक्षी की अपेक्षा कुछ बड़ा था, और उसकी पूँछ पर दो एक बाल काले थे । दूसरा पक्षी भी नैवेद्य खाकर पानी पीने के बाद उड़ गया । यह बड़ी उछल कूद करता रहा ।

पक्षी तीर्थ

इन पक्षियों के सम्बन्ध में कहते हैं कि, पूर्व जन्म में ये ऋषि थे और शाप के कारण पक्षी बन गये हैं । ये प्रत्येक अवतार के समय भिन्न २ पक्षी के रूप में अवतरित होते हैं । रामावतार समय ये जटायु थे । ये पक्षी अंतरिक्षमें कहीं भ्रमण करते रहते हैं, और ज्योंही १२ बजे कि नैवेद्य खाने को आजाते हैं, ऐसी भाविकों की कल्पना है, परन्तु मुझे तो ये पालतू जान पड़ते थे । अस्तु, पक्षियों का झूंठा नैवेद्य प्रसाद के रूप में बेचा जाता है ।

इसके बाद मैं पक्षीतीर्थ पर से नीचे गाँव में आया । यहां पार्वती का एक देवालय है उसे देखा; और अन्यान्य देवालयों में दर्शन करके शंखतीर्थ पर आकर बैठ गया । उस दिन एकादशी होने के कारण बहुत से केले खरीद कर लाया और फलाहार किया । इस प्रांत में केले बहुत होते हैं और वे पैसे के तीन के हिसाब से मिलते हैं । इसके बाद ३ बजे चिंगलपट्ट को वापस आपहुँचा । कुछ देर विश्राम करने के बाद गाँव देखने को निकला । यहाँ एक प्राचीन विशाल किला है और एक त्रिकली कद्रुम का देवालय है, इसके सिवाय गाँव में देखने योग्य कुछ भी नहीं है । उसी रात को चिंगलपट्ट से निकल कर ता० २४ को बजे चिदम्बम् को आपहुंचा, मन्दिर का दर्शनद्वार बंद होने की बात सुन कर भोजन करने के बाद चिदम्बरम् का देवालय ... यह देवालय गाँव के बीच में है । चारों ओर चार दर्वाजे हैं प्रत्येक द्वार पर गोपुर है । देवालय का विस्तार बड़ा है, और चार प्राकार हैं । बिलकुल भीतर के प्राकार में, पास २ विष्णु और ... के देवालय हैं । बिलकुल बाहर के प्राकार में ... सा बना हुआ है । दूसरे प्राकार में ... खंभे का मण्डप है । एक सुवर्ण ... तीर्थ है, और बड़ा भारी नंदी है । बड़ा नंदी हमारे प्रान्त में कहीं भी देखने को नहीं मिल सकता । इसकी लम्बाई १०।१२ फूट और उंचाई लगभग ८।६ फूट है । उत्तर की ओर के द्वार के भीतर सुब्रह्मण्य का देवालय है, उसका पटांगण बड़ा है । तीसरे प्राकार में लक्ष्मी और ... के मन्दिर हैं । और चौथे अर्थात् ... प्राकार में नटराज और विष्णु ... लय हैं, यह बात हम पहले कह ... । शंकर के देवालय पर के कलश ... ने का पतरा मढ़ा हुआ है और ... के खम्भे तथा सीढ़ियों पर रुपये ... हैं । शंकर का स्वरूप नटराज का होने से उसके चार हाथ हैं । पास में ही विष्णु का देवालय है, परन्तु उसमें कुछ विशेषता नहीं । शिवमंदिर में शंकर की हीरे की पिंडी है । वह ६ अंगुल ऊंची होकर उसकी जलाधारी की लम्बाई ७।८ अंगुल है । इतना बड़ा हीरा बहुत कम देखने में आता है । उसका मूल्य लाखों रुपये होगा । इसी देवालय में शिवजी का एक शयन मंदिर है । वह बड़े चिकने और काले रंग के पत्थर का बना हुआ है । उसी के पास एक आकाश लिंग है । अर्थात् एक दीवार के आगे एक पर्दा ... हुआ रहता है । उसे अलग करके ... आकाश लिंग बतलाते हैं । भीतर ... भी नहीं । आकाश का अर्थ भी ... या शून्य है, तो आकाश लिंग नाम भी यथार्थ है । चिदम्बरम् रात को १२ बजे निकल कर दूसरे दिन यानी ता० २५ को सबेरे ८ ... कुंभकोणम् को आया । यहां कावेरी नदी है, उसे दक्षिण गंगा क... हैं । गाड़ी से उतरते ही प्रथम नदी पर स्नानार्थ गया । यहां नदी ... घाँट बना हुआ है, परन्तु नदी का जल दूसरे किनारे के पास ... जाने के कारण उस घाँट का कुछ भी उपयोग नहीं होसकता । स्ना... से निपट देवदर्शनार्थ गया । यहां १२ शिव के और ४ विष्णु के ... प्रकार १६ मंदिर हैं । उसमें जो मुख्य थे, उन्हें मैंने देखा । चक्रपा... मंदिर विष्णु का है । वह कावेरी नदी के तट पर एक छोटी सी टेक... पर बना हुआ है ।
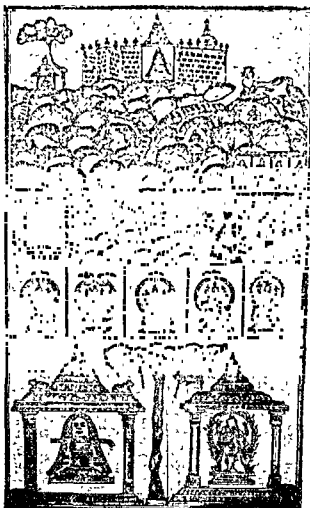
यहां से थोड़े ही अन्तर पर शिवजी का कुम्भेश्वर नामक देवालय ... उसमें जाने का जो प्राकार है, उसकी लम्बाई ३०० फुट से भी अधि... है, और चौड़ाई १५।१६ फुट है । इस प्राकार के दोनों ओर दूकानें हैं ... यहां सब प्रकार की वस्तुएं मिलती हैं । प्राकार के अन्तिम भाग में ... ओर के दालान में वाहन रखे हुए हैं । ये सब चांदी के हैं जो ... उत्तम अवस्था में हैं । मुख्य मंदिर शिवजी का है । और एक दूस...

पार्वती का है। उस दिन शुक्रवार होने से पार्वती की पूजा के लिये जानेवाली स्त्रियों की बड़ी भीड़ थी। बिचारे शंकरको कोई अच्छी तरह पोंछता भी न था। कुंभेश्वर स्वामी के पांच रथ मन्दिर के बाहर रास्तेपर थे। इसके बाद हम राममन्दिर को गये। यहां खंभों पर की नक्काशी देखने योग्य है। उस मंदिर की दीवारों पर रामचन्द्रजी के १४ वर्ष के वनवास की समस्त घटनाओं के अनुक्रम से चित्र बनाये हुये हैं। यही उस मंदिर की विशेषता है। उन चित्रों को ध्यान देकर देखने में बहुतसा समय लग जाता है।

इसके बाद मैं शारंगपाणी का देवालय देखने गया। उस देवालय

त्रिचनापल्ली का किला

का गोपुर बहुत ऊंचा है। उसकी ऊंचाई १५० फुट होकर उसमें १३ मंजिलें हैं। उन पर के चित्र भी बहुत सुन्दर हैं। इतना बड़ा गोपुर सारे हिन्दुस्थान में कहीं भी नहीं है। उस गोपुर की ओर हमेशा ही देखते रहें, ऐसी इच्छा होती है। देवालय के पिछले भाग में पांच छोटे २ गोपुर हैं। यहां पर भी एक तीर्थ है। पीछे का दृश्य भी बड़ा सुन्दर है।

इसके बाद मैं महामघी तीर्थ पर गया, यह तीर्थ बड़ा प्रसिद्ध है। मार्ग में शिवजी का एक पुराना देवालय आता है। यहां १२ वर्षों में सिंहस्थ में गंगा आती है। उस समय लाखों मनुष्य गंगा स्नान के लिये आते हैं। यह तीर्थ बहुत बड़ा है। उसका विस्तार २० एकड़ है, परन्तु सिंहस्थ में जब यात्री लोग स्नानार्थ आते हैं, उस समय चारों ओर मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते हैं। कुंभकोणम में प्रतिवर्ष माघ म-हिनेमें उत्सव होता है। महामघी तीर्थ पर छोटे २ कितने ही देवालय हैं। उनमें [illegible] का देवालय प्रसिद्ध है। उस देवालय के भावारों में दाहिनी ओर रामचन्द्र का एक छोटासा देवालय है। उसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि 'इस रामचन्द्रजीने सन्तति की प्राप्ति के लिये [illegible] के पास जाकर उसकी आराधना की, तब उन्हों ने प्रसन्न होकर पुत्र होने का वर दिया और कहा कि तुम्हारी जो पूजा करेगा, वह भी [illegible] [illegible] होगा उसके सन्तति होगी। तब [illegible] इसका देवालय बंधवा दिया। इसके दर्शनार्थ [illegible] [illegible] [illegible] आया करती हैं। इसके बाद मैं अपने मुकाम पर आया और भोजनादि से निपट [illegible] तंजौर जाने के लिये [illegible], यहां [illegible] पहुँचा और [illegible] करके [illegible] [illegible]।

पूना से निकलने के बाद तंजौर पहुँचने तक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

होस्थान को ले जाता। धर्मशाला को ले चलने की सूचना देने पर वह किसी होटल या अन्न सत्र को ले जाता, और बाजार में जब कोई हमें इंग्लिश जाननेवाला मिलजाता, तब हम उससे पूछकर ठीकस्थान पर पहुंच पाते थे। बाजार में जाने पर दुकानदार से किसी वस्तु का मूल्य पूछने पर यदि उसने अपनी दो उँगलियां दिखाई और हमने उसके सामने दो पैसे रखे तो वह बड़ा क्रुद्ध होने लगता। और जब दो आने देने लगा कि चट्से वह ले लेता था। इस प्रकार हमें बड़ा त्रास हुआ। इधर के लोगों को हमारी (मराठी) भाषा नहीं आती। परन्तु हिन्दी भाषा भी वे बिलकुल नहीं समझते थे। थोड़े से शिक्षितों को छोड़ कर अंग्रेजी का एक अक्षर भी किसी को नहीं आता। उत्तर भारत में भी अंग्रेजी भाषा का प्रचार इधर की अपेक्षा कम कहा जाय तो हानि नहीं, परन्तु उस ओर हिन्दी भाषा का व्यवहार होने से टूटी फूटी हिन्दी में उन्हें हम अपना मतलब तो समझा सकते हैं। परन्तु इधर जहां तहां तामील, के सिवाय किसी भाषाका नाम नहीं। यदि यह कह भी दिया जाय कि इधरके लोग संकेत शास्त्र भी नहीं जानते तो भी कोई हानि न होगी। इसी कारण तंजौर आजाने पर ही हमें धैर्य हुआ। श्रीशिवाजी महाराज के बन्धु व्यंकोजीने जब तंजौर में राज्य स्थापना की, उस समय उनके साथ कितने ही महाराष्ट्रीय लोग भी यहां जा बसे, उन्होंने मराठी भाषा को स्थायी रखा। अब उसमें तामील भाषा के बहुत से शब्दों का मिश्रण हो जाने से भाषा का कुछ रूप बदल गया है, तथापि उनकी बातें अधिकांश मराठी भाषा में होने से हम उसे समझ सकते हैं। तंजौर से त्रिचनापल्ली, और मदूरा तक भी ये लोग फैले हुए हैं, इस कारण इन स्थानोंमें भी मुझे त्रास नहीं पड़ा। रामेश्वर में तो भट्ट और पुजारी लोग अधिकतर कोंकण प्रांत निवासी ही होते हैं। अस्तु।

ता० २६ को सवेरे उठ कर मुख मार्जन से निपट पहले मैं महेश्वर के देवालय को देखने गया। देवालय के मुख्य द्वार पर १० फुट ऊंचा गोपुर है। और भीतरी द्वार पर के गोपुर की उंचाई ६० फुट है। दोनों दर्वाजों के पार कर जाने पर दाहिनी ओर पार्वती का देवालय आता है। पार्वती की मूर्ति १० फुट ऊंची है. देवालय को रथ पर बिठाने का भास कराया गया है। बाहर की मंदिर के दोनों ओर बड़े २ पहिये बनाये हुए हैं, और सामने घोड़े बना कर उन पर सवार बिठाये हुए हैं। भीतर की ओर हाथी घोड़े आदि चलते हुए दिखाये गये हैं। किन्तु हाथी, घोड़े, पहिये आदि सभी एक एक पत्थर के बनाये हुए हैं। इस मंदिर को देख कर मुख्य शिवमंदिर की ओर चला तो मार्ग में एक देवालय नन्दी का आया। उसमें का नन्दी बड़ी भारी है, उसकी लम्बाई उंचाई चौड़ाई क्रमशः १६।१२।७ फुट है, और वजन १०४ मन पक्का है। यह नन्दी एक काले पत्थर का बना हुआ है। मन्दिर में नन्दी की मूर्ति बैठी हुई दिखाई है, यदि यही मूर्ति खड़ी हुई होती तो मन्दिर की विचित्र दशा बन जाती। इसके सम्बन्धमें कहावत है कि जब नंदी धीरे २ बढ़ने लगा, तो पुजारी को भय हुआ कि यह देवालय को गिरा देगा। तब उसने शंकर की आराधना की और शंकरने नन्दी

[illegible] दृश्य

[illegible] [illegible] पूठ पर [illegible] दिया।

मुख्य देवालय के पीछे की ओर [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मूर्तियां भी हैं। शंकर के देवालय के बाईं ओर सुब्रह्मण्य का मंदिर है। उन दोनों देवालयों के बीच चंडिकेश्वर का छोटासा देवालय है। चंडिकेश्वर का काम किसी के आने जाने पर भद्रेश्वर को उसकी सूचना देना था।

सुब्रह्मण्य के देवालय में का नक्शी काम दर्शनीय है, देव और चंडिकेश्वर के दर्शन करके मैं भद्रेश्वर के देवालय में गया और उसकी पिंडी देख कर चकित होगया। यह पिंडी बड़ी ऊंची और मोटी है, आस पास चारों ओर गेलेरी बनी हुई है और उस पर जाने को सिड्ढी भी बनी हुई है। गेलेरी पर चढ कर गये बिना पिंडी पर अभिषेक नहीं किया जासकता, उसकी जलाधारी तो बड़ी ही लम्बी चौडी है। देवालय का शिखर २१६ फूट ऊंचा है। शिखर का पत्थर प्रचंड होकर उसका वजन ३३६ मन है।

इस पत्थर को शिखर पर चढ़ाने के लिये तंजौर से ४ मील के अंतर पर के सारापुलम् नामक गाँव से मिट्टी की चढाई बाँधते २ शिखर तक लाई गई, और उस पर यह पत्थर धकेलते २ शिखर पर लाकर बिठाया गया। कहते हैं कि इस शिखर का काम १२ वर्ष तक चलता रहा। देवालय के चारों ओर का पटांगण बड़ा विस्तीर्ण और स्वच्छ रक्खा गया है।

इसके बाद मैं राजमहाल देखने गया। यह महल पांच मँजला और विस्तीर्ण है, ऊंचाई ६० फीट है। इसी में एक सभा भवन भी है। उस में काले ग्रेनाइट का चबूतरा बना कर उस पर व्यंकोजी के वंश के एक शिवाजी नामक राजा का पुतला खड़ा किया गया है, यह सफेद संगमर्मर का बनाया हुआ है। दोनों हाथ जोड़ कर आनेवाले को शिवाजी राजा नमस्कार करते हैं, ऐसा दृश्य दिखाया गया है। इस मूर्ति की पगड़ी बहुत भारी होजाने से यह उतार कर उसके स्थान पर दूसरी रखदी गई है। इस पुतले के बाईं ओर लार्ड नेलसन साहब का बस्ट भी है।

दूसरे चौक में और भी एक सभामण्डप है। उसके मध्य भाग में सिंहासन था, ऐसा कहा जाता है, किन्तु अब उसके स्थान पर एक बड़ी भारी कुर्सी रखी हुई है। इस मण्डप की दीवारों पर तंजौर के पूर्व कालीन राजाओं के चित्र बने हुए हैं। इस मण्डप के बाहर के भाग में सरस्वती महल नामक एक पुस्तकालय है, उसमें १८००० संस्कृत हस्तलिखित ग्रंथ हैं, उसमें से ८००० ताड़ पत्र पर लिखे हुए हैं। इतनी बड़ी संस्कृत ग्रंथों की लाइब्रेरी कहीं भी नहीं है।

इस चौक में से बाहर निकलते हुए द्वार पर एक छोटी सी कोठरी है उसमें भिन्न २ प्रकार के पुराने शस्त्रास्त्र रखे हुए हैं। कितनी ही तलवारों की मूठें सोने चांदी की हैं। छोटी तोप, बंदूक, हाथी के हौदे, भूल और जरी की पोशाकें भी रखी हुई हैं।

किले के बाहर घड़ी का एक बड़ा भारी टावर है। यह सन में बनवाया गया है। इससे उत्तर की ओर राजा मीरासदार है। तंजौर से ७ मील पर कावेरी के किनारे तिरुवल्ली गांव है, यहां शिवजी का एक मन्दिर है। यहां मरने से मुक्ति प्राप्त इस प्रकार की बात लोगों के चित्त में जमजाने से बुड्ढे हुए अपनी आयु के अन्तिम दिन यहीं आकर बिताया करते हैं। ... है कि यहां ब्राह्मण लोगों की बस्ती अधिक है। समय न होने
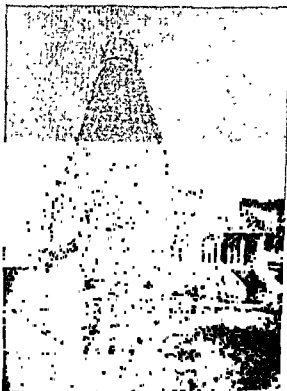
तंजौर में भद्रेश्वर का मंदिर

इस गांव को देखने नहीं जा सका। भद्रेश्वर का देवालय, राजमहल और तोप देख कर मैं अपने मुकाम पर आया, और भोजनादि से निपट मदूरा जाने के लिये निकला। मार्ग में त्रिचनापल्ली शहर आई किन्तु वापस लौटते समय शहर देखने का विचार होने से सीधा मदूरा को गया और १२ बजे रात को पहुंचा, ... ठहरा गया।

ता० २७ को सवेरे उठकर मीनाक्षी का देवालय देखने गया। ... देवी की महिमा इस प्रकार है.—

पंचकाशी मदूरा मीनाक्षी काशी शालाद।
साक्षी मल्लिका-रक्षिका गोविंद॥

मीनाक्षी का देवालय गांव के बीचोंबीच है। देवालय के घेरे में दो मुख्य मन्दिर हैं। एक मीनाक्षी का और और दूसरा सुरेन्द्र का है। देवालय में पूर्व की ओर प्रवेश करने पर लक्ष्मी का मण्डप आता है। यहां पर दिखाया गया है कि—खंभे पर लक्ष्मी की मूर्ति खुदी गई है, और उसने ऊपर मण्डप को हाथ से उठा रक्खा है। ऊपर के भाग में भी चित्र निकाले गये हैं। मीनाक्षी का जन्म, उसका शंकर से युद्ध, उनके साथ विवाह, [illegible] का जन्म आदि के चित्र हैं। इस मण्डप से आगे बढ़ने पर एक द्वार आता है, इसमें बाहर की ओर एक तरफ सुब्रह्मण्य की [illegible] मुखवाली मूर्ति है और दूसरी ओर गणपति है। दर्वाजा पार कर भीतर आने पर दाहिनी ओर शंकर की और बाईं ओर मीनाक्षी की मूर्ति है। दोनों शिकार करते हुए दिखाये गये हैं। इससे आगे फिर एक मण्डप आता है, मार्ग में दोनों ओर दुकानदार बैठते हैं। इस मण्डप को पार कर आने पर एक दीवाल का द्वार आता है, इसमें खिड़की दीपक रखने के स्थान बने हुए हैं उसमें तेल बत्ती डाल दिये लगाये जाते हैं। उस समय का दृश्य बड़ा सुहावना होता है।

[illegible] का मंदिर

इसके बाद मैं [illegible] नामक स्थान देखने गया, यहां एक तोप है, [illegible] यह तंजौर के [illegible] [illegible] [illegible] बड़ी नहीं है तथापि बहुत बड़ी है। इसकी लम्बाई २५ फूट और मुंह का व्यास दो फूट है।

दर्वाजे में प्रवेश करने पर फिर एक मण्डप आता है, उसमें अँधेरा है। मण्डप के दोनों ओर शंकर के पाषाण चित्र बने हुए हैं। इस मण्डप को भी पार कर जाने पर बाईं ओर पेटमरी का तीर्थ आता है, यह तीर्थ बड़ा पवित्र माना जाने से मैंने उसमें स्नान किया। इससे पश्चिम और दक्षिण ओर की परसालों में शिवजी के चमत्कार सम्बन्धी चित्र बने हुए हैं। इनमें कई पत्थर के पुतले भी हैं। भीतर जाने पर मीनाक्षी का देवालय मिलता है, देवी के शरीर पर हीरे माणिक के आभूषण हैं। देवालय के बाहर पंच पाण्डवों की मूर्तियाँ हैं। इससे आगे सुब्रह्मण्य का देवालय है।

इस देवालय को जाते हुए मार्ग में सुग्रीव और बाली की मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। इसी प्रकार हरिश्चन्द्र और तारामती की भी मूर्तियाँ हैं। सुब्रह्मण्यम् के मन्दिर का द्वार बंद होने से उस मूर्ति के हम दर्शन न कर सके। उससे आगे बढ़ने पर गणपति की मूर्ति आती है, यह भी बहुत बड़ी है। इसीप्रकार नवग्रहों की भी मूर्तियाँ हैं। आगे बढ़ने पर सुंदरेश्वर का देवालय आता है, उसमें की मूर्ति नटेश्वर के रूप में है। इस देवालय के दर्वाजे को पार कर जाने पर एक आठ खम्भे का द्वार आता है। उसमें भी शंकर के चित्र बने हुए हैं। एक नंदी और सुनहरी दीपस्तम्भ है। मण्डप के बाहर आने पर दाहिनी बाईं ओर दो २ खम्भे हैं। बाईं ओर के खम्भों पर शिवजी द्वारा दक्ष के संहार होने का चित्र है। दाहिनी ओर के खम्भों पर शिवजी और काली के नृत्य करते हुए चित्र दिखाये गये हैं। इसके पास ही एक मण्डप में चांदी के वाहन रखे हुए हैं। इस मण्डप से बाहर निकल कर दाहिनी ओर आने से एक सुंदर मण्डप मिलता है, उसे विवाह समारम्भ मंडप कहते हैं। यहां उत्सव के समय सुंदरेश्वर और मीनाक्षी का लग्न समारम्भ होता है। इस मण्डप की नक्काशी लकड़ी से की गई है। मद्रास प्रान्त के किसी भी देवालय में लकड़ी का काम देखने में नहीं आता, जहां देखिये वहीं पत्थर। पत्थर के पाट, खम्भे, आदि जिस वस्तु को देखिये वहीं पत्थर की नजर आती है। इस मंदिर की नक्काशी लकड़ी की देख आश्चर्य हुआ। इस मण्डप से आगे बढ़ने पर बाईं ओर फिर हजार खम्भे का मण्डप आता है। इसके अगले भाग के खम्भों पर बहुतसी नक्काशी की गई है, और उन पर पत्थर की मूर्तियाँ भी खुदी हुई हैं। देवालय का आकार बहुत बड़ा होकर भीतर से स्वच्छ है। मीनाक्षी और सुंदरेश्वर के देवालय के ऊपर का भाग सोने के पत्रे से मढ़ा हुआ बतलाते हैं। देवालय के चारों ओर गोपुर हैं, और वे बहुत बड़े हैं। प्रवेश द्वार से ही बाहर निकल कर रास्ता पार कर जाने पर 'वसु' नामक मण्डप आता है। इसे त्रिमुल्ल नायकने बनवाया था, पर अधूरा ही रह गया है। यदि यह पूरा हो जाता तो बड़ी सुन्दर इमारत बन जाती। इस मण्डप में त्रिमुल्ल की मूर्ति है, मण्डप के बाहर चारों ओर के स्थान में बाजार लगता है। मण्डप तथा बाहर की शिल्पकारी बड़ी सुंदर है।

इसके बाद मैं गांव से बाहर एक मील के अन्तर पर त्रिमुल्ल नायक का महल देखने गया इस महल के खंभे पत्थर के हैं और उन पर चूने का सीमेन्ट किया हुआ है। ये खंभे बहुत बड़े हैं। सामने का मण्डप चौकोना है। उसमें जजसाहब की कोर्ट भरती है। इस कोर्ट के बाईं ओर फिर एक बैठक आती है। यहां त्रिमुल्ल नायक का शयन गृह बतलाते हैं। इस बैठक की नक्काशी में चारों ओर चार बड़े २ छेद हैं, इसके सिवाय एक पांचवां दक्षिण में है। इन छेदों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि चारों छेद में रस्सी डाल कर उनका छप्पर पलंग लटकाया जाता था। पांचवा छेद एक चोर का बनाया हुआ है। उसने यह छेद बना उसमें से घुस कर सारे गहने, और जवाहिरात चुरा लिये थे। इसके बाद ऐसी सूचना दी गई कि जो सब आभूषण और जवाहिरात लाकर देगा उसे वंश परम्परा के लिये जागीर [illegible] दी जायगी। तदनुसार उस चोरने सभी आभूषण लाकर दे दिये, उसके वंश के लोगों के पास अभी तक जागीर है, परन्तु उस चोर का शिरच्छेद कर दिया गया।

इस महल में और भी कई [illegible] होती हैं, और [illegible] जाते हैं। यह महल बहुत बड़ा और ऊँचा है। [illegible] महल को देख कर [illegible] गया, परन्तु उस दिन [illegible] पूर्णिमा होने [illegible] मन्दिर के [illegible] थे। और सवेरे १० बजे [illegible] [illegible] थे। इस [illegible] देवी की पूजा [illegible]

चढ़ा कर जल यात्रा कराते हैं, और रोशनी तथा अन्यान्य कई प्रकार का उत्सव मनाया जाता है।

मैं भी तांगा करके वहां को चल दिया। मार्ग में एक वट वृक्ष आता है, यह बहुत बड़ा है, उसमें शाखाएँ फूट कर उसका बड़ा विस्तार हो गया है। मुख्य वृक्ष का घेरा ६०-७० फुट होगा। सब शाखाएँ मिल कर गोलाकार बन गई हैं, उस वृक्ष की त्रिज्या १५० या १७५ फुट होगी। कबीर वट वृक्ष की अपेक्षा यह वट वृक्ष बहुत छोटा दीख पड़ता है, तथापि ऐसे बड़े वृक्ष कहीं २ ही देखे जाते हैं। सितारा जिले में मडवों के जंगल में भी एक वटवृक्ष है और अधार में भी है। इस का वर्णन ऊपर आचुका है। इसके बाद में तोपया फुलम तीर्थ पर पहुँचा, वहां मनुष्यों की बड़ी गर्दी थी। सारा मदुरा शहर और आस पास के गाँव के लोग सवारी देखने आये थे। तीर्थ बहुत बड़ा है। मैंने आज तक इतना बड़ा तीर्थ नहीं देखा था। कुम्भकोणम् का महामघी तीर्थ और शिवकांची के तीर्थ भी बड़े हैं, परन्तु उनसे यह बहुत बड़ा है।

यह तीर्थ वैगई नदी के तट पर है। इसे भी त्रिमुल्ल नायक ने बंधवाया था। दक्षिण की ओर के तीर्थों की तरह यहां भी मध्य भाग में एक चबूतरा है, यही नहीं, वरन् उस पर एक इमारत और उसके चारों ओर बगीचा भी लगा है। तीर्थ के मान से चबूतरा भी बड़ा है। इस इमारत में ही दोपहर को उत्सव मूर्ति की पालकी लाकर रखी गई थी।

मैं शाम को वहां पहुँचने पर प्रथम पास में की वैगई नदी को देखने गया। पिछले दिन ऊपर कहीं पानी गिरने से नदी में जल बढ़ गया था। नदी के किनारे दूर २ से आये हुए लोग भोजनादि कर रहे थे। इसके बाद मैंने उस तीर्थ की प्रदक्षिणा की। चारों ओर लोगों के झुंड के झुंड थे। भीतरी चबूतरे पर पुजारी लोग गये थे। नाव में बैठ कर चबूतरे तक जाना पड़ता है। भीड़ बहुत थी तो भी मैं ज्यों त्यों करके वहां पहुँचा, प्रति मनुष्य आठ २ आने किराया लगा। रात हो ही गई थी, परन्तु पूर्णिमा होने के कारण स्वच्छ चाँदनी छिटक रही थी, चबूतरे के चारों ओर, ऊपर की इमारत पर तथा तीर्थ के चारों ओर पंक्तिबद्ध दीपमाला लगाई गई थी। मेरा अनुमान है कि ये १० हजार दिये होंगे। रात होते ही ये सब जलाये गये तब तो चारों ओर दिये ही दिये दीखने लगे। उनका प्रतिबिम्ब भी पानी में गिर रहा था, इस प्रकार यह तीर्थ अनुपम शोभा युक्त दीख पड़ता था। आठ बजने पर मूर्ति की पूजा अर्चा शुरू हुई, जिसने ही लोगों ने पूजा सामग्री देकर पुजारी से पूजा करवाई। आरती हो जाने पर नाव पर जो लकड़ी का मंदिर बनाया गया था, उसमें देवी की मूर्ति बिठाई गई। इसी नाव पर सामने मण्डप बना कर उसमें झाड़ फानूस लगाये गये थे। इसके बाद उस तीर्थ में चबूतरे के चारों ओर उस मूर्ति से प्रदक्षिणा करवाई गई। इसके बाद एक किनारे पर यह नाव ठहराई गई। यहां आतिशबाजी छोड़ी गई, इसके बाद मूर्ति को पालकी में बिठाया। उसमें तीन मूर्तियाँ थीं। सुंदरेश्वर, मीनाक्षी, और सुब्रह्मण्य, इस प्रकार धीरे २ जुलूस के साथ देवी की पालकी रात को १२ बजे गांव में आवेगी। मैं मुकाम पर जल्दी से आकर १२ बजे रात की गाड़ी से रामेश्वर के लिये रवाना होगया।

ता० २८ को सवेरे ६ बजे रामेश्वर आगया। यहां पर यात्रियों के लिये पंडों के धर्मशालाएँ बैधवा रक्खी हैं, धर्मशाला भी हैं। मैं [illegible] की धर्मशाला में एक कोठरी किराये पर लेकर ठहर गया, नहाने के बाद १ मील दूर के [illegible] कुंड पर [illegible] गया और वहीं [illegible] विधि से निपटा, यहां कुछ [illegible] स्त्रियाँ भी आई हुई थीं, उन्होंने भी [illegible], यह देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। स्त्रियों के [illegible] का काम [illegible] थी, यह भी [illegible] में [illegible]। [illegible] की [illegible] स्त्रियों को इस [illegible] के लिये यहाँ [illegible] है, [illegible] के द्वारा [illegible] [illegible] प्रकार है। [illegible] [illegible] [illegible] १००-२०० फुट [illegible]

पितृहत्या या प्रियाराधन ?

(लेखक—श्री० [illegible])

(१)

...रसेन ! आज तक खिलापिला कर तुझे छोटे से बड़ा किया, और इस ...ति को पहुँचाया उसका माने बदला तू ने इस रूप में चुकाया । तेरे ... कृतघ्न (कृतघ्न) मनुष्य संसार में शायद ही कोई होगा ? इस ...र महाराज यशोवर्धन ने अत्यन्त संतप्त होकर कुमारसेन को फट... बतलाई ।

...सने नम्रतायुक्त मस्तक झुका कर कहाः-महाराज ! मेरे हाथ से ...सी अपराध का होना मुझे तो मालूम नहीं होता ।

...क्या ! कुछ भी मालूम नहीं होता ! इस ...व देश के सिंहासन पर आरूढ होने के ...न् आज तक जिस यशोवर्धन को अप... ...का शब्द तक मालूम न था, उसीका ...त तू ने पूर्णरूपेण परिचय करादिया ! ...ने तुझे इस योग्यताको पहुँचाया, जिसके ... से तेरी इस देह का पालन हुआ, उसी ... अनिष्ट करने को तू प्रवृत्त हुआ ! चंदन ...वृक्ष पर कृष्ण सर्प का पिल्ला रहने से ...स प्रकार उसका सर्वस्व नाश होजाता ... उसी प्रकार मेरे वंश पर तेरे प्रतिपालन ...कारण यह संकट आया है ! संतापा...शय से राजा यशोवर्धन का सारा शरीर ...पने लगा ।

"महाराज, जबसे मुझे संसार का ज्ञान ...ने लगा है, आज तक आप के राज्य का ...भी अनिष्ट चिन्तन नहीं किया । और इस ...ह में जब तक प्राण हैं, तब तक आप की ...या में ही कालक्रमण करूंगा ।"

"बस बहुत हुआ, कृपा कर-अब तेरी ...वा की मुझे आवश्यकता नहीं ! और ...धिक सेवा करके तू मेरे इस मालव प्रदेश ...राज्य पर भी पानी फेरदेगा ! यदि कल... ...ी तू ने कृतघ्नता न की होती तो अंगारसेन ...ि इस प्रकार पराजित होकर न भाग आना ...ड़ता !"

"क्या मैंने कृतघ्नता की ? महाराजों का ...मकल्याण हो, यह बात इस सेवक को स्वप्न ...में भी विदित नहीं होती । निश्चय रखिये किसी ने धूर्तता कर आप ...का मन मेरे विरुद्ध कर दिया है !

"अरे दुष्ट, यही तेरा दूसरा अपराध है !" (क्रोध से झल्ला कर) अंगारसेन के समान वृद्ध और स्वामिभक्ति परायण मनुष्य के विरुद्ध तू बातें बना रहा है ?"

कुमार ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा क्या ? वृद्ध सेनापति अंगारसेन ने आप से यह बात कही है ! हां, वृद्धवीर अंगारसेन तेरे विरुद्ध कहा करते हैं, और उन्हें तेरे अहित से क्या प्रयोजन ?

"नहीं—परन्तु उन्हें भी कुछ भ्रम सा होगया जान पड़ता है—"

"अरे दुष्ट चुप रह, अब मैं तेरे मुँह से एक भी शब्द सुनना नहीं चाहता । तेरे इस घोर अपराध के लिये तुझे देहान्त दंड देना ही योग्य है । परन्तु 'प्रेम' एक बुरी बला है, आज तक जिसे बड़े लाड़ चाव से सिर कंधे पर खिलाया उसी का प्राण लेना, नहीं । इस बात को भूल ही जाना चाहिये, बस-अब तू यहां से चलता बन, मेरे राज्य की सीमा से बाहर होजा और फिर अपना यह काला मुँह मुझे न दिखाना !"

कुमारसेन अत्यन्त खेदयुक्त होगया, उसे महाराज का स्वभाव पूर्णतयः विदित था । यह सोच कर कि अब अपने बोलने का कुछ भी उपयोग न होगा, उसने महाराज को प्रणाम किया और तत्काल ही जंगल का रास्ता पकड़ा !

(२)

कुमारसेन का पिता महाराज यशोवर्धन का कृपापात्र एक शूर सर्दार था । हूण राजा मिहिर कुल के साथ होनेवाले युद्ध में यह शूर मारा गया । उसकी साध्वी स्त्रीने अपने दो वर्ष के पुत्र कुमारसेन-को महाराज यशोवर्धन की सेवा में अर्पण कर अपने काल नियमानुसार अग्निदाह ले लिया । हूण राजा मिहिरकुल बड़ा शूर था, परन्तु साथ ही बड़ा दुष्ट भी था, और उसने यशोवर्धन की प्रजा को बड़ा कष्ट दिया था । इस कारण दोनों में बड़ी खटापटी होगई थी । गुप्तवंश के राजा नरसिंह गुप्त को भी इस हूण राजाने पराजित कर दिया था । गुप्तवंश से मालव वंशीय राजा यशोवर्धन के साथ पूर्वापर वैमनस्य होने से वे परस्पर एक दूसरे की घात में प्रवृत्त रहते थे । राजा यशोवर्धन के लिये उस समय बड़ा लचाण्ड उत्पन्न होगया था । क्योंकि नरसिंह गुप्त के पुत्र कुमार ने हूण लोगों का पूर्ण पराजय करके अपना नष्ट वैभव पुनः पूर्ववत् प्राप्त कर लिया था, और अब वह मालव देश पर आक्रमण करने की तय्यारी में था । परन्तु यशोवर्धन के पराक्रमी वृद्ध सेनापति अंगारसेन से हूणराजा और कुमार गुप्त दोनों ही भयभीत रहा करते थे । इसी कारण उनका कुछ भी वश नहीं चलता । कुमारसेन अत्यन्त साहसी और शूर युवक था । इसी प्रकार वह अपने सहायक सैनिकों को भी बड़ा प्रिय था । उनका नाश किये बिना राजा यशोवर्धन की सेना में फूट न पड़ेगी, इस उद्देश्य से प्रमत्तवर ने भी उसके लिये प्रपंच रच कर अंगारसेन सम्बन्धी उसका मन कलुषित कर दिया था । प्रमत्तवर गुप्त राजा की ओर से भाग कर मालव देश में आश्रय पाने के लिये आया हुआ था । गुप्त राजा ने उस की नौकरी के लिये उसे योग्य पारितोषक न देते हुए अकारण ही उसका सर्वस्व हरण कर अपने राज्य की सीमा से बाहर कर दिया था, और इसी कारण वह लोगों से कहता फिरता था कि मैं अब उनका पक्का शत्रु होगया हूं । इसी प्रकार की कुछ बातें उसने अंगारसेन से भी कही हैं, ऐसी अफवाह थी । कुछ भी कहिये, परन्तु प्रमत्तवर के मालव दर्बार में एक प्रतिष्ठित पदाधिकारी बन जाने के कारण ही बड़े २ राजनैतिक कार्य उसकी सम्मति लिये बिना नहीं होते थे । प्रमत्तवर राजधानी से दो कोस के अन्तर पर जंगल में रहता था । कौटुम्बिक जनों में कहिये या सन्तति के नाते, परन्तु उसकी एक मात्र कन्या ही उसका सर्वाधार थी । मालव दर्बार में प्रमत्तवर का का प्रवेश होने के बाद उसे कुमारसेन के सारे गुण दृष्टिगोचर हुए । स्वामिभक्ति परायण सर्दार ने उसे गुप्त राजा की ओर मिला लेने का अनेक बार अपरोक्ष रीति से प्रयत्न किया, किन्तु उसमें सफलता नहीं मिली । अन्त में उसे विश्वास होगया कि यह इस प्रकार न मानेगा, अतः इसे किसी युक्ति से मार डाले बिना मालवराज की सेना में फूट

कुमारसेन—प्यारी वसुन्धरा ! ले यह तलवार; तेरे सिवाय अन्य स्त्री की इस हृदय में छाया भी पडी है क्या ? देख तो !"

तो आध मील से भी अधिक चलना पड़े इतना बड़ा यह देवालय है। इस देवालय में सिद्धिविनायक, नंदिकेश्वर, पार्वतीमाता, नवग्रह, हनुमान, आदि के मंदिर हैं। यहां का नंदी भी बहुत बड़ा है। यह रामेश्वर के मुख्य मंदिर के दर्वाजे से बाहर और देवता के सन्मुख है। नंदी बैठा हुआ और जीभ बाहर निकाले हुए है। यह भी एक ही पत्थर का बना होगा, परन्तु ऊपर से चूने का पलस्तर चढ़ा हुआ हैं। इसकी लम्बाई चौड़ाई, ऊंचाई आधनकोर के नंदी के समान होसकती है। नंदी के दर्शन करके भीतर गया तो सभामण्डप आया, यह बहुत बड़ा और भव्य है, इसमें लगे हुए पत्थर ४०।४० फूट लंबे हैं। इस मण्डप में लोगों की ओर से रामेश्वर पर चढ़ाने के लिये लाई हुई गंगा का पूजन होता रहता है। सभामण्डप के खम्भो पर नक्काशी की हुई है। भीतर जाकर दर्शन करने की फीस एक रुपया है। गंगा चढ़ाने की फीस दो रुपये है। नारियल अर्पण करने की फीस एक आना है, फूल दुर्वा चढ़ाने की फीस भी एक आना है। इस प्रकार प्रत्येक काम पर फीस लगा कर प्रति वर्ष लाख सवालाख रुपया पैदा होता है।

शिवजी की पिंडी जलाधारी के मान से बहुत छोटी है, इसके पीछे की ओर उत्सव मूर्ति है। उस पर बढ़िया जवाहिर और अमूल्य पहनाए हुए हैं। मुख्य मंदिर के बाईं ओर किन्तु सभामण्डप में ही देवता का छोटासा देवालय है। और दाहिनी ओर गणपति का मंदिर है। बाईं ओर पसाल में मुख्य मंदिर है। भीतर के प्राकार के बाहर दाहिनी ओर दूसरे प्राकार में पार्वती का मंदिर है। इन सब देवताओं के दर्शन कर मुकाम पर आया। क्षौर कराने के दिन उपवास होता है, अतः फलादि लाकर उनसे दिन बिताया। रात को शयन को गया। देवपूजा करके उत्सव मूर्ति को पालकी में बिठाकर लय के प्राकार में ही पार्वती और रामेश्वर के देवालय के बीच में गृह में पालकी ले जाकर वहां मूर्ति रखदी गई, पार्वती की मूर्ति पहले ही लाकर वहां रखदी गई थी। दोनों देवताओं की करके प्रसाद बांटा जाता है और फिर शय्यागृह का द्वार बंद है। इसके बाद में मुकाम पर आकर सो रहा। सवेरे काक होती है।

अपूर्ण

कन्या आरोग्य मंदिर वड़ोदा। (स्थापना। सन१९१६ई.)
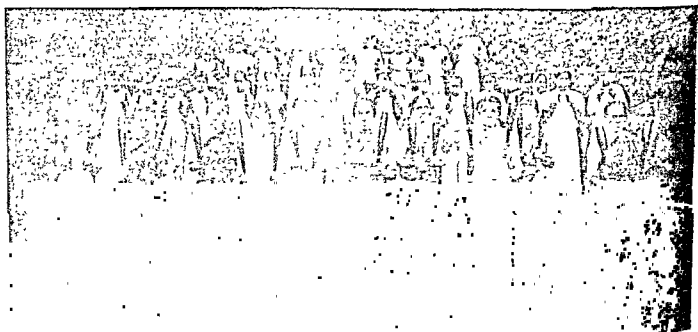
विगत युद्ध ज्वर के भयंकर समयमे आरोग्य मंदिर की विद्यार्थिनियो ने रिलीफ कमेटी की देखरेखमे अच्छा काम किया है. बडोदे मे युद्ध ज्वर पीडित रोगियों मेसे हजार रोगीतो प्रो. माणिकराव की बनाई हुई गोलिया ही सेवन करते थे। बाहर भी ये गोलिया भेजी गई थी. उसमय इन विद्यार्थिनियोने अपने घर का सब काम छोड़कर दो लाख से अधिक गोलिया तय्यार कर रिलीफ कमेटी को पहुँचाई। इनमे से कई कन्याओने रोगियों के घर जाकर उनकी सेवा शुश्रुषा भी की। मंदिर की व्यवस्थापिका श्रीमती सोनूबाई ने रोगियो की शुश्रुषा सम्बन्धी सब बाते कन्याओ को सिखलादी थी। इस आरोग्यमंदिर मे स्त्रियो के कर्तव्य का विचार कर विद्यार्थी व्यायाम सिखलाया जाता है। " योरोपियन पद्धति से स्त्री पुरुषो को एकही प्रकार के व्यायाम की शिक्षा देने से होनेवाले दुष्परिणाम दूर करने की पूरी सावधानी है। " इस प्रकार पंजाब की एक विदुषी महिलाने इस संस्था के कार्य का बारीकी से निरक्षण करके अभिप्राय दिया है। इसके लिये हम प्रो० माणिकरावजी का अभिनंदन करते हैं।

बम्बई में सत्याग्रह का अन्दोलन।

ता० ६ अप्रैल को सेवेर ८॥ बजे चौपटी पर की सभा का दृश्य (१) खड़े हुए मि० जमनादास द्वारकादास और कुर्सीपर बैठेहुए मि० हार्नीमन है सत्याग्रह के केन्द्रस्थान बंबई मे इतनी विशाल जनसंख्या वाली सभा यह पहलीही कही जासकती है.

(२) मि. जमनादास महात्माजी का व्याख्यान पढ़कर सुना रहे है, खड़े हुए महात्मा गान्धीजी के सेक्रेट्री मि० देसाई हैं। सोलहेट लगाये मि. उनके निकट सरोजिनी नायडु और म० गान्धीजी तथा मि. जमनादास के टोपी लगाये मि. उमर सोबानी है।

महल की ओर जाने लगे कि, इसी बीच जासूस ने वृद्धवीर अंगारसेन के युद्ध में धराशायी होने का समाचार सुनाया! महाराज ने, बचे खुचे लोगों को उसी अवस्था में युद्धक्षेत्र में जाने की आज्ञा दी। तत्काल ही मालव सेना पराभूत होकर भागने लगी। इसी बीच पश्चिम दिशा में वही पहलेवाला भील युवक हूणराजा की सेना पर टूट पड़ा। असमय ही उल्टी ओर से पिछले भाग पर हल्ला होता देख; हूणराजा अपनी सारी सेना के नष्ट होजाने के भय से पीछे हटाने लगा। उसके इस प्रकार हटने पर उसकी सेना भी अनु-[illegible] बन गई। रंग बदल गया। यशोवर्धन की बची खुची सेना आवेश में उनका पीछा करने लगी। अन्त में बिलकुल ही थोड़ी सेना से मिहिरकुल को भाग जाना पड़ा; और महाराज यशोवर्धन की विजय हुई।

ज्योंही महाराज को इस बात का विश्वास हुआ कि अपने प्राण बचाने और विजय प्राप्ति करानेवाला यह भिल्ल युवक और कुमारसेन ये दो ही व्यक्ति हैं, तब वे कुमार की ओर पलट कर कहने लगे, "वत्स! तूने अपनी कृति से ही अपना कलंक धो डाला-आ! मैं तुझे प्यार करता हूं" तो भी वह युवक कुछ न बोला! अन्त में स्वतः महाराज ने उसका शिरस्त्राण अलग किया। त्योंही उन्हें वहां कुमार के बदले विशाल केशगुच्छ धारण कियेहुए एक लावण्यवती बालिका का मुखकमल दृष्टिगोचर हुआ! महाराज चौंक कर एकदम दूर हट कहने लगे;-अरी तू कौन है? और हमारा कुमार कहां है!" महाराज के मुख से इन शब्दों के निकलते ही उस भिल्ल युवक ने वंदन करके कहाः—'महाराज; यह आप का अधम कुमार आप के सन्मुख खड़ा है!" "प्रिय कुमार! तू इस भीलवेश में कहां था? और यह लड़की कौन है?"

महाराज आप के देश पर शत्रुसेना आनेवाली है, इस बात की खबर पर कर मैं अरण्य प्रदेश में दब छुप कर रहता था। "शाबाश! कुमार तूने अपना सारा कलंक धो डाला!"

"परन्तु महाराज! मैने कोई अपराध तो किया ही न था!"

"क्या तू शत्रुदल में नहीं मिल गया था?"

"नहीं ये किसी से भी नहीं मिलगये थे—" बीचमेंही उस बालिकाने अपने कोमल स्वर में उत्तर दिया। "सर्दार प्रमत्तवर ने ही इन पर यह आरोप डाला! और उन्होंने वृद्ध अंगारसेन को ऐसा भास करादियाथा!"

"ऐं! क्या उसका यह उद्देश्य था?" महाराज ने आश्चर्य से पूछा।

"और क्या होसकता है? केवल मालव सेनासंघ को दुर्बल करने के लिये ही उसका यह-प्रपंच था!"

"हाँ! यही बात ठीक जान पड़ती है" महाराज ने गंभीरता से कहा "हमने इतने दिन प्रमत्तवर से व्यर्थ ही सम्बन्ध रक्खा। वह हमारे शत्रु पक्ष का होकर हमारा भेद लेने के लिये ही यहां आया था! अस्तु, बेटी तू किसकी कन्या है?"

वह बालिका उत्तर देने में सकुचाने लगी, परन्तु कुमारसेन ने कह दिया-"महाराज! यह प्रमत्तवर की कन्या है?"

"क्या! प्रमत्तवर की कन्या! तो फिर यह रणभूमी पर क्यों आई थी? क्योंकि जब मुझ पर प्रमत्त ने वार करने को तल्वार उठाई, उस समय इसीने उसका हाथ पीछे से पकड़ लिया था!"

"सचमुच ही यह एक विचित्र लीला है! ठीक है, बाले! तू चिन्ता न कर! तेरा पिता मरा नहीं जीवित ही है ऐसा समझ! जा!

इस प्रकार उसे आश्वासन दे महाराज तत्काल महल में चले गये।

महाराज यशोवर्धन बड़े गुणग्राही थे। उन्होंने वसुन्धरा को उसके पिता का स्मर्ण न होने दिया। वृद्ध अंगारसेन का सेनापतित्व और वसुन्धरा का पाणिग्रहण ये दोनों महाराज ने कुमारसेन को एकदम ही अर्पण किये।

ऐतिहासिक स्थलदर्शन।

(१) बड़वाय में नर्मदा पर के दुमंजिले पुल का दूर से लिया हुआ दृश्य।

(२) बड़वाय में नर्मदा के पुल के पास से लिया हुआ दृश्य।

(३) उज्जैन में अकबर के महल के नीचे शिप्रा के पार से ली [illegible] और दूसरे किनारे पर का [illegible]।

(४) बड़वाह में नर्मदा के तट पर [illegible] मंदिर और [illegible] का महल।

न पड़ सकेगी ! अपने इस निश्चय के अनुसार उसने कर भी दिखाया।

(३)

कुमारसेन बिलकुल म्लान वदन से मार्ग क्रमण कर रहा था। महाराज ने यह प्राणदण्ड से भी भयंकर सजा क्यों दी, और पिता से अधिक लाड़ चाव करके जिन्होंने प्रेम पूर्वक पालन किया, उन्हीं की आज अपने पर अप्रसन्नता का कारण क्या है ? इन्हीं विचारों में उसका मस्तक घूम रहा था। उसे यह तक स्मरण न था कि मैं किस दिशा में किस मार्ग से जा रहा हूं। इतने ही उससे किसी ने प्रश्न किया कि "क्यों ! आज मनहीमन किस विचार सागर में गोते लगा रहेहो?" ज्यों ही कुमारसेन ने अपना सिर ऊपर को उठाया तो क्या देखता है कि; स्वर्गीय अप्सरा की भांति आंखों में चकाचौंध डाल देनेवाली वसुंधरा अपने सन्मुख खड़ी हुई है। उसने पूछा—

"कौन; वसुन्धरा ! तू है ?"

"हाँ, मै ही हूं। महाराज यशोवर्धन के द्वितीय सेनापति को मैं भला क्यों दिखाई देती, यह तो एक साधारण सी—" "छि अब तू उन सब बातों को भूल जा !" उसे बीच में ही रोक कर कुमारसेन ने कहा, "वसुन्धरे ! अब मै एक अत्यन्त क्षुद्र मनुष्य बन गया हूं ! "

"मैं नहीं समझ सकती, आप क्या कह रहे हैं ? "

"मुझे महाराज ने अपने राज्य से बाहर होजाने का दंड दिया है!" विषण्णवदन से कुमारसेन ने कहा कि 'यदि अब मैं महाराज को पुनः दृष्टिगोचर हुआ तो एकदम मेरा शिरच्छेद होजायगा !

"परन्तु इतनी कठोर शिक्षा क्यों? क्या अपराध हुआ?" "ईश्वर की शपथ" दाँतों से होठ दबा कर कुमार ने कहा "आज तक मैंने महाराज की सेवा बड़ी ईमानदारी से की है। किसी ने मेरे विरुद्ध महाराजके कान भर दिये कि कुमार सेन हूणराजा से मिला हुआ है, इसीसे मुझे यह दंड दिया गया है !"

"क्या हूणराजा से मिला हुआ" इन शब्दों को सुनते ही उस कोमल बालिका के विशाल नेत्र एकदम प्रफुल्लित हो उठे ! परन्तु कुछ भी कहिये कि तत्काल ही उसका मुंह फीका पड़ गया ! वह चिंतायुक्त दृष्टि से नीचे देख रही थी। बड़ी देर के बाद उसने कहा "तो अब आप क्या करेंगे !"

"और क्या करूंगा ! "राजाज्ञा के अनुसार मुझे बाहर जाना ही पड़ेगा ! परन्तु वसुन्धरे, इस जन्म में तुझे सुखी करने अथवा तेरे निर्मल प्रेम का बदला चुकाने का योगायोग मेरे भाग्य में नहीं लिखा है। तेरे समान [illegible] इस दुर्दैवी कुमारसेन के हिस्से में क्यों कर आ सकती है ?"

"तो क्या आप को मेरे प्रति [illegible] मालूम होता है ? क्यों न आयेगा, महाराज यशोवर्धन के गुरु और [illegible] सेनापति के लिये मैं क्यों कर योग्य होसकती हूं। इसलिये मैं आप का स्मरण करती हुई आजन्म [illegible]—"

"क्यों ! वसुन्धरा—मैं यह [illegible] ! तेरे सिवाय अन्य स्त्री को इस हृदय में स्थान भी नहीं है क्या ? [illegible] ?"

"तो फिर आप मेरा त्याग क्यों करते हैं ?"

"मैं नहीं करता ! राजाज्ञा मुझे ऐसा करने को विवश कर रही है—"

"तो [illegible] एक [illegible] अन्य [illegible] करिये ! मैं कहती हूं, [illegible] उसके अनुसार आप करिये !"

"वह क्या [illegible] है ! क्या मैं [illegible] [illegible] अनुसार [illegible] हूं ! [illegible] है !"

"[illegible] [illegible] [illegible]" कुमार-[illegible] [illegible]

चाहता था, किन्तु उसे रोक कर फिर वह कहने लगी—राजाज्ञा भंग का पातक आप के सिर न आवेगा। इन दिनों महाराज के दोनों ओर से शत्रु लोग बढ रहे हैं। आप यदि कहीं आसपास ही हुए तो योग्य समय सहायता-मिलेगी !"

"क्या कहना है, इस कोमल अन्तःकरण में कैसे सुसदीप विचार भरे हुए हैं !" बिम्बाफल के समान आरक्त ओष्ठों का [illegible] करते हुए कुमार ने कहा "ठीक—मैं तेरी आज्ञानुसार ही चलूंगा"

इतने ही में किसी के आने की आहट सुनाई दी। वसुन्धरा ने रोते हुए कहा "कुमार, जान पड़ता है कि पिता आरहे हैं, इसलिये तुम जाओ। आज दो दिन हुए, नरसिंह गुप्त के दो सर्दार हमारे आये हुए हैं—

इस प्रकार कहती हुई वह अपने वसतिस्थान की ओर पलट, और कुमार भी तालवृक्ष की ओट में अदृष्य होगया!

(४)

प्रमत्तवर का बाण अचूक लगा। कुमारसेन को राजा यशोवर्धन ने अन्याय से हद्दपार कर दिया—ऐसा जान कर अनेक शूर सैनिक नौकरी छोड़ कर अपने २ घर चल दिये।

वृद्ध अंगारसेन बड़े चक्कर में पड़ गया। उसका सेनाबल घटने से जो भी चित्त उद्विग्न होरहा था, तथापि वह स्वामिसेवातत्पर वृद्ध अपने शरीर की पर्वाह न करते हुए चुने हुए मनुष्यों को महाराज के पास छोड़ कर अवशिष्ट सेना को साथ ले हूणराजा का सामना करने को चल दिया। गुप्तवंश और यशोवर्धन का दीर्घकाल से हाड़वैर है के कारण नरसिंह गुप्त ने प्रमत्तवर के कहने पर से राजधानी पर एकदम हल्ला बोल दिया !

महाराज यशोवर्धन ने उसका [illegible] अलग किया। त्योंही उन्हें वहां कुमार के बदले एक विशाल केशगुच्छ धारण किये हुए एक [illegible] बालिका का मुखकमल दृष्टिगोचर हुआ।

प्रमत्तवर का काम पूरा होगया। जिस वंश का उसने पीढ़ियों से अन्न खाया था, उसीका उदय नाश होने के लिये उसने आज पर प्रस्थाश्रम त्याग कर तलवार हाथ में ली ! महाराजा यशोवर्धन शूर अवश्य थे-परन्तु राजनीतिज्ञ प्रमत्तवर के इस कपट को देखते ही उनकी हिम्मत टूट गई, तथापि उन्होंने अपने लोगों के द्वारा ही सामना करने की तय्यारी की ! नरसिंह गुप्त का सेनाबल भी भारी था और साथ ही उसके पास शूर सर्दार भी थे। तो फिर आगे पूछना ही क्या, रात की रात में उसने राजधानी में प्रवेश करके महाराज यशोवर्धन को घेर लिया। महाराज को अकेला पाकर नरसिंह गुप्त ज्योंही अपनी तल्वार म्यान से [illegible] उन पर वार करना चाहता था कि इसी बीच उसके हाथ पर [illegible] भील युवक का वरछा प्रहार हुआ और नरसिंह गुप्त धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा ! [illegible] स्वामी की इस अवस्था को देखकर स्वामिभक्त [illegible] पर एकदम उस भील युवक पर अपने खड्ग का प्रहार करना चाहता था कि, उसका हाथ पीछे ही किसीने पकड़ लिया और [illegible] सामने एक और उसके सहायक को पार करता हुआ [illegible] तत्काल ही यशोवर्धन के साथियों ने प्रमत्तवर और नरसिंह गुप्त [illegible] प्रमत्तवर का प्रतिकार करनेवाले इस वीर को अपने [illegible]

यशोवर्धन ने उसवीर की ओर देखा किन्तु वे [illegible] पहचान न सके क्योंकि उसने शिरस्त्राण से अपना सारा मुंह ढंक लिया था ! [illegible] [illegible] से यह कुमारसेन होना-ऐसा उन्हें भास हुआ ! जिस [illegible] युवक ने [illegible] पर महाराज की [illegible], उसकी ओर देखने [illegible] [illegible] ही उन्होंने [illegible] दिया था ! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

स्वराज्य की लढ़त ।

(लेखक—श्री० दामोदर विश्वनाथ गोखले बी. ए. एल-एल. बी.)

"स्वराज्य—योजना का विचार होते रहने की दशा में रौलेट बिल के समान राष्ट्रीय स्वतंत्रता का नाश करडालने वाले, राष्ट्र की इज्जत को धूल में मिला देनेवाले और राष्ट्रीय स्वाभिमान का गला घोंट देनेवाले कानून को कृपा कर पास न कीजिये, इस प्रकार के कायदे लोगों की इच्छा के विरुद्ध उनके माथे मढ़कर आप जिन क्रांतिकारक विचारों का निर्मूलन करनेवाले हैं, वह क्रांतिकारक आन्दोलन कभी बंद न होगा, वरन् उन क्रांतिकारियों को इन गलाघोंटू कानून के बल पर नया उत्साहदान मिलेगा। और फिर जिस उद्देश्य से आप इस कायदे को पास कर रहे हैं वह सफलीभूत न होगा" इस प्रकार का बुद्धिवाद लोकपक्षीय नेताओं ने सर्कार के सामने उपस्थित किया था, किन्तु हमारे हतभागी राष्ट्र के दुर्दैव से उस समय सर्कार पक्ष में विलक्षण हठ का संचार होगया और उपरोक्त बुद्धिवाद का कुछ भी उपयोग न हुआ। देश में, न भूतो न भविष्यति, इस प्रकार का आन्दोलन मचेगा, इस बात को सरकार जानती थी, और लोकपक्षीय नेताओं की ओर से भी इस बात का इशारा मिला था। आशा थी कि और नहीं तो वॉइसराय सा० तो कभी अपनी अनुमति न देंगे, परन्तु इस राक्षसी पिल्ले को जन्म देकर प्रकट करने का काम जिन लोगों के हाथ में था, उन्होंने इन सब बातों का पहले से ही प्रबन्ध कर लिया था। बिल के पास होतेही तत्काल उसपर वॉइसराय साहब की अनुमति प्राप्त करके उसे कानून का स्वरूप दे दिया गया। 'सर जार्ज लाउन्डस' का आह्वान 'महात्मागांधी' ने स्वीकार कर ही लिया था। अर्थात् सत्याग्रह का आन्दोलन शुरू हुआ और म० गांधी को पंजाब जाने में रुकावट की गई, और उन्हें कैदकर अज्ञात स्थान पर पहुँचा दिया है, इस प्रकार की खबर चारों ओर फैलतेही लोकमत का क्षोभ बढ़ कर प्रचलित कानूनों की मर्यादा का स्थान २ पर अतिक्रमण हुआ। बम्बई प्रांत के अहमदाबाद, वीरमगाम आदि स्थानों में और पंजाब के अनेक भागों में भारी २ दंगे हुए। तारयंत्र तोड़ दिये गये और तार काट डाले गये, रेल्वे की पटरियाँ उखाड़ डाली गईं और स्टेशन जला दिये गये। पोष्ट ऑफिस जमींदोस्त हुए और सर्कारी इमारतों में आग लगाकर पुलिस कचहरियोंके कागज पत्र अग्निके मुख में पड़कर भस्म हुए, और सबसे भयंकर, तथा भारत के इतिहास में विगत पौन शताब्दिमें जो बात न होसकी थी वह इस बार होगई अर्थात् भिन्न २ दंगों में कोई पांच छह अंग्रेज मारे गये। लोक क्षोभका यह स्वरूप और आगे बढ़ता है या क्या? इस प्रकार का भय सरकार और लोकपक्षीय नेता दोनों के हृदय में उत्पन्न होगया, सर्कार ने अपने अमोघ सैनिक सामर्थ्य का अमोघास्त्र छोड़ा। पंजाब के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर मायकल ओडायर ने लाहौर, अमृतसर, गुजरानवाला, आदि भिन्न २ स्थानों में फौजी कानून जारी कर दिया। योरोपीय महायुद्ध के कारण जिन दो भयंकर अस्त्रों के उपयोग की कथा कर्णोपकर्णी भारतवर्ष ने सुनी थी, उन मशीनगन और लड़ाकू विमानों से गिराये जानेवाले बम के गोलों का प्रत्यक्ष प्रयोग पंजाब में किया गया। घर २ से निकल जाने का सर्कारी हुक्म न माना जाने के कारण कितने ही स्थानों पर सैकड़ों मनुष्य पांच दस मिनिट में मार डाले गये। गुजरानवाला-स्टेशन और तारयन्त्र की रक्षा के लिये आकाश मार्ग से लोगों पर बम गिराये गये। स्थान २ पर फौजी कानून का अमल शुरू होकर पंजाब में एक दो सप्ताह में शांति स्थापित करदी गई। फौजी कानून का स्वरूप कैसा होता है, इसकी कल्पना यहां के लोगों को आज तक न होसकी थी। वह आज बस, पंजाब में जारी किया हुआ

फौजी कानून का साम्राज्य

प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है। स्थान को ८ बजे तोप छूटने के साथ ही जिस स्थान या जिस घर में हम हों, वहां से हमें सूर्योदय तक हिलना भी न चाहिये। फौजी हुक्म कौनसा छूटा है, उसे देखने के लिये शहर के प्रत्येक भाग को अपने २ प्रतिनिधि, सेनापति साहब के डेरे में बिठा रखना चाहिये, और उन्हें समय २ पर सेनापति जो हुक्म जारी फर्मावें उसे अच्छी तरह समझ कर उसे अपने मुहल्ले भर के लोगों को समझा देना चाहिये। फौजी लोगों का जो पहरा स्थान २ पर बैठाया गया है, उनके सुभीते के लिये सेनापतिके हुक्म से योग्य अधिकारियों को मनमाने स्थान, घर, ऑफिस, स्कूल या कालेज मेंसे बिजली के पंखे रोशनी आदि सुख की सामग्री बिला रोकटोक के ले लेना चाहिये। आटा, दाल, दूध आदि अमुक भाव से ही देना चाहिये, अमुक संस्थाके विद्यार्थियों को अथवा अमुक व्यक्तियों को अमुक समय दिन में फौजी मुकाम पर जाकर अपनी हाजरी देनीही चाहिये, और दूकानदारों को अपनी २ दूकानें अमुक समय तक खुली रखनी ही चाहिये। सब से अन्त में कही जाय—वह बात यह है कि इन हुक्म के तोड़नेवाले को सार्वजनिक मार्ग और सरे बाजार कोड़े और बेतें मारी जांय, इस प्रकार के हुक्म छोड़े गये हैं। दंगे खोर लोगों की चौकसी करने के लिये फौजी कोर्ट भी स्थापित किये गये हैं। दुर्दैव की बात तो यह है कि इन सब हुक्मों की अमल बजावरी जोर शोर से शुरू होकर लाहौर के समान राजधानी के शहर में दिन दहाड़े सरे बाजार कोड़े की सजा अमल में लाईगई। फौजी कोर्टों का फैसला तड़ाक् फड़ाक् होता है और दण्ड भी जबरदस्त दिया जाता है। लाहौर की बादशाही मसजिद में एक मौलवी लोगों को दंगा करने को उकसा रहा था, ऐसा कहा जाता है। सुननेवालों में एक डिप्टी अधिकारी था, किन्तु अब वह पहचान लियागया, तब चिढ़े हुए लोगोंने उसे अपने घर तक पहुँचा दिया। वह सुरक्षित पहुँच गया, परन्तु उसकी मसजिद में गिरी हुई पगड़ी वहां के लोगोंने जलादी और इस पगड़ी जलाने के भयंकर अपराध के लिये, तथा यह अपराध सम्राट् के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने सम्बन्धी बतलाकर अपराधियों को कालेपानी की सजा दीगई। लेफ्टिनेन्ट गवर्नर की कृपा के कारण यह सजा तथा अन्य सजाएँ भी कम कर दीगई हैं। लोगों में शांति स्थापित करना प्रत्येक सर्कार का आद्य कर्तव्य होने से सर्कारने अपने उग्र फौजी सामर्थ्य की झलक दिखाकर जहां तहां शांति स्थापित करदी, यह बात ही ठीक ही हुई। बम्बई प्रांत और पंजाब के दंगे साधारण दंगे न होकर ब्रिटिश सत्ता को उलट देने के लिये ताक लगा कर बैठे हुए अराजकों; और योरोप में बालशेविकों का साम्राज्य स्थापित करने की इच्छा रखनेवाले, बालशेविकों तथा उनके सहायकों की कारवाई के निदर्शक हैं, ऐसा सर्कारने प्रगट किया है। प्रयाग के पायोनियरने कहा है कि योरोप के बालशेविक, तुर्किस्थान के पराभव के कारण चिढ़े हुए मुसलमान और और यहां के गर्मदल वालोंने ही ये दंगे किये हैं। बम्बई के 'टाइम्स' में पचीस हजार पौण्ड अर्थात् पौने चार लाख रुपया देकर बालशेविकों ने अपने सहकारियों को भारतवर्ष में भेजा है, इस आशय का जो तार प्रसिद्ध हुआ था, उसका उल्लेख करके, तथा इसके सिवाय केवल सर्कारी इमारत जलाने, ऐंग्लो भारत लोगों पर आक्रमण करने, मुख्यतः रेल्वे स्टेशन, रेलगाड़ियां, तारयन्त्र आदि आवागमन के साधनों पर धावा करने, और उसके व्यवस्थित तथा सुसंघटित स्वरूप का होने आदि बातों का उल्लेख करके इन सारे खेल को बालशेविकों का खेला बतलाया है। मि० विलिंग्डन भी शिमला पहुँच कर यहां के लोगों को सूचित किया है कि अंग्रेजी राज्य पर भयंकर संकट आनेवाला है, इसलिये सब को अन्य राजकीय आन्दोलन छोड़ कर सर्कार की सहायता करनी चाहिये। कानून का अमल व्यवस्थित रूप में होने देकर शांति स्थापना के कार्य में सहायता देना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होने के कारण महात्मा गांधीने करना

इंग्लिश खाड़ी के नीचे से बोगदे का मार्ग

इँग्लैएड और फ्रांस इन दो देशों में राजकीय और व्यापार विषयक कारणों से पारस्परिक व्यवहार पहले से ही बहुत बढ़ गया था, और उसमें फिर महायुद्ध के समय सेना और युद्ध सामग्री लाने और ले जाने काम पड़ने पर वह परमावधि को पहुँच गया। और जान पड़ा कि इस काम के लिए परंपरागत साधन बिलकुल ही अपर्याप्त हैं। स्टीमर-द्वारा मनुष्य और माल इँग्लैएड से फ्रांस तक लाना और वहां उसे उतार कर फिर रेल पर चढ़ाना। इस प्रकार के द्राविड़ी प्राणायाम में बहुत सा समय चला जाता है, इस बात को ध्यान में लेकर इँग्लैएड और फ्रांस में के इँजिनियरों ने ट्रेनफेर की युक्ति की योजना की। इस युक्ति से युद्ध की अवधी में बीच में न उतारते हुए फ्रांस के मोर्चे तक इँग्लैण्ड का माल पहुँचाया जाने लगा, परन्तु इस मार्ग में भी बादल का भय है, और प्रवासियों के जीवन को भी कभी अपाय हो जाने का धोखा है, उसे दूर कर वर्तमान में प्रचलित आवागमन से भी अधिक जोर का आवागमन इँग्लैएड और फ्रांस के बीच में शुरू किया जाय, इस हेतु से इँग्लिश मुहाने के नीचे से बोगदा या भूमिमार्ग निकालने की कल्पना सामने लाई गई है। और वह व्यवहार्य मानी जाकर इस मार्ग के तय्यार हो जाने पर कितने ही बादल आवें तो भी इँग्लैएड के लोग स्वदेश से फ्रांस को 'पौन घंटे में' पहुँच जावेंगे, और रशिया को छोड़ कर योरोप के किसी भी देश की राजधानी तक गाड़ी न बदलते हुए जाया जा सकेगा। इँग्लैएड से पेरिस पहुँचने में छह सात घण्टे लगेंगे। इस मार्ग के तय्यार करने में '४।५ वर्ष' लगेंगे और खर्च "२ करोड़ पौण्ड या ३० करोड़ रुपया लगेगा।" भीतर जो पानी फूट निकलेगा, उसे निकाल डालने की अच्छी व्यवस्था की जायगी, और हवा पहुँचाने के लिये तिरछे बड़े स्थान २ पर बनाये जायँगे। इसी समय यह योजना उपस्थित किये जाने का कारण यह है कि महायुद्ध समाप्त होजाने के कारण इँग्लैण्ड में के लक्षावधि लोगों को ४।५ वर्ष तक पेट भरने का सुभीता हो जायगा। और इस प्रकार से प्रत्येक युद्ध के समाप्त हो जाने पर बेकार सिपाहियों को रोकता रखने का जो विकट प्रश्न मुत्सद्दियों को छुड़ाना पड़ता है, यह भी अनायास ही हल हो जायगा। सारांश बोलशेविज्म का प्रसार इँग्लैण्ड में न होने देने के लिये भी एक रीति से यह योजना उपयोगी होगी। शास्त्र संशोधकों की दृष्टि से इस प्रयोग के द्वारा संसार की आज तक की कल्पना में भारी क्रांति होने का सम्भव है। अब तक संसार को विदित था कि दो प्रदेशों को अलग कर देनेवाला समुद्र ही है, परन्तु अब यह कल्पना बदल कर जमीन की अपेक्षा समुद्र ही दो देशों को मिलाने का एक उत्तम साधन है ऐसा आगे कहना पड़ेगा। क्योंकि आकाश से विमान, ऊपर से जहाज, और भीतर पनडुब्बियां और तलोभाग में गुफा के द्वारा से होकर रेलगाड़ियों का आवागमन शुरू हो जाने पर क्या हम यह नहीं कह सकेंगे कि, दो देशों के बीच का सम्बन्ध दृढ़ करने का द्वार समुद्र ही है ?

से शुरू किये हुये सात्विक आन्दोलन का आरम्भ गत मास को बीती हुई घटनाओं के मूल में है—इस प्रकार की कल्पना करके सत्याग्रह का आन्दोलन बन्द करने की सूचना देनेवाले व्यक्तियों की की बुद्धिमत्ता पर दया करनी होगी। सत्याग्रह आन्दोलन रूपी अश्वत्थ वृक्ष के अहिंसा और सत्य मूल हैं, और जिन कायदों में नैतिक अंश नहीं, उनका भंग करनाही यह उस वृक्ष की अनन्त शाखाओं में से एक शाखा है, ऐसा उस दिन महात्मा गांधीने लिख कर प्रगट किया है जो अक्षरशः सत्य है। रौलेट कानून को उठा लेने के लिये जो २ वैध आन्दोलन उपयोग में लाये जानेवाले हैं उनका शिरमौर सत्याग्रह है। वसिष्ठादि महर्षि तथा प्रल्हाद, हरिश्चन्द्रादि राजाओं के सत्याग्रह से पुनीत बनी हुई इस भारतभूमी के निवासी सत्याग्रह के सात्विक दैवी तेज से अभी तक चमक रहे हैं। और इसीलिये रौलेट बिल के विरुद्ध समस्त वैध नियम पूरे हो जाने पर हताश होने से पूर्व सत्याग्रह के रामबाण उपाय, की योजना करने की महात्मा-गांधीजीने सम्मति दी। और इस सत्य तत्व का कवच धारण करने पर ही हिन्दुस्थान अपनी रक्षा कर सकेगा। महात्मागांधी को सत्याग्रह छोड़ने की सम्मति देने में विगत मास की घटना को कारण बतलाने-वाले पण्डितम्मन्यों को—सत्याग्रह क्या चीज है इस बात की कल्पना तक नहीं हो सकती, ऐसा कहना पड़ेगा।

ईश्वरदत्त जो २ मानवी अधिकार हैं उन्हें विनष्ट करनेवाली जो राजकीय या सामाजिक अवस्था हो; उससे मुक्त होने के लिये जो २ सात्विक प्रयोग करने पड़ते हैं—वे सब प्रयत्न ही सत्याग्रह हैं। रौलेट बिलों ने नैसर्गिक मानवी अधिकारों का विध्वंस किया है, और इसीलिये प्रत्येक सत्यप्रिय स्वाभिमानी व्यक्ति को इस कानून की सत्ता के अधिकार में एक क्षण भी न रहना चाहिये, और यथाशक्ति उसका प्रतिकार करना चाहिये ऐसा महात्मा गांधीजी का कहना है। इस प्रतीकार के करते समय दूसरे को यत् किंचित् भी दुःख न देते हुए स्वतः सब दुःख सहन करना ही सत्याग्रह के धर्म का दण्डक है। दुःख देनेवाला जुल्मी मनुष्य या कानून कितना ही सामर्थ्य-वान हो तो भी आनन्द से या हंसते हुए उस जुल्म की आपदाओं को सहन करने की शक्ति, के आगे सामर्थ्यवानों का सामर्थ्य, और जुल्मी कायदों का जुल्म लला पड़ जाता है, और सामर्थ्यवानों को अपने सामर्थ्य और जुल्म पर लज्जा विदित होने लगती है। राक्षस के समान शक्ति होना अच्छा है, परन्तु उसका राक्षसी विधि से उपयोग करना गर्ह्य होता है। परन्तु मनुष्य कभी २ थोड़े से अधिकारों से इतना चढ़ जाता है कि, उसे दूसरे के अधिकारों का गुमान तक नहीं रहता, और ऐसे समयमें सत्याग्रहही मनुष्यका उद्धार करता है। सत्याग्रही मनुष्य की छल और आपत्ति सहन करते हुए (उसकी) स्वीकार की हुई आनन्द वृत्ति को देख कर

स्वर्ग से देवता आनंदाश्रु की वृष्टि करते हैं,

और यह वृष्टि ही सत्याग्रह की विजय का चिन्ह है। यही सामर्थ्य और जुल्म का प्रतिकार है। हूं या चूं न करते हुए दण्ड के सामने सिर झुकाने में ही अत्यन्त सामर्थ्य भरा हुआ है। और इसीलिये सत्याग्रह सामर्थ्य दीनों का रुदन न होकर अत्यन्त सामर्थ्यवान सात्विक वीरों का मूक आह्वान अस्त्र है। विगत मास के दंगे सत्याग्रह आन्दोलन के कारण उत्पन्न हुए इनका कारण दूसरी ओर ही खोजना चाहिये यह बात सत्याग्रह के उपरोक्त विवेचन पर से स्पष्ट दीख पड़ेगी। मा० पं० मदन मोहन मालवीय और कलकत्ते को नर्मदलवालों की कमेटीने भी महात्मा गांधीकी रुकावट से इस अनर्थकारी घटना का होना बतलाया है। अहमदाबाद और वीरमगांव के दंगे महात्मा गांधी को गुजरात होते ही शांत हो गये, यही एक प्रमाण इसकी पुष्टि के लिये पर्याप्त है। विगत पांच वर्षों में महायुद्ध के कारण जनता की बड़ी दुर्दशा हुई है। उसमें भी फिर युद्धज्वर, और अकालने और गजब कर डाला स्वराज्य की योजना का भी कुछ पता न लगता देख कर ऐसी परिस्थिति में निराशा से शुष्क अतएव ज्वालामार्ग बनेहुए वातावरण में रौलेट कानून रूपी चिनगारी गिरते ही यह स्फोट हुआ, यही बात सर्व सम्मत है। और इस कारण-परंपरा को भूलकर सत्याग्रह के माथे दंगे का ठीकरा फोड़ना सरासर पाप है। अपने पर का आक्षेप दूर करने के लिये महात्मागांधीने यह आन्दोलन कुछ दिन के लिये बन्द कर दिया, तथापि उन्हें सत्याग्रह की पवित्रता के विषय में तिलमात्र शंका नहीं है। उन्होंने जुलाई के आरम्भ में अपना आन्दोलन पुनः आरम्भ करने का निश्चय भी प्रगट किया है। इस सत्याग्रह के आन्दो-लन पर उनका कहां तक विश्वास है, सो स्पष्ट प्रगट हो सकता है। स्वराज्य आन्दोलन पर विगत मास की घटनाओं का क्या परिणाम होता है सो देखना चाहिये। अंग्रेजी जनता और अंग्रेज मुत्सद्दी धोखा नहीं खावेंगे, ऐसी उनके उद्गार पर से आशा प्रतीत होती है। हिन्दुस्तान और इंग्लैण्डमें के स्वराज्य विरोधियों की जम्बूक ध्वनि की ये लोग पर्वाह न करेंगे। वरन् उनमें हिन्दुस्तानकी वर्तमान राज्यपद्धती में कुछ भयंकर भूल होरही है, उसे सुधारना चाहिये—इस प्रकार की भावना उत्पन्न होती सी जान पड़ती है। मशिन्गन् से गोलियां बर्सा कर और विमानों से बम बर्सा कर शांति स्थापित करने का प्रसंग जिस राज्यपद्धति के कारण उपस्थित हुआ, उसको सुधारना चाहिये। और भारतवासियों को जितनी शीघ्रता से होसके स्वराज्य का उप-भोग करने देना चाहिये। इस प्रकार इंग्लैण्ड के राजनीति विशारदों का मत है। पंजाब में प्रचलित फौजी कानून के साम्राज्य में बेंत मारने की जो सजा दी जाती है, उसके सम्बन्ध में भारतीय जनता की भांति ब्रिटिश जनता को भी क्रोध उत्पन्न हुए बिना न रहेगा। बेंत या कोड़े मारने की सजा पशुवृत्ति है। ऐसा समस्त सुधारक जनता का मत है। लाहौर में खुले रास्ते मारी जानेवाली बेंतों का पक्ष लेकर ऐसा कहा गया कि यह शिक्षा गाँव में के उठाईगिरू और छोटे २ दुकानदारों को दी गई। परन्तु इस स्पष्टीकरण से किसी स्वाभिमानी भारतवासी का समाधान न होसकेगा। वरन् इस प्रकार की शिक्षा दिये जाने की बात सुनते ही उनका रक्त उबलने लगेगा, यह बात ब्रिटिश जनता को अच्छी तरह विदित होसके, इतना अंग्रेजी मन उदार है। कुछ अज्ञानी और दंगेखोर लोगों ने ईंट ढेले फेंके, उनके उत्तर रूप में गोलियाँ बर्साना भी तो उचित नहीं है। मि० बिसेन्ट ने इस विषय में कितना ही पक्षपात किया, तो भी ब्रिटिश जनता को नित्य के अनुभव से उपरोक्त दंगे किस ढंग के हैं, सो भली प्रकार मालुम है, ईश्वरी सत्ता से इन सब का परिणाम मनोनुकूल होगा, इसमें शंका नहीं।

उपरोक्त समस्त राष्ट्रीय आपत्तियों पर छाप लगाने या सब पर कलश चढ़ाने के लिये ही मानो ता० २६ अप्रैल को हिन्दुस्थान सरकार के हुक्म से क्रानिकल के ख्यातनामा संपादक 'मि० बेन्जामिन गाय हार्निमन' को भारत सीमा से पार कर दिया। दूसरे दिन के विलायत जाने वाले जहाज में बिठा कर गुपचुप उनकी रवानगी विलायत को करदी गई। मि० हार्निमन की निस्वार्थ देशसेवा, उनकी सत्यप्रिय स्पष्ट लेखनी', उनका निरुत्तर कोटिक्रम, असत्य और अन्याय के प्रति उनकी चिढ़ और नौकरशाही के बेलगामी कारोबार पर उनकी तीव्र आलोचना, नौकरशाही और नृपाङ्गणगत खलों को सहन होना अशक्य था, इसी कारण मि० हार्निमन के साथ ही उनके क्रानिकल का अस्तित्व भी मिटा दिया गया। लोकपक्ष की ओर के वीर एक के बाद दूसरा उठा लेने से अथवा उसके समाचारपत्रों का मुँह बंद कर देने से, केवल न्याय और सत्य के आग्रह को अंतिम दर्जे तक पहुँचाने के लिये शुरू किया हुआ आन्दोलन बंद होना असम्भव है। मि० हार्निमन के अंतिम सन्देशानुसार "यह आन्दोलन दैवी है, और इसके नेताओं को ईश्वरेच्छा से किसी समय यश अवश्य ही मिलेगा। तो फिर सिंह के निकल जाने पर जिस तरह कुत्ते भौंकते हैं, उन्हीं की तरह टाइम्स ऑफ इण्डिया जैसे पत्र कितनी ही व्यक्ति विषयक गालियाँ देते रहें, तो उसे कौन सुनता है।

देश भर में विगत मास की घटनाएं उपस्थित कर उन्हें घटित करने वाला एक मात्र रौलेट बिल ही है, इसके लिये समस्त लोकपक्षीय नेताओं का एकमत है। कानून पास होजाने से उसे अब वापस लेने में अपनी इज्जत में खामी आती है, ऐसा सर्कार को जान पड़ता है, और बिना लोक सम्मति के पास किया हुआ यह कानून हमारे स्वाभिमान पर हमला करनेवाला है, ऐसा लोगों को जान पड़ता है। इस पेंच से मुक्त होने की है० बेपटिस्टाने एक

नई युक्ति

बतलाई है। अभी उस दिन की अहमदनगर वाली प्रांतिक परिषद में सभापति की हैसियत से दिये हुए व्याख्यान में उन्होंने लार्ड चेम्स-फोर्ड से ऐसा निवेदन किया है कि, और अगर कानून पास होगया है तो ठीक ही है, परन्तु उसको किसी भी अंशमें अमल में लाने से पहले हम लोगों से सम्मति लेंगे, ऐसा आप प्रगट कीजिये, इस बातपर यदि सरकार ने ध्यान दिया, तो उसे न तो यह कानून ही वापस लेना पड़ेगा न लोगों को ही ऐसा भास होगा कि सर्कार ने हमारी सम्मति लिये

चित्रमयजग

सत्याग्रह आन्दोलन बंद

सत्याग्रह आन्दोलन बंद ... स्थान २ के लोगों
प्रगट करदी है। महात्मा गान्धीने स्थान २ के लोगों
लिये बहुत कुछ प्रयत्न किया, यही नहीं बरन् सत्या-
कारण यदि कदाचित कहीं भी अनर्थ परंपरा प्रच-
स अज्ञात और काल्पनिक पातक के प्रायश्चित्तार्थ
र्जीने ७२ घंटे का उपवास किया। और लोगोंने यदि
ा फसाद बन्द नहीं कर दिया तो, मैं लोगों के विरुद्ध
अनाहार रह कर प्राण त्याग दूंगा, इस प्रकार की
कार के फौजी सामर्थ्य का अपूर्व प्रदर्शन, महात्मागांधी
और स्थान स्थान के नेता और,लोगों के शांति स्थापित
किये हुए प्रयत्नों के योग से सर्वत्र शांति स्थापित हो
ात बड़ी समाधान कारक है।
दंगा बालशेविकों का उभाड़ा हुआ है? और सत्याग्रह
इन सब कृत्यों के लिये कहां तक जिम्मेदार हो सकता
राज्य की मांग पर इसका कहां तक-परिणाम होता है, इन
का शांतिपूर्वक विचार करना अत्यन्त आवश्यक है भारत
जी पत्रकार इसे बालशेविकों का षड्यन्त्र बतलाकर जिस नींव
कल्पना का मन्दिर खड़ा किया चाहते हैं, वह नींव बिल-
काल्पनिक है। पचीस हजार पौण्ड हिन्दुस्तान में बॉलशेविक
लाकर उस पैसे के बल पर उन्होंने यह दंगा उभाड़ा है यह
ही असम्भाव्य है। जिस तार के बल पर यह इमारत खड़ी
रही है, वह तार सर्कारी या किसी अधिकृत व्यक्ति की
या किसी विशिष्ट स्थान से आया हुआ नहीं है, इसे खूब
में रखना चाहिये। विशेषतः पचीस हजार पौण्ड के की रिश्वत
न्दुस्तान में फिसाद खड़ी होने की बात कहना, मानो भारत-
यों की बुद्धिमत्ता, उनके सामर्थ्य और विशेषतः राजनिष्ठा
हँसी करना है। पैसे के जोर पर यदि झगड़े खड़े किये जा
ते तो महायुद्ध के समय जर्मनी भला ऐसा करने से क्यों चूकता?
बालशेविकों की अपेक्षा जर्मनी के पास तो बहुत सा पैसा था।
रतवासियों की राजनिष्ठा ही अत्यन्त संकट के समय कसौटी
चढ़ाई जा चुकी है, और महायुद्ध की पांच वर्ष की अवधी में
स्य बैठनेवाला हिन्दुस्तान, महायुद्ध में करोड़ों रुपयों की मदद
करनेवाला हिन्दुस्तान, क्षुद्र बॉलशेविकों तथा उनके कौड़ी मोल
पैसों के नाद में लग कर अराजनिष्ठ बनगया, ऐसा कहनेवालों के
बुद्धिमांद्य और उनकी वावदूकता पर आश्चर्य होता है, और भारतीय
राजनिष्ठा को निःसत्व बतलाने सम्बन्धी उनके प्रयत्न के सम्बन्ध में
बड़ा क्रोध उत्पन्न होता है। विगत मास के दंगे के विषय में सर्कार
कहती है कि, उसके लिये पहले से ही तय्यारी थी और दंगे में
सामना करने की शक्ति, व्यवस्थित स्वरूप और सुसंघट्टना भी थी।
इस बात को सर्कार की कही हुई होने से ही मानना पड़ता है,
परन्तु हम इस सर्कारी कल्पना को अचूक नहीं ठहरा सकते। यदि
उपरोक्त बातें होतीं, दंगा करनेवाले लोगों का कोई नेता होता, अथवा
उन्हें बालशेविकों की सहायता होती तो फौजी मदद आने के पूर्व-
ही अधिक भयप्रद स्थिति निर्माण होजाती। रेल्वे के रूल
उखाड़ डालने पर से ही इस बात की कल्पना करना कि इन सब
बातों में सुशिक्षित लोग भी सम्मिलित थे; निरर्थक है। बे० बेप्टिस्टा
के प्रांतिक परिषद के अध्यक्ष की हैसियत से दिये हुए अपने भाषण
में कहे अनुसार 'जो मजदूर रूल जमाते हैं, उन्होंने ही वे उखाड़
डाले हैं' यही उत्तर इस आरोप के योग्य और उपयुक्त है। अमूर्त
और अव्यक्त सर्कार के पुलिस, पोस्ट, रेल्वे, सर्कारी इमारतें ही मूर्त
स्वरूप होने से महात्मा गांधी को रोक कर किसी अज्ञात स्थान पर
पहुँचा दिया, इस कल्पना के द्वारा

भड़की हुई जनता

स्वच्छंदता पूर्वक सरकार के व्यक्त स्वरूप के विरुद्ध अपनी चिढ़
को प्रगट करने लगी, अधिक हुआ तो यही बात कही जासकेगी।
इस दंगे में कानून का उल्लंघन किया गया, सर्कारी इमारतों का नुक्सान
हुआ और बहुत कुछ प्राणहानि हुई। और विशेषतः कुछ अंग्रेज अधि-
कारी मारे गये इसके लिये प्रत्येक नागरिक अपना हार्दिक दुःख प्रगट
कर रहा है, और यह परिस्थिति बदल कर आगे फिर कभी ऐसे
अत्याचार न होने पायें, इसके लिये जनता के नेता हर एक प्रकार से
सरकार को सहायता दे रहे हैं और आगे भी देते रहेंगे। सच्चे नागरिकों
का पहला कर्तव्य यही है। यदि हमें स्वराज्य के अयोग्यही सिद्ध करके
दिखाना होतो, जो कुछ होना था वह होगया, इसके लिये कोई इलाज
नहीं, परन्तु अब आगे के लिये इस घटना की पुनरावृत्ति न होने देने
के लिये सर्कार की अपेक्षा प्रत्येक स्वराज्यवादी को पहले से ही तत्र-
बीज करनी चाहिये। स्वातंत्र्यप्रिय ब्रिटिश राष्ट्र की ओर से नियम-
बद्ध पद्धति से ही हम स्वराज्य प्राप्त कर सकेंगे, इस प्रकार स्वराज्य-
वादियों का विश्वास है। हमारी स्वराज्य की मांग न्याय और सत्य
के पाये पर खड़ी कीगई है, और इसीलिये ऐसे अत्याचारों से राष्ट्र
का हित न होकर अहित ही अधिक होगा-यह भावना प्रत्येक सच्चे
नागरिक के हृदय में अच्छी तरह जम चुकी है। इसीलिये शांति और
कानून का साम्राज्य स्थापित करने के लिये आज सर्कार को जिस
प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो वह देनी चाहिये। स्वराज्य
विरोधियों ने अलबत्ता इस घटना से लाभ उठा कर भारत के
स्वराज्य सम्बन्धी योग्यता विषयक अनेक प्रकार से असंबद्ध प्रला
करना शुरू किया है। योरोपियन बालशेविज्म भारत में भी उध
मचाने लगा है, इसलिये स्वराज्य की योजना को उठा लेनी चाहि
इस प्रकार का शोर गुलमचा कर स्वराज्य विरोधियों ने यह भी कह
शुरू किया है कि, पंजाब का दंगा बालशेविकों के उभाड़ने से
हुआ है। परन्तु वस्तुतः दंगे के लक्षण कहीं भी अस्तित्व में नह
यह बात बारम्बार के देखनेवालों के ध्यान में भी आचुकी है।
दंगा हो तो उसका अगुआ कौन? और वह कहां है? दंगा करने
सशस्त्र सेना कहां है? उन्होंने कौनसी लड़ाइयाँ की है? और
पूछा जाय वह यह कि इतनी बड़ी सशस्त्र लड़ाई की तय्यारी
गई और हमारे सर्वज्ञ सी० आय० डी० विभाग को यह बात
मालूम न हुई? वास्तविक स्थिति ऐसी है कि हिन्दविरोधियों
स्वराज्य विरोधियों ने यह दंगे का भूत कल्पना सृष्टि में उत्पन्न
बालशेविकों का पैसा, और उनके सहायकों का जिस प्रकार
के सरकारी सख्त बन्दोबस्त में से होकर आना अशक्य है, उ
सशस्त्र दंगा होना भी असम्भव है। एक बात अलबत्ता उल्ले
कुछ महिने पूर्व पंजाब के कर्तबगार नवाब सर मायकल ओडा...
पंजाब की राज्यनिष्ठा के गीत मुक्त कंठ से गाये थे, किन्तु इतनी थोड़ी
अवधी में ही ओडायर साहब का राज्यनिष्ठ पंजाब उन्ही के मतानुसार
राजद्रोही कैसे होगया-इस समस्या को वे ही हल करें। जर्मनी के
समान बलाढ्य शत्रु को उलट देनेवाला यौध्यिक सामर्थ्य भारत के
नेताओं की दुबली मांग के सामने सिर न झुकावेगा, क्या इस प्रकार
की घमंडखोरी से गर्जना करनेवाले ओडायर सा० और उनका पांच
वर्ष का कठोर अमल ही पंजाब की वर्तमान अस्वस्थता का जनक
नहीं होसकता है? यह विचारणीय प्रश्न है। बम्बई अहमदाबाद और
वीरमगाँव में बम्बई के गवर्नर माननीय सर जार्ज लाइड की आज्ञानु
सार पुलिस और फौजी अधिकारियों ने बड़ा ही आत्मसंयमन दिखा
और उससे सब जगह शांति होगई, परन्तु ओडायर साहब का इतना
कठोर फौजी अमल पंजाब में शुरू होने पर भी; कितने ही सप्ताह तक
पंजाब में शांति स्थापित न होसकी, इसी में बड़ा गूढ रहस्य भरा हुआ
है। बम्बई में सौम्य उपायों द्वारा शांति स्थापित करने के लिये बम्बई
के गवर्नर सर जार्ज लाइड को जितना धन्यवाद दिया जाय सो थोड़ा
है। परन्तु साथ ही ओडायर सा० की मनमनी हुकूमत को अनर्थकारी
कह सकते हैं। शांति पूर्वक विचार करने पर

बालशेविज्म का पर्दा

स्वराज्य आन्दोलन पर डाल कर स्वराज्यवादियों को दबा देने की
विरोधियों ने सुन्दर युक्ति निकाली है, ऐसा संशय उत्पन्न हुए बिना नहीं
रह सकता। सत्याग्रह के आन्दोलन से यह अनर्थ हुआ ऐसा आरोप
लगाने में भी इन बहादुरों ने कमी नहीं की है। महात्मा गांधी का
पवित्र आचरण, दूसरों को यत्किंचित् भी दुःख होने पर उनके मन
को होनेवाली यातना, उनके विचारों की शुद्धता और उनकी उत्कट
राष्ट्रभक्ति का चित्र नजर के सामने खड़ा करने पर उनके चलाये हुए
सत्याग्रह के पवित्र सात्विक आन्दोलन को रक्त-का दाग लग
अशक्य है, ऐसा जान पड़ता है। वरन् सत्याग्रह के आन्दोलन का
उद्देश्य "तरुण अविचारी, और उत्पाती मनुष्यों को रौलेट बिल के विरुद्ध
मार्ग बतानेवाले स्वयंको सौम्य और निरुपद्रवी बनाना है" इसीके लिये
हमने सत्याग्रह का आन्दोलन शुरू किया है, ऐसा महात्मा गांधी
अपने एक निजी पत्र लिखने की बात प्रगट हुई है। इनके पवित्र उ

से शुरू किये हुये सात्विक आन्दोलन का आरम्भ गत मास की बीती हुई घटनाओं के मूल में है—इस प्रकार की कल्पना करके सत्याग्रह का आन्दोलन बन्द करने की सूचना देनेवाले व्यक्तियों की बुद्धिमत्ता पर दया करनी होगी। सत्याग्रह आन्दोलन रूपी अक्षय्य वृक्ष के अहिंसा और सत्य मूल हैं,और जिन कायदों में नैतिक अंश नहीं, उनका भंग करनाही यह उस वृक्ष की अनन्त शाखाओं में से एक शाखा है, ऐसा उस दिन महात्मा गांधीने लिख कर प्रगट किया है जो अक्षरशः सत्य है। रौलेट कानून को उठा लेने के लिये जो २ वैध आन्दोलन उपयोग में लाये जानेवाले हैं उनका शिरमौर सत्याग्रह है। वसिष्ठादि महर्षि तथा प्रल्हाद, हरिश्चन्द्रादि राजाओं के सत्याग्रह से पुनीत बनी हुई इस भारतभूमी के निवासी सत्याग्रह के सात्विक दैवी तेज से अभी तक चमक रहे हैं। और इसीलिये रौलेट बिल के विरुद्ध समस्त वैध नियम पूरे हो जाने पर हताश होने से पूर्व सत्याग्रह के रामबाण उपाय की योजना करने की महात्मा-गांधीजीने सम्मति दी। और इस सत्य तत्व का कवच धारण करने पर ही हिन्दुस्तान अपनी रक्षा कर सकेगा। महात्मागांधी को सत्याग्रह छोड़ने की सम्मति देने में विगत मास की घटना को कारण बतलाने वाले पण्डितम्मन्यों को-सत्याग्रह क्या चीज है इस बात की कल्पना तक नहीं हो सकती, ऐसा कहना पड़ेगा।

ईश्वरदत्त जो २ मानवी अधिकार हैं उन्हें विनष्ट करनेवाली जो राजकीय या सामाजिक अवस्था हो; उससे मुक्त होने के लिये जो २ सात्विक प्रयोग करने पड़ते हैं-वे सब प्रयत्न ही सत्याग्रह हैं। रौलेट बिलों ने नैसर्गिक मानवी अधिकारों का विध्वंस किया है, और इसीलिये प्रत्येक सत्यप्रिय स्वाभिमानी व्यक्ति को इस कानून की सत्ता के अधिकार में एक क्षण भी न रहना चाहिये, और यथाशक्ति उसका प्रतिकार करना चाहिये ऐसा महात्मा गांधीजी का कहना है। इस प्रतीकार के करते समय दूसरे को यत् किंचित् भी दुःख न देते हुए स्वतः सब दुःख सहन करना ही सत्याग्रह के धर्म का दण्डक है। दुःख देनेवाला जुल्मी मनुष्य या कानून कितना ही सामर्थ्य-वान हो तो भी आनन्द से या हंसते हुए उस जुल्म की आपदाओं को सहन करने की शक्ति,केआगे सामर्थ्यवानों का सामर्थ्य,और जुल्मी कायदों का जुल्म लूला पड़ जाता है, और सामर्थ्यवानों को अपने सामर्थ्य और जुल्म पर लज्जा विदित होने लगती है। राक्षस के समान शक्ति होना अच्छा है, परन्तु उसका राक्षसी विधि से उपयोग करना नहीं होता है। परन्तु मनुष्य कभी २ थोड़े से अधिकारों से इतना चढ़ जाता है कि, उसे दूसरे के अधिकारों का गुमान तक नहीं रहता, और ऐसे समयमें सत्याग्रहही मनुष्यका उद्धार करता है। सत्याग्रही मनुष्य की छल और आपत्ति सहन करते हुए (उसकी) स्वीकार की हुई आनन्द वृत्ति को देख कर

स्वर्ग से देवता आनंदाश्रु की वृष्टि करते हैं,

और यह वृष्टि ही सत्याग्रह की विजय का चिन्ह है। यही सामर्थ्य और जुल्म का प्रतिकार है। हूं या चूं न करते हुए दण्ड के सामने सिर झुकाने में ही अत्यन्त सामर्थ्य भरा हुआ है। और इसीलिये सत्याग्रह सामर्थ्य दीनों का रुदन न होकर अत्यन्त सामर्थ्यवान सात्विक वीरों का मूक आह्वान अस्त्र है। विगत मास के दंगे सत्याग्रह आन्दोलन के कारण उत्पन्न हुए इसका कारण दूसरी ओर ही खोजना चाहियेयह बात सत्याग्रह के उपरोक्त विवेचन पर से स्पष्ट दीख पड़ेगी। मा० पं० मदन मोहन मालवीय और कलकत्ते को नर्मदलवालों की कमेटीने भी महात्मा गांधीकी रुकावट से इस अनर्थकारी घटना का होना बतलाया है। अहमदाबाद और वीरमगांव के दंगे महात्मा गांधी की मुक्तता होते ही शांत हो गये, यही एक प्रमाण इसकी पुष्टि के लिये पर्याप्त है। विगत पांच वर्षों में महायुद्ध के कारण जनता की बड़ी दुर्दशा हुई है। उसमें भी फिर युद्धज्वर, और अकालने और गजब कर डाला स्वराज्य की योजना का भी कुछ पता न लगता देख कर ऐसी परिस्थिति में निराशा से शुष्क अतएव ज्वालाग्राही बनेहुए वातावरण में रौलेट कानून रूपी चिनगारी गिरने ही यह स्फोट हुआ, यही बात सर्व सम्मत है। और इस कारण-परंपरा को भूलकर सत्याग्रह के माथे दंगे का ठीकरा फोड़ना सरासर पाप है। अपने पर का आक्षेप दूर करने के लिये महात्मागांधीने यह आन्दोलन कुछ दिन के लिये बन्द कर दिया, तथापि उन्हें सत्याग्रह की पवित्रता के विषय में बिलकुलही शंका नहीं है। उन्होंने जुलाई के आरम्भ में अपना आन्दोलन पुनश्च आरम्भ करने का निश्चय भी प्रगट किया है। इस सत्याग्रह के आन्दो-लन पर उनका कहां तक विश्वास है, सो स्पष्ट प्रगट हो सकता है। स्वराज्य आन्दोलन पर विगत मास की घटनाओं का क्या परिणाम होता है सो देखना चाहिये। अंग्रेजी जनता और अंग्रेज मुत्सद्दी धोखा नहीं खावेंगे, ऐसी उनके उद्गार पर से आशा प्रतीत होती है। हिन्दुस्तान और इंग्लैण्डमें के स्वराज्य विरोधियों की जम्बूक ध्वनि की ये लोग पर्वाह न करेंगे। वरन् उनमें हिन्दुस्तानकी वर्तमान राज्यपद्धती में कुछ भयंकर भूल होरही है, उसे सुधारना चाहिये-इस प्रकार की भावना उत्पन्न होती सी जान पड़ती है। मशिन्गन् से गोलियां बर्सा कर और विमानों से बम बर्सा कर शांति स्थापित करने का प्रसंग जिस राज्यपद्धति के कारण उपस्थित हुआ, उसको सुधारना चाहिये। और भारतवासियों को जितनी शीघ्रता से होसके स्वराज्य का उप-भोग करने देना चाहिये। इस प्रकार इंग्लैण्ड के राजनीति विशारदों का मत है। पंजाब में प्रचलित फौजी कानून के साम्राज्य में बेंत मारने की जो सजा दी जाती है, उसके सम्बन्ध में भारतीय जनता की भांति ब्रिटिश जनता को भी क्रोध उत्पन्न हुए बिना न रहेगा। बेंत या कोड़े मारने की सजा पशुवृत्ति है। ऐसा समस्त सुधारक जनता का मत है। लाहौर में खुले रास्ते मारी जानेवाली बेंतों का पक्ष लेकर ऐसा कहा गया कि यह शिक्षा गांव में के उठाईगिरे और छोटे २ दुकानदारों को दी गई। परन्तु इस स्पष्टीकरण से किसी स्वाभिमानी भारतवासी का समाधान न होसकेगा। बरन् इस प्रकार की शिक्षा दिये जाने की बात सुनते ही उनका रक्त उबलने लगेगा, यह बात ब्रिटिश जनता को अच्छी तरह विदित होसके, इतना अंग्रेजी मन उदार है। कुछ अज्ञानी और दंगेखोर लोगों ने ईंट ढेले फेंके, उनके उत्तर रूप में गोलियाँ बर्साना भी तो उचित नहीं है। मि० बिसेन्ट ने इस विषय में कितना ही पक्षपात किया, तो भी ब्रिटिश जनता को नित्य के अनुभव से उपरोक्त दंगे किस ढंग के हैं, सो भली प्रकार मालूम है, ईश्वरी सत्ता से इन सब का परिणाम मनोनुकूल होगा, इसमें शंका नहीं।

उपरोक्त समस्त राष्ट्रीय आपत्तियों पर छाप लगाने या सब पर कलश चढ़ाने के लिये ही मानो ता० २६ अप्रैल को हिन्दुस्थान सरकार के हुक्म से क्रानिकल के ख्यातनामा संपादक 'मि० बेन्जामिन गाय हार्नि-मन' को भारत सीमा से पार कर दिया। दूसरे दिन के विलायत जाने वाले जहाज में बिठा कर गुपचुप उनकी रवानगी विलायत को करदी गई। मि० हार्निमन की निस्वार्थ देशसेवा, उनकी सत्यप्रिय स्पष्ट लेखनी', उनका निरुत्तर कोटिक्रम, असत्य और अन्याय के प्रति उनकी चिढ़ और नौकरशाही के बेलगामी कारोबार पर उनकी तीव्र अलोचना, नौकरशाही और नृपाद्गणगत खलों को सहन होना अशक्य था, इसी कारण मि० हार्निमन के साथ ही उनके क्रानिकल का अस्तित्व भी मिटा दिया गया। लोकपक्ष की ओर के वीर एक के बाद दूसरा उठा लेने से अथवा उसके समाचारपत्रों का मुँह बंद कर देने से, केवल न्याय और सत्य के आग्रह को अंतिम दर्जे तक पहुँचाने के लिये शुरू किया हुआ आन्दोलन बंद होना असम्भव है। मि० हार्निमन के अंतिम सन्देशानुसार "यह आन्दोलन दैवी है, और इसके नेताओं को ईश्वरेच्छा से किसी समय यश अवश्य ही मिलेगा। तो फिर सिंह के निकल जाने पर जिस तरह कुत्ते भौंकते है, उन्हीं की तरह टाइम्स ऑफ इण्डिया जैसे पत्र कितनी ही व्यक्ति विषयक गालियाँ देते रहें, तो उसे कौन सुनता है।

देश भर में विगत मास की घटनाएं उपस्थित कर उन्हें घटित करने वाला एक मात्र रौलेट बिल ही है, इसके लिये समस्त लोकपक्षीय नेताओं का एकमत है। कानून पास होजाने से उसे अब वापस लेने में अपनी इज्जत में खामी आती है, ऐसा सर्कार को जान पड़ता है, और बिना लोक सम्मति के पास किया हुआ यह कानून हमारे स्वाभिमान पर हर्ताल फेरनेवाला है, ऐसा लोगों को जान पड़ता है। इस पेंच से मुक्त होने की डॉ० बेपटिस्टाने एक

नई युक्ति

बतलाई है। अभी उस दिन की अहमनगर वाली प्रांतिक परिषद् में सभापति की हैसियत से दिये हुए व्याख्यान में उन्होंने लार्ड चेम्स-फोर्ड से ऐसा निवेदन किया है कि; "और अगर कानून पास होगया है तो ठीक ही है, परन्तु उसको किसी भी प्रांतमें अमल में लाने से पहले हम नेताओं से सम्मति लेंगे, ऐसा आप प्रगट कीजिये, इस बातपर यदि सरकार ने ध्यान दिया, तो उसे न तो यह कानून ही वापस लेना पड़ेगा न लोगों को ही ऐसा भास होगा कि सर्कार ने हमारी सम्मति लिये

फायदा लागू कर दिया। कानून में ग्रथित पाप का क्षालन इस से जो भी न होगा; यह सत्य है, तथापि व्यवहारतः लोगों का कुछ समाधान होजायगा। इस सूचना पर सर्कार कहाँ तक ध्यान देती है सो देखना चाहिये। इस युक्ति के न पटने पर अगर तीन महिने के अंदर रौलेट कानून वापस न लेलिया तो ब्रिटिश कानून का कठोरतायुक्त बहिष्कार करने के लिये परिषद् ने निश्चय कर लिया है।

विगत राष्ट्रीय महासभा ने सन्धि-परिषद् में भारत के प्रतिनिधि के नाते 'लोकमान्य तिलक,' 'महात्मा गांधी और श्री० सय्यद हसन इमाम' को चुना था। म० गान्धीजी और सय्यद हसन इमाम ये दोनों महाशय पैरिस को न जासके। लोकमान्य तिलक विलायत में थे। उन्होंने अपने लिये भारत प्रतिनिधि के नाते सन्धि-परिषद् में जाने की आज्ञा मांगी, किन्तु नौकरशाही के हठ के कारण वह न मिलसकी। लोकमान्य तिलक ने इतने पर ही चुप न बैठ कर संधि-परिषद् के सन्मुख भारत का कथन एक खरीते द्वारा उपस्थित किया। इससे पूर्व भी आपने प्रे० विल्सन, सन्धि-परिषद् के अध्यक्ष क्लेमेन्शो, और ब्रिटिश मुख्य प्रधान मि० लायड जार्ज से भी भारत विषयक पत्रव्यवहार किया था। जिसका निर्णय उस दिनवाली प्रांतिक परिषद् में बे० बॅप्टिस्टा ने इस प्रकार प्रगट किया है कि; सन्धि-परिषद् में के एक बड़े और प्रमुख अधिकारी ने लोकमान्य तिलक को ऐसा लेखी आश्वासन दिया है कि हिन्दुस्तान के लिये हम योग्य समय स्वसंमती के तत्व लागू करने के लिये ब्रिटिश अधिकारियों को विवश करेंगे। ये उदार सज्जन कदाचित प्रे० विल्सन ही हों—ऐसा तर्क करना भी अनुचित न होगा। प्रे० विल्सन या उनके समानाधिकारी फ्रांस या इँग्लैण्ड के मुख्य प्रधान में से किसी के भी इस प्रकार लेखी आश्वासन देने पर भारतीय राष्ट्र ने संसार के राजकीय दर्बार में खासी मंजूल मारी है, ऐसा कहने में अत्युक्ति न होगी। जिस हिन्दुस्थान की ओर योरोपीय स्वतन्त्र राष्ट्रों में से कोई भी नजर तक न डालता था, उसी हिन्दुस्तान को राजकीय उन्नति के लिये इतना लेखी आश्वासन मिलना यह कोई कम महत्व की बात नहीं है। संसार के राजकीय प्रश्न की जिस सभा में चर्चा होती है। बड़े २ स्वतंत्र राष्ट्रों के टंटे जिस सभा में तोड़े जाते हैं—उसी सभा में हिन्दुस्थान का प्रश्न उठना, अथवा उस सभा के वरिष्ठ अधिकारी की ओर से ऊपर लिखे अनुसार आश्वासन मिलना, यह बात भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने योग्य है। हिन्दुस्थान की पुकार की दाद अमेरिका से पहली बार डॉ० सुब्रह्मण्यम् ने मांगी, और 'लाला लजपतराय' ने न्यूयार्क शहर में स्वराज्य संघ स्थापित कर उस कार्य को पुष्ट किया और

लोकमान्य तिलक

ने उपरोक्त प्रकार का एक आश्वासन प्राप्त कर उसमें बहु मूल्य वृद्धि की है। भारत पर लोकमान्य के अगणित उपकार हुए हैं, परन्तु इस कार्य के लिये भारत उनका चिर ऋणि रहेगा इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।

मान्टेग्यू साहब की सुधार योजना सम्भवतः जून महिने में पार्लमेन्ट के सन्मुख उपस्थित की जायगी, ऐसा अनुमान है। उस योजना को दुजोरा देने के लिये विलायत में दो भिन्न २ संघों का आविर्भाव हुआ है। एक संघ के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध 'सर जे० डी० रीस' और दूसरे के भारत हितैषी कमान्डर कर्नल 'जोशिया वेजवुड' हैं। रीस साहब का संघ मान्टेग्यू सुधारणा को जैसी है उसी दशा में रखने के लिये आग्रह करनेवाला है, और वेजवुड का संघ भारत का सच्चा और स्थायी हित साधनेवाली योजना निर्माण करने को उत्पन्न हुआ है। *लोकमान्य तिलक इसी दूसरे संघ के समासद हैं,* इस पर से संघ के कार्य क्षेत्र की कल्पना की जा सकेगी। जो स्वराज योजना मान्टेग्यू अथवा वर्तमान अधिकारारूढ़ पक्ष तय्यार करेगा वह योजना स्वीकृत हुए बिना न रहेगी। ऐसा जान पड़ता है। *विलायत से हाल ही में आये हुए मजदूर दलके* सुप्रसिद्ध नेता ऑस्कर का भी यही मत है। कमाइन्डर वेजवुडने अपनी मुलाकात में सुधार योजना के सम्बन्ध में अपना मत इस प्रकार प्रगट किया है कि "सुधार योजना स्वीकृत होगी या नहीं इसके लिये मुझे कोई भय नहीं, वरन् इस सुधारणा का सच्चा रस उड़ादिया जाकर इसे पानी की तरह पतली करने का जो प्रयत्न होगा, उसीका मुझे विशेष भय हो रहा है। यह प्रयत्न भारतवर्ष की राजकीय प्रगति के गाड़े के चक्र में सदा चकील डालनेवाली नौकरशाही की ओर से ही होगा। इसके सिवाय जिनके हाथ में आर्थिक सत्ता है, जिनके हाथ में समस्त *व्यापारों की नाड़ियाँ हैं, उन अंग्रेज व्यापारियों की ओर से* इस सुधारणा का अधिक विरोध होगा, ऐसा मुझे विश्वास है आर्थिक स्वतंत्रता ही सुधारणा का प्राण है, और यह स्वातंत्र्य यदि इस सुधारणा से प्राप्त न हुआ तो इस सुधारणा के मिलने से न मिलनाही भला है। यह पार्लमेन्ट अधिक दिन अधिकारारूढ़ रहेगी, ऐसा मुझे नहीं जान पड़ता, इसलिये सुधारणा की जैसी तैसी निःसत्व योजना को हस्तगत कर लेने की जल्दी न करके हिन्दुस्तान को यथोचित योजना प्राप्त होने तक प्रतीक्षा करना चाहिये, ऐसा मेरा मत है।" कर्नल वेजवुड का उपरोक्त उपदेश भारत से गई हुई भिन्न २ शिष्ट मंडलियाँ और हमारा नर्मदल ध्यान में रखेगा, ऐसी आशा है। इसी समय भारत वर्ष में राष्ट्रीय सभा को सहायता देने के उद्देश्य से महाराष्ट्र में के उदार मतवादी मराठों का नया पक्ष निर्माण हुआ है, यह अभिनन्दनीय बात है। अभी उस दिन की वर्धा वाली अखिल भारत मराठा परिषद् के अध्यक्ष बेरिस्टर पवाँर का भाषण तेजस्वी, स्वाभिमान पूर्ण और मराठों की क्षात्रिय वृत्ति को सुशोभित करनेवाला हुआ है। बे० पवाँर और श्रीयुत नीलकंठराव देशमुख आदि नेताओं का स्थापित किया हुआ नवीन राष्ट्रीय लोकसत्तावादी पक्ष शीघ्र ही कार्यक्षम होकर महाराष्ट्र के कार्य कर्ता पुरुषों में की दुविधा को दूर करेगा, ऐसी आशा है। सिडनहॅम पक्ष के नीचे के—राजसत्ता का मिथ्या महानुभूति जिनके में उन्मत्त होकर सच्चे राष्ट्रहित और धर्म के तत्व को ताक में रख कर, कुछ काल तक नगानाच करनेवाले पक्ष के उत्पन्न किये हुए दूषित वातावरण को यह पक्ष शुद्ध कर देगा, ऐसी आशा करना अनुचित न होगा।

नवम हिन्दी साहित्यसम्मेलन बम्बई

स्वागतगीत।

स्वागत प्रिय भ्राता, हिन्दी त्राता, मान्य-विधाता, दया करो।
हम भारत जीवन, भारत गौरव, विश्वविमोहन, धारन धरो॥
हिन्दीहितकारी, पर उपकारी, हे अघहारी, [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]॥
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]॥
[illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible]॥
[illegible], [illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।
[illegible]।

हिन्दी गीत।

(पं. [illegible] द्वारा [illegible]।)

ओ तुम प्यारे प्रेम सगाई।
सो भारत भरमें फैलाओ हिन्दी भाषा भाई॥
इस प्रिय भाषाहीको बोलो लिखो पढ़ो सुखदाई।
होगी इससे ही भारतकी सबकी भांति भलाई॥
हिलमिल करिये तन मन-धनसे जननीकी सिवकाई।
है यह शक्ति आदर्श अनुपम [illegible]॥
[illegible]।
[illegible]॥
[illegible]।
'मधुप,' [illegible]॥
[illegible]।

प्रेसिडेन्ट विलसन का विशेष परिचय ।

सन्धि परिषद् के लिये प्रे० विलसन सकुटुम्ब योरोप में आये हुए हैं। आपके आगमन के समय फ्रांस, इंग्लैण्ड इटली आदि देशों के राजा महाराजा और बड़े २ मुसाहिबों ने स्वागत कार्य में जो विशेष उत्साह दिखाया, उसका वर्णन पढ़ने से विश्वास होने लगता है कि सचमुच ही हम नये युग का अनुभव कर रहे हैं। वस्तुतः प्रेसिडेन्ट एक स्कूल मास्टर और उनकी प्रथम पत्नी एक चतुर भाड़ियारी है, ऐसा इन दोनों के नाम से कुछ वर्ष पूर्व अर्थ निकाला जाता था। परन्तु उन्हीं दो व्यक्तियों का स्वागत करने के लिये इंग्लैण्ड के राजा और महारानी की सवारी चेअरिंगक्रास तक गई थी; और वहां हजारों लोगों का जमघट आनन्द प्रदर्शक तालियों की कड़कड़ाहट मचा रहा था।

प्रे० विलसन अभी २ कितने ही वर्षों से बाहर नहीं गये थे, और प्रसिडेन्ट के पद पर पहुँचाने के बाद इतना लम्बा प्रवास आज तक दूसरे किसी प्रेसिडेन्ट के भी करने का अमेरिका के इतिहास में उल्लेख नहीं मिलता।

" अमेरिका के प्रेसिडेन्ट को अपने पदाधिकारी होने की दशा में विदेश यात्रा न करनी चाहिये " ऐसा कोई नियम नहीं है। यह बात जो भी ठीक है तथापि पूर्व परंपरा अथवा 'अति प्राचीन कालिक प्रथा, पर दृष्टिपात किया जाय तो भी इस विदेश गमन को अमेरिक इतिहास में स्थान मिलना असम्भव है। परन्तु अमेरिकन लोग 'प्राचीन आधार की अपेक्षा' प्रचलित उपयोग ' की ओर ही विशेष ध्यान रखनेवाले होनेके कारण जब प्रेसिडेंट विलसन होने समुद्रोल्लंघन के लिये तय्यार हुए उस समय उन के विरुद्ध किसीने भी आक्षेप नहीं किया।

प्रे० विलसन और उनकी पत्नी

प्रे० विलसन पहली बार जब योरोप में आये, उस समय तो राजा महाराजाओं की ओर से उन्होंने अपना आतिथि सत्कार ग्रहण किया ही था। किन्तु इस दूसरे चक्करमें संसारका यथार्थ कल्याण होगा; इसप्रकार के किसी एक भी तत्व का इन राजाओं से स्वीकार कराने की कर्तबगिरी प्रे० विलसन कर दिखाते हैं या नहीं, इस ओर सब का ध्यान लगा है।

इस रीति से सारे संसार की आँखें जिनकी कर्तबगिरी पर बड़ी उत्सुकता से लग रही हैं, उन महापुरुष का १०।१२ वर्ष पूर्व का चरित्र क्या था, उसी पर हम विचार करते हैं। उस समय प्रे० विलसन प्रिंसटन कॉलेज में ' इतिहास और अर्थशास्त्र ' के प्रोफेसर थे। और उन दिनों इनकी आर्थिक दशा बहुत ही निकृष्ट थी। उस समय वाली आपकी पत्नी (यही आपकी प्रथम स्त्री) गृहशास्त्र में बड़ी प्रवीण थीं। वे भिन्न २ प्रकार के पकवान और मिठाइयां बनाती थीं, और उनकी वार्षिक और अच्छी आमद होने से कुछ द्रव्य प्राप्त हुआ था। उन्हें गृहशास्त्र के सिवाय कलाकौशल्य से भी बड़ी प्रीति थी। उनके बनाये हुए कितने ही दृश्य इतने सुन्दर थे कि, जिन्हें न्यूयॉर्क और शिकागो के धनाढ्यों ने बड़े प्रेम से खरीद लिया था। उनसे तीन कन्यायें उत्पन्न हुईं और वे तीनों माता की भांति स्वावलम्बी हैं, और उन्हें गृहशास्त्र का अच्छा ज्ञान है। बड़ी कन्या (जिसका विवाह अब मैकडू नामक सज्जन के साथ हो गया है) पालिजा चित्रकला में बड़ी प्रवीण है। दूसरी कन्या जेसी गरीब लोगों की उन्नति के लिये यत्न कर रही है, और मिल के मजदूरों की आरोग्यता सुधारने के कार्य में ही उन्होंने अपना जीवन अर्पण करदिया है। तीसरी मार्गरेट गायन वादन कला में प्रवीण है। जेसी और मार्गरेट ने युद्ध में घायल हो आनेवाले लोगों की सहायता के लिये चंदा उगाने में अच्छी सहायता दी, रण क्षेत्र में भी रुग्ण सुश्रुषा की दृष्टि से इन्होंने अच्छा काम कर दिखाया है।

प्रे० विलसन ने अमेरिका के युद्ध में सम्मिलित होते ही सरकारी नियमानुसार मौज मजा और खुशहाली के लिये जो खर्च होता था वह एकदम बन्द कर दिया। आपकी स्त्री भी राष्ट्रकार्यों के लिये भारी श्रम करनेवाली हैं। अमेरिका के दो करोड़ कुटुम्ब में मितव्ययता का प्रचार करने की रीति कैसे फैलसकेगी, इस प्रश्न पर उन्होंने बारीकी से विचार किया है, और उनके हिसाब से चौदह करोड़ पौण्ड मूल्य का अन्न अमेरिकन स्त्रियों के अज्ञान के कारण प्रतिवर्ष बिलकुल मिट्टी में मिल रहा है। इस बात का लोगों को परिचय करा कर, इसे दूर करने के लिये किन २ उपायों की योजना करनी चाहिये, उनके विषय में लोगों को अच्छी शिक्षा दी है। बिलकुल गरीब लोग भी बच्चों के लाड़ लड़ाने के लिये खिलौने खरीदते हैं। और कृषक लोग सिनेमा तथा नाटक देखने के लिये घर की मण्डली को ले जाने की धुन में लग जाते हैं, घर के गाय आदि जानवरों को गिरवी रख देते हैं। फैशन के अनुयायी बन जाने से उनका जीवन बड़ा कष्टमय बन जाता है। परन्तु मिसेस विलसन के प्रबल प्रयत्नों के कारण अमेरिका की यह अवस्था बदलने लगी है, और आजकल लाखों गरीब मनुष्य अपनी पूंजी या बचत को कारखाने या सरकारी बैंक में जमा रखते और उसका कुछ भाग सत्कार्य में भी व्यय करते हैं।

प्रे० विलसन को सुदैव से सेक्रेटरी बड़े अच्छे मिले हैं। कर्नल हाउस बड़े तीव्र बुद्धि के सज्जन हैं, और आप पर प्रेसिडेन्ट विलसन का पूरा विश्वास है। यह यहां तक कि अधिकांश सभी कामों का फैसला सेक्रेटरी महाशय ही कर देते हैं, और सिर्फ हां करने मात्र का काम प्रे० विलसन का रह जाता है। लोकवार्ता तो ऐसी है कि, अध्यापकी का धन्दा करनेवाले प्रे० विलसन राजकार्य में पड़ कर सर्वाध्यक्ष बन गये, इसका सारा श्रेय कर्नल हाउस को ही मिल सकता है, और उनके बिना यह काम हो ही नहीं सकता था। इस लोक वार्तामें अतिशयोक्ति का अंश होना सम्भव है। परन्तु संधि-परिषद् के अनेक प्रश्नों का निराकरण करते समय प्रे० विलसन अपने प्रायवट सेक्रेटरी की सम्मति से ही चलेंगे, ऐसा निश्चय पूर्वक कहा जासकता है।

प्रे. विलसन व कर्नल हाउस

प्रे० विलसन ने युद्धविराम की बात प्रगट करते समय जिन १४ तत्वों को प्रगट किया है, उनकी युक्तायुक्तता के सम्बन्ध में अमेरिका में भारी वाद विवाद मच रहा है, और उनमें से पांच बातों को अभी अलग रख कर " जर्मनी से सन्धि कैसे की जासकेगी " सो देखना चाहिये, संसार में शांति कैसे रक्खी जासकेगी, इत्यादि अप्रासंगिक प्रश्न उपस्थित करने से वाद विवाद नहीं मिटेगा, और सन्धि कार्य दुष्कर होजायगा " इस प्रकार विरुद्ध पक्ष के नेताओं का मुख्य आक्षेप है। इसे प्रे० विलसन ने साक्षात् उत्तर न देते हुए ' राष्ट्रसंघ की कल्पना व्यवहार्य है सब को मान्य होने योग्य है, और उसे अव्यवहार्य बतलानेवाले लोग युद्धसमाप्ति के होने के साथ ही संसार के वर्तमान विचारों से भी वे अज्ञ हैं, ऐसा कहा है।

सारांश, स्वयं निर्णय और अन्य तत्वों के लिये प्रे० विलसन कहां तक लड़ेंगे, इसके सम्बन्ध में शंका होने लगी है, और अब तो सन्धि परिषद् का कुल काम शीघ्रता से निपटाना उचित है ऐसा अनुभव हो जाने से जर्मनी का पक्का बन्दोबस्त किये बिना, अन्य किसी बात की ओर ध्यान दिया जासकेगा, ऐसा नहीं माना जासकता। तथापि इस शीघ्रता की जिम्मेदारी प्रे० विलसन या अन्य किसी मुत्सद्दी पर न होकर एक मात्र योरोप की अनिष्ट स्थिति पर है। यदि घर के किसी एक कोने में आग लग जाय तो पर जिस प्रकार हम दूसरे सब काम अलग रख कर पहले उसे बुझाते हैं, वही अनुभव आज कल योरोप में मिल रहा है। यदि समाज में बोलशेविज्म का भय फैल जायगा तो सब और अंधाधुन्धी मच जायगी, इस प्रकार दीर्घदर्शी मुत्सद्दियों को भय उत्पन्न होने के कारण वे सन्धि कार्य को शीघ्रता से निपटा कर इस अनिष्ट मत के प्रसार को रोकने के लिये अपने देश को शीघ्र जाने के लिये उत्सुक होगये हैं, अतः वे निर्दोष हैं।

संमिश्र नया प्रधान मण्डल।

लार्ड जार्ज

(प्रधान मंत्री)

वायकाउंट मिलनर

मांटेगु

"शिखरिणी"

(१)
उन्हीं भावों से है भरित यह भी चित्र लखिये।
इन्हीं चित्रों का है, अनुगत कथा स्वाद चखिये॥

सुदेष्णा की आज्ञा, विवश मदिरा भाजन लिए।
चली है सैरन्ध्री, हृदय अपना पत्थर किए॥

(२)
विचारी लज्जा से-परिगम चली है विचलती।
बड़ी चिन्ता ज्वाला-हृदय गृह में ज्योति जलती॥
करे क्या? भाग्यों का, विकट यह है बन्धन कड़ा।
नहीं काटा जाता, कुटिल झगड़ा संकट बड़ा॥

(३)
पड़ी शोकों में है-विकल कितनी चन्द्र वदनी।
चढ़ी आंखें कैसी,? भृकुटि कुछ हैं कुंचित बनी॥
घोर मौनावस्था, स्फुरित अति बिम्बाधर अहा?।
किसीके पापोंसे, हृदय उसका है जल रहा॥

(४)
चली जाती योंहीं सभय मन में शांति न रही।
हुआ हाकाफोका, वदन-विधु में कांति न रही॥
धरे धीरे धीरे फल युत सुरापात्र कर में।
विचारी सैरन्ध्री अब पड़ रही शोक-सर में॥

(५)
लखो कैसी शोभा, मुखकमल को है मिल रही।
लुनाई से मानो-नवल कलिका है खिल रही॥
इसी आभा में है-भ्रमित पड़के कीचक अहा?।
नहीं जीते जाते-मदन शरके संकट महा॥

(६)
न निद्रा आतीथी-अशन वसनों में विरति थी।
बनीथी सैरन्ध्री-हृदय उसको ही सुरति थी॥
अनेकों यत्नों में-अविरत लगा था वह रहा।
उसीका प्रार्थीथा, प्रणय रस का सागर बहा॥

(७)
सतीथी सैरन्ध्री-परपति नहीं थी निरखती।
रही सच्ची देवी, पति पर खरा प्रेम रखती॥
सती नारी चाहे-विकट दुखमें प्राण तजतीं।
नहीं स्वप्नों में भी-परपति-परामर्श भजतीं॥

(८)
विचारों की न्यारी-लहरि उठतीं थीं हृदय में।
कभी गोता खाती-पड़ कर महा घोर भय में॥
कभी धैर्य्यावस्था-कुछ हृदय को शांत करती।
कुचेष्टा कूरोंकी-कुछ कुछ समुद्भ्रान्त करती॥
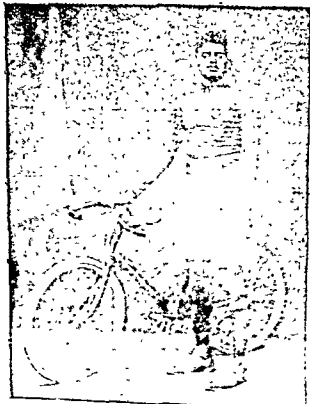
दक्कन जिमखाना पूना, सन १९१९ ई.

श्री. [illegible] पुणे
आपने २७ मील की दौड़ ३ घंटे ४८ मिनिट ५१ सेकंड में पूरी की। [illegible] आपने यही दौड़ २ घंटे ५६ मिनिट में पूरी की थी।

श्री. [illegible] पूना
११ मील की [illegible] रेस (दौड़) में [illegible] प्रथम आये, और आपने यह दौड़ १ घंटा [illegible] मिनिट [illegible] सेकंड में पूरी की।

महायुद्ध के पांचवें वर्ष का अप्रैल मास

(लेखक—श्री० कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर बी. ए.)

जर्मनी के सिर मढ़ी जानेवाली सन्धि की शर्तों का स्वरूप अप्रैल महिने में निश्चित कर दिया गया, और अप्रैल के अन्त में जर्मनी के वकीलों को पैरिस में बुला कर ता० ६ मई को समस्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों के सन्मुख सन्धि परिषद् की तय्यार की हुई-शर्तों की सूची जर्मनी के सामने रखी गई। इस सूची के तय्यार करने में परिषद् को चार पांच महिने लगे। शर्तों की पुस्तक लगभग तीन चार सौ पृष्ठ की बन गई है। आज तक इतना बड़ा सन्धिपत्र कोई भी नहीं बना। अप्रैल महिने में इसके सम्बन्ध में जो वाद विवाद हुआ, वह बड़े महत्व का है। अप्रैल के आरम्भ और अन्त में इस प्रकार दो बार भारी विवाद हुए। चारों ओर अब ऐसी अफवाह उड़ रही है कि, फ्रांस के मत को प्रे० विल्सन की ओर से यथोचित अनुमोदन न मिलने से तथा उनके इस विवादित मत के कारण जर्मनी के साथ कई महत्व पूर्ण रिआयतें होंगी। फ्रांस की मांग को मान देने का कार्य इँग्लैण्ड के प्रधान मि० लायड जार्ज भली भांति न करते हुए प्रे० विल्सन की हाँ हाँ में हाँ मिला रहे हैं, इस प्रकार का आरोप इँग्लैण्ड पर लगाया गया। यह आरोप इँग्लैंड के युनिनिस्ट पक्ष की ओर से समाचार पत्रों और पार्लमेन्ट में खुले २ प्रगट किया जाने के कारण मि० लायड जार्ज को इँग्लैण्ड लौट जाना पड़ा, और पार्लमेन्ट सभा में उन्हें आश्वासन देना पड़ा कि इँग्लैण्ड *फ्रांस की बातों को मान देने में कभी कमी न करेगा।* रशिया पोलेण्ड और जर्मनी के र्‍हाइन प्रान्त के सम्बन्ध में प्रे० विल्सन और फ्रांस के बीच अप्रैल के आरम्भ में मत भेद उत्पन्न होगया, तब तो अप्रैल के दूसरे सप्ताह में यहां तक भय होने लगा कि कहीं प्रे० विल्सन इस मत भेद के कारण सन्धि-परिषद् का काम अधविदा छोड़ कर वापस अमेरिका तो नहीं चले जाते हैं? किन्तु इँग्लैण्ड की ओर से फ्रांस को सहानुभूति मिलने के कारण प्रे० विल्सन ने भी अपने मत थोड़े बदल लिये, और अप्रैल के अन्त में सब एकमत होगये।

फ्रांस का मुख्य कथन यह था कि, महायुद्ध में फ्रांस का जितना मनुष्य बल व्यय हुआ; और फ्रांस के घर द्वार तथा उद्योगधन्धों की जितनी मिट्टी पलीत हुई, उतनी हानि दूसरे किसी भी राष्ट्र की इस महायुद्ध वा अन्य किसी युद्ध में नहीं हुई। इतना मनुष्य बल व्यय करके तथा इतने दुःख सहन कर फ्रांस ने यह विजय प्राप्त की है, अतः आगे सौ डेढ़ सौ वर्ष तक ऐसे प्रसंग की पुनरावृत्ति न हो, इसके *लिये सन्धि के समय पूरा २ ध्यान रखना आवश्यक है।* यह होशियारी यदि इस समय फ्रांस ने न रखी तो उसका बहाया हुआ खून व्यर्थ जाने जैसा होगा। फ्रांस की अपेक्षा जर्मनी की लोकसंख्या *विशेष रहेगी और बुद्धिमत्ता तथा उद्योगधन्दों में भी जर्मनी की* प्रजा प्रवीण होने के कारण मनुष्यबल और द्रव्यबल की दृष्टि से दो तीन पीढ़ियों में जर्मनी फिर पूर्ववत् बन कर आजकी पराजय का *बदला चुकाये बिना न रहेगा।* सन् १८७० के पराजय का *शल्य* फ्रांस के अन्तः करण में ४० वर्ष तक चुभता रहा और अन्त को सन १९१८ में फ्रांस ने अपने उस अपमान रूपी कलंक को धो डाला। अतः जर्मनी भी वैसा न करेगा, यह कैसे कहा जासकता है? तीस चालीस वर्ष के पश्चात् महायुद्ध के पराभव के अनन्तर जर्मनी के पांव में डाली जानेवाली जंजीर टूट जायँगी और हाथ पाँव खुल जाने पर द्रव्यबल संपादन करके अपने बुद्धि और मनुष्यबल के जोर पर यदि जर्मनी फ्रांस पर टूट पड़ा तो वह क्या कर सकेगा? फ्रांस के इस ४०।५० वर्ष पश्चात् के संकट को टालने के लिये जर्मनी जितनी ही पराधीनता से जकड़ा जासके, उसे जकड़ देना आवश्यक है। जर्मनी की लोकसंख्या ही फ्रांस की अपेक्षा अधिक होने से वहां किसी का वश नहीं चल सकता। मनुष्यों को कत्ल करके आज वहां की जनसंख्या कम नहीं की जासकती। इसलिये बुद्धिबल और द्रव्यबल की वृद्धि न होने देकर जर्मनी को पैसे के साधनों की दृष्टि से कंगाल और बुद्धि की दृष्टि से शंघ बनाये बिना फ्रांस का खटका दूर नहीं होसकता। अब प्रश्न उठता है कि बुद्धि की दृष्टि से उसे निर्बल कैसे किया जाय? बुद्धि की उत्पत्ति, वृद्धि और उसके विकास के सतत अनिश्चित, अशाश्वत और चञ्चल स्वरूप संसार में किसी का भी नहीं है। दारिद्री में बुद्धि उत्पन्न होसकती है, बढ़ सकती है और उसका परिपाक भी होसकता है, तथा मनुष्य और द्रव्यबल पर अधिकार जमाने *के लिये पर्याप्त पराक्रम भी उस बुद्धि में दृष्टिगोचर होने लगता है।* नीतिमत्ता से फिसले हुए और अधःपात के मार्ग को लगेहुए व्यक्ति अथवा समाज की बुद्धि पलट कर वह नामशेष होने के बदले पुनः वैभव सम्पन्न बना हुआ भी दीख पड़ता है। बुद्धि के लिये सुदृढ़ और निरोग शरीर ही आवश्य हो सो भी नहीं। शरीर से रोगी और दुर्बल मनुष्य भी बुद्धि के बल पर अपने हित और कुटुम्ब का उद्धार कर सकता है। कुछ अनुभव सिद्ध नियमों के अनुसार आचरण रखने से मनुष्यबल और द्रव्यबल दोनो ही प्राप्त किये जासकते हैं। शास्त्राधार से नियमबद्ध की हुई स्थिति मनुष्यबल और द्रव्यबल दोनों में बहुत प्रमाण में दृष्टिगोचर होती है, किन्तु यदि संसार में कम नियमबद्ध कोई शक्ति हो तो वह एक मात्र बुद्धि की शक्ति है। यह शक्ति *अन्य शक्तियों की भांति नियमबद्ध न होने के कारण एक* दृष्टि से स्वतंत्र है। सेनापति मुसद्दी, राजालोग भी बुद्धि को अपने काबू में नहीं रख सकते थे। बुद्धि स्वातंत्र्य के कारण ही बारंबार संसार में हलचल और उथल पुथल होती है, और पांच पचास, नहीं तो सौ दो सौ वर्षों में भिन्न २ समाज का स्थित्यंतर होना दृष्टिगोचर होता है। जब जर्मन प्रजा जनसंख्या की दृष्टि से अधिक है, इस पर जिस प्रकार कुछ वश नहीं चल सकता; उसी प्रकार वह बुद्धिमान है, इस पर भी तो कोई उपचार नहीं। वश या उपचार यदि चलता है तो वह द्रव्य के बल पर छीना जासकता है, नष्ट किया जासकता है, कुंठित किया जासकता है, और द्रव्यबल कितना ही प्रबल हो तो भी उसे अन्य शक्तियों की शृंखलाओं से पाशबद्ध कर सकते हैं। यदि स्वभावतः परतन्त्र होने *वाली कोई शक्ति हो तो वह एक मात्र द्रव्यबल है।* मनुष्य का शरीर द्रव्य उत्पन्न करने लिये परतन्त्र होसकता है। जिन २ अन्य शक्तियों से इस द्रव्यबल का सम्पर्क होजाता है, उनमें इसके कारण अधिकांश *परतन्त्रता आजाती है। इसी कारण अप्रैल के आरम्भ में फ्रांस ने कहा* कि, जर्मनी का वर्तमान द्रव्यबल यथासम्भव शीघ्र उससे छीन लेना चाहिये। उसके मनुष्यबल की जो भी क्षति न होगी, तथापि उस मनुष्यबल के द्रव्यार्जन कार्य में लग जाने की दशा में वह जितना पराधीन बनसके उतना बना डालना चाहिये। जर्मनी को बुद्धि यदि कुंठित न की जासकेगी, तथापि उसके स्वतन्त्रता पूर्वक आचरण करते हुए अपने चरित्र क्रम के लिये जिस २ स्थान पर और जिस २ समय द्रव्योत्पत्ति का कुछ भाग व्यय होगा, उन २ स्थानों पर समयानुसार द्रव्योत्पत्ति का फल फ्रांस के पंजे में फँसेगा, इस प्रकार की व्यवस्था *आज सन्धि के समय कर डालने में कोई हानि नहीं है। आज जर्मनी* के पास का सारा द्रव्यबल छीन कर आगे शरीरश्रम अथवा बुद्धिबल के द्वारा वह जो द्रव्य बचा सकेगा-वह सब ३० वर्ष तक जितना छीन लिया जाय; कि जिससे आगे फिर कितने ही वर्ष तक जर्मनी को अपना चरितार्थ ज्यों त्यों चलाने के लिये भी कठिनता पड़े। किन्तु आज जर्मनी का द्रव्यबल कैसे छीना जासकता है? जर्मनी में वहां के सिवाय बाहरी रेलगाड़ियों के सम्बन्ध में अथवा अन्य उद्योग धंधों के जो शेअर्स होंगे, अथवा निजी मत्ता के रूप में जो होंगे, वे सब जर्मनी को मित्रसर्कार के अधिकार में कर देने चाहिये। जिससे खुद जर्मनी के सिवाय अन्य स्थानों में उसकी जो कुछ भी सम्पत्ति हो वह नष्ट होजाय। इसके सिवाय जर्मनी का उपनिवेश और अन्य प्रान्तों पर जो स्वामित्व है, वह भी मित्र सर्कार के अधिकार में कर देना चाहिये। इस भांति जर्मनी के विदेशों में के अधिकार छीन लेने को प्रे० विल्सन तय्यार होगये। परदेश में जाकर जर्मनी ने वहां के लोगों की इच्छा के विरुद्ध द्रव्य इकट्ठा किया है, इस कारण स्वामी के मत्यानुसार वह सम्पत्ति जर्मनी के पास न रहनी चाहिये।

इस प्रकार जर्मनी के बाहर फैलने की रुकावट तो होगई, किन्तु खुद जर्मनी के पास की सम्पत्ति आज किस प्रकार हस्तगत की जाय? वहां की सम्पत्ति तीन चार प्रकार की है। जर्मनी में पत्थर के कोयले और लोहे की खदानें बहुत बड़ी हैं, पोटाश की उत्पत्ति भी विपुल है। और उसने र्‍हाइन तथा विश्चुला के किनारे के प्रान्तों में बड़े २ कारखाने खोल दिये हैं, और रंग आदि तय्यार करने में उसका कोई भी हाथ नहीं पकड़ सकता, ऐसी ख्याति है। इसके सिवाय जर्मनी के व्यापारी जहाज भी बड़ी संख्या में हैं, बुद्धिमान लोगों के हाथ में इतने साधन होने पर वे द्रव्य का संचय सहज ही में कर सकते हैं। अतः इन साधनों में से अधिकांश साधन छीन लेना चाहिये, इस प्रकार फ्रांस ने हठ किया। विश्चुला नदी के तट पर उत्तर शिलेशिया प्रांत में पोलेण्ड का स्वामित्व था, इस कारण उस प्रांत के लिये स्वसंमती के तत्व लागू कर वह पोलेण्ड को सौंप दिया गया। इससे सिलेशिया में जो बड़े २ कारखाने कितने ही वर्षों के श्रम से जर्मनी ने तय्यार किये थे, वे सब सन्धि नियमानुसार पोलेण्ड को मिलगये। इसके सिवाय पोलेण्ड को समुद्र किनारे की आवश्यकता थी, अतः विश्चुला के मुहाने के पास का बाल्टिक समुद्र पर का डॅनझिग बंदरगाहभी जर्मनी से लेलिया गया। स्वसंमति के तत्वों का अनुसरण कर आल्सास्लोरन फ्रान्स को देदिया गया।

यहां तक तो प्रे० विल्सन ने कुछभी न कहा। परन्तु फिर फ्रांस की मांग के सम्बन्धमें मत भेद होने लगा। फ्रांस का यह कहना था कि, जर्मनी की लोहे की खानें सैंकड़ा ७० और पत्थर के कोयले की खानें सैंकड़ा तीसके हिसाब से ले लेने से भी काम नहीं चल सकता। भारी युद्ध दण्ड वसूल करकेही जर्मनी को कंगाल बनाये बिना; महायुद्ध करने के पातक के विषय में जर्मनी से प्रायश्चित कराने जैसा न होगा। "न युद्ध दण्ड न मुल्क" इस तत्व को आज प्रे० विल्सन ने स्वीकार किया है, इस कारण युद्धदण्ड तो ले नहीं सकते। तब फ्रांस ने महायुद्ध सम्बन्धी सब मित्रों की हानि का हिसाब तय्यार करके जर्मनी से चालीस हजार करोड़ रुपये वसूल करने चाहिये ऐसा निश्चय किया। पहली बार तीस हजार करोड़ अर्थात् तीस अब्ज रुपये लिये जांय, इस प्रकार हानि का हिसाब बना। हिन्दुस्तान की दस पन्द्रह गुनी आय प्रतिवर्ष नुकसान के बदले जर्मनी कहां से देगा!। प्रे० विल्सन का कहना यों है कि, जर्मनी से नुकसान का हर्जा अवश्य लिया जाय, परन्तु जर्मनी की वर्तमान सोशियालिष्ट सरकार प्रजाजन पर अपना सिक्का सम्हाल कर जितनी हानि दे सके उतनी ही उससे वसूल करनी चाहिये। हिसाब से यदि हम हर्जा वसूल करने लगे और उससे यदि जर्मन सरकार को त्रास होने लगा तो वहां के कर्ता धर्ता पुरुष ही राज्य कारोबार की जवाबदारी अपने सिर पर लेने को तय्यार न होंगे। आज जर्मनी में सोशियालिष्ट मत की सरकार है। जर्मनी में इस पक्ष के सिवाय दूसरा कोई भी अधिकारारूढ़ होना ठीक नहीं। अतःइस पक्ष के लोग जितना बोझ उठाने के लिये सम्मति दें, उतनाही बोझ जर्मनी पर लादा जाये। क्योंकि यदि ऐसा न किया गया तो सोशियालिष्ट पक्ष अपनी गर्दन पर का राज्य कारोबार रूपी जुआ डाल देगा, और जर्मनी का राज्य प्रकट बालशेविकों के हाथ में चला जाकर रशिया में का लेनिन की सत्ता र्‍हाइन नदी तक फैल जायगी। बालशेविकों के हौवे का यह भय फ्रांस को ठीक न जँचा। जर्मनी में के सोशियालिष्ट लोग अपनी नाक काट कर फ्रांस के लिये अपशकुन करना चाहते होंगे। इसलिये करें, आगे की बातें हम समय पर ही देख लेंगे, इस प्रकार फ्रांस ने उत्तर दिया। बालशेविकों के प्रसार का भय एक ओर रख दिया जाय तो जर्मनी का चरितार्थ न चल सके और वह राष्ट्रों की श्रेणि में न बैठ सके, इतना बोझा भी उस पर क्यों लादा जाय? ऐसा बोझ लादना मानों जर्मनी के मन में का आज का शत्रुत्व नष्ट कर उसके बदले स्नेहबुद्धि के उत्पन्न करने का मार्ग छोड़ कर चलना है। इसलिये जिसे जर्मनी का सोशियालिष्ट पक्ष स्वीकार न करे, ऐसा बोझा जर्मनी पर लादना मुत्सद्दियों की उदार बुद्धि को शोभा नहीं देता। इसी समय मत भेद होने का मौका आया। प्रे० विल्सन का पक्ष कहने लगा कि जर्मनी सहन कर सके, उतना ही भार उस पर डाला जाय। तब फ्रांस कहने लगा कि हिसाब के अनुसार सारे हर्जे को चुकाने की बात जर्मनी को कुबूल करनी ही चाहिये, और प्रत्यक्ष हर्जा चुकाते हुए जिस समय हमें यह दिखाई देगा कि, जर्मनी का चरितार्थ नहीं चल सकता, उस समय बन्दी या छूट कहां तक देनी चाहिये, इसका हम अपने आप निर्णय करेंगे। जर्मनी में आज सोशियालिष्ट मत भले ही हो परन्तु वह कैसरशाही की महत्वाकांक्षा और उद्दंडता से फैला हुआ होने के कारण आज बालशेविकों का हौआ सामने कर थोड़ीसी रकम पर छूट जाने के बाद अल्प समय में ही पुनः धनाढ्य बन कर द्रव्य बल के जोर पर वह फिर फ्रांस की छाती पर बैठने से न चूकेगा। जर्मनी के कारखानों से कितने पदार्थ प्रतिवर्ष उत्पन्न होते हैं और जर्मनी के चरितार्थ के लिये उनमें से कितने की आवश्यकता है, और शेष क्या बचता है, इसकी जांच हम प्रतिवर्ष करेंगे, और सारी बचत को लेते जायँगे इस प्रकार फ्रांस का कहना था। जर्मनी के लोगों को वर्षभर तक काम में लगाने की जिम्मेदारी वर्तमान जर्मन सरकार पर रहे और उस कष्ट से उत्पन्न होनेवाली सम्पत्ति का हिसाब हम देंगे, उनमें से स्वेच्छानुसार मजदूरी हम दोनों को देंगे और देखरेख करनेवाले विभाग का खर्च निकाल कर शेष बचत को जर्मनी के देने के हर्जानेवाले खाते में हम जमा करते जायँगे, छूट कुछ नहीं मिलेगी। हर साल हिसाब की देखरेख, छूट अथवा मुलतवी आदि का यह क्रम लगा तार ३० वर्ष चलेगा। हर्जाने के चालीस हजार करोड़ रुपयों की वसूली के लिये तीस वर्ष जर्मन लोगों को वहीं की सरकार की ओर से तंग करवाकर यदि उस कष्ट का मूल्य हमारी रकम के बराबर न हुआ तो फिर छूट का विचार होगा। इस प्रकार अपने लोगों को तंग करने को सोशियालिष्ट पक्ष की सरकार जर्मनी में आगे बढ़ेगी या नहीं, इसके लिये प्रे० विल्सन को शंका हुई, और उन्होंने अप्रैल के प्रारम्भ में जर्मनी के देखरेख करनेवाले कमीशन के द्वारा प्रतिवर्ष हर्जाने की रकम वसूल करने के विचार का अनुमोदन नहीं किया। परन्तु फ्रांस के कथन को इंग्लैण्ड की ओर से अनुमोदन मिलने के कारण प्रे० विल्सन को भी अपनी सम्मति देनी पड़ी, और हर्जे की पाई पाई का हिसाब होकर जर्मनी की द्रव्योत्पत्ति पर देखरेख करनेवाला कमीशन प्रतिवर्ष जितनी रकम मांगे, वह जर्मनी को देनी ही चाहिये, इस प्रकार हर्जाने और जर्मनी को तंग करने सम्बन्धी कलम तहनामे में डाली गई। हर्जाने का हिसाब ३० वर्ष तक चलेगा, और पहला हप्ता २० अब्ज रुपये का तथा शेष २६ हप्ते १२ अब्ज रुपये के रख गये हैं। पहला हप्ता १९१९ के मई महिने में दिया जाने का है। इसलिये आज सं० ??? पर हस्ताक्षर करके वर्ष डेढ़ वर्ष तक मे ??? जर्मनीने फिर सिर उठाया तो!—अथवा १९२१ के पहले ही

र्मनी बॉलशेविकों का अनुयायी बनगया तो क्या किया जाय? जर्मनी
द्रे बॉलशेविक बनगया तो मित्र सर्कार की फौज जर्मनी पर धावा
रके उसके सभी केन्द्रस्थानों को अपने अधिकार में लेकर महायुद्ध
। प्रायःश्चित्त कराने और बॉलशेविक होने की, सजा देने को मित्र
र्कार समर्थ है। परन्तु आज सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करवाकर यदि
र्मनी की बाग डोर ढीली छोड़दी गई और बरस छह महिने में वह
लशेविक बन गया, तो हाथ में का बाण जमीन पर रख देने से सहन
िया जानेवाला त्रास मित्रों को भुगतना पड़ेगा। और कदाचित् जर्मनी को
लशेविक बन जाने पर दुःख सहना पड़ा तो हर्जाने में से एक पाई
ी वसूल न होसकने का मौका आवेगा। जर्मनी का बॉलशेविक बनना
ानों अपनी नाक काट कर फ्रांस के लिये अपशकुन करना है। यदि
र्मनी ने अपना नाक काट ही डाला तो क्या जाय? जर्मनी के नाक
ाटने के समय उसकी नकेल अपने हाथ में रहे, इसके लिये फ्रांस ने
ह मांग की कि र्हाइन नदी के बायें किनारे पर का सारा मुल्क और
ुस नदी पर के सभी पुल सदा के लिये ही हमारे अधिकार में देदिये
ांय। र्हाइन नदी के बायें किनारे पर के प्रदेशों में आज मित्र सर्कार
ी फौज डेरा लगाये बैठी है, और नदी के पुल भी मित्रों के ताबे में
। आज जो २ अधिकार में है, वह सब फ्रांस को मिल जाने पर
हाइन नदी पार कर होनेवाले जर्मनी के भावी आक्रमण सदा के लिये टल
ायेंगे, और इस नदी के तट पर के उद्योग धन्दों से फ्रांस अपने हर्जा-
की वसूली भी कर सकेगा। इस प्रकार र्हाइन नदी सदा के लिये
ांस के अधिकार में चली जानी चाहिये, तभी जर्मनी के भावी
ाक्रमणों का भय दूर होसकेगा, हर्जा भी
सूल होसकेगा और यदि जर्मनी बालशेविक
ोगया तो भी, उसकी पर्वाह न रहेगी। फ्रांस
ी इस मांग के सम्बन्ध में प्रे० विल्सन का
त विरुद्ध हुआ। र्हाइन नदी का मुल्क
ीन लेना यानी 'न मुल्क न युद्ध दंड' के
सद्धांत पर हरताल फेरना है। अपन तत्व छोड़े
हीं जासकते, और मित्रों की अड़चन दूर
हीं की जासकती, इस प्रकारकी नाजुक स्थिति
त्पन्न होगई, अन्त में उसका भी खुलासा हो-
या। र्हाइन नदी के किनारे का प्रान्त आज
ी ही भांति और भी १५ वर्ष मित्रों के ही
ौर विशेषतः फ्रेन्चों की फौजी दृष्टि से हाथ
रहे, और अन्य सब राज्य व्यवस्था जर्मनी
े ताबेमें रहे, और इस मुल्कके असलीरजिलों
में फ्रेन्चों का फौजी और दिवानी अमल कायम किया जाकर उन जिलों
ी कोयले की खदाने फ्रांस के स्वामित्व की करदी जाँय। इस प्रकार
अपने हर्जाने को अंशत प्राप्त कर लेने का फ्रांस को मौका मिलेगा;
और १५ वर्ष तक फौजी दृष्टि से र्हाइन नदी अधिकार में रहने से जर्मनी
को हर्जाने के हफ्ते चुकाने अथवा अपने बालशेविक बन जाने की
धमकी देने पर-उसके दमन के लिये छोड़ा जानेवाला बाण हाथ में ही
रहेगा। १५ वर्ष के बाद ऐसा मालूम होनेपर कि जर्मनी व्यवस्थित रीति
से चल रहा है-र्हाइन नदी के किनारे परकी फौज भी हटा ली जावेगी।
और मुख्य २ जिलों में की खदानें जर्मनी की इच्छा होने पर वापसदी
जासकेंगी। इस व्यवस्था से १५ वर्ष का प्रबन्ध तो होगया, किन्तु
उसके बाद जर्मनी का बल बढ़ने लगे तो फ्रांस को क्या करना चाहिये?
तीस चालीस वर्षों के बाद होनेवाले युद्ध के समय र्हाइन नदी फ्रांस
के अधिकार में न रही तो फ्रांस को अपार यातनाएँ सहन करनी
पड़ेगी। और लश्करी दृष्टि से फ्रांस की कनार दुर्भेद्य न बनी रह सकेगी,
इस प्रकार सेनापति फॉक ने उपरोक्त तोड़ जोड़ के विरुद्ध स्पष्ट मत
प्रगट किया, तब इस में और भी दो पुच्छले जोड़े गये। र्हाइन नदी के
तटवाले मुल्कों में जर्मनी भूल कर भी अपनी फौजें न रखे, उसके पास
एक लाख से अधिक सेना न रहे, और जर्मनी के फ्रांस पर आक्रमण
करते ही इँग्लैण्ड और अमेरिका को तत्काल ही दौड़ कर आना
चाहिये, इस प्रकार के ये पुच्छले हैं। इस भांति फ्रांस की समस्त शंका
कुशंकाओं का समाधान होजाने पर सन्धि का खर्रा तय्यार किया,
गया और ता० ७ मई को वह जर्मनी के वकीलों के हवाले कर दिया
गया। सन्धि की शर्तों से (१) र्हाइन नदी के किनारे के प्रांतों को
जर्मनी ने १५ वर्ष के लिये छोड़ दिया और उसकी छाती पर निशाना
लगाया हुआ फ्रेन्चों का पिस्तौल र्हाइन नदी के किनारे १५ वर्ष
तक रात दिन अड़ा रहेगा। (२) विश्चुला नदी के दाहिनी ओर का
मुल्क भी जर्मनी से छुड़वाकर पोलेण्ड की दीवार जर्मनी और रशिया
के बीच में खड़ी की जाकर, पूर्व की ओर नजर डालनेवाले जर्मनी की आंखें
बन्द कर दी गई हैं। (३) पश्चिम और पूर्व का इस प्रकार प्रबन्ध
हो जाने पर जर्मनी के दाहिनी ओर आस्ट्रिया हँगेरी के प्रांत
जेकोस्लाव, जुगोस्लाव, आस्ट्रिया, हँगेरी इस इस प्रकार भिन्न २
पांच स्वतन्त्र विभाग करके उनमें से किसी को किसी भी प्रक
स्वतन्त्र सन्धि न करनी चाहिये ऐसा निश्चय किया जाकर जर्म
दक्षिण दिशा की गति को रोक दिया (४) उत्तर की ओर बा
समुद्र में जर्मनी की नौसेना या व्यापारी सत्ता न रहे, इसके
जर्मनी की जल सेना नामशेष कर दी गई है। कीलनाल के मों
का हेली गोलेण्ड का किला जर्मनी को आपने ही हाथों से
देना है। जल सेना विभाग के लिये जर्मनी का बांधा हुआ कील
मित्र सर्कार के व्यापारी जहाजों के लिये खुला किया जाने
है। और जर्मनों ने जितने टन् के व्यापारी जहाज महायु
समय समुद्र में डुबाये हैं, उतने टन की वसूली होने तक आ
सभी व्यापारी जहाज मित्रों के हवाले कर प्रतिवर्ष नये जहाज
कर मित्रों को देने होंगे। अर्थात् उत्तर की ओर के समुद्री मार्ग
और भी २५।३० वर्ष जर्मनी की न जल सेना रह सकेगी न जह
(५) इस प्रकार चारों दिशाओं का प्रबन्ध हो जाने के बाद आकाश
ओर पलटकर जर्मनी को राष्ट्रसंघ में सम्मिलित करने का मान
होने तक जर्मनी को व्यापारी या लड़ाऊ वि
अपने पास न रखने चाहिये। (६) आ
के बाद पृथ्वी की ओर देखा जाय तो एक
से अधिक सेना न रख कर तीस वर्ष ज
जोतकर अथवा पृथ्वी के भीतर के खनिज प
निकाल कर और अपनी अक्ल होशियार
भिन्न २ उद्योग कर चारसौ अब्ज यानी भ
की वार्षिक आयसे चारसो गुनी रकम उसे
वर्ष में चुकानी है। केवल खा पी कर ही ज
सतत उद्योग करे तो भी जो रकम उसे भ
चाहिये उसकी शर्त के अनुसार और उस
भरपाई करने के लिये १५ वर्ष के लिये उस
जो पिस्तौल निशाना लगा कर अड़ाया गया
उस पर से जर्मनी के लिये जमीन
जमीन के भीतर भी कुछ नहीं हो

योरोप की रेलें और हिंदुस्तान

गया है (७) संसार पर से जर्मनी का पसारा उठा दिया जाकर उस
उपनिवेश, रेलगाड़ियों पर का हक व्यापारी अधिकार आदि सब
जर्मनीने छोड़ दिया है, और पुराने स्नेह सम्बन्ध को एक ओर रख
नव प्रादुर्भूत देश की भांति संसार से जर्मनी को अपना सम्बन्ध जोड़
है। (८) जर्मनी की निश्चित भूमि और उस पर एकदम जन्म लेनेवा
कंगाल लोगों की स्थिति पर जर्मनी को पहुँचा कर, महायुद्ध के लि
प्रायश्चित कर डालने पर पश्चाताप से यदि उसका अंतःकर
शुद्ध हो गया तो, नवजात पोलेण्ड अथवा जेकोस्लावों या जुगोस्लाव
की ओर जिस दयार्द्र दृष्टि से प्रे० विल्सन और मित्र राष्ट्र देख रहे हैं, वा
दृष्टि जर्मनी पर भी डालने में कुछ रुकावट न पड़े, इसके लिये, औ
५।७ वर्ष के पश्चात् शुद्ध बन जानेवाले जर्मनी के लिये भावी स्थिति
टालने का मार्ग खुला हो सके, एतदर्थ शुद्धी की हामी भरने पर रा
संघ में प्रविष्ट होने का मार्ग खोल दिया गया है। इस प्रकार से जर्मनी क
शर्तों का स्वरूप समझाया गया है। फ्रांस के मतानुसार ये शर्तें आव
श्यक हैं। इँग्लैण्ड और अमेरिका का लोकमत इन्हें न्याय्य बतला रहा
है। किन्तु इन सब नियमों के विरुद्ध जर्मनी के सब श्रेणि और सब
मतों के लोग बड़े खिभराये, और जर्मनी की नई सोशियालिष्ट सर्का
रने अपना यह मत प्रगट किया है कि मित्र सर्कारने जर्मनी को दर
मृत्यु दण्ड दिया है। ता० ७ मई से १५ दिन अर्थात् २२ मई तक जर्मन
सर्कार और जर्मन वकीलोंको सन्धि की शर्तों के सम्बन्ध में लेखी वार
विवाद करना चाहिये, और १५ दिन के पश्चात् उपरोक्त वादविवाद का
अन्तिम लेखी उत्तर मित्र सर्कार को देकर पांच सात दिन में ही दस्त
खत कर देने के लिये कहा जाय, अन्यथा लड़ाई के लिये तय्यार होने
की सूचना दी जाय। यह कार्य क्रम निश्चित हुआ है। अर्थात् जून

प्रथम अथवा दूसरे सप्ताह में जर्मनी के सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर हो जायँगे, अथवा नई धूमधाम की शुरूआत होगी, इस प्रकार मई के दूसरे सप्ताह का अनुमान है। यहां पर इन प्रश्नों पर थोड़ा विचार कर लेना आवश्यक जान पड़ता है कि:—सन्धिपत्र पर जर्मनी हस्ताक्षर करता है, या अपनी नाक काट कर बालशेविक बन जाता है, अथवा वर्तमान सोशियालिष्ट सर्कार अधिकार रूढ़ रह कर पुन युद्ध का आरम्भ करती है। इसमें तो किसी प्रकार की भी शंका नहीं है कि सन्धि की शर्तें जर्मन राष्ट्र को मंजूर नहीं हैं। इन शर्तों को देख कर तो सेनापति ल्यूडेनासने थाप दिया था कि 'अमेरिका' नर्क में पड़ेगा। १५—२० दिन के उपक्रम में उपरोक्त शर्तें अंशतः बदल जावेंगी, यह बात जो भी ठीक है, तथापि वे इस प्रकार बदलेंगी कि हर्जाने की रकम घटा दी जायगी और ऱ्हाइन नदी पर बैठाया जानेवाला मित्रों का फौजी धरना १५ वर्ष के बदले ८-१० वर्ष ही बैठ सकेगा। और जर्मनी को २।३ ही वर्ष के प्रायश्चित के पश्चात् राष्ट्रसंघ में सम्मिलित कर लिया जायगा। जर्मनी के राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो जाने पर उस पर का द्रव्य संबन्धी बोझा अलबत्ता और भी कुछ कम हो जायगा, किन्तु उसके पुनःसमृद्ध होने की अधिकतर आशा नहीं रखी जा सकती। इसके सिवाय जर्मनी की जल सेना नष्ट हो गई, व्यापारी जहाज चले गये, उपनिवेश छिन गये, पर राष्ट्रीय हित-सम्बन्ध भी टूटा और विमान भी न रह सके। यही नहीं बरन् अपने देश में एक लाख से अधिक सेना न रखनी चाहिये, और वहां एक लाख से अधिक सेना तय्यार हो सके इस प्रकार की फौजी शिक्षा, फौजी संस्था अथवा फौजी कारखाने तक न पाये जाने चाहिये, ऐसी एक फौजी शर्त उपरोक्त संधिपत्र में रहने के कारण उसे सेना बल की दृष्टि से भी हीनबना दिया है। राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो जाने पर जर्मनी के ये दुःख किस प्रकार कम हो सकेंगे? राष्ट्रसंघ की व्यवस्था पूर्णतयः अमल में आजाने पर फ्रांस की सेना वर्तमान से कम हो जायगी। इँग्लैण्ड की जलसेना सम्बन्धी वृद्धि बन्द हो जाने की बात जो भी ठीक है, परन्तु फिर भी सारे नव व्यवस्थित योरोपखण्ड को भी पूरी पड़ सके इतनी सेना फ्रांस के पास रहेगी ही, और योरोपखण्ड के लिये भारी पड़नेवाली जल सेना इँग्लैण्ड के पास सदा सर्वदा दृष्टिगोचर होगी। अर्थात् २—४ वर्षों में में जो भी जर्मनी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो सका, तोभी नये पोलैण्ड या झेकोस्लावों के नये राज्य से अधिक महत्ता योरोप में उसे कभी प्राप्त न हो सकेगी। तीस वर्ष ऋण का बोझा सिर पर रहने तक झेको-स्लाव अथवा पोलैण्ड से भी अधिक निकृष्टावस्था में ही जर्मनी को अपने दिन काटने पड़ेंगे। यदि महायुद्ध में जर्मनी की विजय होती तो फ्रांस की भी आज यही दशा हो जाती। अतः 'जैसे को तैसा' इस न्यायानुसार सन्धी के समय फ्रांस का बर्ताव यथायोग्य ही है।

[illegible]

[illegible] यहां दो मार्ग जर्मनी के लिये बचे हैं। बालशेविक बनजाने पर लड़ने की ओर विशेष जोर न दिया जाकर धनाढ्य लोगों की सत्ता छीन कर उनका द्रव्य आपुस में ही लूट कर कोई सत्ताधीश हो गया तो अपने पेट भरने से अधिक काम न करना पड़ेगा। यदि जर्मनी बालशेविक बनगया तो वहां का मध्यम वर्ग नष्ट हो जायगा, धनवान मारे जायँगे और बड़े २ कारखानों का विध्वंस हो जायगा। यदि इस प्रकार जर्मनी ने अपना नाक आप ही काट लिया, तो उसमें मित्र सर्कार का क्या बिगड़ेगा? मध्यम स्थिति और उच्च श्रेणि के लोगों की उठा रखी में ऱ्हाइन नदी के किनारे पर की मित्रों की २०लाख सेना जर्मनी के केन्द्र-स्थानों को बात की बात में हथिया लेगी। जर्मनी में की सब प्रकार की खदानें, और पोलैण्ड की ओर का जल और स्थल मार्ग अपने अधिकार में लेकर झेकोस्लाव और पोलैण्ड के राज्यों को ४।५मास में ही ठीक दशा में लादेंगे। इन दोनों राज्यों के इस दशा में पहुँच जाने पर विस्चुला और ऱ्हाइन ये दोनों नदियां अपने अधिकार में रख कर जर्मनी में की मुख्य २ खदानों को चला कर जर्मन लोगों के परस्पर ही मार धाड़ करके एक जाने तक,बालशेविक होने की स्वतन्त्रता दी जायगी। इस सब काम के पूरा होने में एक वर्ष से अधिक समय न लगेगा। बोलशेविक बना हुआ जर्मनी अकेला चाहे तब भी मित्रसर्कार का ऋण नहीं चुकायेगा, तथापि पोलैण्ड और झेकोस्लावों को बहुतसा मुल्क मिल जायगा, साथ ही ऱ्हाइन नदी प्रांत को हमेशा के लिये मिल कर दक्षिण जर्मनी अथवा बव्हेरिया प्रांत को भी फ्रांस सदा के लिये अपने राज में मिला सकेगा। अर्थात् यदि जर्मनी बालशेविक बन भी गया, तो सन्धि की शर्तों से भी अधिक कष्ट देकर फ्रांस की सत्ता बव्हेरिया, झेकोस्लाव और पोलैण्ड इन प्रदेशों पर बे रोक टोक शुरू रहेगी। बालशेविक—जर्मनी छोटासा ही रहेगा और उसके कंगाल रहने से मित्रों का कर्ज जो भी डूब जायगा, तथापि ४।५ वर्ष के बाद वही फिर बालशेविक मत का परित्याग करके फ्रांस का माण्डलिक बनने को राजी होजायगा। इसी प्रकार जर्मनी आज बालशेविक बनगया तो वह फ्रांस के पाले पड़ेगा। ४।५ महिने में पोलैण्ड को धीमा कर देने पर इसी वर्ष के शीत काल में जर्मनी के हाथ साथ २ लेनिन को भी मिट्टी में मिलाने के लिये कोई रुकावट नहीं रहेगी। जर्मनी की खदानों से जो कर्ज चूकता होसकेगा, वह होगा परन्तु यदि कर्ज न चुकाया जासका, तो भी फ्रांस और रशिया के स्थल पर का निष्कंटक सम्बन्ध जोड़ने और उसे स्थायी बनाने के लिये जर्मनी से और जो कुछ छीना झपटी करनी पड़ेगी, उसके लिये फ्रांस को मौका मिलेगा, और योरोप का सार्वभौम बनने सम्बन्धी फ्रांस की महत्वाकांक्षा भी पूरी होसकेगी। इस कारण जर्मनी के बालशेविक बनने पर से उसकी दशा वर्तमान सन्धि नियमानुसार भी न सुधरते हुए अधिकाधिक निकृष्ट बन जायगी। और फ्रांस को अलबत्ता ४।५ महिने की अधिक लड़ाई से जो मिलनेवाला है, वह आपही आप मिल जायगा। वर्तमान शर्तों के कारण जर्मनी का मजदूर दल भी मित्र सर्कार के विरुद्ध चौंक उठने के कारण सब स्थिति और श्रेणि के लोगों की ओर से वर्तमान सोशियालिष्ट सर्कार को मित्रों के विरुद्ध खड़ा होने की उत्तेजना और सहायता मिलनेवाली है। सन्धि की कठोर शर्तों के कारण जर्मनी की दुविधा दूर होगई है। इस एकता से लाभ उठा कर वर्तमान सोशियालिष्ट सर्कार सन्धि न करके क्या लड़ाई को आगे चलाने के लिये तय्यार होगी? इस प्रश्न का खुलासा करने के लिये मित्र सर्कार के विरुद्ध जर्मनी कितनी सेना खड़ी कर सकेगा और वह कितने समय तक ठहर सकेगी, सो देखना चाहिये। मित्र सर्कार की आज २० लाख सेना ऱ्हाइन के किनारे खड़ी है, और जर्मनी की बहुत हुई तो १० लाख से अधिक सेना ३।४ सप्ताह की अवधी में खड़ी न की जासकेगी। अर्थात् जर्मनी यदि स्वसंरक्षण की लड़ाई करने लगा तो दो चार महिने से अधिक वह मित्र सर्कार के सामने खड़ा न रह सकेगा। दो चार महिने के अव-सान पर मोहित होकर किसी का भी मुसद्दी मण्डल लड़ाई शुरू करने और राज्य शकट का जूआ अपनी गर्दन पर लेने को तय्यार न होगा। आज हस्ताक्षर करके मुक्त बनो, वर्ष छह महिने में जो कुछ होगा सो होजायगा, ऐसा कहने की ओर ही मुसद्दियों का रुख पाया जायगा। लड़ाई के काम में प्रवृत्त होने के लिये वर्ष डेढ़ वर्ष तक लड़ने का भी तो साहस होना चाहिये, और जर्मनी में वह दम ४।५ महिने का ही है। तो क्या ७।८ महिने जितना साहस उसे बाहर से मिलने का सम्भव है? यदि आष्ट्रिया की ओर की मदद मिलने की आशा की जाय तो वह भी व्यर्थ है, क्योंकि वह मोहताज होकर अन्न के लिये सब प्रकार से मित्र सर्कार पर ही अवलंबित है। हंगेरी की सर्कार बालशेविक होकर कुछ दिन पूर्व मित्र सर्कार के विरुद्ध खड़ी हुई थी, उसको आष्ट्रियाने संदेसा भेजा था कि तुम्हारी कृति हमें पूर्णतयः पसन्द है। परन्तु अन्न के लिये हम मित्र सर्कार के गुलाम बने हुए हैं। कलही यदि जर्मनी मित्र सर्कार के विरुद्ध उठ कर खड़ा हुआ तो उसे भी यही संदेसा आष्ट्रिया की ओर से भेजा जायगा। गोली बारूद और कुछ स्वयं सेवकों द्वारा गुप्त सहायता देने के सिवाय आष्ट्रिया और कुछ भी नहीं कर सकता। हंगेरी बोलशेविक बन गया है और वह मित्र सर्कार के विरुद्ध है। परन्तु [illegible] में रूमेनियनों ने उसे ठीक मुकाम पर लगा दिया, इस कारण मित्र सर्कार को ऐसा ऐसा त्रास देने के सिवाय हंगेरी से भी कुछ न होसकेगा। बल्गेरिया, सर्बिया और बाल्कन प्रदेश में बालशेविकों का मत फैलता चला है, और ये लोग अलबत्ता मित्रों को कुछ त्रास पहुँचा सकेंगे। इसके सिवाय तुर्किस्तान में भी तरुण तुर्कों ने फिर से सिर उठाया है, और जर्मनी के सन्धि न करने पर तरुण तुर्कों का उपद्रव टर्की में स्थान २ पर होगा, इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। परन्तु आष्ट्रिया, हंगेरी, बाल्कन प्रदेश और टर्की में के कुछ कांटे निकाल डालने के लिये, इटली की सेना समर्थ है। इटली को एड्रियाटिक सागर का फ्यूम बंदर यदि न दिया जाय ऐसा फ्रांस के हाथ में ३० [illegible] ने निश्चय किया,

र्मनी बोलशेविकों का अनुयायी बनगया तो क्या किया जाय? जर्मनी यदि बोलशेविक बनगया तो मित्र सर्कार की फौज जर्मनी पर धावा करके उसके सभी केन्द्रस्थानों को अपने अधिकार में लेकर महायुद्ध का प्रायश्चित्त कराने और बोलशेविक होने की, सजा देने को मित्र सर्कार समर्थ है। परन्तु आज सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करवाकर यदि जर्मनी की बाग डोर ढीली छोड़दी गई और बाद कुछ महिने में वह बालशेविक बन गया, तो हाथ में का बाण जमीन पर रख देने से सहन किया जानेवाला त्रास मित्रों को भुगतना पड़ेगा। और कदाचित् जर्मनी को बोलशेविक बन जाने पर दुःख सहना पड़ा तो हर्जाने में से एक पाई भी वसूल न होसकने का मौका आवेगा। जर्मनी का बालशेविक बनना मानों अपनी नाक काट कर फ्रांस के लिये अपशकुन करना है। यदि जर्मनी ने अपना नाक काट ही डाला तो क्या जाय? जर्मनी के नाक काटने के समय उसकी नकेल अपने हाथ में रहे, इसके लिये फ्रांस ने यह मांग की कि =हाइन नदी के बायें किनारे पर का सारा मुल्क और इस नदी पर के सभी पुल सदा के लिये ही हमारे अधिकार में देदिये जाँय। =हाइन नदी के बायें किनारे पर के प्रदेशों में आज मित्र सर्कार की फौज डेरा लगाये बैठी है, और नदी के पुल भी मित्रों के ताबे में है। आज जो २ अधिकार में है, वह सब फ्रांस को मिल जाने पर =हाइन नदी पार कर होनेवाले जर्मनी के भावी आक्रमण सदा के लिये टल जायँगे, और इस नदी के तट पर के उद्योग धन्धों से फ्रांस अपने हर्जाने की वसूली भी कर सकेगा। इस प्रकार =हाइन नदी सदा के लिये फ्रांस के अधिकार में चली जानी चाहिये, तभी जर्मनी के भावी आक्रमणों का भय दूर होसकेगा, हर्जा भी वसूल होसकेगा और यदि जर्मनी बालशेविक होगया तो भी, उसकी पर्वाह न रहेगी। फ्रांस की इस मांग के सम्बन्ध में प्रे० विल्सन का मत विरुद्ध हुआ। =हाइन नदी का मुल्क छीन लेना यानी 'न मुल्क न युद्ध दंड' के सिद्धांत पर हरताल फेरना है। अपन तत्व छोड़े नहीं जासकते, और मित्रों की अड़चन दूर नहीं की जासकती, इस प्रकारकी नाजुक स्थिति उत्पन्न होगई, अन्त में उसका भी खुलासा होगया। =हाइन नदी के किनारे का प्रान्त आज की ही भांति और भी १५ वर्ष मित्रों के ही और विशेषतः फ्रेन्चों की फौजी दृष्टि से हाथ में रहे, और अन्य सब राज्य व्यवस्था जर्मनी के ताबेमें रहे, और इस मुल्कके असली२जिलों में फ्रेन्चों का फौजी और दिवानी अमल कायम किया जाकर उन जिलों की कोयले की खदानें फ्रांस के स्वामित्व की करदी जाँय। इस प्रकार अपने हर्जाने को अंशतः प्राप्त कर लेने का फ्रांस को मौका मिलेगा; और १५ वर्ष तक फौजी दृष्टि से =हाइन नदी अधिकार में रहने से जर्मनी को हर्जाने के हफ्ते चुकाने अथवा अपने बालशेविक बन जाने की धमकी देने पर-उसके दमन के लिये छोड़ा जानेवाला बाण हाथ में ही रहेगा। १५ वर्ष के बाद ऐसा मालूम होनेपर कि जर्मनी व्यवस्थित रीति से चल रहा है-=हाइन नदी के किनारे पर की फौज भी हटा ली जावेगी। और मुख्य २ जिलों में की खदानें जर्मनी की इच्छा होने पर वापस दी जासकेंगी। इस व्यवस्था से १५ वर्ष का प्रबन्ध तो होगया, किन्तु उसके बाद जर्मनी का बल बढ़ने लगे तो फ्रांस को क्या करना चाहिये? तीस चालीस वर्षों के बाद होनेवाले युद्ध के समय =हाइन नदी फ्रांस के अधिकार में न रही तो फ्रांस को अपार यातनाएँ सहन करनी पड़ेगी। और लश्करी दृष्टि से फ्रांस की कतार दुर्भेद्य न बनी रह सकेगी, इस प्रकार सेनापति फॉक ने उपरोक्त तोड़ जोड़ के विरुद्ध स्पष्ट मत प्रगट किया, तब इस में और भी दो पुच्छले जोड़े गये। =हाइन नदी के तटवाले मुल्कों में जर्मनी भूल कर भी अपनी फौजें न रखे, उसके पास एक लाख से अधिक सेना न रहे, और जर्मनी के फ्रांस पर आक्रमण करते ही इंग्लैण्ड और अमेरिका को तत्काल ही दौड़ कर आना चाहिये, इस प्रकार के ये पुच्छले हैं। इस भांति फ्रांस की समस्त शंका कुशंकाओं का समाधान होजाने पर सन्धि का खर्रा तय्यार किया गया और ता० ७ मई को यह जर्मनी के वकीलों के हवाले कर दिया गया। सन्धि की शर्तों से (१) =हाइन नदी के किनारे के प्रांतों को जर्मनी ने १५ वर्ष के लिये छोड़ दिया और उसकी छाती पर निशाना

लगाया हुआ पैनी तेगों का [illegible] =हाइन नदी के किनारे तक बाज दिन खड़ा रहेगा। (२) विश्चुला नदी के दाहिनी मुल्क भी जर्मनी से छुड़वाकर पोलेण्ड की दीवार जर्मनी औ[र] के बीच में खड़ी की जाकर, पूर्व की ओर नजर डालनेवाले जर्मनी बन्द कर दी गई है। (३) पश्चिम और पूर्व का इस प्र[बन्ध] हो जाने पर जर्मनी के दाहिनी ओर आस्ट्रिया हंगरी के [टुकड़े कर] ज़ेकोस्लाव, युगोस्लाव, आस्ट्रिया, हंगरी इस इस प्रकार भि[न्न] भिन्न स्वतन्त्र विभाग करके उनमें से किसी को किसी भी स्वतन्त्र सन्धि न करनी चाहिये ऐसा निश्चय किया जाकर दक्षिण दिशा की गति को रोक दिया (४) उत्तर की ओ[र] समुद्र में जर्मनी की नौसेना या व्यापारी सत्ता न रहे, [इ]स जर्मनी की जल सेना नामशेष कर दी गई है। कीलनाल के पास का हेली गोलेण्ड का किला जर्मनी को अपने ही हाथों ढा देना है। जल सेना विभाग के लिये जर्मनी का बांधा हुआ [नहर] मित्र सर्कार के व्यापारी जहाजों के लिये खुला किया है। और जर्मनी ने जितने टन् के व्यापारी जहाज [युद्ध के] समय समुद्र में डुबाये हैं, उतने टन की पूर्ति होने तक सभी व्यापारी जहाज मित्रों के हवाले कर प्रतिवर्ष नये कर मित्रों को देने होंगे। अर्थात् उत्तर की ओर के समुद्र ओर भी २५।३० वर्ष जर्मनी की न जल सेना रह सकेगी (५) इस प्रकार चारों दिशाओं का प्रबन्ध हो जाने के बाद और पलटकर जर्मनी को राष्ट्रसंघ में सम्मिलित करने व[ाले] होने तक जर्मनी को व्यापारी या र[ण] अपने पास न रखने चाहिये। के बाद पृथ्वी की ओर देखा जाय [तो एक लाख] से अधिक सेना न रख कर तीन [...] जोतकर अथवा पृथ्वी के भीतर के [...] निकाल कर और अपनी अक्ल [से भिन्न] भिन्न २ उद्योग कर चारसौ अ[रब] की वार्षिक आयसे चारसो गुनी [...] वर्ष में चुकानी है। केवल खा पी [कर] सतत उद्योग करे तो भी जो रक[म] चाहिये उसकी शर्त के अनुसार भरपाई करने के लिये १५ वर्ष के [लिये] जो पिस्तौल निशाना लगा कर [...] उस पर से जर्मनी के लिये जमीन के भीतर भी कुछ [...] गया है (७) संसार पर से जर्मनी का पसारा उठा दिय[ा] उपनिवेश, रेलगाड़ियों पर का हक व्यापारी अधिकार [...] जर्मनीने छोड़ दिया है, और पुराने स्नेह सम्बन्ध को [...] नव प्रादुर्भूत देश की भांति संसार से जर्मनी को अपन[ा] है। (८) जर्मनी की निश्चित भूमि और उस पर एकदम कंगाल लोगों की स्थिति पर जर्मनी को पहुँचा कर, म[हा] प्रायश्चित कर डालने पर पश्चाताप से यदि [...] शुद्ध हो गया तो, नवजात पोलैण्ड अथवा झेकोस्लावों की ओर जिस दयार्द्र दृष्टि से प्रे०विल्सन और मित्र रा[ष्ट्र] दृष्टि जर्मनी पर भी डालने में कुछ रुकावट न पड़े, इ[स] ५।७ वर्ष के पश्चात् शुद्ध बन जानेवाले जर्मनी के लिये टालने का मार्ग खुला हो सके, एतदर्थ शुद्धों की हार्म[नी] संघ में प्रविष्ट होने का मार्ग खोल दिया गया है। इस प्र[कार] शर्तों का स्वरूप समझाया गया है। फ्रांस के मतानुस[ार] [...]श्यक हैं। इंग्लैण्ड और अमेरिका का लोकमत इन्हें [...] है। किन्तु इन सब नियमों के विरुद्ध जर्मनी के सब [...]मनों के लोग बड़े खिझलाये, और जर्मनी की नई र[ाज्य] [सत्ता] ने अपना यह मत प्रगट किया है कि मित्र सर्कार [ने] मृत्यु दण्ड दिया है। ता०७ मई से १५ दिन अर्थात [...] सर्कार और जर्मन वकीलोंको सन्धि की शर्तों के र[...] विवाद करना चाहिये, और१५ दिन के पश्चात् उप[...] अन्तिम लेखी उत्तर मित्र सर्कार को देकर पांच स[...] हार कर देने के लिये कहा जाय, अन्यथा लड़ाई [...] की सूचना दी जाय। यह कार्य क्रम निश्चित हुआ।

योरोप की रेलें और हिंदुस्तान

अथवा दूसरे सप्ताह में जर्मनी के सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर हो जावेंगे, अथवा नई धूमधाम की शुरूआत होगी, इस प्रकार मई के दूसरे सप्ताह का अनुमान है। यहां पर इन प्रश्नों पर थोड़ा विचार कर लेना आवश्यक जान पड़ता है कि:—सन्धिपत्र पर जर्मनी हस्ताक्षर करता है, या अपनी नाक काट कर बालशेविक बन जाता है, अथवा वर्तमान सोशियालिष्ट सर्कार अधिकार रूढ रह कर पुन युद्ध का आरम्भ करती है। इसमें तो किसी प्रकार की भी शंका नहीं है कि सन्धि की शर्तें जर्मन राष्ट्र को मंजूर नहीं हैं। इन शर्तों को देख कर तो सेनापति ल्यूडेनासने श्राप दिया था कि 'अमेरिका' नर्क में पड़ेगा। १५—२० दिन के उपक्रम में उपरोक्त शर्तें अंशतः बदल जावेंगी, यह बात जो भी ठीक है, तथापि वे इस प्रकार बदलेंगी कि हर्जाने की रकम घटा दी जायगी और ऱ्हाइन नदी पर बैठाया जानेवाला मित्रों का फौजी घरना १५ वर्ष के बदले ८-१० वर्ष ही बैठ सकेगा। और जर्मनी को २।३ ही वर्ष के प्रायश्चित के पश्चात् राष्ट्रसंघ में सम्मिलित कर लिया जायगा। जर्मनी के राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो जाने पर उस पर का द्रव्य संबन्धी बोझा अलबत्ता और भी कुछ कम हो जायगा, किन्तु उसके पुनःसमृद्ध होने की अधिकतर आशा नहीं रखी जा सकती। इसके सिवाय जर्मनी की जल सेना नष्ट हो गई, व्यापारी जहाज चले गये, उपनिवेश छिन गये, पर राष्ट्रीय हित-सम्बन्ध भी टूटा और विमान भी न रह सके। यही नहीं वरन् अपने देश में एक लाख से अधिक सेना न रखनी चाहिये, और वहां एक लाख से अधिक सेना तय्यार हो सके इस प्रकार की फौजी शिक्षा, फौजी संस्था अथवा फौजी कारखाने तक न पाये जाने चाहिये, ऐसी एक फौजी शर्त उपरोक्त संधिपत्र में रहने के कारण उसे सेना बल की दृष्टि से भी हीनबना दिया है। राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो जाने पर जर्मनी के ये दुःख किस प्रकार कम हो सकेंगे? राष्ट्रसंघ की व्यवस्था पूर्णतयः अमल में आजाने पर फ्रांस की सेना वर्तमान से कम हो जायगी। इंग्लैण्ड की जलसेना सम्बन्धी शुद्धि बन्द हो जाने की बात जो भी ठीक है, परन्तु फिर भी सारे नव व्यवस्थित योरोपखण्ड को भी पूरी पड़ सके इतनी सेना फ्रांस के पास रहेगी ही, और योरोपखण्ड के लिये भारी पड़नेवाली जल सेना इंग्लैण्ड के पास सदा सर्वदा दृष्टिगोचर होगी। अर्थात् २—४ वर्षों में में जो भी जर्मनी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो सका, तोभी नये पौलेण्ड या झेकोस्लावों के नये राज्य से अधिक महत्ता योरोप में उसे कभी प्राप्त न हो सकेगी। तीस वर्ष ऋण का बोझा सिर पर रहने तक झेकोस्लाव अथवा पौलेण्ड से भी अधिक निकृष्टावस्था में ही जर्मनी को अपने दिन काटने पड़ेंगे। यदि महायुद्ध में जर्मनी की विजय होती तो फ्रांस की भी आज यही दशा हो जाती। अतः 'जैसे को तैसा' इस न्यायानुसार सन्धी के समय फ्रांस का बर्ताव यथायोग्य ही है। तथापि वादविवाद कर कुछ रिआयतें करवालेने के सिवाय यदि जर्मनी के लिये और कोई मार्ग खुला रहा तो वह इस समय उधर जाने से कभी न चूकेगा, यह स्पष्ट ही है। परन्तु अन्य मार्ग खुले हैं ही कहां? सन्धि-पत्र पर यदि हस्ताक्षर नहीं किये तो बालशेविक बनना या लड़ना यही दो मार्ग जर्मनी के लिये बचे हैं। बालशेविक बनजाने पर लड़ने की ओर विशेष जोर न दिया जाकर धनाढ्य लोगों की सत्ता छीन कर उनका द्रव्य आपुस में ही लूट कर कोई सत्ताधीश हो गया तो अपने पेट भरने से अधिक काम न करना पड़ेगा। यदि जर्मनी बालशेविक बनगया तो वहां का मध्यम वर्ग नष्ट हो जायगा, धनवान मारे जायँगे और बड़े २ कारखानों का विध्वंस हो जायगा। यदि इस प्रकार जर्मनी ने अपना नाक आप ही काट लिया, तो उसमें मित्र सर्कार का क्या बिगड़ेगा? मध्यम स्थिति और उच्च श्रेणि के लोगों की उटा रही में ऱ्हाइन नदी के किनारे पर की मित्रों की २० लाख सेना जर्मनी के केन्द्र-स्थानों को बात की बात में हथिया लेगी। जर्मनी में की सब प्रकार की खदानें, और पौलेण्ड की ओर का जल और स्थल मार्ग अपने अधिकार में लेकर झेकोस्लाव और पोलैण्ड के राज्यों को ४।५ मास में ही ठीक दशा में लादेंगी। इन दोनों राज्यों के इस दशा में पहुँच जाने पर विस्तुला और ऱ्हाइन ये दोनों नदियां अपने अधिकार में रख कर जर्मनी में की मुख्य २ खदानों को घेरा कर जर्मन लोगों के परस्पर ही मारा पीटी करके थक जाने तक बालशेविक होने की स्वतन्त्रता दी जायगी। इस सब काम के पूरा होने में एक वर्ष से अधिक समय न लगेगा। बोलशेविक बना हुआ जर्मनी उद्योग धन्दे करके जो भी मित्रसर्कार का ऋण नहीं चुकायेगा, तथापि पोलैण्ड और झेकोस्लावों को बहुतसा मुल्क मिल जायगा, सारी ऱ्हाइन नदी फ्रांस को हमेशा के लिये मिल कर दक्षिण जर्मनी अथवा बव्हेरिया प्रांत को भी फ्रांस सदा के लिये अपने राज में मिला सकेगा। अर्थात् यदि जर्मनी बालशेविक बन भी गया, तो सन्धि की शर्तों से भी अधिक कष्ट देकर फ्रांस की सत्ता बव्हेरिया, झेकोस्लाव और पोलैण्ड इन प्रदेशों पर बे रोक टोक शुरू रहेगी। बालशेविक—जर्मनी छोटासा ही रहेगा, और उसके कंगाल रहने से मित्रों का कर्ज जो भी डूब जायगा, तथापि ४।५ वर्ष के बाद वही फिर बालशेविक मत का परित्याग करके फ्रांस का माण्डलिक बनने को राजी होजायगा। इसी प्रकार जर्मनी आज बालशेविक बनगया तो वह फ्रांस के पाले पड़ेगा। ४।५ महिने में पोलैण्ड को धीमा कर देने पर इसी वर्ष के शीत काल में जर्मनी के ही साथ २ लेनिन को भी मिट्टी में मिलाने के लिये कोई रुकावट नहीं रहेगी। जर्मनी की खदानों से जो कर्ज चूकता होसकेगा, वह होगा, परन्तु यदि कर्ज न चुकाया जासका, तो भी फ्रांस और रशिया का स्थल पर का निष्कंटक सम्बन्ध जोड़ने और उसे स्थायी बनाने के लिये जर्मनी से और जो कुछ छीना झपटी करनी पड़ेगी, उसके लिये फ्रांस को मौका मिलेगा, और योरोप का सार्वभौम बनने सम्बन्धी फ्रांस की महत्वाकांक्षा भी पूरी होसकेगी। इस कारण जर्मनी के बालशेविक बनने पर से उसकी दशा वर्तमान सन्धि नियमानुसार भी न सुधरते हुए अधिकाधिक निकृष्ट बन जायगी। और फ्रांस को अलबत्ता ४।५ महिने की अधिक लड़ाई से जो मिलनेवाला है, वह आपही आप मिल जायगा। वर्तमान शर्तों के कारण जर्मनी का मजदूर दल भी मित्र सर्कार के विरुद्ध चौंक उठने के कारण सब स्थिति और श्रेणि के लोगों की ओर से वर्तमान सोशियालिष्ट सर्कार को मित्रों के विरुद्ध खड़ा होने की उत्तेजना और सहायता मिलनेवाली है। सन्धि की कठोर शर्तों के कारण जर्मनी की दुविधा दूर होगई है। इस एकता से लाभ उठा कर वर्तमान सोशियालिष्ट सर्कार सन्धि न करके क्या लड़ाई को आगे चलाने के लिये तय्यार होगी? इस प्रश्न का खुलासा करने के लिये मित्र सर्कार के विरुद्ध जर्मनी कितनी सेना खड़ी कर सकेगा और वह कितने समय तक ठहर सकेगी, सो देखना चाहिये। मित्र सर्कार की आज २० लाख सेना ऱ्हाइन के किनारे खड़ी है, और जर्मनी की बहुत हुई तो १० लाख से अधिक सेना ३।४ सप्ताह की अवधी में खड़ी न की जासकेगी। अर्थात् जर्मनी यदि स्वसंरक्षण की लड़ाई करने लगा तो दो चार महिने से अधिक वह मित्र सर्कार के सामने खड़ा न रह सकेगा। दो चार महिने के अवसान पर मोहित होकर किसी का भी मुसद्दी मण्डल लड़ाई शुरू करने और राज्य शकट का जूआ अपनी गर्दन पर लेने को तय्यार न होगा। आज हस्ताक्षर करके मुक्त बनो, वर्ष छह महिने में जो कुछ होगा सो होजायगा, ऐसा कहने की ओर ही मुसद्दियों का रुख पाया जायगा। लड़ाई के काम में प्रवृत्त होने के लिये वर्ष डेढ़ वर्ष तक लड़ने का भी तो साहस होना चाहिये, और जर्मनी में यह दम ४।५ महिने का ही है। तो क्या ७।८ महिने जितना साहस उसे बाहर से मिलने का सम्भव है? यदि आष्ट्रिया की ओर की मदद मिलने की आशा की जाय तो वह भी व्यर्थ है, क्योंकि वह मोहताज होकर अन्न के लिये सब प्रकार से मित्र सर्कार पर ही अवलंबित है। हंगेरी की सर्कार बालशेविक होकर कुछ दिन पूर्व मित्र सर्कार के विरुद्ध खड़ी हुई थी, उसको आष्ट्रियाने संदेसा भेजा था कि तुम्हारी कृति हमें पूर्णतयः पसन्द है। परन्तु अन्न के लिये हम मित्र सर्कार के गुलाम बने हुए हैं। कलही यदि जर्मनी मित्र सर्कार के विरुद्ध उठ कर खड़ा हुआ तो उसे भी यही संदेसा आष्ट्रिया की ओर से भेजा जायगा। गोली बारूद और कुछ स्वयं सेवकों द्वारा गुप्त सहायता देने के सिवाय आष्ट्रिया और कुछ भी नहीं कर सकता। हंगेरी बोलशेविक बन गया है और वह मित्र सर्कार के विरुद्ध है। परन्तु गतमास में रूमेनियनों ने उसे ठीक मुकाम पर लगा दिया, इस कारण मित्र सर्कार को पैसा धेला त्रास देने के सिवाय हंगेरी से भी कुछ न होसकेगा। बल्गेरिया, सर्बिया और बाल्कन प्रदेश में बालशेविकों का मत फैलता चला है, और ये लोग अलबत्ता मित्रों को कुछ त्रास पहुंचा सकेंगे। इसके सिवाय तुर्किस्तान में भी तरुण तुर्कों ने फिर से सिर उठाया है, और जर्मनी के सन्धि न करने पर तरुण तुर्कों का उपद्रव टर्की में स्थान २ पर होगा; इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। परन्तु आष्ट्रिया, हंगेरी, बाल्कन प्रदेश और टर्की में के कुछ कांटे निकाल डालने के लिये, इटली की सेना समर्थ है। इटली को एड्रियाटिक सागर का फ्यूम बंदर गाह न दिया जाय ऐसा प्रेसी . में प्रे० विल्सनने निश्चय किया,

इस कारण इटली रूठ कर अपने देश को चला गया। परन्तु मई के प्रथम सप्ताह में इटली को फ्यूम बंदर गाह देने का सन्धि परिषद की ओर से पुनः निश्चय होने के कारण इटली का रूठना दूर होगया और सन्धि की शर्तें जर्मनी को सुनाने के समय वह पुनः सन्धि-परिषद में उपस्थित होगया, अर्थात् जर्मनी की ओर से पुनः लड़ाई चलाई जाने पर आष्ट्रिया, हँगेरी, बाल्कन प्रदेश और टर्की की सारी गड़बड़ बंद कर देने का काम इटालियन सेना करेगी और एँग्लो फ्रेंच सेना जर्मनी की ख़बर लेगी। सारे जर्मनी को पादाक्रांत करने के आक्रमण में अमेरिकन सेना उतने ही जोर शोर से न टूट पड़ेगी, यह सब ठीक है, तथापि यदि अमेरिकन सेना स्वदेश को लौट गई तो जर्मनी पर किये जानेवाले आक्रमण २०।२५ लाख एँग्लो-फ्रेंच सेना ऱ्हाइन नदी पार कर बर्लिन की ओर एकदम बढ़ जायगी, और ३।४ महिने में सारे जर्मनी को पादाक्रांत कर लेगी। इस प्रकार लड़ाई में उड़ी मारने का आत्मघातकी साहस यदि जर्मनी ने किया तो वर्तमान में मित्र सर्कार से लड़नेवाले रशियन बालशेविकों के सिवाय जर्मनी को और किसी की ओर से भी कहने योग्य मदद न मिलेगी, और इन रशियन बालशेविकों का सामर्थ्य ही कितना है? इन्हों ने गत महिने में ओडेसा और सेबास्ट फुल में से मित्र सर्कार की सेना को काले सागर में वापस भेज दिया, इसी कारण दक्षिण रशिया में इन का बोलबाला होगया है। इसके सिवाय बुखारा, समरकंद, में के मुसलमानों को बगल में मारकर अफगानिस्तान को भी हिन्दुस्तान के विरुद्ध खड़ा किया है। अफगानिस्तान ने ता० २ मई को खैबरघाट के निकट अंग्रेजी प्रान्त पर आक्रमण कर हिन्दुस्तान के विरुद्ध युद्ध शुरू किया, परन्तु १२।१३ मई के लगभग अंग्रेजों ने अफगानों को पीछे हटा कर उनके डाका मुकाम पर अपना कब्जा कर लिया। अफ़गानिस्तान, बुखारा और समरकंद के मुसलमानों को अंग्रेजों के विरुद्ध खड़ा कर रशिया के लेनिन ने मित्र सर्कार को नोचना आरम्भ किया है। नये प्रकार की सेना, गोली बारूद, तोपें और विमानों की सहायता के बिना लेनिन का प्रयत्न व्यर्थ है। इसी प्रकार लेनिन के पास सेना भी तो कौनसी है? उच्च और नीच के झगड़े में ही रशिया के धुर्रे बिखर गये हैं। जिस रशिया में ४०।५० लाख सेना खड़ी करना बायें हाथ का खेल है, ऐसा ज़ार को मालूम होता था, वहीं आज लेनिन को ४।५ लाख सेना इकट्ठी करने में कठिनता पड़ रही है। और वह ४।५ लाख सेना भी अच्छी अवस्था में हो सो भी नहीं। न चतुर सेनापति है, न युद्ध कला के शास्त्रों का जाननेवाला कोई अधिकारी ही है, और न बड़ी २ तोपों तथा विमानों का मर्म जाननेवाले शास्त्रज्ञ ही हैं। मध्यम स्थिति की जनता को कत्ल करने से लेनिन की सेना अन्ध बन रही है। जर्मनी ने यदि कलही सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिये और जून महिने में यदि पोलेण्ड का बन्दोबस्त ठीक २ होसका, तो अकेला फ्रांस ही अगले दो महिने में, लेनिन के बोरे बँधने उठवा कर रशिया की नई राजव्यवस्था अपनी मर्जी के अनुसार करा सकेगा। जर्मनी में सन्धि होजाने पर अपना जीवन २।३ महिने से अधिक नहीं है, यह बात रशिया में की लेनिन सर्कार को भली भांति मालूम है। और इस मृत्यु के भय से ही मित्र सर्कार से सन्धि न कीजिये, हम तुम्हें जो आवश्यक होगी, ... यता देंगे, इस प्रकार का आश्वासन जर्मनी की सोशियालिष्ट ... को देने के लिये लेनिन ने सपाटा मचा रक्खा है। लेनिन के आश्वासन पर बुखारा, समरकंद, और काबुल के मुसलमान ... होगये। पट्रोगाड़ और मास्को में जो राज्य करता हो वही ... बलवान है, इस प्रकार इन मुसलमानों की कितनी ही ... समझ होने के कारण और लेनिन के बल की परिक्षा करके तथ्य आजमानेवाले ज्ञान का इन मुसलमानों में सर्वथा अभाव है ... कारण वे विचारे लेनिन के शब्दों में फँस गये। परन्तु जर्मनी ... सोशियालिष्ट सर्कार की वैसी स्थिति नहीं है। आज कल की ... क्या है और एँग्लो-फ्रेंचों की २०।२५ लाख सेना के विरुद्ध कोई डेढ़ ... वर्ष निकाल कर फ्रांस या इँग्लैण्ड में सोशियालिष्ट राज्यक्रांति होगी, इस अंधी आशा की मार्गप्रतीक्षा का निराशयुक्त मार्ग स्वीकार ... को कितनी सेना चाहिये, कितने मशिनगन, तोपें, विमानों की आवश्यकता है और साथ ही अन्न जल तथा गोली बारूद का संग्रह ... चाहिये, इन सब का यथायोग्य अन्दाज करने का बुद्धिबल जर्मनी में आज भरपूर है। रशिया का मनुष्यबल फौज के काम में अभी उपयोगी होने जैसा है, और रशिया में व्यवस्था कर लेने पर अन्न ... का भी टोटा न पड़ सकेगा, यह ठीक है। परन्तु रशिया में बालशेविकों का मत जब तक जमा हुआ है तब तक रशिया के उच्च और नीच वर्ग में एका कौन कर सकता है। मित्र सर्कार के भय से ... के दिये हुए आमंत्रण पर से बालशेविकों को जर्मनी में लाया जाय तो इन बालशेविकों के सान्निध्य से ही जर्मनी का नीच वर्ग बालशेविक होजायगा। उच्च वर्ग सिर हिलावेगा और सारे जर्मनी को ... और दास्यत्व के नर्क में गिरा देगा। इस प्रकार अपनी गर्दन ... कटा लेने की अपेक्षा सन्धि की शर्तों का द्रव्य और बलहीन ... स्वीकार करके प्रे० विल्सन पर विश्वास रखकर अनुकूल समय की प्रतीक्षा करना क्या बुरा है? जर्मनी की सोशियालिष्ट सर्कार और रशिया की बालशेविक सर्कार का एका जर्मनी को सन्धि की शर्तों से भी अधिक त्रासदायक होगा। जर्मनी के सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करते ही दो एक महिने में अपनी प्राणान्तक अवस्था आजायगी, यह ... आज लेनिन की दृष्टि में समा रहा है। इस मृत्यु से डर कर ... लेनिन सर्कार ने अपने बालशेविक मत को छोड़ और जर्मनी की ... सोशियालिष्ट सर्कार रशिया में स्थापित कर; वहां उच्च और नीच ... में एका किया जाय, तभी जर्मनी और रशिया का मेल होकर ... सर्कार के विरुद्ध वर्ष डेढ़ वर्ष खड़े रह सकने का सामर्थ्य ... जर्मनों में उत्पन्न होसकता है। परन्तु लेनिन के बोलशेविक मत छोड़ देने पर रशिया में सोशियालिष्ट सर्कार की स्थापना होना असम्भव है। ऐसा होजाना एक चमत्कार ही कहा जासकेगा। मई-जून महिने में इस चमत्कार के दृष्टिगोचर होने पर जर्मनी सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर नहीं करेगा, और उपरोक्त चमत्कार दृष्टिगोचर न होने पर मित्र सर्कार और अमेरिका को शाप और गालियाँ देते हुए सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करके महायुद्ध का प्रायश्चित करने की जर्मनी शुरूआत करेगा।

इस वर्ष के लिये डेक्कन जिमखाने से मेच लेने को आये हुए उम्मेदवार

वालों की क्या दशा होती होगी, ईश्वर ही जाने। उनके शरीर में से लगातार पसीना छूट रहा था, बीच २ में वे उतर जाने को भी कहते, और उनकी दशा देख कर मुझे उतर कर ही चलना पड़ता। अस्तु, मैंने ऊपर पहुँच कर श्रीवेंकटेश्वर भगवान से ऐसी प्रार्थना करने का विचार किया कि 'यदि मैं पातकी होऊं,' और अभी मुझे सद्गति न दीजाकर पुनः जन्म देना हो तो तुम भले ही चाहे जैसा जन्म देना? परन्तु इन डोलीवालों के यहां कभी जन्म न देना। हर हर! उनका
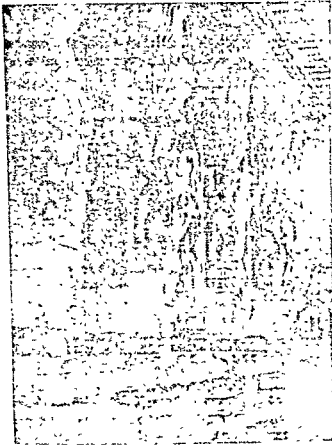
विष्णुकांची देवालय में १०० खम्भों का मण्डप

कैसा कठिन श्रम और उनकी क्या विचित्र दशा, देखा नहीं जाता। जाते समय मार्ग में थोड़ा २ पानी भी बरसने लगा। ऊपर मैसूर के किसी सज्जन ने एक धर्मशाला बंधवा दी है, किन्तु यहां से पानी दूरी पर होने के कारण मैंने तीर्थ पर ही एक कोठरी किराये पर लेली।

इस तीर्थ का नाम पुष्करणी है। यहां स्नानादि से निपट बाजार से सामान आदि लाकर भोजन बनाया। यहां जिस बनिये से के यहां से सामान लेते हैं वही बर्तन भी देता है, इसका अलग भाड़ा नहीं लगता परन्तु उसको कसर सामान की कीमत में निकल जाती है। पर महाबलेश्वर या माथेरान के समान भाव में जो चौगुना अन्तर मालूम पड़ता है, वैसा यहां नहीं पाया जाता।

इसके पश्चात् मैं दर्शनार्थ गया. यहां भी द्वार पर गोपुर है। मुख्य द्वार के चारों ओर पटाङ्गण है। मंदिर पर सोने का कलश है। यह कलश बहुत दूर से भी दिखाई पड़ता है। मुख्य देवालय का द्वार बारा बजे खुला, और फिर हम दर्शनार्थ गये। यहां पर भी वेंकटेश्वर की मूर्ति है नीचेवाले श्रीगोविन्दराज स्वामी के ये छोटे भाई हैं। यह मूर्ति खड़ी हुई है, इस की ऊंचाई ७फुट है। परन्तु गोविन्द स्वामी की मूर्ति १२ फुट की है। होना भी चाहिये, क्योंकि बड़े भाई ठहरे। दर्शनोत्सुक यात्री लोग यहां उत्सुकता से मूर्ति को देख रहे थे, और बाहर से आये हुए दूर दूर के लोग भी मानों मूर्ति का दर्शन कर अपना जन्म ही सफल समझते थे।

वैष्णव लोगों के ये मुख्य देवता हैं। जिस प्रकार शैव लोगों के लिये काशी है, उसी प्रकार वैष्णवों के लिये यह काशी कहा जा सकता है। इधर के वैष्णवों में विरला ही कोई होगा जो त्र्यंकोबा गिरि को न गया हो। यहां हर समय अर्थात् किसी भी समय, किसी भी महिने में विवाह, यज्ञोपवीत आदि कार्य करने में किसी प्रकार की हानि नहीं समझी जाती। जिनकी प्रथम स्त्री वैशाख या ज्येष्ठ में मर गई हो और उन्हें चातुर्मास बिताना भी कठिन होजाय, वैसे लोग यहां आकर भर बरसात में इतनी ऊंचाई पर चढ़ कर अपना विवाह कार्य कर सकते हैं।

मुख्य देवालय के बाईं ओर एक रेती की घड़ी के समान एक पेटी बनी हुई है, उसमें रुपया पैसा-जो यहां चढ़ाया जाता है-डालते हैं। मण्डप के दोनों ओर दो घंटाएं हैं। बाईं ओर की घंटा बजाने से गोविंद और दाहिनी ओर की घंटा बजाने से नारायण-की ध्वनि होती है। ऐसा लोग कहते हैं, परन्तु हमें इसके सुनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

देवदर्शन से निपटते ही प्रसाद विधि का आरम्भ होता है। किंतु यहां प्रसाद बिकता है। एक आने से लगा कर जितना चाहिये मिल सकता है। भात में भी दो तरह हैं, खिचड़ी और दहीभात-मैंने भी एक आने का प्रसाद लिया और मुकाम को चल दिया। मंदिर में दीप मालिका सोने की है। यहां की आय भी बहुत बड़ी है। मुकाम पर पहुँचते ही जो पानी बरसने लगा सो रात भर बराबर बरसता रहा। प्रातः काल बंद होगया।

ता०१३को गिरि पर ही मैंने त्र्यंकोबा के मंदिर से३ मील पर पापनाशिनी नामक तीर्थ में स्नान करने का निश्चय किया। दूरी को देख कर मैंने डोली कर लेना उचित समझा, किन्तु एक दिन पूर्व बरसाद होजाने से वे इतनी ही दूर के लिये २॥) और ३ रु० मांगने लगे। नीचे से सात मील चढ़ने में जहां २-२॥) रु० लगे वहीं अब सपाट जमीन पर जाने में २॥ और ३ रुपये मांगे जाने लगे तब मैंने पैदल ही जाने का निश्चय किया और निकल पड़ा। यहां पहुँचने पर हर हर ध्वनि करता हुआ पाप नाशिनी का जल प्रवाह देख कर चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ, यह एक झरना है। इसकी ऊंचाई १४-२० फुट से अधिक नहीं किंतु पानी का प्रवाह ज़ोर का होने से नीचे खड़े रह कर स्नान करना कठिन जान पड़ा। परन्तु ऊपर से जो पानी गिरता है वह तीर्थ जल होने से मैंने वहां स्नान किया। वहीं एक भट्टजी पहुँच गये। उन्हें दक्षिणा देकर विदा किया। इसतीर्थ पर कितने ही वैरागी भी झोंपड़ी बना कर रहते हैं। कहते हैं कि इस तीर्थ में स्नान करने से ४२ पीढ़ियाँ पिछली और इतनीही आगे की उद्धार पा जाती हैं। आधी दूर जाने पर दाहिनी ओर एक रास्ता जाता है-उससे होकर जाने में आकाश गंगा नामक तीर्थ आता है, यहां पानी का प्रवाह तो ज़ोर का नहीं है
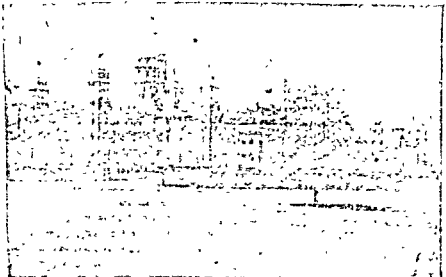
[illegible]

परन्तु ऊंचाई भी अधिक नहीं है। इसमें भी स्नान करके हम आगे बढ़े तो तिरुपति के निकट पहुँचते ही बाईं ओर एक मार्ग जाता है, उससे तीन मील जाने पर एक पांडव नामक तीर्थ आता है, यहां भी नहीं

स्नान कर मुकाम पर आया, उस समय ११ बज गये थे। देव दर्शन
र भोजनादि से निपट गाँव में इधर उधर घूम कर गोविन्दराज पट्टन का
या, यहां पर राम का देवालय और भी प्रसिद्ध है, उसे देखा। यह
ालय, गोविन्द स्वामी का देवालय और गिरि के व्यंकोबा इन सब
खर्च खाता एक ही संस्था से होता है, और उसके कारबारी
विन्दराजपट्टन में रहते हैं।

मुकाम पर आकर भोजन से निवृत्त हो सो गया सबेरे ता० १४ को
ठते ही कपिलधारातीर्थ पर सब यात्रियों के साथ में भी
न कर आया। आज रेल द्वारा मुझे मद्रास जाना था, इस कारण
ता से भोजनादि कर त्रिपती स्टेशन पर आया। गाड़ी में सवार
रेनिगुंठा पहुँचा। यहीं से यह आगे कालास्ती को जाती है।

दक्षिण में जो प्रसिद्ध पांच लिंग हैं, उनमें कालास्ती भी हैं। उन
लिंगों के नाम पृथ्वी, आप, तेज, वायु और आकाश हैं। इनमें से
यु' यहां पर है। यह देवालय कालास्ती स्टेशन से एक मील दूरी
एक छोटी सी पहाड़ी पर है। वायुलिंग नाम पड़ने का कारण,
बतलाया जाता है कि उस देवालय के गभार में लिंग पर एक दीपक
और वहां वायु नाम को
प्रविष्ट नहीं होसकता, तो भी
दीपक उस लिंग के सामर्थ्य
बराबर घूमता रहता है। इसी
से वायुलिंग कहने लगे।
च लिंगों में से पृथ्वी लिंग
लूर में, आप लिंग त्रिवान
में, तेज त्रिनमलमें और आकाश
चिदंबरम् में है।

नदिनों कालास्तीमें हैजा जोर
या, इस कारण मैं वहां नहीं
। रेनिगुंठा पर इस गाड़ी से
कर रायचूर से मद्रास को
वाली गाड़ी में सवार हो ६
श्याम को मद्रास पहुँचा—
न के पास ही एक बड़ी धर्म-
है, वहां उतरने का अच्छा
ता है, और भी यहां कई
शालाएँ तथा भोजनालयादि हैं
द्रास में ता० १५ से २० तक
न ठहरना पड़ा। क्योंकि यहां
ही दो तीन बराबर पानी
इस कारण ३ दिन और
पड़ा। मद्रास में भी बंबई
फर्ड मार्केट की तरह एक
है। किन्तु उसमें विशेष
कोई नहीं है। सन् १८५६ में
ाया हुआ एक बगीचा भी है।
ा क्षेत्रफल ११६ एकड़ है। उसमें ११ तलैयाँ हैं। कितने
छोटे बड़े रास्ते हैं। जिन की लंबाई ४।। मील है। इसके
भाग में बहुत से प्राणी रखे गये हैं। सिंह बाघ, भिन्न २ जाति
ी, बंदर, मगर आदि अनेक प्राणी हैं। बगीचे के दक्षिण भाग में
ारिया हॉल है। इसकी ऊपरी मंजिल में ६०० और नीचे ६००
गैलेरी में २०० इस प्रकार १४०० मनुष्य बैठ सकते हैं।

हां पर एक पदार्थ संग्रहालय भी है, उसे मैंने देखा। मुख्य द्वार
कितनों ही जाति के जीवित सर्प पींजरों में पड़े हुए थे, उनके
भिन्न २ प्राणियों के देह पंजर थे, उनमें एक व्हेल मछली का पंजर
बड़ा दिखाई दिया। इससे आगे एक दालान है। उसमें सब प्रकार
शुद्ध धातुएँ रखी हुई हैं और उन्हें शुद्धावस्था में लाने के समय
अवस्था होती है, उनके नमूने रखे हुये हैं। एक ओर प्राचीन
ों का संग्रह है। ऊपर लकड़ी तथा अन्य उद्भिज पदार्थों के नमूने
एक ओर कई भांति की मछलियाँ है। सब से अधिक देखने को
ुराने सिक्के हैं, इन्हें देखने के लिये स्वतंत्र आज्ञा लेना पड़ती
न आज्ञा पहले से नहीं लेपी, इस कारण मैं उन्हें न देख सका।
हां का म्यूजियम पर का बगीचा मानो बंबई का रानीबाग ही है।

इसी अजायब घर से लगी हुई एक लाइब्रेरी है, इसकी इमारत
और सुन्दर है। यहां पुस्तकों का ज्यादा संग्रह है, और उन्हें व्यवस्थ-
ित रखने के लिये नौकर भी बहुत से हैं। मद्रास के पूर्व और समुद्र
पर एक अक्वेरियम है, उसमें भिन्न २ जाति की जीवित मछलियाँ हैं,
उनके लघु दीर्घ आकार को देख चित्त बड़ा प्रसन्न होता है। यहां इस
बात के कहने की आवश्यकता ही नहीं है कि ये सब जीव पानी में रखे
गये हैं। सदा ताजा पानी मिलता रहे इसके लिये पानी के नल लगे
हुए हैं और हवा के लिये एक कोठरी में वायु यंत्र चला करता है,
इस प्रकार पानी में हवा मिला कर ये जीव भक्षण करते हैं। यहां प्रति
मनुष्य एक आना कर देना पड़ता है।

एक दिन मैंने और भी इमारतें देखीं, उनमें मद्रास की हाईकोर्ट की
इमारत बड़ी सुन्दर थी, भीतर भी नकाशी का काम है, इसी इमारत
में कुलाबे के दीपगृह की भांति एक दीपगृह भी है उसे देखने के
लिये मैं ऊपर गया, यहां से चारों ओर का दृश्य दिखाई देता था।
उस दीपक का प्रकाश १८००० मोमबत्ती के प्रकाश के बराबर था।
और कुलाबा (बंबई) के दीपगृह की तरह मिनिट २ पर प्रकाश बढ़ता
रहता है। और भी कितनी ही
इमारतें हैं, किन्तु उनमें देखने
योग्य कोई विशेष इमारत न होने
से मैं देखने नहीं गया। मद्रास से
पांच मील पर अड्यार में थियो-
सॉफी का आद्यपीठ है, यहां का
क्षेत्रफल ३।० एकड़ है। एक ओर
नदी तथा दूसरी ओर समुद्र होने
से यह स्थान बड़ा सुन्दर बन गया
है। नारियलों का भारी वन है,
जिसमें वृक्षों की शोभा ही निराली
है, इस घेरे में कितने ही बँगले,
ऑफिस और लाइब्रेरियाँ हैं, जिन
में कई ताड़पत्र पर लिखे ग्रन्थ
भी हैं।

मद्रास में एक सप्ताह रह कर
ता० २१ को चल दिया, वहां
से चिंगलपट्ट होकर कांजीवरम
को ६ बजे श्याम को पहुँचा, उस
दिन सोमवार होने से मुकाम पर
पहुँचतही पहले शिवकांची को
जाकर दर्शन कर आया। और
स्नान भोजन से निपट सो रहा।

ता० २२ को सबेरे शौच मुख
मार्जन से निपट पास के एक तीर्थ
में स्नान कर पहले विष्णुकांची
को गया, यह स्थान शिवकांची
से ३ मील पर है, इन दोनों स्थानों
में इतना अन्तर होने पर भी बीचमें लगातार घर बने हुए हैं।
अर्थात् दोनों मिल कर एक ही गाँव है। यह स्थान तालुका है,
परन्तु इसका जिला चिंगलपट्ट इससे छोटा है। विष्णुकांची
के देवालय का गोपुर छोटा है। इस देवालय में प्रवेश करने पर बाँई
ओर एक १०० खम्भा का मंडप है, उन खंभों पर की शिल्पकारी बड़ी
सुन्दर है। मण्डप के पूर्व की ओर एक कोटितीर्थ है। मुख्य देवालय
तीन मँजला है, उसमें विष्णु का मंदिर तीसरे मंजिल पर है। ये
विष्णु वरदराज के नाम से प्रसिद्ध हैं, दूसरी मंजिल पर लक्ष्मी का देवा-
लय है। यह देवी रत्न खचित्त आभूषणों से सुशोभित है। इसी मंजिल
पर ऊपर की तरफ़ पोशी में एक सोने की छिपकली बनी हुई है। उसके
दर्शन होने पर पल्लीपतन का दोष ही नहीं छूट-जाता वरन् लोग तो
यहां तक कहते हैं कि उस छिपकली के दर्शन कर आनेवाले मनुष्य के
चरणों में सिरधरनेवाला भी इस दोष से मुक्त होजाता है।

विष्णुकांची को दक्षिणकाशी भी कहते हैं। इसके सम्बन्ध में एक
कथा ऐसी है कि महादेव ने एक बार लक्ष्मी की बड़ी स्तुति की, तो
सावित्री को इस पर बड़ा क्रोध हुआ और दोनों में झगड़ा होगया और
सावित्री रूठ कर चली गई। इसके बाद महादेव ने कांची में अश्वमेध

कुम्भकोणम् में महामती तीर्थ की यात्रा का दृश्य

यज्ञ का आरम्भ किया। कांची में एक यज्ञ करने से एक हजार यज्ञ का फल मिलता है, इसीसे ब्रह्माने यह स्थान पसन्द किया और सावित्री ने यह स्थान तथा यज्ञ को बहा देने के लिये नदी का रूप धारण किया। तब ब्रह्मदेवने घबरा कर विष्णु से प्रार्थना की, विष्णु ने दीर्घ रूप धारण कर बीच में पड़ कर नदी का प्रवाह रोक दिया, तब सावित्री ने लज्जित हो नदी का रूप त्याग कर विष्णु से यह प्रार्थना की, कि यह स्थान काशी से भी पवित्र समझा जावे और आप यहां निवास करें। विष्णु तथास्तु कह कर अन्तर्धान होगये। उसी स्थान पर मंदिर बनवा कर विष्णु की स्थापना हुई।

विष्णुकांची में माघ और वैशाख में बड़ी यात्रा होती है। तब नित्य प्रति भिन्न २ वाहनों पर उत्सव मूर्ति बिठा कर सवारी निकाली जाती है। जहां वाहन रखे हुए थे, वहां मैं देखने गया तो मयूर, सिंह, हाथी घोड़ा, हनुमान, गरुड़, शेष, गाय, हंस, और बाघ इस प्रकार के १० वाहन थे।

इसके पश्चात् मैं जब शिवकांची को आने लगा तो मार्ग में मीनाक्षी का देवालय आता था उसे देखने गया, यह मीनाक्षी देवी बैठी हुई है। मूर्ती बड़ी है, देवालय के घेरे में एक मूर्ति शंकराचार्य की भी है। मीनाक्षी के मंदिर के निकट परमेश्वर ने विराट रूप धारण कर बली को पाताल भेज दिया-उन्हीं वामन भगवान का भी मंदिर है। मुकाम पर आकर स्नान भोजनादि से निपट शिव मंदिर में गया, क्योंकि पहले दिन शिव के दर्शन किये थे, परन्तु रात होजाने से सम्पूर्ण मंदिर न देख सका था, वह देखा। मंदिर के सामनेवाला भाग जीर्ण होगया है और उसका जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। देवालय का आकार बहुत बड़ा है और आस पास १०८ लिंग हैं। मंदिर के पिछले भाग में एक प्राचीन आम्रवृक्ष है, लोग उसके फांदों को वेदरूपी कहते हैं। देवदर्शन करके मंदिर के गोपुर पर चढ़ा, गोपुर बहुत ऊंचा है। कुंभकोणम् के गोपुर के सिवाय इतना बड़ा गोपुर कहीं भी नहीं है इसकी नौ मंजिल हैं। सब से ऊपर जाकर गाँव की शोभा देख नीचे उतर आया, और रेल का समय होजाने से स्टेशन पर आकर गाड़ी में सवार हो चिंगलपट्ट को पहुँचा, यहां भोजनादि से निपट विश्राम किया।

(अपूर्ण)

हिन्दी में राजनैतिक साहित्य

(लेखक—श्री मातादीन शुक्ल अध्यापक हितकारिणी हाईस्कूल जबलपुर सी पी)

(३)

पद्य के विषय में मैंने बहुत कुछ कह दिया। कदाचित पाठकगण उपर्युक्त राजनैतिक साहित्य का अन्वेषण करेंगे। लेख के बहुत बढ़ जाने के भय से यहाँ इसे समाप्त कर अगले विभाग में राजनैतिक साहित्य के गद्यभाग का दिग्दर्शन कराता हूँ।

गद्य—विभाग।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, गद्य का आरम्भ हुए लगभग चार-सौ वर्ष हुए। महात्मा गोरखनाथ, गोस्वामी विट्ठलनाथ लल्लूलाल, इंशा, सदलमिश्र और राजा लक्ष्मणसिंह प्रभृतिने इस की उन्नति की, परन्तु इसे 'उन्नति' के नाम से नहीं पुकार सकते। लल्लूलालजीने 'प्रेमसागर' की रचना गद्य में की और राजा लक्ष्मणसिंह ने संस्कृत ग्रन्थों का गद्य में अनुवाद किया। राजा शिवप्रसाद ने भी गद्य की उन्नति की तथा इतिहास तिमिरनाशक जैसी पुस्तकें बनायीं। ये सब पुस्तकें प्रायः पाठशालाओं के लिये थीं। इसके बाद बाबू हरिश्चन्द्र का समय आया। वास्तव में गद्य का समय यही था, और इतने थोड़े काल में गद्य में आश्चर्यजनक हुई। राजा शिवप्रसाद के पहिले तक हिन्दी गद्य में कोई भी राजनैतिक ग्रन्थ नहीं बना। इससे जान पड़ता है कि गद्य में जो कुछ राजनैतिक साहित्य मिल सकता है वह केवल ४० साठ वर्षों के भीतर के गद्य में। हिन्दी के सौभाग्य से ही मानो भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ था। उस समयसे आज तक हिन्दी गद्य की जो उन्नति हुई है, अथवा हारही है, वह प्रगट है। और यदि यही क्रम जारी रहा तो समस्त संसार के भिन्न २ भाषा साहित्य के गद्य में भी, पद्य की भाँति कोई भी ग्रन्थ अथवा ग्रन्थकार, हिन्दी भाषा के ग्रन्थों और ग्रन्थकारों की टक्कर का न रहेगा। बाबू साहब ने वास्तव में गद्य को एक विशिष्ट रूप दिया और इन्हीं के समय से गद्य का स्रोत उमड़ा है। राजनैतिक साहित्य की खोज के लिये हम गद्य के तीन खण्ड करते हैं। प्रथम नाटक, द्वितीय उपन्यास और तृतीय इतिहास। पाठक तीन खण्डों में राजनैतिक साहित्य का अनुशीलन करें।

नाटक—खण्ड।

नाटकों की व्याख्या करने से पहिले यह आवश्यक जान पड़ता है कि वर्तमान हिन्दी गद्य-ग्रन्थों के दो विभाग किये जायँ। एक तो अन्य भाषाओं से अनुवादित ग्रन्थ, दूसरे स्वतंत्र ग्रन्थ। नाटक खण्ड और अन्य दो खण्डों में पहिले हम अनुवादित ग्रन्थों का उल्लेख करते हैं।

प्रत्येक भाषा के प्रारम्भ के काल से, यह नियम चला आता है कि अन्य भाषाओं के आधार पर पुस्तकें और ग्रन्थ लिखे जाते हैं। किसी भी भाषा का साहित्य उत्कृष्ट है तो उसके ग्रन्थों के अन्य भाषाओं में अनुवाद कियेही जाते हैं। जैसे बंगीय कविसम्राट् सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं के अनुवाद हो रहे हैं। परन्तु यह बहुधा नहीं होता। केवल निर्धन ही धनी और सम्पतिवान लोगों के द्वार खटखटाता है। अतएव यह स्वाभाविक है कि यदि हिन्दी में इस समय अनुवादों का बाहुल्य है तो कोई आश्चर्य नहीं। अंग्रेजी, चीनी और ग्रीक भाषाओं ने भी अपने कलेवर को प्रौढ़ साहित्य के अनुवादों से किसी समय पूर्ण किया था। यही हाल हिन्दी का भी वर्तमान समय में है। विशेषतः गद्य भाग तो, अनुवादों से ही परिष्कृत है। शोक केवल इस बात का है कि हिन्दी में स्वतन्त्र लेखक केवल इने गिने हैं। उनमें से भी अधिकांश अनुवादों के द्वारा धन कमाने के फेर में पड़ कर स्वतंत्र ग्रन्थ लिखने के लिये लेखनी ही नहीं उठाते। इस तरह बचे खुचे दो ही चार लेखक स्वतंत्र ग्रन्थ लिखने पर तुले हुए हैं। हां, इसमें संदेह नहीं है कि थोड़े ही काल में गद्य ने अनुवादों से अपने कलेवर को बहुत कुछ पूर्ण कर लिया है। लेखकों को अब स्वतंत्र ग्रन्थ लिखने के लिये लेखनी उठानी चाहिये।

हिन्दी में अनुवाद किये हुए नाटकों में जो सर्वोत्कृष्ट और प्रथम ग्रन्थ मिलता है, वह भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का 'मुद्राराक्षस' नाटक है संस्कृत में विशाखदत्त लिखित 'मुद्राराक्षस' का यह अनुवाद है। अनुवाद के विषय में कुछ भी कहना अपनी ढिठाई प्रकट करना है। वास्तव में यह ग्रन्थ राजनीति का आदर्श गद्य ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में चाणक्य और राक्षस के राजनैतिक प्रपञ्चों का समावेश है। और चाणक्यने किस प्रकार राक्षस की राजनैतिक युक्तियों को सुलझाया है, यह देखते ही बनता है। चाणक्य ने अपनी राजनीति के ही बल से नन्द वंश का विनाश किया और चन्द्रगुप्त को गद्दी पर बिठलाया। जिन लोगों को राजनीति की कठिन समस्या के हल करने के अवसर मिलने की सम्भावना हो, उन्हें सब छोड़ कर यह ग्रन्थ पढ़ना चाहिये। चाणक्य के जासूसों ने किस ढंग से राक्षस के स्वामी को फोड़ा है और किस तरह चन्द्रगुप्त को निष्कंटक राज्य का स्वामी बनाने में वे सफल हुए हैं। इस पुस्तक को पढ़ कर चाणक्य के राजनैतिक ज्ञान पर दाँतों तले अंगुली दबानी पड़ती है।

चाणक्य की कार्यवाहियों को देख कर हमें वर्तमान जर्मनी के जासूसों की करतूतें स्मरण हो आती हैं, और यह कहने में निःसंकोच

संकोच नहीं है कि भारत वर्ष के संस्कृत साहित्य से जर्मनी ही ने लाभ उठाया है।*

'दुर्गादास' और 'शाहजहां' दो, और नाटक हैं। जिनमें राजनीति का विचित्र चित्र खींचा गया है। श्रीयुत द्विजेन्द्रलाल राय ने बंगला में इन दोनों नाटकों की रचना की है। इन्हीं दोनों नाटकों के, अनुवाद रूप उपर्युक्त हिन्दी नाटक हैं। इन नाटकों के अनुवादक है, एक तो बाबू द्वारिकानाथ मैत्र कृत, दूसरा पण्डित रूपनारायण पाण्डेय कृत। ये दोनों नाटक ऐतिहासिक हैं और इसलिये राजनीति का अपूर्व आनन्द इन्हें पढ़ने में, आता है। प्रथम में औरंगजेब ने किस ढंग से राजपूत जाति का विध्वंस करना चाहा है, और दुर्गादास और समरदास सरीखे जाति और देशहितैषी मातृभूमि के सपूतों ने किस प्रकार उसकी रक्षा की है, स्वर्गीय राणा जसवन्त सिंह की विधवा रानी ने विश्वासघात किये जाने पर किस तरह राजपुताने भर में औरंगजेब के विरुद्ध शत्रुता का बीज बोया है, और फिर अन्त में औरंगजेब ने अपनी नीति पर पश्चात्ताप किया है, प्रभृति दृश्य ओजपूर्ण और उपदेशमय हैं। औरंगजेब के सिपह सालार दिलावरखां ने भारत सरीखे देश में हिन्दू और मुसलमानों के प्रेम का जो आदर्श वर्णन किया है उसे देख कर कहना पड़ता है, कि मुसलमान जाति में दिलावरखां और राजपूतों में दुर्गादास सरीखे आदर्श पुरुष अवश्य होते हैं। एक दृश्य के अन्तर्गत लेखक ने दुर्गादास की ओर से शिवाजी के पुत्र सम्भाजी से नीचे लिखे हुए शब्द कहलाये हैं। राजनीति का आधारस्तम्भ और नाटक का प्रधान राजनीतिक अंश हम पाठकों के लिये उद्धृत किये देते हैं:—

(अङ्क ४ दृश्य ८)

दुर्गादास—'जो लाञ्छना आज तक विजातीय विधर्मी शत्रुओं के हाथों नहीं हुई थी वही आज अपनी जाति के स्वधर्मी हिन्दू के हाथ से हुई!-शम्भूजी! तुम समझते हो कि मराठे लोग एक दिन राजपूत और मुसलमानों को एक साथ परास्त करेंगे। यह होता तो भी कुछ दुःख न था। किन्तु यह न होगा। देखोगे कि एक दिन मराठे, राजपूत, और मुसलमान तीनों, एक साथ किसी और जाति के पैरों पर लोटेंगे'।

शाहजहां भी इसी प्रकार की राजनैतिक समस्याओं से परिपूर्ण है। और दोनों की घटनाएं एक दूसरे से वस्तुतः सम्बद्ध है। अनुवाद होने, पर भी हिन्दी के वर्तमान नाटकों में इन्हें उच्च स्थान प्राप्त है।

और भी बहुत से नाटक हैं जिनका अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में अनुवाद किया गया है। परन्तु नागरी लिपि में छपे होने पर भी उन की भाषा उर्दू है और साधारण उर्दू जाननेवाले की समझ में नहीं आसकती। इन नाटकों में प्रायः प्रसिद्ध अंग्रेज नाटककार शेक्सपीयर के नाटकों की छाया है अथवा उन्हीं का अनुवाद है। राजनीति की पराकाष्ठा बहुधा इन नाटकों में भी नहीं है।

स्वतन्त्र नाटक।

यह हिन्दी के सौभाग्य की बात है कि, अनुवादों के साथ २ इस विभाग में स्वतंत्र ग्रन्थों का भी नम्बर कुछ कम नहीं है। हिन्दी के नाटक विभाग को स्वयं भारतेन्दु बाबू ने बहुत कुछ पूर्ण किया है। [illegible] नाटक तो राजनीति का, पूरा चमत्कार नहीं दिखाते, परन्तु 'नीलदेवी' 'भारत जननी' और 'भारत दुर्दशा नाटक' में राजनीति का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। भारतेन्दु बाबू वास्तव में देश के उन रत्नों में से थे, जिन्होंने अपने ग्रन्थों में भारत की सामाजिक और राजनैतिक दुर्दशा पर आंसू बहाये हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि उन्होंने देश की दुर्गति के साथ २ राजनीति का मर्मान्तक वर्णन किया होगा। [illegible] इन उपर्युक्त नाटकों में 'नीलदेवी' और 'भारत जननी' में [illegible] की अपेक्षा अधिक राजनीति का वर्णन है। भा० हरिश्चन्द्र जैसे सामाजिक और राजनैतिक सुधार चाहनेवाले की राजनीति की जटिल समस्याएं, हल करने के लिये सर्व साधारण के सन्मुख उपस्थित करनी [illegible] [illegible] को विवेचन करना लिखे, भारत जननी और नीलदेवी में राजनीति का अपूर्व चमत्कार है। [illegible] के इन नाटकों के विषय में [illegible] [illegible] के राजनैतिक [illegible] का [illegible] करना है।

* [illegible]

मुरादाबाद निवासी पण्डित बल्देवप्रसाद मिश्र ने भी दो इसी भाव के बनाये हैं। प्रथम अभिमन्यु नाटक और द्वितीय वेणीसंहार महाभारत के आधार पर इनकी रचना हुई है। परन्तु हैं ये स्वत[illegible] अर्थात् किसी ग्रन्थ के कदाचित् अनुवाद नहीं है।

'अभिमन्यु वध' में जिस रीति से सप्तमहारथियों ने अभिमन्यु [illegible] मिलकर मारा है अथवा भीम और सात्यकि को अटकाया है, [illegible] जो २ बातें वीरवर अभिमन्यु और कर्ण प्रभृति सप्तमहारथियों में [illegible] हैं,—वे सब वास्तव में राजनीति की भिन्न २ सीढ़ियां है। सौभद्र [illegible] धिक्कारनेपर वीराग्रणी कर्ण ने जो वचन कहे थे, उनका भाव [illegible] नीचे के शब्दों में दिये देते हैं।*

'जिस प्रकार होसके' अपने शत्रुओं को मारना चाहिये। शत्रु[illegible] मारने में नीति और अनीति का विचार करना कायर हृदयवालों क[illegible] काम है'।

× × × × ×

वेणीसंहार नाटक में भी ऐसा ही दिखाया गया है। और युधि[illegible]ष्ठिर की ओर से एक स्थान पर निम्नाङ्कित वाक्य कहलाया गया है:—

'जान पड़ता है कि शत्रु को मारने के लिये आज मुझे ही स्व[illegible] धनुष बाण धारण करना होगा'।

वास्तव में राजनीति का प्रधान उद्देश्य यह है कि राजा को अपनी ही भलाई करनी चाहिये। धर्मपुत्र युधिष्ठिर का यह अभिप्राय नहीं था, परन्तु लेखकने इससे यह स्पष्ट दिखलाया है; कि सब के प्रयत्न करने के बाद आज मुझे अस्त्र धारण करना 'पड़े गा' इस वाक्य से मह[illegible] राज युधिष्ठिर की महत्ता और राजस्विता दिखलाने का प्रयत्न किया गया है।

'महाभारत' नाटक कितने ही लोगों ने बनाया है। जो 'महाभारत' नाटक आज कल थियेटरों में बहुधा खेला जाता है, वह भी अच्छा है। परन्तु पंडित माधव शुक्ल का बनाया हुआ 'महाभारत' नाटक बड़ा ही उत्तम है। अभी तक इसका एक ही खण्ड अर्थात् पूर्वार्ध ही प्रकाशित हुआ है। उत्तरार्ध भी शीघ्र ही निकल जायगा। महाभारत में पौराणिक व्याख्यान और इतिहास की सम्पूर्ण सामग्री है। अतएव महाभारत नाटक भी राजनैतिक साहित्य कला के अद्वितीय पुष्प हैं।

भारतेन्दु बाबू के भाई श्रीयुत राधाकृष्ण दास ने भी एक उत्कृष्ट राजनैतिक नाटक बनाया है। इस नाटक का नाम है—राजस्थान केशरी। नाटक की घटनाओं का सम्बन्ध इतिहास से है। अतएव राजनीति का अच्छा चित्र इस ग्रन्थ में खींचा गया है।

इस नाटक की सभी घटनाएं प्रायः राजस्थान से सम्बन्ध रखनेवाली हैं, और मुग़ल सम्राट् अकबर और महाराणा प्रतापसिंह के जीवन से सम्बद्ध हैं।

अकबर के द्वारा हरतरह पीड़ित किये जाने पर भी स्वतंत्रताभिमानी महाराणा प्रतापसिंह ने अपनी स्वाधीनता को तिलांजलि दी [illegible] घाट जैसे युद्धों में वर्षों लड़ने परभी जब अकबर ने कोई दाल गलती न देखी तो उसने किस प्रकार युद्ध से मुहं मोड़ना चाहा। परन्तु [illegible] सब हुआ प्रतापसिंह की ओर से। अकबर के अभिमान पूर्वक [illegible] जाने पर उसके दरबारी पृथ्वीराज ने इस बात की ओर [illegible] और अकबर से यह कहा कि राणा युद्ध करना चाहते हैं। [illegible] करना और मुगलों के पराधीन होना वे हेय समझते हैं, [illegible] उत्तर में उसने कहा:

'बहादुर प्रताप जो कुछ करे, सब बजा है। मैं बहुत खुशनसीब हूं [illegible] मुझे प्रताप सा दुश्मन लड़ने को मिला है'।

अकबर की 'राजनीति' की यह एक झलक है। और इस [illegible] समयानुसार शत्रु की प्रशंसा (सत्य या असत्य) करना [illegible] एक प्रकार का धोखा देना है। अकबर की नीति का अच्छा चित्र खींचा गया है [illegible] वास्तव में अकबर ही ने अपनी नीति से मुग़ल राज्य के [illegible] बीज बोया। उसकी राजनीति [illegible] [illegible] नाटक में क्षत्रियों और मुगलों की नीति का [illegible] वर्णन [illegible] जाता है।

[illegible]

* [illegible]

चन्द्रगुप्त नाटक हिन्दी का एक स्वतंत्र ग्रन्थ है। इसकी कथा प्रायः वही है, जो मुद्राराक्षस की है। चाणक्य ने जो अपनी राजनीति का वर्णन किया, उसीके बल पर उसने शत्रु पर विजय भी प्राप्त की थी। उसकी राजनीति का अनुवाद हिन्दी भाषा के गद्य और पद्य दोनों में होगया है। जिस राजनीति के बल पर वह अपने शत्रु राक्षस को पछाड़ सका था, उसी का वर्णन इसमें किया गया है। मुद्राराक्षस की अपेक्षा यह छोटा नाटक है, परन्तु राजनीति के छिद्रों का इसमें अच्छा वर्णन किया गया है। वास्तव में चाणक्य एक अद्वितीय राजनैतिक पुरुष था। अतएव उसकी राजनीति भी ऐसी ही होनी चाहिये। पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए० इसे बड़ी उत्तमता से लिखा है।

दो और नाटकों का वर्णन करके हम इस भाग को समाप्त करेंगे। जिन नाटकों का हम उल्लेख करना चाहते हैं, वे चुंगी की उम्मेदवारी ार कृपी प्रथा' हैं। आज कल राजनैतिक साहित्य के जितने स्वतंत्र ाटक हैं, उनमें इन दो को सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त है। एक तो ये दोनों न्य हिन्दी के स्वतंत्र नाटक हैं। दूसरे दोनों में राजनीति का वर्णन । नाटक या उपन्यास यदि समयानुकूल हों तो वे साहित्य के वास्तव रत्न हैं। प्रथम के रचयिता पंडित बदरीनाथ भट्ट बी. ए. और द्वितीय : रचयिता श्रीयुत 'लक्ष्मण' जी धन्यवाद के पात्र हैं। सामयिक ष्य का चित्र खींचना ही नाटक है। फिर यदि वह स्वयं नाटक रूप । हो तो सोने में सुगन्धि है। दोनों ग्रन्थ देखने योग्य हैं। हिन्दी में आज तक कोई भी स्वतंत्र नाटक नहीं है, जो इन दोनों से टक्कर ले सके। ाठकों को इन ग्रन्थों के पढ़ने के लिये हम अनुरोध करते हैं।*

उपन्यास—खण्ड।

जितने ग्रन्थ हिन्दी में अन्य प्रान्तिक अथवा विदेशी भाषाओं से अनुवादित हुए हैं; उनमें उपन्यासों का नम्बर बहुत अधिक है। आरम्भिक काल होने से गद्य में अन्य भाषा के ग्रन्थों का अनुवाद होना स्वाभाविक है, परन्तु हिन्दी प्रेमियों को अब झूठा भोजन छोड़ देना चाहिये। दूसरे के आश्रय पर रहनेवाले का न कभी भला हुआ है और न कभी होगा। इसमें सन्देह नहीं कि दूसरी भाषाओं के साहित्य को उच्च स्थान प्राप्त है, परन्तु फिर भी सदा दूसरों का झूठा भोजन करना भी तो निंद्य है। हिन्दी में इस समय भी गद्य काव्य में अच्छा राजनैतिक, सामाजिक अथवा स्वाभाविक उपन्यास लिखनेवाले वर्तमान हैं, परन्तु अधिकांश लोग ऐसे हैं जो दूसरों के पराक्रम पर साहित्य सेवी बनना चाहते हैं। यह बुरा है और इस प्रकार के अभ्यास को अब अधिक उत्साह देने की आवश्यकता कदाचित् आगे न रह जायगी।

हिन्दी में उपन्यासों का जो बाहुल्य देखने में आता है वह प्रायः बंगला और गुजराती के आधार पर है। अंगरेजी भाषा के उपन्यासों ने भी हिन्दी के अनुवाद भण्डार को बहुत भरा है, परन्तु इतना अधिक नहीं। आज कल तो प्रायः 'बंगला से अनुवादित' ग्रन्थ ही देखने में आते हैं।

उपन्यास ही पढ़ने का शौक पैदा करानेवालों में नहीं वरन् हिन्दी भाषा को भिन्न २ भाषा में रूपान्तरित करने का श्रेय स्व० बाबू देवकी नन्दन खत्री ही को प्राप्त है। बाबू देवकीनन्दन ने कपोल कल्पित घटनाओं को सच्चा रूप देकर अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया है, वास्तव में यदि यह कहा जाय कि हिन्दी में बाबू साहब से बढ़ कर और कोई उपन्यास लेखक हुआही नहीं है, तो कदाचित् अयुक्तिक न होगा। आपने दो उपन्यास 'वीरेन्द्र वीर' और 'चन्द्रकान्ता' बहुत ही अच्छे बनाये हैं। इस लेख में उनके वर्णन करने का आशय यह है कि वे (उक्त दोनों) उपन्यास राजनीति के उच्च ज्ञान से भरे हुए हैं। चन्द्रकान्ता में तबियत इतनी उलझ जाती है कि सुलझाने की नौबत ही नहीं आती। आज कल बाबू साहब के उपन्यासों को लोग उतने आदर की दृष्टि से नहीं देखते, परन्तु यदि वास्तव में पूछा जाय तो राजनैतिक और सामाजिक चित्र जितना इनके ग्रन्थों में है, इतना अन्य ग्रन्थों में नहीं है। सारांश में बाबू देवकीनन्दन के उक्त उपन्यास राजनैतिक चमत्कार से चमक रहे हैं।

श्रीयुत किशोरीलाल गोस्वामी और बाबू रामलाल वर्मा ने भी जासूसी के उपन्यास लिख कर राजनीति के अंग को पुष्ट किया है। ऐसे ही बाबू हरिकृष्ण जौहर ने भी जासूसी के उपन्यास लिखे हैं। परन्तु ये उपन्यास एक प्रकार से बाबू देवकी नन्दन की 'छाया पर लिखे हुए' कहे जासकते हैं। इन उपन्यासों में राजनीति का चमत्कार देखने में आता है। बाबू जयरामदासगुप्त भी उपन्यास लेखक और उपन्यासों के प्रकाशक थे। आपने भी दो चार राजनीति से सम्बन्ध रखनेवाले उपन्यास लिखे हैं।

उपन्यास, यदि इतिहास के आधार पर लिखे गये हों तो आद्योपान्त राजनीति के मसाले से परिपूर्ण होसकते हैं। ऐसे उपन्यास हिन्दी में कम देखने में आते हैं। बंगला और गुजराती तथा फ्रेन्च और अंग्रेजी में ऐसे उपन्यास बहुत हैं, और आदर की दृष्टि से भी देखे जाते हैं। हिन्दी में 'राजसिंह' और 'रणधीर' जैसे दोही चार उपन्यास होंगे, जो ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर लिखे गये हैं। भारतवर्ष में ऐसे उपन्यास लिखने की बहुत सामग्री है, और यदि लेखक इस ओर श्रद्धा और उत्साह पूर्वक ध्यान देवें तो उपन्यासों का समय ही फिर जाय और जो लोग झूठा भोजन बहुत पसन्द करते हैं उनकी इच्छा भी अपने बल पर काम करने की होने लगे। हिन्दी में इस समय ऐसे ही उपन्यासों की आवश्यकता है।

हिन्दी गद्य को जासूसी विभाग से सम्बन्ध रखनेवाले राजनैतिक साहित्य से परिष्कृत करने का अधिक श्रेय 'जासूस' सम्पादक बाबू गोपालराम गहमरी को है। आपही के लेखों से 'जासूस' का कलेवर पूर्ण रहता है। और विशेषता यह है कि एक घटना दूसरी बार नहीं आती। इस अंश में राजनैतिक साहित्य की पूर्ति सब से अधिक आपने की है। इसी सम्बन्ध की कईएक पुस्तकें भी आपने बनायी हैं। हिन्दी के रसिकों को यदि जासूसी विभाग से सम्बन्ध रखनेवाली राजनीति का मज़ा चखना है, तो वे गहमर निवासी (जि० गाजीपुर यू० पी०) बाबू साहब के सब ग्रन्थ पढ़ें और स्वयं भी राजनीति के किसी न किसी अंगकी पूर्ति करने पर उद्यत हों।

'शिवशम्भुके चिट्ठे' और 'चौबे का चिट्ठा' ये दोनों पुस्तकें भी राजनैतिक साहित्य की मणि हैं। प्रथम के लेखक स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्द गुप्त हैं। यह उन चिट्ठों का संग्रह है, जिन्हें गुप्तजी ने लार्ड कर्ज़न के नाम से लिखे थे। चिट्ठों में स्वदेश हितैषिता की मात्रा खूब है और देशहित के साथ २ राजनीति का भी दिग्दर्शन है। पुस्तक अपने ढंग की, अनूठी है और राजनैतिक साहित्यमाला का एक सुरभित कुसुम है।

ऐसे ही चौबे का चिट्ठा है। मूल पुस्तक बंगला में है और प्रसिद्ध विद्वान् की लेखनी का एक रत्न है। इसका अनुवाद हिन्दी में भी होगया है। यह पुस्तक राजनीति के कुछ अंश की पूर्ति करती है, और ऐसे ढंग पर लिखी गई है कि राजनीति का स्पष्ट उपदेश मिलता है।

और भी कितने ही अनुवादित राजनैतिक उपन्यास हैं। परन्तु स्वतन्त्र उपन्यासों की श्रेणि में जासूसी विभाग के उपन्यासों का ही नम्बर सब से ऊंचा है। यह ठीक है परन्तु इसके साथ २ ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर उपन्यासों की रचना अत्यन्त आवश्यक है प्रायः ऐतिहासिक उपन्यासों में राजनीति का पूरा और खुलासा वर्णन किया जासकता है।

'टाम काका की कुटिया' हिन्दी में एक विचित्र पुस्तक है। मूल अंग्रेजी में है। इस पुस्तक उस में समय का पूरा इतिहास है, जिस समय अमेरिका में अत्याचारों की दुन्दुभी बज रही थी। मानव स्वत्व का संहार किया जा रहा था। उन अत्याचारों के बन्धन से अमेरिका निवासियों को किस तरह छुटकारा मिला और स्वत्वों की रक्षा अन्त में कैसे हुई—प्रभृति सब बातों का वर्णन है। गुलामी के वास्तविक बन्धन से छूट कर स्वतन्त्रता के प्रकाश में स्वच्छन्दता पूर्वक घूमना राजनीति का सर्वथा अनुकरण करने से हो सकता है। इस पुस्तक से पतित जाति और राष्ट्र को बहुत सन्तोष मिलता है और राजनीति के दुखड़ों से बचने के लिये शिक्षा भी मिलती है।

स्वर्गद्वार* भी ऐसाही ग्रन्थ है और इसकी घटनाओं का बहुत कुछ 'टामकाका की कुटिया' से सम्बन्ध है। अन्तर केवल इतना है कि 'कुटिया' उपन्यास होकर राजनैतिक क्षेत्र में अवतरित हुई है और, स्वर्गद्वार इतिहास के रूप में।

* 'दुर्गी प्रथा' वा 'बोम्बे हाउसकी की गुड्डी' बहादिन् सरकार की ओर से ज़ब्त कर लिया गया है। इसकी सूचना भी बहादिन् सरकार ही ने प्रकाशित करवाई है। लेखक।

* इसे इतिहास कहना चाहिये। परन्तु बहुत से लोग इसको उपन्यास ही मानते हैं इसी से इसे उपन्यास के साथ वर्णन किया है। लेखक।

इतिहास

इतिहास, राजनीति का सब से उपयोगी और विशिष्ट अंग है। राजनीति के सम्पूर्ण अंगों की व्याख्या और पूर्ति इतिहास से होती है। अतएव नाटक और उपन्यासों की अपेक्षा इतिहास को राजनीति में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इतिहास का प्रधान उद्देश्य राजनैतिक शिक्षा है। जिस तरह किसी व्यक्तिगत चरित्र से किसी विशेष व्यक्ति वा समाज को लाभ होता है। उसी प्रकार राजनीति विशारदों को इतिहास से लाभ होता है। अर्थात् जिस तरह हिन्दी की कहावत, 'अगला गिरा पिछला होशियार' के अनुसार भूतपूर्व मनुष्यों का अनुभव भावी सन्तान के लिये पथ प्रदर्शक होता है। इसी प्रकार इस पृथ्वी पर आज तक जो अनेक राजा होगये हैं, उनकी नीतिप्रणाली और अनुभव वर्तमान राष्ट्रों के काम आता है। राज्य के लिये उपयोगी बातें कौनसी २ हैं; हानिकारक कौनसी हैं, उन पर विपत्ति आजाय तो उनका निवारण किस प्रकार किया जाय; कलह विरोध किस कारण से उत्पन्न होते हैं, प्रजा को प्रसन्न अथवा सुख सम्पन्न रखने के कौन से मार्ग हैं; कायदे-कानून किस प्रकार के रहने चाहिये—आदि बातों के सदुपयोग और दुरुपयोग से क्या २ परिणाम हुए हैं, इनका पूरा ज्ञान वर्तमान लोगों को विगत इतिहासों से प्राप्त हुआ है, और भावी राष्ट्रों को विगत और वर्तमान इतिहासों से प्राप्त होगा। देश के शासन की प्रणाली उपयुक्त है या नहीं और यह क्यों उपयुक्त अथवा अनुपयुक्त है-इत्यादि बातों की शिक्षा विगत राष्ट्रों के इतिहास से मिलती है; और वर्तमान समय की अनुपयुक्तता को भी इतिहास ही के आधार पर उपयुक्त बना सकते हैं। ये सब ग्रन्थियाँ राजनीति की हैं। जो केवल इतिहास से ही सुलझ सकती है। जिस प्रकार बड़ के पेड़ से अनेक जड़ें फूट कर पेड़ बन जाती हैं, उसी प्रकार इतिहास से राजनीति के प्रत्येक अंग की पुष्टि होकर एक पूरा शरीर बन जाता है। राजनीति का ज्ञान प्राप्त करने के लिये इतिहास से बढ़ कर और कोई सामग्री ही नहीं है।

हर्ष की बात है कि हिन्दी भाषा का मस्तिष्क इतिहास की ओर से दिन पर दिन ऊंचा हो रहा है। हिन्दी में इतिहासों की कमी नहीं है और वर्तमान राष्ट्र संगठन के लिये यह आशा की झलक है कि हिन्दी के विद्वान् राष्ट्र भाषा द्वारा देश के पठित समाज को इतिहास की शिक्षा के आधार पर राजनीति का ज्ञान प्राप्त करा रहे हैं। केवल भारत की प्राचीन सभ्यता के इतिहास ही राजनैतिक ज्ञान प्राप्त नहीं करा रहे हैं, वरन् हिन्दी साहित्य में लगभग समस्त संसार के इतिहास वर्तमान हैं। जो नहीं हैं, उनके लिये हिन्दी हितैषी तन, मन और धन से लगे हुए हैं और आशा दिलाते हैं कि यह कमी भी शीघ्र ही पूरी होना चाहती है। राजनीति की पूरी शिक्षा देनेवाला इतिहास विभाग, हिन्दी में एक प्रकार से संतोषजनक है। यद्यपि इन में से अधिकांश इतिहास अन्य भाषाओं से अनुवादित हैं, तथापि इतिहास की सामग्री तो समस्त संसार की मुख्य २ घटनाओं में की एक है और अनुवाद होने पर भी 'इतिहास' स्वतंत्र ग्रन्थ कहे जासकते हैं।

इतिहास का सुगमता पूर्वक परिचय कराने के लिये हम यहाँ पर उसके दो भाग किये देते हैं। एक तो व्यक्तिगत इतिहास द्वितीय राष्ट्र या प्रांत और देश का इतिहास।

जीवन चरित्र।

व्यक्तिगत इतिहास को जीवन चरित्र कहते हैं। जीवन चरित्र में व्यक्ति विशेष के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली घटनाओं और वृत्तान्तों का उल्लेख रहता है उसके जीवन से जो शिक्षाएँ मिलती हैं, उनका भी उल्लेख रहता है। आज कल व्यक्तिगत जीवन चरित्र बहुत निकल रहे हैं और इनकी पूर्ति 'ओंकार प्रेस' प्रयाग, मनोरंजन ग्रन्थ माला काशी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, हिन्दी प्रेस प्रयाग, प्रताप प्रेस कानपुर, [illegible] प्रेस प्रयाग और राजपूत [illegible] प्रेस आगरे से खूब हो रही है। इन प्रेसों ने भारतीय अथवा विदेशीय आदर्श महापुरुषों की जीवनी निकाली है। और व्यक्तिगत जीवन की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

देश या राष्ट्र के इतिहास।

भिन्न २ देश और राष्ट्रों की संख्यानुसार जितने ही इतिहास जिस भाषा में होंगे, उतनी ही उसकी राष्ट्रीय (उस भाषा से सम्बन्ध रखनेवाले देश की) उन्नति होगी। यूरोप और अमेरिका में इतिहासों का इतना बाहुल्य है और उन्हें इतना महत्व दिया जाता है कि लगभग समस्त संसार के राष्ट्रों के भिन्न २ शताब्दिक इतिहास उनकी राष्ट्रीय भाषाओं में मौजूद होंगे। परन्तु भारत के लिये अभी वह दिन नहीं आया जब लोगों की अभिरुचि आप ही आप इतिहास लिखने और उनका अध्ययन करने की ओर होजाय। तथापि वर्तमान समय में कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य इतिहास लिखना ही जान पड़ता है। और वास्तव में यह बहुत अच्छी बात है। अतएव प्रसिद्ध इतिहास लेखक पंडित श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और शुकदेव विहारी मिश्र बी० ए० हिन्दी साहित्य की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं।

हिन्दी में सब से पहिले जो इतिहास लिखा गया था, वह 'इतिहास तिमिर नाशक' है स्व० राजा शिवप्रसाद ने इसकी रचना पाठशालाओं और विद्यार्थियों के लिये की थी। इस पुस्तक के तीन खण्ड हैं और सभी खण्डों का आदर है। पुस्तक में इतिहास की अच्छी सामग्री भरी गई है।

भिन्न २ भाषाओं में लिखित जिन इतिहासों का हिन्दी अनुवाद मौजूद है, उनमें से सब से अच्छा और मान्य श्रीयुत सर रमेशचन्द्रदत्त लिखित 'भारत वर्ष की सभ्यता का इतिहास' है। इसके कई भाग हैं और लेखकने भारत वर्ष की सभ्यता का वास्तव में 'इतिहास' लिखा है। इस पुस्तक को पढ़ने से प्रत्येक सहृदय भारतीय अपनी वर्तमान दुर्दशा प्रदर्शन पर बिना दो चार आंसू बहाये नहीं रह सकता। इसमें राजनीति के ज्ञान की पराकाष्ठा दिखायी देती है। प्रत्येक पाठक को इसे पढ़ना और रसास्वादन करना चाहिये।

मिश्र बन्धुओं ने भिन्न २ देशों और राष्ट्रों के इतिहास लिख कर साहित्य के एक विशेष अंग की पूर्ति की है। इन्होंने फ्रान्स, जर्मनी, इंगलेण्ड प्रभृति देशों का ज्ञान हिन्दी भाषा भाषियों को कराया है। अधिक क्या लिखें, अपनी पुस्तकों में इतिहास की काफी सामग्री तक मिश्र बन्धुओं ने भरदी है।

और भी कितने ही इतिहास हैं—जैसे मेवाड़ का इतिहास, सिक्खों का इतिहास, राजपूतजीवन सन्ध्या, महाराष्ट्र जीवनप्रभात, भारत [illegible] युद्ध, यूरोपीय युद्ध, भारत वर्ष का अर्वाचीन इतिहास, भारत वर्ष का इतिहास इत्यादि। जिनके सभी लेखक हिन्दी साहित्य में राजनैतिक ग्रन्थ उत्पन्न करने के लिये धन्यवाद के पात्र हैं। इन में से कुछ ग्रन्थ अन्य प्रान्तिक भाषाओं के ही रूपान्तर हैं। परन्तु कुछ स्वतंत्र भी हैं। प्रथम चार पाँच में अभी ही सैकड़ों वर्ष पूर्वोल्लिखित राजपूत और सिक्ख जाति' की वीरता और नैतिक ज्ञान का चित्र खींचा गया है। भारतीय युद्ध में महाभारत आदि पौराणिक आख्यानों का समावेश है। [illegible] अपने नाम ही से अपने उद्देश को प्रगट करते हैं।

'फ्रान्स की राज्यक्रांति' के नाम से एक अच्छी पुस्तक निकली है। मूल पुस्तक 'मराठी' भाषा में है। इसके अनुवादक बाबू [illegible] गुप्त तथा प्रकाशक पंडित लक्ष्मीधर वाजपेयी भूतपूर्व सम्पादक चित्रमय—जगत, ने हिन्दी में इसको जन्म दे कर हिन्दी जाननेवालों का बड़ा उपकार किया है। फ्रान्स में जो राज्यक्रान्ति हुई थी—उसी का पूरा वर्णन इस पुस्तक में दिया हुआ है।

'भारत मित्र' के सुयोग्य सम्पादक पंडित अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने दो तीन राजनैतिक साहित्य के ग्रन्थ लिख कर वर्तमान राजनीति ज्ञानार्जन करने वालों का बड़ा ही उपकार किया है। [illegible] [illegible] से स्वतन्त्र होकर निकले हैं। लेखक के राजनीति ज्ञान [illegible] [illegible] होजाती है। प्रथम पुस्तक है— 'भारतीय शासन [illegible]' और दूसरी है— 'हिन्दुओं की राज कल्पना'।

भारत वर्ष के भूतपूर्व और वर्तमान शासकों और [illegible] [illegible] का आलोचनात्मक वर्णन है। दोनों भाग [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

. । मे भी लिखी है। उसका नाम है-'प्राचीन भारत में स्वराज्य' पुस्तक में उन्हीं विचारों का वर्णन है, जिन्हें मैंने उपर्युक्त पुस्तक के विषय में कहा है। यह पुस्तक भी अपने ढंग की निराली है। प्राचीन भारत में प्रजातंत्र शासन था—इसे लेखक ने बड़ी मार्मिकता और विवेचना से सिद्ध किया है।

दोनों पुस्तकें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में नियुक्त किये जाने योग्य हैं। केवल पढ़े लिखे हिन्दी हितैषियों को ही नहीं वरन् अधिकांश भारत को इस समय राजनीति सीखने की आवश्यकता है। परन्तु इसका सीखना कोई साधारण बात नहीं है। तथापि शिक्षित जनता को बहुत कुछ ज्ञान इन से प्राप्त होसकता है।

हिन्दी में 'स्वराज्यमाला' की बहुत सी अच्छी २ पुस्तकें प्रकाशित होरही हैं। इन्हें वास्तविक राजनीति के ग्रन्थ कह सकते हैं और जितनी पुस्तकें इस सम्बन्ध की निकली, हैं सभी राजनैतिक साहित्य की पूर्ति करनेवाली हैं। 'मर्यादा पुस्तक भण्डार' 'अभ्युदय प्रेस' और भारत सेवक समिति और 'प्रताप प्रेस' भिन्न २ स्वराज्य मालाएँ मुद्रित करने के लिये—और इस प्रकार राजनैतिक साहित्य की वृद्धि करने के लिये धन्यवाद के पात्र हैं। 'स्वराज्य माला' की इतनी चर्चा है कि आज कल कदाचित् प्रत्येक हिन्दी पढ़नेवाला इस माला के किसी न किसी 'गुलाब' की आवश्यक सुगन्धि लेकर अपने चित्त को ठेकाने करता होगा। अतएव ऐसे सर्वत्र व्यापी विषय में कुछ भी कहना, अन्याय है। इतनी अवश्य प्रार्थना है कि जिस भाग्यहीन के कानों में 'स्वराज्य' का शब्द कर्ण गोचर न हुआ हो अथवा जिस हृदय में स्वराज्य का मूल्य समझ न पड़ा हो-उसे 'माला' की प्रत्येक पुस्तक आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़नी चाहिये।

स्फुटराजनैतिक साहित्य।

'स्फुट' शब्द से हमारा मतलब यह नहीं है कि ये ग्रन्थ उपर्युक्त किसी न किसी श्रेणी में नहीं आसकते। नहीं; उनका समावेश किसी न किसी खण्ड में अवश्य किया जासकता है, परन्तु इन ग्रन्थों में लगभग सभी बातों का उल्लेख है। इसलिये उनका पूर्ण परिचय देने के लिये हमने उन्हें अलग कर दिया है। इनमें से 'स्वाधीनता' और 'प्लेटो का प्रजातंत्र' दो ग्रन्थ बहुत ही उत्तम हैं।

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक मिल अपने समय का असाधारण राजनीति विशारद था। उसने लिबर्टी नाम का एक अद्भुत ग्रन्थ बनाया है। उसी अमूल्य ग्रन्थ का यह हिन्दी रूपान्तर है। सरस्वती सम्पादक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी, ने इस ग्रन्थ को हिन्दी भाषा भाषियों के लिये भी सुलभ कर दिया है। वास्तव में काव्य और इतिहास मिश्रित राजनीति का यह अद्भुत ग्रन्थ है।

प्रसिद्ध यूनानी राजनीतिज्ञ प्लेटो के नाम से आज यूरोप का मस्तक बहुत ऊँचा होरहा है। प्लेटो अपने समय का अद्वितीय नीतिविशारद था, उसके 'प्रजातंत्र' सम्बन्धी विचारों का संग्रह दूसरे ग्रन्थ में है। पुस्तक राजनीति के अपूर्व ज्ञान और अनुभव से परिपूर्ण है। हिन्दी की पुस्तक अँग्रेजी में लिखित मूल पुस्तक का अनुवाद है। वर्तमान समय के प्रत्येक नीति ज्ञानाकांक्षी के लिये यह पुस्तक उपादेय होगी।

और भी ऐसे ही स्फुट ग्रन्थ हैं, जिनके विदेशी अथवा भिन्न २ प्रान्तिक भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद किये गये हैं। इन पुस्तकों का हिन्दी में बड़ा आदर है। कुछ पुस्तकों के नाम हम नीचे दिये देते हैं। पाठकों को जहाँ तक मिल सके इन्हें पढ़ना चाहिये। जैसे स्वाधीन भारत, स्वदेश देशभक्ति, कर्तव्यशिक्षा, नीतिरत्नमाला, मनुष्य के अधिकार और मनुष्य के कर्तव्य। पिछली दो पुस्तकों में पहिली स्वतंत्र पुस्तक है और श्रीयुत सत्यदेव परिव्राजक की स्वाधीन लेखनी का रत्न है। दूसरी पुस्तक एक अंग्रेजी पुस्तक के आधार पर लिखी गई है, तथा पुस्तक में राजनीति की मौलिकता झलकती है। इसके लेखक महाशय और सम्पादक पं० कृष्णकान्त मालवीय इस अमूल्य पुस्तक के लिये धन्यवाद के पात्र हैं।

'किरातार्जुनीय' नामक महाकाव्य का संस्कृत में बड़ा आदर है। राजनीति का जो मजा मूल में देखने में आता है, उसे अनुवादक ने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये भी सुलभ कर दिया है।

पञ्चतंत्र के विषय में हमने कुछ न कुछ ऊपर कह दिया है। गद्य में वास्तव में यह अच्छी पुस्तक है। मूललेखक की जितनी प्रशंसा की जाय, उतनीही थोड़ी है। पशु, पक्षियों के बहाने से राजनीति का ज्ञान बतलाया गया है। दो एक गद्य ग्रन्थों का भाव नीचे देखिये:—

'जब तक भय सामने नहीं उपस्थित हुआ तब तक उससे डरना चाहिए, परन्तु उपस्थित होने पर फिर निर्भय होकर उसका सामना करना चाहिये।'

'अभियुक्त होने पर यदि कोई भी अपना हितैषी न दिखाई पड़े तो बुद्धिमान आदमी को शत्रु से लड़ कर प्राण देना चाहिये।

जिस समय युद्ध करने से नाश होना निश्चय है और युद्ध करने से जीवित रहने में संशय है, उसी एक मात्र काल को बुद्धिमान् लोग 'युद्धकाल' कहते हैं।'

यह ग्रन्थ साधारण हिन्दी जाननेवालों के लिये भी सुलभ कर दिया गया है। इसके एक एक पद में राजनीति का मर्म दिखाई पड़ता है। ऐसा ही ग्रन्थ दण्डी रचित संस्कृत दशकुमारचरित्र का हिन्दी अनुवाद भी है।

एक नये राजनैतिक ग्रन्थ का परिचय देकर हम अपने लेखको इस गद्य भाग के साथ समाप्त करते हैं। सचमुच अपने समय की यह एक नयी पुस्तक है। पुस्तक का नाम 'राजनैतिक प्रपञ्च' है। अलीगढ़ के बैरिस्टर उदयवीर नारायणसिंह ने इसे हिन्दी गद्य में रचा है। पुस्तक को राजनीति का अपूर्व आदर्श कह सकते हैं। वर्त्तमान काल में हिन्दी गद्य की आरम्भिक दशा में भी हिन्दी माता का मस्तक ऊँचा करनेवाले ये राजनैतिक ग्रन्थ मौजूद हैं। यदि हिन्दी भाषियों ने अपनी उन्नति का क्रम इसी तरह प्रचलित रखा तो एक दिन शीघ्रही आ जावेगा कि भिन्न भिन्न भाषाओं का गद्य भी, हिन्दी पद्य की तरह उसके गद्य से भी नीचा खाजायगा।

लेख समाप्त करने से पहिले, अपने उन भाइयों और साहित्य सेवियों से क्षमा माँगना हम अपना कार्य समझते हैं, जिनकी पुस्तकों का परिचय लेख बढ़ जाने अथवा अनुभव शैथिल्य से या उनकी पुस्तकोंके अप्रकाशित रहने, से लेख में हम नहीं दे सके।

राजनैतिक साहित्य के थोड़े से उन ग्रन्थों की एक छोटी सी सूची नीचे दी जाती है, जिनका उल्लेख लेख में नहीं है।

क्रम संख्या	नाम पुस्तक अथवा विषय	नाम रचयिता
१	इतिहास भाषा	लालदास आगरा निवासी।
२	गुण रूपक	केशवदास चारण गाडण।
३	गोराबादल की बात (अथवा चित्तौड़ की बात)	नाहर खान जटमल।
४	जूतीदान (मरु भाषा)	परशीराम, गङ्गाराम सेवक मारवाड़
५	देवीदास के कवित्त	देवीदास।
६	पद्मसिंह की कुण्डलियाँ	गोरधनचारण, बीकानेर।
७	वचन का (?)	जग्गाचारण, खिड़िया मारवाड़।
८	वृन्द सतसई	वृन्द सेवक, मेड़ता, मारवाड़।
९	भरथरी शतक नीति	प्रतापसिंह, महाराजा। जयपुर, ब्रजनिधि।
१०	महाराजा राजसिंह का गुणरूपक	हेमचरण; सामोर मारवाड़।
११	राजकुमार प्रबोध	आशी शम्भुदत्त, जोधपुर।
१२	रामदास वेगवत	प्रताप कुँवरबाई (जोधपुर के महाराजा मानसिंह की रानी।)
१३	सरदार सुयश	नागरीदासजी की बहिन।
१४	वीरसिंह देवचरित्र	केशव?
१५	छत्र प्रकाश	लाल।
१६	राजतरंगिणी	मौलाना शाह मुहम्मद।
१७	सतसई	रहीमखां खानखाना।
१८	पद्मावत	मलिक मुहम्मद।
१९	नीति	छत्रमाल।
२०	हितोपदेश का अनुवाद	बंशीधर।
२१	सामयिक नीति	ठाकुर।
२२	नीति	वृन्द।
२३	विक्रम सतसई	राजा विक्रमाजीत।
२४	राजनीति	लक्ष्मण सिंह (राजा) बिजावर।
२५	,,	भोज कवि।
२६	[illegible]माला	पंडित गोपाल कवि मिश्र।
२७	सरोज शतक	बा० श्यामलाल मारवाड़।
२८	[illegible]	काशीशिरोमणि चन्द्रशेखर पन।
२९	नीति	नवल सिंह।
३०	,,	हरिकेश।
३१	सभा प्रकाश	बुद्ध सिंह
३२	वीररस और नीति विषय	मार्कण्डेय।
३३	कपूर आनन्द	(उपन्यास) कृष्णानन्द पांडेय।

द्वादशी के दिन जीवाजीपंत खासगीवाले के कारखाने के लोगों की भी यहीं ज्योनार हुई; त्रयोदशी को सारा पूना शहर यहां जिमवाया गया। ऐसे २ भोजन समारम्भ (माधवराव के विवाह निमित्त) हीराबाग में ही हुए।

श्रीमंत दूसरे बाजीराव साहब पेशवा

(७) इसके बाद बाग का उल्लेख सवाई माधवराव पर्वती से लौटते [illegible] हीराबाग के पास हाथी से उतर कर महादजी सेंधिया के साथ [illegible] को सैर करने के लिये पर्वती के तलाव पर गये, उस प्रसंग को [उ]ल्लेख करके पेशवा के समय की बखर (प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ [illegible]) में आया है।

इसके बाद श्रीमन्त बाजीराव रघुनाथ के समय में हीराबाग का [ना]म आया है। उसका जो वर्णन गजेटियरकार देते हैं, वह इस प्रकार — दूसरे बाजीराव पेशवा के समय लॉर्ड व्हॅलेनशिया नामक अंग्रेज [सर]दार १८०३ में पूना आये थे, जो संगम पर के द्वीप में रेसिडेन्ट [कर]नल क्लोज़ के मेहमान थे। लॉर्ड व्हालेनशिया और बाजीराव की [मु]लाकात बड़े ठाठ से शनिवार महल और द्वीप में हुई। पोशाक जवाहिरा[त आ]दि परस्पर दिया लिया गया। बाजीराव जब द्वीप में गये उस समय [उन्हों]ने लॉर्ड साहब को मिहमानी के लिये आमंत्रण दिया और जिसको [उन्हों]ने भी बड़े मान सहित स्वीकार किया। भोजन का समारम्भ हीराबा[ग] में ही करने का ठहराया गया। वहां लॉर्ड व्हालेनशिया, कर्नल [क्लो]ज़ और दूसरे कितने ही साहब लोगों के साथ आये। उनके अनु[सा]र बाग बड़ा शोभायमान और बंगला भी ठीक समझा गया। उसके [illegible] तालाब की ओर एक बड़े दालान में बैठकें बिछवाई गई थीं। वहां [illegible] लोगों ने जूते खोल कर अन्दर प्रवेश किया और पांव की [illegible] के मारे [illegible] बड़ी सावधानी से वे उन बैठकों पर जा बैठे। वहां से तालाब में एक छोटा द्वीप और उसमें एक सुन्दर मंदिर दिखाई [दे]ता था। तालाब के उस पार पर्वती की टेकरी और उस पर हु[ए] मंदिरों का अपूर्व दृश्य था। [illegible] में फव्वारे उड़ रहे थे। वहां [illegible] की [illegible] बहुत सुन्दर बनाई गई थी और ऊपर कपूर की [illegible] [illegible]। पेशवा की मुलाकात के बाद लाट साहब ने [illegible] का [illegible] और अंग्रेज की संयुक्त सेना के [illegible] [illegible]। बाजीराव भी इस पर बहुत खुश हुए, और [illegible] "हमारे

पिताकी कंपनी सरकार से दोस्ती रखने की सदा इच्छा रही है; और इसके फल का उपभोग करना मेरे हिस्से आया है। अस्तु, हमारे लिये एक अरबी घोड़ी कहीं से दिलवादें तो ठीक हो" इस पर कर्नल क्लोज़ ने उत्तर दिया कि; इसके लिये अवश्य प्रयत्न किया जायगा। इस प्रकार संवाद चल रहा था कि इसी बीच भोजन के लिये ऊपर चलने की सूचना आई। ऊपर की दो कोठरियों के बीच के दालान में केल के पत्ते बिछवाये गये थे। प्रत्येक पत्ते पर ब्राह्मणी विधि का भोजन परोसा गया था। एक तरफ चांवल, और केशरिया भात दूसरी ओर खाजा, लड्डू, रोटी, पूरनपोली इत्यादि मीठे पदार्थ, तीसरी ओर सात प्रकार की मसालेदार शाक भाजी परोसी गई थी। घी, दूध, मठा, आदि दूसरे अनेक पतले पदार्थ केल के पत्ते के दोनों में परोसे गये थे। ये दोने बहुत ही सुन्दर बनवाये गये थे। इस तरह का ब्राह्मणी भोजन पेशवा ने अपने अंग्रेजी मेहमानों को खिलाया। आज कल की तरह साहब लोगों के बवर्ची बुलवा कर उनसे उनके योग्य और उनकी देशपद्धति अनुसार चीजें तैयार करवा कर खिलाने की चाल उस ज़माने में नहीं थी, ऐसा मालूम होता है। किसे मालूम इस तरह का ब्राह्मणी भोजन उन अंग्रेज़ी मेहमानों को कहां तक पसन्द आया होगा! सम्भवतः पसन्द नहीं ही आया होगा। मेहमानों ने अपने रिवाज के अनुसार चमचे, कांटे, चाकू, छुरी आदि सब चीजें साथ में नौकरों द्वारा मंगवा ली थीं। कदाचित् कर्नल क्लोज़ के कहने पर से ही ये चीजें लाई गई थीं। श्री० पेशवा का दिल खुश रहे और उनका मान भी रहे, इसलिये उन मेहमानों ने अपने चमचे, चाकू आदि बड़ी ही फुर्ती से चलाना आरम्भ कर दिया। पेशवा भी पास की एक गद्दी पर बैठे अपने मेहमानों को आग्रह कर रहे थे। इस प्रकार भोजन होने के बाद मेहमान पीछे बैठकों पर जा बैठे। इसके बाद पान दिये गये। सो लाट साहब के नौकर को जो नीचे बैठा था सब से पहिले फिर उसके ऊपर के साहब को इस प्रकार अन्त में लाट साहब को दिया गया। इसी प्रकार पोशाकें भी नीचे से ऊपर लाट साहब तक दी गई। दुशाले जोड़ी, किनखाब, और मलमल आदि सब की एक तरह का लगभग रु० २०० मूल्य का पोशाक हरएक को दिया गया। बाद में एक जवाहिरों से भरी थाल लाई गई। लॉर्ड व्हॅलेनशिया को सिरपेंच तुर्रा आदि आभूषण दिवान सदाशिव माणकेश्वर ने अपने हाथ से पहिनाये; ये अंग्रेज टोपी पर कैसे शोभित हुए होंगे, ईश्वर ही जाने। इसके बाद एक घोड़ा और एक हाथी भी

श्रीमंत सवाई माधवराव पेशवा

[illegible] लाट साहब को दिया गया। [illegible] [illegible] साहब ने लाट साहब और कर्नल क्लोज़ को [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

साहब के आगे किया और एक मीनाकारी, सोने आदि से सुसज्जित तलवार उन्हें अर्पण की। लाट साहब ने उसे बडी खुशी से लेकर कहा कि "यह तलवार मैं अपने पुत्र और नातियों तक के लिये रखूंगा, ऐसा आप विश्वास रखिये"। इस तरह भाषण कर अन्य वस्तुओं की तरह उसे अपने नौकर के पास न देकर अपने ही पास रखी। इसके बाद वेश्या का नाच गाना हुआ। अन्त में पेशवा सरकार से विदा मांग कर साहब लोगोंने जाने का निवेदन किया। तब पेशवा ने 'हमेशा आप का समाचार देते रहिये ऐसा कहा यह बात दरबार की प्रस्तुत रीति को छोड कर होगई। इसके आगे बाजीरावी खतम होने तक इस बगीचे के हालत मालूम नहीं पडते। बाजीरावी खतम होने के बाद यह बाग कंपनी सरकार के ताबे में आया। किन्तु स० १८३१ तक इसका वृत्तान्त मालूम नहीं होता। इस मध्य काल में कोई मनुष्य यह बाग जमानत पर लिया करता होगा, ऐसा अन्दाज है। आगे चल कर सन १८३१ में सरकार को ५ हजार रुपया नज़राना देकर बगीचे का मौरूसी हक़ अजम सोराबजी रतनजी नामक पारसी महाशय ने प्राप्त किया। उसकी शर्ते यह थीं।

(अ) हरसाल अंकुशी रु० १५० याने सूरती रुपये १४३॥=) २-पाई सरकार तौजी देकर बगीचे का लगान करना।

(आ) बगीचे का बंगला और तबेला यदि सरकार को जरुरत हो तो योग्य किराया देकर लेने का हक सरकार को है।

(इ) उपरोक्त इमारतें सेठ सोराबजी और उनके वारस तथा लगानदारों को दुरुस्त रखना चाहिये। और ये दुरुस्त हैं या नहीं इसकी जांच इमारती डिपार्टमेंट से सरकार हमेशा कराती रहेगी।

(ई) उपरोक्त बगीचे के लिये सोराबजी रतनजी का वारस या लगानदार हक चाहेगा उस समय ५०० नज़र और नियुक्त तौजी देने के लिये उसको तैयार रहना चाहिये और तब ही उसे सोराबजी का मौरूसी हक मिलेगा।

इस ठहराव के अनुसार सोराबजी सेठ के पश्चात् उनके भतीजे मि० होरावजी पेस्तनजी पटेल जो बंबई में रहते थे उन्होंने ५०० रु० देकर बगीचे की लगान वसूली का हक प्राप्त कर लिया। इस सम्बन्ध में उस समय के कलेक्टर मि० डंकन डेविडसन का एक पत्र भी है।

(१०) इसके आगे स० १८६४ में सेठ होरावजी पेस्तनजी पटेल ने यह बाग ८८००० रुपये में "ईस्ट इंडिया फिनेन्शल एसोशियेशन" नामक दिवालनी कंपनी के यहां गिरवी रख दिया। ब्याज की दर सैकड़ा १० रु० थी। अन्त को सन् १८७० में सेठ होराबजी का दिवाला निकला और यह बाग उपरोक्त कंपनी को मिल गया। उस कंपनी ने अपना पहिला नाम बदल कर "ईस्ट इंडिया क्रेडिट ऍण्ड फिनेन्स कंपनी" नाम रख लिया था, किन्तु उसका भी दिवाला निकल कर यह बाग लिक्वीडेशन में निकाल दियागया और होराबजी सेठ तथा ईस्ट इंडिया फॅनेन्शल एसोसियेशन के बीच जो इकरार हुआ था, उसके अनुसार मि० फ्रैन्सिस मॉरफेट लिक्वीडेटर ने नीलाम में बेच दिया। जिसे पूना के रा० रा० गंगाराम भाऊ म्हस्के और महादेव मोरेश्वर कुंटे इन दो व्यक्तियों ने १,५०५० रु० में हीराबाग टॉउन हॉल कमेटी के लिये स० १८७५ के मास में खरीद लिया और ता० २१ अप्रेल सन् १८७७ को उस विक्रीपत्र की रजिस्ट्री भी होगई।

(११) हीराबाग टॉउनहॉल कमेटी-इस नाम का ऊपर उल्लेख होचुका है। और इसका थोड़ा स्पष्टतया कर देना जरूरी जान पड़ता है। लगभग सन १८७० में रा० रावबहादुर महादेव गोविंद रानडे के प्रयत्न से पूना में नाना प्रकार की संस्थाएं और आंदोलन शुरू हुए. पर पूना में बड़े के टाउनहॉल सरीखी कोई इमारत न होने से असुविधा [illegible] होने लगी। उस समय रा० ब० रानडे की सलाह पूना में 'हीराबाग टाउनहॉल कमेटी' की स्थापना हुई। और [illegible] करके [illegible] में १,५०५० रु० में हीराबाग और उसमें की इमारत [illegible] 'ईस्ट इंडिया [illegible] क्रेडिट ऍण्ड फिनेन्स कंपनी' के लिक्वीडेटर मि० [illegible] से ता० ८ मार्च १८७७ को [illegible] (लिमिटेड) का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

महाशय के पूना से बंबई जाने के बाद भी कुछ वर्ष तक हुआ थी। मुझे ई० स० १८८५ में एक व्याख्यान देना पड़ा, और वह मैंने वहीं दिया था ऐसा मुझे स्मरण है। लगभग १८८७,८८ से वसन्त में होनेवाले व्याख्यान यहां न होकर अन्यत्र यानी क्रीड़ा भुवन या सार्वजनिक हॉल में होने लगे।

(१२) डेकन क्लब—उपरोक्त व्याख्यान हीराबाग के बंगले के सामने खुली जगह में होते थे। मध्य काल में याने लगभग १८८१ में प्रो० रा० ब० रानडे और वर्तमान सर विश्वेश्वर अय्या इत्यादि मंडली के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि पूना में सभ्य गृहस्थों के लिये फिर वे किसी की जाति के या धर्म के हों, वर्तमान राजनीति और धार्मिक विषयों को छोड़ कर अन्य सब विषयों पर चर्चा, परस्पर सहवास *मनोरंजन, व्यायाम,* आदि की व्यवस्था होने के साथ ही जलपान के लिये खाद्य पेय पदार्थ भी मिलने का प्रबन्ध होना चाहिये, इसके लिये एक स्नेह वर्धक क्लब की स्थापना की जाय। इस काम के विचार के लिये प्रथम बैठक सन् १८८१ में हुई, इस बैठक में० प्रो० रा० ब० जस्टिस रानडे, खान बहादुर होराबजी, खान बहादुर काज़ी शहाबुद्दीन आदि लगभग ३० मनुष्य उपस्थित थे। क्लब के लिये हीराबाग का मैं बंगला और कुछ खुली जगह भाडे से लेकर उसके लिये हीराबाग टॉउन हॉल कमिटी से पत्रव्यवहार करके क्लब का नाम डेकन क्लब रखा गया। और नवंबर सन् १८८१ में रा० ब० गोपालराव हरि देशमुख के हाथ से क्लब की शुरुआत हुई, उस समय ४६ सभासद उपस्थित थे। हाल में इस क्लब में लगभग १३३ सभासद हैं। टेनिस, बिलियर्ड, ब्रिज, शतरंज आदि खेलने के साधनों के साथ ही हिन्दी और अंग्रेजी दैनिक साप्ताहिक और मासिक पत्र भी पढ़ने को मिलते हैं। *तालाब का पानी* म्युनिसीपालिटी ने निकलवा दिया; यदि इस समय तालाब में पानी रहता तो कितनी अच्छी बात थी। पिछली बार यहां किसी २ विषय पर व्याख्यान भी हुआ करते थे। परन्तु अब वैसी कोई बात सुनने में नहीं आती है।

चाय, कॉफी, दूध आदि पदार्थ मेंबर लोगों के लिये तय्यार मिलते हैं। इस क्लब की प्रवेश फीस १५ रु० है। और मासिक चंदा प्रत्येक के लिये २ रुपये है।

(१३) लॉर्ड रे साहब जब गवर्नर थे उस समय इस बाग के बंगले में हिन्दुस्थान की उत्तम २ वस्तुओं की प्रदर्शनी हुई थी, इसका बहुतों को स्मरण होगाही, उस प्रदर्शनी में के कुछ २ पदार्थ पूना म्युनिसिपालिटी के अजायब खाने में अब भी देखने को मिलते हैं।

(१४) *हीराबाग की वर्तमान परिस्थिती*—

इस बाग की वर्तमानदशा कुछ वर्णन नहीं की जासकती। पुराने पेड़ कुछ बाकी हैं, नये उत्पन्न होरहे हैं। उनकी व्यवस्था ठीक न होने से वे वे अन्दाज बढ़ रहे हैं। उसमें खजूर के पेड़ संख्या में अधिक हैं; अधिक क्या कहें यदि ऐसी ही परिस्थिति और कुछ दिन रही तो इस हीराबाग का खजूर बाग होजायगा, ऐसा ढंग दीख पड़ता है। 'हीरा बाग टाउन हॉल कमेटी' विद्यमान है। परन्तु फलदार वृक्ष और [illegible] के नीलाम को छोड़ और उसकी ओर से कुछ भी काम होता हो [illegible] दिखाई देता। पर्वती के तालाब का पानी निकल जाने से हीराबाग और उसके बंगले की शोभा तो चली ही गई, किन्तु उस तालाब का जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उपयोग होता था, वह भी न होने से [illegible] की बहुत ही दुर्दशा होरही है। बीच में म्युनिसिपालिटी ने [illegible] का पानी लेने का विचार हुआ था और उसके लिये बड़ा खर्च करके [illegible] नल भी लगवाये गये और पानी का संग्रह रखने के लिये हौज की तरह एक बावड़ी भी बनाई गई। परन्तु अब म्युनिसिपालिटी [illegible] देने के लिये तयार नहीं है। और इसीलिये चार पांच हजार का खर्च [illegible] गया। यदि उपरोक्त खर्च बगीचे के कुंए पर ही पंप [illegible] पानी निकालने में किया जाता तो काम भी [illegible] होता और [illegible] की भी [illegible] रहती। किन्तु कुंए का पानी पंप से [illegible] नहीं होता [illegible] इंजीनियर की सम्मति मिलने से [illegible] लाने की खटपट हुई किन्तु हाल में यह [illegible] बंगले में डेकन क्लब होने के यह [illegible] और टेनिस [illegible] जो थोड़ी जगह साफ की हुई है वह भी दुरुस्त है बाकी [illegible] पूरा बगीचा [illegible] हो रहा है।

हीराबाग कमेटी के [illegible] यदि मन पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

है, लगभग १२।१३ एकड़ जमीन है। यदि तालाब भरने का प्रयत्न किया जायगा तो बगीचे की ही शोभा नहीं बढ़ेगी वरन् फायदा भी बहुत होगा। एक बार लॉर्ड विलिंग्डन और लेडीविलिंग्डन हीराबाग देखने आये थे। उन्होंने बंगले की चांदनी पर की अंबारी में से तालाब की शोचनीय स्थिति देख कर बहुत खेद प्रदर्शित किया, और इस सरोवर का ऐसा विध्वंस किसने किया इसकी भी चौकसी कर वाई। उस समय यदि पूना निवासी या हीराबाग कमेटी प्रयत्न करती तो तालाब पानी से वैसा ही भर कर आज बगीचे को लिये पानी का घाटा नहीं आता। परन्तु हर एक मनुष्य यही कहता है। कि सरकार ने तलाब सुखाया अब उसे कौन भर सकता है? या सरकार का किया हुआ ठहराव उनको योग्य कारण बतलाने पर भी नहीं बदल सकता है। अब पर्वती का तालाब पूर्ववत् पानी से भरे बिना हीराबाग व्यवस्थित और शोभायमान बन सकेगा; इसके लिये कोई आशाप्रद चिन्ह नहीं दिखाई देते। हीराबाग कमेटी में होशियार और प्रभावशाली लोग हैं; और यदि वे मन] पर धारेंगे तो हीराबाग को आज भी इन्द्र भवन के तुल्य बना सकेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है। ईश्वर करे और ऐसी ही उन्हें बुद्धी उपजे। अस्तु,

---

किराये के टट्टू।

(लेखक—श्री० पं० बैजनाथजी उपाध्याय 'जगच्चरणरज')

हमारे नव शिक्षित भ्रातागण जब कभी मुझे भंग के रंग में मस्त देखते हैं, मेरे बरताव पर टीका करने लगते हैं। मेरे लेखों और वक्तृता आदि की तो वे मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं; पर अन्त में वे 'परन्तु' लगा देते हैं! उनका कथन है कि, मनुष्य कैसा ही उत्तम लेखक या वक्ता क्यों न हो, यदि वह मादक पदार्थों के सेवन का आदी है उस का लेखन; उसकी वक्तृता और उसका व्यवहार कौड़ी मोल है! वास्तव में बात भी ऐसी ही है।

इस लेख में भंग का नाम देखतेही पाठक थू...थू करने लगेंगे, जिस तरह मुसल्मान लोग सुअर का नाम सुनते ही!! इस लिये मैं इस बात को सब से पहिले स्वीकार किये लेता हूं कि, मादक पदार्थों का सेवन अत्यन्त अनिष्ट और निन्दनीय है, ठीक उसी तरह जिस तरह माननीय पटैल का मिश्र-विवाह-बिल!

माननीय पटैल के मिश्र-विवाह बिल का चारों ओर से निषेध हो रहा है, पर विचार दृष्टि से देखा जाता है तो अब तक उसके निषेध में वे सब बातें कहीं नहीं कही गई हैं, जोकि उसके निषेध की पुष्टि के लिए कही जा सकती हैं! ठीक इसी तरह भंग की निन्दा के विषय में भी है।

मैं जानना चाहता हूं कि भंग की निन्दा व प्रशंसा करने का अधिकार पूरे तौर से किस व्यक्ति को प्राप्त हो सकता है? आद्य शंकराचार्य का मण्डनमिश्र से शास्त्रार्थ हुआ था। मण्डनमिश्र की पत्नी शंकराचार्य की सम्मति से जज बनाई गई थी। उस अवसर पर मण्डन-मिश्र की पत्नी ने शंकराचार्य से स्पष्ट कह दिया कि "तुम आजन्म ब्रह्मचारी हो, शृंगार विषय का तुम्हें अनुभव नहीं; एवं उस विषय की चर्चा करने का तुम्हें अधिकार नहीं"।

क्या मैं पूछ सकता हूं कि जिन महाशयों ने कभी भंग का अनुभव नहीं किया, उन्हें भंग की निन्दा करने का अधिकार किस तरह पहुंच सकता है?

सम्भव है, कुछ पाठक धोके से किसी भंगेड़ी के दांव में फँस कर धोती फटा गँवा बैठे हों! पर ऐसी घटना से कोई अनुभवी नहीं कहा जा सकता! हां, यह कहा जा सकता है कि उस ने धोखा खाया! और मैं धोखे से शक्कर के बजाय नमक पड़ जाय तो क्या यह कहा जा सकता है कि शक्कर खारी होती है? और क्या इसलिये शक्कर त्याज्य है? कदापि नहीं! बल्कि ऐसे कहने वालों के अज्ञान पर दया करनी होगी।

इस लेख पर से मेरा यह उद्देश्य कदापि नहीं है कि, मैं पाठकों से अनुरोध करूं कि वे भंग अवश्य किया करें! बल्कि मैं यह चाहता हूं कि इससे जो मुझे अनुभव हुआ है, पाठक उससे परिचित हो जांय, ताकि उन्हें टेम्परेंस एसोसिएशन में वक्तृता देते समय शङ्कराचार्य की तरह फजीहत न होना पड़े! सट्टे का व्यौपारी मुनाफे का समाचार सुनने के लिये जितना आतुर होता है, अथवा गार्भिणी स्त्री इच्छित पदार्थों के भक्षण के लिये जितनी आतुर होती है, भंग के रंग में भँगेड़ी मनुष्य भी चटकचटा माल भाड़ने के लिए ठीक वैसा ही आतुर होता है! या यों कहिये कि भंग का यह प्रभाव है; और जिस तरह भगवान् शकरखोर को शक्कर पहुँचा देता है, "चिऊँटी को कण और हाथी को मण," इसी तरह भँगेड़ी को भी उसकी श्रेणी के अनुसार न्यूनाधिक प्रमाण में कहीं न कहीं, कुछ न कुछ, मिल ही जाता है।

गोविन्द का स्मरण कर जब मनुष्य पालथी मारता है, चाहता तो वह यह है कि जिस तरह कोठी में अनाज भरा जाता है, वह भी टोकनों से ही माल भरता चला जाय! पर भंग उसे ऐसा नहीं करने देती! कोठी का मुँह बहुत ही छोटा कर देती है! ज्यों ही माल मुँह की कोठरी के अन्दर पहुँचा, भंग सहसा अन्दर से किवाड़ बन्द कर लेती है और तब वह चक्की पीसने बैठ जाती है! खूब बारीक पीसती है। यदि इस समय कोई उसे कह दे कि मोटा २ दलियाही क्यों नहीं जल्दी २ दल के आगे ढकेलती चली जाओ? यह कदापि न मानेगी! यदि काफ़ी अवसर मिले, तीन घण्टे से कम पिसाई नहीं होती!

जब भंग अपना मतलब गाँठने लगती है, इस बात का विचार नहीं करती कि उसका हम्माल या यों कहिये कि उसका टट्टू कितना बोझ ढो सकता है! हम्माल भी तो हम्माल ही ठहरा! जिस तरह माल के महकमे का अहलकार तनख्वाह के लोभ से गदहा भर बोझ अपनी पीठ पर लदवा लेने में ही मजा पाता है, इसी तरह हम्माल लोग भी हम्माली के लोभ से! टट्टू बेचारा बेजबान! कह नहीं सकता कि वह कितना बोझ ढो सकता है, या उसकी पीठ पर बोझा असह्य हो रहा है!

हमारा दिमाग़ तो घर पर रहता ही नहीं! और यह बदज़ात-भंग और इसकी बेटी (भूख), दोनों मिल कर बेचारे पेट पर इसके मालिक (दिमाग) की अनुपस्थिति में मन माना अत्याचार करती हैं! परिणाम यह होता है कि पेट बेचारा बुरी तरह चिल्लाने लगता है, ठीक उसी तरह जिस तरह पुलिस के हण्टरों पर चोर! वह भले ही चिल्लाता ही रहे, उसकी सुनता कौन है?

पेट बेचारा मारे बोझ के दबा चला जाता है पर उसकी पुकार नहीं सुनी जाती है, पेट का उनसे पीछा छूटता है! थोड़ी ही देर बाद उसे नमक सुलेमानी या अस्पताल की शरण लेनी पड़ती है!

यदि एक दो रोज का मामला हो तो पेट भी कुछ बरदाश्त कर सके और कुछ हम भी सिफारिश करते, पर मामला ठहरा रोजमर्रा का और हमेशः का! सिफारिश करनेवाला कहां तक सिफारिश करे, सहायता करनेवाला कहां तक सहायता करे, और बरदाश्त करनेवाला कहां तक बरदाश्त करे! रोजमर्रा अस्पताल की दवा खाते २ आखिर को जठराग्नि बिचारी घबरा जाती है, या यों कहिये कि चकमचका माल भड़ते २ वह थक जाती है, इस कारण उसे नित्य भंग की शरण लेनी पड़ती है! जठराग्नि क्या! विपाक का टट्टू है!

अब यहां प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यह मर्लामानस भंग मनुष्य के गले क्यों पड़ जाती है! मेरा अनुभव कहता है कि तमाम दिन परिश्रम करने के पश्चात मनुष्य आराम चाहता है, आराम की साधारण व्याख्या 'दिन भर भोजन करना और नींद भर सोना' है। इन दोनों बातों में भंग से सहायता मिलती है; पर जब तक परिश्रम न

किया जाय, पेट भर खाना किस तरह नसीब हो? कल की भंग की खुमारी अब तक बनी है! अब तक समय आराम करने का रहा। अब परिश्रम करने का आगया! भंग कहती है "न! मैं परिश्रम नहीं करने दूंगी"! दिमाग भी परिश्रम करने से आना कानी करता है; पर रात पड़े फिर यही आराम मांगेगा! अगर हम दिन भर परिश्रम न करेंगे, दिल और दिमाग को खुराक कहां से पहुचायेंगे? इसलिये अब हम को परिश्रम करना लाज़िम आया! इसीलिये हम को यह विचार करना पड़ा कि कम से कम पांच बजे तक के लिये कोई साधन ऐसा उपस्थित किया जाय, जिस के द्वारा भंग के प्रभाव को दबाया जासके।

खोजते २ चाय से भेंट हुई और उस ने बीड़ा उठाया कि अवश्य ही मैं उस समय तक के लिये भंग के प्रभाव को रोक दूंगी; साथ ही परिश्रम करने की शक्तिभी प्रदान करूंगी!

हमारा दिमाग चाय से सहमत होगया। ज्योंही चाय ने हम पर अधिकार जमाया, भंग इस तरह भाग गई, जिस तरह कुत्ते के आगे से बिल्ली अथवा सूर्य के सामने अंधेरा! और चाय ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हमारा काम किया। पांच बजते ही चायने हमें भंग की याद दिलाई, और आप काफूर होगई; साथही हमारे परिश्रम की शक्ति भी लेती गई। हमारे परिश्रम की शक्ति क्या थी, किराये का टट्टू था।

अब हम चाहते हैं कि दोनों चीजों के गुण ग्रहण किये जायें और दोष छोड़ दिये जायें। पर ऐसा करने में मुश्किल यह उपस्थित होती है कि यदि चाय को छोड़ते हैं, परिश्रम करने की शक्ति जाती है, और यदि भंग को छोड़ते हैं, आराम करने की शक्ति जाती है। अब हमारी हिम्मत नहीं पड़ती कि दो में से किसी एक को भी छोड़ सकें; क्योंकि जिसको छोड़ेंगे, वही हमारी एक शक्ति लेजायेगी। चाय परिश्रम की और भंग आराम की! दिन भर परिश्रम करने पर यदि रात को आराम न कर सके, तो मुश्किल! और यदि रात भर आराम किया, दिन को परिश्रम न किया, तो मुश्किल! दोनों दशाओं में हम किराये के टट्टू हैं।

बहुतेरे पाठक कह उठेंगे कि "शनै शनै कुरुमेत्"* अर्थात् घटाते २ घटा देना चाहिये। ऐसा हम करने को तैयार हैं पर इसमें एक हानि हम को दिखाई पड़ती है। भंग पीने के पश्चात् जब हम भगवच्चिन्तन करने बैठते हैं, हमें बड़ा ही मज़ा मिलता है, वह मज़ा जो हमें उस समय नहीं मिलता था, जब कि हम भंग पीना जानते ही न थे। एक बात और भी है। अब हम लेख लिखने बैठते हैं, वहीं दूर २ की हमें सूझती है। कल्पनायें भी खूब दौड़ती हैं। चित्त में शांति रहती है, [illegible] में भी वे ही बातें होती हैं। यह हम जानते हैं कि उस अवस्था में, जब कि हम पर भंग का रंग सवार होता है, यदि हमारा चित्त [illegible] काम, क्रोध, लोभ, मद, [illegible] आदि में से किसी के या [illegible] में आ गिरे तो फिर भगवान ही रक्षक समझिये। पर इतने पर भी इतना तो अवश्य हमें अखर रहता है कि यह भंग भवानी का ही प्रभाव है और ज्यों ही रंग उतर जायगा, [illegible] विचार भी [illegible], इस तरह जिस तरह विवाह के पश्चात् [illegible] और [illegible] इन विचारों का [illegible] प्रभाव भी नहीं पड़ता। कभी २ [illegible] [illegible] हो जाते हैं, साथ ही यह भी मालूम होजाता है कि [illegible] [illegible] है, और [illegible] दूर ही [illegible] इन विचारों का [illegible] [illegible] [illegible] विचारों का [illegible] [illegible] है।

[illegible]

[illegible]

* [illegible]

वाला उनकी पार्श्वनायी मुद्रा को अपनी भंग के बदिया होने में पेश करता है! इसी तरह कितने ही हमारे सहयोगी [illegible] और दिमाग सहित दिन रात भंग की दासता में [illegible] इसका क्या जवाब?

किसी पतिव्रता स्त्री से, उसे चिढ़ाने के लिये एक [illegible] किया "पतिव्रता किसे कहते हैं?" पतिव्रता ने क्रोध के उत्तर दिया "जो सात पुरुषों से सम्बन्ध कर चुके"। पूंछने[illegible] "और जो आठ पुरुषों से सम्बन्ध कर चुकी हो?" उसने [illegible] "उसने बी० ए० की डिग्री पास कर अब एम० ए० [illegible] है!!"

जिन महाशयों ने हमारे जितना अभ्यास किया है, वे बी० ए० हैं; और जिन्हें अपने कांछे लंगोटे की सुध नहीं रहती, वे '[illegible] वर्सिटी' के 'मास्टर आफ आर्टस' हैं।

पाठक पूछ सकते हैं कि क्या वे लोग, जो चाय और भंग [illegible] नहीं पीते, दिन भर परिश्रम नहीं कर सकते? और क्या वे रात [illegible] आराम नहीं पासकते?

उनकी बात जाने दीजिये! वे तो अपने सद्व्यसन-भण्डार के [illegible] पति हैं! किराये के टट्टू नहीं! उन्होंने बचपन से वीर्य का संचय [illegible] अखण्ड, अचौर्य, अवंच, अदाह्य और अव्यय धन का भण्डार [illegible] लिया है। जो बाल्यावस्था में विवाह-बन्धन से बद्ध नहीं हुए, [illegible] ने शुक्र का क्षय नहीं होने दिया, वे घर के साहूकार हैं। [illegible] का धन है। शुक्र ही उन्हें बल, बुद्धि, तेज, शौर्य, धैर्य, [illegible] सद्गुण प्रदान करता है; उसे किराये के टट्टू पर [illegible] आवश्यकता नहीं! किराये के टट्टू की तो हम को ज़रूरत है, [illegible] दिल, दिमाग, बल, बुद्धि, तेज आदि सभी किराये के [illegible] हैं। जो बाल्यावस्था में विवाह-सम्बन्ध से बद्ध होगया [illegible] से व्यभिचार आदिक दुर्व्यसनों के गड्ढे में गिर गया, उसके [illegible] मूल-धन अर्थात् शुक्र तरुणावस्था की प्राप्ति तक इस तरह [illegible] जिस तरह वर्षाऋतु में नाले का पानी! उनका [illegible] उनका साहस और धैर्य आदि सब गुण इस तरह नष्ट होते, [illegible] तरह मदरसा छोड़ते ही नौकरी के फन्दे में पड़ जाते हैं। [illegible] अवस्था में भंग आदि का सेवन करना आवश्यक प्रतीत होता। जिनकी यह दशा है, मनुष्य नहीं वे किराये के टट्टू हैं!

अब हम पाठकों से एक प्रश्न करके इस लम्बायमान [illegible] करेंगे। हमारे नूतन-प्रकाश-नयन भ्रातागण भंग की तो [illegible] करते हैं पर चाय को बड़े प्रेम से दिन में तीन २ बार पीते [illegible] जहां तक हमने अनुभव किया है, हमें मालूम हुआ है कि [illegible] का प्रभाव शुक्र पर बहुत बुरा पड़ता है। चाय की तासीर गर्म है। [illegible] पर गर्मी पहुंचने से उसकी पुष्टता नष्ट होजाती है, ठीक [illegible] जिस तरह अग्नि पर रखने से घृत की। घी जिस हण्डी में [illegible] है, यदि वह ऊर्ध्व-मुख है, उससे सम्पूर्ण घृत बह नहीं [illegible] वीर्य जिस हण्डी में रक्खा जाता है, उसकी [illegible] [illegible] ऐसी नहीं है। उसकी हण्डी अधोमुख है और उसका [illegible] में है। ब्रह्माण्ड शरीर का शिखर है। मान लीजिये कि [illegible] हण्डी पहाड़ की चोटी पर अधोमुख रक्खी गई। [illegible] कि हण्डी का घृत हण्डी ही में स्थिर रह सके! [illegible] ब्रह्माण्ड में उसमें वीर्य का स्थिर रहना असम्भव है! [illegible] बह जायगा।

[illegible]

(लेखक—श्री० वैकुंठराय।)

स्वर्णचुम्बक का मार्ग।

कोलंबस के द्वारा अमरखण्ड अर्थात् अमेरिका की खोज होजाने बाद जलनिधि के विस्तीर्ण पटाङ्गण पर स्पेनिश और पुर्तुगीज़ जाति के अनेक साहसी दर्यावर्दी लोगों ने दूर २ के द्वीपकल्पों में प्रवास किया और कितने ही नये द्वीपों का पता भी लगाया। पता लगाया ऐसा कहने के बदले उन्हें पता लगा ऐसा कहना अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि लूटपाट करके अथवा छल कपट द्वारा किसी भी प्रकार से द्रव्य सम्पादन करना—यही मात्र उनकी सफर का मुख्य हेतु था। महारानी 'एलिजाबेथ' के समय में मैगलेन, सर फ्रान्सिसड्रेक, कुक आदि जिन बहादुरों ने पृथ्वी प्रदक्षिणा की थी उनका मुख्य पेशा गलाघोंटू लुटेरों की अपेक्षा उच्च कोटि का न था। किन्तु उन्हों ने जो काम कर दिखाया उसके कारण भूगोल पर बिना खोज किया हुआ प्रदेश शायद ही कोई रहा हो। यदि ऐसा भी कह दिया जाय कि मनुष्य को अब भूगोल का कोना २ मालूम होगया है, तो भी कोई अतिशयोक्ति न होगी।

नैसर्गिक चुम्बक की शिला—इस खनिज चुम्बक के दोनों सिरों पर लोहकण अधिक चिपटे हुए हैं

परन्तु 'विश्व सृष्टि' में अब भी ऐसी कितनी ही बातें हैं, जिनका भेद मनुष्य को मालूम नहीं। सृष्टि चमत्कार के सम्बन्ध में अब भी ऐसा ही कहा जासकता है कि, जो कुछ ज्ञान होचुका है वह अज्ञात वस्तुओं की संख्या के मान से बहुत ही अल्प या जिसका हिसाब भी न लग सके, इतना थोड़ा है। मनुष्य अब बड़े विद्वान् होचले हैं, सृष्टि ज्ञान का भी उन्हें पता लगने लगा है, सृष्टि शक्तियों को अपने वश में करके सम्पूर्ण स्थावर जंगम सृष्टि पर उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया है, इस प्रकार की अभिमान वायु जहां तहां बहती मालूम होती है, इसका कारण अज्ञान सृष्टि का अत्यल्पत्व मात्र ही है। पिछले समय के लोगों या पिछड़े हुए लोगों को मूर्ख और जंगली बतला कर बुद्धिमानी और सुधारकता की डींग मारने का भ्रम पीढ़ी दर पीढ़ी कितनी ही शताब्दियों से अखण्ड रूप से चला आरहा है, यही एक बात उपरोक्त कथन की सत्यता का विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त है।

चुम्बक की आकर्षण विद्या—[illegible] ... तो भी उसमें कोई व्यापार नहीं करती। इस चित्र में ... [illegible]

कोईसा भी सृष्टिचमत्कार लीजिये तो वह 'द्रव्य' और 'शक्ति' इस पूर्णपूर्ण जोड़ी का एक 'स्थल कार्य' होता है। एक बिलकुल सीधा और सादा उदाहरण लीजिये "पानी बहता है", यहां पानी 'द्रव्य' गुरुत्वाकर्षण 'शक्ति' के व्यापार के कारण ऊँचाई पर से [illegible] पर ढुलकता जाता है, और [illegible] बहना कहते हैं। उष्णता, प्रकाश, विद्युत् इस प्रकार के अनेक स्वरूपों में 'शक्ति' नाना विध द्रव्यों में संचार करती है, और उसी समय ही सृष्टिचमत्कार उत्पन्न होजाता है। आकाश में बिजली का चमकना, रंगबिरंगी इन्द्र धनुष्य की विस्तीर्ण कमान आकाश में इस सिरे से उस सिरे तक बन जाना, पानी का बरसना, पर्वत के उच्च शिखर परसे पानी में के रोड़े कंकड़ और शिलाओं का गड़गड़ाते हुए नीचे आना रेल गाड़ी का चलना, मनुष्य, वृक्ष और प्राणियों का 'जीवित रहना' और 'मरना', इस प्रकार के असंख्य सृष्टि चमत्कारों के मूल में 'शक्ति' और द्रव्य का विवक्षित प्रकार का कोई न कोई व्यापार चलता ही रहता है।

चुम्बक का कांटा—किसी नोकीले पदार्थ के अग्रभाग पर समतोल रखने से उसके सिरे उत्तर दक्षिण दिशा में स्थिर रहेंगे

शक्ति का अमुक एक स्वरूप—(ऐसे स्वरूप को ही हम एक शक्ति कहते हैं) द्रव्य के अमुक एक रूप पर कितने प्रकार के कार्य करता है? द्रव्य और शक्ति के ऐसे कितने स्वरूप होंगे? क्या ये बातें मनुष्य निश्चय रूप से कह सकेगा? नहीं कभी नहीं।

काव्य-स्वरूपी वाङ्मय की तरह शास्त्रीय जगत के वाङ्मय में भी 'शब्द जाल' और 'दृष्टान्त' की बड़ी रेलपेल उड़ती हुई दिखाई पड़ती है। मनुष्य के अन्तःकरण की कल्पना परंपरा के विकास का उद्घाटन स्पष्ट होने के लिये जो शब्द सृष्टि निर्माण हुई, उसमें कुछ लाक्षणिक दृष्टान्तों का आश्रय लिये बिना काम ही नहीं चल सकता, यह बात जो भी ठीक है, तथापि शास्त्रीय ज्ञान संपादन के मार्ग में भी ऐसे दृष्टान्तों के बिना सौंदर्य के पर बिलकुल रुक जाना पड़ता है, इस बात को भी अवश्य ध्यान में रख लीजिये। यहां पर कुछ विषयान्तर सा होता है परन्तु हम एक ही उदाहरण देकर आगे बढ़ेंगे। 'मिश्र भिन्न पदार्थों का बना हुआ है?' इस प्रश्न का उत्तर [illegible] देते हैं कि, '[illegible]' [illegible] के रूप में रखा जाता है [illegible] [illegible] के संबंध में विषय समझ है। अच्छा, तो वह [illegible] हुआ रहता है? [illegible] है? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर [illegible]

अपने स्थान पर के आकर्षण बिन्दु [illegible] उत्तर ध्रुव बिन्दु में [illegible] इस प्रकार का चुम्बक का [illegible] में उसका उत्तर ध्रुव नीचे झुकता है।

[illegible] के [illegible] तार [illegible] लपेटे हुए हैं और [illegible] विजली का प्रवाह [illegible] चुम्बकत्व आ जाता है।

में दिया जाता है, वह है 'रासायनिक संयोग' इस शब्द के उच्चारण मात्र से इस संयोग के सम्बन्ध में जो कुछ जान ने योग्य है, मानो जान ही लिया ऐसा भास होजाता है! 'गुरुत्वाकर्षण, विद्युद्रोधक, उष्णता वहन' इत्यादि शब्द केवल शब्द ही होसकते हैं। इन शब्दों से हमें कुछ भास मात्र अवश्य होजाता है, अस्तु।

इस विवेचन पर से इतना जान लेना चाहिये कि सृष्टिचमत्कारों की अमर्याद परंपरा में से कौन सी बात कब और किस रीति से मनुष्य के ज्ञान संग्रह में आपहुँचेगी, इसका कोई नियम नहीं। 'रेडियम', 'क्ष' किरण, विद्युज्जन्य व्यापार इत्यादि बातों के बनाने में बीसवीं शताब्दि उपयुक्त है, ऐसा माना जाता है। बिजली सम्बन्धी जानकारी प्राचीन काल के महाविद्वानों को विदित न होसकी, यह बात उनके या उस समय की मानव जाति के लिये 'दुर्भाग्य' ही कही जासकती है। आज जितनी जानकारी प्राप्त हुई है, उतनी ही यदि उस समय मिल गई होती तो उस समय भी रेल गाड़ियाँ, तारयंत्र और मिल आदि चलने लग जाते! परन्तु इसके लिये क्या कहा जाय?

लोहे का प्रत्येक कण मानों एक चुम्बकही है। लोहे में से सूक्ष्म चुम्बक अनियमित रूप से बिखरे हुए रहते हैं। किसी संस्कार के कारण सब के उत्तर ध्रुव एकही दिशा में व्यवस्थित रूप से बने रहें तो लोहे में चुम्बकत्व आ जावेगा।
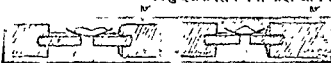
इसी चित्र में उ और द ये एक शक्तिमान विद्युच्चुम्बक के ध्रुव हैं। निकेल, सोना, पानी, पारा, रोटी, संतरा आदि अनेक पदार्थों में से कितने ही उन ध्रुव की ओर खींच जाते हैं। और कितने ही अलग हो जाते हैं ऐसा क्यों?

लोहचुम्बक के विषय में आज कल हम जो कुछ जानते हैं, उस पर से विदित होता है कि 'स्वर्णचुम्बक' नामक वस्तु जो भी हस्तगत नहीं होसकी है, तथापि वह 'कल्पवृक्ष' 'कामधेनु' अथवा 'पारसमणि' आदि वस्तुओं की तरह अब भी केवल कविकल्पना की कोटि में ही नहीं पड़ी रहेगी। सब से प्रथम 'लोहचुम्बक के विषय में जो कुछ जानकारी है उस पर विचार करना चाहिये।

लोहचुम्बक के लिये संस्कृत में 'अयस्कान्तमणि' (अयस=लोहा) यह शब्द पाया जाता है। और कालिदास तथा भवभूति आदि कवियों ने उसका इस अर्थ में उपयोग किया है। वेद-ब्राह्मण में यह शब्द है या नहीं हम जो जानता हो, वह भी लोहचुम्बक सम्बन्धी भिन्नता के विषय में कुछ नहीं जान सकता।
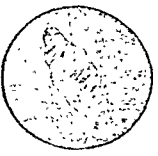
अंग्रेजी भाषा में लोहचुम्बकको मैग्नेट कहते हैं। एशियामायनर के 'मैग्नेशिया' प्रान्त में लोहचुम्बक की शिलाएँ पाई जाती हैं। इसी प्रान्त के नाम पर से इसे मॅग्नेट कहने लगे। ऐसा जान पड़ता है कि प्राचीन ग्रीक लोगों को इस खनिज पदार्थ के विषय में जानकारी थी। लोहा और ऑक्सिजन के 'रासायनिक संयोग से' (!) लोह चुम्बक की शिलाएँ बनी होती हैं। लोह-चुम्बक की शिला का तात्पर्य, 'नैसर्गिक' लोहचुम्बक ही है। लोहे से तय्यार किये हुए कृत्रिम लोहचुम्बक की अपेक्षा इसकी शक्ति बहुत अधिक होती है। कहा जाता है कि सर [illegible] न्यूटन (म० [illegible]) के पास एक अंगूठी में [illegible] के बराबर नैसर्गिक लोहचुम्बक का एक कुंदन जड़ा हुआ था, परन्तु उसमें [illegible] वजन को उठा सकने की शक्ति थी!! १०० [illegible] लोहे को [illegible] एक [illegible] कृत्रिम [illegible] देखने को मिल सकते हैं। लोहे को आकर्षण करने की जो शक्ति लोहचुम्बक में होती है उसे 'चुम्बकत्व' कहते हैं। लोहचुम्बक को [illegible] के बाद तो [illegible] करेंगे। [illegible] लोहे और चुम्बक में होता है, और इस [illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible]। लोहा चुम्बक [illegible] है, [illegible] चुम्बक [illegible] है।

[illegible] है [illegible]

भूगर्भ भी एक बड़ा चुम्बकही है [illegible] दक्षिण ध्रुव [illegible] है!

(१) चुम्बक के दोनों सिरों की ओर चुम्बकत्व विशेष मध्य भाग में नहीं होता ऐसा कह दिया जाय तो भी हानि न होगी। उन दोनों सिरों को 'ध्रुव' कहते हैं।

(२) चुम्बक का एक कांटा किसी नोकदार सलाई के सिरे पर सम तोल आड़ा रखा हुआ हो, तो वह तत्काल ही 'दक्षिणोत्तर' दिशा में स्थिर होजायगा।

चुम्बक की किसी एक सलाई को काक या डाट में घुसेड़ कर ऐसी व्यवस्था की जाय कि वह आड़ी तैरती रहे तो सलाई दक्षिणोत्तर दिशा में होकर स्थिर होजायगी। दक्षिण की ओर के सिरे को दक्षिण ध्रुव और उत्तर की ओर घूमनेवाले सिरे को उत्तर ध्रुव कहते हैं।

(३) चुम्बक का एक कांटा अथवा सलाई क्षितिज समान्तर में घूमते रह कर दक्षिणोत्तर दिशा में स्थिर रहे ऐसी व्यवस्था की हुई हो और उसके पास एक दूसरा चुम्बक लाया जाय तो एक चमत्कार दिखाई देगा। दोनों के दक्षिण ध्रुव या उत्तर ध्रुव पास २ लाये जाँय तो वह एक दूसरे को लौटा देंगे। अर्थात उनमें 'प्रतिसारण क्रिया' होती हुई दिखाई देगी। किन्तु विरुद्ध नाम के दो ध्रुव पास २ लाये जाँय तो वे एक-दूसरे को खींचते या आकर्षित करते हुए दृष्टिगोचर होंगे। अर्थात् 'सजातीय' ध्रुवों में प्रतिसारण और विजातीय ध्रुवों में आकर्षण क्रिया दिखाई पड़ती है।
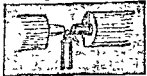
(४) मध्य बिन्दु समतोल रह सके इस प्रकार का एक फौलादी कांटा तय्यार करके उसका चुम्बक बनाया जाय और वह क्षितिज समान्तर सीमा में किन्तु-याम्योत्तर वृत्त की परिधि में घूमता रहे, इस भांति रखा जाय, तो यह जान पड़ेगा कि यह कांटे बराबर आड़ा रह कर स्थिर नहीं रहता। परन्तु 'उत्तर गोलार्ध में उत्तर ध्रुव और 'दक्षिण गोलार्ध' में दक्षिण ध्रुव नीचे झुक जाता है। ऐसा चुम्बक जिस हेतु से दक्षिणोत्तर दिशा में ही स्थिर होता है, उसके लिये भूगर्भ में एक ऐसी शक्ति होनी चाहिये कि जिसके कारण चुम्बक उन्हीं दिशाओं में खिंच कर स्थिर रह सके। महारानी एलिज़ाबेथ के दरबार में डाक्टर 'गिलबर्ट' ने ऐसा अनुमान किया था कि 'भूगर्भ' ही एक बड़ा भारी चुम्बक है। अर्थात् या तो उत्तर की ओर इस चुम्बक का दक्षिण ध्रुव होता है ऐसा मानना चाहिये, अथवा चुम्बक के उत्तर की ओर स्थिर रहनेवाले सिरे को दक्षिण ध्रुव कहना चाहिये। यह सत्य ही है।

(५) दो चुम्बककांके ध्रुवमें जो आकर्षण और प्रतिसारणक्रिया होती है, उसी प्रकार विरुद्ध धर्म के विद्युत् युक्त पदार्थोंमें भी पाई जाती है।
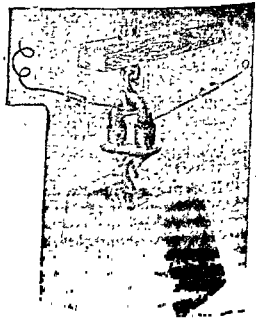
[illegible] रखा [illegible] है। [illegible] का [illegible] दिया जाय तो चुम्बकत्व [illegible] हो [illegible]।

(६) लोहचुम्बक के [illegible] में लोहे में भी दक्षिण चुम्बकत्व [illegible] जाता है।

(७) लोहचुम्बक के [illegible] भाग में चुम्बकत्व नहीं [illegible]

परन्तु लोह चुम्बक की सलाई के मध्य भाग से दो टुकड़े किये जाँय तो प्रत्येक टुकड़ा स्वतंत्र चुम्बक बन जाता है।

इस प्रयोग को प्रत्यक्ष कर देखने के लिये अधिक खर्च की सामग्री की आवश्यता नहीं पडती। लोहचुम्बक के दो कांटे, सलाई, लोहे के टुकडे कीलों इत्यादि दस बारह आने का सामान लगता है। पाठशालाओं में इनाम बाँटते समय दस बारह आने की पुस्तक के बदले लोहचुम्बक के प्रयोग का यह सामान और प्रयोग करने का विधि पत्र की व्यवस्था कीजाय तो बड़ा अच्छा हो।
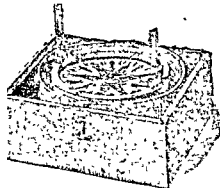
(८) किसी लोहे की सलाई पर से एक चुम्बक एक ही दिशा में कितनी ही बार घुमाने से वह सलाई चुम्बक बन जाती है। इस प्रकार की सलाई का एक सिरा एक चुम्बक के उत्तर ध्रुव पर और दूसरा अन्य चुम्बक के दक्षिण ध्रुव पर रख कर एक लकड़ी के हथौड़े से उस सलाई पर चोट मारी जाय तो भी वह सलाई चुम्बक बन जाती है। और भी कई प्रकार से कृत्रिम चुम्बक तय्यार होता है।

दिशायंत्र—आठ मुख्य दिशाएं बतलाने वाले कागज के एक वृत्त को चुम्बक का एक काटा चिपका दिया जाय और एक पेटी में वह रखा जाय तो उसे होकायन्त्र कहते हैं।

(९) ऐसे चुम्बक को अधिक बार टेढ़ामेढ़ा घुमाने, उस पर चोट करने अथवा उसे तपाने से भी चुम्बकत्व नष्ट होजाता है, यह बात ध्यान देने योग्य और महत्व की है।

(१०) बिजली के प्रवाह की सहायता से भी लोहे और फौलाद को चुम्बकत्व प्राप्त होसकता है। किसी लोहे के गज के चारों ओर विद्युद्वाहक तार लपेटा हुआ हो और उस तार में बिजली बहा दी जाय तो वह गज़ लोहचुम्बक बन जायगा। इस प्रकार के उद्गम के पास दाहिनी ओर गज का सिरा हो तो वह उत्तर ध्रुव और बाईं ओर हो तो दक्षिण ध्रुव होता है। ऐसे चुम्बक को विद्युच्चुम्बक कहते हैं।

(११) लोहे की नाल के आसपास ऐसा एक विद्युद्वाहक तार लपेटा हो और उसमें विद्युत् प्रवाह बहता हो तो उस प्रवाह की शक्ति के मान से उसमें चुम्बकत्व भी ज़ोर से उत्पन्न होगा।

(१२) अब तक चुम्बक सम्बन्धी जो ८ कलम की जानकारी बतलाई गई है वह प्रत्येक सामान्य शिक्षित मनुष्य को विदित होगी ही, परन्तु एक प्रश्न यह है कि 'लोहा' और 'लोहचुम्बक' का 'परस्पर सम्बन्ध क्या है'!

नैसर्गिक लोहचुम्बक की शिला से व्यवहारोपयोगी लोहा गला कर और कृत्रिम लोहचुम्बक लोहा अथवा, फौलाद का ही बनाया जाता है। फिर भी प्रश्न ऐसा है कि —

'लोहे का चुम्बक बनता है' तब लोहे की घटना में क्या २ अन्तर पड़ता है? इसी प्रकार यह प्रश्न भी किया जासकता है कि प्रकाशमान होनेवाले पदार्थ और ऊष्ण होनेवाले पदार्थों का तथा विद्युद्विष्ट अर्थात् बिजली से भरे हुए अथवा जिनमें बिजली उत्पन्न होचुकी है इस प्रकार के पदार्थों का मूल स्वरूप कैसा और किस प्रकार के परिवर्तन पाया हुआ होता है!

ये बातें मनुष्य को किस प्रकार समझनी चाहियें! विद्वान और विचारशील मनुष्य इसके सम्बन्ध में कुछ अनुमान अथवा उपपत्ति निश्चित करते हैं।

वेबर नामक पदार्थ विज्ञानशास्त्रज्ञ का ऐसा मत है कि लोहे का प्रत्येक सूक्ष्म कण अथवा अणु भी एक प्रकार से चुम्बक ही है। परन्तु लोहे के टुकड़े में ये वैयक्तिक लघु चुम्बक किसी प्रकार भी टेढ़े मेढ़े अनियमित होने से रखे हुए होते हैं।

चुम्बकत्व उत्पन्न करनेवाले विद्युत्प्रवाह के समान किसी एक संस्कार के कारण उस लोहे के टुकड़े में ही इन सूक्ष्म वैयक्तिक चुम्बकों की एकजातीयत्व रूप में नियमित रीति से रचना होती है।

इस रचना के होने से पूर्व उसके दोनों ध्रुव सब दिशाओं में समान रूप से फैले हुए होने के कारण उस लोहे का चुम्बकत्व व्यक्त नहीं होपाता। परन्तु इस रचना के होते ही सब के उत्तर ध्रुव एक ही दिशा की ओर होजाते हैं और इसी कारण चुम्बकत्व व्यक्त दशा को पा जाता है।

यही उपपत्ति थोड़े बहुत फेरफार करके आज ग्राह्य निश्चित करली गई है। और इस उपपत्ति की सत्यता की झलक भी हमें भास होती है। क्योंकि ठोकने से, मोड़ने तथा गर्म करने से चुम्बकत्व नष्ट होजाता है, ऐसा ऊपर कहही आये हैं, और इस बात की उपपत्ति ग्रहण कर मानी गई है। क्योंकि इस क्रिया से लोहे में सूक्ष्म कण के रूप में वास करने वाले इस चुम्बक की रचना नष्ट होजाना अर्थात् चुम्बकत्व चला जाना भी स्वाभाविक है।

चुम्बकत्व विषयक और भी दो विलक्षण बातें यदि ध्यानमें रखली गई कि फिर 'स्वर्णचुम्बक' संभाव्य कोटि में ही चमकने लगेगा ऐसा समझना चाहिये।

पहली बात तो यह है कि जिस प्रकार चुम्बक के सजातीय ध्रुव परस्पर कतरा जाते हैं और विजातीय ध्रुव परस्पर आकर्षित करते हैं, उसी प्रकार विद्युद्वाहक तारों का आवरण भी परस्पर विलग जाता और आकर्षित होता है। तांबे के तार के दो आवरणों में से एक खड़े अक्ष के चतुर्दिक घूमता हुआ हो, और दूसरा स्थिर हो तो उन दोनों में से बिजली का प्रवाह जब एक ही दिशा में बहने लगेगा, उस समय उनमें प्रतिसारण क्रिया दिखाई देगी और जब वह प्रवाह विरुद्ध दिशा में बहता होगा, तब वह तांबे के तार का आवरण एक दूसरे को आकर्षित करेगा।

दूसरी बात यह है कि विद्युच्चुम्बक के ध्रुवों में लोहे के सिवाय दूसरे अनेक पदार्थों को खींचने अथवा दूर करने का धर्म (गुण) होता है। निकल, प्लेटिनम, राल, कोयला इत्यादि पदार्थों को ये ध्रुव खींचते हैं, परन्तु जस्त, सीसा, कर्पूर, पारा, तांबा, चांदी, सोना, कांच आदि पदार्थों को ये अलग कर देते हैं।

ऊपर वेबर की जो उपपत्ति कही गई है, उसमें लोहे के सब कण अर्थात् मानों इतने सूक्ष्म चुम्बक ही होते हैं, ऐसे माना गया था। परन्तु ये चुम्बक क्यों माने जाय यह एक प्रश्न रह ही जाता है। इस पर 'ऍम्पीयर' नामक शास्त्रज्ञ का कथन है कि ये चुम्बक अर्थात् सतत बहनेवाले विद्युत्प्रवाह का एक कार्य क्षेत्र ही है। दूसरा एक मत ऐसा भी है कि भौगोलिक चुम्बकत्व उस गोल की अहर्निश गति के कारण प्राप्त हुआ है। 'केल्विन' के मतानुसार द्रव्य के प्रत्येक अणु को पदार्थों की परिवर्तनता से अवरोध न कर सकनेवाली एक 'आवर्तात्मक' गति है।

अणु की यह आवर्तोत्कार गति, विद्युत्प्रवाह चुम्बकता, निकल, सोना, तांबा, कोयला आदि पदार्थों पर चुम्बक की जो क्रिया होती है वह और उस पर से चुम्बक का इन पदार्थों के साथ का विशिष्ट प्रकार का निकट सम्बन्ध; इन बातों पर से स्वर्णचुम्बक के अस्तित्व की पगडंडी कल्पना कोटि से दृष्ट कोटि में किसी दिन अवश्य अवतरित होसकेगी ऐसा कहने में क्या हानि है?

बिजली से भिन्न स्वरूप की किसी शक्ति के कारण स्वर्ण के अणु की अन्तर रचना विशिष्ट प्रकार की होती है और उसके कारण उसमें स्वर्ण के कारण को खींचने का सामर्थ्य आता है। इस प्रकार की खोज आगे क्यों कर न होसकेगी! क्या पहले किसी को स्वप्न में भी इस बात की कल्पना हुई थी कि रेडियम के समान भी कोई पदार्थ होगा? आज तक इस प्रकार की बातें किसी के भी ध्यान में नहीं आईं, इसलिये अब आगे भी न आवेंगी, ऐसा कहना बिलकुल भूल से भरा हुआ है।

लोहचुम्बक को लोहे के सिवाय और भी अनेक पदार्थ खींचते हैं, ये बातें भी आज नई ही हैं। परन्तु इस प्रकार के नये चमत्कारों के कारण शोधक मनुष्य को नई दिशा से प्रयोग और प्रयत्न करने का उत्साह प्राप्त होता है। 'बहुरत्ना वसुंधरा' किसके किस समय किस [illegible] का [illegible], इसका कोई नियम नहीं है! [illegible] की अर्वाचीन इतिहास पर से [illegible] की [illegible] ही [illegible] है। [illegible] स्वर्णचुम्बक ही नहीं [illegible] [illegible], इत्यादि प्रकार के विशिष्ट [illegible] [illegible] होंगे। [illegible] [illegible] [illegible] है!

भारत एक मुंह होकर विरोध कर रहा है, उन कायदों के पास होने से आनेवाले संकट का भारत देश को अनुभव प्राप्त करने देने में हानि ही क्या है? राष्ट्र के कायदों के लिये यदि राष्ट्र की ही सम्मति न हो तो उसे हम कायदा न कह कर जुल्म ही कह सकते हैं। लोकप्रतिनिधियों के नाते हमें कायदा कौन्सिल में बुलाया जाता है सो क्यों? मनमाने कायदे आप पास करें और हम उन्हें सिर झुका कर स्वीकार करें, यदि इतना ही पास करने का उद्देश्य हो तो आप ही लोक प्रतिनिधियों के नाम के भिन्न २ पुतले तय्यार कर उन्हें भिन्न २ प्रतिनिधियों को सदा सर्वदा उपयोग में आनेवाली टोपी अथवा पगड़ियाँ पहना कर कौन्सिल में बिठाइये कि जिससे काम चल जाय, इस प्रकार की सूचनाएँ भी कौन्सिल में की गई। परन्तु यह सब प्रपंच किसके लिये किया जारहा है? एक भी भारत प्रतिनिधि अथवा किसी सार्वजनिक संस्थाने इस कायदे के लिये सम्मति नहीं दी, इसी पर से भारत राष्ट्र का मत स्पष्ट प्रगट हो रहा है। और इतने पर भी भारत की कायदे कौन्सिल ने ये कायदे पास किये ऐसा कहना सत्यापलाप है। गोरे अधिकारी वर्गने और गोरे कौन्सिलरोंने हिन्दुस्तान में बैठकर ये कायदे पास किये, इसी लिये इन्हें हम हिन्दुस्तान की कायदे कौन्सिल के पास किये हुए कायदे नहीं कह सकते। कदाचित् इस प्रपंच के द्वारा विलायती लोकमत को अपने पक्ष में करने का नौकरशाही का विचार हो, परन्तु अब तो यह भी अशक्य है। माननीय दादासाहब खापर्डे के रौलेट कमेटी के रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्तावों के लिये, पार्लमेन्ट सभा में मि० मान्टेग्यू ने उस प्रस्ताव के लिये भारत के प्रतिनिधियों का अधिकतर अनुमोदन न था, ऐसा कहा है और भारत राष्ट्र के दुर्दैव से उस समय हम में के ही कुछ नेताओं को बुद्धि भेद अवश्य होगया था और उसी से मि० मान्टेग्यू ने पूर्ण लाभ उठाया। परन्तु इस बार यह ठगी अथवा यह नजरबंदी करना का अशक्य है। भारतवासियों का कितना ही विरोध होतो भी अपने तर्कशुद्ध विचारों को छोड़ने के लिये सरकार तय्यार नहीं है। लौन्डस साहब के इस विधान के प्रति भारत के नेता भी अपनी

बुद्धि सरकार के यहां गिरवी

लेकर उन्होंने व्यक्तिशः सक्रिय विरोध प्रगट करने की एक उत्तम संधि को खो दिया-यही सिद्ध होता है। उनके त्यागपत्र से बिल सम्बन्धी उनका विरोध स्पष्ट होता है। इस्तीफा लौटा लेने से बहुत तो उन की राजकीय सुधारणा सम्बन्धी अन्तर्वेदना ही अधिकता सिद्ध होती है। परन्तु पाल में पकने के लिये रखे हुए इस सुधारणा रूपी आम में शुरू से ही रौलेट बिल रूपी कीड़ा लग गया है, यह बात उनके ध्यान में नहीं आती इसी पर बड़ा आश्चर्य होता है। मा० जिन्हा के इस्तीफे से अलबत्ता नौकरशाही के पक्षपाती पत्रकारों की नाक में मिर्चो लग गई हैं, और उन्होंने मा० जिन्हा के त्यागपत्र से सूर्य का उदय अस्त होना नहीं रुक सकता इस प्रकार की निरर्थक टीका की है। एक बात का अलबत्ता इन टीकाकारों को स्मरण करा देना आवश्यक जान पड़ता है कि सूर्यनारायणने ऐसे अनेक

जुल्मी कायदों का जनन मरण

दोनों देखे हैं, यही नहीं बरन् जुल्मी कायदे या, ऐसे कायदे प्रसव करने वाली अनेक राज्यपद्धतियों का भी जनन मरण देखा है। इस विषय में प्रजापक्ष का एक कर्तव्य अलबत्ता श्रेष्ठ है, और वह यह है: कि वह इस प्रकार की टीकाओं की पर्वाह न कर अपने इन नेताओं के प्रति सदासर्वदा कृतज्ञ बना रहे, यही नहीं बरन् कौन्सिल के आगामी निर्वाचन में भी उन्हेंही चुनदे। प्रत्येक बार लोकपक्ष की ओर से इन नेताओं का चुनाव हो, और उन नेताओं को प्रत्येक बार जब तक कि रौलेट बिलों का अस्तित्व बना रहे—हम कौन्सिल में काम नहीं करेंगे ऐसा स्पष्ट सुना कर अपने पद का त्यागपत्र देना चाहिये, यही सब प्रकार से ठीक होगा। कौन्सिल के विषय में यही सच्चा सत्याग्रह है, और इसका परिणाम भी जो कुछ कि होना चाहिये अवश्य होगा। लोकपक्ष की ओर से चुने हुए लोगों का यह सत्याग्रह अवश्य यशस्वी होगा और यदि उसमें सफलता न भी मिली, तो भी वर्तमान कौन्सिल की रचना कितनी सदोष है, और हिन्दुस्तान की नौकरशाही की सत्ता कितनी एकतंत्री है, यह बात सिद्ध हुए बिना न रहेगी। परन्तु परिस्थिति और बलाबल का विचार करते हुए ऐसा नहीं जान पड़ता कि, केवल इतनामाही सत्याग्रह नौकरशाही को रौलेट बिल उठा लेने के

' दिल्ली की रुधिरप्रियचंडी—'

सत्याग्रह के समान सात्विक, निरुपद्रवी, दैवी आन्दोलन में भी अपनी रक्त की तृषा को शांत कर लेगी, ऐसी किसी को आशा तो क्या कल्पना तक न थी। दोष किसी का भी हो। दिल्ली के फौजी लोगों की गोलियों से आठ दस मनुष्य मारे गये और पांच पचास मनुष्य घायल भी हुए, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। महात्मा गान्धी की अनुज्ञानुसार दिल्ली में दोनों बार देह दण्ड और देह शुद्धि के लिये सब लोगोंने उपवास किये। एक दिन सब बाजार बन्द और सारे व्यवहार बन्द रहे। बम्बई की तरह दिल्ली में अधिकांश सभी गाड़ी वालोंने उस दिन अपनी गाड़ियां बन्द रखीं। बुरे में से भी भला पैदा हो जाता है, और चन्द्रमा को ढँक देनेवाले कृष्ण मेघों से भी जीवन मिलता है। ये बातें कुछ असत्य नहीं हैं। सत्याग्रह के आन्दोलनने पहले सपाटे में ही हिन्दू मुसलमान समाज का एकीकरण कर दिया है। आज तक अनेक प्रसंगों पर हिन्दू मुसलमानोंने सत्कार्यार्थ अपना रक्त बहाया है, परन्तु सत्याग्रह के समान सात्विक परमेश्वरी प्रेरणा से प्रचलित होनेवाले आन्दोलन में की पवित्रता उनमें न थी। सत्याग्रह की सात्विक लड़त में काम आनेवाले इन वीरों के रक्त से हिन्दू मुसलमानों की आत्मायें एक सूत्र में बंध गई हैं। मुसलमानों की मसजिद में हजारों हिन्दुओं ने मृत भाइयों की आत्मा के लिये प्रार्थनायें की, और हजारों मुसलमानोंने हिन्दू प्रेतों के साथ स्मशान जाकर अपना आदर भाव व्यक्त किया, इस पर से भी यही बात सिद्ध होती है। सत्याग्रहकी दैवी शक्ति और पुण्य पावनत्व के लिये इनसे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है? महात्मा गान्धीने 'भारत के राजकीय आन्दोलन, में एक नवीन युग आरम्भ कर दिया ऐसा कहने में कोई हानि न होगी। कौंसिल के वाद विवाद के समय हताश होकर मा० जिन्होंने कहा था कि " अब से आगे के लिये सर्कार के हठ के सम्मुख हमारी अकल काम नहीं कर सकती, हमारा वाक्चातुर्य, मुसद्दीपन के दांव पेंच, और हमारी वकीली युक्तियां सब बेकाम होगई। अब हमारी रक्षा के लिये दूसरी ओर से पारलौकिक शक्ति प्राप्त हुए बिना काम नहीं चल सकता " । मि० जिन्हा के इस प्रकार के उत्तर स्वरूप में ही कहिये कि महात्मा गान्धीजीने सत्याग्रह का आन्दोलन आरम्भ कर दिया। आज तक जो बातें नहीं हो सकी थीं उन्हें यह आन्दोलन प्रत्यक्ष सिद्ध करके दिखा रहा है। यह आन्दोलन मानों अशक्तों की शक्ति, असमर्थों का सामर्थ्य और सात्विक बल के धक्के की तरह विरोधात्मक है। मानों इन्हीं सब बातोंको सिद्ध करने के लिये ही सर्व संग परित्याग करके अपने पूर्वाश्रम का चरित्र नाम, पूर्वाश्रम के नाम और उद्योग की आहुति दे डालनेवाले आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता ' महात्मा मुन्शीरामजी ' किम्बहुना नये नाम से सम्बोधन किये जानेवाले स्वामी श्रद्धानन्दजीने इस आन्दोलन में अग्रस्थान ग्रहण किया है। अभी उस दिन वाले दिल्ली के दंगे के समय दस मनीपुरी फौजी सिपाहियोंने अपनी बन्दूकें सामने कर गलेसे संगीन अड़ा कर ' सिर देर देंगे' इस प्रकार की धमकी देने का ज्योंही प्रयत्न किया कि, शरीर पर का एक रोम भी न हिलने देकर आपने

' मैं खड़ा हूँ गोली चलाओ '

कह कर उनका आवाहन किया। उन बिचारों को क्या मालूम हो कि हमारे सामने खड़े हुये शस्त्रास्त्र से सुसज्जित मानवी शत्रु न होकर दैवी शक्ति से प्रेरित स्वामी श्रद्धानन्दजी ही प्रत्यक्ष खड़े हुए हैं। इस शक्ति के सामने आधुनिक शस्त्रास्त्रों की क्या बिसात? उन सिपाहियों की संगीन न चल सके। स्वामीजी के नेतृत्व में दिल्ली और पंजाब में यह सत्याग्रही आन्दोलन सात्विक मार्ग से उपरोक्त प्रकार से हो रहा है। सारांश हिन्दुस्थान में एक नये युग का आरम्भ हो रहा है, अतः इस सत्याग्रह रूपी पर्व प्रसंग पर प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी को सत्याग्रह की इस गंगा में स्नान कर अवश्य अपने को पवित्र कर लेना चाहिये। दुर्दैव की बात है कि हम में के ही कुछ नेताओंने इस आन्दोलन सम्बन्धी अपना अनादर आरम्भ में ही व्यक्त कर दिया। इस बात से ही लाभ उठा कर सर विलियम विन्सेंट सरीखे कौंसिल मेम्बरने कौंसिल में स्पष्ट कर दिया था कि, सत्याग्रह के आरम्भ से सर्कार पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ सकेगा, और इसी भुलावे में आकर बम्बई के कुछ पण्डितम्मन्य आत्मघातकी, दुष्ट दुरात्माओंने महात्मा गान्धी और उनके आन्दोलनकी अवहेलना करने का कार्य आरम्भ किया है। सत्याग्रह का आन्दोलन किसी को पटे या न पटे, बुद्धि की दृष्टि से उसमें किसी का कितना ही मत भेद होतो भी, उसे व्यवहार में लाने के लिये भी भिन्न २ विचार प्रचलित हों, किंबहुना और भी एक सिढ़ी ऊपर जाकर कहा जाय तो मानो प्रत्यक्ष आचरण में कोई लावे या न लावे परन्तु एक बात निर्विवाद है कि इस आन्दोलन में किसी प्रकार का पाप नहीं है, इस आन्दोलन के मूल में पवित्र देश भक्ति है इस पवित्र गंगा का उद्गमस्थान सात्विक प्रवृत्ति है और इसी लिये इस आन्दोलन के पुरस्कर्ता की अवहेलना करनेवाला मनुष्य देश-द्रोही है। यदि किसी को इस आन्दोलन में या इस लड़त में हाथ डाल कर कन्धे से कन्धा भिड़ा कर सम्मिलित न होना हो वह खुशी से इससे दूर ही रहे, किन्तु इस मार्ग में काँटे बिछाने का पातक आलबत्ता किसी को अपने सिर न लेना चाहिये, हिन्दुस्थान में सत्याग्रह के आन्दोलन का पवित्र वातावरण उत्पन्न होने के साथ ही देश के सौभाग्य से विलायत और योरोप में भी भारत स्वराज्य सम्बन्धी अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न होने के चिन्ह दीखने लगे हैं। स्वराज्य विरोधियों में यदि किसी को अग्रस्थान देना हो तो वह मान हमारे भूत पूर्व गवर्नर लार्ड सिडनहम साहब और उनके एण्डो-ब्रिटिश एसोशियन को ही देना चाहिये। लार्ड सिडनहम साहब को विलायत में लोकमत दूषित करने की अमूल्य सन्धि भी प्राप्त हुई थी। ब्राह्मण अब्राह्मण का वाद मचा कर इसी के बल पर अपना स्वराज्य विरोधी हठ पूरा करने का इन्होंने दांव रचा था। परन्तु अभी उस दिन एक सार्वजनिक मौके को साध कर लार्ड सिंह और बीकानेर के महाराजने सभा में उन पर लगुड़ प्रहार किया। क्या उनके भाषण पढ़ कर भी यहां की उनकी अनुयायी मण्डली जागृत होगी? लार्ड सिडेनहम के आन्दोलन का पलस्तर बिखेरनेवाली यह मण्डली

सारी ही ब्राह्मणेतर

लोगों की है, इस बात को उन्हें खूब ध्यान में रखना चाहिये। ब्राह्मण ब्राह्मणेतर का प्रश्न कृत्रिम है, किन्तु यदि उसे सच्चा भी मान लिया तोभी यह प्रश्न आपसमें ही हल होसकने जैसा है, यह बात अब सर्वमान्य हो गई है। स्वराज्य के लिये यदि बाधक रूप में ब्राह्मण्य ही हो तो अलबत्ता उसे अलग कर देना चाहिये, और ऐसा करने के लिये आज समस्त विचारवान ब्राह्मण तय्यार हैं। लार्ड सिंह और बीकानेर के महाराजाने इस विषय में बहुत अच्छा काम किया है। कुछ डरपोक मनुष्योंने स्वराज्य की योजना भी व्यर्थ हो जायगी, इस प्रकार का हौआ खड़ा किया था, किन्तु भारत मन्त्री मि० मान्टेग्यू और लण्डन टाइम्स ने यह भय दूर कर दिया है, यही नहीं बल्कि २० अगस्त के घोषणापत्र में निश्चित की हुई मर्यादा में के सारे अधिकार हमने अपनी योजनामें दे दिये हैं, इस प्रकार लार्ड चेम्सफोर्ड ने भी भ्रम उत्पन्न करने का प्रयत्न किया था, परन्तु सुधार योजना अभी पूर्णावस्था को प्राप्त नहीं हुई, ऐसा आश्वासन मि० मान्टेग्यूने दिया है। एक दृष्टि से यह बात आनन्द की है, परन्तु इसमें धोखा भी है। नई सुधार योजना किस स्वरूप की होगी, इसके विषय में अत्यन्त अनि-श्चितता उत्पन्न हो गई है। परन्तु हिन्दी स्वराज्य संघ के अध्यक्ष डॉ-एर ' ओमिरा [illegible] ' जो अभी ही विलायत से आये हैं, और इन्होंने अपने दो वर्ष के विलायत के अनुभव का निष्कर्ष समझाया है कि, विलायत में की आज कल की परिस्थिति ऐसी है कि किसी भी राजकीय सुधारणा की योजना कहांसे सामने रखो कि, फिर वह पास हुए बिना न रहेगी। उनके कथनानुसार आज योरोप में ऐसी हवा बह रही है कि भारत को शीघ्र ही स्वराज्य के तत्वों का लाभ मिले बिना न रहेगा। मि० तिलकने भी स्वराज्य के सारे झगड़ों का मूल नष्ट करने का काम किया है। स्वराज्य के इस सब उद्योग और प्रयत्न करनेवालों सब नेताओं का आत्मबली आध्यात्मिक [illegible] रहे हैं।

महायुद्ध के पांचवें वर्ष का मार्च मास

(लेखक—श्री० कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर बी. ए.)

मार्च के दूसरे सप्ताह में प्रे० विल्सन पैरिस लौट आये और पूरा महिना भर सन्धी के उपक्रम में व्यय हुआ। सन्धि के सम्बन्ध में पंच-महाराष्ट्रों में विशेष मतभेद होने, और रशिया में बालशेविकों के मत का प्रसार योरोप भर में झपाटे से बढता रहने से कारण अप्रैल के आरम्भ में भी सन्धी के उपक्रम को निश्चित स्वरूप प्राप्त नहीं हुआ, तथापि यह बात प्रसिद्ध कर दीगई है कि अप्रैल के अन्त में जर्मनी के वकीलों को पेरिस में बुला कर मई में सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करा लिये जायँगे। पंच महाराष्ट्रों में मतभेद होने के कारण इस प्रकार हैं:— (१) राष्ट्रसंघ के कार्य और उसकी व्याप्ति के सम्बन्ध में एक मत नहीं है। (२) फ्रांस को राइन तक का जर्मनी का प्रदेश दिया जाय या नहीं इसके सम्बन्ध में अभी झगड़ा है। (३) इटली को आड्रियाटिक समुद्र का बाल्कन प्रदेश वाला किनारा देने के सम्बन्ध में अभी वाद है। (४) जापान को चीन सम्राज्य पर कहां तक दृष्टि रखना चाहिये, इस विषय में चीन और जापान में झगड़ा है। (५) बालशेविकों के विरुद्ध किसे कितनी सेना भेजनी चाहिये, इस बात का अभी तक निश्चय नहीं हुआ। इन्हीं पांच मुद्दों के सम्बन्ध में मार्च में बड़ी देर तक भवति नभवति हुई। ये मुद्दे ही इस स्वरूप के हैं कि वादविवाद से सब का समझौता होकर इनका निर्णय होसकना अशक्य है। सन्धी की शर्तें अंतिम स्वरूप में कागज पर लिख कर तय्यार होने तक इन मुद्दों के सम्बन्ध का वादविवाद होता ही रहेगा और सन्धी होकर चारों ओर शांति स्थापित होजाने पर भी वह वादविवाद बंद नहीं होगा। इस कारण सन्धी के समय मौके को देख कर प्रे० विल्सन, और मि० लायड जार्ज ये दोनों मिल कर जो निर्णय करेंगे उसी का उल्लेख मात्र सन्धी में किया जायगा। इस प्रकार का निर्णय स्थायी रूप में न होसकेगा। इसके सिवाय बालशेविकों के मत का प्रसार होने के कारण पेरिस में आगामी मास में होनेवाली सन्धी निर्णयात्मक स्वरूप की बनाना भी अशक्य है। योरोपखण्ड की स्थिति ही बालशेविकों ने अस्थिर बना दी है, और इस अस्थिर स्वरूप में समयानुसार स्थिरता उत्पन्न हुए बिना पेरिस की सन्धि को स्थायी रूप भी कैसे प्राप्त होसकता है? प्रे० विल्सन के मतानुसार साम्प्रतिक सन्धि और परिस्थिती में यदि कहीं स्थायीपन के अंकुर हों तो वे केवल राष्ट्रसंघ में ही होसकते हैं। सन्धिपत्र से यदि राष्ट्रसंघ सुव्यवस्थित दशा में स्थापित किया जासका तो राष्ट्रों की परस्पर की स्पर्धा, प्रजाजन और राज्यकर्ताओं के बीच के टंटे फिसाद, दुर्बलों पर सशक्तों की चलाई जानेवाली सत्ता तथा संग्रही वर्ग और बालशेविकों के बीच का वैर इन सब दुःखों पर मानव जाति के हाथ में एक उत्तम औषधि आजाने जैसा होगा। राष्ट्रसंघ का भावार्थ समस्त भिन्न २ राष्ट्रों पर मोटी २ बातों के विषय में हुकूमत चलानेवाली परराष्ट्रीय नई सत्ता होसकती है। योरोप खण्ड में दोसौ वर्ष पूर्व वेस्टफेलिया की सन्धि होजाने के बाद धर्म सम्बन्धी परराष्ट्रीय सत्ता की अवहेलना कर दीगई और राष्ट्रीय भावना को प्रधानता मिली। राष्ट्र अपना हित देखे और राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों में अपने राष्ट्र की श्रेष्ठता कैसे प्राप्त होती है इस बात को सामने रख सब को व्यवहार करना चाहिये, ऐसा उस समय निश्चय हुआ। इसके पूर्व ख्रिस्त धर्म और मुहम्मदी धर्म के नेता अपने २ धर्मवाले सब देशों और राष्ट्रों पर धर्मसंघ के नाम से प्रे० विल्सन के वर्तमान राष्ट्र-संघ की तरह परराष्ट्रीय सत्ता चलाते थे, अपने धर्म का उत्कर्ष, प्रसार और रक्षा इनसे सम्बन्ध रखनेवाले कर्तव्य परराष्ट्रीय कर्तव्य समझे जाते, और प्रत्येक राष्ट्र और जनसमूह इन कर्तव्यों को मान देकर अपने २ राष्ट्र का हितसम्बन्ध और महत्वाकांक्षा परराष्ट्रीय सत्ता से निश्चित [illegible] मर्यादा के भीतर रख कर रखता रहते थे। इस धार्मिक सत्ता [illegible] के कारण [illegible] इस परराष्ट्रीय [illegible] सम्बन्ध [illegible] [illegible] परन्तु अनुभव में [illegible] युद्ध बंद नहीं हुए। ख्रिस्ती धर्म, मुहम्मदी धर्म, हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म ऐसे नाना प्रकार के धर्म और सम्प्रदाय परस्पर लगातार झगड़ते रह कर व्यक्ति की शिष्टता और यश आराम आदि समस्त दुष्ट वासनाएँ धर्म स्थापना से और धर्म संगोपन से ही संलग्न होकर मानव समाज के लिये धर्मसंघ ही अन्यायी व्यक्ति की दुष्ट और लहरी सत्ता से भी अधिक दुःखदायी हुआ। भले, समझदार और सत्ताधारी नेताओं की सभा के सन्मुख किसी जनसमूह का दुःख ताक में रख देने की तरह यदि खुले रूप में रखा गया तो उस रोग पर समयानुसार ही औषधि लग कर उसके प्रसार से भावी संकट टल जायँगे, इस प्रकार का विश्वास पूर्वकालीन धर्म-संघ के मूल में था, और यही विश्वास आज राष्ट्रसंघ पर भी है। भिन्न २ प्रमुख धर्मों के सिवायें संप्रदाय बहुत बढ़ते जाकर उनमें परस्पर लड़ाइयाँ शुरू होजाने से धर्म-संघ निरुपयोगी होगये। वर्तमान कालीन प्रे० विल्सन का राष्ट्रसंघ पंचमहाराष्ट्र के प्रमुख राजकीय तत्व जब तक एक स्वरूप के हैं, तब तक ठीक चलेगा, और लोकशाही प्रस्थापित करके राष्ट्रीयत्व की भावना में की अन्धभक्ति को मर्यादित करने में उपयोगी होगा। परन्तु इस राष्ट्रसंघ की स्थापना के समय से ही लोकशाही के अनुयाइयों में भिन्न २ साम्प्रदाय उत्पन्न होने लगे हैं, और उनमें परस्पर युद्ध होना अपरिहार्य बन रहा है। व्यक्तिगत राजकीय सत्ता को मर्यादित करने सम्बन्धी लोकशाही के तत्व प्रमुख पंच महाराष्ट्रों को आज मान्य हैं, परन्तु इस राज्याकांक्षा के पीछे खड़ी हुई धनैषणा कैसे मर्यादित की जाय इसके लिये योरोप में भयंकर टंटे मच रहे हैं। आज धनैषणा मर्यादित करनेवाला अत्यन्त घोर और निर्दयता युक्त मार्ग रशिया के बालशेविकों के ग्रहण कर लेने के कारण प्रे० विल्सन के राष्ट्रसंघ को उन बॉलशेविकों से लड़ना अपरिहार्य होगया है। मार्च महिने में तो इन बालशेविकों के मत का प्रसार, विशेष कर हुआ है। सन्धी सम्बन्धी उपक्रम में किसी के लिये कोई बात अप्रिय होरही है ऐसा विदित होते ही वह तात्काल बालशेविक पक्ष को स्वीकार करने की धमकी देने लगता है, और उस धमकी का अनुसरण कर सन्धि के उपक्रम को नई ओर प्रेरित करना पड़ता है। रशियन बालशेविकों के पड़ोसी योरोप देश का अर्थात् पौलेण्ड का नया राज्य, युक्रैन प्रांत, रूमानिया और जेकोस्लावों का नया राज्य ये चार प्रांत होते हैं। इन प्रांतों के सम्बन्ध में विगत दो महिने तक प्रत्येक प्रकार की चर्चा बालशेविकों की दृष्टि से हुई। युक्रैन प्रांत पहले मित्र सर्कार के पक्ष में हुआ, और कालेसागर में होकर ऐंग्लो फ्रेन्च सेना ओडेसा बन्दर पर उतरी। मित्र सर्कार की इस सेना की सहायता मिलने से युक्रेन की सेना बालशेविकों की अच्छी तरह खबर लेगी, ऐसा महिने भर पहले जान पड़ता था, परन्तु आष्ट्रिया का लेम्बर्ग प्रांत पौलेण्ड की सेना के अपने अधिकार में कर लेने के कारण युक्रैन की मित्र सर्कार पर की निष्ठा उठगई। क्योंकि युक्रैन को लेम्बर्ग प्रांत अपने लिये चाहिये था। युक्रैन ने तत्काल ही अपनी सेना लेम्बर्ग की ओर भेजी और लेम्बर्ग शहर को घेर लिया। युक्रैन और पोलैण्ड में इस प्रकार की लड़ाई छिड़ जाने और मित्र सर्कार पोलेण्ड की पक्षपाती होने से युक्रैन प्रांत बालशेविकों को [illegible] और इसी कारण रूमानिया को आवश्यकता से अधिक प्रसन्न करने के लिये मित्र सर्कार को विवश होना पड़ा [illegible] और हंगेरिया में बालशेविकों का [illegible] प्रवेश न कर सके [illegible] हंगेरियावासी पूर्वी [illegible] मित्र सर्कार [illegible] अपने कब्जे में करने का विचार किया। इस विचार के कारण हंगेरिया का [illegible] पड़ा। जेकोस्लावों का नया राज्य [illegible] करने के लिये हंगेरिया को [illegible] उत्तर की ओर [illegible] [illegible] देना पड़ा। [illegible] [illegible] [illegible] देना पड़ा। [illegible] रूमानिया को [illegible]

भर के निर्धनों को धनिकों से युद्ध कर उनका नाश करने के बाद उन की सम्पत्ति पर अधिकार जमा कर सारी सम्पत्ति सामाजिक स्वरूप की बना देने का बीड़ा उठाया है। जिन्हे क्लासवार अर्थात् जिसे उच्च वर्ग और नीचे दर्जे के लोगों के बीच का युद्ध कहते हैं, वह द्वेपाग्नि रशिया ने भड़का दी है। इसमें पुराने धनाढ्यों को जला कर खाक में मिलाये बिना देश की सम्पत्ति को सामाजिक स्वरूप प्राप्त नहीं होसकता और मनुष्य की धनैपणा मर्यादित न होगी, इस प्रकार रशियन बालशेविकों का आग्रह है। देश में की सम्पत्ति सामाजिक स्वरूप की बनजानी चाहिये, सोशियालिष्टों की इस शिक्षा को पद्धतियुक्त और सप्रामाण रीति से सिखाने का काम जर्मनी ने किया है। तब इस विषय में जर्मनी, रशिया के गुरुस्थान पर बैठ गया है, ऐसा कहने में हानि न होगी। चेला-अलबत्ता आज गुरू से आगे बढ गया है। जर्मनी में राज्यक्रांति होकर स्थापित की हुई लोकशाही सामाजिक यानी सोशियालिष्ट स्वरूप की है। इंग्लैण्ड, फ्रांस में सादे स्वरूप की है। जर्मनी आज ऐसा नहीं कहता कि धनिकों के कारखाने उन्हें बिना किसी प्रकारका बदलादिये अधिकार में कर लिये जाँय, परन्तु रेल गाड़ियाँ, खदानें आदि बडे २ कारखाने सामाजिक मिल्कियत के होने ही चाहिये, इस भांति नई जर्मन सरकार ने जाहिर किया है। रशिया में की मारपीट के बिना यह स्थिति प्राप्त नहीं हो सकती इस प्रकार कहनेवाला बालशेविकों का पक्ष जर्मनी में, सबल बनता जाकर वहां चारों ओर दंगा शुरू होगया है। और हड़तालें होने लगी हैं, तथापि नई जर्मन सर्कार का आसन अभीतक डांवाडोल नहीं हुआ है। बव्हेरिया अलबत्ता अप्रेल के प्रथम सप्ताह में खुलमखुल्ला बालशेविकोंका मतानुयायी बन गया है। और रशिया मेंकी द्वेषाग्नि बव्हेरिया खुले रूप में भड़काने लगा है। हँगेरी में भी बालशेविकों के हाथ में सत्ता है, परन्तु हंगेरियों चिन गारी अभी दृष्टिगोचर नहीं होने लगी है। आवश्यकता पड़ने पर बालशेविक बनने की आष्ट्रियाने भी तय्यारी करली है। पोलेण्ड में अन्धाधुन्धी मच कर युद्द रुमानिया में भी बालशेविक कब सिर उठा खड़े होंगे, इसका कोई नियम नहीं। मित्र सर्कार के पूर्ण कृपा पात्र सर्बिया में भी बालशेविकों का प्रसार शुरू होकर इस रोग की बाधा ग्रीस को न लग जाय, इसके लिये वहाँ में फौजी अमल जारी कर दिया गया है। अर्थात् सारा मध्य योरोप और बाल्कन प्रदेश के कुछ भाग पर बालशेविकों की छाया गिर कर ये मत इंग्लैण्ड फ्रांस और इटली पर भी दृष्टि डालने लगे हैं। इंग्लैण्ड और फ्रांस इन दो देशों में सोशियालिष्टिक मत का उत्तमांश ग्रहण करने को हानि नहीं, इस प्रकार की स्वीकृती भी आज सत्ता धारियोंने दे दी है। मजदूर और पूंजीवालों के बीच का सम्बन्ध सोशियालिष्टिक दृष्टि से जांच कर आज ठीक ठीक कर लिया जाय, और नये उद्योग धन्धे और कारखाने सब सामाजिक बनाकर इस नये प्रयोग में यश प्राप्त होने पर पुराने पर भी [illegible] कदम दिया जाय, इस प्रकार [illegible] का [illegible] और [illegible] स्वीकार करने की ओर इंग्लैण्ड और फ्रांस का [illegible] हुआ है। अर्थात् सोशियालिष्टिक मत की दृष्टि से [illegible] [illegible] [illegible] पर [illegible] गई है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], इसका कोई नियम नहीं। [illegible], पूर्व

की संस्थाएँ कायम रख कर नये प्रयोग करके देखना चाहता रशिया, जर्मनी और इंग्लैण्ड इन तीन स्थानों में उपरोक्त तीन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सोशियालिष्टिक मतों को एक प्रकार का देना इंग्लैण्ड और फ्रांस के लिये अनिवार्य हो गया है। किंबहुना मजदूर दल और बहुजन समाज को वह दिदिया जाकर सोशियालिष्टिक मत निंद्य और गर्हणीय होने से रणभूमी पर ही विनष्ट कर देते हैं, इस बात को प्रगट करने की हिम्मत इंग्लैण्ड और फ्रांस के सत्ताधारियों में शेष नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इंग्लैण्ड, फ्रांस इटली और अमेरिका में से जिसे चाहे वह रशिया के बोलशेविकों पर नहीं भेजी जा सकती। प्रत्येक के मत की परिक्षा करके वह कितने अंश में सोशियालिष्ट या शेविक मत का है, इसको देख लेने के बाद ही बालशेविकों पर जानेवाली सेना में उसकी भरती की जा सकती है। इंग्लैण्ड फ्रांस का प्रजावर्ग सैनिक के नाते यदि अधिक समय तक र की भूमी में रहे तो बालशेविकों के मत संसर्ग दोष से उनके में प्रविष्ट हो जायँगे उनके स्वदेश को आने पर, बालशेविकों का रोग इंग्लैण्ड फ्रांस में आपही जायगा ऐसा भी कि ही लोगों को भय रहा है। रशिया बालशेविकों को नामशेष करना यह काम रशिया लोगों और पड़ौसि से ही हो सकता दूर के परकीय लोगों वहां जाकर यह करना मानो रोग प्रसार में सहायता चाना ही है, ऐसा कितने ही लोगों कथन है। लेनिन [illegible] बालशेविकों के [illegible] खुलमखुला करते हैं परकीय देश की [illegible] सेना हमारे देश आवेगी, उसको [illegible] है, क्योंकि केवल [illegible] और सिखावन [illegible] और उन्हें अपने मतानुयायी बनालेंगे। सोशियालिष्ट और [illegible] की द्वेषाग्नि के तत्वों का प्रसार करने के लिये रशियाने [illegible] और अपनी शिष्य मण्डली भेज रक्खी है। चीन, जापान और [illegible] स्तान में भी उन्हें अपनी सिखापन का कार्य करते रहना इसकी ताकीद करदी गई है। इसके सिवाय अपने मत के कार्य के लिये लेनिन सर्कार पानी की तरह पैसा बहाती है। [illegible] में रशिया में के लेनिन विरुद्ध पक्ष को [illegible], [illegible] पोलेण्ड, झेकोस्लाव और रोमेनियन्स लोगों की सहायता के बालशेविकों का पक्ष उलट देने के सिवाय और कोई मार्ग [illegible] के लिये खुला हुआ नहीं है। इस मार्ग से जाने [illegible] [illegible], रुमानिया और पोलेण्ड को युद्ध करने के काम [illegible] यदि बिचक गया कि, हंगेरी की सर्कार बालशेविक [illegible] [illegible] ही समझिये। पोलेण्ड को बाल्टिक समुद्र पर [illegible] [illegible] [illegible] का बन्दरगाह दिया जा रहा है, [illegible] भी बिचक उठा है, और बालशेविकों के विरुद्ध [illegible] [illegible] [illegible] भी—[illegible] देश बालशेविक हो जाय [illegible] नहीं परन्तु [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] प्रकार से कट रहे हैं। जर्मनी की इस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] है।

अद |आरातियिका भी है । यह अंक भी सब प्रकार की राष्ट्रीय सामग्री से भरा पुरा है । हम इसके सुयोग सम्पादक पं० रामप्रसादजी मिश्र को इस सफलता के लिये बधाई देते है । इस की पृ०सं० ३२ और मूल्य ।) है । पता मैनेजर उत्साह उरई जिला जालौन

मृत्यु लेख ।

स्व० प्रोफेसर हरि गोविंद लिमये ।

खेद है कि विगत २६ फर्वरी को अचानक ही आप की मृत्यु होगई । आप एक आदर्श व्यक्ति थे । फर्ग्यूसन कालेज में विद्यार्थी के नाते अपना अभ्यासक्रम पूर्ण कर पहले फेलो और फिर प्रोफेसर के नाते आप कालेज के कार्य में लगे रहे । १८ वर्ष तक आपने कालेज के इतिहास और अर्थशास्त्र की प्रोफेसरी की । आप का शिक्षा देने का ढंग उत्तम होने के साथ ही आप का स्वभाव प्रेम-युक्त और प्रसंगानुसार विनोदी भी था, इस कारण विद्यार्थी वर्ग को आप के अध्यापन के समय बड़ा आनंद प्रतीत हुआ करता । इसके सिवाय विद्यार्थियों के डिबेटिंग क्लब में भी जब आप अध्यक्ष बनते थे तो फिर वादविवाद का खासा समां बँध जाता था । राजकार्यमें आप नर्मदल के थे । तथापि आपने अपनी चतुरता से कितनेही प्रसंगों पर बढ़िया स्वाभिमान प्रगट किया था । राजनिष्ठा की शपथ लेने सम्बन्धीसरकारी हास्यास्पद सूचना डेक्कन एजुकेशन सोसायटी द्वारा

हटादीगई, जिस का मुख्य श्रेय आपको ही प्राप्तहै । इसके सिवाय जब बंबई के विशप पूना के अपने व्याख्यानों में हिन्दुस्तानी लोगों कीपात्रता सम्बन्धी भलते ही विधान करने लगे, तब प्रोफेसर सा०ने जो स्पष्ट और साधार उत्तर दिया उसे कई लोग अभी तक न भूले होंगे । योरोपियनों से घरू संभाषणों में भी ये इसी प्रकार की स्पष्टवादिता स्वीकार करते थे । साम्प्रत परिस्थिती में प्रो० लिमये का मत विशेष रूप से ध्यान में रखने योग्य है । इसके सिवाय आपका प्रिय विषय 'मराठों का इतिहास' था । गत २०।२२ वर्षों में आपने अपने अवकाश का समय व्यय कर इस विषय का अच्छा अभ्यास किया था । इस अभ्यास का परिपक्व फल ग्रंथ रूप में प्रगट करने की रूपरेखा आपने अंकित कर रक्खी थी । आप बारंबार कहा करते थे कि 'मराठों का इतिहास-योरोपियन लोगों द्वारा लिखे जाने के दिन चले गये' और किंकेड साहब की नई पुस्तक की 'इन्डियन रीव्यू' में आपने अभी दो महिने पूर्व ही खासी आलोचना की है, उस पर से आपकी मार्मिक लेखन शैली का आदर्श जाना जासकता है । मराठों के इतिहास सम्बन्धी जो साधन सामग्री आज तक प्रकाशित हुई है, वह एम० ए० की परीक्षा में इस विषय को लेकर बैठनेवाले विद्यार्थियों के लिये सुलभ हो, इसके लिये आपने एक उत्तम सा नोटबुक तय्यार कर दिया था, जिसके छपने की तयारी भी होरही थी । इसके सिवाय प्रो० राजवाडे, खरे, पारसनीस, आदि के ग्रन्थों के चुने हुए पत्रों की तीन चार जिल्दें छापी जाँय और उनका अंग्रेजी में भी अनुवाद हो । जिससे सभी विश्वविद्यालयों के लिये यह सुलभ होजाय इस प्रकार उनके कार्यक्रम की भावी दिशा थी । सारांश प्रो० लिमये की पिछली आयुष्य की अपेक्षा आगे के दस बीस वर्ष अधिक फलप्रद होने की आशा थी । ऐसे समय अचानक ही आपका स्वर्गवास होजाने से आप के रिक्त स्थान की पूर्ति कालान्तर में भी होना असंभव जान पड़ता है । ईश्वर आपकी आत्मा को सद्गतिप्रदान करे ।

कै० हरि नारायण आंपटे

आप का जन्म ई० स० १८६४ की ८ मार्च को हुआ था । आपकी शिक्षा प्रिवियस तक हुई । आप के चाचा श्री० महादेव चिमणाजी आपटे की इच्छा थी कि उनकी भांति आप भी एल-एल बी होकर वकालत करें, परन्तु योगायोग वैसा न था । आप का गणित विषय शुरू से ही कच्चा होने से कहिये, अथवा आप की बाल्यावस्था से ही वाङ्मय सेवा की धुन के कारण कहिये-कि आप को कालेज के अभ्यासक्रम में यश प्राप्ती न हुई । एल एल बी० नहीं तो अलबत्ता बी० ए० तो भी हो जाने की आप की उत्कट इच्छा थी, और यह बात आप समय २ पर अपने मित्रवर्ग से कहा भी करते थे । यही नहीं वरन् गणित को छोड़ कर कालेज की परीक्षा दी जा सकती है या नहीं इसके लिये आपने इलाहाबाद आदि यूनिवर्सिटियों से पूछ ताछ भी की थी । कालेज

से छूटने पर आप कै० विष्णु शास्त्री चिपलनकर के स्थापित हुए नूतन मराठी विद्यालय में अध्यापक का कार्य करने [illegible] उसी समय आप की मित्र मण्डली द्वारा वाङ्मय-विहारी मण्ड[illegible] स्थापना हुई, और उसके द्वारा चलाये जानेवाले मनोरंजन और [illegible] चन्द्रिका इन दो मासिक पत्रों में आप लेख भी लिखने लगे । [illegible] मराठी विद्यालय से अंग्रेज स्कूल और कॉलेज संयुक्त करने में आपटे महाशय का ही श्रम सफली भूत हुआ । आपने अपना पु[illegible] लय कॉलेज को सौंप कर उसे चिरऋणि बना लिया है । आपटे [illegible] शय ग्रेजुएट न होते हुए भी आज कितने ही वर्षों से बम्बई युनिव[illegible] के सिंडिक होकर एम० ए० के मराठी विषय के परीक्षक भी थे । [illegible] पर से आप के मराठी भाषा विषयक ज्ञान का पता चल सकेगा । [illegible] रह चुके थे, [illegible] वर्षों में आप [illegible] यों में, आ[illegible] [illegible] है होगा । [illegible] कीर्तिनाद [illegible] 'मधली [illegible] आप का यह [illegible] आपने 'कर्म [illegible] २५ वर्ष चल [illegible] रण कामज [illegible] प्राप्त होने [illegible] उसे फिर निकालने की आप की इच्छा थी, पर इच्छा [illegible] गति विचि[illegible] यह पत्र न निकल सका । आपने सामाजिक और ऐतिहासिक [illegible] कर कोई २५ उपन्यास लिखे । उपन्यासों में मधली स्थि[illegible] पण लक्षात कोण घेतो ?, मी, उषःकाल, वज्राघात, चन्द्र[illegible] रूप नगरची राजकन्या, गड आला पण सिंह गेला, ये अत्यन्त हृद्य [illegible] हैं । आप का माकन कुढ़ल वैयबुवा' प्रहसन उत्तम है । इसका [illegible] अनुवाद भी "टांक पीट कर वैदराज" के नाम से प्रसिद्ध होचुका [illegible] आप समयानुसार कविता भी किया करते थे ।

आपटे महाशय का कै० रा० सा० गोविंद वासुदेव कानिटकर [illegible] चित्रमय जगत के स्वामी श्री० वासुदेवरावजी जोशी—इन दो महा[illegible] के साथ का स्नेह सम्बन्ध परस्पर के कुछ मतों में उत्तर दक्षिण ध्रुव [illegible] अन्तर होते हुए भी आमरण बना रहा, ईश्वर आप की आत्मा को सद्गति प्रदान करे । आप की तथा प्रो० लिमये की मृत्यु से इस सप्ताह में महाराष्ट्र के दो रत्न उठ गये ।
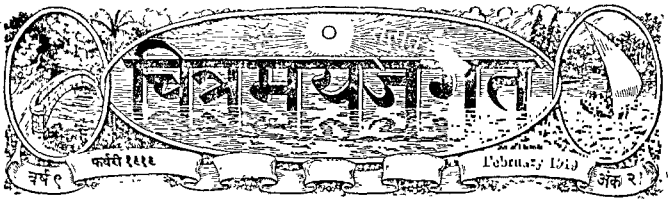
हे अज्ञानतमोविनाशक विभो ! तेजस्विता दीजिए । देखें सर्व सुमित्र होकर हमें ऐसी कृती कीजिए ॥
देखें त्यों हम भी सदैव सब को सन्मित्र की दृष्टि से । फूलें और फलें परस्पर सभी सौहार्द्र की दृष्टि से ॥

वसंत ।

मदन पुष्पधन्वा अनङ्ग,
मार काम ऋतुराज ।

रतिपति माधव सार वही
बैठे इकले आज ॥

(१)
शार्दूलविक्रीडितम्—
आये बौर रसाल पै सुभग हैं पत्ते नये छा रहे ।
भौंरे भी रस मत्त हो सुमन पै स्वच्छन्द हैं गा रहे ।
धीमी धार गही प्रभा सहित ये सुधांशु हैं धारि के ।
फौवारे उड़वा रहे, बह रहे, उत्साह को धारिके ॥

(२)
फूले नूतन शस्य युक्त महि पै ये मालती मोगरे ।
वापी कूप तड़ाग आदि सबही शुद्धाम्बु से हैं भरे ॥
छूटी आतप शीत पात श्रम से भागे सभी भूमि के ।
आया है सुवसन्त विश्वपति के पादांक को चूमिके

(३)
शिखरिणी—
सरों में फूले हैं कमल दल देखो सब कहीं ।
अहा कैसी प्यारी सुखद अनिला है बह रही ॥
वनों में गाते हैं विविध खग प्रेमी बन सभी ।
जगो देखो आता समय सुखकारी फिर कभी ॥

(४)
इन्द्रवज्रा—
आलापते हैं पिक बाल सारे ।
लै पुष्प को ये अलि श्याम प्यारे ॥
हैं छत्र आकाश वसन्त मारे ।
क्या बाँसुरी को सुनिये प्यारे ॥

(५)
उपेन्द्रवज्रा—
झुला रहे पुष्प सुदामनों को ।
ले डालियां पुष्प सुगन्ध के हो ॥
हैं अर्पती दाम वसन्त के ये ।
कैसी सुशोभा सरसा रहे हैं ॥

(६)
वसन्ततिलका—
हो कोकिला ! कर कुहू कुहू क्या सुनाती ।
क्यों कामदेव शर विद्ध सबै बनाती ॥
पी है कहां, नहिं यहां, न पता लगेगा ।
तेरे परन्तु स्वर से जगतो जगेगा ॥

(७)
मालिनी—
सघुर कुसुम फूले ढाक के रक्तवर्ण ।
सब तरु धर त्यागे स्वीय प्राचीन पर्ण ॥
धरणि बन गई है षोडशी आज बामा ।
सकल जगत ने है रूप धारा निराला ॥

(८)
चांद्रायण—
सौरभपूर्ण सुवायु सतत चलाइये ।
नव वासन्तिक [illegible] सरसाइये ॥
भारत को "सुराज" "स्वराज" दिखाइये ।
प्रिय वसन्त ऋतुराज आइये, आइये ॥

[illegible]

"दुर्गेश"

हिंदी में राजनैतिक साहित्य

(ले०—श्रीयुत पं० मातादीन शुक्ल अध्यापक हितकारिणी हाईस्कूल जबलपुर)

(२)

राजनीति की अपूर्व छटा महाकवि केशवदास कृत रामचन्द्रिका में ...ही तरह देखने में आती है। केशवदास हिन्दी के उन इनेगिने में ...यों में से हैं जिन्होंने राजाओं से भी अधिक सम्मान प्राप्त किया ... अतएव यदि इनके बनाये हुए ग्रन्थ में राजनीति की कमी दिखायी ... तो निस्सन्देह शोक का विषय होता। परन्तु, नहीं यह बात इनका ... देखने से बिलकुल विपरीत पायी जाती है। यद्यपि इन्होंने और कई एक ग्रन्थ रचे हैं परन्तु मेरी समझ में रामचन्द्रिका में कविने ...प्रिया की अपेक्षा अधिक प्रतिभा का परिचय दिया है। केशवदास ...ाओं के दर्बार में स्वयं उनसे भी अधिक सम्मानित थे। यही ...ण है कि उन्होंने रामचन्द्रिका में ऐसी विचित्र बातों का उल्लेख ...ा है जिन्हें संस्कृत के उद्भट विद्वान् भी भक्ति के चक्र में पड़ कर ... गये हैं। विभीषण की लेथाड़वाजी के बिना कदाचित् कोई रामायण सर्वांग पूर्ण नहीं कही जा सकती। परन्तु खेद है कि ...सीदास जैसे हिन्दी के अलौकिक कवि और संस्कृत के कितने असाधारण कवियों को भी रामचरित मानस की रचना करते यह ...ं सूझा कि राजनीति का एक बड़ा भारी छिद्र विभीषण के भक्ति ... आडम्बर में मौजूद है। कवियोंने उसे रामचन्द्र का भक्त समझ ... उसके स्पष्ट दूषण पर सफेदी पोतदी है, परन्तु सत्य समालोचक ...दृष्टि रखनेवाले और राजनीति का प्रकाण्ड ज्ञान रखनेवाले कवि- ...केशवदास भला राजनीति के इस गम्भीर विषय पर क्यों कर ...दर डाल सकते थे। उन्होंने अपने अनुभव से, यह कलंक विभी- ... के मत्थे मढ़ा है कि भाई भाई के बीच फूट पैदा होना अधोगति ... प्रधान कारण है और पाठक, मेरी बुद्धि में राजनीति का गूढ़ तत्व ...में छका हुआ है, जिसके विरुद्ध चल कर भारतवर्ष ने अपना धन, ..., बल और समस्त ऐश्वर्य खो दिया है। क्षुद्र हृदय विभीषण रावण ... थोड़े से अपमान से न केवल रावण को वरन् सब राक्षसों का छोड़ ... उन्हीं के मूलाच्छेदन में प्रवृत्त हुआ और फिर अपने सगे भाई ...र भतीजों को सम्मुख मरवा डालने में भी इस राक्षस को तनिक ... पश्चात्ताप न हुआ! इसी बारीकी को कविने थोड़ेसे शब्दों में वर्णन ...रके राजनीति की अपूर्व शिक्षा दी है।

... विभीषण के सम्मुख आने पर, कविने लव के द्वारा निम्नांकित पदों में ...र्त्सना दिखलाई है और भाई का सर्व नाश करनेवाले ऐसे असार ...ि पर उसे तिरस्कृत किया है:—

> लव—आउ विभीषण तू रण दूषण।
> एक तु ही कुलको कुल भूषण॥
> [illegible]
> [illegible]
> देव वधू जब ही हरि ल्यायो।
> क्यों तबही तजि ताहि न आयो॥
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]

> कछु है अब तो कहँ लाज हिये।
> कहि कौन विचार हथ्यार लिये॥
> अब जाय कै रोष की आगि जरौ।
> गरु बाँधिके सागर डूबि मरौ॥
> कहा कहौं हौं भरत को, जानत है सबकोय।
> तोसों पापी संग है, क्यों न पराजय होय॥

इसी ग्रन्थ में एक स्थान पर कविने सीता के पातिव्रत धर्म की महत्ता दिखला कर नैतिक उपदेश दिया है, और पतिव्रता स्त्री के साथ अनीति पूर्ण व्यवहार केवल अन्याय करनेवाले पर ही नहीं वरन् उसके समस्त कार्य पर कितना प्रभावडालता है—इसका चित्र केवल एक दोहे में खींचकर सुनीति का उत्कर्ष उपस्थित किया है। दोहा हनुमान की ओर से कहा गया है,और यहयों है:—

> सीता पद सन्मुख भये, गयो सिन्धु के पार।
> विमुखभये क्यों जाहि तरि, सुनो,भरत यहि बार॥

आगे चल कर कविने भरत के शब्दों में रामचन्द्र द्वारा सीता निर्वासन का कार्य अनीति पूर्ण ठहराकर मर्मान्तक नीति का उपदेश दिया है। लव कुश द्वारा अपने दो भाइयों के मारे जाने पर भरत ने यह कहा था:—

> बालक रावण के न सहायक।
> ना लवणासुर के हित लायक॥
> हैं निज पातक वृक्ष न के फल।
> मोहित हैं रघुवंशिन के दल॥

अधिक न कह कर हम इस ग्रन्थ के उस अंश को उद्धृत करते हैं, जिसमें कविने राजनीति के प्रकांड पांडित्य का अनोखा चित्र खींचा है। इस ग्रन्थ के अन्त में रामचन्द्रने अपने पुत्रों और भतीजों को राजनीति का उपदेश किया है जो कवि के पद्यों में यों है:—

> बोलिये न झूठ ईठि मूढ़ पै न कीजई।
> दीजिये जो बात हाथ भूलि हू न लीजई॥
> नेहु तोरिये न देहु दुःख मन्त्रि मित्र को।
> यत्र तत्र जाहु पै पत्याहु जै अमित्र को॥
> जुआ न खेलिये कहूं जुआ न धेद राखिये।
> अमित्र भूमि माह जे अभक्ष भक्ष भाखिये॥
> करो न मन्त्र मूढ़ सों न मूढ़ गूढ़ खोलिये।
> सुपुत्र होहु जै हठी मलीन सों न बोलिये॥
> वृथा न पीड़िये प्रजाहिं पुत्रमान पारिये।
> [illegible] पारिये॥
> [illegible]
> [illegible] हैं॥
> पर द्रव्य को तौ विष प्राय लेखौ।
> पर स्त्रीन कौं ज्यों गुरु स्त्रीन देखौ॥
> तजौ काम क्रोधौ महामोह लोभौ।
> तजौ गर्व को सर्वदा चित्त छोभौ॥
> यशौ संग्रहौ निग्रहौ युद्ध योधा।
> करौ साधु संसर्ग जो बुद्धि बोधा॥
> हितू होई सो देइ जो धर्म शिक्षा।
> अधर्मीन को देहु श्रीराम भिक्षा॥
> कृतघ्नी कुवादी पर स्त्री विहारी।
> करौ विप्र लोभी न धर्माधिकारी॥
> सदा द्रव्य संकल्प को रक्षियो ...

खिजामीन को आपुही दान दीजै ॥
... माइल मतीइन भूनन भूगति जो क्रम ही अंग साधै।
कैमेहु ना कहूं शत्रुन मित्र सुकेशव हीम उदासन बाधै ॥
शत्रु समीप परल्यादि मित्र से तासु पर जो उदास है जोवै।
विग्रह संधि न दानिनि मिथुलिल यह और न तो सुख सोवै

था— राजर्धा यश कैमेहु, दोहुन उर अवदात :
जैसे तैसे आपु यश, तातहूँ कीजै तात ॥

उपर्युक्त पद्यों में राजनीति का अपूर्व चमत्कार है । कविने थोड़ेसे शब्दों में राजनीति की अधिकांश बातें कह डाली हैं। एक एक पद्य को व्याख्या करने से राजनीति के सभी अंगों की पुष्टि होती है । इस ग्रन्थ को इतिहास, वीररस और राजनीति का सम्मिलित ग्रन्थ कह सकते हैं।

राजनैतिक साहित्य की बहुत कुछ पूर्ति कविवर गिरिधरदास की कुण्डलियों से भी होती है। कविराय गिरिधरदास ने कुण्डलयों के अतिरिक्त एक अलङ्कार का ग्रन्थ भी बनाया है। परन्तु राजनीति का उत्कर्ष केवल कुण्डलियों में ही देखने में आता है । इनके विषय में जन श्रुति यह है कि कुण्डलिया की सतसई समाप्त करने से पूर्व ही इनका देहावसान होगया। अतएव इनकी पति भक्ता स्त्री ने शेष कुण्डलियां बना कर इस ग्रन्थ की पूर्ति की । सतसई की जो कुण्डलियां 'साईं' से आरम्भ होती हैं, इनके विषय में विद्वानों का मत है कि वे उनकी स्त्री की बनाई हुई हैं । जो कुछ हो, परन्तु गिरिधर की कुण्डलियों में अन्य विषयों के साथ राजनीति का भी अच्छा और मार्मिक उपदेश है। नमूने के तौर पर हम दो चार कुण्डलियाँ नीचे उद्धृत करते हैं। पाठक उन्हें पढ़ कर कवि के राजनीति ज्ञान का अनुभव कर सकते हैं। जैसे

जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजै संग।
जो संग राखेही बने तो करि राखु अपंग ॥
तो करि राखु अपंग, फेरि करके सुनदीजै।
कपट रूप बतराय ताहिको मन हरि लीजै ॥
कह गिरिधर कविराय बात मानो नहिं ताकी।
बच बचके नित रहो, हरी धन धरती जाकी ॥

नारी अति बल होतहै, अपने कुलकी नाश।
कौरव पांडव वंश को कियो द्रौपदी नाश ॥
कियो द्रौपदी नाश, केकयी दशरथ मार्यो।
राम लखन से पुत्र तउ बनवास सिधार्यो ॥
कह गिरधर कविराय सदा नर रहहि दुखारी।
सो घर सत्यानाश जहां है अतिबल नारी ॥

साईं अपने भ्रात को कबहु न दीजै त्रास।
पलक दूर नहि कीजिये सदाराखिये पास ॥
सदा राखिये पास त्रास कब हूँ नहिं दीजै।
त्रास दियों लंकेश ताहि की गति सुनिलीजै ॥
कह गिरिधर कविराय मते सों चलियो भाई।
बिना मते को राज गयो रावण की नाईं ॥

साईं बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज।
हिरनाकुश अरु कंसको गयो दुहुन को राज ॥
गयो दुहुन को राज बाप बेटा के बिगरे।
दुश्मन दावा गीर भये, महिमण्डल सिगरे ॥

× × × × ×

साईं ये न विरोधिये गुरु पण्डित कवि यार।
बेटा बनिता पौरिया यज्ञ करावनहार ॥
यज्ञ करावन हार राजमन्त्री जो होई।
विप्र परोसी वैद्य आपको तपै रसोई ॥
कह गिरिधर कविराय युगन ते यह चलि आई।
इन तेरह सों तरह दिये बनि आवै साईं ॥

साईं सब संसार में मतलब का व्यवहार।
जब लगि पैसा गांठ में तबलगि ताको यार ॥
तब लगि ताको यार यार संगही संग डोलैं।
पैसा रहा न पास यार मुँह से नहिं बोलैं ॥
कह गिरिधर कविराय जगत को याही लेखा।
करत बेगरजी प्रीति यार हम बिरला देखा ॥

कविराय गिरिधरदासने अपनी कुण्डलियों में अन्य विषयों के साथ राजनीति का हृदयग्राही चित्र अंकित किया है। यदि राजनीतिके साहित्य की उन्नति चाहनेवाले महानुभव केवल गिरिधरदास की राजनैतिक कुण्डलियों का ही संग्रह करें तो एक छोटा मोटा ग्रन्थ तैयार हो सकता है। अधिकांश में यह ग्रन्थ राजनैतिक नभोमण्डल का एक देदीप्यमान् नक्षत्र है। और इतनी सरल और सुबोध भाषा में यह लिखा गया है कि इसे पढ़ कर कोई भी विद्वान् राजनीति का ज्ञान अर्जन कर सकता है। शोक है कि इस ग्रन्थ रत्न की लोग इतनी मर्यादा नहीं समझते जितना वास्तव में यह मर्यादाअलंकृत है । इनके दो एक पद्यों का और उदाहरण देकर हम इनके ग्रन्थ-परिचय को समाप्त करते हैं और हिन्दी प्रेमियों से आशा करते हैं। कि वे गिरिधर की कुण्डलियों का एक राजनैतिक संग्रह उपस्थित करेंगे।

साईं नदी समुद्र में मिली बड़प्पन जान।
जाति नाश भइ मिलत ही, मान महत की हान ॥
मान महत की हान कहो अब कैसी कीजै।
जल खारी ह्वै गयो कहो अब कैसे पीजै ॥
कह गिरिधर कविराय-कच्छ मच्छन सकुचाई।
बड़ो फजिहता चार भयो नदियन को साईं ॥

गोस्वामी तुलसीदास के प्रसिद्ध और लोकमान्य ग्रन्थ रामायण के अतिरिक्त हम उनके दो और ग्रन्थों का परिचय देते हैं। ये ग्रन्थ तुलसी सतसई और दोहावली हैं। 'दोहावली' रामायण तथा सतसई और अन्यस्फुट काव्यों का अपूर्व संग्रह मात्र है। हाँ 'सतसई' पृथक् ग्रन्थ है। इस कविने जिस प्रकार 'रामायण' में राजनीति का अपूर्व दिग्दर्शन कराया है उसी प्रकार सतसई में भी उसकी आभा आपड़ी है। परन्तु इसे राजनैतिक क्षेत्र में इतना उत्कृष्ट स्थान नहीं मिल सकता जितना रामायण को। गोस्वामीजीकृत सतसई के दो चार राजनैतिक पद्य हम नीचे उद्धृत करते हैं। जैसे—

तुलसी बुरा न मानिये, जो गवांर कहि जाय।
जैसे घर का नर दवा, भला बुरा बहि जाय ॥
तुलसी तीनि प्रकार से, हित अनहित पहिचान।
पर बश परे परोस बश, परे मामिला जान ॥
करि कुसंग चाहत कुशल, तुलसी यह अफसोस
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसे परोस ॥
तुलसी फली फूलिये, जतो अंग समाय।
अतिको फूलो सैजनो, डार पात सों जाय ॥
प्रेम बैर अरु पुण्य अघ, यश अपयश जय हान।
बान बीज इन सब न को, तुलसी कहहिं बखान ॥
आवतहीं हर्षै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहां न जाइये, कञ्चन बरसै मेह ॥

मतलब यह है कि गोस्वामीजीने राजनीति का भी भक्तिरस के साथ साथ सम्मान किया है और सांसारिक नीति तथा राजनीति दोनों का अच्छा चित्र खींचा है।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पद्माकरजी का नाम हिन्दी संसार में सर्व मान्य है। आप अपने समय के उद्भट कविथे। वर्तमान साहित्य प्रेमियों तथा नई रोशनी के लोगों को कविवर बिहारीदास तथा पद्माकरजी पर विशेषत यह दोष मढ़ते हुए हमने सुना है कि, इन्होंने आद्योपान्त शृंगार रस काही आस्वादन किया है। हमें विश्वास है कि इस लेख से उन परिमित संख्या के लोगों का सन्देह दूर हो जायगा। बिहारीजी की राजनीति का हमने ऊपर उल्लेख कर दिया है । यहां नीचे के दो चार पद्यों में इस कवि की भी राजनीति-कविता का उदाहरण दिये देते हैं। पद्माकरजीने नायिका भेद और शृंगार के रंग में रंगे होने पर भी राजनीति पर बड़ीही गंभीरता से विचार किया है। अपने नीति वर्णन में इन्होंने राजनीति का विलक्षण रूप उपस्थित किया है। प्रसिद्ध [illegible] ग्रन्थ है) के अतिरिक्त

उसी एक पर वार, वार, वह, तन मन सब को देता है।
फिर, फिर, खिल, खिल, बार बार यह सेवा उसकी करता है ६
सूर्य अस्त जब होता है, तब स्वयम् व्यक्त हो जाता है।
उसी एक की सेवा में वह रो, रो रैन बिताता है ॥७॥
प्रात समय जब फिर होता है, प्रीतम, उसका आता है।
वह फिर हमका होता है, यह देख उसे मिल जाता है ॥८॥
प्रेम बिना बन्धन झूठा है, फैला हुआ प्रेम घर घर।
सभी ओर है राज्य "प्रेम" का, स्याम वायु औ भूतल पर ॥९॥

श्री० पं० लक्ष्मीनारायण दीन दयाल अवस्थी

ानी कीमत भी न करनी चाहिये थी। परन्तु लाइले बेट की हवस करनेवाले बाप की तरह वाइसराय साहबने अभी उस दिन पार्ली ष्ट कौन्सिलमें उसे अयोग्य महत्व देकर स्वराज्यरूपी इमारतका पाया निर्जीव और पोला कर दिया है। गोरी नौकरशाही के उपरोक्त हठ उल्लेख करके वाइसराय साहबने ऐसी एक खोज की है कि जब सिविल सर्विस की पार्लमेन्टने स्थापना की उस समय उसे इंग्लैण्ड नियुक्त किये हुए लोगों की ही आज्ञा पलना चाहिये, ऐसा निश्चय या गया था। हिन्दुस्तान में यदि लोकसत्ताक राज्यपद्धती अमल में ई तो सेवा चाकरी करने के लिये उपरोक्त नौकरशाही विवश न की सकेगी। इस शोध को देख कर किसी भी मनुष्य को आश्चर्य प्रतीत बिना न रहेगा। सिविल सर्विस के लोग नौकर हैं, वे जिसकी कगी (रोटी) खाते हैं उसकी चाकरी करें, इसी में उनका कल्याण। अपने मालिक से न पटती होतो नौकरी छोडने को उन्हें स्वातंत्रता हीं। तो फिर उपरोक्त प्रकार का प्रयोग उपस्थित करने का क्या है, सो कुछ समझ में नहीं आता। अस्तु, सिविल के लोग पार्लमेंट हुक्म को भी मानते हैं या नहीं? यदि मानते हैं तो पार्लमेन्टने ही यदा बना कर जो लोकसत्ताक पद्धति उत्पन्न की, तब फिर इन लोक तेनिधियों की आज्ञा मानना क्या उनका कर्तव्य नहीं है? वाइसराय १० आगे बढ कर फिर कहते हैं कि स्वराज्य की नवीन योजनानुसार ३ हिन्दुस्तानी लोगों को प्रधान नियत करेंगे, परन्तु ऐसे ही आद-यों का निर्वाचन करेंगे जो इस सिविल सर्विस में के लोगों के मता-सार व्यवहार करेंतेहों। यही नहीं वरन् नौकरशाही के प्रति हिन्दुस्तानी ाग जिस प्रकार का व्यवहार करेंगे उसी पर से उनकी स्वराज्य त्रता की आजमाइश की जायगी। नई योजना में हिन्दुस्तानी लोगों के ाय में सत्ता देने की पूर्व तय्यारी करके हिन्दुस्तानी प्रधानों को ाकरशाही की

थाली के नीचे की बिल्लियाँ

नाने का प्रयत्न कैसा चल रहा है, वह इस पर से स्पष्ट होजायगा। ाइसराय साहबने आगे और भी आश्वासन दिया है कि सिविल सर्विस ी बदली बहाली के प्रश्न के सम्बन्ध में उन्हें फिर चिंता करने की ावश्यकता नहीं है। क्योंकि वे सब अधिकार क़ायदे से नियत र दिये जायँगे। इसके सिवाय गवर्नर के पास जाकर अपनी दाद ुनाने की उनके लिये स्वतंत्रता रखी ही गई है। नौकरशाही के बटे जाओ' सम्बन्धी व्यवस्था करने के बाद फिर हिन्दुस्तान में ़ गैर सरकारी गोरे व्यापारीवर्ग के रूठने की ओर ध्यान देकर वाइस-ाय साहबने उन्हें भी ऐसा आश्वासन दिया है कि; किसी भी प्रकार की ाज्यपद्धती अमल में आई तो भी ब्रिटिश व्यापारीवर्ग के हिताहित की ओर सरकार कभी दुर्लभ न करेगी। व्यापार विषयक सब, क़ायदे नाने का अधिकार हिन्दुस्थान की सरकारने अपने पास रखा है। इस ारण; और हिन्दुस्तान सरकार की कौन्सिल में सरकारी अधिकारियों का ही मताधिक्य होने से तुम्हारे व्यापार को धक्का बैठने का कोई कारण ही न रहेगा। परन्तु इन सब आश्वासनों से गोरी सिविल सर्विस और गोरे व्यापारियों का समाधान हो तो भी स्वराज्यवादी लोगों की आकांक्षा पर वाइसराय सा० के उपरोक्त भाषणद्वारा कुठारा-घात ही किया गया है, ऐसा कहने में कोई हानि न होगी। नौकर-शाही का क़ारोबार बेलगामी, अनियंत्रित, अन्याययुक्त है, और गोरे व्यापारीवर्गने हिन्दुस्तान के व्यापार के रूप में नियमबद्ध लूट मचाई है, यही एक मात्र सब राष्ट्रों को तक़रार है। इस पद्धती के कारण ही हिन्दुस्थान दरिद्री होता चला है। राष्ट्रीय सभा की आज तीस वर्ष से यही शिकायत है। विगत राष्ट्रीय सभाने आर्थिक स्वतंत्रता के लिये स्वतंत्र प्रस्ताव पास किये हैं, साम्प्रतिक राज्य कारोबार की पद्धति के कारण हिन्दुस्थान कंगाल होता चला है और केवल ब्रिटिशों को ही नहीं वरन्; अन्य योरोपीयन राष्ट्रों को भी कच्चा माल पहुँचा करके, उनका बनाया हुआ पक्का माल फिर आपही ख़रीद कर उनकी तुम्बी भरने का काम आज तक हिन्दुस्तान के करते रहने के कारण ही उसे अन्य सब राष्ट्रों का 'जल भरिया' और 'लकड़हारा' बनना पड़ता है, इस प्रकार आज कितने ही वर्ष से भारत के नेता शिकायत कर रहे हैं। इसी लिये यदि आर्थिक स्वतंत्रता नहीं दीगई तो केवल नामधारी स्वराज्य में हिन्दुस्तान का कल्याण कभी नहीं होगा, इस ांति हमारे नेता सदा सुना रहे हैं। लोगों की सच्ची आवश्यकताएँ ... हैं इसका ज्ञान नौकरशाही को नहीं है, नौकरशाही या केवल ... हिन्दुस्तान सहन नहीं कर सकता क़ायदे की अमल बजावणी

ठीक २ की जासके, इसी लिये लोकपक्ष राज्य सूत्र को अपने हाथ में रखने की मांग कर रहा है। परन्तु इसमें से यदि कुछ भी अधिकार हाथ न आया तो स्वराज्य दान की ठट्टा होने का सम्भव है। हिन्दु-स्तानी लोगों के पात्रता की परीक्षा भी खासी निश्चित होचुकी है। वर्तमान अधिकारियों की सत्ता यत्किंचित भी कम न करते हुए अपने हाथ में किसी एक विभाग के सूत्र रख कर राज्यकारोबार चलानेवाला धुरंधुर राजनीतिज्ञ सरकार को मिलना शक्य है; परन्तु उसके कारण हिन्दुस्थान को अलबत्ता स्वराज्य देने का भास नहीं होसकता। अश्व-त्थामा को उसकी माताने दूध के बदले सफेद आटे का पानी पिला कर जिस प्रकार कपट से उसे शान्त कर दिया वही दशा हिन्दुस्तान की भी होनेवाली है। परन्तु सच्चे स्वराज्य रूपी दूध के बदले यह

सफेद आटे का पानी

पिलाने से हिन्दुस्तानियों की स्वराज्य रूपी तृषा शांत हो जायगी, ऐसा जान नहीं पड़ता। अश्वत्थामा की माता दरिद्री थी अतः उसे ऐसा करना उचित हुआ और उसमें अपमान का प्रश्न भी न था। परन्तु इस राजकीय समस्या में भारतीय राष्ट्र के मानापमान और नैसर्गिक स्वत्वों का प्रश्न है, इसके लिये सर्कार को समय पर ही विचार कर लेना चाहिये। दी जानेवाली सुधारणाएँ किस स्वरूप की हैं, उनकी कल्पना वाइसराय सा० के उपरोक्त भाषण से भली प्रकार हो सकती है।

परन्तु भारतीय जनता की इच्छा की ओर कितना दुर्लक्ष्य किया जाता है, इसका ताजा उदाहरण 'रौलेटबिल' है। एक ओर सब पक्ष के, सब मतों के, सब जाति और धर्म के भारतीयों की अधिकार ... प्रश ... हुए ... परन्तु ... यह ... समें ...

रथ के नीचे दौड़ता अवश्य है परन्तु रथ की गती के लिये उसका कोई उपयोग नहीं होता, केवल उसका श्वानत्व सिद्ध होता है, बस यही। रौलेटबिल उपस्थित करते समय सर्कारी पक्ष की ओर से जो भाषण हुए वे अलबत्ता उन्हें लज्जास्पद थे इसमें कोई सन्देह नहीं। बिलों के जनक सर विलियम विन्सेन्ट ने सुना दिया है कि यदि इन बिलों के पास करने में गैर सर्कारी अधिकारियों ने सम्मति नहीं दी तो उनकी स्वराज्य सम्बन्धी अपात्रता आप ही प्रगट हो जायगी। मानो आजये बिल पास कर दिये तो कल ही स्वराज्य का गट्ठा हमें सौंप दिया जायगा। विन्सेन्ट सा० की यह वावदूकता अर्थ शून्य और तर्क शास्त्र से परे है। स्वराज्य के मूल्य में यदि विन्सेन्ट साहब सम्मति मांगते हों तो प्रमाणिक पन से उन्हें सौदा पूरा करना चाहिये। परन्तु वैसा होना शक्य नहीं, इसीसे उनके भाषण का भेद खोलना हवा में लाठी घुमाने जैसा व्यर्थ है। सर जार्ज लाउन्डस ने अलबत्ता सब पर हाथ साफ किया है। उनका भाषण मानों गर्व, हेकड़ी और उन्मत्तपन का एक उत्तम उदाहरण है। इन महाशयने हिन्दुस्तान को साफ सुना दिया है कि, तुम कितनी ही बकबक करो अथवा चिल्लाते रहो, तुम से हमारा बाल भी बांका न हो सकेगा। हमने ये क़ायदे पास करने का निश्चय किया है और हम पास करेंगे ही। इतने कर्तुं मकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ होकर क्या तुम्हारे इस रूठने या घुस घुसाने से अथवा सभा में पास किये हुए कागजी प्रस्तावों से हम डर जायँगे। लाउन्डस सा० की इस भावार्थ की भाषा इस हिन्दुस्तान में ही सकती है, इतरत्र नहीं। लाउन्डस सा० के बोलने में यदि सन्देह हो और उस सत्य को अजमा कर देखने की उनकी इच्छा हो, तो उन्हें इंग्लैण्ड अथवा यही भाषण पुनश्च करने की उनकी हिम्मत हो तो उन्हें ... अथवा अन्य किसी स्वतन्त्र लोक सत्ता वादी राष्ट्र में कदम रख कर फिर इस भाषा का उपयोग करना चाहिये कि, जिससे उसका ... स्कार उन्हें तत् काल ही मिल जाता। उन्हें अपना स्थान तत्क्षण ही छोड़ कर फिर बम्बई में अपनी बैरिस्टरी करना पड़ती। हिन्दुस्तान गरीब और परतन्त्र होतो भी स्वाभिमानी होने के कारण उसे इतना अपमान सहन नहीं हो सकता। पहले तो नये बिल ही सर्वथैव ... और उसमें फिर उपरोक्त भाषणों का प्रभाव पड़ा जिससे नौकरशाही के अन्याय का फोड़ा पक कर उस

फोड़े का मुंह निकलेगा

ऐसा जान पड़ता है। उपरोक्त दोनों बिल सिलेक्ट कमेटी में ...

ज्ञान प्राप्ती के कार्य में आकृति की सहायता

(लेखक—श्री० रामचंद्र मगाराम गोराले बी० ए०, एल-एल बी.)

ज्ञान सम्पादन के अनेक मार्ग हैं । उनमें कान और आंखे प्रमुख हैं। हम कानों द्वारा किसी स्थान का वर्णन सुन कर उसका ज्ञान कर लेते हैं, किंवा वह स्थान आंखों से प्रत्यक्ष देख कर उसकी [जान]कारी कर सकते हैं। इनमे पहला अप्रत्यक्ष ज्ञान और दूसरा [प्रत्य]क्ष ज्ञान है। इसी प्रकार उस स्थान के सम्बन्ध में कोई लेख या [ग्रन्थ] पढ़ कर हमें जो ज्ञान प्राप्त हो सकता है, वह भी अप्रत्यक्ष ही [हो]ता है। अब उस स्थल के छाया चित्र (फोटो) देख कर हमें जो

रशिया
फ्रान्स
[हिन्]दुस्थान
इटली
[ऑ]स्ट्रिया

[आकृ]ति नं १   १ इंच २००
(कपडे और रुई क बारे में भारत की स्थिति)

ज्ञान मिलेगा उसे एक प्रकार से हम प्रत्यक्ष भी कह सकते हैं और एक अर्थ मे उसकी गणना अप्रत्यक्ष में भी हो सकती है। किसी वस्तु को प्रत्यक्ष आंखों से देख तत्संबन्धी ज्ञान प्राप्त करना अथवा तत् सम्बन्धी वर्णन पढ़ना अथवा सुनना या उसका [छाय]ा चित्र देख कर ज्ञान सम्पादन करना; इन विविध मार्गों को तुल[नात्]मक चर्चा करने की यहां आवश्यकता नहीं है। परन्तु अमुक किसी [भी] बात का ज्ञान प्रत्यक्ष प्राप्त कर लेना सदा सर्वदा शक्य न होने से [इ]स मार्ग का अवलंबन करना ही पड़ता है। नाना फडनवीस किस [प्रका]र की पोशाक पहनते थे, यह बात प्रत्यक्ष देख सकना अशक्य होने से [तत्स]म्बन्धी जिज्ञासा उस पोषाख का वर्णन पढ़ कर अथवा उस प्रसिद्ध [पुरुष] का छाया चित्र देख कर तृप्त करना पडती है। इसी प्रकार रणभूमी [में] क्या हो रहा है, इस बात के जानने की इच्छा वहां प्रत्यक्ष खड़े रह [कर] पूरी नहीं की जा सकती, इस कारण उसका वर्णन पढ़ कर और [तद्]विषयक छाया चित्र देख कर पूरी करना पड़ती है। इसी भांति [लॉ]इड जार्ज के समान राजनीतिज्ञ पुरुष [भ]िन्न २ स्थानों की राजनीतिक [स्थिति प्र]त्यक्ष रूप में मिल सकना शक्य [नहीं है]। [य]दि ऐसा कहने लगें कि मि० माण्टे[गू ने आ]ले हिन्दुस्तान की स्थिति स्वयं ही [देख]ा बताई, आएे लिया इत्यादि [तो] हम भी ही घूमते रहे, भिन्न ४ रणभू[मि]यों पर होनेवाली हलचल को और भी [यदि] हो प्रत्यक्ष ध्यान देतो उनसे एक भी [काम] पूरा नहीं हो सकता। तब ऐसे समय प्रत्यक्ष ज्ञान की अपेक्षा [अप्र]त्यक्ष ज्ञान पर ही भरोसा रखना इन के लिये अपरिहार्य है।

रशिया
फ्रान्स
हिन्दुस्थान
इटली
ऑस्ट्रिया

[आकृ]ति नं. २ इंच=५००० नग (हिंदुस्थान के मिल नगों का अनुमान और अन्यदेशों के मिलों की तुलना)

इटली
ऑस्ट्रिया

आकृति नं० ३ १ इंच—१०० नग   (भिन्न २ देशों के प्रत्येक मिल में पांच वर्षो की अनुमानानुसार तुलना)

हम कल्पना करके देखें कि—हिन्दुस्थान में कपड़े के मिलों की वृद्धी कैसे २ होती गई, तो यह ज्ञान प्रत्यक्ष प्राप्त कर लेना बिलकुल अशक्य है। क्योंकि मिलों के आरम्भ से प्रतिवर्ष उनकी गणना प्रत्यक्ष रूप से करनेवाले लोग होना ही अशक्य है। इस कारण मिलों की संख्या के क्रमशः अंक देख कर ही हमें उनकी वृद्धी सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त हो सकने का सम्भव है। ये अंक बहुत भारी न होने से एक एक अंकों का आकलन किया जा सकता है, परन्तु इन सब अंकों का एक साथ ही आकलन करना बड़ा कठिन है। अभ्यास से इस प्रकार का आकलन किया जा सकता है, परन्तु यह अभ्यास लोगों के लिये इतना भारी और फंटाला उत्पन्न करनेवाला जान पड़ता है कि कितने ही लोग उस झगड़े में पड़ते ही नहीं। जो पड़ते हैं वे थोड़े से ही अनुभव से घबराहट इस त्रास दायक विषय को त्याग देते हैं। उनकी यह घबरा कर और दीर्घ प्रयत्न की अरुचि योग्य है या नहीं, इस विषय की चर्चा करना यहां अप्रासंगिक होगा। अधिकतर लोगों को अरुचि होती है यह ठीक है। परन्तु इस अरुचि उत्पन्न होने के कारण भी अनेक हैं। अंकों का भय जान पड़ना उनमें मुख्य है। इसी प्रकार उन अंकों के आकलन में भी बहुत सा समय लग जाता है। तब ऐसी स्थिती में इच्छित कार्य-अर्थात् मिलों की वृद्धी का ज्ञान—प्राप्त करने के लिये अन्य किसी एक सुलभ मार्ग का अवलंबन करना आवश्यक है, कौनसा है, इस बात का निश्चय करने के लिये हमें अपना उद्देश्य अच्छी तरह ध्यान में रख लेना चाहिये। हमारा उद्देश्य 'मिलों की तुलनात्मक वृद्धी' को समझ लेना है, न कि तत्सम्बन्धी अंकों का। तब रेखा पद्धती से हम यदि यह वृद्धी दिखा सकें तो कई लोगों से अंकों के जाल में न फँसते हुए मुख्योद्देश्य बिलकुल सुलभता साधना सकेगा।

लोग अंकों से भरी हुई बातों का ज्ञान 'रेखा पद्धती' के द्वारा कितनी सुलभता से प्राप्त कर सकते हैं और थोड़े से श्रम में किसी विषय का सम्यक ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है, सो निम्न लिखित उदाहरण से प्रगट होगा।

हम सुना करते हैं कि 'हिन्दुस्थान में मिलों की संख्या बहुत थोड़ी है और उनकी स्थिती अच्छी नहीं, हिन्दुस्थान के लिये काम में आने वाला कपड़ा अधिकतर बाहर से लाना पड़ता है!" परन्तु वस्तु स्थिति का सम्यक ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें इस विषय के अंक देखना चाहिये। केवल शब्दों में किये हुए विधानों की अपेक्षा अंकों द्वारा किये हुए विधान हम पर स्थायी प्रभाव डालते हैं।

अब यही ज्ञान सामान्यतः अंकों से घबरानेवाले लोगों से को कि सरल पद्धती से कराया जा सकता है सो यहां के चित्रों पर से पाठकों की समझ में आ सकेगा।

इस आकृति पर से मिलों के सम्बन्ध में हिंदुस्थान की स्थिति कितनी हृदय भेदक है, यह साफ प्रगट हो सकती है।

अधिकार में है।

रावेर गांव में छत्री है यह उपर कहा जाचुका है। यही पेशवा बाजीराव की निधन भूमी है। दहन भूमी दूसरी है, और वह यहां से लगभग २ मील पर है। वहाँ जाने का लिये नर्मदा में से, जल मार्ग भी है। सनावद के आगे स्टेशन मोरटका आता है। यहां से नाव में बैठकर पश्चिम की ओर ४ मील तक जाना होता है। यह स्थल यानी रावेर खेड़ी से दो मील पर 'कांक यांव'* नामक गांव है। इसी स्थल को मराठी इतिहासकारोंने परगना 'काकडे' बतलाया है। यह स्थल बिलकुल नर्मदा के तीर पर ही है। यहां पर गांव से नर्मदा के पानी तक एक पक्का चीरेबंदी पट्टियों की, दोनों तरफ १॥ पुरुष उंची भींत का, रास्ता तयार किया हुआ है। मराठों तथा मुसलमानों की सेनाऐं नर्मदापार होकर जाने के बाद लोगों को पानी लाने की असुविधा न होवे, इसी लिये यह रास्ता बनवाया गया था, ऐसा अनुमान किया जाता है। उपरिनिर्दिष्ट सब बातों पर से 'कांक-यांव' पहले परगने का 'सदर' था यह बात स्पष्ट दिखती है। इस कांक-यांव गांव से पूर्व दिशा में नर्मदा के प्रवाह के मध्य भाग पर कुछ भू भाग और छोटी सी झाड़ी दृष्टि गोचर होती है। यह स्थल यहां पर एक छोटासा द्वीप-सा दिखाई देता है। नर्मदा का पानी उन भूभागों पर गिर कर पीछे हटता है और पूर्व की तरफ थोड़ा बहकर फिर महापात्र में मिल जाता है। अर्थात् यहां पर नर्मदा पूर्व वाहिनी दिखती है। यही श्रीमंत पेशवा बाजीराव का दहन स्थान है। इसको गंगात मेडी कहते हैं। यहां दहन भूमी पर लगभग १६ वर्ग फुट का एक पक्का चबूतरा बना हुआ है। चबूततरे के चीरे चूने में बड़ी व्यवस्था से बिठाए हुवे हैं, और नर्मदा के पानी से चाबूतरे को कुछ धक्का न पहुंचे इसके लिये चूने गच्ची पर सीसा पिलाया गया है। चबूतरे के मध्य में एक चतुष्कोन कुंड है। इस कुंडके चारों कोनोंपर चार और बीच में एक ऐसे ५ शिव लिंग स्थापित किये हुए हैं। कुंड हमेशा पानी से भरा रहने कारण से शिव लिंग हमेशा पानी में ही डूबे रहते हैं। कुंड के उत्तर की ओर चबूतरे से अलग पास में ही एक और कुंड है। इस तरह यहा की रचना है। बाजीराव पेशवा की दहन भूमी दर्शनीय है, यही नहीं बरन बड़ी पवित्र भी है। हिंदुओं के पवित्र तीर्थों में इसका समावेश करना सर्वथैव योग्य है। इस तरह रावेर और कांक-यांव इन दोनों गांवों से बाजीराव की निधन (मृत्यु) का सम्बन्ध लगता है।

पूर्व खानदेश में भी रावेर नामक एक तहसील का गांव है। इसका और उपर निर्दिष्ट रावेर खेड़ी का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। यह गांव रेलवे से पास और कुछ बड़ा होने से लोग भूल से इसे ही पेशवा बाजीराव की निधन भूमी समझते हैं। श्रीमान दत्तात्रय बलवंत पारस-नीस (सितारा) ने भी अपने ब्रह्मेंद्रस्वामी के चरित्र में यह भूल की है (ब्रह्मेंद्रस्वामी का चरित्र पृ० १२०) श्रीमंत पेशवा बाजीराव की छत्री की सांप्रत स्थिति बिलकुल असमाधानकारक है।

पेशवा बाजीराव की छत्री के जीर्णोद्धारार्थ, महाराष्ट्रीय रियासतों से और महाराष्ट्र इतिहासभक्तों की ओर से यदि सहायता मिल जाय तो इस महाराष्ट्र वीर की छत्री की योग्य व्यवस्था का श्रेय प्राप्त होसकता है। भारत का उन्नत प्रान्त महाराष्ट्र अपने इस वैभवशाली वीर की छत्री की व्यवस्था के लिये ध्यान देगा ऐसी आशा है।●

* ५।४।१९०२ के केसरी में किसी रावेरकर ने इसी को 'कांकरिया' कहा है।

इस लेख के लिखने में श्री. प. गणपतराम जानकीराम दुबे बी. ए. (लश्कर-ग्वालियर) से बहुत कुछ सहायता मिली है। तदर्थ उन्हें धन्यवाद दिया जाता है।

देश भक्त नारायणराव वैद्य का सम्मान

देश भक्त नारायणराव वैद्य [illegible]

ब्रम्हदेश मे मिट्टी के तेल के कुँए।

ये कुँए अपर ब्रह्मा के मागवे जिले में 'येनं जांग' गाँव से पूर्व की ओर दो मील पर लगभग १०।१२ वर्गमील में हैं। येनंजांग गाँव रंगून से उत्तर दिशा में लगभग ३० मील पर इरावती नदी के पूर्व
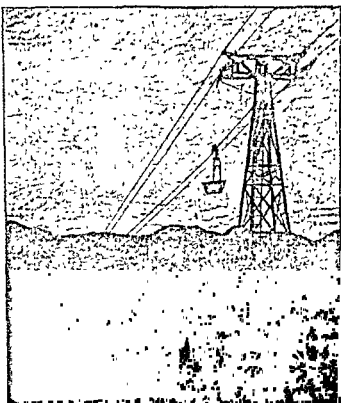
एक स्थान का माल दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिये बीच में जमीन पर मार्ग तैयार न करते हुए ऊपर ही मोटे तारों का उपयोग करने की पद्धती आजकल अनेक स्थानों पर प्रचलित है। उसे 'एरियल रेल्वे' अथवा 'रोपवे' कहते हैं।

तटपर बसा हुआ है। मिट्टी का तेल अपर बर्मा में मागवे मिंबू और पोकोक्कू इन तीन जिलों में पाया जाता है। इन सब से मागवे जिले में अधिकता से पाया जाता है। येनंजांग सब से प्रसिद्ध है और यहां ७।८ हजार कुँए हैं, जिनमें ३।४ हजार हमेशा चालू रहते हैं। सबसे अधिक कुँए 'बर्मा आइल कम्पनी' के हैं। यह 'स्वतंत्र' कम्पनी है। इसके सिवाय इन्डो बर्मा पेट्रोलियम कंपनी, नाथा सिंग कंपनी, ब्रिटिश बर्मा पेट्रोलियम कम्पनी आदि 'बी० ओ० सी' की अपेक्षा छोटी कम्पनियां हैं। ये सब कम्पनियाँ यांत्रिक पद्धति से तेल निकालती हैं। इसके सिवाय हाथ से खोदे हुये और मनुष्यों की मेहनत से तेल ऊपर निकाला जासके ऐसे भी सैकड़ों कुँए हैं।

'बी० ओ० सी' कम्पनियां अमेरिकन ड्रीलिंग पद्धती से और अमेरिकन ड्रीलर की ही देखरेख में तथा अमेरिकन ड्रीलिंग मशिनरी के द्वारा ही तेल के कुँए खोदने का काम करती है, और अमेरिकन पंपिंग मशिनरी से ही तेल निकालती भी हैं। अमेरिका के कैलिफोर्निया देश में जिस पद्धती से तेल निकाला जाता है, वही पद्धती यहां भी प्रचलित है। कुँओं की गहराई १२०० से लगा कर २४०० फुट तक होती है। ये कुँए ऊंची नीची भूमिवाले पहाडी प्रान्त में इरी खोरों में जहां जहां तेल के झरने पाये गये, वहां २ बड़ी मुश्किल के स्थानों में भी खुदे हुए हैं।

येनंजांग से उत्तर की ओर ३०।४० मील पर यनजांग नामक इरावती नदी के पश्चिम किनारे पर एक गांव है। वहां प्रथम यंत्र की सहायता से सन १८८८ में 'बी० ओ० सी' कम्पनीने कुँए खोदे और इसी वर्ष यनजांग में भी इसी कम्पनीने यन्त्र द्वारा पहला कुँआ खोदा। उससे कम्पनी को लाखों रुपयों का लाभ हुआ, कुछ वर्ष बाद वह कुँआ बंद होगया।

योरोपियन कम्पनियाँ यंत्र से तेल निकालने का काम शुरू होने से पहले सैंकड़ों वर्ष तक हाथ से ही खुदाई करके और हाथ से ही पानी की भांति उलीच कर तेल निकाला करती थीं, किंतु उनकी बर्मा से बाहर प्रसिद्धि न थी। यह तेल हरे रंग का और गहरा होता था। साथ ही इसमें मिट्टी और पानी भी मिला होता था। बी० ओ० सी० ने कम्पनी यनजांग से रंगून तक लगभग ३००० मील लोहे का नल डाल कर तेल लाने की व्यवस्था की है। और रंगून के सामने रंगून नदी के पूर्व तट पर 'सिरियम' गाँव में तेल शुद्ध करने, मोमबत्ती, पेट्रोलियम आदि तय्यार करने के बड़े २ कारखाने हैं। यहां तेल शुद्ध होकर बाहर के देशों तथा बर्मा

ब्रह्मदेश के यनंजांग प्रान्त में मिट्टी के तेल के कुंए।

के अन्यस्थानों को रवाना होता है। इंडो बर्मा और अन्य कम्पनियां भी इस अपना तेल बोट में लाकर सिरियम में ही अपने २ कारखानों में

करती हैं, तथा मोमबत्तियाँ आदि चीज़ें बनाती हैं। येनजांग के कुँओं का दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। दूर से देखनेवाले को ऐसा ज्ञान पड़ता है कि हजारों जहाज जहां लंगर डाले खड़े रहते हैं, इस प्रकार के किसी बन्दर स्थान पर ही हम आपहुँचे हैं। बी० ओ० सी० कम्पनी ने दूरस्थ १०।१२ मील में दरीखोहों में फैले हुए, और अड़चन के स्थान पर के कुँओं पर सामान पहुँचाने के लिये "वॉयरलरोपवे" निकाली है। (चित्र नं० १)। इस गाँव का नाम यनँजांग पड़ने का कारण बर्मा में यना तेल को कहते हैं और जांग का अर्थ जगह या स्थान है। इस स्थान पर तेल का पता लगने से इसे 'येनंजांग' कहने लगे। यहां के सब कुँओं पर लगभग १०।१२ हजार मनुष्य हैं। उनमें से योरोपियन (व अमेरिकन) लगभग ४०० हैं, जो ड्रीलर और मेनेजर हैं। वे सब ५०० से २००० रु० तक वेतन पाते हैं शेष सब मद्रासी, हिन्दुस्तानी, पंजाबी तथा बर्मा के १०) से लगा कर २००) तक का वेतन पानेवाले लोग हैं। येनजांग गाँव की जनसंख्या लगभग २० हजार है, जिसमें १५ हजार के लगभग इंडियन हैं।

क्या शहाबुद्दीन ग़ोरी पृथ्वीराज का भाई था ?

(ले० श्री० पं० बैजनाथ उपाध्याय 'जगच्चरणरज')

[प्र]चलित इतिहास में शहाबुद्दीन गोरी और पृथ्वीराज चौहान का हाल लिखा है, स्कूलों के छोटे विद्यार्थी से लेकर बड़े बड़े विद्वानों [त]क पर प्रकट है। उसके मुकाबले में हमारा यह प्रश्न कि 'क्या [शहा]बुद्दीन गोरी पृथ्वीराज का भाई था?' किसी के मन न भावेगा [पर]न्तु जहां तक हम को मालूम है, इतिहासों की बुनियाद [शिला] प्रशस्तियां, प्राचीन ग्रन्थ, सिक्के और ताम्रपत्र आदि से जैसी [कु]छ सहायता ली गई है, किम्वदन्तियों से उन सब की अपेक्षा कुछ [अ]धिक।

यह कहना अनुचित न होगा कि भारत का इतिहास अभी सत्य [की] कसौटी पर पूरे तौर से कसा नहीं जा चुका है। प्रत्युत् इतिहास [प्रे]मी सज्जन गण उसकी शुद्धि के लिये प्रयत्न करते चले जा रहे [हैं]। ऐसी अवस्था में यदि हम एक किम्वदन्ति पाठकों के अवलोकनार्थ [प्र]काशित करें तो असमय न होगा।

मारवाड़ देश का निवासी एक भाट कुछ पुराने विचार के राजपूतों [क]ी मजलिसमें एक किस्सा कह रहा था, जिसके सुनने का हम को [भ]ी अवसर मिल गया। हमने भाट से पूछा कि उसके कथन की [स]त्यता का क्या प्रमाण है? उसने कहा "हमारे प्राचीन पुरुषागण [प]रम्परा से कहते चले आए हैं कि 'हकीकत में शहाबुद्दीन पृथ्वीराज [क]ा भाई था'"।

पृथ्वीराज का पिता सोमेश्वर अजमेर का राजा था। इसके दो स्त्रियां थीं, एक तँवर दूसरी सोढ़ी। तँवर दिल्ली के राजा की लड़की थी, यह नहीं मालम कि सोढ़ी किस की लड़की थी। तँवर सोमेश्वर की प्रीतिपात्र थी, सोढ़ी से सोमेश्वर अप्रसन्न था, इसीलिए उसे एक अलग महल में रख दिया था। सोमेश्वर के अब तक कोई सन्तान नहीं थी। वह रात दिन इस प्रयत्न में रहा करता था कि यदि कोई साधु महात्मा दिखाई पड़े, तो उनकी सेवा कर उनका आशीर्वाद रूप फल प्राप्त करे! दैवयोग से उसे एक महात्मा के दर्शन हुए! महात्मा एक बगीचे में आसन लगाए बैठे थे। राजाने उनकी बहुत सेवा की। जिस से महात्मा प्रसन्न हुए। उन्होंने राजा को एक चिमटा दिया और समीप में आम के पेड़ पर, जिस पर आम लटक रहे थे, चिमटा फेंकने को कहा। उन्होंने यह भी कह दिया कि एक ही बार चिमटा फेंके, दूसरी बार नहीं। राजाने चिमटा फेंका। एक आम गिरा। राजाने सोचा कि एक आम से एक पुत्र उत्पन्न होगा; यदि किसी प्रकार अधिक आम पा जांय, अधिक पुत्रों का उत्पन्न होना सम्भवनीय है। इसके पश्चात् राजाने जो चिमटा फेंका सो आम पर चिपक गया।

अब राजा घबराया। एक आम के पा जाने से एक पुत्र की प्राप्ति की आशा तो उसे बँध गई, परन्तु महात्मा की आज्ञा के विरुद्ध आचरण करने से उनके कोप और शाप का भय उत्पन्न हुआ। डरते डरते कड़ा जी कर वह महात्मा जी के पास गया और अपराध स्वीकार कर क्षमा की याचना की।

स्वामी कुछ क्रुद्ध तो अवश्य हुए पर राजा की दीनता देख उन्होंने कहा 'आम का फल तो अपनी भार्या को खिला दो और यह याद रक्खो कि गर्भ धारण होने के पश्चात् पुत्र के उत्पन्न होने तक भार्या का मुँह नहीं देखना। यदि ऐसा न हुआ, असावधानी से भी यदि मुँह दृष्टि पड़ गया तो निःसन्देह तुम राक्षस के स्वरूप में बदल जाओगे।

राजाने अपनी प्रीतिपात्र रानी तँवर को आम का फल सौंप दिया रानीने स्वामी की आज्ञा के अनुसार आम खा लिया, गुठली छिलका फेंक दिया।

रानी सोढी किसी प्रकार यह खबर पा गई। गुठली और छिलका उसने मंगवा कर खा लिया।

परमेश्वर की लीला बड़ी विचित्र है। भाटने कहा 'दोनों रानियों को गर्भ स्थिति हुई। राजा सोढ़ी का मुँह देखना तो कभी पसन्द करता ही न था और वह यह भी नहीं जानता था कि गुठली और छिलका उसने खा लिया और न यह कि उसेभी गर्भ रह गया है! उसने रानी तँवर को अच्छी तरह समझा दिया था और आप भी ऐसा सावधान रहता था कि जिसमें उसे रानी तँवर का मुँह दिखाई न पड़ सके।

एक दिन राजा शिकार को गया भरोसा नहीं था कि दो चार दिन में वह लौट सके। मौसम गर्मी का था। रानी सोढ़ी सन्ध्या समय दौलत बाग में सैर करने चली गई और वहां निश्चिन्त हो हिण्डोला झूलने लगी।

उधर राजा शिकार के पीछे दिन भर मारा मारा फिरा और अन्त में अजमेर के समीप ही आपहुँचा। समय सन्ध्या का था तो भी राजा धूप और प्यास से व्याकुल हो रहा था। दौलतबाग में पानी मिलने की आशा कर वह भी घोड़ा उड़ाते हुए दौलत बाग में आ पहुँचा। वह क्या जानता था कि रानी यहां हिंडोला झूल रही है? सहसा दोनों की दृष्टादृष्टि हो गई। ज्योंही उन्होंने एक दूसरे को देखा, राजा की देह राक्षस के रूप में बदल गई!! राक्षस की तरह राजाने लोगों को मारना और खाना आरम्भ कर दिया। रानियोंने जब यह हाल देखा, अजमेर छोड़ देहली का रास्ता लिया! अजमेर की प्रजा, कर्मचारी, सेना आदि सब अपनी अपनी जान बचा कर जिसे जिधर मार्ग दिखाई पड़ा वह उधर ही चलता बना! थोड़े ही दिनों में अजमेर शहर निर्जन हो गया। राजा मात्र अकेला रह गया सो भी राक्षस के स्वरूप में।

दिल्ली में रानी तँवर के गर्भ की बात तो प्रसिद्ध हो चुकी थी परन्तु सोढ़ी के गर्भ का हाल अब तक कोई नहीं जानने पाया था। सोढ़ीने अपने गर्भ का हाल किसी पर प्रगट नहीं होने दिया; क्योंकि दिल्ली और अजमेर की सम्पूर्ण प्रजा जानती थी कि राजा सोढ़ी से अप्रसन्न है और उससे कुछ सम्बन्ध नहीं रखते। तँवर के पुत्र उत्पन्न हुआ उसका यथोचित आदर और स्वागत किया गया। जब सोढ़ी की बारी आई, लड़का पैदा हुआ और चुपके से वह एक गोर में फेंक दिया गया।

उधर अजमेर का राज्य उजड़ गया! इधर रानी तँवर का पुत्र समझने योग्य हुआ। वही पृथ्वीराज था।

एक दिन दिल्लीपति के दरबार में एक भाटने पृथ्वीराज को

भानजा कह कर सम्बोधित किया । इस पर पृथ्वीराज के हृदय में प्रश्न उपस्थित हुआ कि उसका पिता कौन है और कहां है ? अपनी माता से कुछ जानकारी प्राप्त कर वह अजमेर के लिए रवाना हुआ । अजमेर में आशापूर्णा देवी के मन्दिर में पहुँच कर उसने भगवती की आराधना की । यहां उसने सोमेश्वर के क्रीडा साधनों में से एक लोह-दण्ड उठा लिया । इसी बीच में सोमेश्वर वहां आ पहुँचा । जब सोमेश्वर आशापूर्णा के दर्शन को जाता था उस समय उसकी राक्षसी वृत्ति नष्ट हो जाती थी और वह एक समजंस पुरुष की भांति व्यवहार करने लगता था । इसी कारण देवी के पुजारी आदि सब सुरक्षित रहने पाये थे ।

सोमेश्वर ने देखा कि एक युवक जो अभी आठ दस वर्ष की ही अवस्था में था, एक ऐसे भारी लोह दण्डको उठा कर क्रीड़ा कर रहा है; जिसको अच्छे शक्तिशाली वीर नहीं उठा सकते ! इससे उसने जाना कि वह युवक; किसी वीर पुरुष की सन्तान है । पूछने पर मालूम हुवा कि वह उसी महात्मा का प्रसाद है जिसके कोप से उसका सत्यानाश हो गया । इस समय अजमेर राज्य में आशापूर्णा देवी का स्थान छोड पशु, पक्षियों में से कोई नहीं बचा था ।

सोमेश्वर ने अपने पुत्र से कहा ' बेटा, मेरा जीवन नष्ट हो गया । अब मैं किसी काम के योग्य नहीं रहा और जब तक मैं जीवित रहूंगा; अजमेर राज्य आबाद न हो सकेगा, इससे यह अच्छा होगा कि तुम मेरा जीवन समाप्त कर दो । यदि तुम ने ऐसा कर दिया, राज्य आबाद हो जावेगा । हमारे मांस से लड्डू बनाकर सौ कन्याओं को खिला देना उनसे सौ शूर सैनिक उत्पन्न होंगे । उनके द्वारा तुम राज स्थापना का प्रबन्ध कर लेना ' । पृथ्वीराजने ऐसा ही किया और अब वह अजमेर के राज्य की स्थापना का प्रबन्ध करने लगा ।

पृथ्वीराज जब तक इधर अजमेर राज्य की स्थापना कर रहा था, तब तक दिल्ली में तँवर घराने के सब पुरुष मर खप गए । अब दिल्ली के राज्य प्रबन्ध का भार उठाने के लिए भी पृथ्वीराज के सिवाय अन्य कोई नहीं दिखाई पड़ता था । पृथ्वीराज की नानीने दिल्ली के राज्य को भी अजमेर में मिला लेने और दोनों राज्यों का मालिक बनने को पृथ्वीराज को सूचना की, परन्तु उसने यह स्वीकार [illegible] किया । उसने कहा ' मैं दिल्ली के राज्य का प्रबन्ध करूंगा जिसमें [illegible] उसकी मालिक बन कर रहो ' । इसके पश्चात् पृथ्वीराज इस [illegible] में रहा कि कोई योग्य पुरुष ऐसा मिले जो दिल्ली के राज्य के [illegible] दीवान मुकर्रर कर दिया जाये । खोजते खोजते उसीकी अवस्था [illegible] और लगभग रूप गुण लक्षणों में भी उसी के जैसा एक युवक मि[illegible] पृथ्वीराज को यह बहुत पसन्द आया और उसने उसे दर्जे[illegible] तरक्की देकर अन्त में दीवान के पद पर प्रतिष्ठित करादिया । [illegible] दीवान का नाम गोरी था, इसलिए कि यह गोर (कब्र) से मिला [illegible] एक फकीरने उसको पाला था, इस लिए यह गोरीशाह कहा जाता [illegible] आगे चल कर यही मोहम्मद शहाबुद्दीन गोरी हो गया ।

पृथ्वीराज के ननिहाल की स्त्रियाँ अजमेर में अपने नवासे के पा[illegible] रहने लगीं । गोरी दिल्ली का राज्यशकट योग्यता से हांकने लगा [illegible] राज्य की आमदनी से खर्च करते जो रकम बाकी बच रहती, [illegible] की रानियों के लिये अजमेर भेजता । कुछ वर्ष इस तरह प्रबन्ध हो[illegible] रहा । पश्चात् शहाबुद्दीन की नियत ख़राब हुई उसने अपने आप [illegible] दिल्ली का बादशाह बनाना चाहा, पर पृथ्वीराज के पुरुषार्थ के आ[illegible] उसकी कुछ न बन आई । अन्त में वह अफगानिस्थान को गया औ[illegible] मक्का शरीफ तथा मदीना की यात्रा कर, क़िबला और काबा से बरक[illegible] पाकर वापस आया और फिर दिल्ली को हस्तगत करने का प्रय[illegible] किया जिस में वह सफलोद्यम हुआ ।

इस किस्से के सुनते ही सुनते हम को कुछ भ्रम हुआ, क्योंकि इसकी सत्यता का कोई प्रमाण अब तक उपलब्ध नहीं । यदि इसमें सत्यता होती, कहीं न कहीं कोई न कोई बात इस किस्से के किसी अंश [illegible] प्रमाण में अवश्य दिखाई पड़ती । परन्तु यह बात भी विचारणीय है कि किसी को क्या पड़ी थी जो ख्वाहमख्वाह क्षत्रिय वीर पृथ्वीराज को एक दग़ाबाज़ विधर्मी का भाई बनाने के लिये अपने दिमाग़ को मिथ्यावाद के गड्ढे में इतने गहरे गोते खिलाता ? जो हो हमारे भ्रम को इतिहास प्रेमियों के सन्मुख उपस्थित कर देना हम उचित समझते हैं ।

बंगला ' मेघनाद वध ' के हिन्दी पद्यानुवाद की बानगी ।

(रावण विलाप)

अग्रसरि रक्षोराज कहिला कातरे,-
" छिल आशा, मेघनाद ! मुदिब अन्त मैं
ए नयनद्वय आमि तोमार सम्मुखे: —
सँपि राज्यभार पुत्र ! तोमाय, करिब
महायात्रा । किन्तु विधि-बुझिब केमने
तॉं लीला ? भाँडाइल से सुख आमारे ।
छिल आशा, रक्षः कुल राजसिंहासने
जुडाइब आँखि, वत्स ! देखिया तोमार
वामे रक्षः कुललक्ष्मी रक्षो राणीरूपे
पुत्रवधू वृथा आशा ! पूर्व जन्म फले
हेरि तोमा दोहेँ आजि एकाल आसने !
कर्पूर-गौरव रवि चिर-राहु-ग्रासे ।
सेविलु शिबिरे आमि बहु यत्न करि
लभिने कि एइ फल ? केमने फिरिब,—
हायरे, के कबे मोरे, फिरिब केमने
शून्य लंका धामे आर ? कि सान्त्वना छले
सान्त्वनिब माये तब, कि अबे आमारे ?
' कोथा पुत्रवधु आमार ?'—सुधिबे
जबे राणी मन्दोदरी,—' कि सुखे आइले
राखि दोहे सिन्धुतीरे, रक्षःकुलपति ?'
कि कये बुझाब तारे ? हाय रे, कि कये ?
हा पुत्र ! हा वीरश्रेष्ठ ! चिरजयी रणे !
हा मातः राक्षसलक्ष्मि ! कि पापे लिखिला
ए दारुण पीडा विधि रावणेर भाले ? "
([illegible])

बढ आगे रावण ने कातर हो कहा,—
" आशा थी हे मेघनाद ! मै अन्त में
ये नेत्रद्वय मूदूंगा तेरे निकट;—
राज्यभार को सौंप पुत्र ! तेरे करों
चिरयात्री हूँगा । पर विधि की वामता !
हा ! मेरा वह सुख भी अब तो सुख गया ।
आशा थी, ये आँख जुड़ायेंगी निरख-
राक्षसकुल के राजसिंहासन पर तुम्हें,
वत्स ! विलोकूँगा राक्षसकुल-लक्ष्मी
वाम ओर तब राक्षसरानी सुतवधू
किन्तु वृथा आशा ! फल पहिले जन्म का
मिला, तुम्हें जो कालासन पर देखता !
चिर-राहु मुख में कर्पूर-गौरव तरणि ।
पालन तेरा किया शिविर में यत्न से
अहो इसी के लिये ? अहा मैं क्या करूं ?
रहा जायगा मुझसे कैसे हाय अब
निर्जन लंका में, न शान्ति होगी मुझे,
पूछ उठेगी जब रानी मन्दोदरी,—
' रक्षनाथ ! हे पुत्रवधू मेरी कहाँ !
सिन्धुतीर क्या सोच उन्हें तू मे रखा !
क्या कह समझाऊँगा ? क्या कह हाय तब ?
हा सुत ! वीरश्रेष्ठ ! हाय चिर-रण जयी !
हा मात असुरेश्वरि ! क्या पाकर लिखा
यह दारुण पीड़ा विधि ! रावण भाल में ! "
—[illegible]

मि० रत्न—चिन्ता नहीं करना मुरली, धीरे २ अबलता भी दूर होजायगी।

मुरली—अब चिन्ता किस बात की करूँगा पिताजी?

दिन को सुस्वादु पौष्टिक भोजन मुरलीधर को कराकर मि० रत्न स्कूल चले गये। C. M. S. स्कूल में इस वर्ष हिन्दू लड़कों की सख्या बहुत घट गयी थी घटने का खास कारण कठिन दुर्भिक्षथा, अनाथ हिन्दू बालकों की देखरेख पाला पाही कौन? क्रिश्चियन छात्रों की संख्या अलबत्ता कुछ बढ़ गयी थी, क्योंकि उनको मिशन की ओर से भोजनादि मिला करता था। स्कूल जाने पर मि० रत्न को सबेरे की आयी हुई डाक मिली। मि० रत्न जिसकी अभिलाषा दिनों से कर रहे थे, कई बार प्रार्थना भी पत्र भी देचुके थे आजकी डाकने उनका अभीष्ट पूर्ण किया, प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, अपने सहायक हेड़ मास्टर मि० जौन से कहा कि मुझ को C. M. S. कौलेज हवड़ा के प्रिंसपल की जगह मिल गयी। यही देखिये वहां के सेक्रेटरी का पत्र आया है शीघ्र ही बुलाते हैं, मि० जौन यह सुन कर बहुत प्रसन्न ए क्योंकि मि० रत्न के जाने पर C. M. S. School की हेडमास्टरी उनको ही मिलनेवाली थी।

मि० जौन—आप का वहां जाना कबहोगा?

मि० रत्न—संभवतः बहुत शीघ्र आज ही यहां के सेक्रेटरी साहब से मिलने जाऊँगा, देखें वे कब तक छोड़ते हैं।

मि० जौन—आप जब जाना चाहेंगे, सेक्रेटरी साहब तभी छोड़ देंगे।

मि० रत्न—आज शाम को मैं उनसे मिलूँगा, यदि होसके तो आप भी आइयेगा।

सेक्रेटरीने मि० रत्न की जगह मि० जौन को नियत कराने का वचन देदिया। और मि० रत्न को उनकी इच्छा के अनुसार ही जाने की आज्ञा देदी।

× × × + + +

आज C. M. S. H. E. School स्कूल खड़्गपुर में आनन्द और शोक दोनों का प्रादुर्भाव हुआ है, वह इस कारण कि मि० रत्न की विदायी होरही थी। मि० रत्न की अच्छी उन्नति हुई थी, इससे सब लड़के और अध्यापक आनन्दित थे, पर एक योग्य और मिलनसार अध्यापक के वियोग में वे सब दुखित हैं।

रात के बारह बजे की गाड़ी से मि० रत्न एम० ए. अपनी धर्मपत्नी सरलादेवी और आश्रित मुरलीधर के साथ हावड़ा के लिये रवाना होगये।

रात का आठ बज गया था। एक कमरे में बत्ती धीमी २ जल रही थी पास ही एक अठारह वर्ष का लड़का किताबें हल कर रहा था, लड़के के बगल में बाल बिखराये, रौद्र रूप धारण किये उसकी माता बड़बड़ा रही थी, हाथ में एक डंडा भी था, मानो अपने लड़के की अध्यापिका बन कर उसके सामने बैठी थी।

दिवाल पर छाया मालूम पड़ी, किसी के पैर की आहट सुन पड़ी लड़के ने देखा, कि बाबू लोकनाथ दुबे बी० एल० घर में प्रवेश कर चुके लड़का उठ कर खड़ा होगया।

लोक नाथ बाबू ने लड़के से पूछा धीरेन्द्र, आज मुरली कहां है? क्या अभी तक खेल कर नहीं आया है? धीरेन्द्र बोलने ही को था कि धीरेन्द्र की माता सुभद्राने कड़क कर डंडा फटकारते हुए कहा कि खबरदार! आज से यदि मुरलिया का नाम जुबान से निकाला कि मैं घर से निकली। उस निगोड़े को आज तक खिलाया पिलाया रक्खा अब इस दुर्भिक्ष में मैं उसको खाना कपड़ा स्कूल की फीस, किताबें कहां से जुटाऊँ? तिस पर भी कहा कि रसोई दोनों शाम बनाया कर बरतन मांजा कर, ठाकुर की पूजा कर तुझे हो रक्खूंगी। दो दिन तक जला पका कर बनाया आज अभी खेल कर आया था, क्या उसके बाप का कोई गुलाम है कि सब चीजें उसको जुटा कर दीजायगी। अभी इसी डंडे से उसकी पीठ मरम्मत कर निकाल बाहर किया, यदि फिर लौट कर आये तो जान नहीं बचने दूंगी, देखूं तो कौन बचाता है।

तुम यह तो कहो आज कितना रुपया मिला है? लोकनाथ बाबू स्त्री के डर से घर २ कांपने थे विकालत करके जो कुछ ले आये थे सुभद्रा के हाथ में देकर बिना कुछ बोले उस स्थान से चल दिये। मानो सिरहनी से जान की रिहाई पाई उनको डर होता था हाथ में डंडा है हो कहीं कुछ बोलें तो मेरी खबर भी न ली जाय। रुपया पाकर सुभद्रा का क्रोध शांत हुआ। दूसरे ठाकुर का प्रबन्ध होगया, घर का बोझ (मुरली) उतर गया। फिर कभी मुरली उस घर में प्रवेश करने का साहस नहीं हुआ और न लोकनाथ बा[बू] ही कुछ खोज करायी।

—× × ×—

मुरली अनाथ होकर इधर उधर भटकने लगा। दो चार दिनों तक टोले मुहल्ले के लोगोंने कुछ भोजन के लिये दिया-पीछे सबोंने फटक दिया। सत्य है किसी का उपकार लोगों को सर्वदा स्मरण नहीं रह[ता] है, मुरली के पिता, पं० विश्वनाथ प्रसाद दुबे एम. ए बी एल. को कौ[न] नहीं जानता था? उन्हीं से खड्गपुर में किसका उपकार नहीं हुआ [था] उन्हीं की कृपा से उनके अनुज पं० लोकनाथ दूबे आज विकालत [कर]रहे हैं, सभा सोसायटियों में लम्बी २ स्पीचें झाड़ते हैं, विचारों मे[ज] की मुष्टिका प्रहार से पीठ गरम करते हैं-लोकोपकार के लिये लम्बे लेख लिखते हैं, पर गृहिणी के आगे सब बातें हवा होजातीं, कुछ न[हीं] कर सकते। भाई को स्वर्गीय हुए आज दश ही वर्ष हुए हैं कि मा[ई] का कुल उपकार भूल बैठे, यहां तक कि उस मातृ पितृ हीन भ्रातृ पु[त्र] 'मुरली' को दुर्गति कर उनकी पूजनीया धर्मपत्नीने घर से निका[ल] दिया और वे चूँ भी नहीं कर सके। धन्य है उनकी बुद्धि और धन्य है उनकी क्षमता।

धीरेन्द्र अब अकेला नहीं रहता! मुरली के रिक्त स्थान को उसके ममेरे भाई शिवनारायणने सुशोभित किया। सुभद्रा शिवनारायण को बहुत प्यार करती थी क्यों कि उसके छोटे भाई का पुत्र था, पढ़ने लिखाने का कुल खर्च देती थी। लोकनाथ बाबू भी परिवार के साथ आनन्द पूर्वक रहते थे।

—××—

मि० नीलरत्न C. m. S. कोलेज हावड़ा के प्रिन्सपल के कार्य को बड़ी दक्षता के साथ सम्पादन करने लगे, अब भी मुरलीधर को अपने ही साथ रखते हैं। अब वह हृष्ट पुष्ट हो गया उसकी आकृति उसे होनहार प्रमाणित करती है, उसके व्यवहार से मि० सरलादेवी तथा मि० रत्न बहुत प्रसन्न रहते थे। मुरली के पढने का प्रबन्ध भी हो गया उक्त कौलिजियट की चतुर्थ श्रेणी में नाम लिखा गया। उधर गिरजा घर में ले जाकर धर्म संस्कार भी करा दिया गया, अब मुरली का नया नाम हुआ "सेमुअल मुरलीधर"

धीरे धीरे मुरलीने प्रवेशिका (Matric) परीक्षा में योग्यता पूर्वक उत्तीर्णता लाभ की, २०) रुपये मासिक छात्रवृत्ति भी मिली। मि० रत्नने उसको उसी कौलेज में I. Sc. की शिक्षा आरम्भ करादी। उत्तमता पूर्वक उत्तीर्ण होने के कारण मि० रत्न और मि०सरला उसको अत्यन्त प्यार करने लगीं, पुत्र से किसी अंश में भी कम नहीं समझती थी मि० रत्न का पुत्र मि० J K. रत्न उस समय विलायत में सिविलियन होने गया था।

जिस वर्ष मुरली ने B. Sc. की परीक्षा नामवरी के साथ पास कर मेडिकल कालेज में नाम लिखाया उसी वर्ष मि० J. K. रत्न सिविल सरविस में उत्तीर्ण हो पटने के सेशन जज होकर आये थे, पिता से मिलने के लिये हावड़ा गये। आज उनके पिता की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था इष्ट मित्रों को निमंत्रित कर जलसे कर रहे थे।

मुरली अनेक प्रकार से आगन्तुक सज्जनों का सत्कार कर रहा है। यद्यपि मि० रत्नने पत्र द्वारा मुरलीधर की सब बातें अपने प्रिय पुत्र मि० J. K. रत्न को सूचित कर दी थी, पर दोनों के मिलने का शुभ समय आज ही उपस्थित हुआ था। मि० J. K. रत्न मुरली के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए दोनों का भ्रातृ प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।

× × × × × × × ×

धीरेन्द्र को पाठक भूले नहीं होंगे, अब वह भी वकील हो गया और मंमला चढ़ाये पिता के साथ ही अदलत में विचरने लगा। शिवनारायण वकील तो नहीं पर मुख्तार होकर पावर मारने से वंचित नहीं रहा। पर वह अलग रहने लगा, अब लोकनाथ बाबू और धीरेन्द्र से उसका कोई आवश्यकता नहीं रही।

धीरेन्द्र की विकालत जोरों पर चली, यद्यपि लोकनाथ बाबू वृद्ध हो गये थे। गला कांपने लगा बदन थरांने लगा अदालत आने की शक्ति जाती रही, पर अकेला धीरेन्द्र इतना उपार्जन करता था कि कभी किसी चीज की झंझट ही नहीं रहती थी।

सुभद्रा का यह स्वभाव बदला नहीं था पर अब लड़ती ही किससे!

थी ! इधर कुछ दिनों से पुत्र वधू आयी थी उसके कान का मैल बेशक दिन में दो बार छुड़ाया करती थी। यद्यपि धीरेन्द्र को यह बुरा लगता था पर उग्रा माता के डर से कुछ बोल नहीं सकता था।

उधर मि० मुरलीधर डाक्टरी पास कर सरकारी चिकित्सालय में असिस्टेन्ट सरजन Asst. S. की जगह पर देवघर में कार्य करते थे, मि० रतने, मुरलीधर का विवाह एक सुयोग्य सुशीला बालिका से कर दिया था। वृद्धा सरला प्राणाधिक-पुत्रतुल्य मि० I. मुरलीधर के साथ देवघर ही में रहती थी मि० रत्न Relive हो गये थे वे कभी मुरली के पास कभी अपने बड़े पुत्र J. K. रत्न के साथ रहते थे।

ग्रीष्म का समय था मि० मुरलीधर मोटर पर वायु सेवन करने जसीडीह स्टेशन की ओर जा रहे थे, ठीक पांच बजे स्टेशन पहुँच प्लेटफार्म का टिकट लेकर प्लेटफार्म पर गये गाड़ी लगी थी, उनके एक मित्र आनेवाले थे पर न मालूम किस कारण से नहीं आये। डाक्टर साहब बाहर निकल गये, जसीडीह से छोटी लाइन देवघर को जाती है। देवघर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, यात्रियों की इस ट्रेन में खासी भीड़ थी डाक्टर साहब बाहर खड़े होकर यह दृश्य देख रहे थे, स्टेशन से टिड्डी दल की भांति यात्री बाहर आरहे थे एक वृद्धा वृद्ध, एक विधवा युवती का हाथ पकड़े स्टेशन से बाहर निकले दोनों का अस्थि पंजर मात्र शेष रह गया था, आंखें धस गयी थीं, हठात् वृद्धा विधवा का हाथ छुड़ा कर बैठ गयी बैठने के साथ ही गिर गयी। विधवा इधर उधर देखने लगी, जल कल देख कर लोटा लिये पानी लाने दौड़ी, तब तक कई आदमी पंखा से हवा करने लगे विधवा पानी लेकर आयी मुँह में पानी दिया, थोड़ी देर के बाद वृद्धा को होश हुआ, डाक्टर साहब भी वृद्धा के उपचार में लग गये थोड़ी देर में वह फिर बेहोश हो गयी पुनः डाक्टर साहब के उपचार से वृद्धा को शीघ्र होश आगया। अब वृद्ध डाक्टर साहब के पैर पर गिर गया और बोला महाशय मुझ हतभागी पर दया कीजिये। कुछ दिनों से वृद्धा की यही अवस्था है दिन में आठ दस बार मूर्च्छा हुआ करती है।

डाक्टर साहब ने वृद्ध का हाथ पकड़ कर उठा लिया और समझा कर कहा महाशय आप घबड़ावें नहीं मैं उपचार कर दूँगा। मैं देवघर के औषधालय का डाक्टर हूँ क्या आप वहां चल सकते हैं ?

वृद्ध—महाशय मैं अवश्य वहां सेवा में उपस्थित होऊँगा, हम लोग तो देवघर ही तीर्थ में जा रहा हैं। डाक्टर साहब मोटर पर सवार होकर वापस आये। दूसरे दिन वृद्धा वृद्ध और विधवा तीनों अस्पताल में उपस्थित हुए, डाक्टर ने उन को जगह दी। वृद्धने डाक्टर से नम्रता के साथ कहा, महाशय, मुझ गरीब पर कृपा करें मेरा भाग्य तो उसी दिन फूट गया जिस दिन सुयोग्य पुत्र छोड़ संसार से जा स्वर्ग में विकालत करने लगा। पर आज तक मुझ अभागे को नहीं बुला सका है, न मालूम वहां के अधिकारी के सामने उसकी विकालत चलती है, या नहीं !

डाक्टर मुरलीधरने बड़े आग्रह के साथ वृद्ध का नाम और निवासस्थान पूछा। उत्तर में वृद्धने अपनी करुणा कथा का वर्णन किया, महाशय, मेरा नाम लोकनाथ दुबे है, मै खड्गपुरमें विकालत करता था, पर अब वृद्धावस्था की असमर्थता से छोड़ दी, पुत्र धीरेन्द्रप्रसाद भी विकालत करता था, विकालत जोरों की चली थी पर मेरी असामान्यताने उसे यहां रहने न दिया, यह वृद्धा मेरी पत्नी और विधवा पुत्रवधू है, इन बातों के कहते कहते वृद्धका गला भर आया, महाशय इसके अतिरिक्त मुझे एक और ज्येष्ठ भ्राता का पुत्र मुरली नाम का था जो इस वृद्धा के अत्याचार और मेरे ही दिये कष्टों से कहीं चला गया... ...

इन बातों के सुनते ही डाक्टर बाबू चकित होकर वृद्ध को देखने लगे और घबड़ाकर वृद्ध के चरण में लिपट गये और बोले पिता, मैं ही आप का अभागा जातिच्युत मुरली हूँ कृपया क्षमा करें। पाठक उस समय का दृश्य ही अपूर्व था उसका वर्णन लेखनी नहीं कर सकती अब आप ही अनुमान कर लें।

उस दिन से डाक्टर मुरलीधरने एक किराये के मकान में तीनों को समुचित प्रबन्ध के साथ रखा और जीवन भर सब चीजें जुटाते रहे, मुरली बाबू वृद्ध का उच्छिष्ट था आते थे पर वृद्ध को अपने यहां नहीं खाने देते यह इस कारण, कि मैं जातिच्युत हो गया हूँ, अस्तु उन लोगों का जीवन आनन्द से कटने लगा।

ऐतिहासिक-स्थलदर्शन

[illegible] (मालवा) में अकबर का महल। यह महल [illegible] सन १००९ के अकबर [illegible] ने बनवाया था ऐसा [illegible] पाया गया है।

[illegible] में अकबर के महल [illegible]

[illegible] में अकबर के [illegible]

[illegible]

महायुद्ध के पांचवे वर्ष का फरवरी मास

(लेखकः—कृष्णजी प्रभाकर खाड़िलकर बी. ए.)

तारीख १६ फर्वरी को प्रे० विलसन फ्रांस से अमेरिका को वापस चले गये। अमेरिका में तीन सप्ताह रह कर मार्च के दूसरे सप्ताह में वे पुनः पैरिस आजावेंगे। पैरिस को लौट आने पर राष्ट्रसंघ और सन्धि का कार्य समाप्त कर मई—जून में वापस अमेरिका को जावेंगे। मई की लगभग १५ तारीख तक सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर होंगे, ऐसा अंदाज है। अमेरिका जाने के पूर्व राष्ट्रसंघ की रचना के नियम तय्यार करके प्रे० विलसन ने सन्धि परिषद के सन्मुख उपस्थित किये। मार्च अप्रैल इन दो महिनों में ये नियम वाद विवाद के लिये सन्धि परिषद के सन्मुख उपस्थित किये जाकर उनका अन्तिम स्वरुप निश्चित होकर राष्ट्र संघ की स्थापना सम्भवत अप्रैल मास में होगी। पहले राष्ट्र संघकी स्थापना होगी इसके पश्चात सन्धी की शर्तें निश्चित होगी। सन्धि के बहुत नियम इस स्वरूप के हैं कि राष्ट्रसंघ की स्थापना हुए बिना उनकी अमल जावरी होना ही अशक्य है। राष्ट्रसंघ के द्वारा कितनी ही शर्तों की अमल जावरी होने के कारण पहले राष्ट्रसंघ की स्थापना करके उसके बाद सन्धि की शर्तें लिखी जायँगी। प्रे० विलसन के राष्ट्रसंघ की घटना सामान्यतः इस प्रकार है, कि, अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस इटली और जापान ये पांच महाराष्ट्र संघ के आधारस्तंभ होकर प्रत्येक की ओर से राष्ट्रसंघ में एक एक प्रतिनिधि लिया जानेवाला है। इसके सिवाय मित्र सर्कार की ओर के समस्त भिन्न २ योरोपियन देशों की ओर से चार प्रतिनिधि राष्ट्रसंघ में सम्मिलित होनेवाले हैं। अर्थात् पहले राष्ट्रसंघ का पंच महाराष्ट्रों के प्रमुखत्व में और अन्य सब मित्रों का दोयम दर्जे में समावेश होगा। मित्रों का मिल कर ही पहला राष्ट्रसंघ होगा, लड़ाई में सम्मिलित न होनेवाले राष्ट्र और पूर्णतयः स्वराज्य का उपभोग करनेवाले अंग्रेजी उपनिवेशों के समान देशों को राष्ट्रसंघ में जगह प्राप्ती के लिये निवेदन करने का अधिकार दिया गया है। निवेदन करनेवाला देश या तो पूर्णतयः स्वतंत्र ही होना चाहिये, अथवा वह किसी साम्राज्य का भाग होने पर पूर्ण स्वराज्य के उपभोग करने की स्थिति पर वह रहा तो भी होना चाहिये, ऐसा निर्बन्ध है। अर्थात् हिन्दुस्तान के देश का राष्ट्रसंघ में स्थान मिलने के लिये प्रार्थना करने का अधिकार नहीं, यह बात स्पष्ट हो है। तटस्थ स्वतन्त्र राष्ट्र और पूर्ण स्वराज्य का उपभोग करनेवाले उपनिवेशों की तरह सन्धि हो पर जर्मनी, आष्ट्रिया, रशिया आदि शत्रुओं को भी राष्ट्रसंघ में प्राप्त करने का अधिकार है। इन अधिकारों का लाभ उठा कर कावेबाज शत्रु के भी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो जाने का सम्भव है। इस आपत्ति को टालने के लिये पहले मित्रों के संघ की स्थापना होने पर नये सभासद होने के इच्छुक निवेदक के लिये दो तिहाई मत अनुकूल होने चाहिये, ऐसी उसमें एक शर्त डाली गई है। अर्थात् पंच महाराष्ट्रों में से दो तीन राष्ट्र जिसके पृष्ठपोषक नहीं, ऐसे तटस्थ देश पांच दस तक भी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित न हो सकेंगे। पंचमहाराष्ट्रों से पहले सुलूक और मित्रता का व्यवहार कर एक प्रकार से उनका विश्वास संपादन करने पर ही जर्मनी, आष्ट्रिया, और रशिया का राष्ट्रसंघ में प्रवेश हो सकेगा अन्यथा नहीं; ऐसी व्यवस्था हो गई है। राष्ट्रसंघ के सभासद कौन हों, ये सब बातें उपरोक्त प्रकार से निश्चित कर राष्ट्रसन्ध को पृथ्वी पर शांति स्थापित करने, राष्ट्रों के पारस्परिक विद्रोह मिटाने, दुर्बल लोगों और देशों के अधिकारों का संरक्षण करने, जो लोग आज राष्ट्रसन्ध की दृष्टि से स्वराज्य के लिये अयोग्य समझे गये हैं उन्हें योग्य बनाने और संसार भर के पूंजीदार और मजूरदल के झगड़े मिटाने के उपयोग में आनेवाले नियम बना देने का काम कर दिखाना है। राष्ट्रसन्ध के इस कार्य की ओर दृष्टि डालने पर कार्य भाग बहुत बड़ा और संसारका कल्याण करनेवाला है, ऐसा कहना पड़ता है। पिछले समय धर्म संस्थापना का कार्य करनेवाले महात्मा लोग जिस प्रकार बड़े २ कार्यों को सामने रखकर युद्ध करते और उसमें विजय प्राप्त हो जाने पर निरपेक्ष बुद्धि से इष्ट हेतु का परिपालन संसार भर में होने के लिये उस विजय का उपयोग करते, उसी प्रकार का व्यवहार महायुद्ध के समय और आज कल सन्धि–परिषद में प्रे० विल्सन ने दृष्टि पथ में रक्खा है। हिन्दू मुसलमानों में परस्पर धार्मिक लड़ाइयां किये। योरोपखण्ड में कितनी ही शताब्दियों तक होनेवाली लड़ाइयां धर्म संस्थापना के लिये ही हुई थीं। अपना धर्म प्रतिपक्षी को स्वीकार कराने के लिये विवश करके समग्र भूमण्डल पर के झगड़ों को मिटा कर शांति साम्राज्य स्थापित करना, गरीबों, अनाथों और अयोग्यों को अपने धर्म के अधिकार देकर उन्हें उच्च श्रेणि में पहुंचाने तथा ये सब धर्म संस्थापना की बातें और जगत के व्यवहार में लाने के लिये धर्मी धर्मी राष्ट्रों का संघ स्थापित कर उसमें के चुने हुए लोगों के हाथ में पृथ्वी के भिन्न २ भाग धर्म प्रचारार्थ सौंप देना, इसी प्रकार के उपायों की प्राचीन काल के धार्मिक युद्धों के समय प्रत्येक धर्म के अनुयायीने योजना कर दी है। इसी योजना का अनुकरण प्रे० विल्सन कर रहे हैं। धर्म-तत्वों के बदले राष्ट्रीय और आर्थिक तत्व आगे कर रहे हैं। ईसाई, हिन्दू अथवा मुसलमानी धर्म को स्वीकार अथवा उसका प्रसार करने के जो ध्येय प्राचीन कालिक धार्मिक युद्धों के समय होते थे। इन प्राचीन ध्येय के स्थान पर सांप्रत समय के नये ध्येय का मसौदा बन गया है। लोगों की स्वतन्त्रता के तत्वों का अनुसरण कर अपनी राज्यव्यवस्था निश्चित करना स्वातन्त्र्य और राज्यकर्ता लोगों के अधिकार हैं, अतः

आस्ट्रिया का कौनसा भाग और बाल्कन प्रदेशों के और आड्रिआटिक समुद्र का कौनसा किनारा इटलीको [मिलना] चाहिये है वह उपरोक्त नक्शे में बड़ी रेखा से बतलाया गया है।

स के लिये लोगोंको जवाबदार रहना चाहिये। इस प्रकार की लोकशाही का धर्म प्रे० विलसन संसार भर में स्थापित किया चाहते हैं। धर्मयुद्ध में विजय प्राप्त करनेवाले वीर पुरुष और धर्म के तत्वों का विचार करनेवाले धर्मगुरु तथा साधु सन्तों का जो भेद पहले था वैसा ही भेद अब इस नये धर्म में भी, दृष्टिगोचर होता है। राज्यकर्ता और मुत्सद्दियों का वर्ग तथा लोकशाही के तत्वों को सम्हालनेवाले लोक प्रतिनिधियों का वर्ग ये भिन्न २ हैं इस प्रकार का भेद प्रे० विलसनने राष्ट्रसन्ध की स्थापना के समय कर दिया है। मुत्सद्दी और सर्कार महत्वाकांक्षी बन कर लोकशाही के तत्वों को पैरों तले रौंद डालने को उद्युक्त होंगी, इस भय से राष्ट्रसन्ध के दो भाग कर दिये गये हैं। राष्ट्रसन्ध की आधारस्तंभ रूप सर्कार की नियत की हुई कमेटी वर्षभर बराबर बैठा करेगी; और अमल बजावरी को दृष्टि से इस कमेटी को राष्ट्रसन्ध के कार्य की ओर स्थायी रूप से ध्यान देना होगा। अमल बजावरी करनेवाले सर्कारी वकील महत्वाकांक्षा के बलिदान होकर दुर्बल और अनाथों को न्याय मिलने बदले अशक्त लोगों और देश के कठोर सत्ता के नीचे कुचल जाने का सम्भव है। ऐसे समय में किसी भी तरह का प्रश्न अमल बजावरी करनेवाली छोटी कमेटियों से ले लिया जाकर लोक प्रतिनिधियों की बड़ी कौन्सिल के सन्मुख रखे जा सकनेकी व्यवस्था की गई है। धार्मिक युद्धों के समय राजा और सेना नायकों के हाथ में धर्म संस्थापना की अमल बजावरी रहा करती थे। परन्तु अपनी सत्ता स्थापित करने के कार्य में राजा और वीर योद्धा लोग अमल बजावरी का दुरुपयोग न कर सकें, इसके लिये धर्मगुरु और साधु सन्तों के पास जैसी अपील करने की सत्ता रक्खी गई थी, उसी भांति की अपील साम्प्रतिक राष्ट्रसन्ध में लोक प्रतिनिधियों की ओर रक्खी गई है। धर्म गुरु और सांप्रदायक पुरस्कर्ता गण के स्वतःही महत्वाकांक्षी बनने तक पूर्वकालीन युक्तियों का दीन दुखियों के लिये उपयोग हुआ, वही स्थिति सांप्रतिक योजना में भी होनेवाली है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस के लोक के प्रतिनिधियों का काम पार्लमन्ट सभायें कर रही हैं। इन सभाओं महत्वाकांक्षा भी एतद्देशीय सर्कारों के समान ही है। महायुद्ध में बेलिजयम पोलण्ड अथवा स्नाथ आदि दुर्बल लोगों के सम्बन्ध में जो प्रश्न प्रत्यक्ष उपस्थित हुआ है, उसका निराकरण लोकशाही की नीति का अनुसरण कर इन सभाओं की ओर से होगा, किन्तु भावी प्रजा के सम्बन्ध में जो प्रश्न संसार भर में उपस्थित होगा उसका निराकरण भी लोकशाही के धर्मानुकूल होगा ऐसा नहीं कहा जा सकता। हिन्दू लोगों में आस्तिक और नास्तिक, ग्रीशन और रोमन लोगों में नागरिक और गुलाम, ईसाई और मुसलमानों में धार्मिक और काफिर इस प्रकार के भेद माने जा कर नास्तिक गुलाम और काफिरों का बहिष्कार करने अथवा उनकी चोटी अपने हाथ में रखने का अधिकार पतितों के उद्धारार्थ या उनके कल्याणार्थ सर्व सांप्रदाय अपने पास रखते थे इसी प्रकार वर्तमान काल में भी प्रे० विलसनने लोकशाही को योग्य और अयोग्य इन दो भागों में बांट दिया है। योग्यायोग्यता की [illegible] पुरुषों में है। आफ्रिका और एशिया के लोग नालायक ठहराये जाकर भगवान के असे पोहे ने [illegible] भी माने गए हैं। तुर्की साम्राज्य, मिश्र, हिन्दुस्थान, ईरान काबुल, बुखारा समरकन्द [illegible] की जनता प्रे० विल्सन के राष्ट्रसन्धवाले नये [illegible] नास्तिक, गुलाम और काफिर मानी गई है। इन नालायक में भी और कितने ही भेद है किन्तु यहां उन पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। धार्मिक युद्धोंके समय प्रे०विलसन के समान उदार

बुद्धिवाले विश्व कुटुम्बी राजा अथवा धर्मगुरु उस समयके राष्ट्रसंघ नेता बनने के उदाहरण हैं। वे महात्मा नास्तिक, गुलाम अथवा काफिरों की ओर जिस सदय दृष्टि से देखा करते थे, उसी दृष्टि से आज प्रे० विलसन आफ्रिका और एशिया के लोगों की ओर देख रहे हैं। नास्तिक को आस्तिक और गुलाम को नागरिक बनाने तथा काफिर को खिस्ती अथवा मुहम्मदी दीक्षा देने के उच्च हेतु से प्रवृत्त होकर तत् कालीन महात्माओंने नास्तिकों अथवा गुलामों और काफिरों का प्रदेश अधिकृत करके धर्म संस्थापना के लिये अपना राज्य स्थापित करने के लिये वीर पुरुषों को आज्ञा दी थी, और वे महात्मा जब तक जीवित रहे, तब तक विजित लोगोंने उच्च ध्येय से थोड़ा बहुत लाभ उठाया और उन महात्माओं के पुण्य के प्रमाणानुसार उस समय भी छोटे बड़े पुण्य कार्य होते गये। परन्तु उन महात्माओं के अस्तंगत हो जाने के साथ ही धर्म कार्य अलग रह कर उन्मुक्त सत्ता के उपभोग का आरम्भ हुआ। प्रे० विलसनने नालायक लोगों की बँटनी पंच महाराष्ट्रों में करदी है। जिसके कारण जर्मनी के उपनिवेश, मिश्र, हिन्दुस्तान और तुर्की साम्राज्य का छायाचित्र मुसलमानी प्रदेश के मस्तक पर गुरु के नाते से मालिक बननेवाले सत्ता धारियों के नाम लिखा जा चुका है। लायक और नालायक का भेद किया जाने के कारण सन्धि परिषद् और राष्ट्रसंघ का कार्य सरल होगया है। सन्धि और धर्म संस्थापना के जहाज हमेशा महत्वाकांक्षा की चोट से ही फूटते हैं, विजितों को नालायक ठहराकर नालायकों के कल्याणार्थ गुरु के नाते सिंहासन पर बैठने की कल्पना का स्वीकार प्रत्येक देश और काल की करणीय और महत्वाकांक्षी [illegible] किया गया है। य[illegible] कितने ही प्रसंगों प[illegible] माना गया है और क[illegible] झूठा भी। सच्चे और [illegible] दोनों हो इसी मार्ग के [illegible] यदि देख पड़ने से लो[illegible] ही के समय की यह [illegible] यकों अर्थात् पहले [illegible] नास्तिकों, गुलामों [illegible] काफिरों की स्थिति की पुनरावृत्ति होसकती है, इस प्रकार की [illegible] होना स्वाभाविक है। प्रे० विलसन और उनके चतुर्दिक त्यागी म[illegible] के महात्माओं के मन को असत्यता के अंश ने स्पर्श तक नहीं कि[illegible] उनके उच्च ध्येयों के सम्बन्ध में शंका करने की जगह ही नह[illegible] प्रे० विलसन और उनके महात्माओं का मंडल अधिकारारूढ़ रहने [illegible] नालायकोंको लोकशाही के मार्ग से आगे पैर बढ़ानेका पाठ [illegible] या जायगा और अपने पुण्य के बल पर साम्प्रत के अयोग्यों [illegible] ही कुछ देश जापान की तरह लायकोंके पदवी को पहुंच जा[illegible] यह बात सब किसी के पुण्य और तपश्चर्या पर अवलंबित है [illegible] विलसन का सम्प्रदाय अधिकारारूढ़ रहते तक नालायकों [illegible] तपश्चर्या और पुण्याई फलप्रद होगी। प्रे० विलसन और उनका [illegible] मंडल कालवशात् अस्तंगत होजाने पर अयोग्यों का उद्धार कर[illegible] बुद्धि राष्ट्र-संघमें जोविनही बनी रहेगी ऐसा विश्वास करनेके लिये [illegible] संघ की योजना में कुछ भी चिन्ह नहीं दीख पड़ते। किम्बहुना [illegible] स्वामी भरत महात्माओं की शक्ति से भी परे है। साधुओं का [illegible] स्वरूप स्वतः धारण कर स्वांग पर ही संसार को भुलाया [illegible] ढोंगियों के लिये अपनी दुष्ट वासनाओं की पूर्ति करलेना शक्य है, [illegible] तक लायक और नालायक का भेद दुर्बलों और दीन दुखियों के [illegible] त्रासदायक ही होगा। प्राचीन काल का ही यह भेद नये [illegible] सामने लाया जाने के कारण प्रे० विलसन के राष्ट्रसंघ ने पहले से [illegible] टिकाऊ इमारत खड़ी कर दी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। [illegible] की इमारतें कितनी ही पीढ़ियों तक बनी रहीं और उनके [illegible] महात्माओं की पुण्याई समाप्त होजाने के साथ ही गिर भी गईं। [illegible] प्रे० विलसन ने पहले की पत्थर मिट्टी से नई कमानीदार इमारत [illegible]

की है, और साम्प्रतिक रंग रोगन से उसे सुसज्जित भी बना दिया है। इमारत नई और कोरी है। महायुद्ध को जीतनेवाले महात्माओं की पुण्याई कुछ काल तक तो इस इमारत में अवश्य बनी रहेगी, इसमें सन्देह नहीं। यह पुण्याई जितने समय तक उस नये महल में टिकेगी तब तक सर्व पांरथ्यों और दीन दुखियों, अंधों और पंगुओं को वहां आश्रय मिलेगा। तब समस्त निराश्रितों को इस नई धर्मशाला की ओर भिक्षा के लिये प्रे० विल्सन की उपस्थिति में तो भी दौड़ना चाहिये; ऐसी सभी भिक्षुकों को सूचना मिलकर चारों ओर राष्ट्रसंघ की वाहवा हुए बिना न रहेगी। अनाथों के पक्षपाती के नाते प्रे० विल्सन का काम जिस प्रकार पूर्व कालीन महात्माओं का अनुसरण कर हुआ है। वैसा ही नई धर्मशाला के अंमलदारों का खाता भी पहले की नकल है। शांति सम्बन्धी अथवा परस्पर के झगड़ों के सम्बन्ध में राष्ट्रसंघ के किये हुए न्याय की अमल बजावरी करने के लिये सब राष्ट्रों की मिलाकर एक स्थायी सेना फ्रान्स में अथवा अन्य किसी केन्द्र स्थान में रक्खी जायगी। धार्मिक युद्धों के समय भी ऐसी ही राष्ट्रीय सेनाएं निर्माण की जाती थीं। योरोप के ख्रिस्ती राष्ट्रों की सर्व राष्ट्रीय सेनाने मुसलमानों के खलीफ़ा की सेना से कितनी ही शताब्दियों तक कैसी २ लड़ाइयां की हैं, ये सब इतिहासज्ञों को प्रगट हैं। इस प्रकार की सर्व राष्ट्रीय सेनाओं के कारण परस्पर का मत्सर दूर नहीं होता और न लड़ाइयाँ ही बंद होती हैं, ऐसा इतिहास का मत है। पंचमहाराष्ट्रों के पारस्परिक मत्सर के भड़क उठने का जब समय आवेगा, तब ये सर्व राष्ट्रीय सेनाएं निरुपयोगी निश्चित होंगी। आज के पंचमहाराष्ट्र जब तक एके से बरतते रहेंगे तब तक अर्थात् निदान एक दो पीढ़ियों तक तो इन सब राष्ट्रीय सेनाओं का उपयोग पोलेण्ड, बेलजियम, जेकोस्लाव, जुगोस्लाव, आदि भिन्न २ देशों का संरक्षण करने और उन्हें दाब में रखने के काम में होसकता है। आष्ट्रिया, रशिया, आदि देशों की अंतस्थ गड़बड़ी के कारण शांति भंग, होने का समय आने पर यह धमधाम तद्देशों की सीमा दबा कर रखते और वहां के राष्ट्र-संघ की बगल में के पक्ष की सहायता करने को प्रे० विल्सन की सर्व राष्ट्रीय सेना कुछ काल के लिये उपयोग में आसकेगी। यह सर्व राष्ट्रीय सेना दो तीन लाख से अधिक होना असम्भव होने के कारण सन्धि-परिषद्में जर्मनी, आष्ट्रिया आदि शत्रुओं को दो तीन लाख सेना से बड़ी सेना रखने की आज्ञा न मिलेगी। इसके सिवाय सेना सम्बन्धी भरती के कायदे उपयोग में लाकर और युद्ध सम्बन्धी हथियार तय्यार करने के कारखाने गुप्त रूप से चला कर भारी सेना तय्यार कर सकने की शक्ति भी शत्रु देशों में न रह सकेगी। मई जून महिनों में सन्धि होने के कारण तब तक जर्मनी, आष्ट्रिया और रशिया इन तीन देशों में अवश्य शान्ति स्थापित होकर सन्धि के नियमों की अमलबजावरी दृष्टिगोचर होना अशक्य है। मई महिने में आष्ट्रिया जर्मनी के वर्सेल सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर मात्र अवश्य करेंगे। आष्ट्रिया, जर्मनी और रशिया के तीन बलाढ्य बादशाही सिंहासन महायुद्ध में उलट गये हैं, उनके स्थान पर मित्र सरकार के नमूने की पूंजीदारों की लोकशाही स्थापित होजाय अथवा जर्मन सोशियालिस्टों के मतानुसार बड़े २ कारखाने और उद्योगधन्धों को सामाजिक मिलकियत बनानेवाली लोकशाही स्थापित की जाय, अथवा रशियन बालशेविकों के मतानुसार धनाढ्यों को धोखा देने और मार डालनेवाली मजूरी लोकशाही स्थापित की जाय इनके सम्बन्ध में झगड़े होने लगे हैं। पूंजीदारों की लोकशाही, सामाजिक लोकशाही, और मजूरों की लोकशाही इस प्रकार के तीन सम्प्रदाय लोकशाही के पक्षपातियों में ही आज योरोपमें उत्पन्न होचुके हैं। धार्मिक युद्धों के समय मुसलमानों के विरुद्ध समस्त ख्रिस्ती राष्ट्रों ने मिलकर जो भी युद्ध किया तथापि फिर प्रोटेस्टेंट, केथोलिक इस प्रकार भिन्न २ सम्प्रदाय उत्पन्न होकर वे सम्प्रदाय ही परस्पर लड़ने लगे। लोकशाही पृथ्वी पर स्थापित की जाकर लड़ाइयाँ बंद करने और अयोग्य भी लोकशाही का मार्ग कदमबकदम धीरे २ तैर कर सके; इसके लिये महायुद्ध में अमेरिका सम्मिलित हुआ और विजय सम्पादन करने पर सन्धि का उपक्रम होने पहले की दशा में प्रे० विल्सन ने राष्ट्रसंघ स्थापित करने की सूचना उपस्थित की, परन्तु उनके तथा उनके राष्ट्रसंघ के दुर्दैव से प्रथम ग्रास में ही मक्षिका पतन होने की शंका उत्पन्न करनेवाली भावुक स्थिति योरोपीय लोकशाही के टंटे के कारण उपस्थित हुई है। रशिया के बालशेविक अभी प्रबल बने हुए हैं और ऐसा जान पड़ता है कि अभी और बरस दो बरस लड़े बिना उनकी सत्ता नष्ट होना असंभवसा जान पड़ता है। उधरो

में यह बालशेविज्म का रोग जर्मनी को भी लगता दीख पड़ा। बर्लिन शहर थोड़ी देर के लिये बालशेविकों के हाथ में भी चला गया, किंतु जर्मनी के सामाजिक पक्ष ने उसका पराभव करके जनवरी के अन्त और फर्वरी के आरंभ में वहां सामाजिक पक्ष की नई पार्लमेन्ट स्थापित की और सामाजिक प्रधान मंडल अधिकारारूढ़ होगया। फर्वरी के आरम्भ में जर्मनी बालशेविज्म के रोग से मुक्त होता हुआ दिखाई दिया था, परन्तु फर्वरी के तीसरे सप्ताह में यह स्थिति फिर बदल गई। दक्षिण जर्मनी में के बव्हेरिया वाले बड़ेसे भाग के म्यूनिच शहर में पार्लमेन्ट सभा भरीजाने के समय एक धर्तने भरी सभा में पिस्तौल मारकर मुख्य मन्त्री का खून किया। उसी समय अन्य दो तीन मन्त्रियों पर भी गोलियां चलाई गई थीं तत्काल म्यूनिच शहर की पार्लमेन्ट सभा बन्द हो गई और बव्हे-रिया प्रांत की सत्ता बालशेविकों के हाथ में चली गई। कैसर के सिंहासन च्युत हो जाने पर बव्हेरिया के राजा को भी अपना राज्य छोड़कर स्वीझरलैण्डको भाग जानापड़ा और पूंजीदारों की लोकशाही स्थापित हो चुकी थी। यह लोकशाही उत्तर जर्मनी के लिये विशेष उपयोग की न थी। उत्तर जर्मनी के प्रशियाने जब महा-युद्ध का संकट अपने सिर लेलिया तब इस पातक के लिये जो कुछ प्रायश्चित्त करना हो वह मित्र सर्कारों को उत्तर जर्मनी से कराना चाहिये। और दक्षिण जर्मनी अर्थात् बव्हेरिया को कुछ भी दण्ड न दिया जाय, इस प्रकार बवेरिया के पूंजीवालों की लोकशाही की दिसम्बर से मांग थी। उत्तर जर्मनी में कैसरशाही नष्ट होकर यद्यपि सामाजिक लोकशाही स्थापित हो गई, तथापि वहां के सोशियालिस्ट पक्ष के अनुयायियों में अपने बड़प्पन के लिये घमण्ड और अन्य लोगों का तिरस्कार करनेवाला स्वभाव पहले जैसा ही दिखने लगा। तब फ्रांस ने सहज ही ऐसा विचार किया कि उत्तर जर्मनी और दक्षिण जर्मनी ऐसे दो अलग २ देश हो जाने पर सामान्य प्रशियन लोगों के अहंकार की भांति इंग्लैण्ड के लिये शेष न रहेगी। इस विचार का अनुसरण कर बव्हेरिया के पूंजीवालों की लोकशाही की ओर फ्रांस दयार्द्र दृष्टि से देखने लगा। और उत्तर जर्मनी की बव्हेरिया की ओर वक्र दृष्टि हुई। ऐसी स्थिति में फर्वरी में फिर बव्हेरिया में राज्यक्रांति होकर पूंजीदारों की लोकशाही के बदले मजदूरों की लोकशाही स्थापित कर दी कर वहां की सत्ता भी बालशेविकों के हाथ में चली गई बवेरिया में पूंजी वालों का पक्ष नाम शेष करने के लिये वहां के बालशेविकोंने सपाटा मचा रक्खा है। तथापि यह पक्ष अभी तक दुर्बल नहीं हो गया है। फ्रांस और अन्य लोगों की सहायता से मार्च और अप्रेल में पूंजीदार फिर अधिकारारूढ़ होंगे ऐसा जान पड़ता है। पूंजी-दारों को उत्तर जर्मनी से सहायता न मिलने के कारण फिर इस पंथ के अधिकारारूढ़ होजाने पर बवेरिया और दक्षिण जर्मनी की लोक-शाही उत्तर जर्मनी से स्वतंत्र होजायगी, और योरोपखण्ड में के फ्रान्स की अग्रपूजा के लिये तत्पर रहेगी ऐसा अंदाज है। दक्षिण जर्मनी और बवेरिया फ्रान्स की पूर्व सीमा पर होकर बवेरिया के पूर्व आष्ट्रिया का बोहेमिया प्रान्त है। यह प्रान्त और इससे लगे हुए गेलेशिया के भाग में झेकोस्लावों की बस्ती होने से वहां झेकों का नया राज्य स्थापित किया गया है। झेकोस्लावों के उत्तर में भी जर्मनी के उत्तर का थोड़ासा भाग आता है। इसी प्रकार उनके उत्तर पूर्व ओर में युक्रेन और पोलेण्ड ये रशिया के दो प्रान्त आगये हैं। अर्थात् दक्षिण जर्मनी या बवेरिया, बोहेमिया या झेकोस्लाव और बाल्टिक समुद्र के किनारे तक फैला हुआ पोलेण्ड ये तीनों राज्य यदि स्वतंत्रस्थिति में सन्धि परिषद के समय दृष्टिगोचर होने लगे और मित्रसरकार की [illegible] शक्ति यदि इन्होंने स्वीकार की, तो सन्धि के प्रश्न बात की बात में हल होजायँगे और मई महिने में सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर होने में कुछ भी अड़चन न पड़ेगी। बोहेमिया, बव्हेरिया और पोलेण्ड इन तीन प्रान्तों के [illegible] पूंजीवालों की लोकशाही और मजूर दल की लोकशाही के [illegible] और पोलेण्ड के [illegible] होना जिसका [illegible] है [illegible]। रशियन बाल-शेविकों का [illegible] न होगा। यदि सन्धि के समय यह सत्ता नष्ट न हुई तो इस सत्ता का चारों ओर से [illegible] रशिया के पूंजीदारों के दल के [illegible] रशिया में [illegible] होता है। रशिया के [illegible] होगा। दक्षिण रशिया की ओर

गा जाग तो काला समुद्र अंग्रेजों के अधिकार में होकर काकेशियस
र्गत में के रशियन पूंजीदारों के पक्ष को मित्रराष्ट्र की सहायता
मल कर रशिया के सेनापति डेनिकिन ने काकेशियस प्रान्त से बाल-
शेविकों का उच्चाटन भी कर दिया है। काकेशस और कास्पियन
न्तों में अर्थात् बुखारा और समरकन्द के टापू में सेनापति डेनिकिन
ो भारतीय सेना की सहायता मिल रही है । इसके सिवाय काले
समुद्र के किनारे का रशिया का युक्रेन प्रान्त भी मित्रराष्ट्रों के पक्ष में
मिलगया सा बनकर वहां भी बालशेविकों की शीघ्र ही मिट्टी पलीत
होने लगेगी ऐसा अनुमान है। अर्थात् युक्रेन, सेनापति डेनिकन और
भारतीय सेना इन तीनों का कीड़ा रशियन बालशेविकों लगा गया है,
और दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व की ओर बालशेविकों की सत्ता चार छः
महिने के भीतर ही फिर जायगी, ऐसे नष्ट हो चिन्ह दीखते हैं। रशि-
यन बालशेविकों के सम्बन्ध में जो भय जान पड़ता है वह यही कि,
पराभव के कारण तड़पनेवाली बलाढ्य जर्मनी का बल बालशेविकों से
एक करने के लिये प्रवृत्त होता है या क्या! जर्मन लोगों की ठसक तो
र करनी ही चाहिये और रशिया के बालशेविकों का उनसे मिलाप भी
न होने दिया जाय, इन्हीं दो बातों की सन्धि के पूर्व सधजाने की
आवश्यकता है, अर्थात् फिर राष्ट्रसंघ का कार्य सरलता से चलेगा।
जर्मनी और रशिया में एका न होने देने के लिये दोनों के बीच में
पोलैंएड की दीवार खड़ी कर दी जानी चाहिये । फर्वरी महिने में
इस दीवार का अधिकतर कार्य पूरा होगया है। बाल्टिक समुद्र तक
पोलेएड का स्वतंत्र राज्य है, ऐसा मार्च के आरम्भ में अंग्रेज सरकारने
प्रगट किया है। तब मार्च महिने में बाल्टिक समुद्र के किनारे का
मध्य जर्मनी का जो टुकड़ा पोलेएड को दिया जानेवाला है उसका
समुद्री किनारा अंग्रेजी नौसेना अपने अधिकार में कर लेगी। और
पोलेएड की सेना वहां तक पहुँचाई जाकर जर्मनी के पूर्व की ओर की
बागड का काम पूरा होजायगा। इस कार्य को पूरा न होने देनेके लिये
जर्मनी बीच में विघ्न डालेगा। और रशियन बालशेविक भी पोलैएड
तथा बोहेमिया में बालशेविकों की सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न
करेंगे। बोहेमिया की राजधानी प्रेग शहर में भी फर्वरी महिने में
बव्हेरिया की भांति ही बालशेविकों की राज्यक्रांति करने का प्रयत्न
हुआ, परन्तु वह सफल न हुआ मार्च महिने में यदि बाल्टिक समुद्र
तक पोलेण्ड का नया राज्य स्थापित कर दिया जासका और बोहेमिया
में झेकोस्लावों की सत्ता स्थापित की जाकर बव्हेरिया में की बालशे-
विकों की सत्ता उलट देने के लिये फ्रान्स के लिये अनुकूल बनी हुई
पूंजीदारों की लोकशाही यदि पुनः बव्हेरिया में स्थापित को जासकी,
तो जर्मनी को पूर्व और दक्षिण की ओर से बांध लग जाने के कारण
जर्मनी की सत्ता बलहीन होजायगी। इसके सिवाय रशिया और
जर्मनी का मिलाप न होकर पूर्व की ओर रशिया की भेट के लिये जाने
की जर्मनी की उत्सुकता अपने स्थान पर ही विनष्ट होजायगी। जर्मनी
के बल और रशियन बालशेविकों को चारों ओर से ग्रस्त करके सन्धि-
पत्र पर उनके हस्ताक्षर करालेने के बाद राष्ट्रसंघ के द्वारा उन पर
व्यापारी बहिष्कार डाल कर उसके भय से जर्मनी के संग्रह बल को
मनियम सन्धिशर्तें में निश्चित किया हुआ युद्ध दंड देने के लिये
विवश करने और रशियन बालशेविकों को निर्जीव कर देने का मित्र-
राष्ट्रों का कार्यक्रम दृष्टिगोचर होने लगा है । इस कार्यक्रम की पूरी
अमल बजावरी होने में सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर होजाने पर भी एक
दो वर्ष लगेंगे। कार्यक्रम पार पड़ने का काम राष्ट्रसंघ को करना
पड़ेगा। इस काम को पूरा करने के लिये राष्ट्रसंघ के पास सब राष्ट्रों
की मिला कर दो तीन लाख सेना आवश्यक होगी और व्यापारी
बहिष्कार भी होना चाहिये। इस दृष्टि से राष्ट्रसंघ की योजना में प्रे०
विल्सन ने उपरोक्त दोनों अधिकारों की व्यवस्था कर रक्खी है। मार्च
और अप्रैल महिने में पोलेण्ड बोहेमिया और बवेरिया की पूर्व व्यवस्था
यथोचित होगई। और प्रे० विल्सन की योजनानुसार राष्ट्रसंघ यदि
प्रत्यक्ष स्थापित होगया तो मई-जून महिने में सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर
होने में थोड़ी भी बाधा अवशिष्ट न रहेगी।

चार दिन में विलायत से हिन्दुस्थान की सफर

दो तीन मास पूर्व हॅन्डले पेज कम्पनी का एक विमान इंग्लैण्ड से दिल्ली को आया था, विमान भेजने में कम्पनी का उद्देश्य-इन दो दूर देशों का व्यवहार विमानों द्वारा हो सकता है या नहीं—इसी बात का निश्चय करने सम्बन्धी था। उस विमान द्वारा मेजर जनरल सालमंड यहां आये, विमान छोटा ही है । लगभग बीस प्रवासी उसमें बैठे सकते हैं। यह विमान कैरो से दिल्ली तक छत्तीस घंटे में आया,जिसके मार्ग का नक्शा यहां दिया जाता है।

यह विमान दो एन्जिन का है । हॅन्डले पेज कम्पनी के चार एन्जिन के बड़े विमान भी हैं। उसमें ४०।५० मनुष्य तक बैठ सकते हैं। उनका वेग भी अधिक है। उस वेग को घटा कर उसके द्वारा अधिक सामान या बोझा लाया वा लेजाया सके इस की व्यवस्था हो रही है,और इस कार्य में सफलता प्राप्त हो जाने पर थोड़ा बहुत माल भी विमान द्वारा आजा सकेगा।
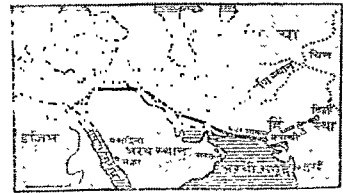
आरम्भ में विलायत से हिन्दुस्तान तक विमान द्वारा आने में आठ दिन लगेंगे। परन्तु वैमानिकों का कथन है कि थोड़े ही दिनों में विमान द्वारा "नित्य हजार से बारासौ मील" तक का प्रवास हो सकेगा। व्हाया इजिप्त (मिश्र) में होकर लंदन से कराची ४५०० मील पर होने से साढ़े तीन दिन में यह प्रवास पूरा हो सकेगा। अर्थात् उसका टाइम टेबल या काल विभाजक चक्र इस प्रकार होगाः—

लंदन से अन्तर	निकलने का स्थान	पहुँचने का स्टेशन
१२००	लंदन	ओट्रान्टो (इटली)
२३००	ओट्रोन्टो	कैरो (मिश्र)
३३००	कैरो	बसरा
४५००	बसरा	करांची

नित्य सवेरे ७ बजे निकल कर श्याम के छह बजे तक प्रवास करने से चार दिन में यह प्रवास पूरा हो सकेगा । तथापि इतनी शीघ्रता से प्रवास करने का कार्य डाक विभाग के ही अधिकार में रह कर सर्व सामान्य प्रवासी लोग इसकी अपेक्षा धीरे चलनेवाले (अर्थात् आठ दिन में विलायत से हिन्दुस्तान को आनेवाले) विमान द्वारा यात्रा करेंगे, ऐसा कहा जाता है।

विमान द्वारा प्रवास करनेवाले प्रवासियों को भारी त्रास सहन करना पड़ेगा या क्या! यह प्रश्न विचारणीय है। इसके सम्बन्ध में तज्ञों का तो ऐसा मत है कि उत्तम प्रकार के पहिले दर्जे के (फर्स्ट क्लास) बोटों में मुसाफिरों को जो सुभीता होता है, उसकी अपेक्षा अधिक ही सुभीता विमान द्वारा प्रवास करनेवालों को होगा। हां लगेज (सामान) अलबत्ता अधिक साथ में नहीं रखा जा सकेगा । परन्तु स्थान २ पर वैमानिक स्टेशनों पर के भोजनालय लोगों के लिये उत्तम भोजन की व्यवस्था कर रक्खेंगे। खर्चे की दृष्टि से, भी यह प्रवास महँगा नहीं पड़ेगा। घंटे भर में सौमील के वेग से जानेवाले विमान का प्रति मनुष्य के लिये प्रतिदिन १० – १५ पौण्ड भाड़ा देना पड़ेगा। अर्थात् हिन्दुस्तान से विलायत तक जाने में ४० — ४५ पौण्ड (६०० — ६५० रुपये) खर्च होंगे। परन्तु अधिक त्रास न सहन करते हुए धीरे २ प्रवास करने में ७० – ८० पौण्ड व्यय होंगे । अर्थात् जहाज के पहले दर्जे के मुसाफिर को आज जो भाड़ा देना पड़ता है, वही विमान द्वारा यात्रा करनेवाले को भी देना पड़ेगा। परन्तु थोड़े ही वर्षों में जहाज की अपेक्षा विमान का प्रवास कम खर्च का हो जायगा, ऐसा जान पड़ता है।

लॉर्ड सत्येन्द्र ।

(ले०— श्री० [illegible])

श्री० सत्येन्द्रप्रसन्नसिंह महोदय को ब्रिटिश गवर्नमेंटने लार्ड बना- कर भारत के इन्डिया ऑफिस का अण्डर सेक्रेटरी भी बनाया है। हम भारतीयों के लिये यह गौरव की बात है, अतः आज हम अपने पाठकों को इन्हीं लार्ड महोदय का संक्षिप्त परिचय दिया चाहते हैं।

बंगाल प्रदेशान्तर्गत जिला वीरभूमि के रायपुर ग्राम में २४ मार्च सन् १८६४ ई० में लार्ड सत्येन्द्र का जन्म हुआ था। आप के पिता सिताकण्ठ सिंह आप को दो वर्ष का बच्चा छोड़ कर स्वर्गवासी हो गये। जिससे इनके पालन-पोषण का सारा भार इनकी माता तथा ज्येष्ठ भ्राता श्रीनरेन्द्रप्रसन्न सिंह पर आपड़ा। नरेन्द्रप्रसन्न सिंह वीर भूमि में सरकारी वकील थे। सत्येन्द्रकी प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर में ही हुई। इसके पश्चात् आप वीरभूमि के जिला-स्कूल में भर्ती हुए। अच्छे नम्बरों से पास होने के कारण यहाँ आपने मैट्रिक में छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। इस पश्चात् आपने कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालेज से प्रथम नंबर से एफ० ए० पास किया। जिसके कारण आपको यहां प्रथम दर्जे की छात्र वृत्ति मिली। एफ० ए० पास करते ही आप की प्रबल इच्छा बैरिस्टर बनने की हुई और आपने इंग्लैण्ड का रास्ता लिया। कानून पढ़ते समय आपने वहाँ के सभी पुरस्कार तथा छात्रवृत्तियाँ प्राप्त करलीं। वहाँ आपको लगभग सौ सहस्र रुपये का पुरस्कार मिला। इनकी प्रतिभा से इनके अध्यापक लोग चमत्कृत होगये और आप को बिना परीक्षा दिये ही बैरिस्टरी की सनद देदीगई। पांचसाल तक कानूनी ज्ञान प्राप्त कर २२ वर्ष की अवस्था में बैरिस्टर बन आप स्वदेश को लौट आये और कलकत्ते में विकालत करना आरम्भ कर दिया। यह समय सन् १८८६ नवंबर महीने का था।

श्रीमान लार्ड सिंह ऑफ रायपुर

आशा तो थी कि आपकी विकालत शीघ्र चल निकलेगी पर ऐसा नहीं हुआ। जिससे आपको अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। आय इतनी कम होती थी कि मुश्किल से आप का गुज़र होता था। आखिर आपने कलकत्ता छोड़कर अपने जिले में लौट आने का निश्चय कर लिया, पर इसी समय स्वनाम धन्य मा० आनन्द मोहन बसु की सहायता से श्री० सत्येन्द्र सिटी कालेज में कानून के प्रोफेसर बना दिये गये। इसके लगभग दो साल बाद आपने एक निरपराध तथा गरीब आदमीके वकील होकर इस योग्यतासे बहस की कि हाईकोर्ट के जस्टिस नॉरसेन आपकी खूब ही प्रशंसा की। जिससे आपकी धाक बैठ गई। बस अब क्या था आपकी बैरिस्टरी चमक उठी, चार ही वर्ष में आप बंगाल के प्रसिद्ध २ बैरिस्टरों में गिने जाने लगे।

सन १९०३ ई० में आप के अभ्युदय का आरम्भ हुआ, और तब से अब तक आपकी पदोन्नति होती गई है। सन् १९०३ में आप वुड- रफ् मि० के चले जाने पर सरकारी वकील बनाये गये। दूसरे ही वर्ष आप हाईकोर्ट के जज भी बनाये गये। पर आपने इस पद को धन्यवाद पूर्वक अस्वीकृत किया। सन १९०६ ई० में आप बंगाल के एडवोकेट जनरल बना दिये गये। आप पहिले ही भारतीय हैं जिन्हों- ने ऐसा उच्च पद पाया। दो वर्ष बाद आप इस पद पर मुस्तकिल भी होगये।

सन १९०९ में मोर्ले-मिन्टो की उदार नीति तथा जॉन मरे की सिफा- रिस के कारण आप इंपीरियल कौन्सिल में कानूनी विभाग के अध्यक्ष बना दिये गये। यहां आपका वार्षिक वेतन ८२०००) रु० था। यहाँ भी योग्यता पूर्वक कार्य कर कई विशेष कारणों से आपने यह पद त्याग दिया और फिर कलकत्ते में बैरि- स्टरी करने लगे। इसी समय गवर्नमेंट नेआपकी योग्यता तथा सरकारी सेवा सच्चे हृदय से करने के कारण आप को "सर" उपाधि प्रदान की।

यद्यपि आपने देश के राजनैतिक आन्दो लनों में विशेष भाग नहीं लिया, तथापि कांग्रेस से आप की आरंभ से ही सहानु भूति है। इसी कारण माडरेट नेताओं ने आप को १९१५ में बंबई कांग्रेस का सभा- पति बनाया था। क्योंकि इस समय तक कांग्रेस नरम दलवालों के हाथ का खिलौना थी। आप की कार्य्यवाही से गरम दलवालों को अवश्य ही विरक्ति हुई—नरम दलवालों की राम जाने।

सन् १९१७ में जब इंग्लैंड में ब्रिटिश साम्राज्य की युद्ध कान्फ्रेंस हुई। उस समय गवर्नमेंट ने महाराज बीकानेर तथा सर जेम्स मेस्टन के साथ आपको भी भारतीय प्रतिनिधिके रूपमें उक्त कान्फ्रेंस में भेजा। इस कान्फ्रेंस से लौटने पर आप बंगाल कीकार्य्य कारिणी कौन्सिल के मेम्बर बनाये गये।

गत नवंबर में, संधि कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये आप भी इंग्लेंड भेजे गये। गत जनवरी में प्रधान मंत्री मि० लायड जार्ज की गवर्नमेंट ने आपको सहकारी भारत सचिव बना कर लॉर्ड भी बना- दिया। इस समय आप रायपुर के लार्ड कहलाते हैं। इसके बाद प्रिवी- कौंसिल में भी आपका प्रवेश हुआ। और आप "राइट आनेरबल" कहलाने लगे। सुनते हैं सर आगाखाँ भी लॉर्ड बनाये जानेवाले हैं। तथास्तु। *

* "हक" के आधार पर।

प्रेमयाचना

विहँसि यह यह देहुसुधा बरसाय !
जाके पियत तापत्रय नासत सुलगत हीय सिराय ॥ वि० ॥
पुलकि पुलकि हिय मिलत परसपर भुज वल्लिन लिपटाय।
सुखद स्वाँस छोड़त है प्रिय—अस उचरत कंठ रुकाय ॥ वि० ॥
इक इक पै तन मन धन वारत सहज बैर बिसराय।
अपनु अहम तजि देत मृदुल हुइ सरस भाव उमगाय ॥ वि० ॥

नैननु बैननु मुखन शील की छवि निर्मल दरसाय।
लेत देत मन मेल रहत नहिं सुरुचि लता लहराय ॥ वि० ॥
जाके बिन सब मृतक सदृश जन भिझकत नित घबराय।
चातक सम इक टक हग फारे चितवत आस लगाय ॥ वि० ॥
है यह प्रेम ! "अनुज" यह बिनवत छिन छिन जिय अकुलाय ॥
हे प्रिय जलद श्याम मन मोहन ! अब न बिलम्ब सुहाय ॥ वि० ॥

मदन श्री लक्ष्मणाचार्यजी वाणीभूषण (अनुज)

नवम हिन्दी साहित्य संमेलन बंबई।

प्रत्येक भारतीय को यह बात विदित होचुकी है कि आगामी ईस्टर की छुट्टियों में अर्थात् १९, २० और २१ अप्रैल को; हिन्दी साहित्य सम्मेलन का नवम अधिवेशन भारत की प्रख्यात नगरी बंबई में होनेवाला है। समय २ पर इसके विषय में कई सूचनाएँ प्रकाशित होचुकी हैं, तथापि कितनेही लोगों को अभी शंका बनी ही हुई है कि

(सम्मेलन के सभापति माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय)

स्वागत कारिणी सभा के सभापति कौन हैं और सम्मेलन की स्वागत समिति के सभापति कौन ? बड़ोदा नरेश से स्वा० स० के सभापतित्व के लिये प्रार्थना की गई थी, पर उनके अस्वीकार करने पर महात्मा गांधीजी के निवेदन करने से करवीर पीठाधर जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्यजी महाराज ने इस पद को स्वीकार कर लिया है। सम्मेलन के सभापति पूजनीय श्री० पं० मदनमोहन मालवीयजी होंगे, आपने इस पद को स्वीकार भी कर लिया है। ऐसी अवस्था में अब किसी के लिये किसी भी प्रकार की शंका रहने की आवश्यकता न होगी। बंबई ऐसे भारत के प्रधान केन्द्र में प्रत्येक देश और प्रान्त का मनुष्य निवास करता है, अतः वहां पर होनेवाले सम्मेलन के लिये ऐसे सभापति की आवश्यकता थी जो हिन्दी और हिन्दुस्तान की अच्छी सेवा कर उसमें अनुभव प्राप्त कर चुका हो; और बंबई नगर की इतर जनता पर उसकी बातों का असर पड़े। म० गांधीजी के प्रति तो बंबई ही क्या किन्तु भारत के कोने २ में पूजनीय भाव स्थापित हो ही चुके हैं। और विगत [illegible] कांग्रेस के समय से माननीय मालवीयजी का बंबई की प्रजापर ऐसा सिक्का जम गया है जो मुद्दतों के लिये बना रहेगा। अस्तु। कुछ भी समझिये परन्तु महात्मा गांधी और मा० मालवीयजी ये दोनों आत्माएँ बिलकुल एक ही भाव से भरी हुई हैं, ऐसा हम अवश्य कह सकते हैं; और जहां ये दोनों आत्माएँ मिल कर देश कार्यमें अग्रसर होंगी उस कार्य की सफलता का पूछना ही क्या है? इसी प्रकार सम्मेलन की स्वा० का० समिति के मंत्री भी वे २ महानुभाव हैं जो कि इन्हीं दोनों आत्माओं के अनन्य भक्त और अनुयायी हैं। अर्थात् सम्मेलन की स्वागत समिति और सभापति आदि का निर्वाचन यथायोग्य होचुका है। रहो प्रतिनिधियों और वहां के कार्यक्रम की बात, सो प्रतिनिधियों के लिये सूचना निकल चुकी है कि प्रत्येक नगर, प्रान्त, और कस्बों में जहां हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सम्बद्ध संस्थाएँ हों अथवा अन्य कोई हिन्दी हितैषिणी सभा हो या वहां की अन्य सभाएँ जिसके १५ से कम मेम्बर न हों-सम्मेलन के लिये प्रतिनिधि चुनने को अपने२ अधिवेशन करके अपने यहां के प्रतिनिधियों की सूची (जो कि सम्मेलन में आनेवाले हों) बनाकर शीघ्र ही " मंत्री स्वागतकारिणी समिति नवम् हिन्दी साहित्य सम्मेलन २० अपोलो स्ट्रीट बंबई " के पते पर भेज देने की अवश्य कृपा करें। हमें आशा है कि प्रत्येक नगर और प्रान्त से कई संख्या में प्रतिनिधिगण सम्मेलन के लिये अवश्य बंबई पधारेंगे। क्योंकि एक तो बंबई भारत का ऐसा स्थान है कि, जिसे देखने की भारत ही क्या विदेश के लोगों को भी सदा इच्छा बनी रहती है और जब ऐसा सुयोग प्राप्त हुआ है कि 'एक पंथ दो काज' की तरह सम्मेलन की यात्रा और बंबई की सैर दोनों ही कार्य एक साथ बनते हैं और आदर्श कर्मवीर, देशभक्तों में श्रेष्ठ मा० मालवीयजी तथा महात्मा गान्धीजी इन दो महापुरुषों के दर्शन के साथ ही इनके अमूल्य उपदेशामृत को पान करके अपने लिये कर्तव्य पथ का ज्ञान मिलनेवाला है, तब ऐसा विरला ही अभागा होगा जो कि इस स्वर्ण सदृश अवसर पर चूक जायगा। कलकत्ता, बंगाल, बिहार, आसाम, पंजाब, युक्तप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि कितने ही स्थानों के प्रतिनिधि दूर होने के कारण बंबई नहीं आसकते, तथापि म० गांधी तथा मा० मालवीय की कीर्ति कौमुदी में वह शक्ति है कि, यह भारत के कोने २ से प्रत्येक देशवासी की आत्मा को बंबई आने के लिये आकर्षित कर लेगी। अब तक सम्मेलन के अधिवेशन ऐसे ही नगरों में हुए हैं, जहां की जनता न्यूनाधिक प्रमाण में हिन्दी की भक्त है और जहां की भाषा हिन्दी होकर उसका पूर्ण प्रचार भी है, किन्तु बंबई का सम्मेलन इससे बिलकुल भिन्न ही स्वरूप का होगा। क्योंकि जो भी बंबई में हिन्दी का प्रचार है, तथापि अधिकतर यहां भाटिया, पारसी, दक्षिणी आदि जातियों का ही निवास होने से उन लोगों के कान में हिन्दी की भनक ही नहीं वरन् उसका सिंहनाद पहुँचने से उनके हृदय में हिन्दी प्रेम तथा उसकी सेवावृत्ति जाग्रत होजावेगी। और बंबई के आसपास गुजरात और दक्षिण प्रान्त लगा हुआ है, और इन दो प्रान्तों की भाषा हिन्दी के स्वरूप की ही है, ऐसी अवस्था में इन दो प्रान्तों के प्रतिनिधियों को अवश्य ही बड़ी भारी संख्या में सम्मिलित होकर अपने हिन्दी प्रेम का परिचय देते हुए दिव्य मंत्र का उपदेश लेना चाहिये। इन्दौर के सम्मेलन के समय म० गान्धीजी का उठाया हुआ 'मद्रास में हिन्दी प्रचार' सम्बन्धी कार्य भी धड़ाके से चल रहा है। और हमें आशा है कि मद्रास से भी स्वामी सत्यदेवजी के साथ कितने ही प्रतिनिधि सम्मेलन में अवश्य उपस्थित होंगे। अर्थात् इस बार भारत के लगभग सभी प्रान्त के प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने की आशा की जाती है। इसके सिवाय [illegible]

...ार समय, की भी कोई रुकावट नहीं है, क्योंकि अष्टम सम्मेलन (इन्दौर) की तिथियां होली की छुट्टियों में रखी जाने से कितने ही लोग घर की होली छोड़ कर सम्मेलन में न आ सकते, परन्तु इस बार तो वह होली भी होली है, अर्थात् सम्मेलन में आने के लिये समय की रुकावट भी नहीं रही है। हाँ! मध्य प्रदेशीय नेताओं के लिये अवश्य असुविधा रहेगी। क्योंकि वहां के प्रान्तिक सम्मेलन की स्वा० का० समितिने प्रान्तीय सम्मेलन के लिये (जो कि खण्डवे में होगा) भी यही तिथियाँ रख कर अपनी दूरदर्शिता (!) का परिचय दिया है। यही दशा विगत सम्मेलन के समय भी हुई, हम नहीं समझ सकते, यह क्या रहस्य है। किन्तु फिर भी हमें आशा है कि प्रान्तिक सम्मेलन के कितने ही प्रतिनिधि इस में भी आवेंगे। गत वर्ष की भांति इस बार भी सम्मेलन के प्रेमियों को उनके मनोरंजन की मूर्ति श्री० पं० जगन्नाथ प्रसादजी चतुर्वेदी के दर्शन होने के साथ ही सिंहावलोकन की भांति वही विनोदमय उपदेश सुनने को मिलेगा। इस बार आपके लेख का विषय है, 'लिंग प्रयोग में प्रान्तीय विभिन्नता' लिंगसम्बन्धी कार्य में चतुर्वेदीजी बड़े दक्ष हैं, ऐसा उनके मौजी महाराज भारत मित्र में लिख चुके हैं। और हमें भी आशा है कि विषय की विचित्रता के साथ आपका लेख भी विचित्र ही होगा। अन्यान्य विषयों पर लेख लिखे जारहे हैं। सारांश इस बार का सम्मेलन सब प्रकार से अपूर्व होने की संभावना की जासकती है। देखना चाहिये हिन्दी प्रेमी इस में कहां तक योग देते हैं।

—× ×—

मर्यादा की राष्ट्रीय संख्या।

पाठकों को 'मर्यादा' से परिचित कराने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि विगत आठ वर्षों से श्री० पं० कृष्णकान्तजी मालवीय जैसे सुयोग्य सज्जन के सम्पादकत्व में उसने हिन्दी साहित्य के सर्वांग और विशेषतः राजनैतिक विभाग में जो २ अपूर्व काम कर दिखाये हैं, वे ही इसका खासा परिचय करा सकते हैं। विगत ४।५ वर्षों से यह ...का समय २ पर कितनी ही विशेष संख्याएँ निकाल चुकी है, ...में स्वराज्य संख्या, निष्क्रिय प्रतिरोध संख्या आदि मुख्य हैं। उसी ...यम के अनुसार आज हमारे सामने उसके भाग १७ की प्रथम संख्या (जनवरी १९१९) राष्ट्रीय संख्या के रूप में उपस्थित है। हम कह ही ...के हैं कि इस पत्रिकाने हिन्दी के राजनैतिक विभाग में कई स्मरणीय ...र्य कर दिखाये हैं, और यदि देखा जाय तो वास्तव में केवल राज...नैतिक विषयों की चर्चा करनेवाली यही एक मात्र पत्रिका है। अस्तु। ...स संख्या में गद्य पद्य मय १८ लेख हैं। कवितायें 'स्वतन्त्र!' 'प्रण ...धिक्कार' 'वीर प्रतिज्ञा' आदि बिलकुल राष्ट्रीय भावों से भरी हुई तो ...ही किन्तु उन सब में 'स्वभाग्य निर्णय' वाली श्री० प० कृष्णवि...हारी मिश्रकी मधुर ब्रजवाणी में 'सुधारस ध्यावन की नित चाह' ...दय को हिला देनेवाली है। लेखों में श्री० 'सत्येन्द्र' महाशय का '...मज़दूरों का आन्दोलन' शीर्षक लेख बड़ा गम्भीर और विचारणीय है ...—सघ सम्बन्धी श्रीमान वाईकाउन्ट ब्र महाशय की [illegible] विचारसरणी भी विचित्र ही है। श्री० बाबू राजेन्द्र प्रसादजी ...का 'किन को वोट देने का अधिकार मिलना चाहिये, वाला ...लेख लोकमत, सरकारी व्यवस्था का परिचय करा देनेवाला है। इसी प्रकार श्री० जिराईकिन्स महाशय का 'समुद्रों की स्वतन्त्रता' विषयक लेख भी अपूर्व है। इस बार शान्ति परिषद के सन्मुख अखिल जगत में शांति स्थापित करने के लिये 'स्वभाग्य निर्णय' 'राष्ट्रसंघ' और 'सामुद्रिक स्वतन्त्रता' यही तीन मुख्य विषय सम्भवतः जाकर प्रे० विल्सन महाशय की ओर से उपस्थित किये गये हैं। उन तीनों विषयों का इस संख्या में समूह हुआ है और प्रत्येक हिन्दी भाषा भाषी को चाहिये कि वह कम से कम पढ़ कर ही इन तीन गम्भीर प्रश्नों की महत्ता को अवश्य जान ले।

'सुधार व्यवस्था में आर्थिक उत्तर दायित्व' वाले श्रीयुत गुरुमदार महोदय के लेख में 'शासन प्रबन्ध में भारतीय निर्वाचित प्रतिनिधियों के प्रति सीमित उत्तर दायी रहें' इत्यादि बातों का खासा विवेचन हुआ है। पं० कालीप्रसाद पाण्डेय का 'राष्ट्रसंघ' सम्बन्धी लेख भी छोटा होकर अच्छा है उसमें फ्रान्स के प्रधान मंत्री क्लेमेन्सो ...तथा प्रे० विल्सन के मतों का परस्पर खण्डन मण्डन किया गया है। इस प्रकार के अपूर्व लेखों के साथ ही श्रीमती उर्मिला... का 'स्त्रियों के अधिकार' वाला लेख भी बड़ा आवश्यक लेख है। 'आदर्श [illegible]' नामक गल्प केवल मनोरंजन की ही सामग्री न होकर देश

सेवा के लिये आदर्श की अच्छी झलक भी दिखा सकती है। श्रीमती वसन्ती देवी का भी 'भारतीय महिला समाज' शीर्षक छोटा और अच्छा लेख है। सब के अन्त में १० पृष्ठ व्यापी सम्पादकीय टिप्पणियां हैं। जिन्हें हम योरोप के विगत ३० वर्ष के इतिहास का सिंहावलोकन कह सकते हैं। वास्तव इसी के सहारे वर्तमान योरोप के भविष्य का अनुमान किया जासकता है। इस अङ्क में सब से बड़ी विशेषता यही कि इसमें वर्तमान विप्लव के भिन्न २ पहलुओं पर ही लेख रखे गये हैं। अन्य विशेष संख्याओं की भांति यह भी संग्रहणीय है। मूल्य १) रु० (इसी अंक का) पृ० सं० ७४ है।

हिन्दी समाचार पर आपत्ति।

भारत की राजधानी को यह कलंक उसी समय से लग चुका है कि जब से वहां विजय, प्रल्हाद आदि पत्र निकल कर आर्थिक संकट से स्वल्प काल में ही लुप्त होचुके हैं। अर्थात् पंजाब ही एक ऐसा प्रान्त है जहां हिन्दी के समाचार पत्रों का चलना कठिन है। किन्तु हम देखते हैं कि वहां उर्दू पत्रों की दिनों दिन उन्नती होती जारही है, इसे या तो हम पंजाब वासियों की हिन्दी के प्रति अवहेलना कह सकते हैं या वहां के हिन्दी प्रचार की न्यूनता ही इसका कारण बन सकती है। अस्तु, जो भी हो परन्तु पंजाब ही नहीं भारत की राजधानी के लिये यह सौभाग्य की बात है कि वह उपरोक्त कलंक को मिटाने के लिये वहां से २।३ हिन्दी साप्ताहिक तथा १ दैनिक पत्र निकाल रही थी। इनमें पहला सद्धर्म प्रचारक अधिकतर साम्प्रदायिक पत्र होने से उसके चलने में किसी प्रकार बाधा नहीं आसकती, और वह समय २ पर हिन्दी सम्बन्धी चर्चा करता हुआ सुचारुरूपेण चल भी रहा है। उसी के सम्पादकने 'विजय' को दैनिक रूप में पुनरुज्जीवित किया है, यह भी हिन्दी की सेवा लिये कार्य करने लगा है। किन्तु सच्चा हिन्दी प्रचार करनेवाला कि जिसका नाम ही 'हिन्दी समाचार' है, इस छोटी सी उमर में ही असमय काल के गाल में पहुँचा चाहता है, इस का कारण आर्थिक संकट है। विगत ४।५ वर्षों में इस पत्रने अवश्य भारत की राजधानी के उपरोक्त कलंक को मिटाने का प्रयत्न किया था और अभी तक करता रहा। किन्तु जिस प्रकार का संकट विगत डेढ़ वर्ष पूर्व इसके लिये उपस्थित हुआ, उससे विशद रूप में इस बार उपस्थित हुआ है गत बार तो हिन्दी समाचार संचालिनी कमेटी बनाई जाकर उसने इस पत्रके चलानेका भार अपने ऊपर लिया भी था, किन्तु इस बार उसके सभासद भी हार मानगये, करते भी क्या। वे बिचारे कब तक और कहां तक इसकी रक्षा करें, यह काम उनके घर का तो था ही नहीं। परन्तु धिक्कार है उन पंजाब के हिन्दी प्रेम की डींग मारनेवालों को कि जो इस प्रकार के पत्र को आर्थिक संकट से न बचा कर असमय! ही काल के गाल में पहुँचा रहे हैं। पंजाबियों! हिन्दी समाचार तुम्हारे हिन्दू पन और हिन्दी प्रेम की नाक है, यदि यह पत्र बंद होगया, तो समझलेना कि तुम्हारी नाक कट गई! इससे बढ़ कर और अब क्या लज्जास्पद बात होसकती है। जब से हिन्दी समाचार का संपादन भार पं० शिवनारायणजी द्विवेदीने अपने हाथ में लिया, यह दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नती करता हुआ इस प्रकार सर्व प्रिय बन गया कि, पाठक उसकी चातक तरह प्रतीक्षा करने रहे हैं। उसके [illegible] युक्त लेख, कविताओं तथा समाज सुधार सम्बन्धी मनोरंजक गल्पों का ही यह प्रभाव है कि वह इस छोटी सी अवस्था में ही हिन्दी का आदर्श पत्र बन गया और उसकी ग्राहक संख्या भी तीन हजार के लगभग होगई, किन्तु यह सब गड़बड़ इस महायुद्ध के कारण होनेवाली कागज की मँहगाई की है। अन्य पत्रोंने जहां अपना वार्षिक मूल्य बढ़ाया, वहां हिन्दी समाचारने और घटा दिया। अर्थात् कारण यही कि किसी प्रकार से यह पत्र सर्व प्रिय बनजाय, किन्तु जैसा कि इस पत्र की अपील के देखने से विदित हुआ है, इसे प्रति मास डेढ़ और दो सहस्र तक हानि हुई है और इस समय इस पर डेढ़ [illegible] हजार का ऋण भी होगया है। किन्तु यह खूब याद रखना चाहिये कि यह सब हानि केवल पंजाबियों में हिन्दी प्रेम बढ़ाने के लिये सहन की जाती है, फिर पंजाब जैसा सहज सहज प्रान्त हिन्दी के प्रति ऐसी [illegible] का बर्ताव कर रहा है! खेद है कि हिन्दी समाचार की पुकार [illegible] [illegible] [illegible] नहीं कर सके, नहीं। [illegible] हिन्दी के [illegible] [illegible] होगा। [illegible] यही कि हिन्दी समाचार इस समय बंद कर दिया गया है और जब तक उसकी [illegible] व्यवस्था न होसकेगी, तब तक ही रहेगा। क्या यह हिन्दी प्रेमियों

... लिये दुःख की बात नहीं है कि, उनका पाला हुआ एक सर्वांग सुन्दर पांच वर्ष का शिशु इस प्रकार आर्थिक विपत्ति के कारण असमय ही काल की उदर दरी में चला जाय और वे देखते ही रहें। नहीं २ ऐसा कभी नहीं होसकता, जहां तक हमारा अनुभव है, पंजाबी न सही अन्य प्रदेश के हिन्दी प्रेमी सज्जन उसे इस संकट से अवश्य मुक्त करने का प्रयत्न करेंगे। इस समय उसको अर्थात् दस हजार रुपये की है, इस धन से वह अपना ऋण चुका कर घर का प्रेस भी कर लेगा और फिर सुचारू रूप से हिन्दी के समाचार भारत के कोने २ में पहुँचाता रहेगा, हिन्दी भाषा में यही एक साप्ताहिक पत्र है कि जिसका और कुछ नाम न होकर 'हिन्दी समाचार' नाम रक्खा गया है। और सच मुच ही पंजाब जैसे उर्दू बीबी के साम्राज्यवाले प्रान्त में ऐसे ही प[त्र] की बड़ी आवश्यकता भी है। देखना हिन्दी प्रेमी भारतवासियों! कहीं ऐसा न हो कि हिन्दी समाचार की आर्थिक विपत्ति दूर न हो और ईश्वर न करे वह बन्द होकर तुम्हारे हिन्दी प्रेम में भी बट्टा लगादे।

पुनश्चः-ता० २७ मार्च के पं० शिवनारायणजी द्विवेदी के पत्र से विदित हुआ कि 'समाचार' के लिये अब तक पांच हजार की सहायता मिल गई है, और आशा है कि शेष पांच हजार भी शीघ्र ही मिले जायँगे, और शीघ्र ही 'हिन्दी समाचार' प्रकाशित होगा।

ग्रंथ साहित्य।

(१) चित्राधार—लेखक बाबू जयशंकर प्रसाद गुप्त, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय काशी मूल्य १॥) रु० प्रकाशक से प्राप्त। इस ग्रन्थ में बाबू साहब की छोटी मोटी १० पुस्तकों का संग्रह है। हिन्दी में यह संग्रह अपने ढंग का एक ही कहा जासकता है। क्योंकि एक ही पुस्तक के सेवन से साहित्य रसिकों को काव्य, नाटक, जीवन चरित्र, उपन्यास, प्रहसन, गल्प, चम्पू आदि कितने ही विषयों का साहित्य पढ़ने को मिल सकता है। इसकी पहली पुस्तक 'कानन कुसुम' है जिसमें बाबू साहब हृदय कानन में विकसित काव्य रूपी अनेक कुसुमों का संग्रह है। खड़ी बोली, तथा भिन्न तुकान्त कविता करने में बाबू साहब अच्छी ख्याति पाचुके हैं। इसमें की कितनी ही कविताएँ इन्दु, मनोरंजन आदि मासिक पत्रों में समय २ पर प्रकाशित होचुकी हैं। उनके इस प्रकार पुस्तक रूप में संग्रह करने की बड़ीही आवश्यकता थी और वह इस चित्राधार के रूप में पूर्ण होगई। प्रत्येक कविता अमूल्य, भाव भरी और रसमयी है। दूसरी पुस्तक 'प्रेम पथिक' है यह काव्य तुकान्तहीन छन्दों में ब्रजभाषा में लिखा गया है, और ८।६ वर्ष पूर्व 'इन्दु' में निकल भी चुका है। प्रेम पथिक का कथानक मनोरंजक होने के साथ ही उपदेशप्रद भी है। जिन लोगों का यह कहना है कि ब्रजभाषा में भिन्न तुकान्त काव्य अच्छे नहीं बन सकते, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे एक बार इसे पढ़ें और फिर अपनी बात पर विचार करें। तीसरी पुस्तक 'महाराणा का महत्व' है। यह भी ११ पृष्ठ का भिन्न तुकान्त काव्य है, जो 'इन्दु' में छप चुका है। 'प्रसाद' महाशय ने भिन्न तुकान्त कविता के लिये अरिल्ल छन्द जो कि २१ मात्रा का होता है, पसन्द कर उसी में इसकी रचना की है और आपका ही अनुकरण कई लोगोंने किया है कि, जो आज हमें भिन्न तुकान्त कवितायें पढ़ने का मिल रही हैं। इस प्रकार की कवितायें लोगों को [illegible] [illegible] इस बात की भी पुष्टि [illegible] होती है। चौथी पुस्तक '[illegible]' का ऐतिहासिक [illegible] चरित है। [illegible] लेख के साथ लिखा गया है। इसके पढ़ने से [illegible] [illegible] का [illegible] है। इसमें [illegible] [illegible] होता है। [illegible]

[illegible]

कृति है और इसे आपने भक्ति पुरस्सर अपने पिताजी को समर्पण किया है। भाषा भावमयी और अलंकारिक है। पुस्तक पढ़ने में मन लगता है। सातवीं पुस्तक 'राज्यश्री' नाटक है। महाराज हर्षवर्धन की भगिनी राजश्री का नाम कौन नहीं जानता। यह वही रानी है कि जिस ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर धर्म प्रचार का कार्य किया था। नाटक छोटासा है, परन्तु पढ़ते २ प्राचीन काल की छटा प्रत्यक्ष होने लग जाती है। नाटक गद्यपद्यमय और विशुद्ध भावों से परिपूर्ण है। आठवीं पुस्तक 'करुणालय' गीति नाट्य है, जो दृश्य काव्य के रूप में भिन्न तुकान्त छंद में लिखा गया है, इसमें सत्यव्रती महाराज [illegible] की पुनीत गाथा वर्णित है। यह भी इन्दु में छप चुका है। नवीं पुस्तक 'प्रायश्चित' नाट्य है। इसमें सम्राट् पृथ्वीराज तथा जयचन्द का द्वेष, संयुक्ता का वैधव्य, पृथ्वीराज का मारा जाना और यवनों द्वारा जयचन्द के साथ धोखा होकर उसका पश्चात्ताप करना-ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा उपयोगी है। दसवीं पुस्तक '[illegible]' है, यह २१ पृष्ठ का छोटासा रूपक है। [illegible] के राजा [illegible] की कन्या के साथ सम्राट पृथ्वीराज के विवाह होने का ऐतिहासिक रूपक पढ़ते २ आनन्द निमग्न होजाना पड़ता है। इस प्रकार ये दसों पुस्तकें भिन्न २ विषयों की होकर अपूर्व और पढ़ने योग्य हुई हैं। हिन्दी पुस्तकमाला का यह प्रथम पुष्प है। [illegible] देकर स्थायी ग्राहक बनने से माला की सभी पुस्तकें [illegible] मिलेंगी।

—× × ×—

(२) [illegible]—यह भी इसी माला का दूसरा पुष्प है। इसमें [illegible] प्रसादजी रचित की उन सब कविताओं का संग्रह [illegible] गया है जो हिन्दी के भिन्न २ पत्रों में प्रकाशित होचुकी हैं। कवि [illegible] के विषय में अलग परिचय देने की आवश्यकता नहीं है पुस्तक [illegible] कागज पर अच्छी छपाई गई है और हिन्दी साहित्य में संग्रह [illegible] योग्य हुई है। मू० ।-) है। हम इस माला के प्रकाशक [illegible] साहस के लिये बधाई देते हैं।

—× × ×—

[illegible]—[illegible] बी० ए० [illegible] प्रकाशक रामभूषण प्रेस आगरा, पृ० सं० १११। [illegible]

[illegible]